

23638

पंडित श्री पद्मविजय विरचित.

तेने

शा० जयवंतात्मज देवजी

तथा

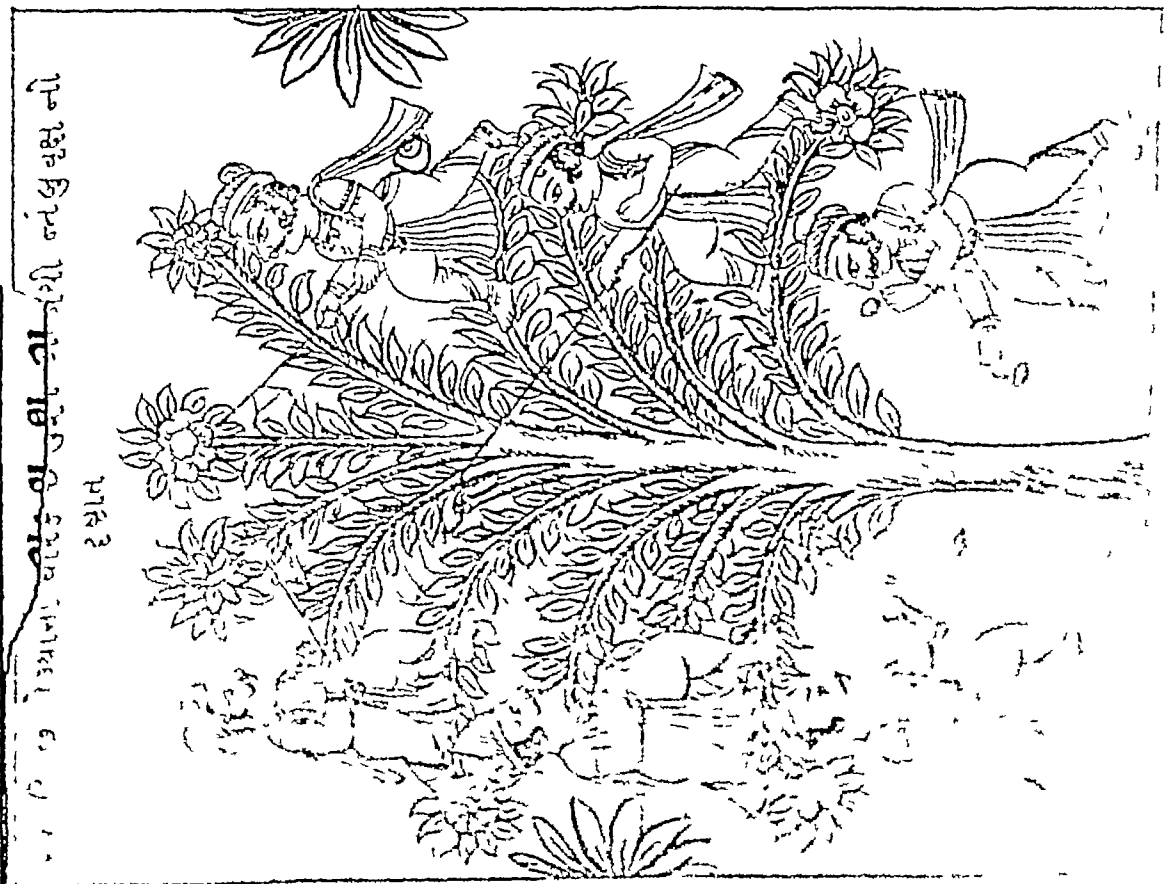
शा० लाणकसुत जीमसिंहजिध श्रावके

पथामनि शोधीने

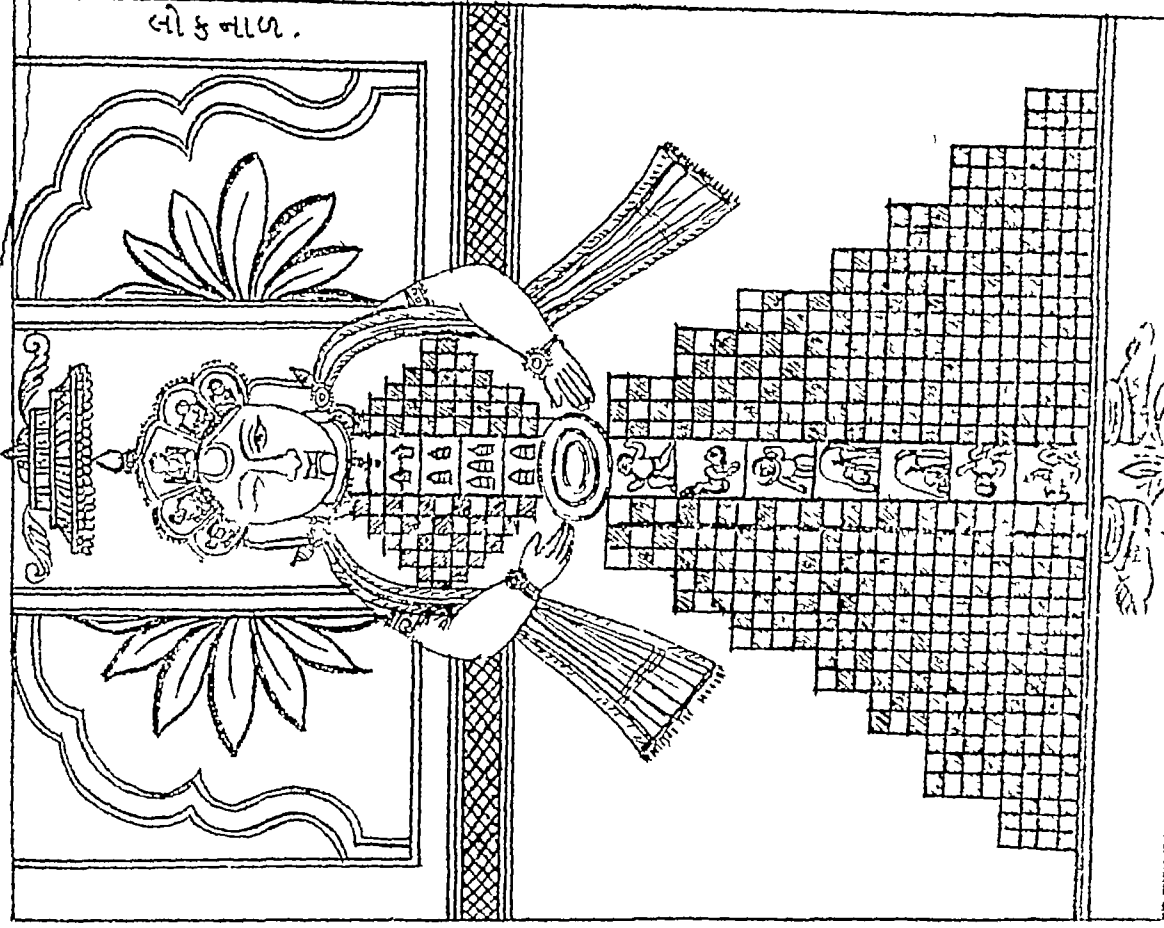
श्री मोहमुन्याय्य पत्तनमां
श्री उमेद खान्ति जैन ज्ञान गुंदिर. श्रीमुवाडी.
“निर्णयसाधक” कृतम् । मुद्रायुक्तं आचार्यसंज्ञितं । कन्यो.

संवत् १९३८ ना मान शक

चरित्र २० गी माते ज्ञानमणि. भोग १८८८.

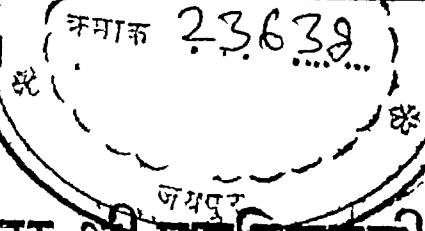


११ १३ आनः चरितुं उमृता ग्री न्तं प्रयुक्तं नो
हृत्मान्



लो कु नाल .

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥



॥ अथ ॥

॥ पंढित श्रीउत्तमविजयशिष्य पंढितप्रवर श्रीपद्मविजयजी
विरचित श्री समरादित्यकेवलीनो रास प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम खंभस्य प्रारंभोऽयं ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री वरशारदा, कुंदचंदसम काय ; कमलमुखी ने कमलकर, प्र
णमुं तेहना पाय ॥ १ ॥ जगचूडामणि जगजयो, जगकेवल दिनराज ; रु
षनगति गति राजती, आदिदेव नमुं आज ॥ २ ॥ समन समन नें समण
जे, समजो वली समान ; समणपदे चउ अतिशया, वंडुं श्रीवर्द्धमान ॥ ३ ॥

॥ अत्र व्याख्या—श्रमण जगवान् महावीरें, इहां प्राकृते समणपदे
चार अतिशय सूचव्या ठे, ते एम के रोगादिक उपडव शमावे माटे स
मन कहियें ॥ इति अपायापगमातिशय ॥ १ ॥ तथा अनुत्तर विमा
नना देवताना संशय टालवानें अर्थे इव्यमन प्रवर्त्तावे ठे, माटे म
नसहित वर्त्ते, ते माटे समन कहियें ॥ इति ज्ञानातिशय ॥ २ ॥
तथा सम्यक् एटले रूडी पेरे, सिद्धांत अविरোধि पणे अणति कहेतां
बोले ते समण कहियें ॥ इति वचनातिशय ॥ ३ ॥ तथा “सहमानेन
वर्त्तते” मानें करी सहित, एटले सुर असुरनी पूजारूप मानें वर्त्ते ठे,
तेहनें समान कहियें. प्राकृत माटे न्हस्व थाय ॥ इति पूजातिशय ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परिसह सहता जे प्रभु, संख्या पण तस शेष ; केवलज्ञान दिवा
करु, नमुं अजितादिजिनेश ॥ ४ ॥ गौतम पमुहा गणहरा, सुरि नमुं
सुजगीश ; अनुक्रमें जिणशी आवीउ, भुत ए विसवा वीश ॥ ५ ॥ सु
खरअलिश्रेणी मिली, कुसुमबुधिसुर किछ ; तीर्थप्रवर्त्तन समय ते, नइ

करो नवतिष्ठ ॥ ६ ॥ गुणदायकश्रुत आगला, वंडं गुरु गुणवंत,
जिणें वचनें करी जाणीये, तत्वातत्वमहंत ॥ ७ ॥ समरादित्य सुसाधु
तुं, चरित्र अठे सुविचित्र; हरिजइसूरें नांखियुं, वचनविचार पवित्र ॥
॥ ८ ॥ अल्पनिदान उदये अति, बहुसंबंध वनाव; सुणतां सुख उप
जावशे, जेहथी सजा जमाव ॥ ९ ॥ नदखमें करी निर्मलो, रास रचुं
सुखकार; सत्तर नव शोहामणा, कहुं विचित्र प्रकार ॥ १० ॥ अप
राधी नर उपरें, करियें नही कांइ क्रोध; तिणें ए समरादित्यतणुं, च
रित्र सुणो गुनबोध ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ गुणअनंत आत्मना कह्या, तेहमां पण दोय मुख्यज लह्या ॥ दर्श
न ने वली वीजुं ज्ञान, तेहमां पण ज्ञानज परधान ॥ १ ॥ यद्यपि
ज्ञान ठे पंच प्रकार, मति श्रुत अवधी नाण अवधार ॥ मनःपर्याय
तेम केवल ज्ञान, पण श्रुतनाण इहां बहुमान ॥ २ ॥ कालादिक जे
आठ आचार, ते श्रुतज्ञानतणा निर्धार ॥ श्रुत ज्ञानें चउ नाण ज
णाय, प्रथम जान पण एहनो प्राय ॥ ३ ॥ आहार अशुंइ पण गुन
उपयोग, श्रुतज्ञानी लाव्या गुन जोग ॥ पण ते केवली करे आहार,
एम श्रुतज्ञान सहु शिरदार ॥ ४ ॥ उक्तं च उधनिर्युक्तौ “उहोमुक्तोव
उक्तो, सुअनाणी जई दुगिएहइ अशुंइ ॥ तं केवली विजुंजइ, अपमाणं
नवेसुअं इदं ॥ १ ॥ चोपाइ ॥ ज्ञानें सवि आदेय गहवाय, ज्ञानें
तयल ते हेय तजाय ॥ इह नव परनव पण हित आय, साध्यसाध
न ज्ञानघी जणाय ॥ ५ ॥ मंत्र यंत्र आराधन करे, ज्ञानें देवता आ
पद दरे ॥ अज्ञानें आवग्यां सर्वेय, हिताहित नत्रि जाणे जीव ॥ ६ ॥
विण उद्यमनो दीरो एद्र, नित्यउग्यो मृज ते जेह ॥ त्रीजुं लांचन
ज्ञान उदार, चोरी न करे चोर केदार ॥ ७ ॥ पापयकी दूरें रहे नदा,
कुशलपदुमां वरते नदा ॥ विनयनी प्रतिपनि मुद्राय, ज्ञानें जेह अ
नाथ्य नभाय ॥ ८ ॥ अक्षा पण ज्ञानें स्थिर आय, जाण्या विण
अक्षा न उगय ॥ तं श्रुतज्ञान आराधन करो, तिम नयमायर जीजा

प्रथम खंड.

तरो ॥ ए ॥ नणवानो नवि करो अन्त्यास, जो तुम्ह होये ज्ञान पि
 पास ॥ दीवसें एक पद पद्मां दोय, जो शिखे उद्यम करी तोय
 ॥ १० ॥ यतःपुष्पमालायां “ जइ विदुदिवसेण पयं, धरिज्ज पस्केण
 वासिलोगइ ॥ उद्योयं मामुंचसु, जइ इत्थसि सिस्किउं नाणं ॥ १ ॥ ”
 ॥ चोपाइ ॥ व्याकरण ठंड काव्य अलंकार, नाटक तर्क गणित निर्धार
 ॥ सम्यग्दृष्टि जीवें ग्रह्युं, ते सवि ज्ञान नंदीमां कह्युं ॥ ११ ॥ ए बोले
 आचारप्रदीप, तिणे तुमें ज्ञान नणो नवि खिप्प ॥ अज्ञानी ते करशे
 किछुं, पुण्य पापछुं लहेशे इच्छुं ॥ १२ ॥ मास मासनें पारणुं करे,
 पण अज्ञान हैयामां धरे ॥ मायावी नमे गर्ज अनंत, किम पामे न
 वजलनो अंत ॥ १३ ॥ यतःसूयगडांगे ॥ जइ वियणिगिणे किसे चरे,
 जइवि य छुंजिय मासमंतसो ॥ जे इह मायाइ मिज्जइ, आगंतागप्राय
 एंतसो ॥ ३ ॥ चोपाइ ॥ सूगडांगे ए ठे अधिकार, दृष्टांत अग्निशर्मवृ
 त्तिकार ॥ तिणें अग्निशर्मांनी वात, जोडें सांजलजो विख्यात ॥ १४ ॥
 चरित्रमां वली नांख्युं एम, धर्म करो तुमे नविका प्रेम ॥ धर्मे सु
 कुल रूप संपदा, धर्मे नासे सवि आपदा ॥ १५ ॥ धर्मे कीर्ति वाधे घणी,
 तिणें करो धर्म बीजुं अवगणी ॥ जे जे इंडिय मन अनिराम, ते ते ध
 र्मेतणां सहु काम ॥ १६ ॥ अर्थ सयण नें वली शरीर, मरण काल
 मूके लही पीर ॥ धर्म एक होये सुसहाय, परजव देव मनुज वली
 थाय ॥ १७ ॥ शिवसुख पामे तिहांथी वली, धर्मकथा तिणें कहे
 केवली ॥ आराधक नें विराधक जेह, गुणदोष कारक कहियें तेह ॥ १८ ॥
 सांजली होये परम वैराग, तिणें ए समरादित्यनो लाग ॥ नवजव
 बिदुनो जिम संजोग, तिम नांखुं तुम्हे सुणो नविलोग ॥ १९ ॥ मुनि
 चंदराय राणी नर्मदा, वेलंधर सुरनी पर्वदा ॥ ते आगल जिम केवल
 लही, निज पूरव नव वातज कही ॥ २० ॥ संक्षेपें कहेछुं ते चरी, सां
 नलो सहुये हर्षज धरी ॥ समरादित्य चरित्ररसाल, पद्मविजय कहे प
 हेली ढाल ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २२ ॥ इति प्रथम-ढाल ॥

करो नवसिद्ध ॥ ६ ॥ गुणदायकश्रुत आगला, वंडुं गुरु गुणवंत,
जिणें वचनें करी जाणीये, तत्वातत्वमहंत ॥ ७ ॥ समरादित्य सुसाधु
नुं, चरित्र अठे सुविचित्र; हरिजिह्वरें नांखियुं, वचनविचार पवित्र ॥
॥ ८ ॥ अल्पनिदान उदये अति, बहुसंबंध वनाव; सुणतां सुख उप
जावशे, जेह्यी सजा जमाव ॥ ९ ॥ नवखंभें करी निर्मलो, रास रहुं
सुखकार; सत्तर नव शोहामणा, कहुं विचित्र प्रकार ॥ १० ॥ अप
राधी नर उपरें, करियें नहीं कांइ क्रोध; तिणें ए समरादित्यतणुं, च
रित्र सुणो शुनवोध ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ गुणअनंत आत्मना कल्या, तेहमां पण दोय मुख्यज लह्या ॥ दर्श
न ने वली वीजुं ज्ञान, तेहमां पण ज्ञानज परधान ॥ १ ॥ यद्यपि
ज्ञान ठे पंच प्रकार, मति श्रुत अवधी नाण अवधार ॥ मनःपर्याय
तेम केवल ज्ञान, पण श्रुतनाण इहां बहुमान ॥ २ ॥ कालादिक जे
आठ आचार, ते श्रुतज्ञानतणा निर्धार ॥ श्रुत ज्ञानें चउ नाण ज
णाय, प्रथम लाज पण एहनो प्राय ॥ ३ ॥ आधार अशुद्ध पण शुच
उपयोग, श्रुतज्ञानी लाव्या शुच जोग ॥ पण ते केवली करे आधार,
एम श्रुतज्ञान सहु शिरदार ॥ ४ ॥ उक्तं च उधनिर्युक्तो “उहोसुतोव
उतो, सुयनाणी जई दुगिएहइ अशुद्ध ॥ तं केवली विहंजइ, अपमाणें
नवेसुअं इदं ॥ १ ॥ चोपाइ ॥ ज्ञानें सवि आदेय गहवाय, ज्ञानें
सयत्र तं देय नजाय ॥ इदं नव परजव पण हित आय, साध्यसाध
न ज्ञानयी जणाय ॥ ५ ॥ मंत्र यंत्र आराधन करे, ज्ञानें देवता आ
पद हरे ॥ अज्ञानें आवग्यां सदैव, हिताहित नवि जाणे जीव ॥ ६ ॥
विण उद्यमनो दीरो एव, नित्यउग्यां क्षुब्ध ठे जेह ॥ वीजुं लोचन
ज्ञान उदार, चोरी न करे चोर केवान ॥ ७ ॥ पापयुक्ती दूरें रहें नदा,
कुशलपदमां वरते नदा ॥ विनयनी प्रतिपनि सुसाध, ज्ञानें जेह अ
साध्य सदाय ॥ ८ ॥ अक्षा पण ज्ञानें स्थिर आय, जाग्या विण
अक्षा न रुगय ॥ ते श्रुतज्ञान आराधन करो, जिम नवसायर जीजा

तरो ॥ ए ॥ नणवानो नवि करो अन्यास, जो तुम्ह होये ज्ञान पि
 पास ॥ दीवसें एक पद पदमां दोय, जो शिखे उद्यम करी तोय
 ॥ १० ॥ यतःपुष्पमालायां “ जइ विदुदिवसेण पयं, धरिज्ज पस्केण
 वासिलोगइ ॥ उद्योयं मामुंचसु, जइ इत्थसि सिक्खिउं नाणं ॥ १ ॥ ”
 ॥ चोपाइ ॥ व्याकरण ठंड काव्य अलंकार, नाटक तर्क गणित निर्धार
 ॥ सम्यग्दृष्टि जीवें ग्रह्युं, ते सवि ज्ञान नंदीमां कह्युं ॥ ११ ॥ ए बोले
 आचारप्रदीप, तिणे तुमें ज्ञान नणो नवि खिप्प ॥ अज्ञानी ते करशे
 किछुं, पुंएय पापछुं लहेरो इच्छुं ॥ १२ ॥ मास मासनें पारणुं करे,
 पण अज्ञान हैयामां धरे ॥ मायावी नमे गर्ज अनंत, किम पामे न
 वजलनो अंत ॥ १३ ॥ यतःसूयगडांगे ॥ जइ वियणिणिणे किसे चरे,
 जइवि य छुंजिय मासमंतसो ॥ जे इह मायाइ मिज्झइ, आगंतागप्राय
 एंतसो ॥ ३ ॥ चोपाइ ॥ सूगडांगे ए ठे अधिकार, दृष्टांत अग्निशर्मवृ
 त्तिकार ॥ तिणें अग्निशर्मांनी वात, जोडें सांजलजो विख्यात ॥ १४ ॥
 चरित्रमां वली नांखुं एम, धर्म करो तुमे नविका प्रेम ॥ धर्मे सु
 कुल रूप संपदा, धर्मे नासे सवि आपदा ॥ १५ ॥ धर्मे कीर्ति वाधे घणी,
 तिणें करो धर्म बीजुं अवगणी ॥ जे जे इंदिय मन अनिराम, ते ते ध
 र्मतणां सहु काम ॥ १६ ॥ अर्थ सयण नें वली शरीर, मरण काल
 मूके लही पीर ॥ धर्म एक होये सुसहाय, परजव देव मनुज वली
 थाय ॥ १७ ॥ शिवसुख पामे तिहांथी वली, धर्मकथा तिणें कहे
 केवली ॥ आराधक नें विराधक जेह, गुणदोष कारक कह्यें तेह ॥ १८ ॥
 सांजली होये परम वैराग, तिणें ए समरादित्यनो लाग ॥ नवजव
 बिहुनो जिम संजोग, तिम नांखुं तुम्हे सुणो नविलोग ॥ १९ ॥ मुनि
 चंदराय राणी नर्मदा, वेलंधर सुरनी पर्षदा ॥ ते आगल जिम केवल
 लही, निज पूरव नव वातज कही ॥ २० ॥ संक्षेपें कहेछुं ते चरी, सां
 जलो सहुये हर्षज धरी ॥ समरादित्य चरित्ररसाल, पद्मविजय कहे प
 हेली ढाल ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २२ ॥ इति प्रथम ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ संयहणीगाथा सुणो, नरसुरजवनां नाम ; इम नगरीनें आउखां,
 आचारज कहे आम ॥१॥ चरित्रे यतः ॥ “गुणसेण अग्निसम्मा ॥१॥
 सिहाणंदायतहपियाउत्ता ॥ २ ॥ सिहिजालिणीमाइ,सूया ॥ ३ ॥ धण
 धणसिरिमायपइजया ॥ ४ ॥१॥ जय विजयायसहोदर ॥ ५ ॥ धरणो
 लढी य तहपइजया ॥ ६ ॥ सेणवीसेणापित्ती, अउत्ताजम्मंमीसत्तमए
 ॥ ७ ॥ २ ॥ गुणचंद वाण मंतर ॥ ७ ॥ समराइव गिरीसेण पाणोउं
 ॥ ८ ॥ एकस्सतउं मुक्को, पंतो वीअस्स संसारो ॥ ३ ॥ एगराइंखिइपइं,
 ॥ १ ॥ जयपुर १ कोसं ३ सुसम्मनयरं च ४ ॥ कायंदी ५ मायंदी, ६
 चंपा ७ उस्ताय ८ उयेणी ॥ ९ ॥ ४ ॥ गुणसेणस्सुववाउ ॥ सोहम्म
 १ सणंकुमार २ वंजेसु ३ ॥ सूक्का ४ एया ५ रणेसु, ६ गेविद्या ७
 एत्तरेसु च ॥ ८ ॥ ५ ॥ इयरस्सुववाउ, विद्युकुमारेसु होइ नायवो ॥
 संसो अणंतरोउण, रयणाइसु अह कमसो ॥ ६ ॥ सागरमेगं पंचय, नव
 पनरसेय तहय अछाग ॥ वीत्तंतीत्तंतित्तीत्तं, वीअस्स विइउंणरएसु ”
 ॥ ७ ॥ श्रीवरिजइसूरिथ्वरें, चांदरें चउच्यालीश ; ग्रंथ आलोअणमां ग्र
 हा, जगमां बहोत जगीश ॥ २ ॥ प्रथमग्रंथ प्रारंजीउं, कोंधनिरासनें
 काम ; एह गुरु आनाय ठे, समतात्तंग सुताम ॥ ३ ॥

॥ दान वीजी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र शोहामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ जंबू द्वीप शोहामणो, पत्नीम महाविदेह ॥ लाल रे ॥ खितिग्रतिष्ठ
 नामे नलुं, नगर अनोपम जेह ॥ लाल रे ॥ जं० ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर
 मात्तीयां, मातुं सुगेंडविमान ॥ लालरे ॥ जिदां महिला जन मोहती,
 रुपें मननमान ॥ लाल रे ॥ जं० ॥ २ ॥ बदनें कमल कोईन थ्वरें, नयणें
 सुजयपत्र ॥ ला० ॥ गजदंतगनियें करी, जीतें रमणीय यत्र ॥ ला०
 ७ जं० ॥ ३ ॥ जिदां निद्यायनती जना, पापनीम जस लोन ॥ ला० ॥
 पल्लवुडि भूमें करी, गणें अइ निवग्यांन ॥ ला० ॥ जं० ॥ ४ ॥ पूर्ण
 गंजत परगदां, जन मननयगाणेंद ॥ ला० ॥ मयकजंकें द्वीपदी, न

रपति पूरणचंद ॥ ला० ॥ जं० ॥ ५ ॥ कुसुंदीनी नामें कामिनी,
 अंतैउर शिरदार ॥ ला० ॥ मदन धरे रतिवह्महा, जोगवे जोग उ
 दार ॥ ला० ॥ जं० ॥ ६ ॥ गुणसेन कुंवर ठे तेहनें, गुणगण रयण
 नंदार ॥ ला० ॥ क्रीडाप्रिय बालक पणै, व्यंतरसुरपरें सार ॥ ला० ॥
 ॥ जं० ॥ ७ ॥ अट्पारंन परिग्रही, तिहां पुरोहित एक ॥ ला० ॥
 धर्मशास्त्र पाठक बली, यज्ञवत्त सुविवेक ॥ ला० ॥ जं० ॥ ८ ॥ सोम
 देवागर्जे थयो. अग्निशर्मा पुत्त ॥ ला० ॥ महोदुं त्रिकोण मस्तक सही,
 पिंगल नयण ते वृत्त ॥ ला० ॥ जं० ॥ ९ ॥ चीपडुं नाक बेशी गयुं, बि
 लमातर जस कान ॥ ला० ॥ दंत दंतोशलनी परें, देह ते बीनत्सवा
 न ॥ ला० ॥ जं० ॥ १० ॥ लंबोदर कोट वांकडी, वांका टूँका हाथ ॥
 ॥ ला० ॥ एकपायुं उचुं बली, मानुं पापनो साथ ॥ ला० ॥ जं० ॥
 ॥ ११ ॥ स्थूल कठिन लघु जेहनी, जंघनें पोहला पाय ॥ ला० ॥
 विषम उरू केश काबरा, विषमकटीतट आय ॥ ला० ॥ जं० ॥ १२ ॥
 गुणसेनकुंवर कौतकयकी, ताल कंसाल मृदंग ॥ ला० ॥ नाटिक नित्य
 करावतो, अग्निशर्मासंग ॥ ला० ॥ जं० ॥ १३ ॥ हसतो हस्त ताली
 दीयें, गर्दनें करी आरोप ॥ ला० ॥ बालकवृंदें परबखो, उपजावे तस
 कोप ॥ ला० ॥ जं० ॥ १४ ॥ फाटुं झुटुं सूपडुं, ठत्र करे शिरठाथ
 ॥ ला० ॥ मिमिम फूटा ढोलज्युं, कहे ए जाय महाराय ॥ ला० ॥ जं० ॥
 ॥ १५ ॥ राजपंथें उतावलो, नित्य हींमावे तेह ॥ ला० ॥ इम करतो
 ते कदर्थना, उपजावे तस देह ॥ ला० ॥ जं० ॥ १६ ॥ इम खमतां
 हवे उपनी, वैराग्यजावना चित्त ॥ ला० ॥ चिंतवे एणीपरें चित्तमां,
 पुण्य कसुं न पवित्त ॥ ला० ॥ जं० ॥ १७ ॥ तो धिःकार बहुजन करे,
 परपराजवनुं ठाम ॥ ला० ॥ हांसी करता लोकनुं, सहीयें सहुए
 ग्राम ॥ ला० ॥ जं० ॥ १८ ॥ धर्म न कीधो परजवें, तिणें ए पामुं
 विवाग ॥ ला० ॥ देखी न करूं इणें जवें, तो किम लहुं दुःखत्याग
 ॥ ला० ॥ जं० ॥ १९ ॥ तिणें करीयें हवे धर्मनें, जिम नवि पामुं
 दुःख ॥ ला० ॥ दुर्जन जनथी विमंबना, नवि जहीयें लहुं सुख

॥ दोहा ॥

॥ संग्रहणीगाथा सुणो, नरसुरजवनां नाम ; इम नगरीनैं आउखां,
 आचारज कहे आम ॥१॥ चरित्रे यतः ॥ “गुणसेण अग्निसम्मा ॥१॥
 सिहाणंदायतहपियाउत्ता ॥ २ ॥ सिहिजालिणीमाइ,सूया ॥ ३ ॥ धण
 धणसिरिमावपइन्ध्या ॥ ४ ॥१॥ जय विजयायसहोदर ॥ ५ ॥ धरणो
 लब्धी य तहपइन्ध्या ॥ ६ ॥ सेणवीसेणापित्ती, अउत्ताजम्मंमीसत्तमए
 ॥ ७ ॥ १ ॥ गुणचंद वाण मंतर ॥ ७ ॥ समराइच्च गिरीसेण पाणोउ
 ॥ ८ ॥ एकस्सतउं मुक्को, एंतो वीथिस्स संसारो ॥ ३ ॥ एगराइंस्विइपइंठ,
 ॥ १ ॥ जयपुर १ कोसं ३ सुसम्मनयरं च ४ ॥ कायंदी ५ मायंदी, ६
 चंपा ७ उस्ताय ८ उद्येणी ॥ ९ ॥ ४ ॥ गुणसेणस्सुववाउ ॥ सोहम्म
 १ सणंकुमार २ वंजेसु ३ ॥ सुक्का ४ एया ५ रणेसु, ६ गेविद्या ७
 पुत्तरेसु च ॥ ८ ॥ ५ ॥ इयरस्सुववाउ, विजुकुमारेसु होइ नायवो ॥
 तेसो अणंतरोउण, रयणाइसु अह कमसो ॥ ६ ॥ सागरमेगं पंचय, नव
 पनरसेय तहय अछारा ॥ वीसंतीसंतित्तीसं, वीथिस्स तिइंणरएसु”
 ॥ ७ ॥ श्रीहरिजइस्सरिथ्वरें, चौदशें चउच्यालीश ; ग्रंथ आलोअणमां अ
 ह्या, जगमां बहोत जगीश ॥ १ ॥ प्रथमग्रंथ प्रारंभीउं, क्रोधनिरासनें
 काम ; एह गुरु आम्हाय ठे, समतासंग सुठाम ॥ ३ ॥

॥ टाल बीजी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र शोहामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ जंबू द्वीप शोहामणां, पत्नीम महाविदेह ॥ लाल रे ॥ खितिप्रतिष्ठ
 नामें जलें, नगर अनीपम जेह ॥ लाल रे ॥ जं० ॥ १ ॥ गट मठ मंदिर
 मान्नीयां, मानुं सुरेंडविमान ॥ लाजरे ॥ जिहां महिला जन मोदती,
 रुपें रंजनमान ॥ लाज रे ॥ जं० ॥ २ ॥ बदनें कमल कोईन थ्वरें, नयणें
 कुवलयपत्र ॥ ला० ॥ राजहंसगनियें करी, जीतें रमणीय यत्र ॥ ला०
 ॥ जं० ॥ ३ ॥ जिहां विद्याअननी जना, पापनीह जस लोच ॥ ला० ॥
 धनदुहि धर्म करी, गणें थइ स्थिरयोच ॥ ला० ॥ जं० ॥ ४ ॥ गुरु
 मंनज पगगडो, जन मननयणागंद ॥ ला० ॥ मयकजंकें दीपडो, न

रपति पूरणचंद ॥ ला० ॥ जं० ॥ ५ ॥ कुसुंदीनी नामें कामिनी,
 अंतैउर शिरदार ॥ ला० ॥ मदन धरे रतिवदनहा, जोगवे जोग उ
 दार ॥ ला० ॥ जं० ॥ ६ ॥ गुणसेन कुंवर ठे तेहनें, गुणगण रयण
 जंमार ॥ ला० ॥ क्रीडाप्रिय बालक पणो, व्यंतरसुरपरें सार ॥ ला० ॥
 ॥ जं० ॥ ७ ॥ अल्पारंज परिग्रही, तिहां पुरोहित एक ॥ ला० ॥
 धर्मशास्त्र पाठक वली, यज्ञदत्त सुविवेक ॥ ला० ॥ जं० ॥ ८ ॥ सोम
 देवागर्जे अयो, अग्निशर्मा पुत्त ॥ ला० ॥ महोदुं त्रिकोण मस्तक सही,
 पिंगल नयण ते वृत्त ॥ ला० ॥ जं० ॥ ९ ॥ चीपडुं नाक बेशी गयुं, बि
 लमातर जस कान ॥ ला० ॥ दंत दंतोशलनी परें, देह ते बीनत्सवा
 न ॥ ला० ॥ जं० ॥ १० ॥ लंबोदर कोट वांकडी, वांका टूँका हाथ ॥
 ॥ ला० ॥ एकपाशुं उचुं वली, मानुं पापनो साथ ॥ ला० ॥ जं० ॥
 ॥ ११ ॥ स्थूल कठिन लघु जेहनी, जंघनें पोहला पाय ॥ ला० ॥
 विषम उरू केश काबरा, विषमकटीतट आय ॥ ला० ॥ जं० ॥ १२ ॥
 गुणसेनकुंवर कौतकयकी, ताल कंसाल मृदंग ॥ ला० ॥ नाटिक नित्य
 करावतो, अग्निशर्मासंग ॥ ला० ॥ जं० ॥ १३ ॥ हसतो हस्त ताली
 दीयें, गर्दनें करी आरोप ॥ ला० ॥ बालकवृंदें परवस्यो, उपजावे तस
 कोप ॥ ला० ॥ जं० ॥ १४ ॥ फाटुं त्रुटुं सूपडुं, ठत्र करे शिरठाथ
 ॥ ला० ॥ मिमिम फूटा ढोलज्युं, कहे ए जाय महाराय ॥ ला० ॥ जं० ॥
 ॥ १५ ॥ राजपंथें उतावलो, नित्य हींमावे तेह ॥ ला० ॥ इम करतो
 ते कदर्थना, उपजावे तस देह ॥ ला० ॥ जं० ॥ १६ ॥ इम खमतां
 हवे उपनी, वैराग्यनावना चित्त ॥ ला० ॥ चिंतवे एणीपरें चित्तमां,
 पुण्य कस्युं न पवित्त ॥ ला० ॥ जं० ॥ १७ ॥ तो धिःकार बहुजन करे,
 परपराजवनुं ताम ॥ ला० ॥ हांसी करता लोकनुं, सहीयें सहुए
 ग्राम ॥ ला० ॥ जं० ॥ १८ ॥ धर्म न कीधो परजवें, तिणें ए पामुं
 विवाग ॥ ला० ॥ देखी न करूं इणो जवें, तो किम जहुं दुःखत्याग
 ॥ ला० ॥ जं० ॥ १९ ॥ तिणें करीयें हवे धर्मनें, जिम नवि पामुं
 दुःख ॥ ला० ॥ दुर्जन जनशी विमंबना, नवि जहीयें जहुं सुख

॥ ला० ॥ जं० ॥ १० ॥ एम चिंती वैराग्यथी, मूक्यो नयरीसंग
 ॥ ला० ॥ संक्लेशस्थानक वर्जियें, एम जाणी एकंग ॥ ला० ॥ जं० ॥
 ॥ ११ ॥ देशधृतें सीमा लगे, हिंमतां थयो एक मास ॥ ला० ॥
 तिहां तपोवन दीतुं हवे, नामशुं परितोष जास ॥ ला० ॥ जं० ॥ १२ ॥
 चंपक बकुल अशोक तिहां, नाग धने पुन्नाग ॥ ला० ॥ मृग मृगप
 ति रमे एकठा, गरुड तथा वली नाग ॥ ला० ॥ जं० ॥ १३ ॥ धूमप
 मज घृतहोमनो, उपजे ताप संतोष ॥ ला० ॥ गिरि नदी नीऊरणां वहे,
 पाम्यो सुखनो पोष ॥ ला० ॥ जं० ॥ १४ ॥ विशामो एणेइहां कखो,
 देखी जागि विशाल ॥ ला० ॥ पद्मविजयें बीजी कही, ढाल अति सुर
 साल ॥ ला० ॥ जं० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ करि विशामो तिहां कणे, खेद थयो जब खीण ; तव उठयो उता
 वलो, तापसशुं ते लीण ॥ १ ॥ नयणें लागो नीरखवा, आर्जव
 कोमल एह ; नामें ते ध्यानें रह्यो, कदलीहर कखुं गेह ॥ २ ॥ लेइ
 रुद्राक्ष माला करें, जपतो वेठो जाप ; वांकलुं पहेखुं वृद्धनुं, प्रगट
 नहीं आलाप ॥ ३ ॥ जटाजूट जोगीसरो, चूति लगावी चाल ; कमं
 मज मूक्युं कनें, मोमट्टि संजाल ॥ ४ ॥ कमलपत्र उपरे कखुं, आ
 सन अतिहिं उदार ; जोग पटें आसन सज्जुं, वरज्यो शेष व्यापार
 ॥ ५ ॥ नासायें जोडयां नयन, टटि हरयो देखि ; रोमांचित थई ह
 रखशुं, प्रणम्यो धरती पेखि ॥ ६ ॥ उत्तमांग अवनीतलें, थापी
 थयो सनाथ ; माने धन्य निज आत्मा, पार लह्यो नवपाथ ॥ ७ ॥

॥ द्वाज ॥ बीजी ॥

॥ गग विद्वागडो ॥ मुक्त घर आवजो रे नाथ ॥ ए देखी ॥

॥ कर जोडीनें कळे एणिपरें, प्रभु पार पाम्यो आज ॥ तुम्ह दिठें दुःख
 ननि निरसयां, मुक्त नहीं अवशुं काज ॥ १ ॥ गुरुजी विनति
 मुक्त एह ॥ मुक्त कगे पावन वेद ॥ गुण ॥ ए आकर्णी ॥ एम मान
 जी तापत द्ये, देखी ने अति बहुमान ॥ स्वागत पुठे इम तेदनें,

मूकी पोतानुं ध्यान ॥ १ ॥ गुरु० ॥ दिये तापस आसन एहनें, कहे
 वेश इणही ठाय ॥ तव वेठो कुशनें आसनें, कहे किहांथी आयो
 जाय ॥ २ ॥ गुरु० ॥ जब कहुं निजवीतक सवे, तव कहे तापस
 एम ॥ वत्स पूर्वकृतकमें करी, सहुकेश पामे नेम ॥ ४ ॥ गुरु० ॥
 तिणें नूपें पीडया प्राणीआ, वली दरिडी डहव्या जेह ॥ दोनागकलं
 कें दूपिया, होय त्राणवियोगिनें एह ॥ ५ ॥ गुरु० ॥ इह नवें परज
 वें सुख करे, ए परम शीतल ठाण ॥ परसंगें दुःख नवि पामीयें, जो
 कथी नहिं अपमान ॥ ६ ॥ गुरु० ॥ दुर्गति नवि जईयें वली, तिणें
 धन्य ठे वनवास ॥ इम कहे बोव्यो तेहवे, स्वामी कहुं तें खास ॥ ७ ॥
 ॥ गुरु० ॥ जो होय मुज उपरें कृपा, जो जाणो व्रतनें जोग ॥ तो
 व्रत देइ अनुग्रह करो, तव बोव्या तपसी लोग ॥ ८ ॥ गुरु० ॥ तुम
 विना बीजो कूण होए, तुजनें घणो वैराग ॥ पण मार्ग अमचो सम
 जीनें, तुम व्रत लीउं महाजाग ॥ ९ ॥ गुरु० ॥ एम कही समजाव्यो
 नलो, हतो जेह निज आचार ॥ रही केशक दिनने व्रत दीयो, शुन
 तिथि नक्षत्रें वार ॥ १० ॥ गुरु० ॥ कोइ दुःखगर्वित वैराग्यथी,
 दीक्षादिनें कहे एम, मास मास नें करुं पारणुं, मुज महाप्रतिज्ञा प्रेम
 ॥ ११ ॥ गुरु० ॥ पारणादिनें पहेले घरे, शुनअशुन जे मजे आहार ॥
 अथवा मिले नहिं तोहि पण, फिरी जाउं आपणें ठार ॥ १२ ॥
 गुरु० ॥ पण जावुं नहीं बीजे घरे, सहु सांजलो ए नेम ॥ पालतां
 प्रतिज्ञा वही गयां, बहुलाख पूर्व एम ॥ १३ ॥ गुरु० ॥ इण अवसरें
 वन ढूंकडुं, एक वसंतपुर इण नाम ॥ तस लोक गुणरागी थयो, बहु
 जक्तिवंतो ताम ॥ १४ ॥ गुरु० ॥ अहो महातपस्वी एह ठे, आ
 लोकनी नहीं आश ॥ निज शरीरनो प्रतिबंध नहीं, एहनो सफल जी
 वितवास ॥ १५ ॥ गुरु० ॥ एम बहुप्रशंसा ते करे, हवे पूर्णचंद्र जे
 राय ॥ गुणसेननें परणावीउं, वली कीधलो महाराय ॥ १६ ॥ गुरु० ॥
 तपोवनें तापस नृप थयो, राणी सहित शुन चित्त ॥ गुणसेन राज्यनें
 पालतो, त्रण वर्ग साथे नित्य ॥ १७ ॥ गुरु० ॥ बहुराय सामंत पद नमे,

साध्या ते बहुला देश ॥ दश दिशें निर्मल जश वधे, निज देशनें पर
 देश ॥ १७ ॥ गुरु० ॥ वसंतसेना नामथी, पटराणीशुं एक दिन्न ॥ व
 संतपुर आच्यो वही, तपोवननें आसन्न ॥ १८ ॥ गुरु० ॥ पेटो महा
 मंगल करी, विमानहंद प्रासाद ॥ पाउसनी लीला सूचवे, नाटिक गा
 जतो नाद ॥ १९ ॥ गुरु० ॥ रयणावलीजं विजली, धूपघटी मेघ अंधार ॥
 चमरश्रेणी वगपंक्तिजं, मुक्तावली जलधार ॥ २० ॥ गुरु० ॥ पंचवर
 णी पदांशुक लिके, लटके ते इंधनुप ॥ सुगंधेंप्रथवी महमहे, देखी
 न लागे नूख ॥ २१ ॥ गुरु० ॥ मोहनिंदमां जे धारीआ, तेणे सुपन
 सरीखुं थाय ॥ सह नगर लोक विसर्जिआ, सुखमां ते दिवस गमाय
 ॥ २२ ॥ गुरु० ॥ जब सूर्य उदयो तव करे, गोसकृत्य ते नूपाल ॥ कहे
 पद्म त्रीजी ढाल ए, सुणतां ते मंगलमाल ॥ २३ ॥ गुरु० ॥ सर्व ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति रमवा नीकल्यो, खेलावे बहु खास ; आस अति उतावलो,
 पामे तेह्यी प्यास ॥ १ ॥ तेहनो खेद उतारवा, वेगो सहसंववन्न ;
 इण समे तापस आवीआ, नरपतिने आसन्न ॥ २ ॥ नारीगान-वरं
 गना. आपी दे आशीज ; नूपति पण उजो थड, साचुं नामें शीश ॥
 ॥ ३ ॥ आपे आसन आदरे, तव नांखे रीपी तेह ; अम गुरु मोकलीआ
 इहां, छुख सुख पठन देह ॥ ४ ॥ कहे नरपति किहां कुलपति, ताप
 स बोले ताम ; इण तपोवनमां आवीयें, देखो दरीस उडाम ॥
 ॥ ५ ॥ कांतकनो लीयो थको, तपोवन पदोतो तेह ; तापस बहु बली
 कुलपति, नमीउं आणी नेह ॥ ६ ॥ कुलपति नूपतिनें कहे, सांन
 ल धर्म मनाथ ; विनयें सांनली विनति, नांखे हवे नृनाथ ॥ ७ ॥

॥ टाल चोथी ॥

॥ श्रीरूपजानन गुणनिलो ॥ १ देशी ॥

॥ नरपति कर जोडी कहे, मुक्त उपरें करो सुपसाय हो ॥ सुपिंद ॥
 ज्यो आचार मादारे परे, सह तापसनों समुदाय हो ॥ सु० ॥
 ज्यो गुरु मुक्त मंदीरें ॥ १ ॥ आकणी ॥ १ ॥ कुलपति कहे सुण नृ

पति, आवशुं पण टाली एक हो ॥ मु० ॥ अग्निशर्मा ते नामथी, ते
हनें मास मासनी टेक हो ॥ मु० ॥ १ ॥ आ० ॥ ते वात सुणी
कहे राजीउ, कीधो मुऊनें उपगार हो ॥ मु० ॥ पण किहां तपसी
वड जागीउ, करुं दर्शन पासुं पार हो ॥ मु० ॥ २ ॥ आ० ॥ कहे
कुलपति उद्यानें रह्यो, जिहां श्रेणी अठे सहकार हो ॥ मु० ॥ जइ
दिगो पद्मासन रह्यो, प्रशांतचित्त व्यापार हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ आ० ॥ बहु
हर्ष धरी पुजकित अइ, प्रणमे तेहना वर पाय हो ॥ मु० ॥ तव
दिए आशीष तापस तिहां, सुखें आव्या तुमे. इण गाय हो ॥ मु० ॥
॥ ५ ॥ आ० ॥ तुम्हे बेसो इहां इण स्थानकें, तव बेशी तेह नरींद
हो ॥ मु० ॥ कहे किम डुकर ए आदखुं, तव बोव्यो ते योगींद
हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ आ० ॥ एक दारिद्र दुःखनें विरूपता, वली परपरिजव
पण हेतु हो ॥ मु० ॥ तिम गुणसेन वली नृपसुत जज्ञो, कल्याण
मित्र शुन चेत हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ आ० ॥ निजनामैं शंक्यो नरपति,
कहे ते कहो कारण केम हो ॥ मु० ॥ नृपति सुत तुम हेतु अथो,
तव अग्निशर्मा कहे एम हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ आ० ॥ जे जे उत्तम नर
होय ते, पामे प्रतिबोध स्वयमेव हो ॥ मु० ॥ पर प्रेखा मध्यम नर
जहे, जवन्य जहे न सदैव हो ॥ मु० ॥ ९ ॥ आ० ॥ प्रेरे जे संसा
री जीवनैं, धर्मैं कोइक नयेण हो ॥ मु० ॥ काढयो तिणें कारागा
रथी, कल्याणमित्र कहुं तेण हो ॥ मु० ॥ १० ॥ आ० ॥ निज वी
तरु संनारी मने, लज्जा अवनत करी वयण हो ॥ मु० ॥ कहे कि
म प्रेखा तुमनें तिणे, किम ते अथो धर्ममां सयण हो ॥ मु० ॥ ११ ॥
॥ आ० ॥ कहे ते अग्निशर्मा हवे, प्रेरणा तो ठे अनेक हो ॥ मु० ॥
तिणें कोइ निमित्तें प्रेरीउ, म्हे धरिउ तेहथी विवेक हो ॥ मु० ॥ १२ ॥
॥ आ० ॥ तव चिंते चित्तमां नृपति, अहो अहो एहनो परिणाम
हो ॥ मु० ॥ माने ए उपगारनें, ठे जेह पराजव ठाम हो ॥ मु० ॥
॥ १३ ॥ आ० ॥ न करे ए निंदा केहनी, पण मेंतो कीध अकाज
हो ॥ मु० ॥ पाप कखुं ते प्रकाशीएं, एम चिंतवी ते महाराज हो

॥ सु० ॥ १४ ॥ आ० ॥ महापापकारी हुं तुम प्रभु, तुमनें कीधो
 संताप हो ॥ सु० ॥ हुं तेअ गुणसेन जाणजो, किधूं घोर में अति पाप
 हो ॥ सु० ॥ १५ ॥ आ० ॥ एम नहीं तपसी कहे सांनजो, तुं मुज
 धर्म सखाय हो ॥ सु० ॥ नृप कहे गुणग्राहक तुमें. चंडयी अग्नि न
 जराय हो ॥ सु० ॥ १६ ॥ आ० ॥ हवणां इणवातें तो सखूं, पण
 पारणुं तुम केवार हो ॥ सु० ॥ तपसी कहे पांच दिवस पठें, प्रथ
 वीपति जांखे तेवार हो ॥ सु० ॥ १७ ॥ आ० ॥ माहरे घरे पारणुं कीजी
 यें, जो कीजें मुज सुपसाय हो ॥ सु० ॥ तुम प्रतिज्ञा विधिजीके,
 सें जाणी कुजपति पाय हो ॥ सु० ॥ १८ ॥ आ० ॥ तिणे अनागत
 हुं बीनहुं, तव बोले तपसी वाणी हो ॥ सु० ॥ ते दिन आवे तव
 हा कहूं. वे वडी ते विघ्ननीखाण हो ॥ सु० ॥ १९ ॥ आ० ॥ जीव
 लोक स्वपनासमो, जीव चिंतवे आजने काल हो ॥ सु० ॥ काम कर
 नुं पण जाणे नहीं, कालने तो हाथ ठे काल हो ॥ सु० ॥ २० ॥
 ॥ आ० ॥ तव नृपति बोले एम फरी, निर्विघ्न आवे ते दिन हो
 ॥ सु० ॥ पारणे प्रभु आवहुं मुज घरे, आयहयो तिणें प्रतिपन्न हो
 ॥ सु० ॥ २१ ॥ आ० ॥ हवे राजा हरपे प्रणमीउं, गयो नयरमां
 निज आवाम हो ॥ सु० ॥ नकि करी कुजपतिनी घणी, गया पांच
 दिवस पण तान हो ॥ सु० ॥ २२ ॥ आ० ॥ कही चौथी ढाल एणी
 पणें, गढु धर्मना अर्थी जीव हो ॥ सु० ॥ कहे पद्मविजय समजी करो,
 तो पामो सुख अर्थाय हो ॥ सु० ॥ २३ ॥ आ० ॥ स० ॥ १२१ ॥

॥ बोहा ॥

॥ पारणुं कया पदांचीउं. गुणसेनरायने गेह : शिरवेदन अतिगय
 यः. जानिम नृपनें गेह ॥ १ ॥ आकुन व्याकुन सहु थया, आच्या
 गेह गेह १ : वैदक शम्भु वदे थया. पण गेह पीडा न जेज ॥ २ ॥
 नृपति विविध कृपा करी. लेप लगाया लंक : बुद्धिमंत वनीया वहु,
 विष्णु मनि विजय ॥ ३ ॥ होम दवन पुगेदित करे, शांतिकर्म संता
 न : गेहदय शांत गेह. भूतान थड फुलमाज ॥ ४ ॥ कुमतायुं

सुखकमल ते, कन्या कंकु कील ; चित्रकर्म परिचय तज्यो, लागी
न नाटिक लील ॥ ५ ॥ पडिहारा गतप्राण जिम, कंकुशक तजे
काम ; सुपकार सुख नवि करे, सामंत शोक विश्राम ॥ ६ ॥ तापस
देखी तेहवुं, वलीउ चित्त विचार ; पावुं नवी कोइ पूठियुं, पाहोतो
तपोवन पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जोगीशर चेलानी देशी ॥

॥ केम आव्या पाठा फरी रे, तापस पूठे वात रे ॥ जोगीसर ॥ क्षीण श
रीर तुमारहुं रे लाल ॥ अग्निशरमा बोलीउ रे, सांनजो कहुं अवदात रे ॥
॥ जो ० ॥ रायतणे घर हुं गयो हो लाल ॥ १ ॥ रायशरीरें शाता नहीं रे,
लोक करे उदवेग रे ॥ जो ० ॥ देखि न शक्यो हुं सही हो लाल ॥ तुर
त तिहांधी पाठो वव्यो रे, सहु कहे धरी विवेक रे ॥ जो ० ॥ साचुं
शाता न तेहने रे लाल ॥ २ ॥ अन्यथा नक्तिवंतो घणो रे, किम
न होवे सावधान रे ॥ जो ० ॥ गुण तुमचा जाणो वणा रे लाल ॥
कुलपति आगल बहु कस्य रे, इण तुमचा गुणग्यान रे ॥ जो ० ॥
अग्निशर्मा तव बोलीउ रे लाल ॥ ३ ॥ नहीं प्रयोजन आहारहुं रे,
पण एहनें थाउं शात रे ॥ जो ० ॥ एम करी मास कस्यो वली रे
लाल ॥ कोइक जावी जावथी रे, शाता अई नृपगात रे ॥ जो ० ॥ पूठे
तपस्वी वातडी रे लाल ॥ ४ ॥ पारणदीवस ते आज ठे रे, आव्या
के नहीं तेह रे ॥ जो ० ॥ आदर दीधो के नहीं रे लाल ॥ तव परिज
न बोव्यो तदा रे, आवीनें गया जेह रे ॥ नरेसर ॥ सहुने विकल्प
जाणी करी रे लाल ॥ ५ ॥ राय कहे धिःक मुकने रे, चूक्यो लाज
अपार रे ॥ जो ० ॥ अनरथ थयो पिड्या मुनि रे लाल, बीजे दिन
विहाणो गयो रे ॥ लाजतो राय अपार रे ॥ जो ० ॥ कुलपतिपाय जइ
नम्यो रे लाल ॥ ६ ॥ आशीष देइ बेसाडीउ रे, पूठे वात शरीर
रे ॥ जो ० ॥ नीचुं जोइ नृप बोलीउ रे लाल ॥ निशासो नाखे वली रे,
कुलपति कहे थाउं धीर रे ॥ नरे ० ॥ कहो उद्वेग कारण तुमे रे

लाल ॥ ७ ॥ नृप कहे कहेवाये नहीं रे, कुलपति कहे कहे तोहि रे
 ॥ न० ॥ तव नरपति कहे इणी परें रे लाल ॥ निर्दयी चरित्र कहे
 तां थकां रे, चित्त न चाले मोहि रे ॥ जो० ॥ पण तुम आणायी
 कहुं रे लाल ॥ ८ ॥ मात पितानें सारीखा रे, कुलपति कहे अम
 लोग रे ॥ न० ॥ तिहां लज्जा करवी कीसी रे लाल ॥ दुःख कहेतो वि
 चारीयें रे, टालणनो उपयोग रे ॥ न० ॥ तव नरपति कहे वातडी रे
 लाल ॥ ९ ॥ मुज निमित्तें तापस थयो रे, में अविचारित कीध रे
 ॥ जो० ॥ वजी हमणां पण एम वन्युं रे लाल ॥ बीजो मास थयो ए
 द्दनें रे, में अपयश बहु लीध रे ॥ जो० ॥ तव कुलपति एणी परें
 नणे रे लाल ॥ १० ॥ तुंतो धर्मकारण थयो रे, पहेलानें वजी
 आज रे ॥ न० ॥ कहे तें गुं हीणुं कसुं रे लाल ॥ नरपति कहे
 निमंत्रणा रे, कीधी आहारनें काज रे ॥ जो० ॥ मस्तक अइ मुज
 वेदना रे लाल ॥ ११ ॥ पारणुं में न करावीयुं रे, उलटो कस्यो अं
 नराय रे ॥ जो० ॥ धर्ममां विघनकारी थयो रे लाल ॥ कुलपति कहे वठ
 तांनजां रे, तुज अपराध न कांय रे ॥ न० ॥ रोगी कृत्याकृत्य नवि
 लहे रे लाल ॥ १२ ॥ अंतराय तुमें नवि कस्यो रे, उलटो किथो स
 हाय रे ॥ न० ॥ खेद न करो मनमां तुमे रे लाल ॥ आहार न लीधो
 मुज घरे रे, तेहनो खेद मुज थाय रे ॥ जो० ॥ नृपति एणि परें
 विनवे रे लाल ॥ १३ ॥ माहारो खेद ते किम टले रे, लीधा विण
 मुज आहार रे ॥ जो० ॥ तव कुलपति कहे रायने रे लाल ॥ मास
 खमणहुं पारणुं रे, आयजो एदनें जेवार रे ॥ न० ॥ तव तुज घरे
 कस्यो दय रे लाल ॥ १४ ॥ अग्रिणमां बोलावीउ रे, कही नरेंदनी
 मान रे ॥ जो० ॥ अपराध एदनो म चिंतये रे लाल ॥ एदनो खेद
 निवारया रे, वजी कन्दा नृपशात रे ॥ जो० ॥ पारणुं एदनें घरे करो
 रे लाल ॥ १५ ॥ एद जकिन उवेखियें रे, महारुं वचन पण मान रे ॥
 ॥ जो० ॥ तव ते नापन बोलीयो रे लाल ॥ स्वामी खेद ए जो करे
 रे, मुज तुम वचन प्रमाण रे ॥ जो० ॥ मुज उपकार कस्यो इणो

रे लाल ॥ १६ ॥ राजा बहुमानें करी रे, प्रणमी पोहोतो गेह रे ॥ जो० ॥
 इम करतां वली आवीउ रे लाल ॥ पारणा केरो दिन्न रे ॥ जो० ॥
 इण अवसर चर आवीआ रे लाल, नांखे नृपनें वचन रे ॥ न० ॥
~~मानव~~ नृप आवीउ रे लाल ॥ १७ ॥ रातिवासो देइ मारीआ रे,
 आपणा सैन्यनां लोक रे ॥ न० ॥ हवे निम जाणो तिम करो रे
 लाल ॥ तव राजा रीशें चढ्यो रे, आणी मनमां शोक रे ॥ न० ॥ को
 पानल पणो दीपतो रे लाल ॥ १८ ॥ निर्दय धरणी पढाडतो रे, अ
 मर्षे बलनां वयण रे ॥ न० ॥ तूर वजडावे प्रयाणनां रे लाल ॥ गय
 बल हयबल सज करे रे, करी विकराल ते नयण रे ॥ न० ॥ रह
 वर नडसन्नहु आ रे लाल ॥ १९ ॥ चामर ठत्र धरावतो रे, वाजं
 ते वर तूर रे ॥ न० ॥ बंदि बिरूद बोलीजते रे लाल ॥ मंगलकलश
 चलावीउ रे, अग्निशर्मा तप नूरि रे ॥ जो० ॥ पारणानें इण अवस
 रें रे लाल ॥ २० ॥ आवीनें देख्यो तिहां रे, सहु जन सज्ज संग्राम
 रे ॥ जो० ॥ देखीनें पाठो वळ्यो रे लाल ॥ कोर्यें उलख्यो पण नहीं रे,
 आव्यो ते निजगाम रे ॥ जो० ॥ ज्योतिषी इण अवसरें नणो रे लाल
 ॥ २१ ॥ लगन आवेलुं ठे नलुं रे, कीजें तुरत प्रयाण रे ॥ रा० ॥
 राजा कहे तव वातडी रे लाल ॥ अग्निशर्मा आव्या नहीं रे, मानी ठे
 मुळ वाणि रे ॥ जो० ॥ आव्या पढी जईयें सहु रे लाल ॥ २२ ॥
 तव एक नर बोळ्यो तिहां रे, आवी गया इण वार रे ॥ रा० ॥ हजी
 अ हरो पुरमां सही रे लाल ॥ तव राजा विलखो अइ रे, चाळ्यो तेह
 नी व्हार रे ॥ रा० ॥ दीगो नीकलतां अकां रे लाल ॥ २३ ॥ उतरी
 रथथी पाये पडे रे, विनति करे महाराय रे ॥ जो० ॥ करीय पसाय
 पाठा वलो रे लाल ॥ महारे जावुं घणुंये हतुं रे, पण नवि गयो रुषि
 राय रे ॥ जो० ॥ वाट तुम्हारी जोवतां रे लाल ॥ २४ ॥ तुम्हे अ
 णजाण्या पाठा वळ्या रे, तिणे चालो मुळ गेह रे ॥ जो० ॥ अ
 ग्निशर्मा तव बोलीउ रे लाल ॥ तुं जाणो सवि वारता रे, म्हारे प्रति
 झा जेह रे ॥ रा० ॥ सत्यसंधा तपसी होये रे लाल ॥ २५ ॥ ला

जालान सम त्रेवडे रे, हवे बोले नरराय रे ॥ जो० ॥ म्हारा प्रमा
द चरित्रथी रे जाल ॥ जाजुं तुं स्वामी घणो रे, ते मुखथी न कहे
वाच रे ॥ जो० ॥ तुम्ह तपशरीर पीडाथकी रे जाल ॥ १६ ॥ सु
ऊ अतिपीडा उपजे रे, उपजे हैये संताप रे ॥ जो० ॥ बोली न शकुं वय
णथी रे जाल ॥ हैये दुःख खमाय नहीं रे, म्हें कीथूं महा पाप रे
॥ जो० ॥ दुःख उपशम सुऊ चिंतवो रे जाल ॥ १७ ॥ तव तापस
मन चिंतवे रे, राय बहु खेदाय रे ॥ रा० ॥ गुरुनक्तो ए अतिघणो रे
जाल ॥ पारणुं न करूं एहनें घरे रे, तो दुःख एहनुं न जाय रे
॥ रा० ॥ एम चिंति तपीठ कहे रे जाल ॥ १८ ॥ करशुं तुऊ घर पा
रणुं रे, निर्विघ्न दिन तेह रे ॥ रा० ॥ तव राजा हरख्यो घणुं रे जाल ॥
नृप कहे विमल नाणी तुम्हे रे, प्रणमे आणी नेह रे ॥ जो० ॥
प्रनु सुऊनें निस्तारीठ रे जाल ॥ १९ ॥ समरादित्यना रासमां रे, ए
कदी पांचमी टाज रे ॥ रा० ॥ विदु जनमन राजी यया रे जाल ॥
पद्मविजय कहे सांचनो रे, आगलें वात रसाल रे ॥ रा० ॥ गुण प
दपाती राजा घणो रे जाल ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १५८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तपमीनें कहे नृपति, तुम्हे जाउं तपोवन्न; कुजपति पारें किमहिके,
नहिं आवणनुं मन्न ॥ १ ॥ मुख देखावो माहुरं, न शकुं नाथ निदान;
एम कही राजा घर गयां, तपसी गयो ते रान ॥ २ ॥ कुजपतिने मव
लें कहु, कुजपति कहे वरकाम; कीथूं एम परशंसिउं, मास त्रीजो
कयो ताम ॥ ३ ॥ वयनें परिणामें वली, तप पूनं तन आव; राय
नगं घर पाणो, पुत्रजनम प्रगटाय ॥ ४ ॥ प्रतिहारी मुनें पासोउं,
वयन पुत्र नवतार; आपे आजुपण अंगना, पूर्ण करी प्रतिहार ॥
१५९ ॥ गुणदेन रायने अंगणे, उजव अनिहि उदार; मांमयो ते महा
मोदरी, परिगत पुण्य प्रहार ॥ ५ ॥

॥ दास दही ॥ ॥ इतर जांचा आवती रे ॥ मुंदशी ॥

॥ राय नृपति पदपाती रे, मुक्तो दासगार ॥ उद्योपणा करी जीजी

यें रे, दान अनेक प्रकार ॥ १ ॥ नविक जन जावि जाव ते होय ॥ जा
 वी न टाले कोय ॥ नविण ॥ जावि जाव ते होय ॥ ए आंकणी ॥ जितश
 त्रुमुख रायनें रे, कहेवरावो ए वात ॥ नयरमां सहु संजनावियें रे,
 जिणे बहु महोवव यात ॥ नविण ॥ २ ॥ जे कसुं ते सवे कसुं रे,
 नाचे पगें पगें पात्र ॥ वरचीवर धरी रमणीउं रे, गावे ते वाली गात्र ॥
 नविण ॥ ३ ॥ दानें संतोषित बोलतां रे, बंदी जय जय सद ॥ ताल
 विणा मादल तणा रे, सांजजीयें बहुनद ॥ नविण ॥ ४ ॥ वधामणां
 आवे घणां रे, राजनवन संकीर्ण ॥ इण अवसर तापस तिहां रे,
 दुउं प्रतिज्ञा तिन्न ॥ नविण ॥ ५ ॥ पारणा निमित्त ते आविउं रे,
 राजकुलें ते आय ॥ सहु ते हर्ष प्रमोदमां रे, नवि कोयनें चित्त जाय
 ॥ नविण ॥ ६ ॥ आसुं अवलूं जोईनें रे, वलिउं ते ततकाल ॥ असु
 न करम उदयें करी रे, चिंतवे आलपंपाल ॥ नविण ॥ ७ ॥ आर्त्त
 ध्यान वगें चिंतवे रे, अहो अहो एह राजान ॥ सुज उपर बालजावशी
 रे, वैरजाव असमान ॥ नविण ॥ ८ ॥ जूउं माया करे केटली रे, गूढा
 चार चरित्त ॥ सहु शाखें करे विनती रे, आचरे अति विपरीत ॥
 नविण ॥ ९ ॥ एम चिंतवतो निकट्यो रे, पुर बाहिर ते जाम ॥ दोष
 आझानें आकरे रे, क्रोधतणे वली धाम ॥ नविण ॥ १० ॥ वासित्त
 जैनमार्गे नहीं रे, धर्म श्रद्धा गइ तास ॥ परलोकनी वासना तजी रे,
 आवि अमैत्री जास ॥ नविण ॥ ११ ॥ नूखें कलकली देहडी रे, आकर्ष्यो
 वली नूख ॥ द्वेष जाग्यो नृप उपरें रे, सुखि न रही तिलतुष ॥
 ॥ नविण ॥ १२ ॥ तपनुं फल जो माहुरूं रे, तो एहनो वधकार ॥
 करे नियाणुं एहबुं रे, नव नव दुःख दातार ॥ नविण ॥ १३ ॥ शत्रु
 नें दुःख दीधूं नहिं रे, वाढ्हाने सुख नवि दीध ॥ मात विमंबी ते नरें
 रे, जन्म लहिणुं कीध ॥ नविण ॥ १४ ॥ एम नियाणुं तिणे कसुं रे,
 आलोयुं नहीं ते ठाण ॥ क्रोधानल बलतो करे रे, कोडी विकल्प अजा
 ण ॥ नविण ॥ १५ ॥ पढोतो तपोवन तेहवे रे, कुलपति मूक्या दूर ॥
 परिहारी शेष तापस वली रे, दीसंतो महाक्रूर ॥ नविण ॥ १६ ॥

जइ सहकारश्रेणी रह्यो रे, चिंतवे बलि एम चित्त ॥ अहो राजा मुऊ
उपरें रे, प्रत्यनीक जली रीत ॥ नवि० ॥ १७ ॥ हांसी योग्य मुऊनें
कखो रे, तापस सर्व मजार ॥ जाणी प्रतिज्ञा माहरी रे, कीथो माया
प्रकार ॥ नवि० ॥ १८ ॥ करिय निमंत्रणा एणी परें रे, नवि आप्यो
मुऊ आहार ॥ इण बेला खलना करी रे, शो एहने अहंकार ॥
नवि० ॥ १९ ॥ तपसीनें किम ए करे रे, शत्रु मित्र सम जास ॥ अ
थवा न तज्यो मूलथी रे, आहार तो पाम्यो विपास ॥ नवि० ॥ २० ॥
ते माटें हवे मुऊ सखुं रे, जाव जीव लगे आहार ॥ न करुं एम व्रत
आदखुं रे, ठांमी सर्व व्यापार ॥ नवि० ॥ २१ ॥ दीगो तापसें इण
समे रे, जाणुं ध्यान अशुद्ध ॥ पूढे किम नवि पामीया रे, कुसुम विले
पण शुद्ध ॥ नवि० ॥ २२ ॥ गुणसेनराय तणे घरे रे, गुं न गया प्रभु
आज ॥ पारणुं किम नवि नीपनुं रे, ते नांखो महाराज ॥ नवि० ॥
॥ २३ ॥ अग्निशर्मा तव बोजीउं रे, हुं गयो नृपने गेह ॥ शत्रु बाजप
णा थकी रे, आज लगी हजी एह ॥ नवि० ॥ २४ ॥ मीठे वचनें वो
लतो रे, करतो विनय अपार ॥ वैर न टळुं मुऊ उपरें रे, जाणुं में
निर्धार ॥ नवि० ॥ २५ ॥ पण ए मायावी खरो रे, कीधुं महारुं हा
स ॥ कीथो पराजव एणी परें रे, एह अनार्य विलास ॥ नवि० ॥ २६ ॥
सहसा उठव मांजीउं रे, जाणी पारण दिना ॥ आदर दीगो न केहनो
रे, बलिउं विलखित मन्त्र ॥ नवि० ॥ २७ ॥ कहे तापस नवि संजवे
रे, एह नरींइ गुणवंत ॥ अथवा विचित्र परिणाम ठे रे, गुं न कषायें
हुंत ॥ नवि० ॥ २८ ॥ जिनवर मत वासित विना रे, उत्तमता नवि
होय ॥ तिणें जिनमत अंगीकरो रे, ज्ञान श्रद्धा सह कोय ॥ नवि०
॥ २९ ॥ ठळी ढाल एणी परें रे, नांखी कर्मनिदान ॥ पद्मविजय क
हे सांजलो रे, दुःखदाई अज्ञान ॥ नवि० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १९४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुजपति पासें जई कहुं, अग्निशर्मा आज; पारण विण पाठा व
या, महातपसी महाराज ॥ १ ॥ कुजपति आव्या तिहां कने, तपसी

यें पूज्या ताम; वहपारणुं नवि कखुं, कीधुं डःकर काम ॥ २ ॥ रायें
 खुं ए आचखुं, असरिस जन आचार; अग्निशर्मा-एम कहे, रायप्रमाद
 प्रकार ॥ ३ ॥ आहार तज्यो नहीं आदरे, पाम्यो आपद पेखि; जाव
 जीव हवे वर्जीउ, आशादेह उवेखि ॥ ४ ॥ विनति हवे हुं वीनखुं, क
 हेशो हवे न कांय; तव कुलपति कहे तेहनें, एहमां हानि न कांय ॥ ५ ॥
 काल जतां वारज कीसी, तपसी बोले तथ्य; पण नररायनें उपरें,
 क्रोध न करो ए कथ्य ॥ ६ ॥ यतः ॥ “सबो पूर्वकयाणं, कम्माणं पा
 वए फल विवागं ॥ अवराहेसु गुणेषुअ, निमित्तं मित्तपरो होइ ॥ १ ॥”
 ॥ दोहा ॥ एम शिखामण देईने, सेवाकाज सकास; तापस सूकी कु
 लपति, पढोतो आसन पास ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो के नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पारणवेला अतिक्रमी रे, सांजखुं रायनें ताम ॥ लागी वेदना रे ॥
 अहो महारी अधन्यता रे, उत्सवमां अयुं आम ॥ लागी ॥ १ ॥
 आज पण पारणुं नवि अयुं रे, हैहै प्रगटयुं पाप ॥ ला० ॥ पूठे पासैना
 मनुजनें रें, आव्या न आव्यानी ठाप ॥ ला० ॥ २ ॥ खोजी करी नर
 ते कहे रे, आवी गया निज ठोर ॥ ला० ॥ जन्मउल्लव धामधूममां रे,
 चाखुं न एहनुं जोर ॥ ला० ॥ ३ ॥ राय कहे में पापीयें रे, तपसीनें
 कखो अंतराय ॥ ला० ॥ उदय आपदजणी मुज अयो रे, ए डःख में
 न खमाय ॥ ला० ॥ ४ ॥ अल्पपुण्य घरे नवि होये रे, वृष्टि नली
 वसुधार ॥ ला० ॥ हुंतो तिहां नवि जइ शकुं रे, मुख न देखावुं लगार
 ॥ ला० ॥ ५ ॥ सोमदेव पुरोहितने रे, नांखे इणिरें वाण ॥ ला० ॥
 अणजाण्यो अइ तूं तिहां रे, जइनें जो तिण ठाण ॥ ला० ॥ ६ ॥
 तेदनी खबर करो तुमें रे, श्यो कीधो व्यवसाय ॥ ला० ॥ जोइ कहे
 मुज नीपनुं रे, तव तेगयो तिण ठाय ॥ ला० ॥ ७ ॥ बहुतापसथी प
 रिवखो रे, मान संथारे बेठ ॥ ला० ॥ अमर्ष नखो नृपनी कथा रे,
 करतो तेणें दीठ ॥ ला० ॥ ८ ॥ गिरिनदी पासें तेहने रे, विनयें क

री प्रणमंत ॥ ला० ॥ नाम देइ वेसारीयो रे, दिये आशीश महंत ॥
 ला० ॥ ए ॥ पूढे पुरोहित तेहने रे, किम प्रभु खीणशरीर ॥ ला० ॥
 तापस कहे सुणि डुवला रे, तपसी होये धीर ॥ ला० ॥ १० ॥ पुरो
 हित कहे साचुं प्रभु रे, होय तपस्वी निरीह ॥ ला० ॥ धन धान्यादि
 क सहु तज्यां रे, पण नहीं धर्मनी देह ॥ ला० ॥ ११ ॥ आहारमा
 त्र लेवो घटे रे, धर्म सथाये जेण ॥ ला० ॥ इण नगरीमां उत्तम वसे रे,
 आहार दीये हरषेण ॥ ला० ॥ १२ ॥ तृण मणि पत्थर कनकमां रे,
 शत्रु मित्र समजाव ॥ ला० ॥ मोक्षमार्ग तुमे आदख्यो रे, नवजलपो
 त खजाव ॥ ला० ॥ १३ ॥ तुमनें आहार कमी कशी रे, तापस बो
 ल्यो ताम ॥ ला० ॥ वात कही साची तुम्हे रे, पण नरपति दुःख
 ताम ॥ ला० ॥ १४ ॥ धर्मी राजा सांजव्यो रे, तुमे किम जांखो एम
 ॥ ला० ॥ तपसी बोढ्यो त्रटकीनें रे, एहवा धर्मी न केम ॥ ला० ॥
 ॥ १५ ॥ जींति देशनें आवीउं रे, तपसी मारण काज ॥ ला० ॥ सोम
 देव चिंते तदा रे, क्रोध चढ्यो अति आज ॥ ला० ॥ १६ ॥ बेगो सं
 यारे देखीये रे, रायतणे निर्वेद ॥ ला० ॥ होजे अणसण आदखुं रे,
 पामी अतिशय खेद ॥ ला० ॥ १७ ॥ पूढ्यो बोले वांकडुं रे, तिणे
 नहीं पूढण लाग ॥ ला० ॥ प्रणमी ऊठ्यो तिहां अकी रे, वातनो का
 ठवा ताग ॥ ला० ॥ १८ ॥ फूल करे नदी उतरे रे, तापस एक ति
 वार ॥ ला० ॥ तेहनें पूढे एणी परें रे, कहो ए कीस्यो विचार ॥ ला०
 ॥ १९ ॥ आंशु नरी ते बोलीउं रे, जे अइ वात विस्तार ॥ ला० ॥ सां
 जनी निजस्थानक गयो रे, सोमदेव तिणवार ॥ ला० ॥ २० ॥ संज
 लावे सवि रायने रे, नूपति अधिक खेदाय ॥ ला० ॥ चिंतवे जइ प्रस
 न्न करुं रे, ए तपसी रुपिराय ॥ ला० ॥ २१ ॥ धर्मनो अर्थी राजवी
 रे, वाल तपस्वी तेह ॥ ला० ॥ सातमी ढाल शोहामणी रे, पद्म कहे
 ससनेह ॥ ला० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप अंतरे लेइने, परिजन साथे प्रधान; पयचारी तपोवन प्रते,

तपसी मेलन ताम ॥ १ ॥ पोहोतो ते परिवारथी, जाणुं तापस जा
म; कसुं अग्निशर्मा कने, आव्यो नूपति आम ॥ २ ॥ क्रोधानल बल
तो कहे, तेडयो कुलपति तात; तव आव्या कहे तेहने, विनयनी मू
की वात ॥ ३ ॥ जो जो कुलपति हुं नणुं, सुणजो साची वात; ए
ह अधम राजा इहां, तरु श्रेणी आयात ॥ ४ ॥ सुख न देखावे मुजने,
करीयें एहवुं काम; जिम पाठो ए जाय तेम, रूडुं याये राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ रामचंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ कुलपति चिंते एम, एह कषायें हखो री ॥ दृष्टियें न होये राय,
तो वर काम कखो री ॥ १ ॥ सन्मुख चाव्यो जाम, कुलपति रायतणे
री ॥ तव परिवारसुं राय, दीगो खेद घणे री ॥ २ ॥ विनयें प्रणमी
पाय, आशिष शीष लहे री ॥ लह्यो आणंद जब राय, कुलपति ताम
कहे री ॥ ३ ॥ आवो चंपकश्रेणी, बेशीयें तिहां सुमनारी ॥ एम कही
तिहां लेई जाय, आसन कुश तरणा री ॥ ४ ॥ विमल शिला पट ठाम,
कुलपति बेठा जीरो री ॥ नरपति बेगो नूमि, आणा लहियं तिरो री
॥ ५ ॥ कुलपति पूढे एम, किम पयचारी तुमे री ॥ आव्या एवढि
नूमि, अचरिज पामूं अमें री ॥ ६ ॥ वली साथें परिवार, तव बोव्यो
नूपति री ॥ पुरुष अधमनी वात, कहेवी नहीं जुगती री ॥ ७ ॥
धर्ममांदि अंतराय, तपसीनें में कखो री ॥ पाप नराणुं घोर, हवे किम
जव उतखो री ॥ ८ ॥ अग्निशर्मा स्वामी, किहां ठे तेह कहो री ॥ दे
खाडो नमुं आज, पातिक सर्व दहो री ॥ ९ ॥ कुलपति बोले ताम, मत
संताप करो री ॥ तुम माटें नवि कीध, अणसण एह खरो री ॥ १० ॥
अमचो एह आचार, अणसणें देह तजे री ॥ चरमवर्यें अम लोक,
तिणें अणसण ए जजे री ॥ ११ ॥ तव बोले नरराय, सुं बहु तमनें
कहुं री ॥ दरिण तेहनुं स्वामि, एक वार हुं लहुं री ॥ १२ ॥ कुलप
ति कहे सुणराय, ए वणि वात नहिं री ॥ म करो तस अंतराय, ध्या
नमां बेठा सही री ॥ १३ ॥ वली अवसर लही कोय, दरिण तास

करो री ॥ सांजली बोले राय, जे तुमे आण धरो री ॥ १४ ॥ वलि
 आवि सहुँ स्वामि, उठ्यो एम कही री ॥ आमण डमणो तेह, अव
 सर एह जही री ॥ १५ ॥ प्रणमी कुलपति पाय, चाढ्यो नयर जणी
 री ॥ तव एक तापस आय, वय तस बाल घणी री ॥ १६ ॥ धरतो
 पश्चात्ताप, वात ते सर्व कहे री ॥ अग्निशर्मा अनिप्राय, तव परमार्थ
 जहे री ॥ १७ ॥ हवे आवे श्रुं होय, कुलपति कष्ट करे री ॥ तिणें न
 वि घटतुं मुज, रहेवुं इण नयरे री ॥ १८ ॥ वली तपसीनी वाणि,
 अवणें सुणवी पडे री ॥ जिम तिम बोले तेह, ए पण वात नडे री ॥
 १९ ॥ पूठे लगननो दिन्न, निज आवास जइ री ॥ जोशी शुन अन्धा
 स, कहे तुं सुण नरवइ री ॥ २० ॥ कालमुहूर्त ते खास, स्थितिपड
 जणी री ॥ नांखि सर्वने वात, काल प्रयाण तणी री ॥ २१ ॥ सेना
 करी चतुरंग, चाढ्या प्रयाण करी री ॥ महिनें पोहोता ठेठ, आव्या
 तिण नयरी री ॥ २२ ॥ शणगारी सवि सहेर, पहोतो निज जुवने री ॥
 उठव महोठव कीध, नहिं विकल्प मनें री ॥ २३ ॥ सर्वतोन्नद आ
 वास, मांहि कैलि करे री ॥ दीन दुःखीजन जेह, ते सहुनें उदरे री ॥
 २४ ॥ समरादित्यनो रास, आवमी ढाल कही री ॥ पद्म कहे सुरसा
 ज, आगल वात वही री ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २५३ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर उद्यानमां, मासकल्प मर्याद ; मुनिवर विहारें महालता,
 पालंता अप्रमाद ॥ १ ॥ शिष्य समूहें श्रमण ते, सुंदर सर्व शरीर ; चौना
 णी चारित्र्योत्त, धोरी परिसह धीर ॥ २ ॥ वयजोबन आव्या व्रती, गुणरय
 णागर जेह ; कुजगर खंतीतणुं कसुं, निलय धर्मनो तेह ॥ ३ ॥ विजय
 सेन मुनिवर तिहां, नृपतिकुज संनूत ; कुशल पद मानुं ढग कस्यो,
 आचारिच अदभूत ॥ ४ ॥ अशोकदत्त गेठनुं अजब, दीसे चैत्य उदाम ;
 मागो अवग्रह मुनिरू, उतखा तिहां आराम ॥ ५ ॥
 ॥ ढाल नवमी ॥ ॥ तोरणथी रय फेरीउ रे हां ॥ ए देशी ॥

॥ जिहां सहकार शोहामणा रे हां, उर्जन विवर जणाय ॥ नविजन

सांजलो ॥ नीतिवंता नरपति जस्या रे हां, तेहवा सदल सठाय ॥ नवि०
 ॥ १ ॥ रुंख ते वावि कांते रह्या रे हां, शोने अधोमुख तेह ॥ नवि० ॥
 परस्त्री देखणनें यथा रे हां, उत्तम पुरुष सनेह ॥ नवि० ॥ २ ॥ विष
 य प्रसक्त पाखंमीया रे हां, लिंबन शोहे तेम ॥ नवि० ॥ वृद्ध
 अशोक शोने यथा रे हां, कुसुंन वस्त्र वर जेम ॥ न० ॥ ३ ॥ जीव
 लोक मनोरथपरें रे हां, बहुविध पादप होय ॥ न० ॥ हिमगिरि शि
 खरपरें सही रे हां, जिनवरचैत्य ते जोय ॥ न० ॥ ४ ॥ चरणकरण
 नी सित्तरी रे हां, पाले संजम नार ॥ न० ॥ इण अवसर राजा हवे
 रे हां, पूठे वात उदार ॥ न० ॥ ५ ॥ कौतुक दीतुं तो कहो रे हां,
 तव नामें कझाण ॥ न० ॥ एक अठेरूं जे कहुं रे हां, राय सुणो वर
 जाण ॥ न० ॥ ६ ॥ अशोकवन उद्यानमां रे हां, पाउधास्या कृषि
 राय ॥ न० ॥ जोवनें जींत्यो मारनें रे हां, सोवन वरणी काय
 ॥ न० ॥ ७ ॥ जो पण संग सहु तज्यो रे हां, सहुने करे उपकार
 ॥ न० ॥ धर्ममूरति धरी आवीयो रे हां, विजयसेन गणधार ॥ न० ॥
 ॥ ८ ॥ गंधार देशनो अधिपति रे हां, समरसेन राजान ॥ न० ॥ ते
 हनो नचुउं जाणीये रे हां, लक्ष्मिसेन सुत जाण ॥ न० ॥ ९ ॥
 में वांछा हर्षे करी रे हां, तव बोले नरराय ॥ न० ॥ ताहारो नव
 सफलो थयो रे हां, तुं कृतपुण्य जणाय ॥ न० ॥ १० ॥ हुं पण का
 ले वांदछुं रे हां, एम हर्षे गई रात ॥ न० ॥ आमंवरथी वंदिआ रे हां,
 साधु सवे परजात ॥ न० ॥ ११ ॥ देखी देखी हरखतो रे हां, पुज
 कित थाये तन्न ॥ न० ॥ आणंदवाह जल पूरीआ रे हां, नयणविक
 स्वर मन्न ॥ न० ॥ १२ ॥ ललि ललि प्रणम्यो प्रेमछुं रे हां, माने धन्य अ
 वतार ॥ न० ॥ धर्मजान दीधो गुरु रे हां, शाश्वत सुख दातार ॥ न० ॥
 ॥ १३ ॥ चिंता सिद्धिवधू तणी रे हां, तिणें डुर्बल थयुं तन्न ॥ न० ॥
 अठार सहस शिलनारथी रे हां, नवि खेदायुं मन्न ॥ न० ॥ १४ ॥ ए
 हवा मुनिवर प्रणमीउं रे हां, बेगो गुरुनें पाय ॥ न० ॥ रूपचरित्र दे
 खी करी रे हां, मनमां विस्मित आय ॥ न० ॥ १५ ॥ पूठे राज्य ठो

डी करीरे हां, किम लीधो व्रतनार ॥ ज० ॥ श्यो वैराग्य ते उपनो रे
 हां, किम ठांम्यो संसार ॥ ज० ॥ १६ ॥ मुनिवर कहे सुण नरपति
 रे हां, शुं पूढे वैराग ॥ ज० ॥ जे संसारमां देखीयें रे हां, ते वैराग्य
 महाजाग ॥ ज० ॥ १७ ॥ ठाम ठाम निर्वेद ठे रे हां, चिहुं गतिमां सं
 जाल ॥ ज० ॥ जन्म मरण नहीं केहने रे हां, सधजाने शिर काल
 ॥ ज० ॥ १८ ॥ लखमी अथिर नवि सुख दिये रे हां, ध्याव्यो शुं करी
 पुण्य ॥ ज० ॥ जावुं किण ठामें वली रे हां, ए ज्ञानें पण शून्य ॥ ज०
 ॥ १९ ॥ वली मानवनो नव जलो रे हां, रयणचिंतामणि तुल ॥ ज० ॥
 मानअणी जल जेहवुं रे हां, जीवित हारे थूल ॥ ज० ॥ २० ॥ कु
 पित जुजंगम सारिखा रे हां, कामजोग संसार ॥ ज० ॥ गजकर्ण बीज
 चंचल यथा रे हां, रुद्रि शरद जलधार ॥ ज० ॥ २१ ॥ तप चारित्र
 न आदरे रे हां, ते नर दुर्गति जाय ॥ ज० ॥ पामे विपाक बीहाम
 णा रे हां, नारक तिरि गति आय ॥ ज० ॥ २२ ॥ बहुदुःखें करी व
 ली रह्यो रे हां, रोग शोक विप्रयोग ॥ ज० ॥ नवनाटक नाटक समुं
 रे हां, रीजी करे मूढ लोग ॥ ज० ॥ २३ ॥ मोक्षसाधन तिणे साधी
 यें रे हां, ए दुःख टालण हार ॥ ए मुज निमित्त वैराग्यनुं रे
 हां, सामान्यें संसार ॥ ज० ॥ २४ ॥ वलिअ विशेष सुण माहुरूं रे
 हां, जेह चारित्र निमित्त ॥ ज० ॥ नवमी ढालें पदम कहे रे हां, सु
 निवर चरित्र पवित्र ॥ ज० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २८३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंजू छीप इण विजयमां, देश गंधार उदाम ; निवशुं गंधार नयरीयें, तिण
 पूरीयें मुज ताम ॥ १ ॥ मित्र एक तिहां माहरे, सोमवसु सुतसार ;
 बिनावसु यणुं वालहो, पुरोहित प्राणआधार ॥ २ ॥ एक दिन ते आतं
 कथो, दैवें दीधो दंभ ; मरण लह्यो मुज देखतां, दुःख ते दीध प्रचंभ ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ जाऊरिआ मुनिवर धन धन तुम्ह अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर तिहां आविया जी, विचरता मुनिवर चार ॥ चोमासुं

रहेवा नणी जी, करतां उग्रविहार ॥ १ ॥ नवि जाव धरीनें वंदो ए
 अणगार ॥ ए आंकणी ॥ गंधार पर्वतनी गुफा जी, तिहां आवीनें
 गाय ॥ मुनि मुजने बहाला वणा जी, चरपुरुषें कहुं आय ॥ २ ॥
 नवि० ॥ हुं पण शीघ्र गयो तिहां जी, दीठा करतां सजाय ॥ वंदीया
 में हर्षें करी जी, आणंद अंग न माय ॥ ३ ॥ नवि० ॥ धर्मलान
 दीधो तिणें जी, पूढीमें सुखशांत ॥ वंदीने हुं धरें गयो जी, नित्य करुं ए
 अवदात ॥ ४ ॥ नवि० ॥ मास स्वमणने पारणुं जी, करे चारे मुनिराय,
 नित्य बधते परिणामधी जी, मुज तिहां समकित आय ॥ ५ ॥ नवि० ॥
 चार मास ते बहि गया जी, रयणीयें चिंतव्युं एम ॥ काले महा तपसी
 जशे जी, तव करहुं कहो केम ॥ ६ ॥ न० ॥ वंदन निमित्तें चालीउं
 जी, चार घडी जेइ रात ॥ थोडी नूमि गयो जेटले जी, आव्यो सुरनित
 वात ॥ ७ ॥ नवि० ॥ अजुआलुं गगनें थयुं जी, गाज्यो गिरि गंधार ॥ प्रचली
 तिहां वसुंधरा जी, जय जय रवविस्तार ॥ ८ ॥ नवि० ॥ अधिक हर्ष तव
 मुज थयो जी, आगलें जाउं जाम ॥ पृथ्वी सम करीने तिहां जी, काढ्यां
 तृणादिक ताम ॥ ९ ॥ नवि० ॥ गंधोदक वरसे तिहां जी, पुष्पवृष्टि बली
 आय ॥ थोकें थोकें देवता जी, आवी स्तवनां कराय ॥ १० ॥ नवि० ॥
 मानव नव नलें पामीया जी, क्य कल्या रागनें दोष ॥ कर्म सैन्य
 जींत्युं तुमें जी, नवसायर कस्यो शोष ॥ ११ ॥ नवि० ॥ एम सांजली
 में चिंतव्युं जी, गुरु लह्या केवल ज्ञान ॥ जन्म मरण दुःख कापीयां
 जी, पाम्या शाश्वत थान ॥ १२ ॥ नवि० ॥ रयण सिंहासन सुर रचे
 जी, बेठा शांत स्वरूप ॥ मूर्तिमंत गुणगण तणा जी, मूक्यो नवजय
 कूप ॥ १३ ॥ नवि० ॥ में कीधो देखी करी जी, निश्चय नहीं संदेह,
 रोमांचित थइ प्रणमीउं जी, हर्ष न माये देह ॥ १४ ॥ न० ॥ केवली
 यें तीहां देशना जी, दीधी करी विस्तार ॥ निज निज संदेह पूढता जी,
 सुर नरना बहुवार ॥ १५ ॥ नवि० ॥ में पण मनमां चिंतव्युं जी,
 पूढुं मुज संदेह ॥ विनावसु किहां उपनो जी, बाले जे मुज देह ॥
 ॥ १६ ॥ नवि० ॥ पूढुं एम में चिंतवी जी, स्वामी थयो केइ काल ॥

महारो मित्र मुज देखतां जी, ततक्षण थयो विसराल ॥ १४ ॥ नवि० ॥
 किहां जइनें ते उपनो जी, हमणां अनुजवे कांय ॥ जिनमत जाणुं हुं
 खरो जी, पण मुज दुःख किम थाय ॥ १५ ॥ नवि० ॥ केवली कहे
 तुमे सांनलो जी, एहना नव विकराल ॥ धर्म कखा विण प्राणीया जी,
 किम लहे सुख असराल ॥ १६ ॥ नवि० ॥ समरादित्यना रासमां जी,
 नांखी ए दशमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे सांनलो जी, केवली वचन
 रसाल ॥ १७ ॥ नवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रजक एक इण नयरमां, कसदिन्न इण नाम, श्वानी मधुपिंगा वसे ॥
 तेहनें गर्जे ताम ॥ १ ॥ उपनो श्वानपणे इहां, रज्जुये बांध्यो रह, नू
 ख्यो तरश्यो रासजी, निकटें करतो नद ॥ २ ॥ रासजी पाटुप्रहारथी,
 नय पामे अति नीत; हमणा अनुजवे एहवुं, पण तुज पूरव प्रीति
 ॥ ३ ॥ पुष्करार्ध-कुसुमपुरें, नरतक्षेत्रमां जाव; कुसुमसार तुं तिहां
 कणो, सेठ सवे शिरदाव ॥ ४ ॥ श्रीकांता ए स्त्री हती, नडिउ तेह
 सनेह; पोताना जे पुरुष ते, तेडण मूके तेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ दास अरदास शीपरें करे जी ॥ ए देशी ॥

॥ तेह चाकर उसदिन्न घरें जी, जइने मुकावीउ श्वान ॥ आहारनें
 पान दिधूं वली जी, लेइ आव्या तिणथान ॥ १ ॥ जुउं जुउं कर्म विचि
 त्रता जी ॥ ए आंकणी ॥ कमिकुलें व्यापित देहडी जी, बहुरे चांदां
 पड्यां तास ॥ क्षीण तनु रुधिर अंगें ऊरे जी, गति अति मंद ठे जास
 ॥ २ ॥ जुउं० ॥ नजरें आवे ते दंतावलि जी, काढतो जीन विकराल ॥
 देखी संवेग मुज उपनो जी, अहो अहो नवचक्रवाल ॥ ३ ॥ जुउं० ॥
 श्वान पण पुढ हलावतो जी, वाह जल नरीय ते नयण ॥ देखी मुजनें
 ते उन्हाइउ जी, नवि कहेवाये ते वयण ॥ ४ ॥ जुउं० ॥ ज्ञानीनें
 पूठ्युं तव ते कहे जी, पूर्वजवनो ए प्रेम ॥ वातविशेष जाणे नहीं जी,
 पण ए सामान्यथी एम ॥ ५ ॥ जुउं० ॥ एह स्वनाव संसारनो जी,

आवे जे कीधो अन्यास ॥ कोईक काल अनानोगथी जी, पहुँचे पू
 र्वतणी वास ॥ ६ ॥ जुउं ॥ पूठयुं म्हें स्वामी कुण कर्मथी जी, पामी
 उं एह विवाग ॥ जातिमदथी केवली कहे जी, पूठयुं म्हें धरी लाग
 ॥ ७ ॥ जुउं ॥ कोण अनिमान एणें कथुं जी, बोलीआ तव गुण
 वंत ॥ अनंतर नवें गणिका तणां जी, वृंद रमवा निकसंत ॥ ८ ॥
 ॥ जुउं ॥ तरुणजन वृंदयुं परवरी जी, अनुनवे वसंतनी क्रीड ॥
 इण समे रजकनी चच्चरी जी, निकली अई तस पीड ॥ ९ ॥ जुउं ॥
 जाति कुल बल गर्वें करी जी, किम जाये नीच अम पास ॥ दोष अ
 ज्ञानथी चिंतवे जी, किधी कदर्थना तास ॥ १० ॥ जुउं ॥ उसदिन्न
 मुख्य तेहमां अठे जी, ऊकडी बांध्यो दृढ बंध ॥ बंदीखाने मोकलावीउ
 जी, एम कखो बहुल तिणे धंध ॥ ११ ॥ जुउं ॥ मान परिणामना
 वशथकी जी, बांधीयुं अशुन तिहां आय ॥ नयरलोके उसदिन्ननें जी,
 ठोडव्यो करी सुपसाय ॥ १२ ॥ जुउं ॥ वेण्या ते कर्मथी कूतरो जी,
 उपनो इण नव एह ॥ सांनली में तिहां चिंतव्युं जी, अहो संसार
 दुःख गेह ॥ १३ ॥ जुउं ॥ में कर जोडीनें पुठायुं जी, कब एह कर्म
 नो अंत ॥ नव्य अनव्य के किम प्रनू जी, नांखियें मुऊ नगवंत
 ॥ १४ ॥ जुउं ॥ पामीउ बीज के ए नहीं जी, तव कहे गुरु गुणवंत ॥
 सांनलो तेह विस्तारथी जी, जिम एह कर्मनो अंत ॥ १५ ॥ जुउं ॥
 उसदिन्न घर एक रासनी जी, तेहनी कुखें ए श्वान ॥ उपजरो ए म
 र्दजपणो जी, नार वहतो अप्रमाण ॥ १६ ॥ जुउं ॥ क्लेश खमतो
 बहु तिहां कणो जी, काल करीनें तस गेह ॥ नाईदिन्न चंमाल नार्या
 जी, अणहिंगा कुखें रह्यो एह ॥ १७ ॥ जुउं ॥ तेह नपुंसक नीपनो
 जी, रूप दौर्जाग्य देखाय ॥ सिद्धें माखो वली तेहनें जी, कुखें चंमाल
 लणी आय ॥ १८ ॥ जुउं ॥ नाग मशीउ बाल कालमां जी, मरी वली
 उसदिन्न धाम ॥ दत्तिआ दासी कुखें थयो जी, जातिअंध नपुंसक ताम
 ॥ १९ ॥ जुउं ॥ वामणोनें सहु परिनवे जी, इण समे नयरनो दाह ॥
 तेहमां मरि वली तेहनी जी, कुखें स्त्रीनव तणो लाह ॥ २० ॥ जुउं ॥

राजमार्गे हएयो हाथीयें जी, तिणें कखो तिहांथकी काल ॥ हवे
 तेह रजकनी जारजा जी, कालंजणी नामें निहाल ॥ ११ ॥ जुउं ॥
 तास कुखें थई पुत्रिका जी, पामी हवे जोवनवेद ॥ उसरकित नामें र
 जकनें जी, दरिद्रीने दीधी महाखेद ॥ १२ ॥ जुउं ॥ गर्नवंती थई अनुक्रमें
 जी, प्रसवनी वेदना तास ॥ पंचत्व पामी निजमातनी जी, कुखें उपनो सु
 त खास ॥ १३ ॥ जुउं ॥ तेहवे बालक कालमां जी, गंधार सरितानें
 तीर ॥ रमतो रमतो गयो तिहां किणें जी, जेहमां उंमां बहु नीर ॥ १४ ॥
 ॥ जुउं ॥ उसदिन्न शत्रु एक तिण समे जी, आवीउं नाम चिलात ॥
 कोटें शिखा बांधी खेपवी जी, नदीअ करशे ते घात ॥ १५ ॥ जुउं ॥
 जातिमदथी इण बांधीउं जी, कर्मनुं ए अवसान ॥ नव्यनें सिद्धिगामी
 खरो जी, पण न लह्यो बीजतान ॥ १६ ॥ जुउं ॥ बांधतां कर्म दीसे
 नहीं जी, जोगवतां महा दुःख ॥ ढाल अग्यारमी एम कही जी, पञ्च
 कहे धर्मथी सुख ॥ १७ ॥ जुउं ॥ सर्व गाथा ॥ ३३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥

॥ आचारिय कहे पूठिउं, में केवलीने ताम; जलमरणें जाशे नहीं,
 कव समकित किण ताम ॥ १ ॥ केवली कहे सुण तिहांथकी, पामी
 गुन परिणाम; सुरवर व्यंतर थायशे, आगम कालें आम ॥ २ ॥
 तिणे नवमां तीरथपति, आणंद इण अजिधान; पासें समकित पा
 मीउं, सुरतरु सिद्धि समान ॥ ३ ॥ चउगइ चमण नमी करी, सांजली
 नवसंख्यात; इण गंधारह जणवयें, थाशे पृथ्वीनाथ ॥ ४ ॥ विद्याधर
 वैरागीआ, अमर तेज अणगार; तेहने पासें व्रत लेइ, पालशे प्रीति
 अपार ॥ ५ ॥ केवलज्ञान लही करी, पामशे नवनो पार; सांजलीनें
 हुं समजीउं, राग गयो संसार ॥ ६ ॥ ए वैराग्यें आदखुं, पूठि मात
 पिताय; चारित्र चोखें चित्तखुं, इंदुदत्त गुरुपाय ॥ ७ ॥ विजयसेन
 गुरु वणैव्यो, वारु निज वैराग; साचुं कहे गुणसेन सुणी, जला तमे
 महाजाग ॥ ८ ॥ पण तुम्हें जांख्युं पूर्वें, मोक्षनुं साधन सुज; मोक्ष
 तुं साधन कहो मुने, जेह होये अविरुज ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ हंसजानी देशी ॥

॥ मोरा साहिब हो, श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ सूरि नांखे हो, सांनल नरनाह के ॥ ओहू ध्यानक शाश्वत कहुं ॥ जरा मरण नें हो, नहीं जनमनैं रोग के ॥ शोकादिक उपडव सहु ॥ १ ॥ ना ए दरिशन हो, ठे जास सरूप के ॥ चौद राज्य शिर जे रह्या ॥ हवे सांनल हो, कहुं तास उपाय के ॥ नाए दर्शन चरणज कहा ॥ २ ॥ बिहुं जेदें हो, साधु श्रावक धर्म के ॥ बार प्रकार गृही तणो ॥ पांच अणुव्रत हो, त्रण गुण व्रत सार के ॥ चार शिखाव्रत एम गणो ॥ ३ ॥ मुनिराजनो हो, दशविध यति धर्म के ॥ दोयनुं मूल दर्शन जणो ॥ ते डुर्जन हो, प्राणीवश कर्म के ॥ तेह कर्म आवज सुणो ॥ ४ ॥ ज्ञाना वरणनैं हो, बली दर्शनावरण के ॥ वेदनीमोह आयु बली ॥ नामगोत्रनैं हो, अंतराय ए आव के ॥ एहनो हेतु कहे केवली ॥ ५ ॥ मिह अन्नाए हो, अविरतिनैं प्रमाद के ॥ बलि कषाय जोग जाणीयें ॥ विड्ड विहा हो, उक्कोस जहन्न के ॥ एक परिणामें ते आणीयें ॥ ६ ॥ ती व्रपरिणामें हो, उत्कृष्ट बंधाय के ॥ आदि त्रणनैं अंतरायनी ॥ त्रीश सागर हो, कोडाकोडी जाण के, ते त्रीश सागर आयनी ॥ ७ ॥ सीत्ते रनी हो, मोहनी कोडा कोडि के ॥ वीश कोडाकोडी शेषनी ॥ मध्यमना हो, होय बहु परकार के ॥ यिति परिणाम विशेषनी ॥ ८ ॥ आव आव नी हो, नाम गोत्र मुहूर्त के ॥ वेदनीयनी बारते ॥ शेषनी जिन हो, मुहूर्त जहन्न के ॥ यिति बांधे एकवार ते ॥ ९ ॥ घंसनानें हो, घोलना परकार के ॥ यथाप्रवृत्ति करणें करी ॥ बहु क्य करे हो, आयु विण सग कर्म के ॥ कोडा कोडी एकज धरी ॥ १० ॥ इत्यादिक हो, विधि ग्रंथी जेद के ॥ रागद्वेषनी आकरी ॥ पामे समकित हो, करी अनिवृत्ति करण के ॥ ठोडवे मोहनी चाकरी ॥ ११ ॥ यतः ॥ “जागंतिता पढमं, गंति समश्च जे बौर्य ॥ अनिअट्टिकरणं पुण, समत्त पुरस्कडे जीवे ॥ १ ॥” समसंवेद हो, निर्वेद अनुकंप के ॥ इत्यादि विस्तार बहु ॥ त्रण करणनो हो, कह्यो बहु अधिकार के ॥ कर्मपयडीयी जाणो

सहु ॥ १२ ॥ अपराधी हो, उपर पण क्रोध के ॥ न करे जाणी विपा
 कर्ने ॥ चक्री शक्रनां हो, सुख ते दुःख रूप के ॥ जाणे तुव्य किंपाकने
 ॥ १३ ॥ शिवसुख विण हो, नवि इठे अन्य के ॥ अनुकंपा दुःखीनी
 करे ॥ इव्य नावथी हो, होय गुनपरिणाम के ॥ शंकादिक दूषण हरे
 ॥ १४ ॥ वली जाणे हो, सत्यनें निशंक के ॥ जे जिनवर नांखी
 गया ॥ थोडा कालमां हो, एहवा जे जीव के ॥ अव्याबाध सुखी
 अया ॥ १५ ॥ तेह समकिती हो, अनुक्रमें देशविरति के ॥ तव थूल
 व्रत अंगी करे ॥ बार व्रतने हो, तेहना अतिचार के ॥ वधबंधादिक
 नवि धरे ॥ १६ ॥ व्रत जंगा हो, कोडयो गमे थाय के ॥ तेह सवि देश
 विरति गणो ॥ तेह वातो हो, बहु शास्त्रमजार के ॥ इहां आये ग्रंथ
 ज घणो ॥ १७ ॥ हलवो अइ हो, अनुक्रमें जीव के ॥ संख्यसागर क्य
 जब करे ॥ तव संजम हो, कोइ उपशम श्रेणी के ॥ कोई कृपक
 श्रेणी करे ॥ १८ ॥ यतः ॥ जणीयंच ॥ “समत्तमिउलडे, पलिअ पुहु
 तेण सावउ होळा ॥ चरणोवसमस्कयाणं, सागरसंखंतरा हुंती ॥ १ ॥
 पुरी कृपकनीहो, आये जब श्रेणी के ॥ घातिक्ये केवल लहे ॥ अघाती
 हो, करी कर्मनो घात के ॥ सादि अनंत सुखमां रहे ॥ १९ ॥ एम
 सांनली हो, गुणसेन राजन्न के ॥ गुनपरिणाम अनलें दहे ॥ कर्म इ
 धणां हो, बाली समकित के ॥ देशविरति नावें लहे ॥ २० ॥ कर
 जोडी हो, कहे हुं प्रभु धन्य के ॥ जिणे तुम्ह वयणां सांनल्यां ॥ रागविपनुं
 हो, जे टालणहार के ॥ पापपंक जल सम मद्यां ॥ २१ ॥ ढाल बा
 रमी हो, समरादित्य रास के ॥ नांखी एह शोहामणी ॥ पद्मविजयें हो,
 समकित देशविरति के ॥ पामवा जिम होय सुरमणि ॥ २२ ॥ सर्व ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी नरपति कहे, विजय सेननें वाणि; गृहस्थधर्म गुणसे
 ननें, उच्चरावो प्रभु आणि ॥ १ ॥ अणुव्रत तस उच्चरावियां, साचां
 सनकित मूल; बहु विध तास बतावीउ, नरपतिनें अनुकूल ॥ २ ॥ प्र
 णमी गुरु परिवारशुं, गयो ते आपण गेह; जोजन करी वली नाव

सुं, पोहोतो गुरु पाय तेह ॥ ३ ॥ बलि सेवा करी आवीउं, उन्नयका
ल नित्य एम; सांजले गुरुवाणी सदा, मास गयो एम प्रेम ॥ ४ ॥ स
मज्यो धर्म सारी पठें, विजयसेन करे विहार; धर्म करे धरणीपति,
पूरे पुण्य प्रकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ मुनिमनसरोवर हंसलो ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिनै हवे तेह नरपति, बेगो जुवे तमासो रे ॥ देखे तिहां स
ब नरतणूं, पामे अति अविस्वासो रे ॥ १ ॥ अथिर संसार एणी परें
॥ ए आंकणी ॥ चार जणे ते उपाडिउं, बंधुजन परिवार रे ॥ करे
आक्रंद अति घणो, पण नवि करे कोई सार रे ॥ २ ॥ अथि० ॥
संवेगनावित जीवनें, उपजे सहु इंडजाल रे ॥ मृतकनुं मिमिम वाजतूं,
जगावे बाल गोपाल रे ॥ ३ ॥ अथि० ॥ देखीनें नरपति चिंतवे, धर्म
ध्यान जस चित्तो रे ॥ अम्ह पण इण परें होयशो, ए संसार विचि
त्तो रे ॥ ४ ॥ अथि० ॥ मरणधर्मा सहु प्राणिआ, हाहा नव गयो
आलें रे ॥ नरपति सुरपति सहु जना, नवि दिसे कोइ कालें रे ॥ ५ ॥
॥ अथि० ॥ धन्य ते शेर सेनापति, चिंतामणि सम जाणी रे ॥ घर
ठांमी व्रत आदरे, धन्य धन्य तास कमाणी रे ॥ ६ ॥ अथि० ॥ दीक्षा
लेई व्रत पालतां, शुद्धमान लिये आहार रे ॥ दोष बेंतालीश टालतां,
धन्य तेहनो अवतार रे ॥ ७ ॥ अथि० ॥ संयोजनादिक दोष
जे, पांच कह्या जिनराजें रे ॥ दोष न लगावे तेहमां, जगमां सहु
शिर गाजे रे ॥ ८ ॥ अथि० ॥ पांच समिति सुमता रहे, बली
त्रण गुप्तिनें धारे रे ॥ अणसण प्रमुख तप करे, नित्य प्रमादने
वारे रे ॥ ९ ॥ अथि० ॥ पंच महाव्रत जावना, जे नांखी पण
वीश रे ॥ ईयां समितिमुख ते सवे, पाले जे गतरीश रे ॥ १० ॥
अथि० ॥ मासादिक पडिमा वहे, अण्हाणनें बली लोच रे ॥ लाज
अलानें जे सम रहे, तेहमां हर्ष न शोच रे ॥ ११ ॥ अथि० ॥ निः
प्रतिकर्म शरीर जे, सम तृण मणि शत्रु मित्र रे ॥ धारे अनिग्रह न

वनवा, इव्यादिक जे विचित्र रे ॥ १२ ॥ अथि० ॥ अठार सहस सी
 लांगना, धोरी समरस जीजे रे ॥ उपमा नहीं जस जगतमां, एम नि
 त्य कर्मनें पीजे रे ॥ १३ ॥ अथि० ॥ ग्राम नगर पुर पाटणे, नव क
 ल्पी करे विहार रे ॥ पृथिवीनें जे पावन करे, टाळे विषय विकार रे
 ॥ १४ ॥ अथि० ॥ मिथ्यात्व कचरामां खूचीआ, तेहने देई उपदेश रे ॥
 रविपरें कादव शोपवी, आपे गुण सुविशेष रे ॥ १५ ॥ अथि० ॥ सं
 लेषणा तप आदरी, अणसण करे सुनिराय रे ॥ पादपोषगमनादिकें,
 ठामें जे निज काय रे ॥ १६ ॥ अ० ॥ धन्य धन्य ते जग नरवरा, धन्य
 धन्य तेहनी माय रे ॥ धन्य धन्य वंश दीपावीउं, जे एहवा रुपिराय रे
 ॥ १७ ॥ अ० ॥ हुं पण एणि विधियें करी, देह तणो करुं त्याग रे ॥ मुऊ
 गुरु कल्पपादप समो, विजयसेन महाजाग रे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सयल
 लोकमां सूरज समो, शाश्वत सुखनो दातार रे ॥ लस्को नवें पण दो
 हिलो, उतारे नवपार रे ॥ १९ ॥ अ० ॥ निरुपम चिंतामणि समो,
 धर्मनो सारथी जेह रे ॥ आदरुं संजम शुन परें, ठांमी राज्यने गेह
 रे ॥ २० ॥ अ० ॥ सुबुद्धि प्रमुख मंत्रीश्वरा, तेडावी एम नांखे रे ॥
 निज अणिप्राय जे उपनो, ते सघलो कही दाखे रे ॥ २१ ॥ अ० ॥
 ते पण राय संगें करी, जाणे जिनवचसार रे ॥ हर्ष धरीनें बोलीआ,
 धन तुमचो अवतार रे ॥ २२ ॥ अ० ॥ अहो अहो तुम्ह विचार नें,
 महोटा पुरीस सरीसो रे ॥ पवनाहत जलचंदलो, जीवित चपल न
 रीसो रे ॥ २३ ॥ अ० ॥ तिणें करी कृत्य ते एह ठे, सुखदायक एह
 जाणो रे ॥ एहमां न प्रतिबंध कीजीयें, जेह करे ते अजाणो रे
 ॥ २४ ॥ अ० ॥ बलती आगथी नीकले, तेहनें कहो कोण वारे रे ॥
 कोपी कदापि वारे जिके, ते शत्रुपणुं धारे रे ॥ २५ ॥ अ० ॥ तिणें
 अमें बहु राजी यया, अममां बुद्धि यणेरी रे ॥ पण अम्हे मरण वा
 री शकुं, एहवो नहीं को नजेरी रे ॥ २६ ॥ अ० ॥ हर्ष लह्यो सुणि
 नरपति, नांखी तेरमी ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, आगल
 वात रसाज रे ॥ २७ ॥ अ० ॥ इति सर्व गाथा ॥ ४०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे मंत्रीप्रत्ये, मुऊनें कोण कहे आम; हितुउं तूम टाली
नहीं, माहरी राखी माम ॥ १ ॥ एम अतिशय आदर करी, देवरावे
महादाण; नक्ति करे जिनछुवनमां, जिनपडिमा जिन जाण ॥ २ ॥
अछाइ महोत्तव आदरे, स्नेहीनें संतोष; पुत्र चंडसेन थापीउं, प्र
जानें करवा पोष ॥ ३ ॥ विजयसेन जिहां विचरता, कालि जवुं तह
कीक; प्रवर्ज्याजावें पडिवजी, ठायो धर्मे ठीक ॥ ४ ॥ जोई एकांतवर
जायगा, पडिमा तेह पवन्न; सर्व राई सुसमाधिशी, धर्मी एहज धन्न ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ हवें अग्निशर्मा ते तपसी, तप करतां पडयो ते जपसी रे ॥ क्रोधा
नल बलीयो ॥ बहुलख पूरवतप परजलीयुं, पण सघलुं धूलिमां म
लीयुं रे ॥ १ ॥ क्रो० ॥ सुरमणि दरिद्र घरे नवि ठाजे, सातंग घरे गज
किम राजे रे ॥ क्रो० ॥ मरुधरणी कटपट्टक न होय, किम रांक घरे
राज्य ते जोय रे ॥ २ ॥ क्रो० ॥ अंध घरे किम पद्मणी नारी, किहां
थी निन्न घरे चित्र सारी रे ॥ क्रो० ॥ अग्निकुंमें किहां कमलनो वासो,
नागचित्तमां उपशम खासो रे ॥ ३ ॥ क्रो० ॥ अज्ञानी घरे तप जे
एहवो, केम ठाजे चिंतामणि जेहवो रे ॥ क्रो० ॥ तपनुं अजीर्ण क्रोध
ते नांख्यो, ज्ञाननुं अहंकार ते दाख्यो रे ॥ ४ ॥ क्रो० ॥ क्रिया अ
जीर्ण पारकी निंदा, आहारनुं वमन करंदा रे ॥ क्रो० ॥ जो मुऊतपफल
होय तो सार, याजो जव जव मारणहार रे ॥ ५ ॥ क्रो० ॥ करीय नि
याणुं ने तप फल हाखो, न रह्यो कुलपतिनो वाखो रे ॥ क्रो० ॥ वेच्यो
हाथीनें कीडी मागी, उलटी दुःखशूली जागी रे ॥ ६ ॥ क्रो० ॥ अण
पडिकमतो तेह नीयाण, जैन वासनाविणु अन्नाण रे ॥ क्रो० ॥
काल करी विद्युतकुमार, आयु दोढ पव्योपमधार रे ॥ ७ ॥ क्रो० ॥
दीधो तिणें उपयोगशुं दीधूं, शुं होम हवन वली कीधूं रे ॥ क्रो० ॥ देव
तणी रुद्रि जिणथी पाम्यो, मुऊ पुण्य पूर्वनो जाम्यो रे ॥ ८ ॥ क्रो० ॥

विचंगझानें पूर्वजव दीगो, तव गुणसेन लागो अनिगो रे ॥ क्रो० ॥
 मुखसेन नरपति उपरें कोप्यो, क्रोधनें अझानें लोप्यो रे ॥ ए ॥ क्रो० ॥
 पडिमा रह्यो मुनिवर परें राय, आवि देखीनें क्रोध नराय रे ॥ क्रो० ॥
 नरक अग्नि समी बलती धार, धूलिवृष्टि करे तेवार रे ॥ १० ॥ क्रो० ॥
 ते वेजुथी दाऊतो अंग, करी शमताशुं अतिरंग रे ॥ शमतारस नरी
 यो ॥ चित्तें गुरु सत्वे संपत्तो, जिनप्रणीत धर्ममां रत्तो रे ॥ ११ ॥ श
 मता० ॥ शरीर मानस दुःख जिहां लहीयें, संसारें सुलज दुःख कहीयें
 रे ॥ श० ॥ डुकर धर्मतणी पडिवत्ति, जेहथी सुख लहीयें ऊत्ती रे
 ॥ १२ ॥ श० ॥ नवसायर नमतां नवलस्कें, दुर्जन धर्म रयण जे
 रस्के रे ॥ श० ॥ जास प्रजावें पालतां राज्य, नवि लहीयें दुःख समा
 ज रे ॥ १३ ॥ श० ॥ नवअनादिमां धर्म में लहीउं, अनाशरण दोपें
 करी रहिउं रे ॥ श० ॥ एहज सफल अयुं सहु जगमां, विजयसेन
 आचार्यनी वगमां रे ॥ १४ ॥ श० ॥ पण मुज हृदयमां हि घणुं
 साजे, दुःख दिधूं पूर्वकालें रे ॥ श० ॥ अग्निशर्मानें वली अंतें, करी
 तपमां कदर्थना जंते रे ॥ १५ ॥ श० ॥ आदस्यो मैत्रीनावमें तेहशुं,
 सहु जीवथी विशेषें एहशुं रे ॥ श० ॥ गुन परिणाम वधारो करतां,
 तिणे पापियें रजशुं नरता रे ॥ १६ ॥ श० ॥ आशुं पूरें कीधो वि
 निपात, पण न थयो धर्म व्याघात रे ॥ श० ॥ चंडानन विमानमां
 जाय, सौधमें सागर एक आय रे ॥ १७ ॥ श० ॥ उत्पत्ति देव तणी
 इहां कहीयें, जेम सूत्रसिद्धांतें लहीयें रे ॥ श० ॥ ते विधि संक्षेपें
 सुणो सयणां, जिनवर नाशित जे वयणां रे ॥ १८ ॥ श० ॥ चौदमी
 ठालें चातुर पुरुषें, सज्यो दृढ परिणामज हर्षें रे ॥ श० ॥ पद्मवि
 जय कहे गुणसेन राजा, जाणो समरादित्य जीउ ताजारे ॥ १९ ॥
 ॥ श० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संक्षेपें करी सुरतणी, वात कहुं विस्तार; श्रुतसा
 यरथी समजजो, अधिको जे अधिकार ॥ १ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥

॥ इंधनुय जिम विजली रे, जिम गगनें घनवात ॥ तिम कृणमांहे
सुर तणो रे, शय्यामां उत्पातो रे ॥ १ ॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ शय्यायें
तेह उपजे रे, मूकि इह नवदेह ॥ दिव्य ते अंतर मुहूर्तमां रे, सुरनव
शक्ति एह रे ॥ २ ॥ पु० ॥ गीत गाये देवांगना रे, कुसुम बुछी करे तेह ॥
विणानाद विनोदथी रे, नाटक करती जेह रे ॥ ३ ॥ पु० ॥ सिंहनाद
सुरवर करे रे, हरखे देखी रे तास ॥ सुरनव दुर्जन पामीआ रे, जाणी
होय उल्लास रे ॥ ४ ॥ पु० ॥ अनुनवतो पंच विषयनें रे, हरख्यो उठे
रे देव ॥ देवदूष्य जे वस्त्र ठे रे, ते मूके ततखेव रे ॥ ५ ॥ पु० ॥
परिकर प्रेम पमाडतो रे, दिव्यरूप धर जेह ॥ पूरो शारद शशीपरें रे,
सहु जय जय ते करेह रे ॥ ६ ॥ पु० ॥ देव देवांगना सहु नमे रे,
जय जय शब्द करंत ॥ शुणतां सुर सुरी देखीने रे, एम चित्तमांहि धरं
त रे ॥ ७ ॥ पु० ॥ शुं होम्युं शुं दीधलुं रे, पाम्यो ए फल जास ॥
दिये उपयोग अवधि तणो रे, परनव जाणी ते खास रे ॥ ८ ॥ पु० ॥
पूठे सामानिक सुर प्रत्यें रे, कहो मुऊ करणी जेह ॥ जिनप्रतिमा
दाढा तणी रे, पूजा करो कहे तेह रे ॥ ९ ॥ पु० ॥ वांची पुस्तक
रत्ननां रे, जेई धर्म व्यवसाय ॥ सुरवर वृंदें परिवख्यो रे, सिद्धायतनें
जाय रे ॥ १० ॥ पु० ॥ पूजा करे जिनसजनी रे, फूलपगर वर धूप
॥ काव्यशक्रस्तवथी स्तवी रे, नक्ति दिखावे अनूप रे ॥ ११ ॥ पु० ॥
दाढतणी पूजा करे रे, टाळे अशातना त्यांहिं ॥ सूर्याजि सुरवरनी परें रे,
रायपणेणो मांहिं रे ॥ १२ ॥ पु० ॥ विजयदेव अधिकार ठे रे, जीवा
जिगमें प्रसिद्ध ॥ जंबुद्वीप पन्नतियें रे, बहुसुरें पूजा कीध रे ॥ १३ ॥
॥ पु० ॥ नंदीसर मेरुतणी रे, प्रतिमा नमीआ रे होय ॥ इहां नमी
तेह अशाश्वती रे, चारण मुनिवर दोय रे ॥ १४ ॥ पु० ॥ जगवती
विशमा शतकमां रे, जांख्यो ए अधिकार ॥ तेम दशमे दाढा तणी रे,
आशातन पण वार रे ॥ १५ ॥ पु० ॥ एम बहुसुर अधिकार ठे रे,
तिम मानवना रे सार ॥ तिणे जिनपूज माने नहीं रे, एलें तस

अवतार रे ॥ १६ ॥ पु० ॥ हवे जे जागि मनोहर रे, देखावे सुर
 तास ॥ देवांगना हावजावनें रे, करती करे विलास रे ॥ १७ ॥ पु० ॥
 पंच विषय सुख नोगवे रे, ते वर दिव्यविमान ॥ वलि तीरथ यात्रा
 करे रे, वंदे प्रभु विहरमान रे ॥ १८ ॥ पु० ॥ समकित दृष्टि सुर
 तणी रे, नांखी करणी एह ॥ चंडानन विमानमां रे, सुख नोगवे
 सुर तेह रे ॥ १९ ॥ पु० ॥ सुरसुंदरी साथें जलां रे, पूरण सागर
 एक ॥ संपूरण सुख नोगवे रे, धारे अतिहिं विवेक रे ॥ २० ॥
 पु० ॥ इणी परें प्रथमज नव कह्यो रे, सुरनव सहित रसाज ॥
 श्रीसमरादित्य रासनी रे, पन्नरमी ए ढाल रे ॥ २१ ॥ पु० ॥ श्रीवि
 जयसिंह सूरिंदना रे, सत्यविजय पन्यास ॥ कपूरविजय तस पाटवी
 रे, खिमाविजय तस खास रे ॥ २२ ॥ पु० ॥ तास शिष्य जिनविज
 यजी रे, उत्तमविजय तस शीष्य ॥ लींबडी नगर प्रारंजीउ रे, रास
 ए विसवावीस रे ॥ २३ ॥ पु० ॥ संवत जाणि अठारशें रे, वली उ
 गणचालीश ॥ मांमयो आशोवदि त्रोजदिनें रे, पद्मविजय सुजगीश रे
 ॥ २४ ॥ पु० ॥ कार्तिक शुदि आठम दिने रे, संपूरण अयो खंम ॥ संघ
 अखंमपणे सुण्यो रे, पामी पुण्य प्रचंम रे ॥ २५ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ४५१ ॥

॥ इति श्री संविज्ञपट्टीय पंढितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयशिष्य पंढि
 त पद्मविजयविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे गुणसेनाग्निश
 र्मानिधानयोः प्रथमनवः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ इति श्री समरादित्यचरित्रे प्रथम
 खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयखंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोलसमा जिन समरियें, शांतिनाथ सुखकार; परजव जिणे पारे
बहुं, उगाखुं उपकार ॥ १ ॥ गुणसेन अग्रिशर्मा गया, सिंहाणंद
हवे सार; पिता पुत्र प्रेमें करी, वर्णवशुं विस्तार ॥ २ ॥ सांजलजो
ओता सवे, आलस अंग उतार; तेर काठीआमांहि ते, प्रथम आ
लस परकार ॥ ३ ॥ विकथा वर्जो तेम वली, न करो विकथा जेण;
वितथा ते विकथा वदे, स्वपर न सांजले तेण ॥ ४ ॥ तेम निडा न
करो तुमे, निडायी श्रुतनाश; सूतानुं श्रुत पण सुवे, श्री सिद्धांतें
नास ॥ ५ ॥ तिणे निडा विकथा तजो, आलस न करो अंग; सांज
लतां जे समजो, ते लहे ज्ञानतरंग ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ललनांनी देशी ॥

॥ जंबूद्वीप शोहामणो, तेहमां खेतर सात ॥ ललनां ॥ नरतनें हिमवंत
जाणीयें, बलि हरिचर्प विख्यात ॥ ल० ॥ १ ॥ जं० ॥ महाविदेह
रम्यग तथा, ठहुं ऐरवत धार ॥ ल० ॥ ऐरवत खेतर सातमुं, मेरु
विदेह मजार ॥ ल० ॥ २ ॥ जं० ॥ महाविदेह दोय जेदधी, पूर्व पश्चि
म जाण ॥ ल० ॥ पश्चिम महाविदेहमां, जयपुर नगर वखाण ॥ ल० ॥
॥ ३ ॥ जं० ॥ सुरपुरी सम नगरी तिहां, आरामनें उद्यान ॥ ल० ॥ गुण जे
हना न गणी शकुं, नूतलतिलक समान ॥ ल० ॥ ४ ॥ जं० ॥ रूपालीरम
णी जीहां, महिला गुण असमान ॥ ल० ॥ परद्वय लेवा नर जिहां,
संकोचे निज पाणि ॥ ल० ॥ ५ ॥ जं० ॥ परबिड जोवाने आंधला,
परस्त्री उपर क्लीब ॥ ल० ॥ पर अपवादनें बोलवा, जाणे मूक अतीव
॥ ल० ॥ ६ ॥ जं० ॥ पर उपगार परायणा, एहवा जन समवाय
॥ ल० ॥ पुरुषदत्त तिहां राजीउ, प्रजालोक सुखदाय ॥ ल० ॥ ७ ॥
॥ जं० ॥ राणी श्रीकंता तेहनें, नोगवे नोग रसाल ॥ ल० ॥ एणे
अवसर ते देवता, चविउ आउनें काल ॥ ल० ॥ ८ ॥ जं० ॥ श्रीकंता

उरें श्रवतस्यो, दीतुं स्वपन ते रात ॥ ल० ॥ सिंहकिशोर शोहामणो,
 वदनें उदर आयात ॥ ल० ॥ ए ॥ जं० ॥ निर्धूम अग्निज्वाला समो,
 केशरनो आटोप ॥ ल० ॥ स्फटिक हंस सम उजलो, पिंगनेत्र विण
 कोप ॥ ल० ॥ १० ॥ जं० ॥ मध्यनाग जस पातलो, पहोलुं वद्धस्थ
 ल जास ॥ ल० ॥ दीर्घ कुंमलित पूंठडुं, कटितट कठिन विशाल ॥ ल० ॥
 ॥ ११ ॥ जं० ॥ एम हरि स्वपनें देखीनें, जागी कहे जरतार ॥ ल० ॥
 पुत्र पराक्रमी होयशे, संपद होशे अपार ॥ ल० ॥ १२ ॥ जं० ॥
 सांजली हर्ष ते पामती, सुखमां काढे काल ॥ ल० ॥ गर्जप्रनावें दो
 हला, उपजे पुण्यविशाल ॥ ल० ॥ १३ ॥ जं० ॥ अजयदान सद्गु
 सत्त्वनें, मुनिनें उपष्टंज दान ॥ ल० ॥ दीन अनाथ कृपण प्रत्ये, संपदा
 देउं अमान ॥ ल० ॥ १४ ॥ जं० ॥ जिनवर सघले देहरे, पूजा करुं
 बहु नक्ति ॥ ल० ॥ वात सुणावी कंतने, ते पूरे निजशक्ति ॥ ल०
 ॥ १५ ॥ जं० ॥ ते देखी प्रजा सवे, हर्ष घणो पामंत ॥ ल० ॥ धर्म
 कार्य करतां अकां, नव महीना वोलंत ॥ ल० ॥ १६ ॥ जं० ॥ शुन
 जगें सुत जनमीउं, कर पद कोमल काय ॥ ल० ॥ सयल प्रजा मन
 सुख अयुं, मातने हर्ष न माय ॥ ल० ॥ १७ ॥ जं० ॥ शुनकरा
 दासी हवे, नृपने वधाइ खाय ॥ ल० ॥ पुत्र जन्मयी हरखीउं, हवे
 दिये दान ते राय ॥ ल० ॥ १८ ॥ जं० ॥ बंधन मोचनादिक तिहां,
 उष्टव वली नरींद ॥ ल० ॥ नगर मार्ग शणगारीआ, उपज्यो ठे आणंद
 ॥ ल० ॥ १९ ॥ जं० ॥ शणगारी हाट शरीउं, मंगल तूर वाजंत ॥
 ल० ॥ कुंकुमजलें पंथ शिंचिआ, कुसुम सर्वत्र धरंत ॥ ल० ॥ २० ॥
 ॥ जं० ॥ एम महोव्व करतां अकां, मास अयो तव नाम ॥ ल० ॥
 सिंहकुमार शोहामणो, थापे तस अनिराम ॥ ल० ॥ २१ ॥ जं० ॥
 पुण्ये प्रणयी लोकने, नयण मनें आणंद ॥ ल० ॥ देतो जोवन पा
 मीउं, सकल कला गुणवृंद ॥ ल० ॥ २२ ॥ जं० ॥ एम समरादित्य
 राममां, बीजे खंमैं ढाल ॥ ल० ॥ पहेली पद्यें कही नली, सुणतां
 मंगलमाल ॥ ल० ॥ २३ ॥ जं० ॥ सर्व गाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो वंसत ते अन्यदा, रति देखावी नारि; मदन शिलीमुख
मूकतो, विंधे लोक तिवार ॥ १ ॥ कोयल कोलाहल करे, जय जय
शब्दनें काज; विरह अनल धूमज वडो, अमर आभ्र मानुं चाज ॥
॥ २ ॥ मित्रें परिवस्यो मोदशुं, क्रीडा करण संकेत; क्रीडा सुंदर
काननें, आव्यो अचरिज देत ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कोइलो परवत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर दीठी तिहां रे लो, कन्या कुसुमावली नाम रे ॥ रं
गीली ॥ वनदेवीशी विराजती रे लो, कामक्रीडानुं धाम रे ॥ ठबीली
॥ १ ॥ पुण्यतणां फल पेखजो रे लो ॥ ए आंकणी ॥ कुसुमगर्जित
वेणी नली रे लो, कोमलकर कजपान रे ॥ रं० ॥ अधर प्रवाला रंग
ज्युं रे लो, चंपकसम तनुवान रे ॥ ठ० ॥ २ ॥ पु० ॥ लक्ष्मीकंत
नरपति तणी रे लो, पुत्री पावनअंग रे ॥ रं० ॥ सखीजनशुं ते
परिवरी रे लो, क्रीडावसंतनी चंग रे ॥ ठ० ॥ ३ ॥ पु० ॥ माउल
पुत्री तेह ठे रे लो, तेहशुं उपनो राग रे ॥ रं० ॥ नवअनंत अन्यास
थी रे लो, पंचबाण थयो लाग रे ॥ ठ० ॥ ४ ॥ पु० ॥ तेणीयें दीगो
तेहनें रे लो, सा मन चिंते एम रे ॥ रं० ॥ मकरध्वज इहां आवीउ
रे लो, क्रीडा करण के केम रे ॥ ठ० ॥ ५ ॥ पु० ॥ चिंतवी पग उ
सारती रे लो, चेटी प्रियंकरा ताम रे ॥ रं० ॥ उंसरो नहीं नृपपुत्रथी
रे लो, ए सिंहकुमर ठे नाम रे ॥ ठ० ॥ ६ ॥ पु० ॥ तुम्ह फईकुखें
उपनो रे लो, आव्या प्रथमथी आप रे ॥ रं० ॥ उंसरतां मापण
नहीं रे लो, करगो एहवी ठाप रे ॥ ठ० ॥ ७ ॥ पु० ॥ तिणें एहनें
तुमे करो रे लो, कन्या उचित उपचार रे ॥ रं० ॥ सा कहे तुं कहे तिम
करुं रे लो, तव ते कहे सुविचार रे ॥ ठ० ॥ ८ ॥ पु० ॥ आसन देई आ
दर करो रे लो, फूल आनरण तंबोल रे ॥ रं० ॥ कुमरी कहे न करी
शकुं रे लो, रंग लागो मुऊचोल रे ॥ ठ० ॥ ९ ॥ पु० ॥ तेहवे कुम
र ते आविउ रे लो, आप्युं आसन सार रे ॥ रं० ॥ रति विरहित थें

चवाएनें रे लो, स्वागत ठे रे कुमार रे ॥ ठ० ॥ १० ॥ पु० ॥ एम
 पूठे प्रियंकरा रे लो, तव ते बोले कुमार रे ॥ रं० ॥ रतिविरहित
 दिन एटला रे लो, पण नहिं संप्रति वार रे ॥ ठ० ॥ ११ ॥ पु० ॥ एम कहि
 वेगो ते आसनें रे लो, फूल आनरण वलि पान रे ॥ रं० ॥ दीधूं ते लीधूं
 तिणें रे लो, मनमां धरी बहुमान रे ॥ ठ० ॥ १२ ॥ पु० ॥ इण अवसर
 आव्यो तिहां रे लो, कन्यानो रखवाल रे ॥ रं० ॥ करतां दीठां विनोदने
 रे लो, मन चिंते तिणे काल रे ॥ ठ० ॥ १३ ॥ पु० ॥ रतिनें कंदर्प
 मढ्यो खरो रे लो, जो सहेरो किरतार रे ॥ रं० ॥ आवी तिहां आदर
 करे रे लो, कुमरनें अति सत्कार रे ॥ ठ० ॥ १४ ॥ पु० ॥ वड ज
 ननी तुज एम कहे रे लो, खेद अरो तुज देह रे ॥ रं० ॥ बहु वेला
 अइ आवीयें रे लो, मुक्तावली कहे एह रे ॥ ठ० ॥ १५ ॥ पु० ॥
 उठी एम जांखी हवे रे लो, मातनी आण प्रमाण रे ॥ रं० ॥ चिं
 तवती कुमर प्रत्यें रे लो, मूके तेह उज्जाण रे ॥ ठ० ॥ १६ ॥ पु० ॥
 दीर्घ निशासा नाखती रे लो, पढोती निज आवास रे ॥ रं० ॥ जइ पढ्यं
 कें वेठी तिहां रे लो, संजारे गुण तास रे ॥ ठ० ॥ १७ ॥ पु० ॥
 सखीउनें विसर्जती रे लो, मदन चेदाणी तेह रे ॥ रं० ॥ चित्रकर्म
 न करे हवे रे लो, शुक्र सारीकाशुं न नेह रे ॥ ठ० ॥ १८ ॥ पु० ॥
 अंगराग न करे किमे रे लो, आहारनो नहीं अनिलाष रे ॥ रं० ॥
 नवन सयण कोइ नवि गमे रे लो, नवि कलहंसशुं जांख रे ॥ ठ० ॥
 ॥ १९ ॥ पु० ॥ वाव्यमां मज्जन नवि करे रे लो, नवि सारे कांय वीण
 रे ॥ रं० ॥ कंडकक्रीडा परिहरी रे लो, नूपण न धरे खीण रे ॥ ठ० ॥
 ॥ २० ॥ पु० ॥ यूयघ्रट जिम हरणली रे लो, कृणमां नयण मिला
 य रे ॥ रं० ॥ कृण निशासा नाखती रे लो, कृणमां चेष्टा जाय रे
 ॥ ठ० ॥ २१ ॥ पु० ॥ इण अवसर आवी पुत्रिका रे लो, निजजननी
 लही आणी रे ॥ रं० ॥ मदनलेखा आवी तिहां रे लो, तालवृत्त लेइ
 पाणी रे ॥ ठ० ॥ २२ ॥ पु० ॥ वीडां कपूरशुं पाननां रे लो, परिश्र
 म क्रीडानो जाण रे ॥ रं० ॥ नेउर पाये रणऊणे रे लो, हर्ष ते धरती

अमान रे ॥ ठ० ॥ १३ ॥ पु० ॥ चिंताजर दीठी तिणें रे लो, शय्याग
त शून्यजाव रे ॥ रं० ॥ वगर बोलती देखिनें रे लो, पूढे तव सद्गजा
व रे ॥ ठ० ॥ १४ ॥ पु० ॥ केम उद्देग करी रही रे लो, शुं न विनीत
परिवार रे ॥ रं० ॥ के देवगुरु नवी पूजीया रे लो, के गुरुजन अप
कार रे ॥ ठ० ॥ १५ ॥ पु० ॥ के अर्थी न संतोषीया रे लो, के सखि
उनो न राग रे ॥ रं० ॥ के समिहित नवी नीपन्युं रे लो, कहो तुमें
कहेवा लाग रे ॥ ठ० ॥ १६ ॥ पु० ॥ अलक समारी हाथशुं रे लो,
बोली कुसुमावली वाण रे ॥ रं० ॥ कुसुम वीणंतां उपनो रे लो, खेद
घणो दुःख खाण रे ॥ ठ० ॥ १७ ॥ पु० ॥ तिणें आलस अरति घणी रे
लो, अन्य न कारण कोय रे ॥ रं० ॥ मदनलेखा तव बोलती रे लो,
सांनलजो सहु कोय रे ॥ ठ० ॥ १८ ॥ पु० ॥ बीजे खंमैं एम कही
रे लो, बीजी ढाल रसाल रे ॥ रं० ॥ पद्म कहे श्रोता सुणो रे लो,
सुणतां मंगलमाल रे ॥ ठ० ॥ १९ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनलेखा कहे माननी, व्यो कर मुज तंबोल; विश्रामण करुं
तुज वपु, तव बोले ते बोल ॥ १ ॥ इण अवसर मुज अवरशुं,
काम नहीं सुण कांय; कदली घर जइयें करो, सखा तिहां चुनगाय
॥ २ ॥ कुसुमावली घरकेलीनैं, सूति कुमर संजारि; कपूरबीडुं कर
दितुं, मदनलेखा सुकुमारि ॥ ३ ॥ कथा कहे कौतुक करी, विजणे
विंजती वाय; शून्य हुंकारो सांनली, चिंतवे ते चित्त लाय ॥ ४ ॥
अढे विकार चित्त एहनैं, तेणे पूढुं हुं वात; एम चिंती पूढुं इणे,
सुणि बेहेनी सुखशात ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाडी फूली अति नली मननमरा रे ॥ ए देशी ॥
॥ मदनलेखा कहे एणी परें ॥ सुण बेहेनी रें ॥ वसंत क्रीडा गयां
आज ॥ तुमे सुणो बेहेनी रे ॥ अचरिज कांई दितुं तिहां ॥ सु० ॥ तव
बोली धरी लाज ॥ तु० ॥ १ ॥ क्रीडा सुंदर उद्यानमां ॥ सु० ॥ रति
विरहित पंचबाण ॥ तु० ॥ रोहिणी विरहित चंद्रमा ॥ सु० ॥

मानूं दिगो तिणे ठाण ॥ तु० ॥ १ ॥ श्ववि विरहित जिम हरि होये
 ॥ सु० ॥ मदिरा विनु कामपाल ॥ तु० ॥ सोवन वरण शरीर ठे ॥ सु० ॥
 पाय अंगुली सुकमाल ॥ तु० ॥ ३ ॥ गूढशिरा पिंढी हती ॥ सु० ॥
 मणहर मोरशी जंघ ॥ तु० ॥ गूढजानु सुंदर अति ॥ सु० ॥ पण पर
 नारी डुल्लंघ ॥ तु० ॥ ४ ॥ संगत उरुयुग शोभता ॥ सु० ॥ विपुलकटि
 तटनाग ॥ तु० ॥ मध्यमनाग अति पातलो ॥ सु० ॥ हृदय विशाल विनाग
 ॥ तु० ॥ ५ ॥ वर्तूल लांबी बांहडी ॥ सु० ॥ पहोंचा ते अतिपुष्ट ॥ तु० ॥
 गुजरैखायें शोभता ॥ सु० ॥ जानु प्राप्तकर लष्ट ॥ तु० ॥ ६ ॥
 कांडक राता नख जला ॥ सु० ॥ अधर प्रवाली रंग ॥ तु० ॥ सम
 श्रेणी दंत ते उज्जला ॥ सु० ॥ नासावंश उत्तंग ॥ तु० ॥ ७ ॥
 दीर्घविशालमांढि रक्तता ॥ सु० ॥ अष्टमीचंद ज्युं जाल ॥ तु० ॥
 श्रवण सुसंगत जेहना ॥ सु० ॥ पहेरी मुक्ताफल माल ॥ तु० ॥ ८ ॥
 कलकुटिल कुंतल जला ॥ सु० ॥ चंदन चर्चु अंग ॥ तु० ॥ निर्मल
 वस्त्र सूक्ष्म घणां ॥ सु० ॥ चूडारयण उत्तमांग ॥ तु० ॥ ९ ॥ शुं क
 हियें घणुं तेहनूं ॥ सु० ॥ जाणीयें रूपनूं रूप ॥ तु० ॥ लावण्यनूं
 लावण्य मानूं ॥ सु० ॥ तरुणनूं तरुण अनूप ॥ तु० ॥ १० ॥ म
 नोरथनो मनोरथ जाणूं ॥ सु० ॥ नृपसुत सिंहकुमार ॥ तु० ॥ मदन
 लेखा सुणि चिंतवे ॥ सु० ॥ राग ए जुगते ठार ॥ तु० ॥ ११ ॥ अ
 थवा कमलाकर विना ॥ सु० ॥ लक्ष्मी न करे वास ॥ तु० ॥ कुसुमा
 युधने रति विना ॥ सु० ॥ नहिं कोइ योग्य ते खास ॥ तु० ॥ १२ ॥ सुबुद्धि
 रायशुं मंत्रतो ॥ सु० ॥ सांजव्यो आज विचार ॥ तु० ॥ कुसुमावलि
 कहे ते कहो ॥ सु० ॥ मदनलेखा कहे सार ॥ तु० ॥ १३ ॥ देवी प्रेपणने
 हुं गइ ॥ सु० ॥ तिहां सांजली ए वात ॥ तु० ॥ सुबुद्धि कहे रायनें
 ॥ सु० ॥ पुरुषदत्त नृप ख्यात ॥ तु० ॥ १४ ॥ काजे सिंहकुमारनें ॥ सु० ॥
 कुसुमावलि दिठ अम्ह ॥ तु० ॥ बहु बहु आग्रहथी कसुं ॥ सु० ॥
 मुजने ते कसुं तुम्ह ॥ तु० ॥ १५ ॥ वलि एम मुजनें जांखियुं ॥ सु० ॥
 ए वरवधू संजोग ॥ तु० ॥ अन्य अन्यनें योग्य ठे ॥ सु० ॥ एह प्र

शंसे लोग ॥ तु० ॥ १६ ॥ अलिककोप करी लाजती ॥ सु० ॥ कु-
सुमाविली कहे ताम ॥ तु० ॥ हर्ष धरी मनमां कहे ॥ सु० ॥ शुं असं
बंध कहे आम ॥ तु० ॥ १७ ॥ मदनलेखा कहे जूठ शुं ॥ सु० ॥ हंसी
हंसनें लाग ॥ तु० ॥ जुत वात ठे नृप कहे ॥ सु० ॥ सुण मंत्री
माहानाग ॥ तु० ॥ १८ ॥ इण अवसरें आवी तिहां ॥ सु० ॥ कुसुमा
वलिनें पास ॥ तु० ॥ पद्मविया दासी जली ॥ सु० ॥ उद्यानपाली ते
खास ॥ तु० ॥ १९ ॥ राये कहुं तुम मातनें ॥ सु० ॥ मात कहावे
तुज ॥ तु० ॥ नवन उद्यान शोजा करो ॥ सु० ॥ ए आणा ठे सुज
॥ तु० ॥ २० ॥ राजकुमर सिंह नाम जे ॥ सु० ॥ आवशे रमवा आज
॥ तु० ॥ कुसुमावलि तेह सांजली ॥ सु० ॥ कहे धन्य दिन अयो
आज ॥ तु० ॥ २१ ॥ बीजे खंमैं एम कही ॥ सु० ॥ बीजी ढाल र
साल ॥ तु० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ सु० ॥ आगल प्रीति वि
शाल ॥ तु० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सांजली जांखुं सत्य ते, उठी सज्युं उद्यान; तेडयो कुमर निमं
त्रीनें, मायें मेळ्युं तान ॥ १ ॥ नोजनविधि कस्यो नलो, नवन उद्यान
गयो जाय; झाडामंरुप देखीउं, सारिकायें सुख सुणाय ॥ २ ॥ रक्त
अशोकें रीजीउं, नवनदीर्घिका जालि; नलिनीवनखंम नीपन्युं, जवे
कोकिल अंबमालि ॥ ३ ॥ चमर नमे नणकारशुं, माधवीलता मंमाण;
नागवलिना निवहने, पूगीआलिगे पाणि ॥ ४ ॥ कुसुम गुठ परिमल
करे, मोह्युं देखी मन्न; महाविलता मांहे रक्षो, राजे पुरुष रतन्न ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राय कहे राणी प्रत्यें, जरि दोर्घनिशासा ॥ ए देशी ॥

॥ कुसुमावलिनें मदनलेखा, कहे एणी परें वात ॥ पूर्वसंबंध अयो
जीके, हवे परगट यात ॥ १ ॥ सांजलो बेहेनी माहरी, एक वात स
नूरी ॥ ए आंकणी ॥ फूल तंबोल ते आपियें, पूठो वात शरीर ॥ आप
कला देखावियें, राग कानननीर ॥ २ ॥ सां० ॥ कुसुमावली कहे जिम

गमे, तेम तुमें करो आपें ॥ मयएलेखा चित्रपट्टिका, तव लावी
 आपे ॥ ३ ॥ सां० ॥ सामान सर्व देई कहे, एक हंसी आलेखो ॥
 हंसी विरहिणी हंसनें, जोवा उत्सुक पेखो ॥ ४ ॥ सां० ॥ कुसुमा
 वलियें चीतरी, ते हंसली तेहवी ॥ मदनलेखायें डुपदी, लखी उपरें
 एहवी ॥ ५ ॥ सां० ॥ हंसलीनी अवस्था तणो, तेहमां नाव समाये ॥
 मदनलेखा हवे लेईने, गई कुमर पाये ॥ ६ ॥ सां० ॥ कुसुमावलीनी प्रिय
 सखि, जाणी आदर कीध ॥ प्रणमी जे लावी हती, ते कुमरनें दीध
 ॥ ७ ॥ सां० ॥ नांखे एणिपरें कुमरने, तुम्हे चित्तना रागी ॥ राजकुमरि
 यें जे मोकळ्युं, निजचित्त सोजागी ॥ ८ ॥ सां० ॥ प्रियंगुमंजरी ए वली,
 वली नागरवेली ॥ कंकोल फल तंबोल ए, मोकलिआं केलि ॥ ९ ॥ सां० ॥
 शृष्टे दीजें ए सह्यु, तिणें मोकळ्यां तुज ॥ हंसी सुख लहो तुम्हथी,
 एह नांख्युं गुज ॥ १० ॥ सां० ॥ कानें प्रियंगुमंजरी, मुखें लीध तंबोल ॥
 राजहंसी जोई हरखीउं, वांच्यो डुपदीबोल ॥ ११ ॥ सां० ॥ मदनवि
 कारथी बोलतो, वाणी मधुर खजाती ॥ चित्र कौशल घणुं रूअडुं,
 वात जाणीयें ठाती ॥ १२ ॥ सां० ॥ पण डुपदीनुं कामगुं, पुनरुक्त
 जणावे ॥ मदनलेखा कहे में लखी, देखी डुपदीनावें ॥ १३ ॥ सां० ॥
 कहे कुंअर रूडुं कथुं, सखिनाव जणाव्यो ॥ नागरवेल ते कातरे, हंस
 रूप शोहाव्यो ॥ १४ ॥ सां० ॥ हंसलीसरिखो हंस ते, वली श्लोक
 ते लखीउं ॥ आप्यो तेहने हाथमां, वली एणि परें नखीउं ॥ १५ ॥
 ॥ सां० ॥ कहेजो कुसुमावली नणी, रूडुं कीधूं विनाए ॥ फरि फरि ए
 हवुं कहावजो, निजसखिगुं जाण ॥ १६ ॥ सां० ॥ मुक्तावली वली
 दानमां, आप्युं कुमरें तास ॥ ए संतोष खुशीतणुं, लक्षण सुविलास
 ॥ १७ ॥ सां० ॥ मदनलेखा हवे निकली, करीनें परणाम ॥ कुसुमा
 वली पासें गई, कहि वात ते ताम ॥ १८ ॥ सां० ॥ सांजली रोमां
 चित यइ, हवे नित्य नित्य एम ॥ मदनवर्जें नव नव करे, बहुचेष्टा प्रेम
 ॥ १९ ॥ सां० ॥ ए लवि वातचरित्रमां, ठे बहुविस्तार ॥ थोडा दिन गया
 जेटले, तव थाय प्रकार ॥ २० ॥ सां० ॥ प्रियंकरा दासी हवे, कु

सुमावली पासें ॥ तुम्ह तातें सिंहकुमरनें, तुम्ह आप्यां एम नासे
॥ ११ ॥ सां० ॥ बहुप्रमोद लह्या अनुक्रमें, परणाव्यां रायें ॥ तेह वि
स्तार कह्यो नहीं, बहुविस्तार थावे ॥ १२ ॥ सां० ॥ तेह चरित्रथी
जाणजो, हवे फेरा फरतां ॥ दान आप्युं जे कुमरनें, सहु नजरें कर
तां ॥ १३ ॥ सां० ॥ पहेले फेरे वधूपिता, सोवनलाख नार ॥ वगर
घड्युं दीधूं वजि, बीजे घड्युं सार ॥ १४ ॥ सां० ॥ कुंदल कंदोरो
वली, वाजुबंधने हार ॥ सार सार नूपण जिके, देवे मनोहार ॥ १५ ॥
॥ सां० ॥ बीजे थाली वाटका, नाजन बहुनांति ॥ चोथे महर्घ्य चीवर
दिये, मनमां घणी खांति ॥ १६ ॥ सां० ॥ पुरुषदत्त पण राजीये,
निजसंपद सारु ॥ बहुमूजां वहूनें दिथ्यां, नूपण घणुं चारु ॥ १७ ॥
॥ सां० ॥ बहु उल्लव महोल्लव करी, एम परण्यां बेहु ॥ चरित्रकार जे
वर्णवे, ते कहियें केहुं ॥ १८ ॥ सां० ॥ एम बीजे खंमें कहि, चोथी
वर ढाल ॥ पद्मविजये कहे पुण्यथी, होय मंगलमाल ॥ १९ ॥
सां० ॥ सर्व गाथा ॥ १२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचविषय सुख पुण्यथी, जोगवे स्त्री जरतार; वधते रागविशेष
थी, दंपती वजि दातार ॥ १ ॥ लाख अनेक वरष लगें, क्रीडा करतां
काल; सुखमां नवि जाणे सही, तेह गयो तिण ताल ॥ २ ॥ अश्व
खेलाववा अन्यदा, सिंहकुमर गया सार; नागदेव उद्यानमां, पर
वख्यो निज परिवार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ माली केरे बागमां, दोय नारिंग पके रे

लो ॥ अहो दोय० ॥ ए देशो ॥

॥ इण अवसरें दिठा तीहां, एक वर अणगार रे लो ॥ अहो एक० ॥
धर्मघोष नामें जला, बहुमुनि परिवार रे लो ॥ अहो बहु० ॥ १ ॥
प्रासुक जायगें उतखा, रूप गुण असमान रे लो ॥ अहो रूप० ॥
यौवन वयमां वरतता, शत्रुमित्र समान रे लो ॥ अहो शत्रु० ॥ २ ॥
खंती मदेव अश्व मुत्ती, तव संजम ठाणे रे लो ॥ अहो तव० ॥

सत्य शौच अकिंचन वली, ब्रह्मचर्य निधानें रे लो ॥ अहो ब्रह्म० ॥
 ॥ ३ ॥ षादशांगीधर वाचना, सूत्र अर्थनी देता रे लो ॥ अहो सूत्र० ॥
 निर्जरा अर्थीउद्यमी, निज शिष्यनैं कहेता रे लो ॥ अहो निज० ॥ ४ ॥
 आचारिय पदना धणी, देखीनैं विचारे रे लो ॥ अहो देखी० ॥ सक
 लसंग त्यागी मुनि, ए नवजल तारे रे लो ॥ अहो ए० ॥ ५ ॥ धन्य
 ए एहनी मावडी, तज्यो सारो संसार रे लो ॥ अहो त० ॥ बहुमानें
 करी चिंतवे, करे पर उपगार रे लो ॥ अहो क० ॥ ६ ॥ एहनें संगें जई
 हवे, पूढुं एह वात रे लो ॥ अहो पू० ॥ मनोनव ललित समय अठे,
 किम जोग आयात रे लो ॥ अहो किम० ॥ ७ ॥ दूरथी उतरे अश्वथी,
 जई मुनिवर पासें रे लो ॥ अहो जई० ॥ वंदे मुनिवर विनयशुं,
 धरो हर्ष उद्भासें रे लो ॥ अहो धरी० ॥ ८ ॥ अनिनंद्यो धर्मज्ञानथी,
 बंधा शेष मुणींद रे लो ॥ अहो वं० ॥ बेगो गुरुचरणें जई, लहे प
 रम आणंद रे लो ॥ अहो ल० ॥ ९ ॥ पूढे धर्मघोष मुनि, गुरुजी
 मुज नासो रे लो ॥ अहो गु० ॥ संपदाकुल घरस्वामी जी, निर्वेद अ
 न्यासो रे लो ॥ अहो नि० ॥ १० ॥ एह अकालें आदखुं, संयम शुं विचारी
 रे लो ॥ अहो सं० ॥ तव गुरु बोले सांजलो, आवक एण वारी रे लो
 ॥ अहो आ० ॥ ११ ॥ काल संजमनो एह ठे, नथी तास अकाल रे
 लो ॥ अहो न० ॥ मृत्युपराजवें सर्वदा, जुठ तेह संजाली रे लो ॥
 ॥ अहो जु० ॥ १२ ॥ सुर असुरा सहुनैं हरे, वज्रमनोरथ शैल रे
 लो ॥ अहो व० ॥ करे विजोग वाढ्हा तणो, एम करे जगकेलि रे
 लो ॥ अहो ए० ॥ १३ ॥ वजि आवक तूं सांजले, रूडो जाणी धर्म
 रे लो ॥ अहो रू० ॥ चरमवयें ते आदरे, लहेवा शुनशर्म रे लो
 ॥ अहो ल० ॥ १४ ॥ रूढुं ते आगेंथी कीजीयें, तेहमां शो द्हाणी
 रे लो ॥ अहो ते० ॥ कुंवर कहे खरूं ए कहुं, एह वात विनाएण रे
 लो ॥ अहो ए० ॥ १५ ॥ तो पण वगरनिमित्त ए, न चारित्र लेवाय रे
 लो ॥ अहो न० ॥ गुरु कहे एह संसार ते, निर्वेदनो ठाय रे लो
 ॥ अहो नि० ॥ १६ ॥ शुं संसारमां सार ठे, ते चित्त विचारो रे

लो ॥ अहो ते० ॥ वज्रिअ विशेषें सांजलो, माहरो अधिकार रे लो ॥
 ॥ अहो मा० ॥ १७ ॥ अवधि ज्ञानीयें जांखीयुं, निज चरित्र रसाल
 रे लो ॥ अहो नि० ॥ ते मुऊ हेतु वैराग्यनुं, सांजली नूपाल रे लो ॥
 अहो सां० ॥ १८ ॥ कुंवर कहे प्रभु दाखियें, अवधि मुनिचरित रे
 लो ॥ अहो अ० ॥ गुरु कहे सांजल नरपति, कहुं तेह पवित्त रे लो ॥
 अहो क० ॥ १९ ॥ बीजे खंमें पांचमी, कही उत्तम ढाल रे लो
 ॥ अहो क० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, घणी वात रसाल रे ॥ अहो
 घ० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणहिज विजयमां रायपुर, हुं तिहांनो रहेनार; नवस्वरूप में जा
 वीउं, न लहुं रति निर्धार ॥ १ ॥ विरक्त रहुं वैरागीउं, आब्या तव अ
 णगार; साधु बहु शिरोमणि, विचरता करे विहार ॥ २ ॥ अमरगुप्त
 आचार्यनें, उपनुं अवधिज्ञान; थोडादिन तेहनें थया, धरतां धर्मनुं
 ध्यान ॥ ३ ॥ वात लोकमां विस्तरी, अहो तपस्वी एह; आश्रव कछा
 अलगा इणें, ज्ञान तणो ते गेह ॥ ४ ॥ धर्मदेशना लखीआ, जाणे
 नूपति जाम; नगरलोकशुं नरपति, आवे वंदन आम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठछी ॥ गेब सागररी पाल उनीदोय नागरी ॥

॥ म्हारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ अरिमर्दन नरपतिनें धर्मलान दिउं ॥ मारा लाल ॥ नरपति नगर
 लोक सहु चित्त आणंदिउं ॥ मा० ॥ गुरुवच सुणवानो हर्ष घणो म
 नमां धरे ॥ मा० ॥ पूढे सुखविहार मुनिने गुन परें ॥ मा० ॥ १ ॥
 फरि पूढे नृप जाण नाण तुम अति घणुं ॥ मा० ॥ त्रण काल ग्राहक
 उहिनाण ते तुम तणुं ॥ मा० ॥ करि उपकार कहो गुरु समकित कब
 लह्यां ॥ मा० ॥ शाश्वतसुख तरुबीज परिणाम तेहना कह्या ॥ मा०
 ॥ २ ॥ देशविरति पाम्या इणो नव के परनवें ॥ मा० ॥ साधुपणुं पण
 कब लह्या किम लह्या नव नवे ॥ मा० ॥ चंपावास्त पुरी एह वि
 जयमां मुनि कहे ॥ मा० ॥ सुधणुं नाम गाथापति अतीतकालें रहे

॥ मा० ॥ ३ ॥ धणसिरी नामें घरणी तेहनी हुं सुता ॥ मा० ॥ तेह
 नयर निवासी नंदसथवा हुंता ॥ मा० ॥ तेहनो सुत रुद्धदेव आपी
 मुज तेहनें ॥ मा० ॥ यौवनवय अनुरूप विषय सुख गेहनें ॥ मा० ॥
 ॥ ४ ॥ एणें अवसर तिहां विहार अनुक्रमें आवियां ॥ मा० ॥ तप
 संयमथी आतम जली परें जाविअ्यां ॥ मा० ॥ रूपथकी मानुं शासन
 देवता देखीयें ॥ मा० ॥ श्रुतरत्न करी शोणित गुरुणी पेखीयें ॥ मा० ॥
 ॥ ५ ॥ बालचंडा नामें चंडातप शीतल घणुं ॥ मा० ॥ दीठां शमसुख
 पुंज मानुं तेहनुं तणु ॥ मा० ॥ सासरेथी पीयर जातां मुज एम थयुं
 ॥ मा० ॥ ते देखी मुज मोदथी तनु पुजकित जयुं ॥ मा० ॥ ६ ॥
 लोयण थयां विकस्वर पाप नाशी गयां ॥ मा० ॥ उल्लस्युं अंग धर्म
 चित्त उल्लस्युं धन्य थयां ॥ मा० ॥ करकज जोडी विनयथकी पाये पडी
 ॥ मा० ॥ दीथो तेणीयें धर्मजान मानुं सफली घडी ॥ मा० ॥ ७ ॥
 नक्तिप्रीतिथी तेहनुं आलय पूठियुं ॥ मा० ॥ ते साहुणीयें बताव्यो
 तिहां चित्त मूर्खियुं ॥ मा० ॥ उचितविधे हुं एहनी सेवा नित्य करुं
 ॥ मा० ॥ जाणुं जिम तिम हुं जवसायर निस्तरुं ॥ मा० ॥ ८ ॥ ते
 जगवतीयें धर्म कह्यो जिन जांखीउं ॥ मा० ॥ शिवसुख फल वृद्धचिंता
 मणि परें दाखीउं ॥ मा० ॥ कर्मनो क्य उपशम थयो समकित पामीउं
 ॥ मा० ॥ जाव्यो जिनधर्म जव चारक चित्त वामीउं ॥ मा० ॥ ९ ॥
 हवे मुज पति कर्मदोषथी द्वेप करे घणो ॥ मा० ॥ कहे तुं धर्म एठांमी
 विषय विघ्न कारणो ॥ मा० ॥ में कह्युं विषय सुखें सखुं दारुण फल
 कहां ॥ मा० ॥ ते कहे दृष्ट सूकी अदृष्ट कोणे जह्यां ॥ मा० ॥ १० ॥
 में कह्युं पशुमाधारण विषयमां गुं जह्युं ॥ मा० ॥ प्रत्यक्षसुख फलधर्म
 अदृष्ट ते किम कह्युं ॥ मा० ॥ एम कहाथी अधिक द्वेप मुजगुं करे
 ॥ मा० ॥ जोग तज्यो मुज साथ विवाह बीजो मन धरे ॥ मा० ॥ ११ ॥
 नागदेव धूआ नागसिरी कन्या जली ॥ मा० ॥ पण तस तातें न
 दीथी मुज पिया जय कजी ॥ मा० ॥ रुद्धदेव मन चिंतवें जीवतां ए
 हनें ॥ मा० ॥ नवि दीये बालिका कोई, करुं गुं तेहनें ॥ मा० ॥ १२ ॥

मायाचरित्र करी मान्हें एहनें हवे ॥ मा० ॥ एम चिंती घटमांहि आ
 शीविष संखे ॥ मा० ॥ घर एक खूणें ठोडी नणे रयणीसमे ॥ मा० ॥
 ए नव घटमांथी कुसुममाल जावो तुमे ॥ मा० ॥ १३ ॥ हुं अणजा
 एती तेह लेवा गई जेटले ॥ मा० ॥ हाथ घाल्यो तिहां नाग मर्यो
 मुज तेटले ॥ मा० ॥ संचमयी ते नाखी दीउं आवीनें एम कहे ॥ मा० ॥
 करड्यो नाग ते सांजली रुइदेव जवे ॥ मा० ॥ १४ ॥ नियडीथी आ
 कुजव्याकुज यई कोलाहल करे ॥ मा० ॥ मुजनें विषना वेग अति
 दुःखमां धरे ॥ मा० ॥ परवश यईने हुंतो तिहां धरणी ठली ॥ मा० ॥
 परम अवाच्य अवस्था पामी चेतना चली ॥ मा० ॥ १५ ॥ समकि
 तना परनावथी काल करी तिहां ॥ मा० ॥ सोहमें लीलावतंस वि
 मान अत्रे जिहां ॥ मा० ॥ पल्योपमस्थिति देवपणे हुं उपनो ॥ मा० ॥
 अप्सरा परिवृत दिव्य नोग मुज निपनो ॥ मा० ॥ १६ ॥ रुइदेव
 परण्यो हवे नागदत्तधूआ ॥ मा० ॥ नोगवी विषयनें काल करी नर
 कें दुआ ॥ मा० ॥ रत्नप्रनायें स्कन्धडा नरकावासमां ॥ मा० ॥ प
 ल्योपमनें आयुगे दुःख आवासमां ॥ मा० ॥ १७ ॥ देवलोकमांथी
 चवि हुं थयो गजवरु ॥ मा० ॥ एहज विजयमां सूसमार रण सुंदरु
 ॥ मा० ॥ सूसमार तिहां परवतमांहि क्रीडा करुं ॥ मा० ॥ नरकमांथी
 रुइदेव आव्यो अनंतरु ॥ मा० ॥ १८ ॥ तेहज नगवरमां थयो शूडो
 आहामणो ॥ मा० ॥ वालअवस्था गये थयो जनमन कामणो ॥ मा० ॥
 नजवनमां विचरंतो गजवर तिण समे ॥ मा० ॥ बहु करिणीशुं आ
 विउं ते शुक्र जिहां रमे ॥ मा० ॥ १९ ॥ मुजनें रमतो देखीनें वेष
 ते आवीउं ॥ मा० ॥ पूर्वजव अन्यासथी वैरशुं जावीउं ॥ मा० ॥
 चिंतवे ए करी एहवुं सुख किम नोगवे ॥ मा० ॥ वंचावुं ए सुखथकी
 तो दुःख जोगवे ॥ मा० ॥ २० ॥ खोले उपाय घणा पण तेहनें न
 वि जडे ॥ मा० ॥ लीलारति विद्याधर एहवे आवीचडे ॥ मा० ॥ मृगांक
 सेन विद्याधरनी जगिनी हरी ॥ मा० ॥ चंडलेखा इण नामें तेहनो
 जय धरी ॥ मा० ॥ २१ ॥ गिरि निकुंजमां रहिश हुं एम शुकने कहे

॥ मा० ॥ एक विद्याधर आवशे ते जिम नवि लहे ॥ मा० ॥ तिम
करजे मुऊने नवि दाखजे तुं खरो ॥ मा० ॥ कहे जे आवोनें मुऊ तेह
गये परो ॥ मा० ॥ ११ ॥ हुं पण तुऊ उपगार करिश इण अवसरें
॥ मा० ॥ तें नलुं काम कसुं मुऊ जाणीश एणी परें ॥ मा० ॥ ठ
ठी ढाल ए बीजा खंममांहि कही ॥ मा० ॥ पद्मविजय कहे सांनलो
आगल गहगही ॥ मा० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ १७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही विद्याधर गयो, महानिकुंज मऊार; उतरीने अध अवनी
यें, रह्यो ते सुख आधार ॥ १ ॥ नारिंगपादपें नीडमां, चुक रहे ठे
सुसमाधि; विद्याधर हवे आविउ, मृगांकसेन असमाधि ॥ २ ॥ जो
युं विहुं दिश जेटले, नवि दीतुं तस नाम; गयो एण अवसरें गयवरु,
आव्यो हथणीयुं आम ॥ ३ ॥ मुऊ देखी चिंत्युं मनै, अवसर ठे ए
आज; समिहित माहरुं साधवा, करुं मायायें काज ॥ ४ ॥ शूडी
युं समऊण सवे, करी आव्यो मुऊ कान; शूडीने कहे सांनजे,
ज्ञानीयें नाख्युं ज्ञान ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मोरा आतम राम कुण दिन शेत्रुंजे जाशुं ॥ ए देशी ॥
॥ सुसमार ए पर्वतमां ठे, सर्वकामित इण नामे ॥ जंपापात करे तिहां जइ
नै, जे वांठे ते पामे ॥ मोरी सांनज वात ॥ अवसर एह ठे रूडो ॥ १ ॥
॥ ए आंकणी ॥ तव पूठे शूडी सुणो स्वामी, तेह बतावो ठाम ॥
चुक कहे शीतल ए तरुवरथी, जईयें पासें वाम ॥ २ ॥ मो० ॥ तिणे
कारण सुणि आपण थईयें, विद्याधर मन धारी ॥ तिर्यचना नवथी
हवे सरियुं, चालो तमें चुननारी ॥ ३ ॥ मो० ॥ जइनें जंपापात ते
करीयें, शूडीयें वात स्वीकारी ॥ एम करी जंपापात ते कीथो, गजव
रें पण चित्त धारी ॥ ४ ॥ मो० ॥ जईनें कसुं लीजारति खगनें, आवी
गयो तुऊ वरी ॥ तव लीजारति निकट्यो तिहांथी, चंडजेखा लेई ख
चरी ॥ ५ ॥ मो० ॥ आकाशें जातो ते दीगो, मनमां धाखुं साचुं ॥

जुड शूडो शूडी लह्यां नरनव, ए तीरथ नहीं काचुं ॥ ६ ॥ मो० ॥ ए
 तिर्यचनां विद्याधर अयां, जोतां वार न लागी ॥ ते कारण ए तीरथ
 सार्थे, म्हारी पण लय लागी ॥ ७ ॥ मो० ॥ देवतणी प्रणिधि करी
 मनमां, अमें पण इहां पडियें ॥ ए तिर्यचनो नव ठांमोनें, देवतणी
 गति चढियें ॥ ८ ॥ मो० ॥ एम चिंतीनें तिहां अमें पडोयां, शुक्रयुग
 तीहां चाळुं ॥ कपटें करीनें अमें ठेतरीयां, पण नवि नयणें जाळुं ॥ ९ ॥
 मो० ॥ चूरण अयां अमें अंग उपांगें, पाम्यां बहु तिहां क्लेश ॥ पण अ
 काम निर्झरायें खपीयां, कर्म घणां सुविशेष ॥ १० ॥ मो० ॥ कुसुमशेखर
 नामें व्यंतर पूरे, पद्योपम ऊणुं देशें ॥ एहवो व्यंतर सुर हाथी अयो, अथ्य
 वसाय विशेषें ॥ ११ ॥ मो० ॥ उदारनोग नोगवुं तिहां हुं पण, शूडो पण
 तिहां मरीने ॥ लोहितमुखनामें रत्नप्रनायें, उपनो नीयडी करीने ॥ १२ ॥
 मो० ॥ पद्योपम देशें ऊणी स्थिति, हवे हुं व्यंतरदेव ॥ एहवी देहें अन्य
 विजयमां, चक्रवालपुर हेव ॥ १३ ॥ मो० ॥ अप्रतिहत चक्र सार्थवाहनें,
 सुमंगला नामें नार ॥ तेहनी कुखें पुत्र हुं हुउं, विनयी गुणनंदार ॥ १४ ॥
 मो० ॥ चक्रदेव मुऊ अनिधा ठविउं, पाम्यो बालकनाव ॥ उदवत्थो
 नारक शुक्र एहवे, आयुद्धयें तिहां ताव ॥ १५ ॥ मो० ॥ तेह नयरमां
 एक पुरोहित, सोमशर्मा तस नारी ॥ नंदिवर्धना तेहनी कुखें, उ
 पनो सुत अवतारी ॥ १६ ॥ मो० ॥ कालक्रमें यज्ञदेव ठव्युं अनिधा,
 कुंवरनाव ते पाम्यो ॥ महारे तेहनें प्रीति बनी तव, हुउं अतिविश्रामो
 ॥ १७ ॥ मो० ॥ पण घणी प्रीति म्हारे सझावें, एहतो कपटें राखे ॥ पूर्वना
 अन्यास कर्मना, दोष ए नजरें दाखे ॥ १८ ॥ मो० ॥ सरल घणां हुं
 पण ए वांको, म्हारी संपदा देखी ॥ मत्सर धरे वली वंचे ठजथी, ठि
 ड तणो वलि पेखी ॥ १९ ॥ मो० ॥ यतः ॥ “खलः सत्क्रियमाणोपि,
 ददाति कलहं सतां ॥ दुग्धधौतोपि किं याति, वायसः कलहं सतां ॥ १ ॥”
 न जडथुं ठिड विचारे तिवारें, एम ए ठली नवी शकीयें ॥ तेणें इहां
 एह उपाय ते कीजें, जिम इणो इहां नव टकियें ॥ २० ॥ मो० ॥
 चंदनसारथवाहना घरथी, लावुं इव्य हुं मूशी ॥ मूकवा आणुं ए

हना घरमां, राखरो ए पण हुंशी ॥ ११ ॥ मो० ॥ नूपतिनें संजनाविश
जइनें, राजा दंम ते देशे ॥ माररो कूटरो ने वली एहनुं, घर पण लूटी
लेरो ॥ १२ ॥ मो० ॥ जेम चिंतव्युं तेम कामज कीयूं, लावी इव्य
मुज नासैं ॥ मित्र सुणो ए इव्य मुज राखो, गोपवजो मुज आसैं
॥ १३ ॥ मो० ॥ कुवेलायें लाव्यो तेणे शंक्यो, इव्य न राख्युं जाम ॥ तो
पण दाक्षिण्यता घणी आणी, इव्य गोपव्युं ताम ॥ १४ ॥ मो० ॥ स
ज्जन तेहज सज्जन होवे, खल ते दुर्जन थाय ॥ काक ते काला स
घले देखो, शुक नीला सुखदाय ॥ १५ ॥ मो० ॥ बीजे खंमें सातमी
ढालें, पद्मविजय एह दाख्यो ॥ कस्तूरीने हिंग पटंतर, नविजनैं चि
त्तमां राख्यो ॥ १६ ॥ मो० ॥ सर्व गाथा ॥ १०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयरमां जनरव निकल्यो, शेर चंदनसबवाह; घर मूरयुं तेहनुं घणुं.
हरीयुं इव्य अथाह ॥ १ ॥ सांजली मुज चित्त शंकीयुं, गयो यज्ञदेव
गेह; पूठयुं में परपंचिने, ए किम एणि परें एह ॥ २ ॥ यज्ञदेव बोव्यो
जटो, ज्यो मुजमां संदेह; तातनयें घर ताहरे, आणी मूक्युं एह
॥ ३ ॥ परनुं इव्य आपुं नहीं, शंका गई तव साल; नृपने वात सुणा
वतो, चंदन चतुर वाचाल ॥ ४ ॥ मुज घर कोई मूशी गयो, नणे तदा
नूपाल; शुं शुं गयुं ते नांखियें, कहे शेर ततकाल ॥ ५ ॥ इव्य
लिखाव्युं दफतरें, हवे दुकम करे हाल; मंमेरो वजाडवीयें, सघ
ले करो संजाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हामानी देशी ॥

॥ मंमेरो फेरवे ताम रे, सांजलजो लोका ॥ मली थोकें थोका,
दंम रोकें रोका, दे ठे नृप अन्याईनें रे ॥ १ ॥ चंदन सबवाह गेह
थी, गयो इव्य वणरो ॥ कोई लह्यो तस केरो, जेह होय नलेरो,
नेरो रे आवि कहा मुज प्रत्यें रे ॥ २ ॥ आव्यो होय व्यापारमां, जो
इयनो देश ॥ अथवा ते अशेष, कहा तेह नरेश, केश लहो रे
रखे चापडा रे ॥ ३ ॥ चंमशासन ए राय ठे, जो नहीं कोइ नांखे ॥

दंभ तेहनें दाखे, नहिं राखे सराखे, धन लेई शरीरने दंभरो रे ॥ ४ ॥
 मंमेरो फेरी रह्या, पठे दिन गया पंच ॥ सूकी खलखंच, जइ कहे पर
 पंच, यज्ञदेव नरपति नणी रे ॥ ५ ॥ रे नरपति तुम्ह नांखवुं, ते
 जुगतुं नाहि ॥ मित्रनुं ठिइ आंहि, रायदरबार मांहि, केम नवि कहुं
 तुम्ह हितनणी रे ॥ ६ ॥ आ लोकनें परलोकनो, विरुद्ध आचार ॥
 सेवे निरधार, दुःखनो दातार, निज आतमनो पण जिको रे ॥ ७ ॥
 तेह मित्रनें शुं करुं, केम राय उवेखुं ॥ अन्याय हुं देखुं, नजरें करी
 पेखुं, तिणे तुमनें ए जणावियें रे ॥ ८ ॥ राय कहे कहो वात रे,
 जे तुम्ह मन जाई ॥ खरी वात जे कांई, मज्जाबपणे आंई, न्यायीने
 अन्यायी न नांखजो रे ॥ ९ ॥ यज्ञदेव कहे सांनलो, में सुणीयुं
 कानें ॥ तुमने कहुं साने, चक्रदेव जो माने, ठानेशुं एहनुं घर जोईयें
 रे ॥ १० ॥ पासेना परिजन पास रे, में सांनव्यूं एम ॥ चक्रदेवें प्रेम,
 चंदनघर नेम, द्वेमें रे गोपव्यूं निज घरे रे ॥ ११ ॥ हवे मन माने तिम
 करो, तुमे महोटा राय ॥ माफी पण आय, माहारुं शुं जाय, जाइ
 ठे माहारो ए मोटिको रे ॥ १२ ॥ नृप कहे नवि संनवाय रे, एहनी
 एम वात ॥ उत्तमकुज जात, विरुद्ध अवदात, यात न एहथी एहवुं
 रे ॥ १३ ॥ यज्ञदेव कहे सांनलो, तुम्हे कह्युं ते साचुं ॥ पण शुं हुं
 राचुं, लोनें होये काचुं, जाचुं होय रे मन जेहनुं रे ॥ १४ ॥ एहमां
 कुजनो शो वांक रे, सुरनी होय फूज ॥ कीटक प्रतिकूल, ते मेले धूल,
 ठगणमांहि रे वींठी उपजे रे ॥ १५ ॥ एहनुं घर जोकरावीयें, कोई करी
 प्रकार ॥ सुणी वात विचार, वात युगति धार, चंद्रशासन हवे
 राजिउ रे ॥ १६ ॥ कारणिआ तेडी कहे, हवे एणी परें राजा ॥ महाज
 न सहु साजा, जे होय अतिचाजा, जाजा रे न्याय करे जिके रे ॥ १७ ॥
 चंदन सबवाह गेहनो, जंमारी लीजें ॥ सहु मिलीअ गमीजें, चक्रदेव
 वरें कीजें, नावि जे लखमी तेहनी खोजना रे ॥ १८ ॥ कारणिआ तव
 चिंतवें, श्यो रायनो बोल ॥ न करे कांय तोल, एराजें अमोल, चोल म
 जितरंग धर्मनो रे ॥ १९ ॥ अथवा आपणे कांय रे, आणाना करता ॥

एम चित्तमां धरता, कांय आंसू ऊरता, करता रे जेला सहुनें तिहां गया
रे ॥ १० ॥ पोहोर दिवसर ह्यो पाठलो, तव सहुये आव्या ॥ मुज मन
शोहाव्या, देठा सहु जाया, माया रे मुज उपरें घणी रे ॥ ११ ॥ बीजे
खमें एह रे, कहे आठमी ढाल ॥ गुरु उत्तम बाल, घणी वात रसाल,
माला मंगलनी पामो सहु जना रे ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ १२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन कारणिआ मली, मुजनें पूढे एम; साबैवाह सुत सांन
लो, पूढुं नियमें प्रेम ॥ १ ॥ कोइ व्यवहार करतां थकां, किमहि क
लाव्यो कोय; तो अमनें जांखो तुम्हे, हमणां वात जे होय ॥ २ ॥
सहुनें कह्युं निःशंकथी, नवि कांई जाणुं नेम; तव कारणीआ तेहने,
जलपे सांनलो जेम ॥ ३ ॥ कोप न करजो को मने, आणा नरपति
एम; तुम घर जोवुं ततपरें, कहो तिणें करीयें केम ॥ ४ ॥ हुं वो
व्यो हमणां नहीं, कोपनो अवसर कांय; प्रजापरीक्षा परगडो, न
रपति होवे न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ लालननी देशी ॥

॥ नगरना वृद्ध पुरुष लेइ साथें, रायपुरुषें जोयुं निज हाथें ॥ लालन ॥
जोयुं निज हाथें ॥ इव्य दीतुं तिहां बहु प्रकार, मूक्युं प्रयत्न करी
ने अपार ॥ ला० ॥ क० ॥ १ ॥ जांम चंदननामांकित सार,
हिरण्य केरां मुख्य उदार ॥ ला० ॥ मु० ॥ बाहेर लावी सहुने देखाव्युं,
चंदनचंदारी पुर ठावुं ॥ ला० ॥ री० ॥ २ ॥ जोईने दुःखीआनी परें
वोव्यो. संजवे ठे एहवुं चित्त मोव्यो ॥ ला० ॥ ए० ॥ पण संसय मुज
चिनमां आवे, तव कारणीआ कहे इण दावे ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥
पत्र वांचो जे लख्यो ठे आप, तेहमां ठे के नहींअ आलाप ॥ ला०
॥ न० ॥ दीतुं रे लखीयुं पत्रमां जेह, सहुये थरहखा देखीने तेह
॥ ला० ॥ दे० ॥ ४ ॥ कारणिआ कहे सांनल जाई, ए रुद्धि तुज
वर किदांयी आई ॥ ला० ॥ कि० ॥ में मन चिंतव्युं मित्रनुं नाम,
किम जांहुं सहुमां इण ठाम ॥ ला० ॥ स० ॥ ५ ॥ चोर कदाचित्

एहने जांखे, तो मुज सज्जनता किम दाखे ॥ ला० ॥ ता० ॥ पर
 प्राण केम हणुं निज उगारी, हुं बोव्यो तिहां एम विचारी ॥ ला० ॥
 ॥ ए० ॥ ६ ॥ ए सवि जाजन माहरा घरनां, तव कहे नाम ए केम ठे
 परनां ॥ ला० ॥ के० ॥ में कहुं खबर नथी मुज कांय, फेर फार
 थयो होशे ते प्राय ॥ ला० ॥ हो० ॥ ७ ॥ कारणीया कहे शी सं
 ख्या ठे, हिरण्यनी पण कहो जेह जख्या ठे ॥ ला० ॥ जे० ॥ में
 कहुं नवी मुज सांजरे तेह, पोतानी मेले जुज ते एह ॥ ला० ॥ जु० ॥
 ॥ ८ ॥ कारणीये वंचाव्यो पत्त, दिनार सहस ते दश तिहां उत्त
 ॥ ला० ॥ द० ॥ पत्रने वस्तु बे समोवडे मेलिआं, नागर कारणिआ
 मन चलिआ ॥ ला० ॥ आ० ॥ ए ॥ विस्मय पाम्या ए केम होय,
 चक्रदेवने केम एम जोय ॥ ला० ॥ के० ॥ पश्चिम सूर्य जो कदि जगे,
 परड्य दूरण न करे कोई जुगे ॥ ला० ॥ क० ॥ १० ॥ फरि पूठे
 कहो परगट वात, श्यो ए वात तणो अवादात ॥ ला० ॥ त० ॥ फिर
 फिर पूठुं ए रायनी आण, में कखूं तेहज उत्तरदाण ॥ ला० ॥ उ० ॥
 ॥ ११ ॥ धिक् हो देवनें एम विचारी, फरि पूठे कांइ कहो निरधारी
 ॥ ला० ॥ क० ॥ तोहि न तेहने में कांई जांख्युं, कोप्यो कोटवाल
 एम विमाशुं ॥ ला० ॥ ए० ॥ १२ ॥ लेई चालो हवे नूपने पासें,
 एम करी चाट्या राय सकाशें ॥ ला० ॥ रा० ॥ वात सुणावी रायने
 तेह, राय कहुं मुज सांजलि एह ॥ ला० ॥ सां० ॥ १३ ॥ उजय
 लोकनी वात ते जाणो, एहवुं काम न आये तुम ठाणो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ एहवुं असाधु असंजव किम ठे, कहो परमारथ निपनो
 जिम ठे ॥ ला० ॥ नि० ॥ १४ ॥ आंखमां आंसूने कांय न बोव्यो,
 पूर्व परें चिंतवी नवि मोव्यो ॥ ला० ॥ चिं० ॥ मुज उपरें शंका नृप आवी,
 पण मुज तातनो आदर लावी ॥ ला० ॥ आ० ॥ १५ ॥ मुज
 नवि कांई हीणुं जांख्युं, कदर्थना न करी बहु राख्युं ॥ ला० ॥ क० ॥
 देशनिकाल कखो मुज राय, नयरथी काढयो मुज तिण ठाय
 ॥ ला० ॥ मु० ॥ १६ ॥ नगर देवता वननी पासें, मूक्यो मुजनें

रायने दासैं ॥ ला० ॥ रा० ॥ रायपुरुष गया निज निज ठाम, तव
 मुज चिंता अपनी आय ॥ ला० ॥ उ० ॥ १७ ॥ एवडा प
 राजव जाजन मुजनें, जीवतुं न घटे जीवडा तुजनें ॥ ला० ॥ जी० ॥
 वडतुं वृद्ध ते देवल पासैं, मरवा चाव्यो गले देई फांसे ॥ ला० ॥
 ॥ ग० ॥ १८ ॥ इण अवसर जूवे वनदेवी, अवधिज्ञानें करी वात
 ते एहवी ॥ ला० ॥ वा० ॥ अपनी मुज उपरें अनुकंपा, चिंतवे चि
 त्तमां थई अजंपा ॥ ला० ॥ थ० ॥ १९ ॥ एह अवटतुं मोहोतुं आवे,
 रायनी मातना दिलमां आवे ॥ ला० ॥ दि० ॥ रायनें वात जयारथ
 नांखी, जेह अनीति ते सवली दाखी ॥ ला० ॥ स० ॥ २० ॥ नगरनें
 बाहिर अमुक उद्यान, चक्रदेव मरवाने ध्यान ॥ ला० ॥ म० ॥ दिये
 गले फांसो ते जइनें निवारो, देई सन्माननें नयरें पेशारो ॥ ला० ॥
 ॥ न० ॥ २१ ॥ क्रोध नेह दोय रस अनुभवतो, राय कहे दुःखथी
 टलवलतो ॥ ला० ॥ दुः० ॥ रे यज्ञदेव गृहो दुराचार, आणा देई
 गयो नयरनें वार ॥ ला० ॥ न० ॥ २२ ॥ ठोठे साथें पहतो राय,
 दूरथी देखी आव्यो पलाय ॥ ला० ॥ आ० ॥ गलफांसो देखी करे
 सोर, मां साहस कख तुं इण ठोर ॥ ला० ॥ तुं० ॥ २३ ॥ आवी
 दूर कखो मुज पास, हाथ पकडी वेसाखो खास ॥ ला० ॥ वे० ॥ जूप
 ति बहु आदर करे तास, देखी पामे चित्त उद्वेग ॥ ला० ॥ चि० ॥
 ॥ २४ ॥ नवमी ढाल ए बीजे खंम, जस कीरति सज्जननी अखंम
 ॥ ला० ॥ ल० ॥ पञ्चविजय कहे चढतो रंग, सज्जन होय जिम क
 नकतरंग ॥ ला० ॥ क० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २५ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पृथुं में तुज परपरें, तुजनें ए सवि वात; जूपति कहे नवि नां
 खीयुं, तें एहनां अवदात ॥ १ ॥ सार्धवाहसुत सत्य तुं, जाण्युं सवजुं
 काज; देवीयें मातना दिलमां, आवि नांख्युं आज ॥ २ ॥ यज्ञदेव जूवो
 कव्यो, माचो तूं तुज साख; म्हें चिंत्युं मातुं थयुं, जूपनी सांनलि
 नांख ॥ ३ ॥ कृतिपति कहे तुम्ह खामीयें, खमवुं करी मन खांत;

परमारथ न पिठाणीउं, धमधम्यो क्रोधें ध्वांत ॥ ४ ॥ करी कदर्थना
आकरी, नाख्युं कष्ट अयाण; म्हें सांनजी चिंथुं मनें, अहो अनरथ
अचान ॥ ५ ॥ व्यसन यज्ञदेव आवियुं, एह ययो अनरथ; कहे नृपनें
काढो खरो, यज्ञदेव निजहउ ॥ ६ ॥ प्रजातणा तुमे पालकू, किम
तुम दोष कहाय; मूलशुद्धि काढि अमे, ए सज्जन दुःखदाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मोहन मोकलोने मोशालुं, तथा शीतल जिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥
॥ चक्रदेव कहे सुणो राय, एहथी अकार्य न थाय, यज्ञदेव मित्र
अम्ह जाय, तेणें दूरी न कराय ॥ १ ॥ सज्जन एम जाणीयें नली
रीति ॥ धुर ठेह लगे धरे प्रीति ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ न होये होय
तो थोडो काल, घणो रहे तो निष्फल जाल, एम सज्जन क्रोध सं
जाल, डुरजननो नेह निहाल ॥ २ ॥ स० ॥ राय कहे अम नाख्युं
माय, जगवती ते अलिक न थाय, कहि वात ते सघली राय, यज्ञ
देव जे पूर्वे कहाय ॥ ३ ॥ स० ॥ में चिंतव्युं एह शी वात, केम
यज्ञदेव मुज प्रात, करे एहवुं काम विख्यात, नवि संजव एहवो
थात ॥ ४ ॥ स० ॥ एहवे रायपुरुषें आयो, यज्ञदेव बांधीनें तायो,
रायें हुकम कखो तिणे ठाणो, जिन ठेदन करो सब जायो ॥ ५ ॥
स० ॥ वली आंख्यो दोय उपाडो, एहना घरनो द्यो जाडो, यष्टि
मुष्टि प्रहारें ते ताडो, एहनें देशथी वली निरधाडो ॥ ६ ॥ स० ॥
तव हुं नृप पायें पडीयो, रायनी उलगमां अडीउं, ए दोष ते मुज
आफडीउं, एम हुं नृपशुं घणुं निडीउं ॥ ७ ॥ स० ॥ यज्ञदेवनें
मूको स्वामी, बीजी वस्तुनो हुं नहिं कामी, यज्ञदेवें जो आपदा
पामी, तो मुजमां आवशे स्वामी ॥ ८ ॥ स० ॥ राय कहे नहिं जुगती
वात, एह दुष्ट ठे साते धात, ए तो करे विश्वासनो घात, एहने
राखे शुं थात ॥ ९ ॥ स० ॥ कांय माग्य तुं बीजुं आपुं, शिरदार करी
तुज आपुं, पण यज्ञदेवने नापुं, बीजां ताहरां दुःख कापुं ॥ १० ॥
॥ स० ॥ में कहुं जो मुज बहुमान, यो एहने जीवितदान, नृप

कहे गुं करुं इण ठाण, एहनुं खमीउं सहु तोफान ॥ ११ ॥ स० ॥
 में कहुं कीधो सुपसाय, पडीउं नरपतिने पाय, यज्ञदेव मूकाव्यो
 जाय, नरपति आदर बहु दाय ॥ १२ ॥ स० ॥ बहु रुद्रि मुज वो
 लाव्यो, सज्जन चित्तमां घणुं जाव्यो, राहनो जल राहें आव्यो, एम
 लोकवचनें शोहाव्यो ॥ १३ ॥ स० ॥ यज्ञदेव जघन्यता जूउं, ए जी
 वतो जाणियें मूउं, चक्रदेव केणीपरें दुउं, गंजीर ज्युं जंमो कूउं ॥ १४ ॥
 ॥ स० ॥ सवैउं ॥ “बहिरे गीत नहु सुण्यो, नमर चंपे नहु दीगो ॥ शो
 लकजा संपूर्ण चंद अंधले न दीगो ॥ करहीणे पांगुले, कठिन को बाण
 न ताण्यो ॥ जुवतीकंठ विलग्न, मुग्धरस जेद न जाण्यो ॥ कुणही पूत
 कपूत रस, गीतनाद चित्त नवि धख्यो ॥ कवि गंग कहे रे ठकुरो, तो गुण
 वंता हिगुण गख्यो ॥ १ ॥” ढाल पूर्वली ॥ मुजनें उपनो निर्वेद, एह
 वा मित्रने एम खेद, कर्म परिणतिना बहु जेद, संसार असारता वेद
 ॥ १५ ॥ स० ॥ परचित्तनो पार न लहियें, जौंमि त ते डोही कहीयें,
 कोण देखी चित्त गहगहियें, एहने त्यागें सुखमां रहियें ॥ १६ ॥ स० ॥
 यतः ॥ २॥लोक ॥ “वरं न राज्यं न कुराजराज्यं, वरं न मित्रं न कुमित्र
 मित्रं ॥ वरं न दारा न कुदारदारा, वरं न शिष्यो न कुशिष्यशिष्यः ॥ १ ॥”
 ढाल पूर्वनी ॥ इण अवसर मुनिवर आया, अग्निनूति गणधरराया,
 संजम जोगें अतिहिं शोहाया, उद्यान माहि ते ठाया ॥ १७ ॥
 ॥ स० ॥ में बाहिर गयां थकां दीठा, मुज मनमां लाग्या मीठा,
 म्हारा दूर गयां सब रीठां, प्रणम्या धरी राग उक्कीछा ॥ १८ ॥ स० ॥
 जेहथी सवि दुःखडां जाय ॥ १९ ॥ स० ॥ कह्यो खंति प्रमुख मुनि ध
 र्म, सांनली उपन्युं घणुं शर्म, दीधां मुज विवर ते कर्म, तजिउं मि
 थ्यामत नर्म ॥ २० ॥ स० ॥ ययो देशविरति परिणाम, वधते संवे
 ग उदाम, वैराग्य तणो ययो धाम, करे आतममां आराम ॥ २१ ॥
 ॥ स० ॥ बीजे खंमें दशमी ढाल, जांखी अतिहि सुरसाल, कहे उत्तम
 विजयनो बाल, सुणतां होय मंगल माल ॥ २२ ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यउदय मुक्त पाधरो, कर्म ते गढ्यां कठोर; वीर्यउल्लास घणो
वाध्यो, चंद ज्युं देखि चकोर ॥ १ ॥ बंधस्थिति त्रूटी बहु, व्रतपरिणाम
विशेष; नगवंतने जांख्युं तदा, अनुग्रह कीध अशेष ॥ २ ॥ विरम्यो
चित्त नववासथी, करो आणा करुं तेह; श्रुतज्ञानी ते सांनजी, एहबुं
बोल्या एह ॥ ३ ॥ साधुपणुं तुम्हें संग्रहो, योग्य जीवतुं जाणि; पूर्व
पुरुषें पढीवज्युं, संजमसुखनो खाणि ॥ ४ ॥ गुरुवयणां सुणी ज्ञानथी,
चारित्र चोखे चित्त; आदरितं अति आदरे, पाव्युं तेह पवित्त ॥ ५ ॥
आराध्युं आयु लगें, कालमासें करी काल; देह तजी देवलोकमां,
वाध्यो पुण्यविशाल ॥ ६ ॥ नव सागर निर्झर थयो, पंचम कल्प ते पाम;
बीजो बीजी नरगमां, यज्ञदेव गयो जाम ॥ ७ ॥ ताम नरकपालें तिहां,
दीधूं महा तस दुःख; चक्रदेव लहे चतुर नर, सुरनवमां महासुख ॥ ८ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ जीहो जाण्युं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो एहज महाविदेहमां, लाला विजयगंधिलावईसार ॥ जीहो रय
जुपूरें एक शेठीउ, लाला नाम तेहनुरयणसार ॥ १ ॥ नविकजन, म
करो माया लगार ॥ जीहो जास विपाक अपार ॥ नवि० ॥ ए आंकणी ॥
जीहो श्रीमती तेहनी नारया, लाला उदरें उपनो हुं तास ॥ जीहो
देवलोकमांथी चवी, लाला मानवजव लह्यो खास ॥ २ ॥ नवि० ॥
जीहो यज्ञदेव हवे नरगथी, लाला थयो आहेडी रे श्वान ॥ जीहो
पाप करी तिहांहोज गयो, लाला त्रण सागर आयुमान ॥ ३ ॥ नवि० ॥
जीहो तिहांथी निकलीनें वली, लाला नमीउ तिरिगति मांहि ॥ जीहो
अनुक्रमें रतनपुरें हवे, लाला कहुं जिहां उपजे त्यांहि ॥ ४ ॥ न० ॥
जीहो तातनी घरदासी जिका, लाला नर्मदा तस अनिधान ॥ जीहो
तेहना पुत्रपणें थयो, लाला कर्मनी गति असमान ॥ ५ ॥ न० ॥ जीहो
जन्म लह्या अमें अवसरें, लाला नाम ठव्यां अम तात ॥ जीहो चंद
सार महारुं वली, लाला अणहण एहनं विख्यात ॥ ६ ॥ न० ॥

जीहो जोवन पास्या अनुक्रमें, लाला परणाव्यो वली ताय ॥ जीहो
 विषय आसक्त अम्हे रहूं, लाला काल गयो न जणाय ॥ ७ ॥ न० ॥
 जीहो पूर्व नव अन्यासयी, लाला मुज उपरें परिणाम ॥ जीहो वंच
 नानो न गयो किमे, लाला एहनो नीयडी काम ॥ ८ ॥ न० ॥ जीहो
 एण अवसरतिहां आवीआ, लाला विजयवर्द्धन सूरिराय ॥ जीहो
 मासकल्प विहारी गुरु, लाला प्रणम्या में तस पाय ॥ ९ ॥ न० ॥
 जीहो आवकथर्म अंगीकखो, लाला एक दिन हुं गयो गाम ॥ जीहो
 अमचो राय गयो वली, लाला मूलकगिरिनें काम ॥ १० ॥ न० ॥
 जीहो इण अवसर तिहां आवीउं, लाला सबर सेनापति नाम ॥
 जीहो विंथ्यकेतु आवी करी, लाला हतविहत कथुं गाम ॥ ११ ॥
 ॥ न० ॥ जीहो केईक लोकनें जेई गयो, लाला अमे सांजळ्युं तेणी
 वार ॥ जीहो आवी जोयुं नयरमां, लाला दीतुं मशाण आगार ॥ १२ ॥
 न० ॥ जीहो घरमाणस खोलावीआं, लाला न जडी माहारी रे नारि ॥
 जीहो चंडकांता मुज अपहरी, लाला उपनुं दुःख अपार ॥ १३ ॥
 ॥ न० ॥ जीहो चिंता अई मुज चित्तमां, लाला अहो नवि दीठ वि
 योग ॥ जीहो किम जीवित धरती हरो, लाला तपस्वीनी अबलाजोह
 ॥ १४ ॥ न० ॥ जीहो देवशर्मा विप्र एणि समे, लाला गरढे नांख्युं
 एम ॥ जीहो कल्पना म कर ए वातमां, लाला सांजली कहुं तुज
 प्रेम ॥ १५ ॥ न० ॥ जीहो पूर्वे श्रीयल नगरनें, लाला एणी परें
 सवरें रे कीध ॥ जीहो शील अखंमित आपीउं, लाला पुनरपि लोक
 प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ न० ॥ जीहो इव्य जेई जेई आपीआं, लाला सहु मा
 णस तिणे ताम ॥ जीहो सांजली केईक दिन रह्यो, लाला पहोतो
 सबर निज ठाम ॥ १७ ॥ न० ॥ जीहो अणहग साथें जेइनें, लाला
 इव्य लीउं सारसार ॥ जीहो स्निग्ध स्निग्ध नातुं घणुं, लाला पंथें करवा
 आहार ॥ १८ ॥ न० ॥ जीहो चंडकांता मूकाववा, लाला चाव्यो
 धरी अतिराग ॥ जीहो इण अवसरें मुज नारि ते, लाला नासणनो
 धरे जाग ॥ १९ ॥ न० ॥ जीहो मन चिंते मुज शीलनी, लाला कररो

खंमणा एह ॥ जीहो मुज विजोग कायर घणी, लाला दुःख तणी
 मानुं रेह ॥ १० ॥ न० ॥ जीहो साथ ते सबर पछीतणो, लाला
 शून्यगामनें आसन्न ॥ जीहो पासैं जीरण कूपनें, लाला उतरी उच्चा
 सन्न ॥ ११ ॥ न० ॥ जीहो पाठली रात परोडीये, लाला मंको दीध प्रयाण ॥
 जीहो कामव्यग्र सहु चालवा, लाला उठ्या सघला ठाण ॥ १२ ॥
 न० ॥ जीहो जीवित आशा नवी धरी, लाला पडी ते जीरणकूप ॥
 जीहो जलमें पडी तिणे उगरी, लाला दीगो तिहां प्रतिकूप ॥ १३ ॥
 न० ॥ जीहो बेठी ते प्रतिकूपमां, लाला कष्टें धरती प्राण ॥ जीहो
 इण अवसरें आव्या अमें, लाला चालता तिणहिज ठाण ॥ १४ ॥
 ॥ न० ॥ जीहो अणहग पूर्व अन्यासथी, लाला इव्य देखी परिणा
 म ॥ जीहो मुज उपरें करे वंचवा, लाला करे विकल्प बहु ताम ॥ १५ ॥
 ॥ न० ॥ जीहो जातूं इव्य परस्परें, लाला उलट पालट लेय ॥ जीहो
 ते दिन जातूं मुज करें, लाला इव्य एहनें कर देय ॥ १६ ॥ न० ॥
 जीहो ते स्थानक आव्या जिशे, लाला अर्क अस्तंगत थाय ॥ जीहो
 सांज पडी तव चिंतवे, लाला अणहग धरी मनमांय ॥ १७ ॥ न० ॥
 जीहो इव्य ठे महारा हाथमां, लाला वली ए ठे एकांत ॥ जीहो
 पाताल परें उंमो वली, लाला कूपक ए निचांत ॥ १८ ॥ न० ॥
 जीहो ठांके सवि अपराधनें, लाला एहवो ठे अंधकार ॥ जीहो नाखुं
 कूआमां एहने, लाला वजूं पाठो इण वार ॥ १९ ॥ न० ॥ जीहो
 एम चिंती अणहग-कहे, लाला तरशयो बुं तिणे जाल ॥ जीहो कू
 पमां जल ठे के नहीं, लाला तव में जोयुं निहाल ॥ २० ॥ न० ॥
 जीहो नाख्यो हड्डोली मुनें, लाला पडीउ उदक मजारि ॥ जीहो
 नीकली प्रतिकूपें गयो, लाला तव फरसी में नारी ॥ २१ ॥ न० ॥ जीहो
 जयकायर स्त्रीनावथी, लाला थइ जयचांत ते जोर ॥ जीहो नमो
 अरिहंताणं कहे, लाला शब्द उजख्यो तिणे गोर ॥ २२ ॥ न० ॥
 जीहो हरख्यो हुं हृदये घणुं, लाला मुखथी म्हें कहि वाणि ॥ जीहो
 जिनशासनमां रक्तनें, लाला अजय अजय इण ठाण ॥ २३ ॥ न० ॥

जीहो शब्दथी उलख्यो मुऊनें, लाला रोवा लागी ताम ॥ जीहो तव
आसासना में करी, लाला जो दुःख धरे हवे आम ॥ ३४ ॥ न० ॥
जीहो बीजे खंमें इणी परें, लाला ए अग्यारमी ढाल ॥ जीहो पद्मवि
जय कहे धर्मथी, लाला दुःख थाये विसराल ॥ ३५ ॥ न० ॥ सर्वगाथा ३३ ?

॥ दोहा ॥

॥ पृथुं मे प्रेमें करी, किम तुं कूप मजार; तिमहिज पृथुं तेणीयें,
वात अन्योऽन्य विचार ॥ १ ॥ नारी कहे नरतूं कखुं, अणहगें एह
अकाज; म्हें कखुं एहवुं मत कहो, ए उपगारी आज ॥ २ ॥ तुज सं
जोग कखो तिणे, किम कहो खोटूं काम; अल्पनिशायें इणी परें,
रात गई आराम ॥ ३ ॥ एहवे सूरज उगीउं, खावा आप्युं खांति;
नारी पण मुऊ नेहथी, नखिउं नहिं कोई नांति ॥ ४ ॥ तव में पण
आग्रहें तदा, आरोग्यो वर आहार; तिणें पण वावरिउं तदा, ध
रतां धर्मविचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी विंठीआनी ॥ एक दिन एक परदेशीउं ॥ ए देशी ॥

॥ हवे में मनमांहि चिंतव्युं, अहो केम यागो उकार रे ॥ नवसायर
नी परें कूपथी, नवि सूजे कोई विचार रे ॥ १ ॥ नवि पुण्यतणां फल
पेखजो ॥ ए आंकणी ॥ एम चिंतवतां केई दिन गया, पाथेय थयुं
हवे ह्रीण रे ॥ तव त्रूटि आश्या जीववा तणी, आहार विना होय दीण
रे ॥ २ ॥ नविण ॥ वतः ॥ “खस्यफस्यं च काव्येन, काव्यं गीतेन ह्रीय
ते ॥ गीतं तु स्त्रीविलासेन, स्त्रीविलासो बुभूक्षया ” ॥ १ ॥ ढाल ॥ तव मनमां
चिंता उपनी, अहो जिनमत पामी शुद्ध रे ॥ नवि जिनवर दीक्षा आ
दरी, एमहीज मरगुं अविशुद्ध रे ॥ ३ ॥ न० ॥ दाहिण मुऊ लोय
ण फुरकिउं, वामातुं फुरकियुं वाम रे ॥ मुऊ व्यतिकर नांख्यो नारीयें,
में पण नांख्यो तस ताम रे ॥ ४ ॥ न० ॥ में चिंतव्युं एणी परें चित्त
मां, तव अकुन थयां इणी रीति रे ॥ तेणे जाणुं सुंदरी सांजलो, नवि
आपदनी चिग थीति रे ॥ ५ ॥ न० ॥ तेणे चिंता मत करजो तुमे,

तव तहत कछुं मुऊ वयण रे ॥ अहोरात्र वस्यां अम्हे तिहां कणे,
तव आव्यो कोइक सयण रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ आव्यो सबर राजधानी
थकी, नंदीवर्द्धन सज्जवाह रे ॥ वासी ते रयण पुरी तणो, जाये निज
पुर साथ अथाह रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ तेहना तिहां पुरुष ते आविआ,
जल लेवा मूक्या दोर रे ॥ तव दोर जाली में जणावीजं, कीधो वली
कांयक सोर रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ ते पण जई कहे सारथपति, ते पण
आवि ततकाल रे ॥ मंचिका मूकी अम्ह काढीआं, उजखी पूछे तिणे
ताल रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ कछुं मूजवृत्तांत में माहरुं, धुरथी सवि करी
विस्तार रे ॥ सांजली विस्मय बहु पामीउ, अम्हें चाव्यां तास आधा
र रे ॥ १० ॥ ज० ॥ गयां पांच प्रयाणां जेटले, साथ आगल चाव्यो
जाय रे ॥ राजमारगथी कांय वेगला, दीठा कंकाल ते ठाय रे ॥ ११ ॥
॥ ज० ॥ वामपासैं डव्यनी गांठडी, केसरियें हणीउ तास रे ॥ एहवो
अणहग दीठो तिहां, डव्यें उजख्यो तातनो दास रे ॥ १२ ॥ ज० ॥
तस देखी विपाकनें उपनो, मुऊ मनमां अतिहि विवेक रे ॥ थयो
चारित्र मोहनीनो तथा, क्य उपशम मुऊ अतिरेक रे ॥ १३ ॥ ज० ॥
जीवलोकमां जे डव्येन कह्यो, उपनो मुऊ चारित्रजाव रे ॥ वधते परि
णामें आवीउ, हेमे निज नगरें ताव रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ तिहां विजय
वर्द्धनसूरि आविया, दीक्षा तस पासैं लीध रे ॥ विधिपूर्वक पाळुं
गुह मनैं, आयु पूर्ण अनुक्रमें कीध रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ महाशुक्र क
ल्पमां उपनो, सागरोपम शोलनें आय रे ॥ महर्दिक वैमानिक थयो,
गयो काल जिहां न जणाय रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ एम बीजे खंमें
बारमी, ढाल नांखी अतिहिं रसाल रे ॥ कहे पद्मविजय पुणें करी, होये
घर घर मंगलमाल रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ ३५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अणहग हवे इण अवसरें, कुमरणें करी काल ; त्रीजी नरकें तुरत ते,
उपनुं डुख असराल ॥ १ ॥ आउखुं सात अयर तणुं, दशवेदन दि
ये जोर ; खड्डु अन्योन्यने क्षेत्र तिम, कर्म नोगवे कठोर ॥ २ ॥ जंबु

क्षीप जंबु तरु, शोणित नारद वास ; रथवीरपुर अति राजतुं, सुरपुर
परें सुखवास ॥ ३ ॥ नंदीवर्द्धन नामथी, गाथापतिनें गेह; सुरसुंदरी
शोहामणी, दीपे अद्भुतदेह ॥ ४ ॥ पुत्रपणे हुं प्रगटिउं, अणहगनो
अवतार; नरकमांहिथी नीकली, पाम्यो पाप प्रकार ॥ ५ ॥ विंध्य
गिरि पर्वतवनें, सत्व तणो संहार; करतो सिंह पराक्रमी, उपनो तिरि
अवतार ॥ ६ ॥ बालुप्रचार्यें गयो वली, सागर आयु सात; तिहांथी
बहु नव तिरि तणा, सहिउं दुःख संघात ॥ ७ ॥ तेहज नयरमां तिणे समे,
सोमनाम सबवाह; नंदीमती नारी नवल, उपनो कुखें उत्साह ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ देशी रसीआनी ॥ धर्मजिनेशर गाऊं रंगशुं ॥ ए देशी ॥

॥ अनुक्रमें जन्म थया अम्ह बिहु तणा, आप्यां नाम उदार ॥ कुंवर
जी ॥ महारुं अनंगदेव शोहामणुं, धनदेव एहनुं रे सार ॥ कुं० ॥ १ ॥
पापस्थानक आवसुं तुम्हे परिहरो ॥ ए आंकणी ॥ बालथकी अम
प्रीति थई घणी, पण माहारे सझाव ॥ कुं० ॥ एहतो कपटथकी चाले
घणो, कुमरचाव लह्या ताव ॥ कुं० ॥ २ ॥ पा० ॥ देवसेनगुरु पासें
पामोउं, वीतरागनो रे धर्म ॥ कुं० ॥ वली थौवन पाम्यो हुं जागतो,
करुं व्यवहारनां कर्म ॥ कुं० ॥ ३ ॥ पा० ॥ बाप दादानुं धन घरमां घणुं,
पण अनिमान अत्यंत ॥ कुं० ॥ पूर्वपुरुष अर्जित नहीं कामनुं,
अजुं निज करतंत ॥ कुं० ॥ ४ ॥ पा० ॥ इव्य कमावण रथणक्षीपें
गया, अज्यो रथण अनेक ॥ कुं० ॥ अनुक्रमें निजदेशें जावा नणी,
वेहु जणे चिंतव्युं ठेक ॥ कुं० ॥ ५ ॥ पा० ॥ पूरवकृत कर्म करी चिं
तवे, धनदेव पंथें रे एम ॥ कुं० ॥ उगीयें कोई उपायें एहनें, तो इव्य
आवे ए नेम ॥ कुं० ॥ ६ ॥ पा० ॥ केइक विकल्प मिथ्या कल
पीया, पण कोई नाव्यो रे दाय ॥ कुं० ॥ माख्या विण नवि एह
उगी शकुं, एम मिखांत कराय ॥ कुं० ॥ ७ ॥ पा० ॥ चिंतवे जो
जनमां विष आपीयें, आव्या शक्तिमती गाम ॥ कुं० ॥ चौटे धन
देव गयो कपटें करी, अचतरें नोजन काम ॥ कुं० ॥ ८ ॥ पा० ॥

नोजन कछुं तैयार तिणे समे, एक लारुमां रे जेर ॥ कुं० ॥ बीजो
 लारु शुद्ध लेई हवे, चित्तमां आवे न महेर ॥ कुं० ॥ ए ॥ पा० ॥
 पंथें चित्तविकल्प करे घणा, एहवे थयो विपर्यास ॥ कुं० ॥ विष
 लारु लीधो पोतें तदा, मुज आप्यो जेह खास ॥ कुं० ॥ १० ॥ पा० ॥
 यतः ॥ “ लंघनैः पच्यते रोगः, फलं कालेन पच्यते ॥ कुमित्रैः पच्य
 ते राजा, पापी पापेन पच्यते ॥ १ ॥ ” लारु खाधोने जेर ते परिणम्युं,
 उपनो मुज मनखेद ॥ कुं० ॥ ए शुं वात बनी केम नीपनुं, नवि जाणुं
 तस जेद ॥ कुं० ॥ ११ ॥ पा० ॥ ए हवे कर्म विचित्रता कारणे, विष
 पण उग्र अत्यंत ॥ कुं० ॥ मरण लखुं मुज चिंता उपनी, मित्रनो
 कियों कखो अंत ॥ कुं० ॥ १२ ॥ पा० ॥ नवि कोई खबर पडी एह
 वातनी, आव्यो निजपुर ताम ॥ कुं० ॥ संनलाव्युं तस माणसने सुवे,
 आप्यो अधिक तस दाम ॥ कुं० ॥ १३ ॥ पा० ॥ शेप रहुं ते पुण्यमां
 वावखुं, मुज ते दिनशी वैराग ॥ कुं० ॥ विषय प्रसंग न कीधो ते पढी,
 नित्य नवलो करूं त्याग ॥ कुं० ॥ १४ ॥ पा० ॥ देवसेन सूरि एक दिन आ
 विआ, दीक्षा तेहनं रे पास ॥ कुं० ॥ आदरी विधिपूर्वक पाली
 नलि, अणसण किधूं रे खास ॥ कुं० ॥ १५ ॥ पा० ॥ प्राणतकल्पें
 उपनो हुं तिहां, उगणीश सागर आय ॥ कुं० ॥ विप मरणें धनदेव
 मरी करी, उपनो नारक ठाय ॥ कुं० ॥ १६ ॥ पा० ॥ पंकप्रजायें सा
 गर नव तणुं, आउखुं अति दुःखदाय ॥ कुं० ॥ एणें अवसरें जंबूद्वी
 पमां, ऐरवत क्षेत्र सुगाय ॥ कुं० ॥ १७ ॥ पा० ॥ हथीणाउर नयरें
 अति शोचतो, शेव हरिन्दी नाम ॥ कुं० ॥ लखमीसती तस नारी
 नी कुखमां, उपनो सुत गुण धाम ॥ कुं० ॥ १८ ॥ पा० ॥ धनदेव नर
 गमां हिथी नीकली, ते थयो फणिधर नाग ॥ कुं० ॥ हिंसा करी केई
 जीव संतापीआ, थयो दावानल दाग ॥ कुं० ॥ १९ ॥ पा० ॥ मरिनें
 पंकप्रजायें फरी गयो, दशसागर काय ऊण ॥ कुं० ॥ तिहांथी नि
 कली तिरिजव बहु जम्यो, दुःख न लहे कमें कुण ॥ कुं० ॥ २० ॥
 ॥ पा० ॥ तेहज हथिणापुरमां हि वसे, इंदनाग वड शेव ॥ कुं० ॥ नार्या

नंदिमती तस कुखमां, पुत्रपणे दुठ नेठ ॥ कुं० ॥ ११ ॥ पा० ॥ स
मयें जनम्या विहुं निजनिज घरे, थाप्यां नाम विशेष ॥ कुं० ॥ वीर
देव वर थाप्युं माहूरुं, झोणक इतरनुं देख ॥ कुं० ॥ १२ ॥ पा० ॥ पाम्या
कुंवरपणुं हवे अनुक्रमें, बीजे खमैं रे ढाल ॥ कुं० ॥ तेरमी पद्मविजयें
शोहामणी, सुणतां मंगलमाल ॥ कुं० ॥ १३ ॥ पा० ॥ सर्वगाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोप्या अमनै शीखवा, प्रगट पंक्षित पास; प्रीति थई पूरवपरें, अम्हें
विहुं कस्यो अन्यास ॥ १ ॥ मानजंग गुरु मुज मव्या, तेहनी पासें
ताम; जिनवरजीयें जे कह्यो, धर्म जह्यो गुणधाम ॥ २ ॥ इव्यथकी
झोणक थयो, मुज वंचवा निमित्त; धर्मराग हुं धारीनैं, तिहांथी अधि
की प्रीति ॥ ३ ॥ थिरतर प्रीति घणी थई, दीधुं एहनैं इव्य; निंद्य
व्यापार करशो नहीं, नांखुं इणि परें नव्य ॥ ४ ॥ सईआरे सोप्युं सवे,
करे व्यापार कजंठ; अर्ज्युं इव्य उतावलुं, गरथ घणो करे गंठ ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ जीरें मारे जाग्यो कुंअर जाम ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे मारे पाम्यो इव्यविशेष, तव चिंते चित्त एणि परें जीरे जी ॥
जीरे मारे पूर्वकृत जे कर्म, तास अन्यास मनैं धरे जीरे जी ॥ १ ॥
जीरे० ॥ जाग जेगो वीरदेव, वेंहचिए इव्यनैं माहुरो जीरे जी ॥ जीरे०
में मुखथी न कहाय, नवि थापुं जाग ताहुरो जीरे जी ॥ २ ॥ जीरे० ॥
वंचुं कोये उपाय, जिम नवी जाणे ए मनैं जीरे जी ॥ जीरे० ॥ माहुरा
व्यापारनी वात, में नवि नांखी कोई कनैं जीरे जी ॥ ३ ॥ जीरे० ॥ उल
हुं सवलो लान, थयवा कोई मानैं नहिं जीरे जी ॥ जीरे० ॥ ते कारण
करुं वात, बीजो उपाय इहां नहीं जीरे जी ॥ ४ ॥ जीरे० ॥ पठें कहि
थ हुं जेह, ते सवि वात वरे पडे जीरे जी ॥ जीरे० ॥ एम धारीनैं उपाय,
करवा मांमयो मनवडे जीरे जी ॥ ५ ॥ जीरे० ॥ महोठो एक प्रासाद, उ
पर जाग करे ईन्यो जीरे जी ॥ जीरे० ॥ रमणिक अति सुविशाल, देखवा
नैं जोवा जीम्यो जिरें जी ॥ ६ ॥ जीरे० ॥ किलक अनियमित, निर्यु

थक सवि खलनले जीरे जी ॥ जीरे० ॥ जोवा तेडुं घेर, चढशे जोवा ह
 लफले जीरे जी ॥ ७ ॥ जीरे० ॥ पढशे ए प्रासाद, तव ए यमनृपघर
 जशे जीरे जी ॥ जीरे० ॥ मुऊ नहीं कांय अपवाद, कारय पण सघजुं थ
 शे जीरे जी ॥ ८ ॥ जीरे० ॥ तेडयो मुऊने घेर, जमीआ बिहु साथें
 वली जीरे जी ॥ जीरे० ॥ तेडी गयो प्रासाद, आरोह्या अमें बिहु मलि
 जीरे जी ॥ ९ ॥ जीरे० ॥ देखाडवा लप ठप, करतां मति तेहनी चली
 जीरे जी ॥ जीरे० ॥ चढीउं आगें आप, अजिअ न हुं चढिउं वली जी
 रे जी ॥ १० ॥ जीरे० ॥ निरूथक आरोह, कीधो तव एणी परें थयुं
 जीरे जी ॥ जीरे० ॥ हाहारव थयो ताम, सघजुं तेह पडी गयुं जीरे जी
 ॥ ११ ॥ जीरे० ॥ उंसरीउं हुं तब, जोउं तो डोणक मरी गयो जीरे
 जी ॥ जीरे० ॥ उपनो मुऊ निर्वेद, धिक् मुऊ नव अहेजे गयो जीरे जी
 ॥ १२ ॥ जीरे० ॥ धीक् संसार असार, मरवुं सहुनें एणी परें जीरे
 जी ॥ जीरे० ॥ मृतकारय कखां तास, पण चित्त मुऊ न रमे घरे ज
 रे जी ॥ १३ ॥ जीरे० ॥ मानजंग गुरु पास, श्रमणपणुं में आदखुं
 जीरे जी ॥ जीरे० ॥ पाली चारित्र शुद्ध, अणसण वली अंगीकखुं जी
 रे जी ॥ १४ ॥ जीरे० ॥ हेठिम उवरीम नाम, ग्रैवेयक त्रीजे गयो जीरे
 जी ॥ जीरे० ॥ पणवीश सागर आय, कांयक ऊण माहरो थयो जी
 रे जी ॥ १५ ॥ जीरे० ॥ डोणक हवें करी काल, रौडध्यानें मरी उप
 न्यो जीरे जी ॥ जीरे० ॥ बार सागरनें आय, धूमप्रजायें नीपन्यो जीरे
 जी ॥ १६ ॥ जीरे० ॥ एहज जंबुद्विप, एहज विजयें पुर नलुं जीरे
 जी ॥ जीरे० ॥ सुंदर चंपावास, सुरपुरसन चित्त अटकलुं जीरे जी ॥
 १७ ॥ जीरे० ॥ माणिजड तिहां शेठ, हारिणी नार्या गुणवती जीरे जी ॥
 जीरे० ॥ सुरजवथी चवि तास, कुखें उपनो शुनमति जीरे जी ॥ १८ ॥
 जीरे० ॥ उचित समयें थयो जन्म, नाम पूर्णजड थापिउं जीरे जी ॥
 जीरे० ॥ घोषे उच्चरतां आदि, अमर एहवुं उच्चापीउं जीरे जी ॥ १९ ॥
 जीरे० ॥ अमरगुप्त थयुं नाम, बीजुं अति शोहामणुं जीरे जी ॥ जीरे० ॥
 श्रावकधर परनाव, बालथी जैनधरमी घणुं जीरे जी ॥ २० ॥ जीरे० ॥

बीजे खमें ढाल, चौदमी नांखी शोहामणी जीरे जी ॥ जीरे ॥ पद्मविज
य कहे एम, सांजलो वात झोएकतणी जीरे जी ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारकजवथी नीकली, ठेहले सायरमत्स; पाप करी पोहुं तिहां,
बीजी वार विजत्स ॥ १ ॥ पांचमी नरकें पापथी, अयरबारनुं आय;
तिहांथी नीकली तिरि तणा, जव बहु जगें जमाय ॥ २ ॥ एहज न
यरमां इण समे, नंदावर्त्त इण नाम; शेठ घणुं शोहामणो, रुद्धितणो
विशराम ॥ ३ ॥ श्रीनंदा शोहामणी, नारी रूपनिधान; कुखें तेहनी
कुंअरी, उपनी अप्सरवान ॥ ४ ॥ जनम थयो तस जेटले, नंदा थाप्युं
नाम; आवी यौवन अनुक्रमें, आपी मुजनें आय ॥ ५ ॥ पाणिग्रहणें पर
णिआ, श्यामा उपरें स्नेह; मुजनें उपनो मूलथी, आणुराग अठेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ नीड्डी वेरण दुई रही ॥ ए देशी ॥

॥ पंचविषय सुख जोगवुं, तेह साथें हो गयो केई काल के ॥ पूर्वकर्म
दोपें करी, नारी गुंथे हो मन आलजंजाल के ॥ १ ॥ कर्म तणी गति
सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ घरसार सोंप्युं सवि एहनें, पण न गयो हो
माया परिणाम के ॥ कपटें वात सवे करे, हुं जाणुं हो ए सत्यनुं
धाम के ॥ २ ॥ क० ॥ परिजन सयण आवी कहे, तुज नारी हो क
पटी शिरदार के ॥ पण हुं कांय मानुं नहीं, सरलनावें हो वली रा
गनें धार के ॥ ३ ॥ क० ॥ एक दिन मायायें कह्युं, गयां कुंमल हो
जुग जे घर सार के ॥ पोतें उलवी एम कह्युं, आकुल व्याकुल हो
वली याय असार के ॥ ४ ॥ क० ॥ खेद मकर तूं सुंदरी, गयो अं
गनो हो मल ताहरो आज के ॥ कुंमलजुगल करूं नवां, पठी आवशे
हो इय जे मुज काज के ॥ ५ ॥ क० ॥ एम कहि नविन करावीयां,
वजा एकदिन हो अच्यंगन जाणि के ॥ नामांकित निज मुझिका, आपी
नागीनें हो गखवा निज पाणि के ॥ ६ ॥ क० ॥ निज आनरण
कर्मियां, मृकि तेंगें हो मुझा बहु मोल के ॥ एहाण जोयण करी
इण नमे, अंगरागनें हो वली लीध तंबोल के ॥ ७ ॥ क० ॥ शंका

रहित करंजीउ, ऊघाडी हो मुझ में लीध के॥ कुंमलजुगल दीतुं तिहां,
 गयुं पूर्वे हो जस सार न कीध के ॥ ७ ॥ क० ॥ चिंता मुजनें
 उपनी, जडयां कुंमल हो दीसे ठे नारि के ॥ आवी नंदा एण समे,
 दीठी मुझ हो मुज हाथें उदार के ॥ ८ ॥ क० ॥ विलखी अई निज
 चित्तथी, में जाण्यो हो एहनो तव जाव के ॥ निकल्यो हुं घरमांहिथी,
 चित्त चिंतव्युं हो हमणां एह दाव के ॥ ९ ॥ क० ॥ नारी विचारे चि
 त्तमां, मुज लघुता हो अई इण ताम के ॥ कुंमलजुगल दीतां इणो,
 हवे करवुं हो एह किणीपरें काम के ॥ १० ॥ क० ॥ ए षण
 नाशीनें गयो, हवे सयणमां हो ज्यां नवि करे वात के ॥ लघुता
 सयणमां नवि होये, आगलथी हो मारुं करी घात के ॥ ११ ॥
 ॥ क० ॥ कामण योग कहूं जिणे, मरे वहेलो हो वहेलूं
 थाय काम के ॥ डव्य संजोग बहु कखो, तिणे एकली हो कूड
 कपटनी धाम के ॥ १२ ॥ क० ॥ एकांत प्रदेशों दाटवा, जाये
 जेटले हो तेटले तिहां नाग के ॥ करडयो कर्मवशें करी, जिहां जाये
 हो तिहां कर्मनो लाग के ॥ १३ ॥ क० ॥ वरष लगें अन्न नवी मव्यां,
 जिनरूपनजी हो कखां कर्म न जाय के ॥ गोपें खीला ठोकीआ, जि
 नवीरनें हो अतिहैं दुःखदाय के ॥ १४ ॥ क० ॥ षट महिना लगें
 नवि मव्यो, आहारठंढणा हो कीधो अंतराय के ॥ पंचनचारी झौपदी,
 सीतानें हो कलंक ते आय के ॥ १५ ॥ क० ॥ कलावती कर कापी
 आ, खंधकनी हो उतारी खाल के ॥ तिम एहनें नागें मशी, बीबानी हो
 पडे जांतिनें ख्याल के ॥ १६ ॥ क० ॥ यतः ॥ “कृतकर्मद्वयो नास्ति,
 कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव नोक्तव्यं, कृतं कर्म शुनाशुनं” ॥ १७ ॥
 रुद्रदेव पुरोहितें कहुं, तुज नारीनें हो करडयो ठे साप के ॥ हुं पण ग
 यो उतावलो, एम जाणुं हो केम आव्युं पाप के ॥ १८ ॥ क० ॥
 अई अचेत दीठी तदा, श्याममंजल हो अयां तास शरीर के ॥ आंसुपा
 त करतो थको, न खमाये हो में तेहनी पीर के ॥ १९ ॥ क० ॥
 धिक् संसार असारनें, जिम स्वपनुं हो माया इंडजाल के ॥ गद गद

वाणीयें में कछुं, तुज्जें किम हो थयुं एम अकाल के ॥ २० ॥ क० ॥
 शी तुज्जें पीडा अठे, एम पूठयुं हो पण न दिए बोल के ॥ तव मुज
 खेद घणो थयो, गइ जीवित हो आशा दर बोल के ॥ २१ ॥ क० ॥
 गान्डी तेडया तिण समे, करी खेदनें हो कहे इणी परें तेह के ॥ कालें
 मशी ए नारिनें, नहीं चारो हो नरमात्रनो एह के ॥ २२ ॥ क० ॥ इम
 कही गान्डी घर गया, नवि मंत्रनी हो कांय चाली शक्ति तो ॥ काल
 करी परजव गई, सहु विलखे हो करे आक्रंद जति के ॥ २३ ॥ क० ॥
 मृतकारज करी तेहनां, तेह निमित्तें हो वधते परिणाम के ॥ क्लेशका
 रण संग ठांजीउ, संसार ते हो जाणी दुःखताम के ॥ २४ ॥ क० ॥
 लीधी दीक्षा में गुरुकनें, ठछिनरकें हो पोहोती तेह नारि के ॥ एकवीश
 सागर आउखे, एह माहरुं हो चरित्र अवधारि के ॥ २५ ॥ क० ॥ राय
 नयरजन सांजली, गुरु जांखो हो हवे आगलें वात के ॥ निपजशे शुं ए
 हने, तुमचो पण हो जांखो अवदात के ॥ २६ ॥ क० ॥ अमरगुप्त गुरु
 बोलिआ, एहने तो हो ठे अनंत संसार के ॥ मुक्ति जशे अंतें सही,
 हुंता इण जव हो पामीश जवपार के ॥ २७ ॥ क० ॥ ए जव मुनिना
 सांजली, तेहु पासें हो में लीधी दीख के ॥ बहुजनें नगरमां आदरी,
 मुज साथें हो धरी गुरुनी शीख के ॥ २८ ॥ क० ॥ ए मुज हेतु वि
 जेप ठे, वैराग्यनुं हो सुणि सिंहकुमार के ॥ बीजे खंमें पनरमी, ढाल
 जांखी हो पद्म मनोहार के ॥ २९ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहकुमार ते सांजली, कहे रूडुं कछुं काम; हवे जांखो गुरु हित
 करी, गुरु तुम्हे गुणगणधाम ॥ १ ॥ कति गति रूप गुरु कह्यो, ए सं
 सार अपार; सुख दुःख मननें शरीरनां, श्यां श्यां होय संसार ॥ २ ॥
 जवअटवी जमतां थकां, धर्म कीउ आधार; गुरु कहे सुण संसार ए,
 चिहुं गतिरूप विचार ॥ ३ ॥ नरक तिरि सुर नरगति, संसारें नहीं
 सुख; जग मरणनें जन्मथी, दुःखीआनें नित्य दुःख ॥ ४ ॥ रागद्वेष
 गणें करी, वेदन विषय विपाद; सुख तो नहीं तस स्वपनमां, पामे

दुःखप्रमाद ॥ ५ ॥ ते उपरें दृष्टांत तूं, सांजल चतुर सुजाण ; मधु
बिंदुमानव तणो, वीरें कीध वखाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ एकवीशानी तथा त्रुटकनी देशी ॥

॥ ढाल ॥ एक नर कोई रे दारिद्र्य दुःख संतापीउ ॥ मूकी देशनें रे परदेशें
गयो पापीउ ॥ गाम आगल रे पाटण बहु नमतां हवे ॥ नूजो पं
थथी रे एक अटवीमां एहवे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ शाल ताल तमाल
निंबह, कुटज न्यग्रोध खेर ए ॥ सल्लकी अर्जुन बकुल अंकोल,
अंब जंबू केर ए ॥ वंजूल तिलक कदंब रायण, तिणीस धवनें पलाश
ए ॥ जिहां सिंह चित्ता फाल देता, जीववा शी आश ए ॥ २ ॥
॥ ढाल ॥ बाघ जंबुक रे रोज शरन बहु नय करे ॥ वननेंसा रे युद्ध
करे ते परपरें ॥ जलचर जीव रे पाणी उठाले वेगशुं ॥ तेह नरनें
रे चिंता न माय उदेगशुं ॥ ३ ॥ त्रुण ॥ नूरख्यो तरशयो खमे वेदन, श्वा
पदना सुणे साद ए ॥ उत्रस्तलोचन स्वेद गलतो, करे बहु विषवाद ए ॥
दीर्घपंथें आक पाम्यो, विषम मार्ग खलाय ए ॥ इण समें गजवर एक
दीगो, पूठें आवे धाय ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ महादुर्दैत रे पंथी लोकनें मारतो ॥
गाजतो वली रे गुंफयकी फूंकारतो ॥ गुंढामंढ रे उंचो करीनें चालतो ॥
चालतो नग रे दीसे मेव ज्युं म्हालतो ॥ ५ ॥ त्रुण ॥ तेमज एकराद्ध
सी देखे, महादुष्ट कराल ए ॥ महाकाय विकराल वयणें, निशित कर
करवाल ए ॥ जीम अट्ट हास मूके, वरण अति तस श्याम ए ॥ देखी बी
हिनो मरण नयथी, जुवे दश दिश ठाम ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ पूर्वदिशें रे देखे बड
एक ताम रे ॥ उदयाचल रे शिखरपरें अनिराम रे ॥ सिद्ध गंधर्व रे
मारग रोक्या तास रे ॥ मन चिंते रे किमहिक जाउं ए पास रे ॥ ७ ॥
॥ त्रुण ॥ ऊगरुं तो एह नयथी, चढूं चड उपरें जई ॥ एम चिंतविनें
शीघ्र चाव्यो, पद नेदायें कुशसुई ॥ पहोतो चडनी पास तव ते, देखि मन
मां चिंतवे ॥ गगन गोचरथी न लंघाये, केम करुं एहनें हवे ॥ ८ ॥ ढाल ॥
आरोही रे न शके हवे ते कोई परें ॥ गज देखी रे तेहनुं तन बहु थर
हरे ॥ एम करतां रे दीगो जीरण एक रे ॥ कूपक तिहां रे उंमो ते अ

ति ठेक रे ॥ ९ ॥ त्रु० ॥ जीववानी कृणिक आशा, धरी मरणनो जय
 मने ॥ निरालंबन आत्म मूक्यो, नवि आधार को तिहां कने ॥ नीति
 उग्यो सरनो थंनो, वलगो तेहने उल्लसी ॥ पडणानीयातें हेव फणि
 धर, चार कोप्या धसमसी ॥ १० ॥ ढाल ॥ चार कांठे रे तेह रहे कोपाकुला,
 फणाटोपें रे करडवानें थया व्याकुला ॥ एक अजगर रे दिग्गज सम
 दीसे खरो ॥ आंख राती रे कृष्णकाय मुख मोकरो ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ चिं
 ते मनमां एह थंनो, तिहां जगें जीवित बहुं ॥ उंचे मुखें जब जोईउं
 तव, दीतूं ते सुणजो कहूं ॥ एक धवलनें एक कृष्ण ए बे, उंदरा म
 होटा हवे ॥ दाढ तिखी मूल ठेदे, हस्ती पण जूउं ते हवे ॥ १२ ॥ ढाल ॥
 नवि पहोचे रे ते नरनें हवे हाथीउं, धंधोले रे कोपें वड उन्माथीउं ॥
 तेणें हाव्यो रे मध पूडो एक उपरें ॥ मधुच्रमरी रे उडी ते चिहुं दिशि
 संचरे ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ च्रमरी समूहें तास गात्रें, दिये चटका अतिव
 णा ॥ मधुजाल पडीउं कूपमां तिणें, गणगणाटनी नहीं मणा ॥ एक
 विंडु मधुनो तिहां पडीउं, शीश उपर तास ए ॥ आलोटतो ते किमकें
 आव्यो, तास मुख आवास ए ॥ १४ ॥ कृण इहे रे वली एक विंदू
 आवतो ॥ पण न गणे रे जे दुःख एवडां पावतो ॥ करीमुस्ता रे थ
 जगरनें वली साप रे ॥ कूउं जमरी रे एवडा न गणे संताप रे ॥ १५ ॥
 ॥ त्रु० ॥ मधुविंडुरस आस्वाद गिर धर, हरष पामे बहु तदा ॥ सुणो
 उपसंहार एहनो, मोहधूम जाये कदा ॥ पुरुष ते ए जीव जाणो,
 चार गति अटवी कही ॥ वनवारण ते कीनास जाणो, जरा राक्षसणी
 लही ॥ १६ ॥ ढाल ॥ वडवृद्ध ते रे मोक्ष अपूरव जाणीयें ॥ मृत्युगजवर रे
 जय जेह स्थानक नाणीयें ॥ विषयातुर रे नर आरोही नवी शक्या ॥ पाप
 स्थानक रे परिग्रहमांहि जे ठक्या ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ सर्प चार कपाय
 समजो, कूउं नरनव जाणीयें ॥ जे मनुजनें ए नाग करडया, घोर दुःख
 विष खाणीये ॥ कार्याकार्य न लहे ते नर, जीवित सरथंनो गणो ॥ दोय
 पक्ष जे बहुल अर्कून, तेह उंदर सम जणो ॥ १८ ॥ ढाल ॥ करडे च्रम
 रीउं रे व्याधि विविध बहु सत्तरें ॥ कृण मात्र रे सुख नवि लहे कोई

॥ घोर अजगर रे नरग ते अति दुःखदाय रे ॥ विषे मोहित
हैं गायां दुःख थाय रे ॥ १९ ॥ त्रुण ॥ मधुबिंदु सम ए जोग
तु जिनैं दारुण कहे ॥ एह व्यसनमां कहो कोण प्राणी, जोगववानें
॥ तेणे कारणें करो धर्म मानव, नव ते कुशबिंदु समो ॥ चंचल
ही सम समागम, सज्जनना जाणो तुमो ॥ २० ॥ ढाल ॥ संध्या
रे सरीखुं यौवन जाणीयें, करो आदर रे धर्म सदा सुख खाणी
बीजे खमें रे शोलमी ढाल शोहामणी, मानवजव रे जाणजो
चिंतामणि ॥ २१ ॥ त्रुण ॥ चिंतामणि सम धर्म कीजें, एह उप
सांजली ॥ कहे पद्म ए दृष्टांत नांखुं, बीजो पाठांतर वली ॥ ग्रंथां
तेह जाणो, इहां चरित्रप्रकार ए ॥ सिंह पूढे हवे गुरुने, धर्म
उदार ए ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७३ ॥

॥ दोहा ॥

सहकुमर कहे सांजलो, कतिविध धर्म कहाय; धर्मी कहे दशविध
धर्म, मुनिनो ए निरमाय ॥ १ ॥ अतः ॥ “स्वन्ति मदव अज्ज्ञव,
ति तव संजमेय बोधवे ॥ सच्चं सोयं आकिंचणं च बंनं च जइधम्मो
॥ १ ॥” सम्यक्वस्तु स्वनावनो, अंतर करी आलोच; क्रोधतणो अ
य करे, करे उदयें संकोच ॥ २ ॥ मदव पण एम माननो, अनु
ल अपार; अवव माया अणउदय, उदयें विफल अविकार
मुत्ति ते लोन तणो मुणो, अनुदय उदय अनाव; उदय ल
करे अफल, प्रजुनें वचन प्रनाव ॥ ४ ॥ तपस्ते दुविध परें
॥ ५ ॥ ॥ अतः ॥ “अणसण मूणोयरीया, वित्तीसंखेवणे र
वाउ ॥ कायकिलेसो संली, ए याय वज्जो तवो होई ॥ १ ॥ पायवित्तं वि
उ, वेयावच्चं तहेव सज्जाउ ॥ जाणं उस्सग्गो विय, अप्पितरउ तवो
ही ॥ २ ॥” सत्तर जेद संजम सुणो, सत्य ते निरवद्य नास; शौच ते
रलेपी सदा, आठमो पूरे आश ॥ ६ ॥ आकिंचन ते एणी परें,
रमोपगरण धार; परिग्रहनें राखे परो, बंन ते षटनें बार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ चंझावजानी अथवा ध्रुवाख्याननी देशी ।

॥ ए यतिधर्मेन सांजली रे, बोले सिंहकुमार ॥ शोजन-
साधुनो रे, नांख्यो तुम्हे अणगार ॥ १ ॥ नांख्यो तुम्हे
नवि थाय, हुंतो समर्थ नहिं मुनिराय ॥ मुज्जने योग्य ह
कांय, ते नांखो मुज्ज करी सुपसाय ॥ २ ॥ जीमोहनजी जीरे
आंकणी ॥ धर्मघोष मुनि बोलीआ रे, आवक थाउ महाजाग ।
ह कहे ते केहवो रे, आवक धर्मनो जाग ॥ ३ ॥ आवकधर्म
मुनिराय, इव्यजावथो अंगीकराय ॥ माने कृत्यकृत्य आतम
मुनिवर सेव करे सुखदाय ॥ ४ ॥ जीमो० ॥ वंदना विनयेथकी
रे, पोहोता नयरीमांहि ॥ कुसुमावलीनें जई कहे रे, ते पण
त्साहि ॥ ५ ॥ ते पण धरी उत्साहनें पामे, कर्मकृत्योपशमें मि
वामे ॥ समकित अणुव्रत लहे गुणधाम, नित नित गुरुसेवा सुखक
॥ ६ ॥ जीमो० ॥ मास कल्प एम वही गयो रे, गुरुजीयें कीध
हार ॥ जैनधर्में दृढ ते थयो रे, तत्वातत्व विचार ॥ ७ ॥ तत्वात
विचार ते थाय, एकदिन पुरुषदत्त ते राय ॥ अमिततेज गुरुजीनें
य, धर्मदेशना सुणि सुखदाय ॥ ८ ॥ जीमो० ॥ सिंहकुमार रा-
ववी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ राणी श्रीकांता सह वली रे, लहे-
मार्ग अनूप ॥ ९ ॥ लही शिवमार्ग अनूप ते पाजे, सिंहराय निज
ज अजुआजे ॥ कर्मअन्याय अरिनें टाजे. त्रण वर्ग पाजे निजक
॥ १० ॥ जीमो० ॥ सहु लोकनें आणंद करे रे, सामंत मंमल आ-
शिर वहे चंपकमाल ज्युं रे, करे उपकार सुजाण ॥ ११ ॥ करे
कार सुजाण वैरागी, राजरूपि कहेवाये त्यागी ॥ काढे काल ए
सोजागी, चारित्र धर्मतणो बहुरागी ॥ १२ ॥ जीमो० ॥ अगनि-
तापमो रे, विद्युतकुमार जे देव ॥ तिहांथी चविनें बहु जम्यो रे,
गिगितिनी करे सब ॥ १३ ॥ तिरिगितिनी करी सेवनें आव्यो, अनं-
जयें बाल तपस्वी ओहाव्यो ॥ तिहांथी मरी कर्मवासना जाव्यो, दु-
सावजीनें कुसं गाव्यो ॥ १४ ॥ जीमो० ॥ दीगो स्वपनमां तेणीयें

उदरमां पेसतो नाग ॥ बाहिर निकली रायने रे, करडयो ते लही जा
ग ॥ १५ ॥ करडयो तिणे ते पडीउं चूप, सिंहासनथी एह सरूप ॥
देखी स्वपनुं एह विरूप, जागी अमंगल जाणि अनूप ॥ १६ ॥ जी
मो० ॥ नवि संनजाव्युं रायनें रे, गर्न ते वधतो जाय ॥ तेह तणा प
रजावधी रे, नवि बहु माने राय ॥ १७ ॥ स्नेह धरे बहु राजा तास,
परिजन कहे राणीने उद्दास ॥ एम न घटे तुम करवुं खास, तव राणी
तेहने कहे नास ॥ १८ ॥ जीमो० ॥ शुं करुं तव परिजन कहे रे,
चूपने आदर दीजें ॥ तव जाणुं इम राणीयें रे, गर्नतो दोष कहीजें
॥ १९ ॥ गर्नता दोष विना नवि होय, अन्यथा रायशुं रीश न कोय ॥
दोहद उपनो एक दिन जोय, हवे सांजलो ते जांखुं सोय ॥ २० ॥
जीमो० ॥ रायनां आंतरडां जखुं रे, राणी विचारे ताम ॥ गर्न ए घाप
कारी घणो रे, एहतुं नहीं मुज काम ॥ २१ ॥ काम नहीं मुज चिंते
नारी, नर्त्ता स्नेह ते चित्त विचारी ॥ नारी स्वजाव कायर निर्धार, पाहुं
गर्न हुं ए एणि वार ॥ २२ ॥ जीमो० ॥ तास उपाय बहु कखा रे, पण ते
निकाचित कर्म ॥ कोइ प्रकारें पडयो नहीं रे, वैरजावना मर्म ॥ २३ ॥
अथवा कारण उंपड पीधां, तिणे डुर्बल तस अंगज कीधां ॥ दो
हला ॥ पण कार्य न सीधां, कर्म कखां ते गांठें लीधां ॥ २४ ॥ जीमो० ॥
डुवली देखो पूठतो रे, राय राणीने एम ॥ शुं तुजने नवि संपजे रे,
अथ ऊणो मुज प्रेम ॥ २५ ॥ अथवा कोश्यें आणा खंढी,
दीसे तुं जिम दैवें दंढी ॥ पाणी रहित जिम माठली खंढी, अथवा
कुमुदिनी उदकें ठंढी ॥ २६ ॥ जीमो० ॥ रायरार्गे राणी कहे रे, मुज
मनमां एम आवे ॥ मरण लहुं इण अवसरें रे, तो मुजने सुख आवे
॥ २७ ॥ शुं निमित्त पूठे तस ताम, देवी कहे मुज दैव ठे वाम ॥ एम
कही आंशु रेडे तिण ताम, राजा चिंते नव पूठण काम ॥ २८ ॥ जी
मो० ॥ वात कथा बीजी करी रे, आक्षेपुं मन तास ॥ तेडी परिजनने क
हे रे, वात सुणो उद्दास ॥ २९ ॥ वात कहे हवे राजा सारी,

ढाल सत्तरमी ए मनोहारी ॥ बीजे खमें मनमां धारी, पद्मविजय कहे
सुणो सुखकारी ॥ ३० ॥ जीमो० ॥ सर्व गाथा ॥ ५१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवी केम ए दूबली, उवेखी केम एह ; बहुल पद्मना चंदबल, सरि
खी दीसे केह ॥ १ ॥ सारनूत सवि विश्वमां, राणी रयणसरूप ; प्रा
ण धरंते न निपजे, एहवुं गुं ठे अनूप ॥ २ ॥ मदनलेखा तव मान
नी, बोली एहवा बोल ; राजन कहो ठो ते खरुं, तो पण स्त्री श्ये तोल
॥ ३ ॥ अविवेकी पणुं अंगमां, पण सांजल एक नूप ; कहि शकियें
एहवी कथा, राजन नहीं सरूप ॥ ४ ॥ अन्य उपाय नहीं एहमां, तिणो
कहुं सांजल तुज ; संजलाव्युं एम कही सवे, गर्न दोहदनुं गुज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥

॥ सुणि बहेनी पीउडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ नूपति चिंते रागविलुद्धो, जुउ राणी गुं कहे ठे रे ॥ पुत्रजनम
पण नवि बहु माने, राग ए एम बहे ठे रे ॥ १ ॥ नूप० ॥ जो दोहद
नवि पूरुं एहनो, थाये गर्न विनाश रे ॥ विसरज्यो राणीनो परिकर,
चिंते उपाय हवे तास रे ॥ २ ॥ नूप० ॥ मतिसागर महामंत्री तेडयो,
संजलाव्युं वृत्तांत रे ॥ करीय विचार नूपनैं जांखे, सांजलो कहुं अ
वदात रे ॥ ३ ॥ नूप० ॥ बुद्धित रही उदरें बांधो, अंत्र कृत्रिम करी
वेत्तो रे ॥ कोइ प्रकारें लक्षण करी सुंदर, पण कोईनैं मत कहेशो रे
॥ ४ ॥ नूप० ॥ राणी देखतां कापी देशुं, पठें मनमान्युं करशुं रे ॥
वात सुणी नरपति बहु हरख्यो, एम प्रतिज्ञा तरेशुं रे ॥ ५ ॥ नूप० ॥
राणीनैं कहे तुम्ह सुख करशुं, राणी गरज अनुचावें रे ॥ अंगीकार क
री अणवटती, करे उपाय गुन दावें रे ॥ ६ ॥ नूप० ॥ दोहद संपू
र्ण थयो एहनो, तव विपाद बहु पामी रे ॥ मंत्रीयें राय देखाडयो अ
नुक्रमें, द्यं नहीं हर्षनी खामी रे ॥ ७ ॥ नूप० ॥ मंत्री कहे जब ज
न्म ते थाये. तव मत कहैजो राय रे ॥ सुज कहैजो हुं योग्य करीश ते,
जांजनी अंगीकराय रे ॥ ८ ॥ नूप० ॥ अनुक्रमें जन्म थयो ते सुतनो,

मतिसागरनें दीधो रे ॥ मतिसागर कहे गर्जयकी पण, रायने दुःख
बहु कीधो रे ॥ १० ॥ नूप० ॥ तेणे ए गनें नांही प्रयोजन, राणी चित्त
पण वशीउ रे ॥ रायनें मत ए वात प्रकाशो, एम कही लेई नीकसी
उ रे ॥ १० ॥ नूप० ॥ रायनें कहे मृतबालक आव्यो, एम कहि
दासी माथे रे ॥ देई अशोक वाडीमां जातां, दीठी पृथ्वीनाथे रे
॥ ११ ॥ नूप० ॥ कहे दासीने गुं ए माथे, संचरमथी कहे दासी रे ॥
कांय नथी एम कहेतां रोयो, रायें जोयुं चकाशी रे ॥ १२ ॥ नूप० ॥
बालक देखी ठबको दीधो, फट नूंमी एम न कीजें रे ॥ तुबहदय स्त्री
कायर नावें, सधली वात कहोजें रे ॥ १३ ॥ नूप० ॥ लीधो रायें
बालक ऊडफी, चिंतवे आपुं न एहनें रे ॥ एहने हाथे पूरण थाये, आपुं
पाले तेहनें रे ॥ १४ ॥ नूप० ॥ अन्य धावीनें पालवा आप्यो, कहे एहनें
कांय थाशे रे ॥ तो मुऊ हाथे विनाश लहेशो, लोकमां नलपण जाशे
रे ॥ १५ ॥ नूप० ॥ बहु निचंठा करी राणीनें, तेमज मंत्रीनें जाणो रे ॥ दे
वी मंत्री अनुरोधें ठानो, पुत्रउज्जव करे राणो रे ॥ १६ ॥ नूप० ॥ आ
णंद नाम ठव्युं बालकनुं, मोहोटो जब ते थाय रे ॥ कलाकलाप
ग्रह्यो तिणे बहुलो, मनमां हर्ष न माय रे ॥ १७ ॥ नूप० ॥ पूर्व
कर्मदोषें नृप उपरें, चित्त विषम बहु राखे रे ॥ नरपतियें जुवराज कखो
वली, राजकुलीनी साखें रे ॥ १८ ॥ नूप० ॥ इण अवसर एक अट
वी वासी, दुर्मतिनाम सामंतो रे ॥ दुर्गबलें नवि गणे लेखामां, जाणे
सिंह नूकंतो रे ॥ १९ ॥ नूप० ॥ सैन्य मूकयुं ते रायनें उपर, ते पण
तेहथी हाखा रे ॥ क्रोप करी हवे सिंह नरेशर, बहुबलथी परिवाखा रे
॥ २० ॥ नूप० ॥ करिय प्रयाणनें चाव्यो सन्मुख, जब थयां त्रण्य प्र
याणो रे ॥ इण अवसरें सिंधुनदीकांठे, वहेते प्रयाण ते ठाणो रे
॥ २१ ॥ नूप० ॥ समरादित्यना रासमां नांखी, बीजे खंमैं ढाल रे
॥ एह अधिक उल्लासें अठारमी, पद्मविजय सुरसाल रे ॥ २२ ॥
॥ नूप० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नदीकांठे तिहां निरखीउं, अचरिज एक उदार; गजशिर वेठा गेल
 चुं, मनुष्यवृंद मनोहार ॥ १ ॥ अहो कष्ट अहो कष्ट ए, बोले एम
 बहु जोय; राजा पोहोतो रीऊचुं, जईनें तिहां एम जोय ॥ २ ॥
 लीर्णनाग दीतो चढ़ा, कलदेह महाकाय; मंरुकयास ते मोटिको,
 लीयो वदन लपाय ॥ ३ ॥ पोहोले वदनें पेखियें, दुःखथी धूजे देह;
 महोटे कूररे मुखमां, नाग ग्रथो न संदेह ॥ ४ ॥ अजगर दिग्गज कर
 समो, नयन रक्त नहीं सोम; ग्रथो कूरर बली अजगरें, राजी थयो रोम
 रोम ॥ ५ ॥ अजगर जिम जिम आहारतो, तिम तिम नागनें तेह;
 मंरुक रोतो अहीमुखें, जातो देखे जेह ॥ ६ ॥ अचरिज देखी एहवुं, न
 च पाम्यो नूपाल; देखी ए दृष्टांतनें, चिते चित्त विचाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ बाह्यालो महारो बाय ठे बांशली रे ॥ अथवा
 शीतल जिनवर सांनजो रे ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति मनमांहि चितवे रे, ए संसार असार ॥ मत्स गलागल
 थइ रहूं रे, कोहनो कोण आधार ॥ १ ॥ बाह्यो मारो जावे ठे जाव
 ना रे ॥ ए आंकणी ॥ मूढ हैयामां आणंद लहे रे, सत्पुरुषां निर्वेद ॥
 देखीनें पामे एम चितवी रे, राय थयो बहु खेद ॥ २ ॥ बा० ॥ राय
 विचारे करवुं किणुं रे, अजगरें बहु ग्रथो एह ॥ कूररें जुजंगम बहु
 गदयो रे, नागें मंरुक देह ॥ ३ ॥ बा० ॥ कंतगत प्राण थयां सहु रे,
 पण न मूके कोय ॥ अधिक अधिक गलवा करे रे, एह विषम गति
 जोय ॥ ४ ॥ बा० ॥ एक विनाशीनें ठोडवुं रे, पण नवी जीवे कोय ॥
 नवि उपाय ए वातमां रे, जावी जाव ते होय ॥ ५ ॥ बा० ॥ हवे
 जांवुं ते जुगतुं नहीं रे, गजवर प्रेखो ताम ॥ कटकसंयुत आवासीउं
 रे, करे उचित निज काम ॥ ६ ॥ बा० ॥ राति गई अरथी जिगे रे, तव
 जान्यो नराय ॥ दीवुं वृत्तांत ते सांनखुं रे, अजगर मुख चित्त लाय
 ॥ ७ ॥ बा० ॥ विरस विपाक ठे जेहना रे, फल किंपाक समान ॥

विषय आपात मात्र मीठडा रे, मूरख करे बहु मान ॥ ७ ॥ वा० ॥
 वरजे पंढित एहनें रे, बलि ए विषयनें काज ॥ लोक करे बहु पापनें
 रे, करता बहुत अकाज ॥ ८ ॥ वा० ॥ शाश्वत धर्म ठांमी करी रे, अई
 सुखइत्तक जीव ॥ जीवित अर्थी खाय जेरनें रे, तेम करे पाप सदैव
 ॥ ९ ॥ वा० ॥ दुःख ते पापनुं फल अठे रे, दुःखीया म करो पाप ॥
 सुखीया पण करो धर्मनें रे, धर्मनुं फल लही आप ॥ १० ॥ वा० ॥
 मंरुक सम तुळ लोक ठे रे, सर्प सरीखा जेह ॥ तेह अशी जाये तेह
 नें रे, तेहनें कूरर सम तेह ॥ ११ ॥ वा० ॥ कूररने पण अजगर समा रे,
 अजगर सम पण आप ॥ नहिं निजवश जिनकारणें रे, यमदेवें संता
 प ॥ १२ ॥ वा० ॥ एह अनर्थ नखा लोकमां रे, जे करे विषय प्र
 संग ॥ ते महा मोहविलास ठे रे, तेणे श्यो करीयें रंग ॥ १३ ॥ वा० ॥
 दुःख अनेकतरुबीज ठे रे, राज्य अनर्थनी खाण ॥ पातालपरें पूरा
 ये नहीं रे, एहवी जिनवरवाण ॥ १४ ॥ वा० ॥ विवर सुलज जी
 णघर परें रे, खलसंगति परें जास ॥ विरसा वसाण ते पेखियें रे,
 राज्यथी नरकमां वास ॥ १५ ॥ वा० ॥ वेश्याहृदय परें वालहो रे,
 इव्य अनेक प्रकार ॥ जुजंग बहु वल्मीक परें रे, दुःखदायक दुःख
 कार ॥ १६ ॥ वा० ॥ जीवलोक परें जाणीयें रे, काम न पूरां थाय ॥
 सर्पकरंमकनी परें रे, यत्नें पाढ्युं जाय ॥ १७ ॥ वा० ॥ अनिजाषा
 बहु जन करे रे, वेश्या यौवन रीति ॥ नवि विश्वास कोयनो होय रे,
 होय घणी जो प्रीति ॥ १८ ॥ वा० ॥ परजवनुं तो साधन नहीं रे,
 तिणे तजी राज्यप्रसंग ॥ धीरपुरुषें सेवित आदरुं रे, दीक्षा मन धरी
 रंग ॥ १९ ॥ वा० ॥ इह जव परजव सुख करुं रे, श्रमणपणुं जग
 सार ॥ केम करुं प्रस्तुत कामने रे, लघुता होय एणि वार ॥ २० ॥
 ॥ वा० ॥ अथवा एह लघुता कशी रे, एक जन्मनो श्यो नार ॥ जव
 जवनां दुःख उपशमे रे, लेउं संजम नार ॥ २१ ॥ वा० ॥ एम कर
 तां रजनी गई रे, बीजे खंमैं ढाल ॥ उगणीशमी पदमें कही रे, अयो
 उद्योत विशाल ॥ २२ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ५६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेगो आसन बांधीने, करी इव्य आवश्यक काज ; मंत्रिमंजल सहु
 प्रणमीउं, जब उदयो दिनराज ॥ १ ॥ विजया प्रतिहारी वरा, प्रण
 मी नरपतिपाय ; वेगें एणी परें विनवें, माने जो महाराय ॥ २ ॥
 सुणी चंम शासन वणुं, कसुं प्रयाण मुज काज ; सिंहराय एम शं
 कीउं, आव्यो दुर्मति आज ॥ ३ ॥ आणा तुमची अतिक्रमी, तस
 थयो पश्चात्ताप ; कंधे ते परशु करी, परवख्यो केई नर आप ॥ ४ ॥
 दर्शन ईव्हे दुर्मति, उनो आंगण आय ; करो दुकम एहनें कशो, एम
 सुणी हवे महाराय ॥ ५ ॥ मतिसागर जे मंत्रवी, सनमुख जोयुं तास ;
 अंगित आकार उजखी, मंत्री कहे विमास ॥ ६ ॥ शरणागत वत्स
 ल सवे, नूपति होय एम जाल ; दोष न एहमां देखियें, तेडो इहां
 इण ताल ॥ ७ ॥ आणा करी तव आवीउं, अवनीपतिने एम ; कहे
 कूहाडनें कोटियें, तुम्ह मन होय करो तेम ॥ ८ ॥ कहिने चरण क
 मल नम्यो, दान अनय तव दीध ; करी आदर सत्कारीउं, क
 रवुं ते सवि कीध ॥ ९ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ घरे आवो जी आंवो मोरीउं ॥ ए देशी ॥

॥ निजनयरें वली आवीउं, सिंह नरपति जयपुरमांहि ॥ निज आ
 शय मंत्रिमंजल प्रत्यें, जांख्यो अति अंग उत्साह ॥ १ ॥ गति कर्मत
 णी विचित्र ठे ॥ ए आंकणी ॥ कहे मंत्रि मंगल सुण साहिबा, तुम्ह
 कृत्य ते एहज सार ॥ तुम्ह वंश थया जे राजवी, ते एमहिज पाम्या
 पार ॥ २ ॥ गति ० ॥ सहु जीवनें ए करवुं घटे, तो तुमचो केही वात
 ॥ जिनवयण जावितमति तुम्ह तणी, तुमचो उत्तम अवदात ॥ ३ ॥
 ॥ गति ० ॥ सफलो मानवजव तुम्ह तणी, वनदव सरीखा ए नोग ॥
 जिम जिम इंधण द्वेपीयें, तिम तिम वधतो जाये रोग ॥ ४ ॥ गति ० ॥
 किंपाकनां फल सम जेहना, ग्रंथें जांख्या ठे विपाक ॥ वलि मृत्यु अ
 काजें आवी अडे, जेहना सुर असुरमां लाग ॥ ५ ॥ गति ० ॥ एम

सांजली हर्ष वध्यो घणो, नृपें दीधुं अति बहुमान ॥ कुंअर अनिषेकने
कारणें, रायें जोशी तेड्या जाण ॥ ६ ॥ गति० ॥ कहे कहो अनिषेक दि
वस हवे, तव लगन जोइ कहे एम ॥ आजथी पांचमे दाहाडजे, कीजें
अनिषेक ते प्रेम ॥ ७ ॥ गति० ॥ मंगल मेळ्यां तस कारणें, महुजुगल
प्रमुख बहुजेद ॥ नरपति मनमां एम चिंतवे, आणी चित्तमां निर्वेद
॥ ८ ॥ गति० ॥ राज्यनो अनिषेक करी नलो, राज्य थापी आणंद
कुमार ॥ पढे जाशुं दीक्षाकारणें, जिहां धर्मघोष अणगार ॥ ९ ॥
॥ गति० ॥ एम चिंतवी लगन लगें रहे, इण अवसर तेह कुमार ॥
नृपनो अनिप्राय अजाणतो, पूर्वकृत कर्मविकार ॥ १० ॥ गति० ॥
डुर्मतिशुं इम ठरावीउं, आपणे हणवो ए राय ॥ वली सांजली अनि
षेक वारता, तव चिंता इणि परें थाय ॥ ११ ॥ गति० ॥ मिथ्यानिनि
वेशें चिंतवे, दुष्टचित्ते विपरीत वात ॥ जुउं ए अनिषेकना मिशथकी,
करशे मुजने एम घात ॥ १२ ॥ गति० ॥ एम ठलीउं हुं जाउं किमे,
अथवा हो साची वात ॥ पण एहनुं आप्युं लेवुं नहीं, एहमां
शो जस अम थात ॥ १३ ॥ गति० ॥ जो रायने मारी लीजीयें, बल
थी तो जस बहु थाय ॥ एण अवसरें राय बोलाविउं, तुम्हे आवो
तुम्ह करुं राय ॥ १४ ॥ गति० ॥ पण इहे नहीं ते आववुं, तव साथें
जेइ प्रतिहार ॥ नृप चाव्यो कुमर नवन जिहां, उनो जइ सहसाका
र ॥ १५ ॥ गति० ॥ तव आणंद मनमां चिंतवे, आ ठे सुंदर प्रस्ताव ॥
ईष्यायें करीने बोलिउं, मार मार तणो आराव ॥ १६ ॥ गति० ॥
जेइ तरवारने मारीउं, जे पासें हतो प्रतिहार ॥ पढें आव्यो नरपति
उपरें, कीधो वली गाढ प्रहार ॥ १७ ॥ गति० ॥ तिहां कोलाहल
बहु उड्यो, नृपसैन्यें कखो संझोन ॥ आणंदकुमरनें वींटीउं, मांमयो
संग्राम अथोन ॥ १८ ॥ गति० ॥ निज देहडोह शपथें करी, नांखे
निजसैन्यनें एम ॥ मुज व्यापद नथयुं देखजो, हवे एहनें मारो केम
॥ १९ ॥ गति० ॥ करो राज्यानिषेक ते एहनें, ए जाणजो तुमचो राय ॥
इणो अवसरें कुमरें हुकम कखो, डुर्मतिनें तिहां बोलाय ॥ २० ॥

गति० ॥ बांधो निवडबंधनै करी, तव आव्यो रायनै पास ॥ कुलपुत्र
पाडीनै बांधीउं, नृप एकाकी कखो पास ॥ ११ ॥ गति० ॥ विश्वासी
पुरुषने सोंपीउं, पुरलोक निच्रंठी ताम ॥ ठवि सर्व व्यवस्था राज्यनी,
पोतैं थयो रायने ठाम ॥ १२ ॥ गति० ॥ एम समरादित्यना रासमां,
पद्यें वर वीशमी ढाल ॥ कही बीजे खंमैं ए सांजली, म करो कोई क
र्म जंजाल ॥ १३ ॥ गति० ॥ सर्व गाथा ॥ ५९९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सामंत मंमल वश करी, रायनै चारकमांहि; नाख्या ते चारक हवे,
वर्णवशुं दुःख ज्यांहि ॥ १ ॥ अशुचि मथतां आकरी, दाखे जिम दु
र्गंध; सरीसृप फूटि नीतमां, देखाडे बहु धंध ॥ २ ॥ माखी मसा मञ्जर
घणा, जणजणना जणकार; रज उकेरि मूसा करे, अधिको जिहां अंध
कार ॥ ३ ॥ शिरपर कांचली सर्पनी, घणी लटके लंबायमान; लूता तंतुजा
ला घणी, सीमंतनख समान ॥ ४ ॥ विषमकालनुं वासवर, सयल दुःख
नो सखाय; अधर्मनी लीला अवन्य, कुलघर दुःख कहाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ जीव जीवन प्रभु किहां गया रे ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म तणी गति सांजलो रे, करजो विचारी कर्म रे ॥ एक पखें वयरें
लहे रे, दुःख तो अन्यनो जर्म रे ॥ १ ॥ कर्म० ॥ राणी एणिपरें सां
जलो रे, चारक सूक्या राय रे ॥ आक्रंद नैरव सूकती रे, ग्लान थई
जग काय रे ॥ २ ॥ कर्म० ॥ महोटा मुक्ताफल सारीखां रे, आंशु
जरे तेंणी वार रे ॥ हार उपम पामे तदा रे, रोके चौकीदार रे ॥ ३ ॥
कर्म० ॥ मणिवलयें करी रणजणे रे, एहवे करें करी जेह रे ॥ दुःख
आवेजवजें करी रे, ठेली काढ्या तेह रे ॥ ४ ॥ कर्म० ॥ कूटे हृदय
जोडे केजनें रे, सुखमां सास न माय रे ॥ नयन केजें करी ढांकीयां रे,
गने पतिअवस्था देखाय रे ॥ ५ ॥ कर्म० ॥ कुसुमावली परमुख
महु रे, पांढोतुं अंतेउर तहु रे ॥ लोहनिगडें पूछो नरपति रे, दीठो
चारक जनु रे ॥ ६ ॥ कर्म० ॥ अशुचित सेजुं बहु अमैं रे, मानुं दे

खावती एम रे ॥ द्वारपडण मानुं दुःखथी रे, अधिक कूटे धरी प्रेम रे ॥
 ॥ ७ ॥ कर्म० ॥ नरपति देखी एहवुं रे, रक्तकपुरुषनी पास रे ॥ कहेव
 रावे ए शुं करो रे, निःफल एह प्रयास रे ॥ ८ ॥ कर्म० ॥ जेहथी अ
 धर्म परंपरा रे, ते केम करीयें शोक रे ॥ लक्ष्मी चंचल ज्युं विजली
 रे, माने स्थिर मूढ लोक रे ॥ ९ ॥ कर्म० ॥ स्वप्नसमा संगम कह्या रे,
 नवि समजे एह जीव रे ॥ ठेहडा रागविलासना रे, एहवा एम सदै
 व रे ॥ १० ॥ कर्म० ॥ अविवेकी जन आचरे रे, तेम करीयें न विला
 प रे ॥ सुख दुःख सहये अनुनवे रे, केवल कीधां आप रे ॥ ११ ॥
 ॥ कर्म० ॥ जीवलोकमां सार जे रे, श्रीजिनवयण रसाल रे ॥ नवसा
 यर तरीयें जिणे रे, पामीयें सुखविसाल रे ॥ १२ ॥ कर्म० ॥ ते
 पाम्यां ठो नाग्यथी रे, आदरो तेहज सार रे ॥ एह टाली बीजो
 नहीं रे, दुःख ठोडावण द्वार रे ॥ १३ ॥ कर्म० ॥ नूपतियें एम जे
 कह्युं रे, सांजळ्युं सहये तेह रे ॥ एह एमज एम मानतां रे, नहिं अ
 न्यथा कांइ एह रे ॥ १४ ॥ कर्म० ॥ नूपतिनी आणा लही रे, आ
 णंदनी वली एम रे ॥ बलात्कारें आणा लही रे, धारी धर्मशुं प्रेम रे
 ॥ १५ ॥ कर्म० ॥ गंधर्वदत्ता विद्याधरी रे, आव्यां श्रमणी शुद्ध रे ॥
 पासें प्रवर्ज्या आदरे रे, तत्त्वजाण अतिबुद्ध रे ॥ १६ ॥ कर्म० ॥
 धन्य ए राणी एहनी रे, धन्य ए राय सुजाण रे ॥ जाण्युं पण एहनुं
 खरुं रे, एहनुंज तत्त्वविज्ञाण रे ॥ १७ ॥ कर्म० ॥ बीजे खंमैं निरमली
 रे, एकवीशमी ए ढाल रे ॥ समरादित्यचरित्रनी रे, पद्म कहे सुर
 साल रे ॥ १८ ॥ कर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ ६११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर आणंद अति, कदर्थना करे नित्य ; उपशम नृप अति
 आदरे, क्रोध न करे कुमिन्न ॥ १ ॥ मन चिंते नहीं माहरुं, आयु अ
 धिक ए वार ; अणसण हुं हवे आदरुं, पासुं जिम नवपार ॥ २ ॥
 एम करी अणसण आदरुं, आणंद अवनीपाल ; सांजली अणसण
 सिंहनुं, कोप्यो कपुत कराल ॥ ३ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ हारे म्हारे जोवनीयांनो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥
 ॥ हारे म्हारे देवशर्मानामें कोइ पुरुष महंत जो, तेहनें रे एम
 वात शिखावे जई कहो रे लो ॥ हारे० ॥ नोजन कख के नहंतर
 मारीश हाथ जो, एम सांजलीनें गयो नृप पासें दुःख ग्रहं रे लो
 ॥ १ ॥ हारे० ॥ जइने दीगो राय बेगो गुन ठाय जो, बोले रे एम वाणी
 सुजाण शोहामणी रे लो ॥ हारे० ॥ दैववशें प्राणीने सुख दुःख
 होय जो, एह दैव सह्य अवगुणग्राहि शिरोमणि रे लो ॥ २ ॥
 हारे० ॥ विनयथकी पण नवि आराधवा योग्य जो, इहित अवसर
 पण नवि उलखे ए कदा रे लो ॥ हारे० ॥ केवलजनने अनरथ करूं
 ठाण जो, मत्त हस्ती परें स्वेहाचारी ए सदा रे लो ॥ ३ ॥ हारे० ॥
 गंग प्रवाहपरें कजु वक्र सदाय जो, अंधकार परें करे निपात
 सह्य तणो रे लो ॥ हारे० ॥ विपग्रंथि परें सर्व स्वाद प्रतिकूल जो,
 अनुकूल ए तो जाणो असमीहित तणो रे लो ॥ ४ ॥ हारे० ॥
 यद्यपि एम ठे तो पण पुरुषाकार जो, नवि ठोडीजें सत्पुरुषें कृण
 मातथी रे लो ॥ हारे० ॥ पूर्व उपाजित कर्म परिणाम ते दैव जो,
 ते पुरुषाकारें जीतायें जातिथी रे लो ॥ ५ ॥ हारे० ॥ ते कारण
 अवलंबो पुरुषाकार जो, आहार ग्रहण करीयें जिम धरीयें देहने
 रे लो ॥ हारे० ॥ जीवता प्राणी आपद आणी अंत जो, पामे रे
 संपद जाये आपद तेहने रे लो ॥ ६ ॥ हारे० ॥ राजा बोले साजां
 वयण रसाज जो, देवशर्मा गुनकर्मा सांजल माहरी रे लो ॥ हारे० ॥
 वात सुजात न मूक्यो पुरुषाकार जो, देश काल संजाली वात में
 आचरी रे लो ॥ ७ ॥ हारे० ॥ लीथी दीक्षा जावथी शिक्षा धारि जो,
 नंपद अनिजाया नही जापा शीकहो रे लो ॥ हारे० ॥ उचित काल
 संजाली में अणुलण कीथ जो, आहारग्रहण नवि करीयें कोईपरें ल
 वो रे लो ॥ ८ ॥ हारे० ॥ तव ते बोल्यो चित्त नवि मोल्यो तुम जो,
 आहार सेवामां पण तुम सुत ते कोपशे रे लो ॥ हारे० ॥ राजा कहे

ए लहे अकारण कोप जो, एह कोपी शुनलोपी शुं आरोपजो रे लो ॥१॥ हारे० ॥ सच्च पइना किना ते नवि जाय जो, तव ते कहे तुमें सुत वृत्तांत जाणो सवे रे लो ॥ हारे० ॥ तुह्य शरीरनें पीड करे रखे एह जो, हवणां वयण कटुक टुक मुखथी ते चवे रे लो ॥ १० ॥ हारे० ॥ चिंतवे कैतवे इण अवसर नृपपुत्र जो, केम नवि आव्यो नाव्यो मन मां नूपति रे लो ॥ हारे० ॥ अमर्ष नरी बदिरीउ क्रोध कषाय जो, खड्ड लेइ आव्यो नाव्यो निज रूपथी रे लो ॥ ११ ॥ हारे० ॥ आहार ग्रहण कख नहींतर ठेदूं शीश जो, इणो करवाल कराल उपम जमजीहनी रे लो ॥ हारे० ॥ राय कहे कोण बीक लहे ठे एह जो, काया मा या प्राहुणी कोइक दीहनी रे लो ॥ १२ ॥ हारे० ॥ मरण शरणतो अ वश्य करे ए जीव जो, जाणो जेह अशाश्वत नाणो ते खेदने रे लो ॥ हारे० ॥ गर्जसमयथी समय समय मरे नित्य जो, जीवंतो किम कहीयें ए पण वेदिनें रे लो ॥ १३ ॥ हारे० ॥ परलोकनो बहु लोकतणे ए साथ जो, चालंतां वर म्हालंतां कोई आगलें रे लो ॥ हारे० ॥ पोहतो वहेलो कहोतो श्यो नय तब जो, आयु अनित्य व्यतीत थये सागर गलें रे लो ॥ १४ ॥ हारे० ॥ शूना हाटें वाटें आव्यो जीव जो, तेहनें जीवन आशाशी एम जाणीयें रे लो ॥ हारे० ॥ जन्म मरणमां नहीं को शरण विचार जो, व्रत आदरता धरता चित्त जिनवाणीयें रे लो ॥ १५ ॥ हारे० ॥ जरा मरणनें रोग शमण जिनवयण जो, एह रसायण अमयसुसाय ए सार ठे रे लो ॥ हारे० ॥ पीधुं कीधुं काम तिणें नहीं नीति जो, जन्म मरणनी जाणुं तिणो मुज पार ठे रे लो ॥ १६ ॥ हारे० ॥ शोव्यो आतम पाप मेल सवि धोय जो, स्वजन कुटुंब निगड ते नांगी लोह नी रे लो ॥ हारे० ॥ मरणकाल विकराल करे शुं तास जो, जेह म नुष्यें पयडी जीति मोहनी रे लो ॥ १७ ॥ हारे० ॥ एह कलेवर घरमां पण न पीपास जो, तप धन जेहने तेहने शरीर संलेपीउं रे लो ॥ हारे० ॥ सुविहित विहित मरण विधिपूर्वक जेण जो, तेहनुं रे वर म रण ते उत्सव देखीयुं रे लो ॥ १८ ॥ हारे० ॥ तप पायेय ग्रहं जिणे

साधें जुद्ध जो, मरण समाधें निर्वाधें मार्गें मुनि रे लो ॥ हारे ० ॥ जे
मरणें करी स्वर्ग के होय अपवर्ग जो, तेहवुं मरण तो उत्सव नूत
मागे गुणी रे लो ॥ १९ ॥ हारे ० ॥ एणी परें नरपति छुनमति बोले
बोल जो, बीजे खंमैं ढाल ए बावीशमी कही रे लो ॥ हारे ० ॥ धीरज
रायनूं वीर्य अतिशय देखी जो, पद्मविजय कहे एम राखो दृढता
सही रे लो ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कालो सर्प कृतांत ठे, रोग व्यसन विषराशि; दीर्घदाढि ते देखियें,
पूँति न मूके पास ॥ १ ॥ जालमळुं जुद्ध नवि होये, नाशी शकाये
नाहि; सुर असुरा नहीं आशरो, जरा रोग नहीं जाहि ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ करकंभूनें करुं वंदना हुं वारी लाल ॥ ए देशी ॥

॥ रोग शोक मानव घणा ॥ हुं वारी लाल ॥ व्याधि जरानें वियोग रे
॥ हुं ० ॥ तेहनो शो आशरो दुए ॥ हुं ० ॥ तेणे ए धर्म संयोग रे ॥
॥ हुं ० ॥ १ ॥ जिनवयणें एम दृढ रहो ॥ हुं ० ॥ ए आंकणी ॥ पण
एक निमेष जें जीवीयें ॥ हुं ० ॥ ते जमराय प्रमाद रे ॥ हुं ० ॥ काय
र सेवित मत दिउ ॥ हुं ० ॥ मुज अपयशनो वाद रे ॥ हुं ० ॥ २ ॥
॥ जि ० ॥ मृत्युदाढें जे आवीउ ॥ हुं ० ॥ होय जो इंदु नरींइ रे ॥ हुं ०
पण ते नीकली नवि शके ॥ हुं ० ॥ एणि परें यमनृपफंद रे ॥ हुं ० ॥
॥ ३ ॥ जि ० ॥ मृतमारणमात्रें करी ॥ हुं ० ॥ लागे निजकुललाज रे
॥ हुं ० ॥ एतुज चिंता मुज घणी ॥ हुं ० ॥ नहीं मुज जीवित काज रे
॥ हुं ० ॥ ४ ॥ जि ० ॥ आहारत्याग निजवयणथी ॥ हुं ० ॥ ते केम
लेउं आज रे ॥ हुं ० ॥ मरणरुहुं नहीं जीववुं ॥ हुं ० ॥ व्रत खंमी सु
ण राज रे ॥ हुं ० ॥ ५ ॥ जि ० ॥ यतः ॥ “वरमग्निमि पवेसो, वरं
विनुषेण कम्पुणा मरणं ॥ मा गहियवयजंगो, माजीयं खलियसील
नन ॥ १ ॥” एणी परें वयण ते सांजली ॥ हुं ० ॥ कोपानलें ज्वल्यो
नेत्र रे ॥ हुं ० ॥ नयन कखां अति रातडां ॥ हुं ० ॥ खड्गप्रहार करेह

रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ जि० ॥ मातुं कीधुं मूरखें ॥ हुं० ॥ कीधो शिरपर
 घाय रे ॥ हुं० ॥ नमो जिणाय कहे मुदा ॥ हुं० ॥ तत्त्वज्ञानी तेह
 राय रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ जि० ॥ कर्म कखां जे जे नरें ॥ हुं० ॥ ते ते जोगवे
 आप रे ॥ हुं० ॥ जोगवतां जय गुं करे ॥ हुं० ॥ करतां न बीये पाप रे
 ॥ हुं० ॥ ८ ॥ जि० ॥ परतो निमित्तें मढ्यो तनें ॥ हुं० ॥ नहीं एह
 नो अपराध रे ॥ हुं० ॥ गुण अपराध पोतें कखा ॥ हुं० ॥ आवे तेह
 अगाध रे ॥ हुं० ॥ ९ ॥ जि० ॥ यतः ॥ “सबो पुवकयाणं, कम्माणं
 पावए फलविवागं ॥ अवराहे सुगुणेषुअ, निमित्तमित्तं परो होई ॥ १ ॥
 अप्पा अरिहो अणवच्छिस्स, अप्पा जसो सीलमउ नरस्स ॥ अप्पा
 डुरप्पा अणवच्छिस्स, अप्पा जीअप्पा सरणं गइय ॥ २ ॥ ” एम
 चिंतवतां रायने ॥ हुं० ॥ कीधो बीजो घाय रे ॥ हुं० ॥ पापीयें पाप
 कखुं घणुं ॥ हुं० ॥ कलुपित अथ्यवसाय रे ॥ हुं० ॥ १० ॥ जि० ॥ मरण
 लही ते महातमा ॥ हुं० ॥ अथ्यवसाय गुन जास रे ॥ हुं० ॥ स्तन
 त्कुमारमां उपना ॥ हुं० ॥ कांति द्युति वरखास रे ॥ हुं० ॥ ११ ॥
 ॥ जि० ॥ पांच सागरने आउखे ॥ हुं० ॥ लीलाराम विमान रे ॥
 हुं० ॥ सुख सागरमां जीलतां ॥ हुं० ॥ काढे काल अमान रे ॥ हुं० ॥
 ॥ १२ ॥ जि० ॥ आणंद राज्य पाली करी ॥ हुं० ॥ मरीने नारकी
 थाय रे ॥ हुं० ॥ एक सागरने आउखे ॥ हुं० ॥ रतनप्रजाने ठाय रे
 ॥ हुं० ॥ १३ ॥ जि० ॥ सिंह आणंद पूरा थया ॥ हुं० ॥ बाप बेटा सं
 वंध रे ॥ हुं० ॥ खंम बीजो पूरण थयो ॥ हुं० ॥ ढाल त्रेवीश प्रबंध
 रे ॥ हुं० ॥ १४ ॥ जि० ॥ पटधरसिंह सूरिसना ॥ हुं० ॥ सोनागी
 शिरदार रे ॥ हुं० ॥ सत्यविजय गुरुसंयमी ॥ हुं० ॥ कपूरविजय व्रत
 धार रे ॥ हुं० ॥ १५ ॥ जि० ॥ तास अंतेवासी जला ॥ हुं० ॥ खिमा
 विजय जस नाम रे ॥ हुं० ॥ गीतारथ गुण आगला ॥ हुं० ॥ जिन
 विजय तस ठाम रे ॥ हुं० ॥ १६ ॥ जि० ॥ तेहना शिष्य शोहामणा
 ॥ हुं० ॥ ज्ञानी गुणजंमार रे ॥ हुं० ॥ उत्तमविजय एनामथी ॥ हुं० ॥
 उत्तम चरित्रविचार रे ॥ हुं० ॥ १७ ॥ जि० ॥ अठार उगणच्यालमां

॥ हुं० ॥ संवत्सर गुरुवार रे ॥ हुं० ॥ उत्सव महोत्सव अतिथिणा
 ॥ हुं० ॥ तिथौ वरसें तपकार रे ॥ हुं० ॥ १७ ॥ जि० ॥ पोषशुक्ल तेर
 शदिनें ॥ हुं० ॥ लीबडी नगर मजार रे ॥ हुं० ॥ बीजो खंम पूरण कखो
 ॥ हुं० ॥ संयथाग्रह सुखकार रे ॥ हुं० ॥ १८ ॥ जि० ॥ ते गुरु उत्त
 म विजयनी ॥ हुं० ॥ सान्निध्य लही सुरसाल रे ॥ हुं० ॥ पद्मविजय
 कह्यो प्रेमगुं ॥ हुं० ॥ सुणतां मंगलमाल रे ॥ हुं० ॥ १९ ॥ जि० ॥
 ॥ इति श्रीसंविज्ञपद्मीय पंमितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्यपंमित
 श्रीपद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सिंहनृपा
 नंदकुमारयोः संगतयोः द्वितीयोत्तरजवः समाप्तः ॥ द्वितीयखंमे सर्व
 गाथा (६६७) उक्त गाथा (११)

॥ इति श्री समरादित्यचरित्रे प्राकृत
 प्रबंधे द्वितीयः खंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥

॥ तृतीय खं.म.स्य प्रारंभोऽयं ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिजिनेसर शोलमा, दान अजयदातार ; ग्रही व्रत उपम नव
गण्या, वंदूं वारंवार ॥ १ ॥ अहि अहिपति कीधो अधिक, अवल पुरुष
आदेय ; कमठ हठी हठ काढीउ, वंदूं श्री वामेय ॥ २ ॥ वामासंगथी
वेगला, वामेतर गुणवंत ; गुरु गुरु गुणगण आगला, महिमावंत महं
त ॥ ३ ॥ बीजो नव एम बोलीउ, बाप बेटा संबंध ; मावडी सुत मत्सर
मनें, धारे अतिशय धंध ॥ ४ ॥ तेह शीखी जालिणी तणो, कहुं रूढो
अधिकार ; त्रीजे खं.मे ते सुणो, आणी हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ जंबू द्वीप अन्नूण, वसें सीत्तेर एक ऊण ॥ आठे लाल ॥ पाठ तेहमां
पट कुलगिरिजी ॥ १ ॥ वृत्त वैताढ्य ते चार, चोत्रीश दीरघ सार ॥
आ० ॥ दो चित्र विचित्र दो जमग ठे जी ॥ २ ॥ गजदंता वर चार,
शोल कह्या वखार ॥ आ० ॥ दो शय कंचनगिरि वली जी ॥ ३ ॥ मेरु
पर्वत एक, वचमां ते सुविवेक ॥ आ० ॥ तेहथी पढिम दिशें जई जी
॥ ४ ॥ नगरी नामें कोश, जेहनो सबलो जोश ॥ आ० ॥ लोक बहु
वासें वसे जी ॥ ५ ॥ व्याधि वेदन नहीं रोश, नहीं परचक्रनो शोष ॥
आ० ॥ सुरपुरसम शोना मली जी ॥ ६ ॥ नारीनो सरल स्वनाव,
स्थिरस्नेही गत पाव ॥ आ० ॥ राजधानी पंचबाणनी जी ॥ ७ ॥ लोक
बोले सत्य वाच, नहीं कोई होय जिम काच ॥ आ० ॥ राजा अजित
सेन तिहां कियो जी ॥ ८ ॥ संग्रामें जयवाद, पाम्यो ते अविवाद
॥ आ० ॥ नूप घणा पाए नमे जी ॥ ९ ॥ तेहनें ब्राह्मण एक, ते परधान
विवेक ॥ आ० ॥ इंदुशर्मा नामें थयो जी ॥ १० ॥ शुचंकरा तस नारी,
तेहनी कूख मजारि ॥ आ० ॥ आणंद नारकी उपन्यो जी ॥ ११ ॥
कूय करी सागर आय, वली संसार जमाय ॥ आ० ॥ ऊणा चार सा

गर पठी जी ॥ १२ ॥ पुत्रीपणे ते आय, जालिणी नाम ते ठाय ॥
 आ० ॥ आवी यौवनवय तदा जी ॥ १३ ॥ ते नूपनो परधान, बुद्धि
 सागर अजिधान ॥ आ० ॥ तेहनो ब्रह्मदत्त सुत जलो जी ॥ १४ ॥
 तेहनें दीधी तेह, सुख नोगवे ससनेह ॥ आ० ॥ काल गयो वही के
 टजो जी ॥ १५ ॥ इण अवसरें सिंहदेव, जालिणी कूखें हेव ॥ आ० ॥
 उपनो कर्मशक्ति घणी जी ॥ १६ ॥ देखे सुपनें ताम, कनककलश
 अजिराम ॥ आ० ॥ पूर्णमुखमां पेसतो जी ॥ १७ ॥ मातनें नवि
 संतोष, नीकलीउं निजजोष ॥ आ० ॥ जागो ते पण किमहीकें जी
 ॥ १८ ॥ जागी स्वपनुं देख, नवि कहुं पतिनें रेख ॥ आ० ॥ शुन अ
 शुन संकीर्णथी जी ॥ १९ ॥ गर्न ते वधतो जाय, देह मन पीडा
 आय ॥ आ० ॥ जाणे पाहुं ए गर्ननें जी ॥ २० ॥ करे उपाय अने
 क, कर्मविपाक अतिरेक ॥ आ० ॥ गर्नकुशल हेमैं रह्यो जी ॥ २१ ॥
 जाणी ब्रह्मदत्त वात, परिजननें समजात ॥ आ० ॥ जाजवजो तुमे
 गर्ननें जी ॥ २२ ॥ प्रसव समय जिम एह, मारी न नाखे जेह ॥
 ॥ आ० ॥ सावचेत रहेजो सहु जी ॥ २३ ॥ जब ए जन्म ते आय
 कहेजो सुजनें आय ॥ आ० ॥ जेम नवि जाणे ब्राह्मणी जी ॥ २४ ॥
 उपनो दोहद तास, जिन पूछुं सुविजास ॥ आ० ॥ तपसीनी नक्ति
 करुं जी ॥ २५ ॥ प्राणीनें देउं दान, धर्म सांजलीयें कान ॥ आ० ॥
 ते जरतारें पूरीया जी ॥ २६ ॥ गर्नप्रनावें एम, उत्तम वस्तुनो प्रेम
 ॥ आ० ॥ जन्मसमय जण्यो पुत्रने जी ॥ २७ ॥ चिंतवे तेहनी माय,
 मिजोउं ए समुदाय ॥ आ० ॥ केम मारी शकीयें इहां जी ॥ २८ ॥
 जाणी तस अनिप्राय, बंधुजीवा सखी आय ॥ आ० ॥ जांखे एम
 तस वयणडां जी ॥ २९ ॥ एह गर्न ठे पाप, दीये तुमने संताप
 ॥ आ० ॥ एह गर्नने परवो जी ॥ ३० ॥ अंतर जरीउं कपाय, वो
 जी शुनकरा माय ॥ आ० ॥ लाजती कहे जाणे तुमें जी ॥ ३१ ॥
 जीयां वाजक तेह, कहुं ब्रह्मदत्तने एह ॥ आ० ॥ ठानो पाजे तेहने
 जी ॥ ३२ ॥ लोकमां काढी वात, बालक मृतआयात ॥ आ० ॥

एम करतां केइ दिन गया जी ॥ ३३ ॥ आपे तेहनुं नाम, शिखिकु
मार अनिराम ॥ आ० ॥ वधतो कला ग्रहतो अको जी ॥ ३४ ॥
समरादित्यनो रास, त्रीजे खंमें उल्लास ॥ आ० ॥ ढाल प्रथम पक्षें
कही जी ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाण्यो विचार निज जननीनो, वाश्यो अति वैराग; जननीयें पण
जाणियो, एह संबंध अजाग ॥ १ ॥ क्रोधयकी ते कलकली, नांखे प
तिनें नांख; जो तुऊ एहखुं काज ठे, तो हवे सुऊ मत राख ॥ २ ॥
सयल काम तज्यां सामटां, पाणी न करे पान; शिखिकुमर एहखुं
सुणी, उदवेग करे अमान ॥ ३ ॥ घरथी नीकलीउं घणुं, चिंते चातुर
चेत्त; माता पण मातुं करे, अघ आव्युं अपवित्त ॥ ४ ॥ इंगे व्यतिक
थी दुःखीउं, तात अति खेदात; जुगतुं नवि रहेखुं जरा, एम चिंती
प्रवदात ॥ ५ ॥ नीकलीउं पूछ्या विना, अशोकवन उद्यान; पोहोतो
ख तिहां पेखिया, मुनिवरजी महिराण ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

। मोहनगारा हो राज रूडा म्हारा सांनल सुगुणा सुडा ॥ ए देशी ॥

अथवा शालिजइ जोगी रह्यो, ए देशीमां पण चाळे ठे ॥

॥ बहुशिष्यें करी परिव्रया जी, गुणमणि रयणजंमार ॥ एक असं
जम ढालता जी, दोय ध्यान परिहार के ॥ १ ॥ मुनिवर वारु हो राज
वंदो, तुमें नव नव पाप निकंदो ॥ मु० ॥ ए आंकणी ॥ त्रण दंभथी विर
मीया जी, न करे चार कषाय ॥ पांच इंद्रिय निग्रह करे जी, पाळे जे
पटकाय के ॥ २ ॥ मु० ॥ मूकाणा जय सातथी जी, टाव्या अड मद
ताण ॥ नव ब्रह्मचर्य गुप्ति धरे जी, टाळे पाप नियाण के ॥ ३ ॥ मु० ॥
दशविध संयम पालता जी, अंग अग्यारना जाण ॥ बारे जेदें तप करे
जी, एम गुणरयणी खाण के ॥ ४ ॥ मु० ॥ विजयसिंह नामें
गणी जी, देखी लह्यो आणंद ॥ चिंतवे धन ए मुनिवरु जी, सेवे धर्म
अमंद के ॥ ५ ॥ मु० ॥ अथिर संसार सनेह ठे जी, केम कीधो ए

त्याग ॥ पूढुं कारण एहनें जी, केम उपन्यो वैराग्य के ॥ ६ ॥ मु० ॥
 जई प्रणम्या मुनिराजीया जी, मुनियें दीठ धर्मलाह ॥ बेठो मुनिचरणें
 हवे जी, सांजलवा धरे चाह के ॥ ७ ॥ मु० ॥ पूढे केम तमे पामी
 या जी, एणि परें नवउद्देग ॥ सर्वांगें सुंदर तुमें जी, लावण्य अतिहि
 विवेक के ॥ ८ ॥ मु० ॥ तनुसुंदरता सूचवे जी, विजवतणो प्राग्जार ॥
 विजवविस्तर वली सूचवे जी, स्वजन कुटुंब विस्तार के ॥ ९ ॥ मु० ॥
 स्वजनदर्ग ठांसी करी जी, थया निर्मम निःसंग ॥ कहो कारण गुरु ते
 हटुं जी, सुणवानो मुज रंग के ॥ १० ॥ मु० ॥ गुरु जांखे ए शरीर
 मां जी, छुं दीतुं तें सार ॥ हाड चाम शोणित नछुं जी, अशुचि त
 णो जंमार के ॥ ११ ॥ मु० ॥ अर्थ अनर्थनुं मूल ठे जी, तेहमां श्यो
 प्रतिबंध ॥ श्यो प्रतिबंध सुपनसमो जी, सयणतणो संबंध के ॥ १२ ॥
 ॥ मु० ॥ सयण वच्चें रह्यो टलवले जी, रोग लह्यो जब आप ॥ व
 हेंची न लीये रोगने जी, सयण करे संताप के ॥ १३ ॥ मु० ॥ मर
 जाय वली एकलो जी, सयण जोई रहे ताम ॥ रोवे नयण आंसु
 रे जी, सयण कुटुंबनो ग्राम के ॥ १४ ॥ मु० ॥ बांधे कर्म ते एकल
 जी, नोगवे तस फल एक ॥ कोण स्वजन परजन कहो जी, चिंतवो
 रीय विवेक के ॥ १५ ॥ मु० ॥ वैरी आये मावडी जी, पुत्र ते वैरी
 थाय ॥ अनवस्थित ए जावमां जी, सयणमां किम मुंजाय के ॥ १६ ॥
 ॥ मु० ॥ इहां दृष्टांत ते माहरो जी, सांजल थई सावधान ॥ इणहि
 ज विजयमां नीपन्यो जी, लढीनिलयपुर जाण के ॥ १७ ॥ मु० ॥
 सार्वेबाह नामें तिहां जी, सागरदत्त सुजाण ॥ श्रीमती तेहनी नार्या
 जी, हुं तस पुत्र वखाण के ॥ १८ ॥ मु० ॥ कुमर अवस्थायें वर्ततो
 जी, गयो ते नगर आसन्न ॥ लक्ष्मीपर्वत उपरें जी, क्रीडा करवा म
 न के ॥ १९ ॥ मु० ॥ तिहां दीठी एक स्थानकें जी, नालीएरी सुवि
 जाल ॥ स्निग्धपत्र संचय मढ्यो जी, दिये कौतुक ते जालि के ॥ २० ॥
 ॥ मु० ॥ एक पाद ते नीकली जी, पेठो प्रथवीमांहि ॥ कौतुकथी जोतो
 थका जी, चिंते ते मनमांहि के ॥ २१ ॥ मु० ॥ ए वडो वृद्ध ए वडेयकी जी,

उतरीउं ए पाद ॥ धरतीमां पेठो वली जी, कारण कोई अविवाद के
॥११॥मु०॥ त्रीजे खंमें एणी परें जी, बेठो करे विचार ॥ बीजी ढाल
पदम कहे जी, पुणें जयजयकार के ॥ १३ ॥ मु० ॥ सर्व गाथा ॥६॥
॥ दोहा ॥

॥ एणे अवसर मुज उपनो, मनमां अति प्रमोद; वाया सुरनि वा
यरा, आवे अति आमोद ॥ १ ॥ सहज वैर विसारीनैं, सावज प्रमुख
सनेह; पट्कतु कुसुम फूल्यां खरां, चमर गुंजत नमेह ॥ २ ॥ लक्ष्मी
पर्वत लहकीउं, देतो अति आणंद; ताप विना सूरज तपे, पाम्यो पर
माणंद ॥ ३ ॥ हुं चिंतुं अहो एहसुं, लुवन अठेरा नूत; इणे अवसर
तिहां आवीउं, देवसमूहें दित्त ॥ ४ ॥ रविमंमल परें राजतुं, जय जय
रवथी जोर; कुसुमवृष्टि बहु कीजतें, रयण मंमिंत तिर्यें तोर ॥ ५ ॥
पन्निमदिशिथी परिवसुं, देवसमूहें दीठ; धर्मचक्र धर्मधोरीनुं, आव्युं
अति उक्किठ ॥ ६ ॥ श्वेतांबर बहु साधुजी, पाउ धास्या परिवार;
आव्या हवे इणे अवसरें, प्रभुजी परम कृपाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ करेलडां घडि दे रे ॥ ए देशी ॥

॥ चक्र चले आकाशमां, ठत्र चले आकाश ॥ देव डुंडुनि वली वाजती,
गाजी रहुं आकाश ॥ १ ॥ नविक जन हरखो रे, जगतमां जोतां देव
नहीं एह सरिखो रे ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ गगनैं चामर चालतां, सिं
हासन पायपीठ ॥ कनककमल उपर ठवे, पादकमल में दीठ ॥ २ ॥
न० ॥ अजितदेव तिळंकरु, सुर नर बहुगुण गाय ॥ धूपघटी सह
के वली, पाउ धास्या तिर्यें ठाय ॥ ३ ॥ न० ॥ नवसागर तरिया
जिके, परिया तास्या जेण ॥ सरियां कारज आपणां, दीठा जब नय
णेण ॥ ४ ॥ न० ॥ हर्ष थयो मुजनें घणो, नाठो रोग मिथ्यात ॥
समकित्त अमृत पामियो, हरख्यो साते धात ॥ ५ ॥ न० ॥ चिंत्युं चित्त
मां एहवुं, धन्य थयो हुं आज ॥ जगचिंतामणि सारिखा, दीठा श्री
जिनराज ॥ ६ ॥ न० ॥ रजत कनक रयणां तणा, देव रचे प्राकार ॥
कनक रयण मणिमयतणां, कोसीसां सुप्रकार ॥ ७ ॥ न० ॥ केतु

पताका शोहती, तोरण विचित्र प्रकार ॥ वृद्ध अशोक बारस गुणो,
 षादश ठत्र उदार ॥ ७ ॥ ज० ॥ दिव्य वैमूर्य सिंहासणें, चामर चोवी
 श जोडि ॥ धर्मध्वज मंमिंत वली, सहस जोयण नहीं जोडि ॥ ८ ॥
 ॥ ज० ॥ समवसरण वेग प्रभु, अजितदेव जगवान ॥ धर्मकथा प्रारं
 नता, नवजल नाव समान ॥ १० ॥ ज० ॥ बे पासें दोय देवता,
 वेणु वजावे सार ॥ प्रभु वाणीने पूरता, दीव्य ध्वनि परकार ॥ ११ ॥
 ॥ ज० ॥ बीजां पण वाजां सवे, देशना राग प्रमाण ॥ उत्तरे एम अ
 तिश्य प्रभु, श्यां श्यां करुं वखाण ॥ १२ ॥ ज० ॥ देशनामां हवे नां
 खीउं, एह अथिर संसार ॥ मुऊनें पण ते परिणम्यो, उपनो हर्ष अ
 पार ॥ १३ ॥ ज० ॥ पूठुं में प्रणमी करी, नांखो करुणावंत ॥ एक
 अचरिज मुऊ मोटकुं, केम होशे जगवंत ॥ १४ ॥ ज० ॥ पाद नाली
 एरी केरडो, केम उतरीयो एह ॥ एहनी हेतल इव्य ठे, के नहीं मुऊ
 संदेह ॥ १५ ॥ ज० ॥ ठे तो श्ये परिमाण ठे, कोणें घाड्युं एह ॥ तेहनो
 किज्यो विपाक ठे, परजवें जोगवे जेह ॥ १६ ॥ ज० ॥ परमेश्वर नांखे
 हवे, उतरीउं एह पाय ॥ लोनदोपथी लाणजो, इव्य अठे इण ठाय
 ॥ १७ ॥ ज० ॥ सोनइया सात लाख ठे, तुम्हे नें पादनो जीव ॥ बिहु
 जणे मजी दाटीउं, तास विपाक अतीव ॥ १८ ॥ ज० ॥ धर्मसाधक
 विपाक ठे, एम बोव्या जब स्वामी ॥ तब में फरीनें पूठिउं, विनयें
 करी परणाम ॥ १९ ॥ ज० ॥ किम म्हे नें नालीएरीयें, दाट्युं धन ए
 एम ॥ विपाकमां अंतर पड्यो, एह अईग्युं केम ॥ २० ॥ ज० ॥ प्रभुजी
 कहे विस्तारयो, एह विपाकनी वात ॥ देखीतुं होय थोड्युं, पण बहु
 उदयें आयात ॥ २१ ॥ ज० ॥ समरादित्यना रासमां, त्रीजे खंमें एह ॥
 टाल त्रीजी पद्यें कही, मधुर सिताथी जेह ॥ २२ ॥ ज० ॥ सर्वगाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह विजयमां अमरपुर, अमरदेव अनिधान : गाथापति तस गुण
 जगी. नुंदगी श्री गुनवान ॥ १ ॥ दोय पुत्र तुमैं दीपता, आदिगुण
 चंद एक ; बालचंद बीजो बलि, कही न जाये टेक ॥ २ ॥ यौवन

पाम्या जेटले, नरी करियाणां जाय ; इणहिज देशें आवीया, वेगें करी
व्यवसाय ॥ ३ ॥ आव्यो लान मन इह्तिउं, इणें अवसर एक राय ;
विजयवर्म नामें वडो, आवे रण करणाय ॥ ४ ॥ ते नगरीनो अधिपति,
सूरतेज निज साथ ; सार सार निज साथ द्ये, इण पर्वत करी साथ
॥ ५ ॥ चढीउं नरपति चोंपशुं, परबलनो जय पामि; तुमें पण बिहु पो
तातणो, डोडया लेइ दाम ॥ ६ ॥ इणो थानक आवी करी, बिहु जणो
करी विचार ; इव्य नूमिमां दाटीयुं, सुपरें कीधी सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ कोइकदिन हवे गुणचंद चिंतवे, लोन दोषथी एम जी ॥ नाग ए
लेइ रे नाई माहरो, मरण लहेकरुं तेम जी ॥ १ ॥ गति परिमाणें रे
मति एम उपजे ॥ ए आंकणी ॥ जेर प्रयोगें रे माखो चातनें, स्वार
थीया सवि लोक जी ॥ लोनदोषथी रे न गण्यो नाईनें, करवो मोह ते
फोक जी ॥ २ ॥ ग० ॥ शुद्ध स्वनावें रे तुमें तिहांथी मरी, व्यंतरमां
थया देव जी ॥ नाग ते करडयो रे गुणचंदनें तिहां, मरण लहुं तत
खेव जी ॥ ३ ॥ ग० ॥ इव्य न नोगव्युं रे कर्म बंधाइउं, रत्नप्रनायें
जाय जी ॥ तुमें पण देशें रे ऊणुं पव्यनुं, चवीया नोगवी आय जी ॥
॥ ४ ॥ ग० ॥ इणहिज विजयें रे ठंकणा पुरवरें, हरिनंदी सबवाहो
जी ॥ वसुमती नार्या रे कुखें उपनो, मातनें हर्ष अथाहो जी ॥ ५ ॥
॥ ग० ॥ देवदत्त तुऊ नाम ते थापीउं, हवे नारक गुणचंदो जी ॥ काल
थी उपनो निहाणनें दूकडो, नाग कषायनो वृंदो जी ॥ ६ ॥ ग० ॥
इव्य परिग्रह करी बेठो तिहां, तव तिहां उत्सव थाये जी ॥ लक्ष्मी
पर्वतवासी देवीनो, तुं पण तेणें समे जाय जी ॥ ७ ॥ ग० ॥ देवता
पूजी रे दीन अनाथनें, दीधुं करुणायें दान जी ॥ करी रसोईनी सा
मग्रीसवे, करी नोजन वली पानो जी ॥ ८ ॥ ग० ॥ पूर्वजवना रे स्नेह
थी जोयवा, रमणिक पर्वत तेहो जी ॥ नमतो नमतो रे आव्यो तिहां
कने, दीठो नागें तेहो जी ॥ ९ ॥ ग० ॥ लोनें जाणुं रे इव्य ए लेई

लगे, करड्यो चरणने देश जी ॥ विप अति उग्रें रे पडिउं धरणीयें,
 नहीं कोई संझाविशेषो जी ॥ १० ॥ ग० ॥ ताहरें लोकें रे माख्यो
 नागनैं, उपनो इणहिज ठामो जी ॥ सिंहपणे ते रे पूर्वअन्यासथी,
 ड्यपरिग्रह तामो जी ॥ ११ ॥ ग० ॥ तुं पण काल करी एह विज
 यमां, कयंगला पुरी सारो जी ॥ शिवदेव नामें रे कुलपुत्रक वसे, य
 शोधरा तस नारी जी ॥ १२ ॥ ग० ॥ तेहनी कुखें रे इंदेव अयो,
 पाम्यो यौवन वेदो जी ॥ काल गयो केइ हवे तुज नूपति, वीरदेव
 नामें नरेंदो जी ॥ १३ ॥ ग० ॥ लढीनिलयनो रे स्वामी जाणीयें, मा
 नजंग नामें रायो जी ॥ मोकलीउं तुज ते नरपति कहे, केई पुरिस स
 मुदायो जी ॥ १४ ॥ ग० ॥ अनुक्रमें आव्यो रे इणहीज स्थानकें,
 नीवपादपने हेठ जी ॥ जब तुं वेठो रे तव दरीमुख रह्यो, सिंह ते
 सावज जेठ जी ॥ १५ ॥ ग० ॥ लोनथी संझा रे धरीने मारीउं, एह
 अनादि अन्यासो जी ॥ तुमें पण माख्यो रे सिंहने दोग मरी, उपना
 एहज वासो जी ॥ १६ ॥ ग० ॥ श्री पुलक पाटणमांहि वसे, जहूदा
 न चंमालो जी ॥ माई जस्का जस नारी चंमालिनी, तस कुखें अया
 वालो जी ॥ १७ ॥ ग० ॥ अनुक्रमें जन्म्या रे नाम ते थापीयां, का
 लसेन ताहरुं आय जी ॥ चंमसेन नालीएरी जीवतुं, अनुक्रमें यौवन
 पाय जी ॥ १८ ॥ ग० ॥ एक दिन लढी रे पर्वतें ते गया, आहेडानें
 काम जी ॥ कोल ते माख्यो रे आव्या इण देगें, ज्वलनें पचाव्यो ता
 मां जी ॥ १९ ॥ ग० ॥ नरुण करवा रे वेठ ते बिहु, तव एक लेई
 कटागो जी ॥ अतरथदेंगें रे धरती खोदतो, चंमसेन ते तिवारो जी
 ॥ २० ॥ ग० ॥ ड्यकलशनी किनारि ते देखतो, गोपन लागो तेह
 जी ॥ तें पण दीगो रे पण तुज मारीउं, ड्यलोच ए अठेहो जी
 ॥ २१ ॥ ग० ॥ काल करीने रे त्रीजी नरकमां, पांच सागरनें आय जी ॥
 तुं तिहां उपनो रे एहतो इहां रह्यो, मूके न ड्यनो ठाय जी ॥ २२ ॥
 ॥ ग० ॥ एम तिहां रदेतां रे केई वरस गयां, पण ड्यनो नहिं जो
 ग जी ॥ वयरी चंमालें रे आवी मारीउं, सर्व अथिर संजोग जी ॥ २३ ॥

॥ ग० ॥ अष्टादश सागरने आवखे, ठी नरकें जाय जी ॥ तुं हवे निक
ली रे श्रीमती, गाममां, पुणें नरनव पाय जी ॥ १४ ॥ ग० ॥ श्री
समरादित्य रासमां ए कही, बीजे खंमैं ठाल जी ॥ पद्मविजय कहे
चोथी सांजली, आगल वात रसाल जी ॥ १५ ॥ ग० ॥ सर्व गाथा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शालिजड तिहां शेठीउं, नंदणीनामैं नारि : सुत तेहनो शोहामणो,
जन्म ते थयो तिवार ॥ १ ॥ बालसुंदर नामैं वली, यौवन पाम्यो
जाम ; शीजदेव शोहामणा, मलीआ सुनिवर ताम ॥ २ ॥ सांजली ते
हनी देशना, तथा नव्यपणुं तास ; पक्र थयुं तिणें पामीउं, श्रद्धाधर्म
सुवास ॥ ३ ॥ आवक व्रत पण सैविआं, अणसण विधि आराधि ; उ
पनो लांतक अमर ते, अलगी गई उपाधि ॥ ४ ॥ तेर सागर ऊणोंतकें,
पूरण आयु पालि ; उपजे ते कहूं आगलें, सांजल जो संजालि ॥ ५ ॥

॥ ठाल पांचमी ॥

॥ साहेजां हे पहेलुं पेडुं ताम, नाचवा उठे आपणी हो लाल ॥ ए देशी ॥
॥ साहेजां हे इणहिज विजय मजार, हत्तिणाउर नयरें वसे हो लाल
॥ सा० ॥ सुहस्ती इण नाम, नयरशेठ सहु मन वसे हो लाल ॥ १ ॥
॥ सा० ॥ कांतिमती तस नारी, तेहनी कूखें उपन्यो हो लाल ॥ सा० ॥
ठी नरगयी आय, बीजो नाई हवे नीपन्यो हो लाल ॥ २ ॥ सा० ॥
तुज पितानें गेह, सोमिला दासी शोहामणी हो लाल ॥ सा० ॥ तेह
नी कूखें पुत्र, जनम्या तव होंशज घणी हो लाल ॥ ३ ॥ सा० ॥
ताहरुं समुद्रदत्त नाम, दासनुं मंगल आपीउं हो लाल ॥ सा० ॥ अ
नुक्रमें थया कुमार, अंगें यौवन व्यापीयुं हो लाल ॥ ४ ॥ सा० ॥
इण अवसर अणगार, अनंगदेव सूरि मल्या हो लाल ॥ सा० ॥ ते
हनी पासें धर्म, पाम्यो दुःख नवनां गल्यां हो लाल ॥ ५ ॥ सा० ॥
पाम्यो देशविरति, आवक शुद्धययो घणी हो लाल ॥ सा० ॥ लब्धी
निलयपुर ताम, घर तिहां ठे आवक तणो हो लाल ॥ ६ ॥ सा० ॥
नामैं अचल सबवाह, जिनमती नाम तेहनी धूआ हो लाल ॥ सा० ॥

परएयो तूं ते नारि, मंगल उच्चव बहु दुआ हो लाल ॥ ७ ॥ सा० ॥
 एकदिन मंगल साथ, जिनमती तेडवानें गयां हो लाल ॥ सा० ॥
 आया इणहीज ताम, प्रयाणां केईक थयां हो लाल ॥ ८ ॥ सा० ॥
 कीथो तिहां विश्राम, पत्र जता बहुली मली हो लाल ॥ सा० ॥ दीगो
 तव तिहां पोआड, देखी लखमी अटकली हो लाल ॥ ९ ॥ सा० ॥
 मंगलनें बोलावि, नांखुं कौतुकथी तुमें हो लाल ॥ सा० ॥ कांइक
 इव्य इण ताम, होशे निश्चय कहुं अमें हो लाल ॥ १० ॥ सा० ॥ मं
 गल बोळ्यो ताम, जोउं इण स्थानक जई हो लाल ॥ सा० ॥ तें
 कहुं म कर ए काम, वात कौतुकथी ए नई हो लाल ॥ ११ ॥ सा० ॥
 पण नहिं मुज मन लोन, तव मंगल कहे माहरे हो लाल ॥ सा० ॥
 कौतुक अधिक ते आय, तिणे जोउं वच ताहरे हो लाल ॥ १२ ॥
 ॥ सा० ॥ अणगमतुं तुज तोहि, तीक्ष्ण काष्ठथी खोदिउं हो लाल
 ॥ सा० ॥ तुरत दीगो कुंनकंठ, मंगलें निश्चय वेदिउं हो लाल
 ॥ १३ ॥ सा० ॥ महा निधान ए एथि, जेई शकुं एहनें उगी हो ला
 ल ॥ सा० ॥ इणे अवसरें तें दीठ, दृष्टि कलशकंठें लगी हो लाल
 ॥ १४ ॥ सा० ॥ मंगलनें कहुं एम, चाव्य नगरमां जाईयें हो लाल
 ॥ सा० ॥ इव्यनी न कर तुं केडि, अर्थथी अनरथ पाईयें हो लाल
 ॥ १५ ॥ सा० ॥ पूरि खाम तिण ताम, हर्षित परें थई चालीउं
 हो लाल ॥ सा० ॥ तें कहुं कोइनें ए वात, कहेशो नहीं जे चाली
 उं हो लाल ॥ १६ ॥ सा० ॥ अधिकरण थाये एह, कर्म बंधाये
 तेहनुं हो लाल ॥ सा० ॥ मंगल चिंतवे ताम, चित्त चळुं जुउं ए
 वनुं हो लाल ॥ १७ ॥ सा० ॥ मुज विण जेजे एह, नहिं तो एम
 केम नांखीयें हो लाल ॥ सा० ॥ चिंतवि बोळ्यो एम, कोयनें नहीं
 अमें दाखीयें हो लाल ॥ १८ ॥ सा० ॥ एम कही चिंतवे मुज, केम
 उगरो एह जाणतां हो लाल ॥ सा० ॥ जाण्यो ग्रह नडे केम, तास
 उपाय मन थाणतां हो लाल ॥ १९ ॥ सा० ॥ न लीये जब ए दाम,
 पहेजांथी हणुं एहनें हो लाल ॥ सा० ॥ पदोता नयर समीप, आ

रामें तें कह्युं तेहनें हो लाल ॥ १० ॥ सा० ॥ सांजल मंगल बात,
जाउ सासरे माहरे हो लाल ॥ सा० ॥ लावो खबर तस गेह, पठें
जईयें वच ताहरे हो लाल ॥ ११ ॥ सा० ॥ चाव्यो मंगल ताम, अ
वलूं चित्तमां धारतो हो लाल ॥ सा० ॥ सज्जन मन नहीं कांय,
खल मन वैर वधारतो हो लाल ॥ १२ ॥ सा० ॥ परिग्रह पापनुं
मूल, पांचमुं स्थानक पापनुं हो लाल ॥ सा० ॥ दुर्गतिमां लेइ
जाय, पण खोवरावे आपनुं हो लाल ॥ १३ ॥ सा० ॥ त्याग करे
तस जेह, धन धन तेहनी मातनें हो लाल ॥ सा० ॥ पूठे विजय
सिंह ताम, आगल हवे जगतातनें हो लाल ॥ १४ ॥ सा० ॥ पांचमी
त्रीजे खं. . ठाल रसाल इहां कही हो लाल ॥ सा० ॥ उत्तम गुरु
सुपसाय, पद्मविजय एणी परें लही हो लाल ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चाव्यो मंगल चिंतवे, अहो ए कपट अन्यास; ग्रहशे सुखें रही
नगरमां, वेचि मुक्त विश्वास ॥ १ ॥ तिणे कारण करुं तेहवुं, रहे न
नगरमां ठार; पाठां वलतां हुं पठें, मारीश रणह मजार ॥ २ ॥
कालक्षेप करी केटलो, पेशी नयर प्रकार, मायाचरित्रें मुंजीउं, आव्यो
हर्ष उतार ॥ ३ ॥ निशासो धूरें नाखीनें, बोव्यो एहवा बोल; आ
चरीउं अवलूं अति, नारीजाति निटोल ॥ ४ ॥ वासैं कोई नरखुं
वशी, तिणें सहु डखीउं तेह; वली आपणणुं आववुं, सांजलीउं
ससनेह ॥ ५ ॥ लाज्यां तिणे लज्जालूयां, अधिक अधिक आलोच;
तिणे न घटे जावुं तिहां, करो इहांथी संकोच ॥ ६ ॥

॥ ठाल ठही ॥

॥ आधा आम पधारो पूज्य, अमघर वोहोरण वेला ॥ ए देशी ॥
॥ एम सांजली तुं मन खेदाणो, चित्तमां चिंतवे एहवुं ॥ श्रावक कु
लमां उपनी श्राविका, काम करे जूउ केहवुं ॥ १ ॥ जिनमत शुद्ध
जाणी हो लाल, न करे काम ए एहवुं ॥ ए आंकणी ॥ जिनमत
सार जाण्यो युवतीयें, इह परलोकविरुद्ध ॥ किम आचरण करे विपरी

तह, जस वर समकित शुद्ध ॥ १ ॥ जिन० ॥ अथवा दुःकर मोही
 जीवनें, कांय नहीं एम जाणुं ॥ तिणे हवे घरवासें मुक्त पोहोतुं, हवे
 प्रवर्ज्यां टाणुं ॥ ३ ॥ जिन० ॥ स्नेहबंधना एहज ठेडा, तिणे घरे पण
 नवी जईये ॥ अनंगदेव गुरुपासें जईनें, श्रमणधर्म आदरीये ॥ ४ ॥
 ॥ जिन० ॥ मंगल घर जाउं सुखें इहांथी, क्लेश श्यानें देउं एहनें ॥ एम
 विचारी मंगलनें कहे, हुं नहीं दुःख देउं कहेनें ॥ ५ ॥ जिन० ॥ तव
 मंगल हवे चित्त विचारे, मुक्तुं ए करे माया ॥ पण मायायें हुं न वं
 चाउं, एम चिंती कहे जाया ॥ ६ ॥ जिन० ॥ तुमनें नवि मूकुं अ
 धविचमां, जिहां लगें घेर न जाउं ॥ तव तें कहुं जो तुज आग्रह ठे,
 तो चालो घरे आउं ॥ ७ ॥ जिन० ॥ तिहां जई पूठीश कोई साधुनें,
 अनंगदेव गुरु केरी ॥ वात चिंतीचाव्या एम बिहु जण, मंगल जुवे हवे
 हेरी ॥ ८ ॥ जिन० ॥ केइक दिन एम वही गया वाटें, आव्या अटवी
 मांहि ॥ शून्य स्थानक देखी मध्यान्हें, चिंते चित्त उह्वाहि ॥ ९ ॥
 ॥ जिन० ॥ महा साहस धरी कुड हृदयथी, लोन दोष चित्त धारी ॥
 मंगल लेई बुरी पूठेंथी, क्रूरचित्तथी मारी ॥ १० ॥ जिन० ॥ मंगल
 नामें पण अपमंगल, जावयकी ए दीसे ॥ जिम मंगलग्रह तिम वली
 नडा, गीतजिका कहे जीसे ॥ ११ ॥ जिन० ॥ टाढा दीधा कणनी वृद्धि,
 आंवे आवी वली जांखे ॥ तेम ए मंगल नाम मात्रथी, गुं कीजे गुण
 पाये ॥ १२ ॥ जिन० ॥ इण अवसर तिहां विहार करंता, अनंगदेव
 गुरु आव्या ॥ दीठो अग्रगामि मुनिराजें, समतासंग शोहाव्या ॥ १३ ॥
 ॥ जिन० ॥ मंगल बुरिका मूकी नाठो, तें मनमांहि विचाखुं ॥ चोर मा
 वरे गुं पूठें आव्या, एम करी पूठें थाखुं ॥ १४ ॥ जिन० ॥ तव ना
 नेनो मंगल दीठो, चोर न दीठो कोई ॥ मन चिंतें तुं गुं ए अचरिज,
 बुरी दीठी तव जोई ॥ १५ ॥ जिन० ॥ रुथीरें खरडी लीथी करमां,
 देखी चिंते एम ॥ चोर नथी कोइ ए महा रणमां, नासे मंगल केम
 ॥ १६ ॥ जिन० ॥ बुरी पण उजखी पोता केरी, तव तें निश्चें जाणुं
 ॥ काम मंगलीए कीवूं तो पण, कारण नविअ पिठाणुं ॥ १७ ॥

॥ जिन० ॥ तिणे वोलावुं मंगलीआनें, कहेरो वात जे होई ॥ एम
 करी मंगलनें वोलाव्यो, डोडे तव अति सोई ॥ १८ ॥ जिन० ॥ तव
 सवजो विकल्प ते शमोउं, काम ते कीधुं एणें ॥ जिनमतिनी पण
 वात कही ते, नवि दीठी में नयणें ॥ १९ ॥ जिन० ॥ जिणें जिनव
 यणां सूधां जाण्यां, महोटा कुजमां आई ॥ उजय लोकनुं विरुद्ध करे
 ते, किम संजवीयें नाई ॥ २० ॥ जिन० ॥ एम करतां सुनिवर पण
 पासें, आवि उजख्यो तुज ॥ तें वंध्या धर्मज्ञान दिउं तेणें, पूढ्युं
 ताहरुं गुज ॥ २१ ॥ जिन० ॥ इण थानिक तुं आ अवस्थायें, किहां
 थी आव्यो केहने ॥ तव तें मूलथीसघलुं जांख्युं, आशासना करी ते
 हनें ॥ २२ ॥ जिन० ॥ अनंगदेव पण गुरुजी आव्या, आशासना करी
 सूधी ॥ अशरण शरण गुरु ते साचा, आपे धर्मनी बुद्धि ॥ २३ ॥ जिन० ॥
 गुरुसायें हवे तिहांथी चाव्यो, थाणेसरपुर ठाणो ॥ मास कल्पगुरु
 रह्या तिहां तहारें, प्रहार पण रुजाणो ॥ २४ ॥ जिन० ॥ जिनमतिनी
 पण वात लही तें, तव चिंत्युं तें चित्तें ॥ अहो प्रकार मंगलनो देखो,
 अहो अहो मोह विचित्तें ॥ २५ ॥ जिन० ॥ जो पण शीज अखंभित नारी,
 तो पण हवे एणे सरीउं ॥ उजयलोक साधन हवे करणुं, मंगलें रूढुं
 करीउं ॥ २६ ॥ जिन० ॥ जिनमतिपणे जिनसार लह्युं ठे, परिणामें
 मुज सरखी ॥ महारो व्यतिकर सांनली ए पण, दीक्षा लेशे हरखी
 ॥ २७ ॥ जिन० ॥ एम करी में तेहने तारी, नवसायरथी नारी ॥ बहु
 दुःखनरीउं ए संसारह, दीक्षा शिवसुखकारी ॥ २८ ॥ जिन० ॥ विण
 दीक्षायें जो घर जाउं, विघन चरणमां आवे ॥ एम चिंती अनं
 गदेव पासें, दीक्षा लीधी जावें ॥ २९ ॥ जिन० ॥ त्रीजे खंमे ठळी
 ढालें, कहे आचारज शिखिनें ॥ तीर्थकर कहे आचारजने, सुण हवे
 जे थयुं कृषिने ॥ ३० ॥ जिन० ॥ सर्व गाथा ॥ १९६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काल गयो हवे केटजो, जिनमतियें हवे जाम; वात सुणी कोई
 वयणथी, तरुणी चिंते ताम ॥ १ ॥ अहो अहो कहुं एहने, कीधुं मो

होटुं काम; यौवनं कामनं जींतीयें, माम न राखे ताम ॥ १ ॥ खेद वा
मे खमीउं धणुं, मूक्यो माहरो मोह ॥ मंगलीउं मागो मय्यो, दीधो स्वा
मीझोह ॥ २ ॥ संवेगें चिंते इश्युं, आर्यपुत्र इणवार; कारय कीधूं काम
नुं, सयल संसार असार ॥ ४ ॥ क्लेशायास बहु कह्यो, झुलहि मानव
देह; संयोग होय वियोगशुं, सहित तिणें श्यो सनेह ॥ ५ ॥ विषय
विपाक वारु नहीं, तेणें करुं आतम हित; उनय लोक आराधी
यें, चतुरा चिंते चित्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी हमिरीयानी ॥ संजव जिनवर वीनति ॥ ए देशी ॥

॥ मात तातनं पूढीनं, आझा पामी तास ॥ सनेही ॥ आवी खोलती
आवी खोलती, सुंदरी ताहरी पास ॥ स० ॥ १ ॥ जिनवचनं मन द
ढ करो ॥ ए आंकणी ॥ मोह मार्गमां चालतो, देखी जांखे एम ॥
स० ॥ आर्यपुत्र रुडुं कसुं, मुज्जनें तारी नेम ॥ स० ॥ २ ॥ जि० ॥
उेदी मोहनी वेलडी, उत्तम पुरुषनो पंथ ॥ स० ॥ आदरीउं आदर
करी, जावथी थया निगंथ ॥ स० ॥ ३ ॥ जि० ॥ जवसायरथो आ
तमा, उताखो तें पार ॥ स० ॥ एम प्रशंसा करी घणी, आतम की
थो उझार ॥ स० ॥ ४ ॥ जि० ॥ दीक्षा एणीपरें आदरी, अनंगदेव
शुरु पास ॥ स० ॥ काल गयो हवे केटलो, चारित्रनं अन्यास ॥
॥ स० ॥ ५ ॥ जि० ॥ चारित्र पाली तूं हवे, कालक्रमें करी काल
॥ स० ॥ पचवीश सागर आउखे, सुर दुउं सुखरसाल ॥ स० ॥ ६ ॥
॥ जि० ॥ ग्रंथेयकें ते उपन्यो, हवे मंगल गयो तड ॥ स० ॥ तिहां
जई तेहनें जालवे, टांके शीजा लेई हड ॥ स० ॥ ७ ॥ जि० ॥ ते
धननं ममतें करी, नवि मूके तेह ठाण ॥ स० ॥ मांस आहार क्लेशें
करी; पान्यो तिहां यम ठाण ॥ स० ॥ ८ ॥ जि० ॥ मरी ठही नरगें
गयो, वावीश सागर आय ॥ स० ॥ महादुःख सही तिहांथी वली,
आयु पुरुं जव आय ॥ स० ॥ ९ ॥ जि० ॥ एहज विजयमां उपन्यो,
नयवर्धन पुरगाम ॥ स० ॥ वैदिक चांमालनं घरे, ठगलपणे थयो ता

म ॥ स० ॥ १० ॥ जि० ॥ एकदिन रथवर्द्धनथकी, बहुलगल गुं तेह
 ॥ स० ॥ लेइ जातां जयथल पुरें, इव्य स्थानक आव्यो एह ॥ स० ॥
 ॥ ११ ॥ जि० ॥ पूरव अन्यासैं करी, जाति समरण पामी ॥ स० ॥
 वेदिक खेंचे पण नवि, मूके तेहज ठाम ॥ स० ॥ १२ ॥ जि० ॥
 हांके पण पाठो वले, फरी फरी आवे ठाय ॥ स० ॥ चंमालें क्रोधें
 हण्यो, पूरण कीधुं आय ॥ स० ॥ १३ ॥ जि० ॥ उंदरपणे ते उप
 न्यो, उव संझायें एण ॥ स० ॥ तेह इव्य परिग्रह कखो, पाव्युं कर्मव
 शेण ॥ स० ॥ १४ ॥ जि० ॥ एक जुवटिउं एक दिनें, सोमचंम जस
 नाम ॥ स० ॥ नमतो नमतो आवीउं, शालीपादपनें ठाम ॥ स० ॥
 ॥ १५ ॥ जि० ॥ वेठो पासैं निधाननें, लोह अन्नाणनें दोष ॥ स० ॥ सु
 सो नमे अमरख नखो, उपन्यो तेहनें रोष ॥ स० ॥ १६ ॥ जि० ॥
 माखो ते मरी उपन्यो, एहनी नारीने कुख ॥ स० ॥ डुरगिला नाम ठे
 तेहनूं, कुखमां रहे बहु खुख ॥ स० ॥ १७ ॥ जि० ॥ कान नाक ग
 यां जेहनां, तेणीयें जनम्यो पुत्त ॥ स० ॥ अनुक्रमें नाम ते थापीयुं,
 रुइचंम ते युत्त ॥ स० ॥ १८ ॥ जि० ॥ पाम्यो यौवन अनुक्रमें, बहु
 जीवने दुःखदाय ॥ स० ॥ विप्रवृद्धनी परें बाधीउं, सेवे अकार्य स
 दाय ॥ स० ॥ १९ ॥ जि० ॥ चोरी करतां एकदा, खात्रमुखें अहेवा
 य ॥ स० ॥ समरनासुर रायनो तदा, मारवा हूकम ते आय ॥ स०
 ॥ २० ॥ जि० ॥ झूलियें दीधो तिहां कणे, कोटवालें करी सोर ॥
 ॥ स० ॥ मरी बीजी नरकें गयो, वंशामां दुःख वोर ॥ स० ॥ २१ ॥
 ॥ जि० ॥ त्रण सागर कांय हीणडां, आयु पाली करी काल ॥ स० ॥
 इण विजयें हवे उपन्यो, लब्धिनिलयें सुरसाल ॥ स० ॥ २२ ॥ जि०
 एण परें त्रीजा खंममां, सांजलो सातमी ढाल ॥ स० ॥ पद्मविजय
 नांखी इसी, लोनथी बहु जंजाल ॥ स० ॥ २३ ॥ जि० ॥ सर्व गाथा २२५
 ॥ दोहा ॥

॥ लब्धिनिलयमांहे वसे, अशोकदत्त अनिधान; शेठधरे शोहामणी,
 सुहंकरा गुनवान ॥ १ ॥ तेहनी कुखें तेहवे, उपन्यो नारक आय;

पुत्रीपणे तस थापीयुं, अजिधा सिरिया ताय ॥ १ ॥ यौवन पामी जे
 टले, दीधी सागरदेव ; समुद्रदत्त सुत सुगुणने, विवाह वर्त्यो हेव
 ॥ ३ ॥ जोग जली परें जोगवी, जर्ताशुं जली जांत ; ग्रैवेयक सुर ग
 नेमां, आव्यो आयु अंत ॥ ४ ॥ पुत्रपणे ते उपन्यो, सागरदत्त श्री
 कार ; नाम ठव्युं निरतुं तदा, यौवन पाम्यो ज्यार ॥ ५ ॥ धर्माचारज
 धारीआ, देवशर्म दयाल ; आवकव्रत पाले सखर, प्राणीनो प्रतिपाल
 ॥ ६ ॥ इसरखंध आवक अवल, तेहनी पुत्री ताम ; नंदिनीनामें परणी
 उ, कमनीय जोगवे काम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जाय रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ जोग जोगवतां सुत एक आयो रे, सुतनो महोत्सव करवा तायो रे ॥
 सगा संवंधी लेई परिवार रे, उजाणी करवा सुखकार रे ॥ १ ॥ सांजल
 जो सहु कर्मनी वातो रे, कर्मथी बलीउ कोई न थातो रे ॥ तेह नि
 धाननी पासें आव्यो रे, पुत्र जोलीका करवा जाव्यो रे ॥ २ ॥ खोदे
 खाम ते कारण जाणी रे, इव्यकलशनो कंठ पिठाणी रे ॥ पाढी
 खाम जली परें पूरी रे, बीजी खोदी खाम सनूरी रे ॥ ३ ॥ जोजन
 करी हवे गयो निज घेर रे, तव तें चिंतवीयुं एणी पेर रे ॥ पूबुं मात
 नें केनवी पूबुं रे, जो नवि पूबुं तो मानशे उबुं रे ॥ ४ ॥ एम जाणीनें
 कही सवि वात रे, करवुं एहनुं कशुं कहो मात रे ॥ तव ते बोली
 मुज देखाडो रे, मुज देख्या विण तुम्हें मतकाडो रे ॥ ५ ॥ जोईनें
 जुगताजुगतुं कहेणुं रे, तें पण दाख्यो जई निज करणुं रे ॥ अन्नाण
 दोपें तेणें एम धाखुं रे, कोई उपाय करी पुत्रनें मारुं रे ॥ ६ ॥ एम
 विचामी कशुं सुण पुत रे, हमणां काढवुं ठे नहीं जुत रे ॥ काढतां
 जाणो जो नरराय रे, तो उलटुं घरमांथी जाय रे ॥ ७ ॥ अक्सरें
 जेणुं थापण जाई रे, उतावल मत करो तुमे जाई रे ॥ तव तुं
 बोव्यो एम प्रमाण रे, एम करी पोहतां ते निजवाण रे ॥ ८ ॥ केई
 दिन काढ्या तें पढी सुखमां रे, तुज मातायें काढ्या दुःखमां रे ॥ जो

नदोष पूर्वजव अन्यास रे, तुज मारणनुं चित्त ते तास रे ॥ ए ॥ तेह
 दुःखें नित्य नित्य रहे वजती रे, मनमां एम उपाय चिंतवती रे ॥
 पोसह उपवास पारणुं जिहारें रे, नोजनमां विप देशुं तिहारें रे ॥
 ॥ १० ॥ तें उपवासधी होय लघु शरीर रे, शीघ्र होये विपनी तिहां
 पीर रे ॥ दीधूं विप पोतानी माय रे, जेहनुं शरण ते मारवा धाय
 रे ॥ ११ ॥ विपप्रयोगें तुं जेवाणो रे, नंदिनी नारी जाणें तिणें
 ठाणो रे ॥ कोलाहल कस्यो तिणो आवी रे, मा पण रुवे कपटें जावी
 रे ॥ १२ ॥ लोक मय्या जोवा सहु कोय रे, सिद्धपुत्र एक तेहमां
 होय रे ॥ आवक श्रद्धावंत प्रमाण रे, मंत्र यंत्रना तेह सुजाण रे
 ॥ १३ ॥ सिद्धपुत्र ते कहीयें तेह रे, मनमां चिंतवे एहवुं जेह रे ॥
 जीवाहुं हुं मंत्रनी शक्ति रे, साधर्मिकनी करुं एम नक्ति रे ॥ १४ ॥
 मंत्रनी शक्तें जीव्यो जेह रे, चिंता उपनी तुजनें एह रे ॥ मनुज
 जीवितमां बहु अपाय रे, घरवासें रह्या हवे शुं आय रे ॥ १५ ॥
 वज्री कोइक दिन एम बनी जाय रे, व्रत पञ्चस्काण विना नव जाय
 रे ॥ ते कारण हवे जेउं दीक्षा रे, पालुं पामी गुरुनी शिक्षा रे ॥
 ॥ १६ ॥ देवशर्मा गुरुपासें लीधी रे, उचित विधियें दीक्षा हवे सूधी
 रे ॥ निरतिचार ते चारित्र पाली रे, उपन्यो त्रैवेयकें दुःख गाली रे
 ॥ १७ ॥ त्रीश सागरने आउखे जाणो रे, त्रैवेयक सुर ययो सपरा
 णो रे ॥ तुज मातयें कस्युं काम नूहुं रे, पीठ बांध्युं धन उपर रुहुं
 रे ॥ १८ ॥ पुत्रना वधनो जे परिणाम रे, इव्यलोन पण अतिउदाम
 रे ॥ इव्य न जोगव्युं बांध्युं पाप रे, धूमप्रजायें पहोती आप रे
 ॥ १९ ॥ पन्नर सागर तेहनुं आय रे, तिहांथी मरी तिर्यचमां जाय
 रे ॥ तिर्यचमांहि नाना नव करिया रे, तिहां बहु जोगव्या दुःख
 ना दरीया रे ॥ २० ॥ पूर्वजव अन्यासनो दोष रे, नालीएरी एह लो
 नविशेष रे ॥ तुं चवी सागरदत्त श्रेष्ठ घेर रे, सिरिमति कुखें पुत्र ए
 णीपेर रे ॥ २१ ॥ इण नवमां तुम्ह बिहु इणी रीत रे, तीर्थकर
 कहे मुज जे अतीत रे ॥ वात सुणी मुज ययो वैराग रे, शिखि कु

मर सुण तुं महाजाग रे ॥ १२ ॥ नरपतियें सुणी आणा दीधी रे,
काढि लखमी तेह वहेंची दीधी रे ॥ दीन अनाथनें करी उपगार रे,
विजय धर्म गणधर अणगार रे ॥ १३ ॥ तेहुनी पासें दीक्षा लीधी रे,
माहरी वात हती ते कीधी रें ॥ विचरंतो आव्यो हुं आंहि रे, तिणे
जगमां कोय कोयनुं नाही रे ॥ १४ ॥ शिखिकुमार कहे जगवन साचुं
रे, जिणे तुम्हें जाणुं सघलुं काचुं रे ॥ पण दीक्षा लेवी प्रभु दोहे
ली रे, वातो करवी सहुने सोहेली रे ॥ १५ ॥ ब्रिजे खंमैं आठमी
ढाल रे, मुनिगुण गातां मंगलमाल रे ॥ श्रीगुरु उत्तम विजयनो शीष्य
रे, पद्मविजय कहे विश्वा वीश रे ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शिखिकुमार कहे सुणो, जांखो धर्मना जेद ; दानादिक जे दाखिआ,
जेदना बहु प्रजेद ॥ १ ॥ चार जेद सांजल चतुर, दान शील तप दाख ;
जावना चौथी जावियें, सर्वज्ञ केरी शाख ॥ २ ॥ त्रण जेद दानज तणा, पहे
लुं ज्ञानप्रधान ; अजय धर्म उपग्रह अधिक, नाण सुणो हवे दान ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्म न तूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञाननुं दान देतां यकां, जाणे वंथनें मोख ॥ शिवसुखसंपद बीज ठे,
उपजे अतिअ संतोष ॥ १ ॥ धर्म ए सेवो रे जवि जना ॥ ए आंक
णी ॥ जे दानें लहे पुण्यनें, जाणे पाप अशेष ॥ जाणी पुण्यनें आदरे,
पापनें टाळे विशेष ॥ २ ॥ धर्म ० ॥ यतः ॥ “सुच्चा जाणई कट्टाणं,
सुच्चा जाणई पावणं ॥ उजयंपि जाणई सुच्चा, जं ठेयं तं समायरे
॥ १ ॥” पुण्य करंतो रे प्राणीव, पामे नर सुर सुख ॥ पापथी दूरें
यातां यकां, तिरि नारक टाळे दुःख ॥ ३ ॥ धर्म ० ॥ जिनवर जापित
नाणनुं, दीधुं दान विशाल ॥ इह परलोकनां सुख घणां, दीधां तिणें
सुरसाल ॥ ४ ॥ धर्म ० ॥ राग द्वेष मोह टालीने, पामे केवल नाण ॥
अनुकर्में तिहि वरे निको, जे दिये नाणनुं दाण ॥ ५ ॥ धर्म ० ॥ दाण
नाण एणी परें कायुं, संक्षेपें करी एम ॥ दाता ग्राहक ए दोयनें, एकां

ते हित प्रेम ॥ ६ ॥ धर्म० ॥ प्रथवी पाणी अगनी वली, वायु वनस्पति
 काय ॥ बि ति चउ पंचिंदिय जीवनें, हणतां हित नवि थाय ॥ ७ ॥
 धर्म० ॥ मन तनु वचनें ए जीवनें, हणवो नांही लगार ॥ दान अज
 य एह जाणीये, सेव्युं मुनिजनें सार ॥ ८ ॥ धर्म० ॥ अतिडुःखीया
 पणो जीवबुं, इहे सर्व सदाय ॥ तिणे कारण मुनिराजीया, राखे ठे षट
 काय ॥ ९ ॥ धर्म० ॥ यतः ॥ “सर्वे वि जीवा इहंति, जीविउं न मरि
 ज्जीउं ॥ तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति एं ॥ १ ॥” नरपति
 पण मरवा पडयो, आपे जीववा राज्य ॥ राज्यथकी पण जीवबुं, अ
 धिकुं कहे जिनराज ॥ १० ॥ धर्म० ॥ जे सहु जीवनें इष्ट ठे, देवुं
 तेहज सार ॥ इंद कीटक दोय जीवबुं, सरिखुं इहे उदार ॥ ११ ॥
 धर्म० ॥ आयु दीरघ पामीये, रूप सुरूप नीरोग ॥ परजव पण ते प्रशं
 सीये, अजयदानी जे लोग ॥ १२ ॥ धर्म० ॥ यतः ॥ “आयुदीर्घतरं
 वपुर्वरतरं गोत्रं गरीयस्तरं, विजं नूरितरं बलं बहुतरं स्वामित्वमुच्चैस्त
 रं ॥ आरोग्यं विगतांतरं त्रिजगतीश्लाघ्यत्वमव्येतरं, संसारांबुनिधिः क
 रोति सुतरां चेतः कृपांर्क्षितरं ॥ १ ॥” अजयदान एणी परें कहुं, सांज
 ल श्रावक तुं वाण ॥ धर्म उपग्रह दान जे, नांखुं तेह विन्नाण ॥
 ॥ १३ ॥ धर्म० ॥ अशन पान खादिम वली, खादिम नें वस्त्र पात्र ॥
 उपध जेबज योग्य ते, दीजे मुनिवरपात्र ॥ १४ ॥ धर्म० ॥ सजाय ध्या
 नमां मग्न जे, जे वहे संजमजार ॥ कमें हजका ते मुनि तरे, उतारे
 पर पार ॥ १५ ॥ धर्म० ॥ कमें गुरु पोतें बूडतो, केम तारे पर तेह ॥
 तिणे चउकारण शुद्ध जे, दीजीये धरी ससनेह ॥ १६ ॥ धर्म० ॥ दा
 यक ग्राहक शुद्ध जे, कालजावे करी शुद्ध ॥ दायक शुद्ध नांखुं हवे,
 सांजली थाउ विबुध ॥ १७ ॥ धर्म० ॥ दाता ज्ञानी होये नलो, न
 हिं अडमद अहंकार ॥ श्रद्धा आदर अतिघणो, रोमांचित नें उदार
 ॥ १८ ॥ धर्म० ॥ न्याये आव्यो जे इव्य ते, प्राशुकने शुद्धमान,
 अविरोधी जेह लोकमां, करतो निर्जराध्यान ॥ १९ ॥ धर्म० ॥ इह
 लोकने परलोकनी, न धरे कांय आशंस ॥ शुनहेत्रें बीजनी परें, व

हु फल पामे असंश ॥ २० ॥ धर्म० ॥ नर सुर शिव सुख संपदा, आपे
 एहज दान ॥ जे हवे श्रद्धा विना दिये, जस कीरति मन आण ॥ २१ ॥
 धर्म० ॥ अनिमाने अथवा दिये, एह दीये ठे जो एम ॥ हुं केम उठो
 हुं एहथी, नवि आपुं कहो केम ॥ २२ ॥ धर्म० ॥ श्रद्धाजल विनु बी
 ज ते, न फले तास लगार ॥ दान बहु पण दुःखितं, कलुषित चित्त
 अपार ॥ २३ ॥ धर्म० ॥ प्राणनो वध करी जे दिये, धर्म श्रद्धा म
 न राख ॥ चंदनवाली अंगारनो, करे व्यापार निजसाख ॥ २४ ॥
 धर्म० ॥ लोकविरुद्ध जे आपतो, धर्मविरुद्ध वली जेह ॥ पोतें ग्राह
 क विहु जणा, पडे संसारें तेह ॥ २५ ॥ धर्म० ॥ ग्राहक शुद्ध हवे
 नांखियें, धारे महाव्रतजार ॥ गुरुनी शुश्रूषा जे करे, जोग समाधिमां
 सार ॥ २६ ॥ धर्म० ॥ खंति मदव अऊवा, लोहनो कीधो रे त्याग ॥
 त्रण गुप्तें गुप्तो रहे, सजाय ध्याननो लाग ॥ २७ ॥ धर्म० ॥ पंचेंद्रियनो
 नियह करे, पाले साधुनो मग्न ॥ चरणकरणनी रे सित्तरी, परजावेंशुं अ
 लग्न ॥ २८ ॥ धर्म० ॥ इह जवनें वली परजवें, होये अप्रतिबंध ॥ मेरु परें
 जे चले नहीं, उपसर्ग वायुने बंध ॥ २९ ॥ धर्म० ॥ एहवा जे सुनिराजनें,
 रागें दीजें जे दान ॥ ग्राहक शुद्ध ते जाणीयें, नेद ए बीजो अमान
 ॥ ३० ॥ धर्म० ॥ नवमी त्राजा ए खंमनी, ढाल कही सुपवित्र ॥ उत्तम प
 अविजयें जली, समरादित्य चरित्र ॥ ३१ ॥ धर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीजरहित जे साधुनें, दिये कुपात्रें दान ; अछुन फल पामे अधि
 क, सर्पने जिम विषपान ॥ १ ॥ रुधिरें खरड्युं रुधिरथी, वस्त्र धुवे
 विण नीर ; तिम कुपात्रें आपतां, नांजे केम तस नीर ॥ २ ॥ थोडुं
 पण जे सुपात्रथी, पामे सुख नरपूर ; तरणां गौ आहारे तुरत, दुध ज्युं
 दिये अविदूर ॥ ३ ॥ पात्रविशेषें आपीयुं, एकज दान अमान ; एकज
 लज गावि उरग. चया पीये फल जान ॥ ४ ॥

॥ दाज दशमी ॥ आदर जीव कृमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ कानगुह दव दान कहीजें, तपशीनें दिए कालें जी ॥ देहनें उप

गारी जिम होवे, तो फल तस बहु आले जी ॥ १ ॥ सेवो रे नविआ
 धर्म ए वारु ॥ ए आंकणी ॥ जिम कालें जो करण कीजें, तो बहु
 फल तस आय जी ॥ एम कालें जो दान दिये तो, फल बहु लीये अ
 मायो जी ॥ २ ॥ सेवो ॥ तप पारणनें उत्तर वारण, वली कीधो होय
 लोच जी ॥ आका विहारयकी वली ग्लान जे, कारणनो आलोच जी ॥
 ॥ ३ ॥ सेवो ॥ ज्ञानान्यास करे बाल साधु, एहवा काल विचारी
 जी ॥ आहार घृतादिक बहु आपीजें, तो होय तस सुखकारी जी ॥
 ॥ ४ ॥ सेवो ॥ काल विना जो बीज वावीजें, तो होये बीजनी
 हाणि जी ॥ दायक ग्राहकनें एम जाणो, काल ते शुनगुण खाणी
 जी ॥ ५ ॥ सेवो ॥ जावशुं ते दान कहीजें, श्रद्धापूर्वक आपे जी ॥
 रोमांचित थई माने कृतज्ञता, ते जावशुं पणुं आपे जी ॥ ६ ॥ से
 वो ॥ आर्तवशें नवि दान देईजें, कलुषित चित्त नवि कीजें जी ॥
 आशंसा नवि कांई करीयें, जावशुं ए लीजें जी ॥ ७ ॥ सेवो ॥
 यतः “अनादरो विलंबश्च, वैमुख्यमप्रियं वचः ॥ पश्चात्तापश्च पंचामी,
 सदानं दूषयंत्यहो ॥ १ ॥ अत्यादरो ऽ विलंबश्चौ, दार्यं च प्रियवा
 क्यता ॥ सन्मुखत्वं च पंचामी, सदानं नूषयंत्यपि ॥ २ ॥” मोहनें
 अर्थे दान जे दीये, तेहनो ए विधि जाणो जी ॥ अनुकंपा जे दानज
 नांखुं, तेहनो निषेध चित्त माणो जी ॥ ८ ॥ सेवो ॥ इव्यहाणि
 होये दान देयंता, एम मनमां मत आणो जी ॥ कूप आराम गवा
 दिक देखो, देतां संपद ठाणो जी ॥ ९ ॥ सेवो ॥ घरकुई सम कूप
 एनी लक्ष्मी, नगरवावि व्यवहारी जी ॥ अधिकारीनी सरोवर सरिखी,
 नृपनी नदी अनुहारी जी ॥ १० ॥ सेवो ॥ दान नोग नें नाश ए त्रण
 गति, इव्यतणी जग नांखी जी ॥ नवि दीधी नवि नोगवी जेणें, तस
 त्रीजी गति दाखी जी ॥ ११ ॥ सेवो ॥ यतः ॥ “मोस्कळं जं दाणं, प
 ण्णसो विहिमुणेयवो ॥ अणुगं पादाणं पुण, जिणेहिं न कहिं विपडी
 सिद्धं” ॥ १ ॥ दानधर्म संक्षेपें नांख्यो, शील सुणो नवि प्राणी जी ॥
 प्राणिवधादिक पंच महाव्रत, पालवां बहु हित आणी जी ॥ १२ ॥ सेवो ॥

क्रोधादिकनो निग्रह करवो, अऊव मदव खंति जी ॥ श्रद्धा संवेग
 संतोष फरसन, निरीह चित्त वली मैत्ति जी ॥ १३ ॥ सेवो० ॥ एह
 शीलमय धर्म अराधी, मानव सदगति पामे जी ॥ बारणां दुर्गतिनां
 ते देवे, रमे ते आतमरामें जी ॥ १४ ॥ सेवो० ॥ वलीअ विशेष जे
 ब्रह्मचर्य पाले, ते पण शील कहीजें जी ॥ ते पण आ नव परजव
 केरां, सुख शाश्वत वली लीजें जी ॥ १५ ॥ सेवो० ॥ यतः ॥ “व्या
 ग्रव्याजजलानलादिविपदस्तेषां व्रजंति कृत्यं, कल्याणानि समुद्धसंति
 विबुधाः सान्निध्यमध्यासते ॥ कीर्तिः स्फूर्तिमियत्ति यात्युपचयं धर्मः प्र
 णश्यत्ययं, स्वर्निर्वाणसुखानि सन्निदधते ये शीलमावित्रते ॥ १ ॥”
 शील संक्षेप कह्युं हवे नांखुं, तपनामें हवे त्रीजुं जी ॥ तेह डनेदें
 बाह्य प्रथम तिहां, अन्यंतर तप बीजुं जी ॥ १६ ॥ सेवो० ॥ बाह्य
 तणां पटनेद प्रकाश्या, अणसण पेहेलो जेदो जी ॥ ऊणोदरी व्रत
 संक्षेपण, रसत्यागें नवि खेदो जी ॥ १७ ॥ सेवो० ॥ कायक्लेशने
 संलीनता ए, पट्विध बाह्य कहाय जी ॥ अन्यंतर प्रायश्चित्तनें विनयो,
 वैद्यावच्च सज्जाय जी ॥ १८ ॥ सेवो० ॥ ध्याननें उत्सर्ग ए पट लहीयें,
 अन्यंतर निरमाय जी ॥ विशेषें बहुविध तप एहना, जेद पंचाश क
 हाय जी ॥ १९ ॥ सेवो० ॥ वलिअ विशेषें तप बहु जेदें, नांख्या आ
 गममांहि जी ॥ वर्द्धमानश्रेणी तप नामें, परतरतप उह्माहिं जी
 ॥ २० ॥ सेवो० ॥ कनकावली रतनावली जाणो, मुगतावली मनोहा
 र जी ॥ जघुसिंहनें वृक्षसिंह निःक्रीडित, जव मथ्य वज्रमध्यसार
 जी ॥ २१ ॥ सेवो० ॥ प्रतिमाजड महानजड कहियें, सर्वतोजड मन
 आणी जी ॥ पंच कल्याणक तप वली स्थानक, सिद्धचक्र गुण खाणी
 जी ॥ २२ ॥ सेवो० ॥ सत्त सत्तमीआ अठ अठमीआ, नव नवमीआ
 होय जी ॥ दसमी एकादसी वली वारसी, निद्रुप्रतिमा जोय जी ॥ २३ ॥
 ॥ सेवो० ॥ इंडियजय ने संसार तारण, कपाय जयतप नाम जी ॥
 जोग जयने वली करमसूत्रण, पंचमी तप गुणधाम जी ॥ २४ ॥
 ॥ सेवो० ॥ दशेन ज्ञानचरण आराधन, दश पञ्चस्काणनी डली जी ॥

समवसरणनें नंदीश्वर तप, करीयें शक्तिने तोली जी ॥ ३५ ॥ सेवो० ॥
 अक्षयनिधि पुंमरिक रोहिणी तप, अंबिकातप सुविचारो जी ॥ सर्व
 सुख संपत्ति अजिधा, परमनूपण तप सारो जी ॥ ३६ ॥ सेवो० ॥
 श्रुतदेवता तप सर्वांग सुंदर, अडुख देखि श्रीकार जी ॥ सौभाग्यकल्प
 वृद्ध ए नामें, एकादशी मन धारो जी ॥ ३७ ॥ सेवो० ॥ चंडायण तप
 आठम चौदश, आंवल वरुमान मोहोटुं जी ॥ अशोकवृद्धनें सुकु
 ट सप्तमी, माणिक्यप्रजा नहीं खोटुं जी ॥ ३८ ॥ सेवो० ॥ अखंड
 दशमी वली अमृत तप, तप वली एकादशांग जी ॥ दवदंती तप दी
 क्कानुं तप, निर्वाण तप वलो चंग जी ॥ ३९ ॥ सेवो० ॥ गौतम पड
 घो ने स्वर्गदंमो, पद्मोत्तर तप जाण जी ॥ जिनपूजानें हारज तप
 वली, कणोदरी अजिधान जी ॥ ४० ॥ सेवो० ॥ धर्मचक्रवाल तप
 वली नांखुं, क्रमचक्रवाल होय जी ॥ बत्रीश विजयनुं तप घणुं सुं
 दर, मेरुमंदर जोय जी ॥ ४१ ॥ सेवो० ॥ सूरायणनें वली पडवा
 तप, धनतप कमल उदार जी ॥ अष्टापद पावडीया नामे, वर्गतप
 स्या विचार जी ॥ ४२ ॥ सेवो० ॥ गुणरतन संवहर जाणो, नडोत्तर
 अवधार जी ॥ अजिग्रह तपनो पार न लहीयें, तेह अनेक प्रकार
 जी ॥ ४३ ॥ सेवो० ॥ इव्य क्षेत्रनें कालनावथी, नांख्या ग्रंथ मजार जी ॥
 तपावलित्थी विधि सहु जाणो, इहां थाये विस्तार जी ॥ ४४ ॥ सेवो० ॥
 एम तपधर्म संक्षेपें नांख्यो, आराधी नवि प्राणी जी ॥ इह नव परज
 वनुं सुख लहीनें, परणे शिववधु राणी जी ॥ ४५ ॥ सेवो० ॥ त्रीजे
 खंमें ढाल ए दशमी, पद्मविजय कहे एम जी ॥ सांजलीने श्रोता जन
 धर्मे, करजो अविहड प्रेम जी ॥ ४६ ॥ सेवो० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नावधर्म चोथो जलो, सम्यग्दर्शन साच ; नाण चारित्रनी नावना,
 मत नावन विनु माच ॥ १ ॥ वैराग्यनावना तेम वली, तीर्थनक्ति तत
 काल ; साधुजननी सेवना, कंदर्पजय विकराल ॥ २ ॥ अतिचार जो
 आविउ, निंदा गहीं नाद ; मोहना सुखमां माचतो, आयतने आव्हा

६ ॥ ३ ॥ एह धर्म अरिहंतनो, नांख्यो चोथो नाव ; जवनय नावठ
 नंजणो, बलीठ एह वनाव ॥ ४ ॥ चार प्रकारें सुणि चतुर, सेवी धर्म
 सुगुह ; जीवअनंता जिहां गया, शाश्वत सुख सुविशुद्ध ॥ ५ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥ सोनानी जारी हे ॥ ए देशी ॥

॥ एणीपरें सांजली हे ॥ साहिबाजी मारा ॥ जिनवरधर्म ॥ शिखि कुंमरनें
 तास ॥ बोध थयो जिनधर्मनो जी ॥ बोले एणी परें हे ॥ सा० ॥ नां
 ख्युं सत्य ॥ एहमां नहीं संदेह ॥ कोण कहे चेद मर्मनो जी ॥ १ ॥ पण
 एक सांजलो हे ॥ सा० ॥ धर्म अग्रेप ॥ नवि करी शकोयें कोय ॥ दान
 विना घरमां रही जी ॥ तिण कारण हे ॥ सा० ॥ चारित्रधर्म ॥ योग्य
 होये ते कोण ॥ नांखो जगवन मुज सही जी ॥ २ ॥ गुरुजी बोले
 हे ॥ सा० ॥ सांजल जोग्य ॥ उपनो आर्यदेश ॥ कुलनें जातिविशे
 पिठ जी ॥ हलूकरमा हे ॥ सा० ॥ निर्मलबुद्धि ॥ जाणे संसार स्वरूप
 प ॥ वरणवुं एहवो पेखिठ जी ॥ ३ ॥ जन्म ते मरण निमित्त ॥ सा० ॥
 चपल ते डव्य ॥ संजोग अंतें विजोग ॥ मानवजव दुर्लभ यणो जी ॥
 विषय ते दुःखनो हेतु ॥ सा० ॥ मरवुं सहुनें नित्य ॥ दारुण तास वि
 पाक ॥ कोई आधार न तेह तणो जी ॥ ४ ॥ एम जाणीनें विरक्त
 ॥ सा० ॥ थोडो कषाय ॥ थोडी करतो हास ॥ जाण कस्या गुणनो
 बजी जी ॥ नहिं कौतुकीनें विनीत ॥ सा० ॥ बहुजन मान्य ॥ दोष
 कारी नवी होय ॥ श्रद्धा करे कहुं केवली जी ॥ ५ ॥ वली थिर श्रद्धा
 वंत ॥ सा० ॥ एहवो जोग्य ॥ जे उपसंपन्न होय ॥ तव कुंअर एणि
 परें जणे जी ॥ रुडो नांख्यो हे ॥ सा० ॥ साधुनें योग्य ॥ पण उप
 संपन्न आज ॥ आव्यो चरणे तुम्ह तणे जी ॥ ६ ॥ विजयसिंह गुरु
 हे ॥ सा० ॥ करे विचार ॥ एह महा जाग्यवंत ॥ प्रश्न करे जुठ केह
 या जी ॥ वे अति शांत स्वरूप ॥ सा० ॥ जखियें तेण ॥ महाकुलें उपनो
 एह ॥ वचन बोले तेजेदवां जी ॥ ७ ॥ एहनें कहियें हे ॥ सा० ॥
 एहवां वयण ॥ जिणे उपसंग्रह थाय ॥ एम चिंती हवे गुरु कहे जी
 ॥ मुण तुं आवक हे ॥ सा० ॥ तुं गुणवंत ॥ ए संसार असार ॥ तेह

मां कोण एणिपरें लहे जी ॥ ७ ॥ डुःकर जाणो हे ॥ सा० ॥ लेवुं
जेह ॥ श्रमणपणुं जग सार ॥ शत्रु मित्र सम जाणवा जी ॥ नवी
हणवो कोई जीव ॥ सा० ॥ कहेवुं साच ॥ दंतशोधन मात्र कांय ॥
पच्चस्कवुं अदत्त आणवा जी ॥ ८ ॥ त्रिविधें पच्चस्कवुं हे ॥ सा० ॥ अ
ब्रह्मचर्य ॥ उपगरण वस्त्रनें पात्र ॥ उपर पण मूर्छा नहीं जी ॥ रात्रि
नोजननो त्याग ॥ सा० ॥ लेवो आहार ॥ वेंतालीश दोष शुद्ध ॥ आ
गममां नांख्यो सहि जी ॥ १० ॥ संयोजनादिक हे ॥ सा० ॥ टालवा
पंच ॥ मितकाजें लेवो आहार ॥ सुमति गुपति वर पालवी जी ॥ ई
र्यामुख पचवीश ॥ सा० ॥ जाववी होय ॥ बाह्य अच्यंतर चेद ॥ तप
करवुं क्रोध जालवी जी ॥ ११ ॥ प्रतिमा वहेवी हे ॥ सा० ॥ मुनि
नी अनेक ॥ विचित्र अनियह जेह ॥ इव्यादिक जे नांखिआ जी ॥
नूयें स्रवुं हे ॥ सा० ॥ केशनो लोच ॥ कायक्वेश अनेक ॥ करतां श
मरस चाखिआ जी ॥ १२ ॥ निःप्रतिकर्मा हे ॥ सा० ॥ जास शरीर ॥
वहेवी गुरुनी आण ॥ सर्वकाल प्रभुआणथी जी ॥ परिसह जितवा
वावीश ॥ सा० ॥ उपसर्ग जेह ॥ दिव्यादिक बहु चेद ॥ जय करवो
गुण खाणथी जी ॥ १३ ॥ लाधे अलाधे हे ॥ सा० ॥ समचित्त राख ॥
अढार सिलांग सहस ॥ नार ते वहेवो नित्य पडे जी ॥ तिणे तरवो
एं समुद्र ॥ सा० ॥ चरम कहेवाय ॥ बांदि करिनें तेह ॥ तोलवो
मेरु निज करवडे जी ॥ १४ ॥ नखवो कोलीज हे ॥ सा० ॥ स्वादरहि
त ॥ वेळुतणो जे असार ॥ खड्गधारापरें चालवुं जी ॥ पीवी अग्निनी
ज्वाल ॥ सा० ॥ गंग प्रवाह ॥ चालवुं साहमे पूर ॥ निज आतम
सुखें मालवुं जी ॥ १५ ॥ कोथलो पवननो हे ॥ सा० ॥ नखवो हाथ ॥
चतुरंग बल संघात ॥ जीतवुं एकले प्राणीयें जी ॥ साधवो राधावेध
॥ सा० ॥ जयनी पताक ॥ ग्रहेवी अग्रही पूर्व ॥ डुःकर मुनिपणुं
जाणीयें जी ॥ १६ ॥ एम सांजजी हे ॥ सा० ॥ हरख्यो कुमार ॥
कर जोडी कहे एम ॥ गुरु नलुं साधुपणुं कहुं जी ॥ डुकर कहुं तिम
तेह ॥ सा० ॥ पण नहीं मुज ॥ जाणुं संसारनुं गुज ॥ जाणुं हवे

एह कब लहुं जी ॥ १७ ॥ गुरु तव नांखे हे ॥ सा० ॥ सांजुं एह ॥
 जाणे संसार स्वरूप ॥ पण बहुनव नावनाथकी जी ॥ मुंजावे बहु
 जीव ॥ सा० ॥ थाये मूढ ॥ तेणे न विचारे स्वरूप ॥ न गणे अना
 गत बुद्धिथकी जी ॥ १८ ॥ कुल नवि देखे हे ॥ सा० ॥ न करे धर्म
 ॥ नवि माने उपदेश ॥ मूर्ख न गणे गुरुप्रत्ये जी ॥ न करे अपजश
 बीक ॥ सा० ॥ आचरे तेह ॥ आलोकने परलोक ॥ क्लेशनुं नाजन
 जिणगते जी ॥ १९ ॥ तिण कारण सुणि हे ॥ सा० ॥ हणवो मोह ॥
 कुंमर कहे प्रभुसाच ॥ पण ए उपाय हणवा तणो जी ॥ कार्य साधे
 तेह ॥ सा० ॥ कारण सेव ॥ जे करे प्रगटे तास ॥ साध्यतणुं पूरण
 पणुं जी ॥ २० ॥ ते तुम्ह पासें हे ॥ सा० ॥ तुम पसाय ॥ पामुं
 नवजल पार ॥ जिम सायरनिर्यामके जी ॥ अल्प पुण्य होये जास
 ॥ सा० ॥ कुशल न बुद्धि ॥ गुणवंता गुरुलान ॥ न होये नवि पामी
 शके जी ॥ २१ ॥ तेणें मुज उपरें हे ॥ सा० ॥ करो उपगार ॥ गुरु
 बोले तव वाणी ॥ अम स्थिति ए आगम तणी जी ॥ संजलावी सवि
 मग ॥ सा० ॥ केताक दिन्न ॥ शिखवीयें आवश्यक ॥ पढी दिस्कीजें
 शिष्य नणी जी ॥ २२ ॥ बोले कुमरजी हे ॥ सा० ॥ कस्यो उपगार ॥
 दीक्षा पण जेई मुज ॥ पालवी आगमस्थिति नली जी ॥ तेणे एमज
 हो स्वामी ॥ सा० ॥ एम कह्युं जाम ॥ बहु परिजनशुं ताहिं ॥ कुमर
 पिता आव्यो सांजली जी ॥ २३ ॥ हाथणीयें वेठो हे ॥ सा० ॥ ते
 ब्रह्मदत्त ॥ उत्तरी प्रणमे पाय ॥ धर्मलान गुरुयें दिउ जी ॥ त्रीजे स्वर्ग
 दात ॥ सा० ॥ अइ अगीआर ॥ पद्मविजय कहे एम ॥ बेठो चित्त
 सुणवा किउ जी ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर तातनें एम कहे, काम करो मुज एक; तात कहे जे कहो
 तुम्हें, करीयें तुम सुविवेक ॥ १ ॥ ए संसार स्वरूप एम, मानव
 नव मुगकल; संग अनित्य चपला सिरी, एहमां नहीं अवद्व ॥ २ ॥
 यावन जाये जोपशुं, अनंग करे अकल्याण; मृत्युतो मूके नहीं,

जाणो ठो तुम्हें जाण ॥ ३ ॥ द्यो ध्याणा जेउं दीखडी, सफल करुं
संसार; सुतस्नेहें गदगद स्वरें, पुत्रनें कहे प्रकार ॥ ४ ॥ बालक तुं
बोले किशुं, काल न दीक्षा कोय; कुंमर कहे नवि काल ठे, जमनो
एणिपरें जोय ॥ ५ ॥ बोढ्यो एक बंनदत्तना, परिवारमां पुरुष;
पिंगक नामें पाप पुण्य, नवि ठे जुउं निरख ॥ ६ ॥ बहु चर्चा ते बो
लीउं, पण गुरु बेठां प्राय; नवि बोलवुं ए ज्ञानथी, कुंवर न बोढ्या
कांय ॥ ७ ॥ समजाव्यो शुनजुक्तिथी, ते कहेतां विस्तार; ग्रंथ वधे
तिणें नवि ग्रह्यो, परगट एह प्रकार ॥ ८ ॥ समज्यो श्रावक व्रत ग्रहे,
साथें ब्रह्मदत्त शुद्ध; दीक्षानी अनुमति दीये, बंनदत्त अतिबुद्ध ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलिआमणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुत्रनी साथें रे आव्या नयरमां रे, घोषणा पूर्वक दान ॥ देतो कर
तो जिनवर चैत्यमां रे, अछाई महोत्सव ज्ञान ॥ १ ॥ धन धन एहनें रे
जाणुं एणे खरुं रे ॥ ए आंकणी ॥ शुन तिथि करणें रे मुहूर्त जोगें
जले रे, शिबिकारूढ तिवार ॥ महाहर्षे करी बहु परिवारशुं रे,
देतो दान अवार ॥ २ ॥ धन ॥ मंगलतूर वजावते निकट्यो रे, बि
रुदावली रे बोलाय ॥ लोकप्रशंसा देखि बहु करे रे, पोहोता गुरुनें रे
पाय ॥ ३ ॥ धन ॥ शिबिकाथी उतरी गुरु वंदिया रे, गुरुयें दीक्षा रे
दीध ॥ साधुवेष लीधो हरखें करी रे, आतम कारज कीध ॥ ४ ॥
धन ॥ केईक दिन रही मास कलप अये रे, गुरुसाथें करे विहार ॥
लाख अनेक वरस एम वही गयां रे, पालतां निरतीचार ॥ ५ ॥
॥ धन ॥ इण अवसर जे जालिणी मावडी रे, अयो तस पश्चात्ता
प ॥ काम हीणुं कसुं जिणे माखो नहीं रे, गयो मुक्त देई संताप
॥ ६ ॥ धन ॥ तेण कारण कांय मोकजुं जेटणुं रे, संदेशो मीठी वा
त ॥ जो कांई करतां फिरी आवे इहां रे, पठें करशुं सुखें घात ॥ ७ ॥
॥ धन ॥ जिम चिंत्युं तिम कीधुं तेणीयें रे, मोकव्युं कंबलरत्न ॥
संदेशो बहु शिखवी मोकव्यो रे, सोमदेव करी घणुं जत्त ॥ ८ ॥ ध

न० ॥ देशविख्यात प्रवृत्ति आचार्यनी रे, पूढी पोहतो ते गाम ॥ शि
 खिकुमार साधुनें जणावता रे, देखी वंद्या ते गाम ॥ ए ॥ धन० ॥
 धर्मज्ञान देई पूढे उजखी रे, किहांथी आववुं तुम्ह ॥ तिणे पण व्य
 तिकर सवलो जांखीउ रे, जालिणी मोकल्या अम्ह ॥ १० ॥ धन० ॥
 पश्चात्तापें दाधी देहडी रे, तुम्ह प्रवृत्ति निमित्त ॥ रुषि कहे पश्चात्ताप
 शां एहनो रे, तव ते बोढ्यो सुचित्त ॥ ११ ॥ धन० ॥ तुम्हें दीक्षा लीधी
 ते कारणें रे, सुणि चिंते सुनिराय ॥ स्नेहकायर परमार्थ देखे नहीं
 रे, जुउं एम किम करे माय ॥ १२ ॥ धन० ॥ प्रत्युपकार न करी श
 कीयें किमे रे, मात पितानो रे कोय ॥ एम चिंती कहे सोमदेवनें सु
 णो रे, मुक्त नवनिर्वेद होय ॥ १३ ॥ धन० ॥ तिणें दीक्षा लीधी एम
 जाणजो रे, पण नहीं माय निरवेद ॥ तव ते कहे खरुं पण तुम मा
 तनें रे, उपजे ठे अतिखेद ॥ १४ ॥ धन० ॥ कहेवराव्युं ठे इणिपरें
 सांजलो रे, तुवहदय होय नारि ॥ चपलस्वजावनें अविवेकज घणो
 रे, कामकरु अविचार ॥ १५ ॥ धन० ॥ होय कदाग्रह स्त्रीमां अति
 घणो रे, पत्रे होये पश्चात्ताप ॥ पुरुष तो महागंजीर होये घणा रे,
 कोयनें न करे संताप ॥ १६ ॥ धन० ॥ महारो जाव जाण्या विण गुं
 कसुं रे, आदखो परलोकमग्न ॥ पण एकवार वंदाववा आवजो रे,
 नदींतर कंम होय सग्न ॥ १७ ॥ धन० ॥ कंबलरत्न लेजो मुक्त हित
 करी रे, बोझा शिखी अणगार ॥ उत्तर म्हें तुज सवलो जांखीउ रे,
 अने गुरु आधीन विहार ॥ १८ ॥ धन० ॥ हुं म्हारे आधीन नहीं कदा
 रे, पालवी श्री गुरु आण ॥ मुनिनें कंबल रत्न घटे नहीं रे, वली गुरु
 कहे ते प्रमाण ॥ १९ ॥ धन० ॥ तव कोई मुनियें गुरु देखावीया रे,
 जई कसुं सकल वृत्तांत ॥ कुमर तणा बहुमानथी वोहरीउं रे, कंब
 लरत्न ते ग्यांति ॥ २० ॥ धन० ॥ वत्तेमानयोगें वली आवजो रे, मांमथुं
 नगवा जे सुत्त ॥ ते संपूरण याज्ञो जव सही रे, तव ए आवजो पुत्त
 ॥ २१ ॥ धन० ॥ ग सांजलीनें घणुं राजी थयो रे, त्रीजे खंमैं ए ढाल ॥
 समरादित्यना गनमां चारमी रे, कहि पद्यें सुरसाल ॥ २२ ॥ धन० ॥

॥ सोरठा ॥ सोमदेव गुरुपास, काल केतोश्क रही करी ॥ आव्यो नि
ज आवास, तप संजम मुनिवर तपे ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ३९३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्यदिनें गुरु आवीआ, नयरकोश आसन्न ; कोश्क नरना मुखथकी,
सांजले गुरु चासन्न ॥ १ ॥ परलोकें पहीतो पिता, शिखिकुमरनो
साच ; मुनिसार्थे केई मोकले, शिखिकुमर शुन वाच ॥ २ ॥ पोहोता
कोश नयर पठे, उतरीआ उद्यान ; वात लोकमां विस्तरी, सांजलजो
सावधान ॥ ३ ॥ शिखिकुमर साधुजिके, आव्या अहो अणगर ; राय
नगरजन परिवस्या, वंधा वारो वार ॥ ४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हवे नहीं जाउं मई वेचवा रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ वंदना करी गुरुरायनें रे लो, बेठा सुणवा धर्म ॥ मारा वाढ्हाजी
हो ॥ गुरु पण आढेपिणी कथा रे लो, कहेतां दिये शिवशर्म ॥ १ ॥
मा० ॥ एहवा गुरु रे फिरी नहिं मले रे लो ॥ ए आंकणी ॥ आव
ज्यां सवि लोकनें रे लो, गया सहु निज निज गेह ॥ मा० ॥ हवे
बीजे दिन मुनिवरु रे लो, शिखिकुमर सस्नेह ॥ २ ॥ मा० ॥
एह० ॥ गया निजमात पासं हवे रे लो, विधवारूप ते तास ॥
॥ मा० ॥ ब्रह्मदत्त जेह मरी गया रे लो, अतिडुर्बल दुःखवास
॥ ३ ॥ म्हा० ॥ एह० ॥ तेणें निज मात न उलखी रे लो, तेणें
उलख्यो मुनिराय ॥ मा० ॥ मायास्वजावें रोतीथकी रे लो, अश्रु
पात बहु थाय ॥ ४ ॥ मा० ॥ एह० ॥ आशासना मुनिवर करे रे
लो, देशना देवे ताम ॥ मा० ॥ मातजी खेद न कीजीयें रे लो,
ए संसार दुःखधाम ॥ ५ ॥ मा० ॥ एह० ॥ डव्यें सयणें पराक्रमें रे
लो ॥ बल चतुरंगें जोय ॥ मा० ॥ देव असुर पमुहा मिले रे लो,
मरण न जीते कोय ॥ ६ ॥ मा० ॥ एह० ॥ मरण हरी जगमां जमे
रे लो, आपदाशत नखजाल ॥ मा० ॥ व्याधिज्वर दृढ दांत ठे रे लो,
बहुजननें करे काल ॥ ७ ॥ मा० ॥ एह० ॥ एम जाणीनें आदरे रे

लो, धर्मनो अर्थी जीव ॥ मा० ॥ राज्य ठांमी व्रत नारनें रे लो,
 पण नवि आदरे क्वीव ॥ ७ ॥ मा० ॥ एह० ॥ तिणे माता तुम्ह न
 वि घटे रे लो, मोहरूप विषपान ॥ मा० ॥ धर्मअमृत वर पीजीयें रे
 लो, जगतमां सार निधान ॥ ए ॥ मा० ॥ एह० ॥ मायावंती मान
 नी रे लो, जालिणी कहे कर जोडि ॥ मा० ॥ पुत्र ए धर्म मुजनें
 गमे रे लो, नहिं जेहनी जग जोडि ॥ १० ॥ मा० ॥ एह० ॥ मा
 री अवस्था देखिनें रे लो, व्रत आपो मुज जोग ॥ मा० ॥ तव अ
 णगार आलोचीनें रे लो, काढवा नवनो रोग ॥ ११ ॥ मा० ॥ एह० ॥
 सर्वविरतिनी योग्यता रे लो, नवि दीठी तेहमांहि ॥ मा० ॥ देश
 विरति विस्तारथी रे लो, संजलावे उत्साह ॥ १२ ॥ मा० ॥ एह० ॥
 दीथां अणुव्रत मातनें रे लो, तिणीयें कखां अंगीकार ॥ मा० ॥ तस
 विश्वास पमाडवा रे लो, कूड कपटनंमार ॥ १३ ॥ मा० ॥ एह०
 ॥ यतः ॥ “अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोचनता ॥ अशौचं नि
 देयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥ १ ॥” एहने मारी तो शकुं रे
 लो, जो पामे विश्वास ॥ मा० ॥ एम चिंति अंगीकखां रे लो, दे
 खीयें नक्तिआवास ॥ १४ ॥ मा० ॥ एह० ॥ हवे मुनिवर जब उ
 ठिया रे लो, तव विनवे मुनि माय ॥ मा० ॥ आज नोजन तुम्हें
 इहां करो रे लो, तव बोल्या रुपिराय ॥ १५ ॥ मा० ॥ एह० ॥
 मातजी अमने घटे नहीं रे लो, जांख्यो ठे अणाचार ॥ मा० ॥ मधु
 करवृत्ति ठांमिने रे लो, मुनिवर नवि करे आहार ॥ १६ ॥ मा० ॥
 ॥ एह० ॥ तव जालिणी बोली तिहां रे लो, तुमे जाणो वड एह ॥
 ॥ मा० ॥ मुनिवर निजस्थानक गयो रे लो, एम प्रतिदिन ससनेह
 ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह० ॥ हवे चित्त चिंतवे जालिणी रे लो, मार
 वा एहने उपाय ॥ मा० ॥ सुद्धम नवि जडयो मुजने रे लो, करियें
 हवे कहां कांव ॥ १८ ॥ मा० ॥ एह० ॥ चउदशि दिन हवे आविउ
 रे लो, महुयें कया उपवास ॥ मा० ॥ गोचरी कोइ न निकड्या रे
 लो, कगतां ध्यान अन्यास ॥ १९ ॥ मा० ॥ एह० ॥ जालिणी जा

णी चितवे रे लो, मारुं नहिं जो काव्य ॥ मा० ॥ तो हवे एह जा
 शे सही रे लो, पद्मसंधी अयो काल ॥ १० ॥ मा० ॥ एह० ॥
 बीजो उपाय ईहां नहीं रे लो, काल करुं कंसार ॥ मा० ॥ तालपु
 ट विपजुत लामुठ रे लो, आपुं काव्य सवार ॥ ११ ॥ मा० ॥ एह० ॥
 मुनिवर संजम म्हालता रे लो, न लहे डुर्जन वात ॥ मा० ॥ पर
 मां ते पेसे नहीं रे लो, धर्म रंगाणी धात ॥ १२ ॥ मा० ॥ एह० ॥
 बीजे खंमें तेरमी रे लो, पद्मविजय कहे ढाल ॥ मा० ॥ मुनिगुण गातां
 मोदगुं रे लो, पामे मंगलमाल ॥ १३ ॥ मा० ॥ एह० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ एम करतां जो नवि लीये, आग्रहथी दिजुं आहार; हाथे आपुं ह
 पे जिम, ते मोदक तइयार ॥ १ ॥ मारुं इणि परें मोदगुं, कखुं ते
 सघलुं काम; नोजन जेई नली नांतगुं, जालिणी चाली जाम ॥ २ ॥
 ताम प्रजात अयो तिहां, पोहोती उपवन पास; दीठी मुनियें दृष्टिथी,
 नणे ते एहवी नास ॥ ३ ॥ माता किम आव्यां तुम्हें, एकाकी ए
 वार; अण घटतो कांइ आहारनें, जेई आव्यां ठो व्हार ॥ ४ ॥
 जटिणी बोली जालिणी, सांजलो साची वात; पोतें पुण्य उपाय
 वा, नोजन लावी नांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सांजलो तुमें मात रे, अणाचार ए ख्यात रे ॥ निपजात ए आहार
 अम्हारे कारणे रे ॥ १ ॥ साहमो वली आयो रे, तेणे अम्ह न शो
 हायो रे ॥ संजलायो सघलो विधि मुनिरायनो रे ॥ २ ॥ तव बोली
 तेह रे, देखाडे सनेह रे ॥ वढ एह परें मुज शाता नवि होये रे ॥ ३ ॥
 जो न लीउ आहार रे, म्हारो धिक् अवतार रे ॥ तुम्ह विहार ते
 अम पुरें निष्फल मन लहुं रे ॥ ४ ॥ तेणे अवश्य ए करवुं रे, बीजुं
 वयण न धरवुं रे ॥ मरवुं अन्यथा मुज ताहरा नेहथी रे ॥ ५ ॥ पर्गे
 पडी एम नांखी रे, सहु मुनिवर साखी रे ॥ माखी जिम मध उपर
 तिम उठे नवि किमे रे ॥ ६ ॥ मुनिसरल स्वभाव रे, चिंते एम ताव

रे ॥ जूठ सझाव मातानो केहवो रे ॥ ७ ॥ धर्मश्रद्धा केहवी रे, पुत्र
 स्नेही न एहवी रे ॥ रखे जेहवी ए आय जल विण पोयणी रे ॥ ८ ॥
 वोले मुनिराय रे, सांजलो तुम्हे माय रे ॥ नवि आय ए आहार दो
 पीजो अमयकी रे ॥ ९ ॥ गुरु लाधव दोष रे, चिंतवी गतरौष रे ॥
 गुनपोष कारण कहे मातने एणीपरें रे ॥ १० ॥ तुम आग्रहें एह रे,
 लेखुं गतनेह रे ॥ मुनि साटे रेह आरंजन कीजीयें रे ॥ ११ ॥ जालि
 णी तव जंपे रे, कोण तुम्हनें लुंपे रे ॥ हमणां तो संपें अहार करो
 सहू रे ॥ १२ ॥ वोले मुनि तुम्हें आपो रे, सहु कृषिनें थापो रे ॥ करि
 जापो ने हुं पण लेखुं आहारनें रे ॥ १३ ॥ जालिणी कहे वारु रे, मात वा
 तस्य चारु रे ॥ कखुं काम दिदारु राखी मुज जीवती रे ॥ १४ ॥ मुज हारें
 कीजें रे, पारणुं मानीजें रे, जवनुं फल लीजें मानी मुज कखुं रे ॥ १५ ॥
 शिखिकुमरनें वयणें रे, वेठा सहु मुनि जयणे रे ॥ जायणे नोजन कं
 नार ते पीरख्यो रे ॥ १६ ॥ सहुयें कीधो आहार रे, हवे शिखि अणगा
 र रे ॥ नाजनें कंसार शेष ते पीरख्यो रे ॥ १७ ॥ तालपुट विष घाव्यो
 रे, ते लामुठ घाव्यो रे ॥ नोजनमां चाव्यो ते पण अनुक्रमें रे ॥ १८ ॥
 विष वेगें घाव्यो रे, शिखीकुमरें विचाख्यो रे ॥ केम ए मुज धाख्यो चित्त
 मां एणीपरें रे ॥ १९ ॥ मुनिवर सहु जोया रे, सावधान पलोया रे ॥
 अंगित आकार गोपाया एहवे रे ॥ २० ॥ अइ वेला जाम रे, गइ वाचा
 ताम रे, मनचिंते आम हवे नवि जीवखुं ॥ २१ ॥ पडयो धरणीपीठ रे, मुनि
 यें तव दीठ रे ॥ देखी तव रिठ आकुल व्याकुल थया रे ॥ २२ ॥ जा
 निणी पण एम रे, मुनि चिते केम रे ॥ जननी अई प्रेम सूकी करे एह
 वुं रे ॥ २३ ॥ जाणी ऊर विशेष रे, अणशण उद्देश रे ॥ करे लेश न
 ग्यद तं शिखीमुनि कोयखुं रे ॥ २४ ॥ मन चिते एह रे, अई वात ए केह
 रे ॥ संगाम मनेह थिगु हो एम कहे रे ॥ २५ ॥ चिंत्युं हतुं एम रे,
 मातनें जई नेम रे ॥ धरी प्रेमनें धर्म पमाडखुं जली परें रे ॥ २६ ॥
 वंशजी सूकावुं रे, जली धर्ममां ठावुं रे ॥ एम मन जावुं पण हवे
 वुं कं रे ॥ २७ ॥ अपजग बहु आगे रे, शंका सहु लागे रे ॥

पण एम न विमासे माता ए किम करे रे ॥ ३७ ॥ वात पूर्वली जाणे
 रे, लोक कहे अन्नाएँ रे ॥ धिक् मुज इण टाणे जननी दुःख दिउ रे
 ॥ ३८ ॥ संसार ए रीति रे, नवि करीयें अनीति रे ॥ पण अप्रीतें
 अपजश विस्तरे रे ॥ ३९ ॥ केईक करे दोष रे, पण जशनो पोष रे
 ॥ एहमां नहीं रोप कखां सहु जोगवे रे ॥ ४० ॥ कखां कर्म ते आव्यां
 रे, ए कारण जाव्यां रे ॥ मुज दुःखथी धाव्यां माता किणी परें रे
 ॥ ४१ ॥ अथवा श्यो शोक रे, शिव बीज ते रोक रे ॥ धर्म जे उकनो
 तेह पमाडीउ रे ॥ ४२ ॥ तेणे चिंता न कीजें रे, नवपद समरीजें
 रें ॥ लीजें एम लाहो नरजव केरडो रे ॥ ४३ ॥ शुज जावना युत्त
 रे, नवकार संजुत्त रे ॥ निज आतम गुत्त करी करी कालनें रे
 ॥ ४४ ॥ ब्रह्मलोकमां जायो रे, नवसागर आयो रे ॥ देव पायो
 लढीसमागम विमानमां रे ॥ ४५ ॥ जालिणी पण सुई रे, अनुक
 रमें हुई रे ॥ अंधारी कुई सम शर्करा नरगमां रे ॥ ४६ ॥ त्रण सागर
 आयो रे, ए तो महा दुःख पायो रे ॥ मुनिरायनी हिंसानुं फल एह
 वुं रे ॥ ४७ ॥ त्रीजो नव एम रे, सुरजवशुं प्रेम रे ॥ नरजव सुखें खेमें
 समरादित्यनो रे ॥ ४८ ॥ खंम त्रीजे जांखी रे, ढाल चौदमी दाखी
 रे ॥ इहां साखी ते समरादित्य चरित्र ठे रे ॥ ४९ ॥ माहाशुदि दिन
 त्रीजें रे, संपूरण कीजें रे ॥ गाम लिवडीमांहि वदिजें हेजशुं रे
 ॥ ५० ॥ गुरु खिमाविजयो रे, जिनविजयो सुजयो रे ॥ तस शिष्य
 थयो उत्तमविजय मनोहरु रे ॥ ५१ ॥ सिद्धांत अच्यासी रें, तस
 अंतेवासी रे ॥ वचन विजासी पद्मविजय कहे रे ॥ ५२ ॥ इति श्रीसंविद्ध
 पद्मीय पंमितप्रवरश्रीमदुत्तमविजयगणेशिष्यपंमित पद्मविजय गणिवि
 रचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे शिखिकुमार जालिण्योः संगत्यो
 स्तुतियो नरजवः समाप्तः सर्वगाथा तृतीयखंमे (४६८) उक्त गाथा (८)



॥ अथ ॥

॥ चतुर्थ खंभस्य प्रारंभोयं ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, विचरंता वीतराग ; समवसरणमां शोभता,
 सबलूं जस सोनाग ॥ १ ॥ श्रीगुरुनें वली शारदा, प्रणमुं प्रेमें पाय ;
 समरादित्यना रासमां, चोथो खंभ चित्त लाय ॥ २ ॥ धनकुमारनें धन
 सिरि, दंपती थाये दोय ; सज्जन सुणजो ते सवे, हवे ते केणी परें होय
 ॥ ३ ॥ सुणजे ते सुणजे सखर, समरादित्यनो स्वाद ; जास प्रमादे
 जायजे, लहेजे न ते आढहाद ॥ ४ ॥ वरजो विकथा वेगजुं, सहुनें
 टले संताप ; विकथाथी वारु वडो, उंघ्यो न सुणे आप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ प्रथम गोवालातणे नवें जी ॥ ए देशी ॥

॥ जुंघु दीपना नरतमां जी, सुशर्म नयर उदार ॥ नित्य उत्सव आ
 पंदमां जी, देवलोक अनुहार ॥ १ ॥ नविकजन सुणियें चरित्र रसाल ॥
 पापनियाणा ढाल ॥ न० ॥ जेहथी होय जंजाल ॥ नवि० ॥ सु० ॥
 ए आंकणी ॥ नित्य नाटक ते नयरमां जी, सुणिजन गुण गवराय ॥
 रूप वेश रति आगली जी, नारीतणो समुदाय ॥ २ ॥ न० ॥ परउ
 पगार परायणो जी, महाजन निवसे अपार ॥ अरिगजजुं केसरी
 समो जी, सुधनु नूनरतार ॥ ३ ॥ न० ॥ नगरजेठ ते नयरमां जी,
 राज्यमान गुणवंत ॥ दीन अनाथ जन बहलू जी, वेसमण नाम कहंत
 ॥ ४ ॥ न० ॥ पण वैश्रमण विजवें करी जी, हलको हुड निदान ॥
 त्रण वर्ग नित्य साचवे जी, साठवाह सुजाण ॥ ५ ॥ न० ॥ कुलरूप
 विजवें नारिखी जी, सिरिया नामें नारि ॥ पंचविषय सुख नोगवे
 जी, स्नेहें स्त्री नरतार ॥ ६ ॥ न० ॥ लखमीनुं लेखुं नहीं जी, पण
 नंतान न कोय ॥ आय उपाय घणा करे जी, पण नवि कारय होय
 ॥ ७ ॥ न० ॥ इण अक्तर ते नयरमां जी, जह नामें धनदेव ॥ सा

निध्व्य करतो लोकनी जी, इंगे पण कीधी सेव ॥ ८ ॥ ज० ॥
 पूजा करी एम नांखीउं जी, जो मुऊ तुऊ अनुजाव ॥ पुत्र होशे तो
 नयरशुं जी, पूजा करुं शुनजाव ॥ ९ ॥ ज० ॥ नाम तुमारुं थापशुं
 जी, सुतनुं हुं निरधार ॥ मध्यमवयें ते वर्ततां जी, दंपती इण समे
 सार ॥ १० ॥ ज० ॥ ब्रह्मलोकथी देवता जी, चवि लीधो अवतार ॥
 जीव शिखिकुमारनो जी, सिरिया कुखें मजार ॥ ११ ॥ ज० ॥ स्वपनें
 गलवर पेखती जी, उज्जल उंची रे काय ॥ मद ऊरतो मोहें घणुं जी,
 मधुकरनें समुदाय ॥ १२ ॥ ज० ॥ शुंढामंद चपल घणो जी, रक्त
 तालु चउदंत ॥ कनक शांकलें शोहतुं जी, घंटाजुगल महंत ॥ १३ ॥
 ॥ ज० ॥ लोचन जेहनां घूमतां जी, रक्तचमरें शोहे वयण ॥ कुंन
 स्यलें अंकुश रही जी, प्रातसमे नें रयण ॥ १४ ॥ ज० ॥ वदनें उ
 दरमां पेसतो जी, देखी जागी जाम ॥ संजलावे जरतारनें जी,
 सुणी हरख्यो ते ताम ॥ १५ ॥ ज० ॥ सयल सयण गणनायको जी,
 पुत्र ते होशे रतन ॥ हरखें सुणि आदर घणो जी, करती गर्न जतन
 ॥ १६ ॥ ज० ॥ शुनमुहूर्त अनुक्रमें हवे जी, जन्म्यो तेह कुमार ॥
 दासीयें दीध वधामणी जी, सार्बवाहनें सार ॥ १७ ॥ ज० ॥
 संतोषी दासी प्रत्यें जी, देवरावे महा दाण ॥ जन्ममहोत्सव ते कुंमा
 रनो जी, करतो शेठ सुजाण ॥ १८ ॥ ज० ॥ एक मास एम वही गयो
 जी, हवे सहु नयर संघात ॥ बहु आंमंवरशुं गयो जी, बालक जेई
 निज हाथ ॥ १९ ॥ ज० ॥ धनदेव जहनें देहरे जी, उत्सव करीय
 अपार ॥ पाय नमाडी थापीउं जी, नाम ते धनकुमार ॥ २० ॥
 ज० ॥ कुमरजाव अनुक्रमें लह्यो जी, चोथे खंमैं रे एम ॥ प्रथम ढाल
 पद्धें कही जी, सांजलजो धरी प्रेम ॥ २१ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारकीमांथी नीकली, जालिणीनो हवे जीव ; संसरतां संसारमां,
 अनुजवे दुःख अतीव ॥ १ ॥ अनंतरनवे अज्ञानथी, आदरी कष्ट अ
 त्यंत ; वसे ते नयरें वाणीउं, पूर्णजड पुण्यवंत ॥ २ ॥ गोमती नामें

गेहिनी, तस कुखें अवतार ; पुत्रीपणे ते प्रगटिउं, जनमी तेह जिवा
 र ॥ ३ ॥ धणसिरि नाम ते दीधळूं, यौवन पासो जाम ; दीठी धन
 कुमरें तदा, रतिरूपें अनिराम ॥ ४ ॥ पूर्वमैत्रीना गुणपणे, अनिला
 पायें एम ; दृष्टिविकारें देखतो, पूरण आणी प्रेम ॥ ५ ॥ पूरवना मत्स
 रपणे, धणसिरि जुए ते धन ; सोमदेव पुरोहितचुंते, तेह कुमरनुं तन्न
 ॥ ६ ॥ नाव लख्यो तिणे जली परें, वैशमणें जाणी वत्त ; पूर्णनडने
 प्रार्थिउं, धणसिरि धण निमित्त ॥ ७ ॥ जाण्युं परस्पर बिहु जणें, वरल्यो
 तिहां विवाह ; हरल्यो धन निज हैयडले, वाढ्यो धणसिरि बाह ॥ ८ ॥
 ॥ ढाल बीजी ॥

॥ सुनिवर आर्य सुहस्ती रे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक दास रे ॥ घरदासी जण्यो ॥ नंदनामैं शोहामणो
 ए ॥ १ ॥ अग्निशर्मा जव तेह रे ॥ मित्र तापस हतो ॥ गुरुवैयावच्च
 कारणो ए ॥ २ ॥ धणसिरिचुं लगवाडी रे ॥ थई ते नंदनें ॥ स्त्रीसंगें
 मुख अनुजवे ए ॥ ३ ॥ जोगविटंबणा प्राय रे ॥ जोगवतां थकां ॥ शरद
 ममय एक दिन हवे ए ॥ ४ ॥ रसवानें उद्यान रे ॥ धन्नकुमर गया ॥
 साथें बहु परिवारचुं ए ॥ ५ ॥ समृद्धदत्त इण नाम रे ॥ सार्धवाह
 नुन ॥ दीठें दान देतां थकां ए ॥ ६ ॥ निजकर अर्जित रुद्रि रे ॥ जे
 परदेशयी ॥ लावीनें सफली करे ए ॥ ७ ॥ चिंते धण धन्न एह रे ॥
 पम्पकारीउं ॥ एणी परें लखमी वावरे ए ॥ ८ ॥ आमण डुमणो
 एम रे ॥ नंददेखी कहे ॥ शे दूजाणा स्वामीजी ए ॥ ९ ॥ नांख्यो निज
 अनिप्राय रे ॥ नंद कहे तदा ॥ शी ऊणीम ठे तुम्ह वरे ए ॥ १० ॥
 तुम्ह वरें इव्य अनंत रे ॥ दान आपो तूम्हें ॥ एहथकी सुविशेषयी
 ए ॥ ११ ॥ धन कहे ए शी बात रे ॥ पूर्व पुरुष रल्या ॥ ते देतां किम
 शोनीयें ए ॥ १२ ॥ करी कमाई हाथ रे ॥ जे दिये दाननें ॥ तस
 कीर्ति वाचें यणी ए ॥ १३ ॥ तिणे विनवो तूम्हें ताय रे ॥ परदेशें
 जया ॥ कलें कमाई हाथचुं ए ॥ १४ ॥ काल उचित करे जेह रे ॥
 नीयचुं तेदचुं ॥ नफानूं नांख्युं शास्त्रमां ए ॥ १५ ॥ त्रण वर्गनुं मूल

रे ॥ अर्थ उपार्जयुं ॥ तातनें कहो किरपा करो ए ॥ १६ ॥ नंदे विनव्यो
 शेर रे ॥ शेर कहे तूम्हो ॥ जांखो वत्सनें एणिपरें ए ॥ १७ ॥ शेर सहु
 थी अर्थ रे ॥ बहु ताहरे घरे ॥ मनश्चित्त व्यो वावरो ए ॥ १८ ॥
 नंद कहे सुणो तात रे ॥ एह कयुं खरुं ॥ पण एहनी एम रुचि
 नहीं ए ॥ १९ ॥ शेर कहे जिम सुकर रे ॥ उपजे तिम करो ॥ नंदे
 कयुं सवि धनप्रत्ये ए ॥ २० ॥ आणा पामी ताय रे ॥ हरख्यो धन हवे ॥
 करे सामग्री तेहनी ए ॥ २१ ॥ करियाणां बहु लीध रे ॥ उद्घोषणा
 हवे ॥ नगरमांहि करावतो ए ॥ २२ ॥ सार्धवाहसुत धन्य रे ॥ तांम
 लिप्ती जशे ॥ जावुं होये तो साथ ठे ए ॥ २३ ॥ जेहनें जोईये तास
 रे ॥ देशे रीऊयुं ॥ वस्त्र अन्न औषध सहु ए ॥ २४ ॥ सांजली सोंम्यो
 लोक रे ॥ तांमलिप्ती जवा ॥ धनसिरि चित्त हरखी घणुं ए ॥ २५ ॥
 जाशे धन परदेश रे ॥ तब रूडुं यशे ॥ स्वेहाये अमें विचरयुं ए ॥
 ॥ २६ ॥ गमनदिवस आसन्न रे ॥ आव्यो तव सूर्युं ॥ नंदपण साथे
 जायशे ए ॥ २७ ॥ सुणो स्वामी परदेश रे ॥ तुम्हें तो जायशे ॥ माया
 करी धनवती कहे ए ॥ २८ ॥ शी गति याशे मुऊ रे ॥ हुं हवे शुं करुं
 ॥ तव धनकुमर ते बोलिया ए ॥ २९ ॥ सासू ससरा सेव रे ॥ तुम्हें कर
 जो इहां ॥ हुं पण वेहलो आवयुं ए ॥ ३० ॥ माया जल जरी नयण
 रे ॥ बोली धनसिरि ॥ गुरुजन मुऊ हृदये वसे ए ॥ ३१ ॥ पण मुऊ
 मूकी जाउ रे ॥ जो तुम्हें स्वामी जी ॥ तो हुं प्राण अवश्य तजुं ए
 ॥ ३२ ॥ नहिं मुऊ जीवन काम रे ॥ तुम्ह विजोगथी ॥ एम कही
 उच्चस्वरें रूए ए ॥ ३३ ॥ आवी जननी ताम रे ॥ धनकुमारनी ॥ आ
 दरथी उजा थया ए ॥ ३४ ॥ धनसिरि गई निज ताम रे ॥ शिखामण
 ढीये ॥ जाव बहूनो जाणीउ ए ॥ ३५ ॥ देशांतर होय दीर्घ रे ॥ सं
 गम दोहिला ॥ सुजन विजोग ते नीपजे ए ॥ ३६ ॥ क्लेश घणो होये
 पुत्त रे ॥ अर्थ उपार्जतां ॥ मूल विषादयुं एह ठे ए ॥ ३७ ॥ सकल
 गुणें संपूर्ण रे ॥ तुं ठे यद्यपि ॥ तो पण तुजनें जांखियें ए ॥ ३८ ॥
 कृमा ते करजो नित्य रे ॥ खबर कहावजी ॥ वाट जोवुं ताहरी ए

॥ ३९ ॥ मात प्रमाण तुज आणि रे ॥ धनकुमर कहे ॥ आशीप दे
जो रुअडी ए ॥ ४० ॥ धनसिरि पीयर पास रे ॥ मागी आगना ॥ धन सा
यें मोकलाववा ए ॥ ४१ ॥ धनसिरि हरखी ताम रे ॥ सामग्री करी ॥
साथ रिद्धें जरपूरीउं ए ॥ ४२ ॥ बीजी चोथे खंमै रे ॥ ढाल पद्यें कही
॥ उत्तम विजय कृपायकी ए ॥ ४३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साथ सोंमयो हवे सामटो, पहोतो नित्य प्रयाण ; तामलिनी नगरें
तुरत, मास दोय परिमाण ॥ १ ॥ नरपति मलीउं नेहखुं, रायें कखो
सत्कार ; बेची सरवे वस्तु ते, पाम्यो न इहित पार ॥ २ ॥ चिंतें तव ते
चित्तमां, लह्यो न इहित जाह ; जाउं घर किम जाणीनैं, अणव चहुं
अयाह ॥ ३ ॥ लखमीयी सहु लोकमां, आदर लहे अपार ; ते विण
जीवन तुठ ठे, चित्त एम करे विचार ॥ ४ ॥ नंदनैं धनसिरि नारिखुं, ई
एपरें करी आलाप ; नाहवा वेला जाणीनैं, उठे जब हवे आप ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्य प्रगट थयुं ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक आवीउं रे ॥ सूरिजन ॥ नयकायर जस काय ॥
पुण्य प्रगट थयुं ॥ दोय हाथनुं पहेरिखुं रे ॥ सू० ॥ जीरण चीवर
पाय ॥ १ ॥ पु० ॥ हाथ घरो थया उजला रे ॥ सू० ॥ मस्तकें कुमला
णी मान ॥ पु० ॥ नखथी शरीर विलुरीउं रे ॥ सू० ॥ अधर तंबोलें
लान ॥ २ ॥ पु० ॥ जुवटिये वणो प्रेरीउं रे ॥ सू० ॥ आव्यो जुवटि
उं एक ॥ पु० ॥ शरणे आव्यो ताहरे रे ॥ सू० ॥ राख्यतुं धरीय वि
वेक ॥ ३ ॥ पु० ॥ एह जुआरी दुःख दिये रे ॥ सू० ॥ धन कहे सां
नल वान ॥ पु० ॥ तुज उपडव जे कारणे रे ॥ सू० ॥ कहे ताहरो अ
वदान ॥ ४ ॥ पु० ॥ ते कहे नवि बोली शकुं रे ॥ सू० ॥ महारुं नीच
चरित ॥ पु० ॥ धन कहे खेद न कीजीयें रे ॥ सू० ॥ नवि होये सम
दजा नित्य ॥ ५ ॥ पु० ॥ नड कहो तुम्ह वातडी रे ॥ सू० ॥ तव जल
नगीयां नयण ॥ पु० ॥ गद गद वचणें बोलीउं रे ॥ सू० ॥ सांनल रे

तुं सयण ॥ ६ ॥ पु० ॥ वाणीउ निजकुल फंसणो रे ॥ सू० ॥ सेवुं
 लोक विरुद्ध ॥ पु० ॥ पंथितजन बहु निंदित रे ॥ सू० ॥ नित्य रहूं
 चित्तथी कुद्ध ॥ ७ ॥ पु० ॥ महेसरदत्त माहकूं रे ॥ सू० ॥ नाम कुसुम
 पुर वास ॥ पु० ॥ दोषनिधान जे जूवटुं रे ॥ सू० ॥ वर्जित पुण्यविलास
 ॥ ८ ॥ पु० ॥ तेणो ए अवस्था पामीउ रे ॥ सू० ॥ धन चिंते अहो एह
 ॥ पु० ॥ आ वेला पण जाणतो रे ॥ सू० ॥ निज अपराध अठेह
 ॥ ९ ॥ पु० ॥ महोटो पुरुष कोई एह ठे रे ॥ सू० ॥ चिंतवी बोले
 ताम ॥ पु० ॥ कहो शुं करीयें तुम्हनें रे ॥ सू० ॥ तव नवि बोले जाम
 ॥ १० ॥ पु० ॥ चिंतवे धन काई हारीउ रे ॥ सू० ॥ मागी शके नहीं
 तेण ॥ पु० ॥ एम जाणी कहे नंदनें रे ॥ सू० ॥ पूढो जई एह कोण
 ॥ ११ ॥ पु० ॥ बाहिर जुवटिआ ए फिरे रे ॥ सू० ॥ श्यो एहनो अ
 पराध ॥ पु० ॥ नंदें निकली पूढीउं रे ॥ सू० ॥ श्यो अपराध अगाध
 ॥ १२ ॥ पु० ॥ शोल सोनैया हारिउ रे ॥ सू० ॥ वचनें अमशुं एह
 ॥ पु० ॥ रोक्यो पण ठिड् पामिनें रे ॥ सू० ॥ आवी पेढो इहां जेह
 ॥ १३ ॥ पु० ॥ नंदें कहुं धनकुमरनें रे ॥ सू० ॥ तव बोल्या ते कुमा
 र ॥ पु० ॥ शोल सुवन्न आपो एहनें रे ॥ सू० ॥ तव आप्या तेणि
 वार ॥ १४ ॥ पु० ॥ गया जुआरी ते सहु रे ॥ सू० ॥ कुंअर नांखे
 तास ॥ पु० ॥ सूको विपाद उठो तुम्हें रे ॥ सू० ॥ उद्यम करो सुवि
 लास ॥ १५ ॥ पु० ॥ खेद करे नारी बहु रे ॥ सू० ॥ किम करे पुरु
 ष प्रधान ॥ पु० ॥ उठो स्नान करो तुम्हें रे ॥ सू० ॥ तव लाज्यो अस
 मान ॥ १६ ॥ पु० ॥ नाह्यो धन साथें हवे रे ॥ सू० ॥ दौमजुगल
 दिशुं तास ॥ पु० ॥ नोजन करी हवे उठीआ रे ॥ सू० ॥ नांखे वचन
 विलास ॥ १७ ॥ पु० ॥ एक वणिक कुल उपन्यो रे ॥ सू० ॥ वलि सज्जन
 शिरदार ॥ पु० ॥ इव्य साधारण जाणियें रे ॥ सू० ॥ एह अथिरनि
 रधार ॥ १८ ॥ पु० ॥ एहमांथी काई लीजीयें रे ॥ सू० ॥ करो व्यव
 साय उपाय ॥ पु० ॥ बुधनिंदित केम कीजीयें रे ॥ सू० ॥ जेहथी
 आय अपाय ॥ १९ ॥ पु० ॥ इह नव परनव दुःख दिये रे ॥ सू० ॥

तुम्ह पण न गमे एह ॥ पु० ॥ ते जुहारीपणुं ठांमीयें रे ॥ सू० ॥
 सुण। चिंते हवे तेह ॥ १० ॥ पु० ॥ हुं अधन्य ए पिता समो रे ॥ सू० ॥
 करतो पर उपकार ॥ पु० ॥ बोव्यो करी प्रणामनें रे ॥ सू० ॥ धन्य
 महारो अवतार ॥ ११ ॥ पु० ॥ तुम दरिण दीतुं जिणें रे ॥ सू० ॥
 मानी तुमची शीख ॥ पु० ॥ पामी सुरतरु परगडो रे ॥ सू० ॥ कोण
 सागे नर चीख ॥ १२ ॥ पु० ॥ करुं हवे सुक कुल सारिखुं रे ॥ सू० ॥
 मृक्यो अजवें आज ॥ पु० ॥ तुम प्रनावें सफल करुं रे ॥ सू० ॥
 तुम्ह उपदेश महाराज ॥ १३ ॥ पु० ॥ तुम्हनें मलशुं अवसरें रे
 ॥ सू० ॥ सज्जन एम जणाय ॥ पु० ॥ ढाल त्रीजी चोथ्या खंमनी रे
 ॥ सू० ॥ पद्मविजय गवराय ॥ १४ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महेशरत्न चिंते मनें, लखमी विण नहीं जाज ; कीर्ति पण को न
 वि करे, सज्जन नहीं समाज ॥ १ ॥ पर उपकार न संपजे, तरीयें सा
 यर तण ; अथवा जमजोरो अति, खेरू करे खणेण ॥ २ ॥ धर्म करुं
 तिणें धसमशी, उन्नयलोक सुख थाय ; सार्धवाहसुत हरखशे, सांन
 जी ए सुखदाय ॥ ३ ॥ एम चिंतीनें आदरे, कापालिक व्रतकार ;
 जोगीश्वर नामें जिके, तिण पासें व्रतचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नारायणानी देशी ॥

॥ नंदनें धनसिरी आगजें रे, नांखे निजअनि प्राय रे ॥ साजनीआ ॥
 तव ते कहे सुणो साहेवा रे, नवि करीयें अंतराय रे ॥ सा० ॥ १ ॥ कर्म क
 र्यां तूटे नहीं रे ॥ ए आंकणी ॥ तुम मन इवित कीजीयें रे, अम्हें तुम्ह
 आणाकार ने ॥ सा० ॥ तव सवि नांम ग्रह्यां हवे रे, परतिरगामी सार
 ने ॥ सा० ॥ २ ॥ क० ॥ जिहाज गवेपीनें नखुं रे, तव नंदनें कहे
 नागी रे ॥ सा० ॥ मारीयें आपण एहनें रे, जईयें बीजे वार रे ॥ सा०
 ॥ ३ ॥ क० ॥ पापिणीनी तुणी वातडी रे, बोव्यो सज्जन नंद रे
 ॥ सा० ॥ अहो एदवुं मत नांखजे रे, एहतो सुरतरुकंद रे ॥ सा०
 ॥ ४ ॥ क० ॥ एह ते न्यामी आपणा रे, तुम्ह उपर बहुराग रे

॥ सा० ॥ मायावी नहीं ए कदा रे, ए सहोदो वडनाग रे ॥ सा० ॥
 ॥ ५ ॥ क० ॥ स्वपनें पण मत चिंतवो रे, एहनी विरूई वात रे
 ॥ सा० ॥ तव चिंते ते सुखणी रे, एह तो न करे घात रे ॥ सा० ॥
 ॥ ६ ॥ क० ॥ कोय उपाय करी मारगुं रे, एहनें हुं निजहाथ रे
 रे ॥ सा० ॥ नागदत्ता परिव्राजिका रे, सेल कस्यो ते साथ रे ॥
 ॥ सा० ॥ ७ ॥ क० ॥ दुःख पामी कालांतरें रे, मरण लहे ए उपा
 य रे ॥ सा० ॥ कामणयोग शिखी तिहां रे, हीणा अध्यवसाय रे
 ॥ सा० ॥ ८ ॥ क० ॥ जिहाज तैयार कसुं हवे रे, नाम नखां ते अपार
 रे ॥ सा० ॥ रूडे लभें करी नीकव्यां रे, आव्यां जलधि किनार रे
 ॥ सा० ॥ ९ ॥ क० ॥ सायरनी पूजा करी रे, दीधां दान अनेक रे
 ॥ सा० ॥ यान पात्र पूजा करी रे, बेठा धरीय विवेक रे ॥ सा० ॥
 ॥ १० ॥ क० ॥ नांगर हवे उपडावीयां रे, पूखो सठ पवणेण रे ॥
 ॥ सा० ॥ चाव्युं वहाण वेगगुं रे, वरणव्युं जाये केण रे ॥ सा० ॥ ११ ॥
 क० ॥ नक्र चक्र कळप घणा रे, मगरनें पाठीन पीठ रे ॥ सा० ॥ जल
 चर तिहां बहु जातिनां रे, सहुर्यें नयणें दीठ रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ क० ॥
 कामण कीधुं एण समे रे, सापिण पापिणी नारी रे ॥ सा० ॥ थोडा
 दिनमांहि ग्रह्यो रे, रोगतणे ते विकार रे ॥ सा० ॥ १३ ॥ क० ॥
 कांय उपाय कस्यो नहीं रे, वाध्यो अतिघण व्याधि रे ॥ सा० ॥
 हाथ शुका जिम दोरडी रे, जलोदर वधीउं अगाध रे ॥ सा० ॥ १४ ॥
 ॥ क० ॥ वदन सोजी अथुं तूंबडुं रे, जंघाउं गली जाय रे ॥ सा० ॥
 कर पद फाट्या तेहना रे, जोजन रुचि नवि याय रे ॥ सा० ॥ १५ ॥
 क० ॥ तरपानी पीडा घणी रे, पेटमां न ठके नीर रे ॥ सा० ॥ खेद
 करी धन चिंतवे रे, एह अकालें पीर रे ॥ सा० ॥ १६ ॥ क० ॥
 अथवा पाप विलासनो रे, काल तणो नहीं नीम रे ॥ सा० ॥
 गुं करीयें इण अवसरें रे, कोई मिले न हकीम रे ॥ सा० ॥ १७ ॥
 क० ॥ परिजन दूहवाये घणो रे, धनसिरि करे उद्वेग रे ॥ सा० ॥
 मुख कुमलायुं नंदनुं रे, करूं जंपा अतिवेग रे ॥ सा० ॥ १८ ॥ क० ॥

एम करतां सहु दुःख धरे रे, वली कायरनुं ए काम रे ॥ सा० ॥
 खेद न करवो आपदा रे, तिणें वली चिंते आम रे ॥ सा० ॥ १९ ॥
 ॥ क० ॥ एह उचित ठे माहरे रे, आव्युं ए परकूल रे ॥ सा० ॥
 इव्य धणी करूं नंदनें रे, ए हवणां अनुकूल रे ॥ सा० ॥ २० ॥
 ॥ क० ॥ विधिविलास विचित्र ठे रे, निपजगे किशुं कालि रे ॥ सा० ॥
 नंद ते मुज जाई समो रे, सोंपुं सहुये संजालि रे ॥ सा० ॥ २१ ॥
 ॥ क० ॥ धनसिरि सोंपुं एहनें रे, पोचाडगे मुज गेह रे ॥ सा० ॥
 चिंतवी नंद बोलावीयो रे, धणसिरि पण ससनेह रे ॥ सा० ॥
 ॥ २२ ॥ क० ॥ नंद सुणो मुज वातडी रे, माहारी अवस्था एह रे
 ॥ सा० ॥ इवित कुल पण दूकडुं रे, जीवित विजली रेह रे ॥ सा० ॥
 ॥ २३ ॥ क० ॥ अम्ह सरिखा जे रोगीआ रे, तेहनें तो सुविशेष रे
 ॥ सा० ॥ इव्यनायक तुम्हें आजथी रे, योग्य नहीं कोई शेष रे
 ॥ सा० ॥ २४ ॥ क० ॥ एह सायर पार उतरी रे, करजो रोग उ
 पाय रे ॥ सा० ॥ जो जागे तो रुअडुं रे, जो कदी रोग न जाय रे
 ॥ सा० ॥ २५ ॥ क० ॥ तो मुज जाईना स्नेहथी रे, पहोचावजो
 महु ताम रे ॥ सा० ॥ धनसिरि ए पतिवड्ढला रे, तातने सोंपजो
 ताम रे ॥ सा० ॥ २६ ॥ क० ॥ सुंदरी सुणो ए नंदनें रे, टाली पाप वि
 कार रे ॥ सा० ॥ मुज परें जाणजे एहनुं रे, वयण न लोपजे सार
 रे ॥ सा० ॥ २७ ॥ क० ॥ तेह सुणी बहु दुःख धरे रे, रोयो मूकी
 पोक रे ॥ सा० ॥ धणसिरि पण कपटें रुवें रे, धन कहे न
 करो जोक रे ॥ सा० ॥ २८ ॥ क० ॥ नहीं अवसर ए विपादनो रे,
 अवनम उचित विचार रे ॥ सा० ॥ क्लीवपणुं केम आदरो रे, आ
 दरो पुम्पाकार रे ॥ सा० ॥ २९ ॥ क० ॥ राजधानी रमणी रीदे रे,
 कर्ता जे नित्य शोक रे ॥ सा० ॥ तेह तजो तमें सुंदरी रे, हवे वि
 लवो मत फोक रे ॥ सा० ॥ ३० ॥ क० ॥ पुरुष नारी तेहज खरी
 रे, जाणो काज अकाल रे ॥ सा० ॥ उद्यमें आपद लंबीयें रे,
 पानीयें रुठि विनाल रे ॥ सा० ॥ ३१ ॥ क० ॥ धनशिक्षा अंगीकरी

रे, मान्युं नंदें एह रे ॥ सा० ॥ महा कडाहद्वीपें गया रे, कुशजें खे
में तेह रे ॥ सा० ॥ ३१ ॥ क० ॥ चौथी चौथा खंडमां रे, जांखी
उत्तम ढाल रे ॥ सा० ॥ समरादित्यना रासमां रे, पद्म कहे सुरसाल
रे ॥ सा० ॥ ३२ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नंद लेइ हवे जेटणुं, आव्यो नरपतिपाय; रायें बहु आदर दिउ,
आप्यो रहेवा ठाय ॥ १ ॥ जांम उताखां जली परें, वैद्य बोलाव्या
झार; औषध जैषज आदरे, कीधा कोडि प्रकार ॥ २ ॥ व्याधि गयो
नहिं वेगजो, तव चिंतें तिहां नंद; निजदेशें पोहोच्या विना, किम जाये
हुःखकंद ॥ ३ ॥ कालहेप करवो नहीं, एम चिंतवतो एह; जांम वेची
प्रतिजांम ले, यानपात्र सजे जेह ॥ ४ ॥ नूपतिनें मलिउ जलो, ते
पण करे सत्कार; निजदेशें जावा जणी, तुरत ते अथा तैयार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर उमै दोय पंखियां रे ॥ उडे० ॥ अथवा ॥

देखी कामिनी दोय के कामें व्यापिउरे ॥ के कामें० ॥ ए देशी ॥

॥ बेठा वाहाण मांहि के जलकौतुक जुए रे के ॥ जल० ॥ धननें जीव
तो देखी के धनसिरि मनरूवे रे के ॥ धन० ॥ मरण लखुं नहीं एह के
चित्त एम चिंतवे रे के ॥ चित्त० ॥ पहोता जब निजदेश के तब पठें किम
हुवे रे के ॥ तब० ॥ १ ॥ जीवतो शाल समान के ए मुऊ नित्य दहे रे
के ॥ एमु० ॥ नाखुं सायरमांहि के तो मन सुख लहे रे के ॥ तोम० ॥
ऊठे शौच निमित्त के रयणीयें एजदा रे के ॥ रय० ॥ अंधकारमां एह
के नाखुं हुं तदारे के ॥ नाखुं० ॥ २ ॥ वाहाण चपल स्वजाव के किहांये
वही जशे रे के ॥ किहां० ॥ ए पण माहरे नंद के स्थिरजावें अशे रे
के ॥ थिर० ॥ चिंतवी एह उपाय के तिम निपजावीउं रे के ॥ तिम० ॥
रात्री प्रहर रही शेष के तव एह जावीउं रे के ॥ तव० ॥ ३ ॥ काल थोडो
रही ताम के बुंवारव कखो रे के ॥ बुंवा० ॥ नंद उठी कहे एम के स्वामि
नी अरहखो रे के ॥ स्वामि० ॥ त्राडती हृदय सहुःख के अतिशय रोवती

रे के ॥ अति० ॥ हा आर्यपुत्र जणंती के धरणीयें सोवती रे के ॥ धर० ॥
 ॥ ४ ॥ नंद शंका लही जाम के धनशय्या जूवे रे के ॥ धन० ॥ तव
 नव दीठा तेह के पूठतो बहु रुवे रे के ॥ पूठ० ॥ कहे धणसिरि परमा
 दं के पडीया सायरें रे के ॥ पडि० ॥ पडवा मामयुं नंदें के हृदयथी
 कायरें रे के ॥ हृद० ॥ ५ ॥ परिजन सर्व मली धरी राख्यो बहु परें
 रे के ॥ राख्यो० ॥ बाहाण रखाव्युं तिण समे खोल ते बहु करे रे के ॥
 खोल० ॥ प्रात समे उपडावीयां नांगर डुःख धरी रे के ॥ नांग० ॥ स
 ज्ञान नंदसमान के कोईनुं नहीं चरी रे के ॥ कोई० ॥ ६ ॥ दुर्जन ध्व
 तिरि जोडि के जगमां नवि जडे रे के ॥ जग० ॥ चित्तथी हर्ष उमा
 ह के बाहिर एम रडे रे के ॥ बाहि० ॥ हवे धनकुमर ते जेह
 के पडीया जेटले रे के ॥ पडी० ॥ फलक लहे एक तेह के पुण्यथी
 तेडले रे के ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ सात रात्रिरहि त्याहि के कांठे नीकल्यो रे
 के ॥ कांठे० ॥ लवणनीर सेवनाथी के पेटमां खलजल्यो रे के ॥ पेट० ॥
 कामण नीकल्यां ताम के पुण्य उदय थयो रे के ॥ पुण्य० ॥ जन्म थयो
 फरी मुज के एणि परें मन जयो रे के ॥ एणी० ॥ ८ ॥ तिमिरपा
 दपनं पास के वेतो चिंतवे रे के ॥ वेतो० ॥ अहो एह माया बहुल
 के गुं कयुं कैतवें रे ॥ गुं क० ॥ अहो निर्दयपणुं नारि के वयर के
 देवुं बहे रे के ॥ वय० ॥ अहो मुख मीठी एह के कुल खपण लहे
 रे के ॥ कुल० ॥ ९ ॥ यतः ॥ “अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोच
 ता ॥ अथौचित्तवं निर्दयत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥ १ ॥” जल
 मज्जे मन्निपयं, आगासे पत्किआण पयपंती ॥ महिलाहिययाण मग्गो,
 निन्नि विविरला पयासंती ॥ २ ॥ यतः सवैउ ॥ कवहुं विनता मृडु वा
 च वदे. कवहुं तिनगूं कटु वाच कहे ॥ कवहुं मनरंग विरंग धरे, कवहुं
 न विगगिन दूई रहे ॥ कवहुं एक वोल सहे न जलो, कवहुं कटु
 बोझ अनंक महे ॥ मुनि धन कहे जगदीस विना, त्रियकी करनी
 कसो कोन लहे ॥ ३ ॥ कवहुंज खुसी विखुसी मनमें, बहु जांति क
 पट को नरनी ॥ कवहुंज दयाल उदारचित्तं, कवहुंजहु चित्त होवे

जरनी ॥ कबहुं सब जान अजान होवे, कबहुं दृगनीर जरे जरनी ॥
 मुनि धन कहे जगदीस विना, कहो कोन लहे त्रियकी करनी ॥ १ ॥ ”
 कीधो ए व्यवसाय के कहो कारण किशे रे ॥ कहो ॥ अथवा विवेक
 रहित के कारण शुं हशे रे के ॥ कार ॥ दोष निवासनिमित्त के ए साहस
 तणुं रे के ॥ ए सा ॥ कपटनी उत्पत्ति एह के क्षेत्र मृषा नणुं रे के
 ॥ क्षेत्र ॥ १० ॥ उन्मारगनुं द्वार के आपद गेहठे रे के ॥ आप ॥
 नरक सोपान ने स्वर्गनी अर्गला एहठे रे के ॥ अर्ग ॥ अहवा एह
 विचार के करण समय नहीं रे के ॥ कर ॥ हमणां उद्यम साह्य के
 करे माहरुं सही रे के ॥ करे ॥ ११ ॥ वस्तु अतीतनी चिंत के,
 मुजनें नवि घटे रे के ॥ मुज ॥ ऊठयो एम अवधारि के चाव्यो सा
 यरतटें रे के ॥ चाव्यो ॥ इण अवसर सावबि के नयरीनो धणी रे
 के ॥ नय ॥ सिंहल दीपें जाय के दीकरी तेह तणी रे के ॥ दीक ॥
 ॥ १२ ॥ वाहाण जांगुं तास के दासी तेहनी रे के ॥ दासी ॥ मरण
 लही ते चेटी के कांति घण देहनी रे के ॥ कांति ॥ कांते काढी कल्लो
 जे के दीठी तिण समे रे के ॥ दीठी ॥ रयणावली तस ठेहडे के दीठां
 मन गमे रे के ॥ दीठां ॥ १३ ॥ त्रिलोकसारा नाम के हारतणुं नलुं रे
 के ॥ हार ॥ जेवी घटे नहीं मुज के एम मन अटकलुं रे ॥ एम ॥
 पण इण इव्य वसाय के करीनें आपशुं रे के ॥ करी ॥ वारंवार उ
 देशे के शुन परवें आपशुं रे के ॥ शुन ॥ १४ ॥ लीधि रयणावली
 तेह के चाव्यो तब मढ्यो रे के ॥ चाव्यो ॥ महेसरदत्त कापालीकें कुमर
 ने अटकल्यो रे के ॥ कुम ॥ सायर कांते मंत्र के साधन ते करे रे के
 ॥ साध ॥ रे सत्तवाहसुत तुज के आवबुं इणि परें रे के ॥ आव ॥
 ॥ १५ ॥ एह अवस्था तुज के देखी डःख दिये रे के ॥ देखी ॥ घरबिड
 नवि कहुं एम के कुमरचिंते ह्ये रे के ॥ कुम ॥ कहे मुज जांगुं जहाज
 के सयण विजोगीउ रे ॥ सय ॥ तिणे ए अवस्था एम के वली तनु रो
 गीउ रे के ॥ वली ॥ १६ ॥ कहे कापालिक ताम के ए विधि वक्र ठे रे
 के ॥ ए वि ॥ चंचल लखमी अनित्य के संसार चक्र ठे रे ॥ संसा ॥ क

लपटू सम तुज के आपद एहवी रे के ॥ आप० ॥ तो पामर जन अन्य
 के बात ते केहवी रे के ॥ बात० ॥ १७ ॥ पण सुणि बात ए मुझ के ह
 दय कठिन करो रे के ॥ हृद० ॥ इण समे सयण के डुष्टनो आवे पटंतरो
 रे के ॥ आवे० ॥ जाग्यतणी एम खबर के निःसंशय पडे रे के ॥ निःसं० ॥
 अगर सुगंधनी खबर के अनलें जब चढे रे के ॥ अन० ॥ १८ ॥ एम
 एह आपद जाणो के बहु उपगारिणी रे के ॥ बहु० ॥ पण हवे थोडो
 काल के तुज सहचारिणी रे के ॥ तुज० ॥ लक्षण ताहरां देखि के जा
 णियें एणि परें रे के ॥ जाणि० ॥ साधारण तुज दुःख के मुज संपद परे
 रे के ॥ मुज० ॥ १९ ॥ तजीउ धण कण संग के गुं तुज उपगरुं रे के
 ॥ गुं तु० ॥ पठित सिद्ध देउं मंत्र के तुजनें हित करुं रे के ॥ तुज० ॥ त
 कूक जातिना सर्प के तस पण विप हरे रे के ॥ तस० ॥ ए पण होय
 के मंत्र के बहुनें सुख करे रे के ॥ बहु० ॥ २० ॥ चिंते धन्नकुमार के
 मुनि उपगारीउं रे के ॥ मुनि० ॥ करी मुजनें गुनदृष्टि के मुजनें तारी
 उं रे के ॥ मुज० ॥ कहो केम लेउं मंत्र के विण कांय उपगरे रे के
 ॥ विण० ॥ धन कहे मंत्रना देव के गृहीनें दुःख करे रे के ॥ गृही० ॥
 ॥ २१ ॥ तव कापालिक बोले के नहीं मंत्र आकरो रे के ॥ नहीं० ॥
 धन कहे नहीं मुज काम के मुज किरपा करो रे के ॥ मुज० ॥ पांच
 मी चौथे खंभे के ढाल ए मन धरो रे के ॥ ढाल० ॥ पद्म कहे उप
 गार के इणि परें सहु करो रे के ॥ इणि० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदेसरदत्त मनथकी. चिंते एम विचार; इणो मुजनें नवी उलख्यो, न
 जिये तिणें निरधार ॥ १ ॥ एम कही प्रगट कहुं इणो, सुण सबवाह
 सुजाण : जूवटीउं मुज जाणजे, पूरव ए पहिचाण ॥ २ ॥ अवर
 विकल्प न आदरो, मंत्र ए ल्यां महाराज; नहिंतर पीडा मुज धणी,
 उपजगें सुण धाज ॥ ३ ॥ तवहुं ते संनारीनें, चित्तमां करे विचार;
 पठतें पीडा उपजे, तिणें ए लेउं तैयार ॥ ४ ॥ कुमर कहे किरपा करो,
 नय दीयो निणे मंत; लीयो तव लाजें करी, गचा तपोवन एगंत

॥ ५ ॥ स्वाधां फणसादिक खरां, एकदिन रह्या उहाह; प्रणमी
बहुले प्रेमशुं, चाव्यो निजघर चाह ॥ ६ ॥ रत्नावलि राखे गुपत, जाये
आगल जाम; सावहनीं परिसरें, मारग पोहोतो ताम ॥ ७ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ लालसुरंगा रे प्राणीया ॥

॥ अथवा सहेजानंदी रे आतमा ॥ ए देशी ॥

॥ विचारधवल तिहां राजीउ, फाडयो तास जंमार रे ॥ चोरें चोरी
करतां थकां, पकडे लोक तिवार रे ॥ जोगी जंगम जार रे ॥ कंडी का
पडी निरधार रे ॥ लावे मंत्रीने द्वार रे ॥ १ ॥ कर्म न बूटे रे आतमा ॥
मंत्रि तेहनी परीक्षा करी, सूकी दीये ततकाल रे ॥ धन ते सांजली वातने,
वलीउ तिणहीज ताल रे ॥ चोकी पुरषें नीहाल रे ॥ जातां पकड्यो
संजाल रे ॥ उपनी मनमां ते जाल रे ॥ २ ॥ कर्मण ॥ कहे नइ किहांथी
आव्या तुम्हें, तव बोड्यो तेह एम रे ॥ सुसम्म नयरथी आवीयो, कहे
किहां जावानो प्रेम रे ॥ आगें गया हुंता जेम रे ॥ पाठा जाशुं घरे तेम
रे ॥ मुऊ पकडो तुम्हें केम रे ॥ ३ ॥ कर्मण ॥ राय विचारधवल घरें,
चोरी चोरें तें कीध रे ॥ तिणें अम जोवाने सूकीआ, बीजां काम निषेध
रे ॥ अमने आणां ए दीध रे ॥ तुम्हें तो पुण्यथी इह रे ॥ पण पकडया
इणविध रे ॥ ४ ॥ कर्मण ॥ मंत्री पासें चालो तुम्हें, कोप न करशो निजचित्त
रे ॥ धन कहे दोष न म्हें कथो, हुं श्ये आबुं कहो मित्त रे ॥ तव ते
कहे कहुं हित रे ॥ अम्हें आणाकारी नित रे, अवश्य जवानी ठे रीत
॥ ५ ॥ कर्मण ॥ विण इहा पण चालीउ, दीगो मंत्रीयें तेह रे ॥ पूठे
किहांथी आव्या तुम्हें, पूरवनी परें एह रे ॥ वात कही सवि जेह रे ॥
मंत्री कहे तुऊ देह रे ॥ संबल पासें ठे केह रे ॥ ६ ॥ कर्मण ॥ तव तेह
लोअ अज्ञानथी, बोड्या वगर विचार रे ॥ मुऊ पासें तो कांई नथी,
मंत्रि नांखे तिवार रे ॥ कहेजे होय जे निरधार रे ॥ धन कहे नहिं फे
रफार रे ॥ जूठनो इहां नहीं चार रे ॥ ७ ॥ कर्मण ॥ मंत्रीसर कहे जाउ
सुखें, तव जातां घरबार रे ॥ घोटकशालानें घोडले, तांणुं वस्त्र जे
सार रे ॥ फाटुं तेह जिवार रे ॥ माला पडिथ तिवार रे ॥ सप्तऋषि

श्रेणि धार रे ॥ ७ ॥ कर्म० ॥ दीठो मंत्रीयें तेटले, लीधो रयणा वली
 हार रे ॥ उलखी मनमां रें चिंतवे, राजधूआ थयो मार रे ॥ पूठे हार
 अधिकार रे ॥ तव लळा मन धार रे ॥ बोले धन्नकुमार रे ॥ ८ ॥
 कर्म० ॥ महा कडाहाधिपें गयो, जहाजें वेशीनें जब रे ॥ लीधी रय
 णावली मूलथी, पाठां वलतां मुज तब रे ॥ जहाज जांगुं गयो अब
 रे ॥ एक रयणावलि हब रे ॥ निकळ्यो आब्यो हुं इब रे ॥ ९ ॥ कर्म० ॥
 तुम्हें क्यारें लीधी मूलथी, तव बोळ्यो धन वाण रे ॥ एक वरश
 मुजनें थयुं, मंत्री चिंते सुजाण रे ॥ लीधी आपणें गुणखाण रे ॥
 मास त्रण थया ताण रे ॥ दीधी कुमरीनें पाण रे ॥ १० ॥ कर्म० ॥
 वे मास गयां थया तेहनें, एतो बोले ठे एम रे ॥ वात कहो एह
 किम मळे, बोले जूतुं ए नेम रे ॥ कुमरी मारी एणें एम रे ॥ कहुं
 नृपनें थयुं जेम रे ॥ नृप क्रोधें थयो जैम रे ॥ ११ ॥ कर्म० ॥ रयणा
 वलि जोई नृपति, तेडयो जंमारी जाम रे ॥ तिणें कहुं एह ते आ
 पणी, चिंते नृप उदाम रे ॥ मारी कुमरीनें ठाम रे ॥ नहींतो ए किम
 आम रे ॥ क्रोध वणो थयो ताम रे ॥ पण न्यायें अनिराम रे ॥ १२ ॥
 कर्म० ॥ वारें वारें पूठावीठं, पण नवि कहे फेरफार रे ॥ तेहनो
 तेह उत्तर दिये, चडिउं क्रोध अपार रे ॥ हुकम कखो वध त्यार रे ॥
 मिमिम वाजे असार रे ॥ चोपडीका मश ठार रे ॥ १३ ॥ कर्म० ॥
 लोक जणावण कारणें, साथें राखी ते माल रे ॥ वधस्थानक जेई जा
 यतां, हाटें शेरी सुविशाल रे ॥ माल ते मांस नीहाल रे ॥ लावक
 पंखी तिण ताल रे ॥ हार जेई चाल्यो ततकाल रे ॥ १४ ॥ कर्म० ॥
 निजमाजामां माला धरी, हवे धनकुमर मशाण रे ॥ लाव्या तिहां
 वध काणो, बोलाव्यो तिहां पाण रे ॥ चंमाल पाडे समशाण रे ॥
 राजा पुरुषें जमराण रे ॥ सांणी वलीआ ते ठाण रे ॥ १५ ॥ कर्म० ॥
 थोडी नृमी ते जेई गयो, जोयुं तास निहाल रे ॥ एहवुं रूपनें आ
 यति, दीने पुण्य विशाल रे ॥ करे न अकारज वाल रे ॥ किम मारुं हुं
 अकाल रे ॥ इणिपरें चिंते चंमाल रे ॥ १६ ॥ कर्म० ॥ अथवा

आणाकारी अम्हें, एम विचारें जुं थाय रे ॥ कहे जाई बेश तुं समीप
रे ॥ हवें तुज आवीठं थाय रे ॥ सांजल वात तुं जाय रे ॥ मुज
आवक मित्र थाय रे ॥ तास संगति सुखदाय रे ॥ १७ ॥ कर्म० ॥ क्रूर
दृष्टि नहीं माहरी, पण चाकर थया राय रे ॥ तिणें अम्हें विनव्योरा
यनें, मारीयें जेहने जाय रे ॥ गुनपरिणामी जो थाय रे ॥ तो सजति
मांहि जाय रे ॥ तिणें मारजुं पडखाय रे ॥ १८ ॥ कर्म० ॥ एक मुहूर्त
पडखी करी, पठें करजुं तुम्ह आण रे ॥ रायें पसाय अम्हने कस्यो,
तिणे तुं बोल सुजाण रे ॥ कहे ते करीयें विनाण रे ॥ धन चिंते अहो
पाण रे ॥ किणी परें बोले ठे वाण रे ॥ १९ ॥ कर्म० ॥ चोथे खंमैं ठही
कही, इणि परें उत्तम ढाल रे ॥ पद्मविजयें शोहामणी, उत्तम विजय
नो बाल रे ॥ उत्तम जननो ए ढाल रे ॥ सांजलो वात रसाल रे,
सुणतां मंगलमाल रे ॥ २० ॥ कर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ १९७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिंते धन एम चित्तमां, परउपगारी पाण; अनुकंपा जुठ आकरी,
संगति फल असमाण ॥ १ ॥ सज्जन संगति सेवीयें, कुमति मोह करे
दूर; नीतिविवेक नव नव होये, पुण्य तणो होय पूर ॥ २ ॥ आवक
नी संगें सखर, किम ए कर्मचंमाल; जातिचंमाल ए जाणीयें, के
हवुं दरिस अकाल ॥ ३ ॥ निःशासो हवे नाखीने, बोले इणिपरें बोल;
रायशासन कस्य तुं सुखें, करवो नहीं कांई तोल ॥ ४ ॥ धीरज देखी धन
तणी, परखी पुरुष प्रजाव; निर अपराधी नरअ ठे, पण मारण प्रस्ता
व ॥ ५ ॥ चतुर चंमाल गदगद चवे, आंसूडे जरी आंख; इष्टदेव संजा
रियें, खेद ते दूरें नाख ॥ ६ ॥ धरजे ध्यान तुं धर्मनुं, सन्मुख करजे
सग; धन चिंते धिग माहरो, जन्म गयो इण जग ॥ ७ ॥ जम
जीहा सखी जुठ, काढी इणो करवाल; वाही निजकर इसी वली,
वचन कहे विकराल ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ नणदल बिंदली दे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणजो सहु लोका वाणी ॥ राय कुमरी वंची इण प्राणी हो ॥ सु

एजो सहु लोका ॥ त्रिलोक सारा रयणमाजा ॥ अपहरी एणे थई उ
 जमाजा हो ॥ १ ॥ सुणजो सहु लोका ॥ तिणें एह ते माख्यो जाय,
 एम जे करणे तस थाय हो ॥ सु० ॥ वाही एम कही करवाल ॥ करु
 णाज्ञून्य जाव विशाल हो ॥ २ ॥ सु० ॥ नवि लागो तेह प्रहार ॥
 पड्यो प्रथवी उपर त्यार हो ॥ सु० ॥ करवाल बूटी तत काल ॥ धन
 कुमर कहे सुरसाज हो ॥ ३ ॥ सु० ॥ कर आण तुं नूपति केरी ॥
 तुं चाकर गुं कहुं फेरी हो ॥ सु० ॥ न करी शकुं तुम पर घाय ॥ चंमा
 ल कहे सुण जाय हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ कांयक करुं तुज उपकार ॥ तुं सु
 खयी जांख्य प्रकार हो ॥ सु० ॥ इण अवसर रायनो पुत्र ॥ सुमंगल
 राखे वरसूत्र हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ गयो तेह उद्यान मजार ॥ अहि
 मशीउं जेर अपार हो ॥ सु० ॥ व्यापूं ते सघले अंग ॥ थयो काष्ट
 परें तस रंग हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ आण्यो ते नरपति पासैं ॥ गारुडी वो
 लाव्या उल्लासैं हो ॥ सु० ॥ आव्या ते देखी तास ॥ गारुडी थया
 नर्व निराश हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ मंत्र औपध कीधां तेणें ॥ पण गुण न
 थयो कांय इणें हो ॥ सु० ॥ राजा लही खेद विचारे ॥ अचिंत्य शक्ति
 नर धारें हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ सिद्ध गारुड मंत्रको होय ॥ आवी जीवाडे
 कोय हो ॥ सु० ॥ इणपरें मिमिम वजडावे ॥ कोई आवी कुमर जी
 वावे हो ॥ ९ ॥ सु० ॥ ते जे मागे ते दीजें, त्रिक चोक चाचरे वदी
 जें हो ॥ सु० ॥ एक मिमिम फिरतो आयो ॥ जिहां धनवध केरो थायो हो
 ॥ १० ॥ सु० ॥ सुण्यां शब्द ते धनकुमारें ॥ कोई राजकुमर उगारें हो ॥ सु० ॥
 तेहनें मागे ते आपे ॥ वली प्राणजीवन तस थापे हो ॥ ११ ॥ सु० ॥
 कहे धन चंमालनें एम ॥ तुज आयह ठे अति प्रेम हो ॥ सु० ॥ तोए
 मुज कीजें काम ॥ रायमुत सुमंगल नाम हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ करड्यो
 जे एहनें नाप ॥ जई जीवाहुं हुं थाप हो ॥ सु० ॥ पठें मारजो एम
 नृणी वरग्यो ॥ चंमाल चिंते मन सरिखो हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ जे नरप
 नितुन जीवाडे, तस नृप किम दुःख पमाडे हो ॥ सु० ॥ नूपति गु
 णनो पदभाती ॥ दाहीएतायर नहीं घाती हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ ए

जीव्यो हवे अथवा एह ॥ किम इंणिपरें मरण लहेह हो ॥ सु० ॥
 ते पडह वादकनें तेडयो ॥ कहुं सर्व वृत्तांत रही नेडो हो ॥ १५ ॥
 ॥ सु० ॥ ते कहे एह साचुं केम ॥ तव धन बोल्या धरी प्रेम हो ॥ सु० ॥
 ठे मंत्रतो जालिम जोर ॥ पठे जाग्य फले इंणे ठोर हो ॥ १६ ॥
 ॥ सु० ॥ एहमां नवि आपणुं चाले ॥ पण जोउं ए मंत्र जो हाले हो
 ॥ सु० ॥ एम सांनली सहुए विचारे ॥ अहो गीरुउं निरहंकारें हो ॥
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ ए निश्चय कुमर जीवावे ॥ नरपति पासें लेई आवे हो
 ॥ सु० ॥ नूपने सवि वात सुणावे ॥ नृप देखी इंणी परें नावे हो ॥ १८ ॥
 ॥ सु० ॥ परडव्य लीये किम एह ॥ आकृति सौजाग्यनुं गेह हो
 ॥ सु० ॥ करहुं पठें वात विचारि ॥ विषम गति विषनी धारि हो ॥ १९ ॥
 ॥ सु० ॥ रोवंतो नरपति बोले ॥ नड् मस्तक तुमचे खोले हो ॥ सु० ॥
 कहे धन मूको विषवाद ॥ जुउं मंत्रशक्ति अविवाद हो ॥ २० ॥
 ॥ सु० ॥ संजारे मंत्र सुजाण ॥ चिंतामणि मंत्र समाण हो ॥ सु० ॥
 निझामांथी जिम जागे ॥ तिम बेगो अयो नृपजागें हो ॥ २१ ॥ सु० ॥
 जस वाद अयो ठाम ठाम ॥ नृप पास्यो अति विशराम हो ॥ सु० ॥
 खंम चोये ए सातमी ढाल ॥ कही पद्मविजय सुरसाल हो ॥ २२ ॥
 सु० ॥ सर्व गाथा ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रायें कंदोरो दिउ, अंतेउरें आनरण ; वरसे तिहां वारू परें, कोई
 कुंमल दीये कर्ण ॥ १ ॥ धरणीपतिनें धन कहे, एहुं एणीवार; राय
 कहे वली कहे अपर, करीयें शो उपकार ॥ २ ॥ कहे चंमाल ते की
 जीयें, धन बोले एम धन; चिंते राय अहोचरी, अहो गुरुता ए अ
 गन्य ॥ ३ ॥ कहो अकार्य ए किम करे, एहने पूबुं आम; पूठिश अ
 थवा हुं पठें, करी एहनुं काम ॥ ४ ॥ पूठो कहे पडिहारनें, कहो
 खप ताहरे कांय; पडिहारें जई पूठीउं, रे तुज तूगो राय ॥ ५ ॥
 जीवाडयो नृपसुत जिणें, तूगो अथवा तेह; खंगिल तुं खातें करी,
 मागे बुग ठे मेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ वारि मोरा साहिबा ॥ ए देशी ॥

॥ खंगिल चिंते खांतिशुं हो राज, महापुरप कोइ एह ॥ वारि मोरा
साहिबा ॥ काम थयुं नररायनुं हो राज, दिसे ठे निःसंदेह ॥ १ ॥
वा० ॥ पूठे किम ए जीविआं हो राज, तव बोले प्रतिहार ॥ वा० ॥
एहमां शो संदेह ठे हो राज, कांयक माग्य उदार ॥ २ ॥ वा० ॥ बोळ्यो
खंगिल हरखतो हो राज, जो सुज तूठो राय ॥ वा० ॥ तोए पाप
अजीविका हो राज, उजयलोक दुःख दाय ॥ ३ ॥ वा० ॥ तेह
निवारो माहरी हो राज, बोळ्यो तव प्रतिहार ॥ वा० ॥ शुं माग्युं ए
ते इहां हो राज, माग्य तुं इव्यविचार ॥ ४ ॥ वा० ॥ खंगिल कहे ए
उपरें हो राज, नहीं कोइ जगमां सार ॥ वा० ॥ सांजली जई कह्युं
रायनें हो राज, रायें कीध विचार ॥ ५ ॥ वा० ॥ अहो विवेक अजोन
ता हो राज, धन कहे जातिचंमाल ॥ वा० ॥ कर्मचंमाल न एह ठे
हो राज, कहे ते करो नूपाल ॥ ६ ॥ वा० ॥ राय कहे ए नीपन्युं
हो राज, पण एहनें निजहाथ ॥ वा० ॥ लाख सोवन आपो तुम्हें
हो राज, तुम्हें अमचा यया नाथ ॥ ७ ॥ वा० ॥ सहस चंमाल
कुटुंब जीके हो राज, विंजवासी वली जेह ॥ वा० ॥ पाटण पन्निम
बाहिरें हो राज, अग्रगामि करो तेह ॥ ८ ॥ वा० ॥ सद्गुयें ते नीप
जावीउं हो राज, रायनें वचनें याय ॥ वा० ॥ काम मनें देवता
करे हो राज, गेठ ते धन खरचाय ॥ ९ ॥ वा० ॥ खंगिल हरख्यो
चित्तयी हो राज, उगल्या धन्नकुमार ॥ वा० ॥ तेहवो धनें हरख्यो
नहीं हो राज, सज्जन एह आचार ॥ १० ॥ वा० ॥ राय कहे धननें
दवे हो राज, देखी तुम्ह चरित ॥ वा० ॥ जाण्यो जन्म जलें कुलें हो
राज, पण जांखो सुपवित्त ॥ ११ ॥ वा० ॥ किहांना वासी नामगुं
हो राज, जांखो उलखुं आज ॥ वा० ॥ तव धन चित्तमां चिंतवे हो
राज, आणी अति यणी लाज ॥ १२ ॥ वा० ॥ म्हें रयणावली पार
हो हो राज, जीयी ते सांजरी ताम ॥ वा० ॥ निःशासो नाखी घणो
हो राज, चिते उत्तमकुज आम ॥ १३ ॥ वा० ॥ धन कहे गुं पूठो

तुम्हें हो राज, माहरा कुलनी वात ॥ वा० ॥ महा अकारज म्हें कसुं
 हो राज, तेहनो श्यो अवदात ॥ वा० ॥ १४ ॥ अथवा कुलनो दोष
 श्यो हो राज, कमलें ते लखमी निवास ॥ वा० ॥ तिहां पण कीडो
 उपजे हो राज, पालक हरिकुल खास ॥ १५ ॥ वा० ॥ जाति मात्रें
 हुं वाणीउ हो राज, पण वाणिक न आचार ॥ वा० ॥ सुसम नयर
 वासी वली हो राज, नाम ते धन्नकुमार ॥ १६ ॥ वा० ॥ राय चिंते
 धन्य हुं श्यो हो राज, एहवा रतननो नाश ॥ वा० ॥ न कस्यो म्हें
 तिणें कारणें हो राज, हवे कहे नूपति तास ॥ १७ ॥ वा० ॥ किशुं
 अकारय आचसुं हो राज, ते परमारथ जांख ॥ वा० ॥ किम रय
 णावली पामीआ हो राज, इणें अवसरें सहु साख ॥ १८ ॥ वा० ॥
 उद्यान पालिका नामथी हो राज, मनोरमा अनिराम ॥ वा० ॥ अरज
 कहे तूमची धूआ हो राज, आवी विनयवती नाम ॥ १९ ॥ वा० ॥
 वात सुणी हरख्यो घणुं हो राज, सेना लेई चतुरंग ॥ वा० ॥ पेसारा
 महोत्सव करे हो राज, वाध्यो अति उहुरंग ॥ २० ॥ वा० ॥
 घर लावीनें पूठियुं हो राज, रयणावली अवदात ॥ वा० ॥ सा कहे
 जहाजमां चालतां हो राज, प्रचंद वायरा वात ॥ २१ ॥ वा० ॥
 दासी करें म्हें आपीउ हो राज, रयणावली तव हार ॥ वा० ॥
 तिणीयें बांध्यो ठेडले हो राज, सायरमध्य मजार ॥ २२ ॥ वा० ॥
 फूटुं जहाज तिणें समे हो राज, गुज हृदय जिम नारि ॥ वा० ॥
 दैवयोगें एक पाटिउं हो राज, पाम्युं जीवदातार ॥ २३ ॥ वा० ॥
 अनुक्रमें आवी हुं इहां हो राज, तव चिंते नूपाल ॥ वा० ॥ उत्सव
 उपरें आवीउ हो राज, उत्सव ए सुरसाल ॥ २४ ॥ वा० ॥ पुत्र
 पुत्री जीव्यां जुउ हो राज, कुंअर गयो अपराध ॥ वा० ॥ पुण्यवर्शें
 आवी मिळे हो राज, पामे सुख अगाध ॥ २५ ॥ वा० ॥ चोथे खं.में
 ए कही हो राज, अचरिज आवमी ढाल ॥ वा० ॥ श्रीगुरु उत्तमनो
 कहे हो राज, पद्य ते वात रसाल ॥ २६ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ २६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ गय कहे धण कुमरनें, खरी कहो ए खांति ; लीधी किहां रयणा
 बली, जांखो ते जलि जांति ॥ १ ॥ सायरतीरें म्हें सही, धन्न कहे
 म्हें लीध ; नृप कहे शब दीतुं कनें, कुंअरें हा तव कीध ॥ २ ॥ तेह
 ज कारण आतमा, कहुं अकार्य करनार ; पारकुं डव्य में अपहयुं,
 गोच करुं संनार ॥ ३ ॥ न पजे एह गृहस्थनें, मनथी मूको खेद ;
 हवे शुं करीयें तुम्हने, जांखो तेहनो जेद ॥ ४ ॥ मनवंडित दीधुं
 मनें, कयुं चंमालनुं काम ; नृप कहे थोडा एहने, दीधा ठे अमें दाम
 ॥ ५ ॥ काम विचारी ए करे, एहनो बहु उपकार ; माग्य तुं कांयक
 सुज कने, तव बोल्यो ते कुमार ॥ ६ ॥ तुम दरिसण पाम्यो तिके, अ
 धिकुं कांय न अन्य ; राजा तव निज आनरण, आपत बहु अगन्य
 ॥ ७ ॥ हवे जे विश्वासी दुये, तेह पुरुष संघात ; नयर सुसम जणी
 नरपति, पेसवीआ प्रख्यात ॥ ८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तुम्हें पीतांबर पहेरो जी मुखने मरकजडे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे कंसक दिवसें पोहोता जी ॥ कर्म विटंबणा ॥ गिरिथल पाटण
 नम होता जी ॥ क० ॥ तिहां चंमसेनं नरराय जी ॥ क० ॥ तेहना
 चंमाम्मां चोरी थाय जी ॥ क० ॥ १ ॥ खोले कोटवाल ते चोर
 जी ॥ क० ॥ त्रिक चोक एकांत बली ठोर जी ॥ क० ॥ कडी कापडी
 जांगी संन्यासी जी ॥ क० ॥ परीक्षा करी दीये स्यावासी जी ॥ क० ॥
 ॥ २ ॥ रायपुरुषे पकड्या एह जी ॥ क० ॥ कहे कोपन करशो रेह जी ॥
 क० ॥ चोरी थड गयचंमार जी ॥ क० ॥ तिणें पकड्या ठे निरधार
 जी ॥ क० ॥ ३ ॥ ते कहे ज्यो कोपनो लाग जी ॥ क० ॥ कहो तिहां
 जड्यें दाखो माग जी ॥ क० ॥ पंचाति थावे तिहां लावे जी ॥ क० ॥
 चंदटिआ पृष्ठं जावें जी ॥ क० ॥ ४ ॥ किहांथी आव्या तुम्हें जाई
 जी ॥ क० ॥ आव्या सावणीयी थाई जी ॥ क० ॥ पंचाती कहे कि
 जे जायो जी ॥ क० ॥ कहे सुनमनयर अमठावो जी ॥ क० ॥ ५ ॥

पंचोली कहे शुं काम जी ॥ क० ॥ तव ते नर बोल्या आम जी ॥ क० ॥
 ए कुमरने मूकवा काज जी ॥ क० ॥ अम नरपति मोकल्या साज
 जी ॥ क० ॥ ६ ॥ कारणिया पूढे तास जी ॥ क० ॥ इव्य कांय
 अढे तुम्ह पास जी ॥ क० ॥ तव ते कहे ढे अम्ह पासैं जी ॥ क० ॥
 कारणीया कहे सुविनासैं जी ॥ क० ॥ ७ ॥ अम्ह देखाडो होय जे
 ह जी ॥ क० ॥ तव देखाडे सहु तेह जी ॥ क० ॥ अम्ह राजायें दू
 शीनैं दीधां जी ॥ क० ॥ तव कारणीये कर लीधां जी ॥ क० ॥ ८ ॥ जंमा
 रीयें जलख्यां तेह जी ॥ क० ॥ अम्ह राय आचूषण एह जी ॥ क० ॥
 गयां काल बहु थयो एहनें जी ॥ क० ॥ दोननां थई तव सहु केहनें
 जी ॥ क० ॥ ९ ॥ कारणिया फरि फरि पूढे जी ॥ क० ॥ खरी
 वात कहो ए शुं ढे जी ॥ क० ॥ ते कहे खोटुं नवि कहीयें जी
 ॥ क० ॥ एहमां शो जश अम्हें लहीयें जी ॥ क० ॥ १० ॥ तव का
 रणिया निजराय जी ॥ क० ॥ संजलावे नृप दुःख थाय जी ॥ क० ॥
 जुठ सावळी नरराय जी ॥ क० ॥ ए चोरना थांगु थाय जी ॥ क० ॥
 ॥ ११ ॥ घाल्या सहु बंदीखानें जी ॥ क० ॥ सघलुं जडगे ए बाने
 जी ॥ क० ॥ तिहां दुःख पामे रहे तेह जी ॥ क० ॥ इण समे एक
 सुणो थई जेह जी ॥ क० ॥ १२ ॥ एक परिव्राजक वेषधारी जी
 ॥ क० ॥ तस पकडे नृप आणाकारी जी ॥ क० ॥ चोखुं ते इव्य
 वली पास जी ॥ क० ॥ राति समयें लाव्या तास जी ॥ क० ॥ १३ ॥
 लिंगधारी मंत्रीसर देखी जी ॥ क० ॥ मन चिंते सर्व उवेखी जी
 ॥ क० ॥ चोरी करे जो लिंगधारी जी ॥ क० ॥ शुं न करे अकार्य अव
 धारी जी ॥ क० ॥ १४ ॥ ते कारण मारण आणा जी ॥ क० ॥ कर
 ता राय पुरुषनें राणा जी ॥ क० ॥ मश गेरु विनूति लगाई जी ॥ क० ॥
 कणयर माला पहेराई जी ॥ क० ॥ १५ ॥ त्रूटूं शूपडुं ठत्रनें ताम
 जी ॥ क० ॥ रासन बेसाडयो वाम जी ॥ क० ॥ मिमिम वाजे अ
 तिविरसो जी ॥ क० ॥ लोक सांजली आवे सरसो जी ॥ क० ॥
 ॥ १६ ॥ दक्षिण दिश नयरने बाहिर जी ॥ क० ॥ लाव्या नहीं कोई

एहनी बाहर जी ॥ क० ॥ तव नाखी दीर्घ निःश्वास जी ॥ क० ॥ जोई
 आहुं अवहुं पास जी ॥ क० ॥ १७ ॥ लोकना मुख साहसुं जोई जी
 ॥ क० ॥ कहे मुनिवच अजिक न होई जी ॥ क० ॥ हमणां पण जे
 हनुं डव्य जी ॥ क० ॥ तेहनुं हुं आपुं सर्व जी ॥ क० ॥ १८ ॥
 रहुं प्रथवीमां शो लेखे जी ॥ क० ॥ नृप नर सन्मुख तेह देखे जी
 ॥ क० ॥ म्हें नयर ते मूरुं एह जी ॥ क० ॥ बीजे पुरुषें नहीं रेह
 जी ॥ क० ॥ १९ ॥ आराम गिरि नदीतीर जी ॥ क० ॥ प्रमुखें दाटुं
 यई धीरजी ॥ क० ॥ ते जेई सहु सहुनुं आपो जी ॥ क० ॥ पढे मा
 रवा मुजनें आपो जी ॥ क० ॥ २० ॥ कही तेह मंत्रीनैं वात जी
 ॥ क० ॥ मंत्रि पण तिहां आयात जी ॥ क० ॥ जे जे कह्युं ते ते आन
 जी ॥ क० ॥ जोई निकळ्युं तेह प्रमाण जी ॥ क० ॥ २१ ॥ सहु ह
 रखा डव्य ते पामी जी ॥ क० ॥ चोये खंमैं अनिरामी जी ॥ क० ॥
 ढाल नवमी पद्मे जांखी जी ॥ क० ॥ गुरु उत्तम विजय ठे साखी
 जी ॥ क० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीतुं सरवे डव्य ते, विण आचरण नरदेव; चिंता मंत्री चित्त थई,
 दुउं विपरीत ए हेव ॥ १ ॥ केम आचरण बीजा कनें, सबलो ए सं
 देह; परिव्राजकनें पाय पडी, तुरतज पूढे तेह ॥ २ ॥ वेषस्वजाव
 विरुद्ध किम, विस्मय कारी वात; परिव्राजक बोड्यो पढे, वेगें निज
 अवदात ॥ ३ ॥ विपयीनैं कहो शुं विरुद्ध, मंत्री बोले ताम; न
 होये ज्ञानी जे नरा, करे ते एहवां काम ॥ ४ ॥ पण तुम्ह सरिखा
 पुरुषनें, न पढे एह निदान; अवितथ मुजने आखीयें, महेर करी
 महेरवान ॥ ५ ॥ सावधान थईनैं सुणो, परिव्राजक कहे प्रेम;
 आप्यो अवधिज्ञानीयें, मूलयकी ते नेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ लाल रंगावो वरनां मोलीयां ॥ ए देशी ॥

॥ इणो जगनैं पुंमर देशमां, पुंमरवरधन नयरी नाम रे ॥ सोमदेव
 नामें ब्राह्मण वर्म, अग्निवेसायण गोत्र अनिराम रे ॥ १ ॥ कखां कर्म

न बूटे प्राणीआ ॥ ए आंकणी ॥ तस पुत्र नारायण नाम हुं, हिंसा
 यें सरग ते जाखुं रे ॥ एक चोरनें मारवा लेई जतां, मारो चोर ए हुं
 मुखें दाखुं रे ॥ १ ॥ क० ॥ एक साधुयें ते वच सांनव्युं, ताजुं उ
 पनुं अवधिज्ञान रे ॥ ते ठुकडेशी सुणी बोलीआ, अहो कष्ट जे जी
 वनें अज्ञान रे ॥ २ ॥ क० ॥ सुणी चिंता मुऊने उपनी, अहो शांत
 स्वरूपी एह रे ॥ मुऊ उदेशी एम नांखीउं, जई पूढुं कारण तेह रे ॥
 ॥ ४ ॥ क० ॥ म्हें पाय पडीनें पूढिउं, नगवन् कहो शुं अन्नाण रे ॥
 तव मुनि कहे आल जे देयवुं, वली विरुद्ध उपदेश दाण रे ॥ ५ ॥
 क० ॥ म्हें पूढुं आल किशुं कहो, वली विरुद्ध श्यो उपदेश रे ॥ मुनि
 कहे ए कर्मविपाकथी, लह्यो नर आपद सुविशेष रे ॥ ६ ॥ क० ॥
 ए निरपराधी पुरुषनें, तुम्हें चोर कहिनें दाख्युं रे ॥ ए अठतुं आल
 पीडा करे, एहवुं बोलवुं नवि नांख्युं रे ॥ ७ ॥ क० ॥ अठतुं आलतो
 नवि दीजीयें, पण चोरनें चोर न कहियें रे ॥ वलि जीवघातें स्वर्ग बोल
 तां, विरुद्ध उपदेश पण लहियें रे ॥ ८ ॥ क० ॥ सधले दर्शनमां नांखीउं,
 जीवघात न कीजें प्राणी रे ॥ सुख सौभाग्य वली आरोग्यता, जनमां
 तरें होये सुखखाणि रे ॥ ९ ॥ क० ॥ “यतः ॥ सव्वेवि जीवा इहंति,
 जीविउं न मरीज्जिउं ॥ तम्मा पाणवहं धोरं, निग्गंथा वज्जयंतिणं ॥ १ ॥
 आयुदीर्घतरं वपुर्वरतरं गोत्रं गरीयस्तरं, वित्तं नूरितरं बलं बहुतरं स्वा
 मित्व मुच्चैस्तरं ॥ आरोग्यं विगतांतरं त्रिजगति श्लाघ्यत्वमल्पेतरं, सं
 सारांबुनिधिः करोति सुतरां चेतः कृपादीतरं ॥ २ ॥” जनमांतरें आल
 जे दीधलुं, तेहनं फल ठे हजी शेष रे ॥ ते नोगवुं थोडा कालमां,
 आवशे उदयें सुविशेष रे ॥ १० ॥ क० ॥ तव पूढुं म्हें प्रभु केहवुं,
 जन्मांतरें दीधूं आल रे ॥ केहवुं तस फल में नोगव्युं, मुनिवर बोल्या
 किरपाल रे ॥ ११ ॥ क० ॥ इणजरतें उत्तरा पंथमां, पाटण नगर जनक
 नाम रे ॥ आषाढनामें वाडव तिहां, रबुआ नारया अनिराम रे ॥ १२ ॥
 ॥ क० ॥ पांचमे नवें तेहनो सुत हतो, चंडदेव ताहरुं अनिधान रे ॥
 शास्त्र सांनव्यां वेद पढावीउं, तुऊनें उपन्युं अतिमान रे ॥ १३ ॥

क० ॥ वीरसेन राजा ते नयरनो, तिणे आजीविका घणी आपी रे ॥
 नित्य नृपनी पासें वेसी रहे. मनगमती वात आलापी रे ॥ १४ ॥ क० ॥
 एम करतां एकदिन तिण पुरें, विनीत शेवनी धूआ रे ॥ तस नाम ते
 वीरमती अठे, तेहना शील आचार ते जूआ रे ॥ १५ ॥ क० ॥ अवि
 वेक बहुल होय नारीनें. वली दुर्जय मोह वखाण्यो रे ॥ यौवन ते
 विकारनुं घर अठे, तिणें निज कुल पण न पिठाण्यो रे ॥ १६ ॥
 ॥ क० ॥ अनिजाप योग्य विषय कल्या, न विचाख्यो अनागत काल
 रे ॥ सिंहल नामें माली समागमें, रमतां बहु काढती काल रे ॥ १७ ॥
 ॥ क० ॥ वीरमतीनो पूज्य एक जाणीयें, पाले नित्य निज आचार रे ॥
 परिव्राजक नाम जोगातमा, निःसंगपणुं वली धारे रे ॥ १८ ॥
 क० ॥ थाणेशर गयो एक दिन हवे, लोकवाद थयो एम चावो रे ॥
 जोगातमाणुं वीरमती वशी. ते सांचदयो एह आरावो रे ॥ १९ ॥ क० ॥
 तें पण निश्चय करी राखीतं, एकदिन राजकुलें थइ वात रे ॥ सहु
 लोक कहे ए केम हजे, तें कसुं ए खरुं अवदात रे ॥ २० ॥ क० ॥
 एह वात हुं जाणुं तुं खरी, एहमां नहीं कांय संदेह रे ॥ निजकुल आ
 चार लांपी कसु, तव राय कहे सुणी एह रे ॥ २१ ॥ क० ॥ निज
 नारीनो त्याग कस्यो इणें. तव उत्तर ते एम दीधो रे ॥ ते कारण पर
 स्त्री खोजतां. पाखंमपणुं तिणें लीधो रे ॥ २२ ॥ क० ॥ एहमां कांय
 धर्म न जाणजो. एम मुणी केई पाम्या अधर्म रे ॥ सहु परिव्राजकें पण
 नांनली. काढयो टोळेची लही मर्म रे ॥ २३ ॥ क० ॥ बहु पाम्यो
 विटंबणा लोकमां. सुज कर्म निविड बंधाणुं रे ॥ एम जाणी आल न
 वीजियें. जेदथी लहे नरकनुं ठाणुं रे ॥ २४ ॥ क० ॥ दशमी ए चो
 या खंमती, जांय्ही एम टाल रसाल रे ॥ कहे पद्मविजय सुणतां
 होये, ओना घर मंगलमाल रे ॥ २५ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आयुक्ष्यें द्रव उपन्यो, आरंज करी अनेक ; माया बहुल करमवशें,
 धर्म आगाथ्यां न एक ॥ १ ॥ कोट्याग सन्निवेशें कस्यो, एलगनो अ

वतार ; काल गयो तस केटलो, आव्यां कर्म अपार ॥ १ ॥ जीन
सडी वेदन जडी, आयूनो थयो अंत ; मरी शीआल ते कर्मथी, उप
न्यो कर्म अनंत ॥ २ ॥ इणहीज गामनी अटवीयें, फिरतां तुं फल
खाय ; तेहथी जीन सडी तथा, खें खें करे न खवाय ॥ ४ ॥ अनुक्र
में मरण ते आवीयुं, तेहज कर्म तहत्ति ; साकेतपुर स्वामी तणी, वि
जासिणी वरगति ॥ ५ ॥ मदनं जतानी कूखमां, पुत्रपणे प्रगटाय ;
जोबन पाम्यो जेटले, नृपवल्लभ निरमाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ राग मारुणी ॥ श्रीसीमंधर साहिब आगें विनति रे ॥ ए देशी ॥
॥ एक दिन मदिरा पीधी कर्म दोषें करी रे ॥ मदिरामत्त थयो तेह ॥ आई
रे ॥ आई रे नृप माई आक्रोशतो रे ॥ १ ॥ वात सुणी नृपपुत्रें तस
वाख्यो घणुं रे ॥ तेहने पण आक्रोश ॥ करतो रे ॥ करतो रे धरतो
नृपनें क्रोधमां रे ॥ २ ॥ कोप करीने जीन ठेदावी नृपवरें रे ॥ मद
उतख्यो तव तुज ॥ वातें रे ॥ वातें रे निज अवदातें जाजीउ रे
॥ ३ ॥ अणसण कीधुं मास एकनुं तें तदा रे ॥ उपन्यो माहण अत्र
॥ तिहांथी रे ॥ तिहांथी रे किहांथी कर्म बूटे कखां रे ॥ ४ ॥ वचन
मुनिनां साजली संवेग उपन्यो रे ॥ वली पूठ्युं म्हें तास ॥ शेष रे ॥
शेष रे कहो विशेष शुं आवशे रे ॥ ५ ॥ ज्ञानी गुरु तव बोल्या क
रुणा आणिने रे ॥ महा विटंबणा थाय ॥ लोक रे ॥ लोक रे ओक
ओक तुज देखशे रे ॥ ६ ॥ मुनि वयणें हुं बिहनो दीक्षा आदरी रे ॥
गुरुमरणांतें मुज ॥ आपी रे ॥ आपी रे आपी बे विद्या जली रे
॥ ७ ॥ गगन गामिनी तालुग्याडणी नामथी रे ॥ गुरु कहे सांजव्य
वात ॥ धर्में रे ॥ धर्में रे कर्म होय तो फोरवे रे ॥ ८ ॥ विषय असा
र निमित्तें ए मत फोरवे रे ॥ वलि सुण बीजुं एह ॥ मीतुं रे ॥ मीतुं
रे जूतुं कदिय न बोलजे रे ॥ ९ ॥ हांसीमां पण जूतुं जो बोलाय तो
रे ॥ करजे तुं ए रीति ॥ पाणी रे ॥ पाणी रे नानी प्रमाण जाणी तिहां रे
॥ १० ॥ उंची बांह नयण अनिमेष तिहां करी रे ॥ एक सहस आव वा

र ॥ जपजे रे ॥ जपजे रे खपजे पातिक आपणुं रे ॥ ११ ॥ हवे एक दिन हुं
 जूतुं बोव्यो पापधी रे, इह परलोकविरुद्ध ॥ कीधुं रे ॥ कीधुं रे सीधुं अवजुं
 माहरे रे ॥ १२ ॥ काल संध्यायें वसती पास आराममां रे ॥ वकुल वृद्धनें
 हेव ॥ वेगो रे ॥ वेगो रे हेगो तिहां जूतुं लव्यो रे ॥ १३ ॥ मंत्रि कहे खुं
 बोव्या जूतुं ते कहो रे ॥ तव बोव्यो तिहां आय ॥ तरुणी रे ॥ तरुणी
 रे मनहरणी टोलें मली रे ॥ १४ ॥ जल अवगाहन करीनें बूटे के
 शयी रे ॥ देवदर्शननें काज ॥ आवी रे ॥ आवी रे मन जावी मुऊनें
 कहे रे ॥ १५ ॥ हे जगवन् जोवन वय तुमची देखीयें रे ॥ सार विष
 य संसार ॥ लोकें रे ॥ लोकें रे थोकें सहु सेव्या खरा रे ॥ १६ ॥ हरि
 हर ब्रह्मा सेवित किम ठाम्यां तुम्हें रे ॥ डकर व्रत करो केम ॥ स्वामी
 रे ॥ स्वामी रे कामी वयण कथां घणां रे ॥ १७ ॥ हांसी गर्भित व
 यण सुणीनें म्हें तदा रे ॥ हास्य तणुं नहीं शीज ॥ तोहि रे ॥ तोहि
 रे मोहि हुं एम बोलीउं रे ॥ १८ ॥ दीर्घ निःशासो नाखी म्हें नांखीउं
 रे ॥ तेह कालने जोग्य ॥ नांखुं रे ॥ नांखुं रे दाखुं अलिक जाणी
 करी रे ॥ १९ ॥ मन माहरुं महिला विरहें संतापीउं रे ॥ मांमथुं
 तप म्हें एम ॥ नांखी रे ॥ नांखी रे गुरुदाखी विधि नवि करी रे ॥ २० ॥
 मथ्यरातें हुं चोरी करवा नीसखो रे ॥ सुतां पुरनां लोक ॥ ज्यारें रे ॥
 ज्यारें रे त्यारें हुं पकडाईउं रे ॥ २१ ॥ सागर शैवना घरथी ए इव्य
 लीधुं रे ॥ जाण्यो नरसंचार ॥ जणतो रे ॥ जणतो रे गणतो पण
 निःफल थई रे ॥ २२ ॥ तव नासंतां पकडयो तुम्ह डुईर नरें रे ॥
 वात कही रह्यो मौन ॥ तेहनें रे ॥ तेहनें रे नेह आणी मंत्री जणो रे
 ॥ २३ ॥ चोये खंमैं ढाल अग्यारमी ए कही रे ॥ सुणतां मंगलमाल ॥
 घाय रे ॥ घाय रे इणपरें गाय पदम मुनि रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २५ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ सुणो एकदिननो संहयो, अजंकार नरराय ; दीसे नहीं कहो कि
 णदिना, यमनें अचरिज घाय ॥ १ ॥ परिव्राजक कहे आपीउं, सा
 यशी शिरदार ; मंत्रि कहे ज्या निमित्तथी, तव कहे तास विचार ॥ २ ॥

सावळी नगरी वसे, जीवथी अधिको जाणी; मित्र गंधर्वदत्त नामथी,
माहरो ते मन आणि ॥ ३ ॥ इंदुदत्त शेठनी धूआ, कन्या नाम कहं
त; वासवदत्ता वेगशुं, तात अन्यनें दित ॥ ४ ॥ पगरण मांशुं पर
एवा, तव माहरो तिहां मित्त; कन्या विण करीयें किशुं, चिंतवतो
एम चित्त ॥ ५ ॥ मरवुं अंतें ए विना, अपहरुं चिंती एम; अपहरी
परण्यो आपथी, नरपति जाणी नेम ॥ ६ ॥ रुषिकन्याने अपहरी,
करे एहवुं कहो केम; एम चिंती अवनपति, नयरथी काढे नेम
॥ ७ ॥ जीविकनामें मित्र जे, तेहनें साथें ताम; आव्यो मुज पासें
अधिक, इहा धरतो आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ म्हें पूठ्युं ते मित्रनें रे, आव्या तुम्हें शे हेत ॥ मनना मान्या ॥ वात
सवे धुरथी कही रे, सांजली ते संकेत ॥ मन० ॥ १ ॥ आवो आवो रे मित्ता
जलें आव्या, तुम आवे सवि सुख थाय ॥ मन० ॥ ए आंकणी ॥ ते
हना दुःखनें कापवा रे, दीधो नृप अलंकार ॥ म० ॥ जीविकनें तिहां
मोकदयो रे, विनव्यो नृप सुखकार ॥ म० ॥ २ ॥ देखी ते अलंकारनें
रे, नूपति परसन्न थाय ॥ म० ॥ मोकले महर्दिक पुरुषनें रे, हेत धरी
नरराय ॥ म० ॥ ३ ॥ उत्सव महोत्सव लावीआ रे, गंधर्वदत्त पुरमां
हि ॥ म० ॥ मात पिता वली सयणनें रे, मलिया धरी उहाह ॥ म०
॥ ४ ॥ वासवदत्तानें मद्या रे, जांग्यां दुःख विठोह ॥ म० ॥ मंत्रि
कहे रूडुं कछुं रे, ए तुम्ह गुण संदोह ॥ म० ॥ ५ ॥ मंत्रि कहे मित्र
वत्सलू रे, तुम्ह सम पुरुष जे होय ॥ म० ॥ चिंते पूर्व पुरुष जिके रे,
ते अपराधी न कोय ॥ म० ॥ ६ ॥ मूक्या सहु धन प्रमुखनें रे, परि
ब्राजकने एम ॥ म० ॥ कहे मंत्रि तम्हें पालवुं रे, आप विवेक सम
नेम ॥ म० ॥ ७ ॥ परिव्राजकनें विसर्जित रे, हवे धनकुमरें ताम
॥ म० ॥ विसर्ज्या सावळीयें रे, आप चाव्या निज गाम ॥ म० ॥
॥ ८ ॥ वयराड नयर आव्या यदा रे, कापडी मिलीया ताम ॥ म० ॥
तेहमां पोतें चालीआ रे, सायर तीरने ताम ॥ म० ॥ ९ ॥ जूथ घणुं

गजराजतुं रे, उठयुं ते मारण धाय ॥ म० ॥ कापडी सहु दिशो दिश
 गया रे, धन पूतें गज थाय ॥ म० ॥ १० ॥ पकडयो धन पाडयो
 धरा रे, माखो नहीँ दैवयोग ॥ म० ॥ उठाव्यो आकाशमां रे, उप
 न्यो मनमां शोग ॥ म० ॥ ११ ॥ दंतोशलें ऊडपुं हवे रे, इणि अव
 सरें वड एक ॥ म० ॥ तस शाखा पडतां थकां रे, आलंब्यो धरी टेक
 ॥ म० ॥ १२ ॥ इण अवसर निजहाथिणी रे, अन्य मतंगल आय
 ॥ म० ॥ पीडा करी तिणें रोवती रे, सांजलि गयो तिहां धाय ॥ म० ॥
 १३ ॥ वडशिखरें चढयो धन हवे रे, देखे तिहां एक तीड ॥ म० ॥
 लावक मूकी रयणावली रे, देखी गई तस पीड ॥ म० ॥ १४ ॥
 उजखीनें लीधी तिणें रे, मन चिंते एम धन्न ॥ म० ॥ आपुं जई
 नृपनं सुदा रे ॥ सावढी जुन मन्न ॥ म० ॥ १५ ॥ पठें जाशुं निज
 म्थानकें रे, उतखो तिहांथी तेह ॥ म० ॥ चाव्यो सावढी नणी रे,
 इण अवसर जुड एह ॥ म० ॥ १६ ॥ चाकर नर गया जे हता रे,
 निणें कह्यो अवदात ॥ म० ॥ राय कोप्यो ते उपरें रे, अधविच मे
 हेजी आयात ॥ म० ॥ १७ ॥ तेहनो दंम तुम्ह ए कखो रे, धनकु
 मर लेई साथ ॥ म० ॥ पेसजो माहारा नयरमां रे, सांजली ते गयो
 साथ ॥ म० ॥ १८ ॥ खोजे धनकुमारनं रे, प्रियमेलकें इणें नाम
 ॥ म० ॥ तान्निवाह सुत नीरखिउं रे, मलीआ सहु तिणें ठाम
 ॥ म० ॥ १९ ॥ वात कही साथें थया रे, मलीआ हवे नूपाल
 ॥ म० ॥ राजा हरख्यो हियडले रे, कसुं वृत्तांत रसाल ॥ म० ॥
 २० ॥ देखाडी रयणावली रे, विस्मित मन नरराय ॥ म० ॥ कर्म
 परिणाम विचित्रता रे, चिंतवी करे सुपसाय ॥ म० ॥ २१ ॥ ए आपी
 न्हें नुज्जें रे, म करीश प्रार्थनाजंग ॥ म० ॥ अथवा राज्य ए ताहरुं रे,
 नुज गुण निर्मज गंग ॥ म० ॥ २२ ॥ साथ करी हवे मोटिको रे,
 आप्या रयण मणितार ॥ म० ॥ आनूपण वली बहु दीयां रे, वाणि
 ग वेश उदार ॥ म० ॥ २३ ॥ सुसम नयरें मोकल्या रे, मलियां मा
 यनं ताय ॥ म० ॥ साहमो पुरजन निकल्यो रे, मात पिता पडयो

पाय ॥ म० ॥ १४ ॥ पेसारा महोत्सव कखो रे, दीधां वली महादान
॥ म० ॥ सर्व चैत्यें पूजा करी रे, आव्या निज घरतान ॥ म० ॥
॥ १५ ॥ चोये खंमैं वारमी रे, समरादित्यने रास ॥ म० ॥ सुंदर पद्मवि
जय कही रे, सुणतां सुख सुविजास ॥ म० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एकांतें एणे अवसरें, पूठे मात पिताय; कहां तुम्ह तरुणी
किहां गई, तव नांखे सुणो ताय ॥ १ ॥ सर्व वात सोंपी जदा, मात
पिता कहे ताम; अनुचित ए तुमने अठे, इणशुं नहीं अम्ह काम
॥ २ ॥ कल्पवृक्षें कौअच किहां, तिणे मूको संताप; कहे धनकु
मर ए केहवो, इण अवसर आजाप ॥ ३ ॥ मात पिता महिमा करे,
धनदेव जहनी धन; मानंता निज आतमा, स्नेही मली सज्जन
॥ ४ ॥ नयर बाहिर ते यहनी, पूजा करी प्रमाण; मित्रशुं गया
प्रमोदशुं, नाम सिद्ध उद्यान ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ हरणी जव चरे ॥ लालनां ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां अशोकतरु तले ॥ लालनां ॥ लला हो ॥ बहु मुनिनें परिवार
॥ ए गुरु वारु रे लालनां ॥ अठार सहस सीतांगना ॥ ला० ॥ ल० ॥
धोरी ते अणगार ॥ ए गुरुणा ॥ १ ॥ कोशल देशनो नरपति ॥ ला० ॥
ल० ॥ विनयंधर नरराय ॥ एगुणा ॥ तेहना सुत जशोधर गणी ॥ ला० ॥
ल० ॥ निर्मम चित्त सदाय ॥ ए गुणा ॥ २ ॥ पंच समितें समिता रहे ॥
॥ ला० ॥ ल० ॥ गुप्तइंद्रिय निर्ग्रथ ॥ ए गु० ॥ गुप्त ब्रह्मचारी अकिंच
नो ॥ ला० ॥ ल० ॥ साधंता शिवपंथ ॥ ए गु० ॥ ३ ॥ श्रमणसिं
ह देखी करी ॥ ला० ॥ ल० ॥ हैयडे हर्ष न माय ॥ ए गु० ॥ धर्म
मन तस उद्वेशुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ चिंतवे इम निरमाय ॥ ए गु० ॥
॥ ४ ॥ अहो अहो रूप अहोचरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो लावण्य
विजास ॥ ए गु० ॥ अहो सौम्यता अहो उद्यमी ॥ ला० ॥ ल० ॥
अहो जौवन सुप्रकाश ॥ ए गु० ॥ ५ ॥ अनंग विजय अहो एहनो ॥
॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो अहो निरहंकार ॥ ए गु० ॥ अहो देखवा

योग्य एह ठे ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो सेववा योग्य सार ॥ ए गु० ॥
 ॥ ६ ॥ पासैं लई करी वंदना ॥ ला० ॥ ल० ॥ आचारय मुनिराय
 ॥ ए गु० ॥ धर्मलान मुनिवर दिउ ॥ ला० ॥ ल० ॥ बेठा गुरुने पाय
 ॥ ए गु० ॥ ७ ॥ करकज जोडी पूठतो ॥ ला० ॥ ल० ॥ किम उप
 न्यो निर्वेद ॥ ए गु० ॥ रूप मनोजव सारीखुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ किम
 जीत्या तुम्हे वेद ॥ ए गु० ॥ ८ ॥ किम दीक्षा प्रभु आदरी ॥ ला०
 ॥ ल० ॥ तव वोढ्या सूरिराय ॥ ए गु० ॥ ए संसार असार
 मां ॥ ला० ॥ ल० ॥ निर्वेद श्यो पूठाय ॥ ए गु० ॥ ए ॥ धन कहे गु
 रुजी साचलुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ एहतो सहुने समान ॥ ए गु० ॥ पू
 ठुं विशेष कारण तिणे ॥ ला० ॥ ल० ॥ जांखो ए जगवान ॥ ए गु०
 ॥ १० ॥ मुनि कहे माहरुं चरित्र जे ॥ ला० ॥ ल० ॥ ते निर्वेदनुं
 हेत ॥ ए गु० ॥ धन कहे प्रभु अनुग्रह करो ॥ ला० ॥ ल० ॥ कहेवे
 ए संकेत ॥ ए गु० ॥ ११ ॥ तव जशोधर मुनि चिंतवे ॥ ला० ॥ ल० ॥
 दीते सौम्य आकार ॥ ए गु० ॥ पामे वैराग्य कदापि जो ॥ ला० ॥
 ॥ ल० ॥ जांखुं निज अधिकार ॥ ए गु० ॥ १२ ॥ सूरि कहे तूं सांन
 ले ॥ ला० ॥ ल० ॥ एक मनां सावधान ॥ ए गु० ॥ इहांहीज विशा
 ला पुरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अमरदत्त राजान ॥ ए गु० ॥ १३ ॥ सुरें
 द दत्तनामैं हुं हतो ॥ ला० ॥ ल० ॥ मात जशोधरा जाण ॥ ए गु० ॥
 नयणावली मुऊ नारया ॥ ला० ॥ ल० ॥ नवमे नवें सुप्रमाण ॥ ए गु०
 ॥ १४ ॥ तातें चरित्र आदखुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ राज्य नार मुऊ था
 पि ॥ ए गु० ॥ हुं पण समकित पामीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ अंतरायात
 मयापि ॥ ए गु० ॥ १५ ॥ नयणावलीशुं मोहीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥
 पालूं राज्य महंत ॥ ए गु० ॥ पलितठलें दूत आवीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥
 धर्मरायनो नंत ॥ ए गु० ॥ १६ ॥ नयणावलीनी दासीयें ॥ ला० ॥
 ॥ ल० ॥ सारसीया इण नाम ॥ ए गु० ॥ दाखव्यो देखी चिंतवें,
 ॥ ला० ॥ ल० ॥ पुजजनो परिणाम ॥ ए गु० ॥ १७ ॥ अहो अहो
 चपजता लोकनी ॥ ला० ॥ ल० ॥ मनुष्यपणुं ए असार ॥ ए गु० ॥

अहो अहो मोह परानवे ॥ ला० ॥ ल० ॥ सार न कांय संसार ॥
 ए गु० ॥ १० ॥ आयु नीर उलेठतां ॥ ला० ॥ ल० ॥ रात्री दिवस घ
 डि माल ॥ ए गु० ॥ चंडसा सूरज बलदिश्या ॥ ला० ॥ ल० ॥ फेर
 वे अरहट काल ॥ ए गु० ॥ ११ ॥ तिणें हवे परमादे शखुं ॥ ला०
 ॥ ल० ॥ लेवं चारित्र उदार ॥ ए गु० ॥ नयणावली निज नारीने,
 ॥ ला० ॥ ल० ॥ संजलाव्यो ए विचार ॥ ए गु० ॥ १२ ॥ नयणावली
 कहे सांजलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ जे तुम्हनें मननाय ॥ ए गु० ॥ पण
 तुम साथें आदरुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ श्रमणपणुं सुखदाय ॥ ए गु०
 ॥ १३ ॥ में चिंत्युं जुठ केटलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ मुज उपर अनुराग
 ॥ ए गु० ॥ अहो विवेक एहनो जूठ ॥ ला० ॥ ल० ॥ चित्त अनुजा
 यि अथाग ॥ ए गु० ॥ १४ ॥ संविनागी सुखडुःखमां ॥ ला० ॥ ल० ॥
 अहो एक पत्नी एह ॥ ए गु० ॥ अहो ठंदें मुज चालती ॥ ला० ॥
 ल० ॥ मुज उपर घण नेह ॥ ए गु० ॥ १५ ॥ चोथे खंमें तेरमी
 ॥ ला० ॥ ल० ॥ नांखी पदमें ढाल ॥ ए गु० ॥ गुरु कहे आगले सांजलो
 ॥ ला० ॥ ल० ॥ माहरी वात रसाल ॥ ए गु० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अर्क अनुक्रमें आयम्यो, म्हें चिंत्युं मनमांहि ; एवडी आपद एहनें,
 अमसम श्यो उहाह ॥ १ ॥ सोममंदल हवे संचखो, दीपक जुवन उ
 द्योत ; वासजुवन वेगें सज्युं, जिहां मणिरयणनी ज्योति ॥ २ ॥ क
 स्तूरी कर्दम करी, निति लगाई नार ; प्रवर तलाई पाथरी, शय्या क
 खो शिणगार ॥ ३ ॥ कुसुमदाम वर लटकती, धूमघटा अई धूप ; म
 यण पूजीनें माननी, चित्तथी करी अति चूंप ॥ ४ ॥ वासजुवनमां वैग
 थी, आव्यो अवनीपाल ; पद्योंकें बेगो प्रगट, काढयो कायंक काल ॥
 ॥ ५ ॥ राणीनो परिवार जे, निकली गयो निजस्थान ; राणी सूती रं
 गशुं, नरपतिमन जुन ध्यान ॥ ६ ॥ मनमां एणी परें मानतो, सर्व
 ठांमवुं सेज ; पण राणी परिणामथी, ठंमाये किम ठेल ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ एहनी गति एहज जाणे, रखे कोई
संदेह आणे रे ॥ ए देशी ॥ अथवा विनयपद
दशमुं प्रकाशुं ॥ ए देशी पण चाले ठे ॥

॥ तुमे जोज्यो नारी चरित्र रे ॥ जेहनां ठे चरित्र विचित्र रे ॥ ए आ
कणी ॥ सुतो नरपति जाणीनें, उठी नयणावली राणी रे ॥ मूकी
ढोलीउं उतरी हेठी, नूपति चमक्यो जाणी रे ॥ १ ॥ तुमे० ॥ शंका
सहित ढार उवाडी, निकली रमजम करती रे ॥ में चिंत्युं मुज वि
रहनी कायर, रखे जइनें मरती रे ॥ २ ॥ तुमे० ॥ नीकलवानी आ वेला
नदीं. जेई कर करवाल रे ॥ एम चिंती नीकलीउं पूठें, गइ जिहां प्रा
सादपाल रे ॥ ३ ॥ तुमे० ॥ ते कुब्जक उठाव्यो करथी, तव म्हें
चिंत्युं एम रे ॥ एहने संजलावीनें मरगो, नहीं तो उठावे केम रे ॥ ४ ॥
तुमे० ॥ यूमते नयनें कूबज उठयो, पूठे किम इणि वेला रे ॥ आवी
आज तदा में चिंत्युं, आज कहुं केम हेला रे ॥ ५ ॥ तुमे० ॥ अ
थवा आज उचित नहीं वेला, तिणें कारणें एम बोले रे ॥ पण सां
नज्जुं एहनो हवे उत्तर, ज्यो मनमांथी खोले रे ॥ ६ ॥ तुमे० ॥ राणी
कहे नृप धात विषम ठे, मोडा सुता राय रे ॥ तिणें एटली वेला
थई मुजनें, जाणजो ए अंतराय रे ॥ ७ ॥ तुमे० ॥ एटले कुब्जे देवीशुं
रे, आलिंगनादिक दीधां रे ॥ चुंवननें विषय सीत्कारादिक, सहुपरें
परें कीयां रे ॥ ८ ॥ तुमे० ॥ क्रोधानल संधूकण माहरुं, विषय
तेवन इणे सामुं रे ॥ अविवेक पवनयकी मुज लागो, खडु ते म्या
नयी काढुं रे ॥ ९ ॥ तुमे० ॥ वली मुज चिंता एम थई, जिणें जींत्या
वहु गजान रे ॥ तो कुशीलिणी देवी कुबज ए, ठे सारमेय समान रे
॥ १० ॥ तुमे० ॥ अहो अहो नारी चरित्रनें, जुउं मुज किणीपरें
जांये रे ॥ आचरणा केहवी ठे एहनी, एवहुं कपट ते दाखे रे ॥
॥ ११ ॥ तुमे० ॥ यतः ॥ “अन्यं मनुष्यं हृदये निधाय, अन्यं नरं दृष्टि
निगहयन्ति ॥ अन्यस्य दत्त्वा वचनायकाश, मन्येन सार्धं रमयन्ति रामा
॥ ” ॥ जगमजे मणिपयं, आगाते पंखिआण पयपंती ॥ महिला

हियाण मग्गो, तिन्निवि विरला पयंपंती ॥ १॥ दोहो ॥ “स्त्री प्रायें सवि वंक
 डी, केण पतीजें तास; माथे घडो चडाय करी, पढे दिये गजपास ॥ १॥”
 बाल कालथी जोगवीनें, सुत पण एहनो काल रे ॥ राज्य बेसारवो
 माहरे, तिणें हलकाई नूपाल रे ॥ १२ ॥ तुमे० ॥ अविवेक बहुज
 नारी होये, एहमां अचरिज कांय नाहीं रे ॥ आदरबुं चारित्रनें, अंत
 राय थाये तेमांही रे ॥ १३ ॥ तुमे० ॥ प्रायें जोता सरिता परें, कांय
 नीचगामी होये नारी रे ॥ एहनुं वचन माने जे कोई, तेहना मुख उ
 पर ध्वारी रे ॥ १४ ॥ तुमे० ॥ यतः ॥ सवैयो ॥ “कामिनीकी बात
 माने ताके मोरे धूर ज्युं ॥ कपट निपट बोले हियाकी न बात खोले, मन
 थें उठाय कर कहे सब कूर ज्युं ॥ जेसोही पतंगरंग तेसोही त्रियाको
 संग, विठुरत बार नांही जैसो नदीपूर ज्युं ॥ कहे कवि मुनिचंद सुणो
 हो सज्जनजन, कामिनीकी बात माने ताके मोरे धूर ज्युं ॥ १ ॥” अवि
 वेक बहुजनारी तणो ए ठे, वली कुमर तणो हजकाइ रे ॥ विघन वली
 चारित्रमां होशें, नरपति इम चित्तमां लाइ रे ॥ १५ ॥ तुमे० ॥ मारबुं न
 घटे मुजने ए इम. वाढ्यो निजपरिणाम रे ॥ म्यान करी करवालने आ
 व्यो, निज सज्जायें तव ठाम रे ॥ १६ ॥ तुमे० ॥ उतलुं चित्त राणी
 थकी, वली वाढ्यो धर्मव्यापार रे ॥ शय्यायें बेठो चिंतवे, अहो नारीशिरें
 धिःकार रे ॥ १७ ॥ तुमे० ॥ नूमि विना बिषवेजडो, अग्नि विहूणी चूमेज
 रे ॥ जोजन विना विशूचिका अहो, एतो नवो कोइ खेज रे ॥ १८ ॥
 तुमे० ॥ सचेतना मूर्खा कही वलि, विण उपसगें मारी रे ॥ राशडीविण
 ए पासजो, विणहेतु मरण डुवारी रे ॥ १९ ॥ तुमे० ॥ बेडी विणा गुप्ति
 कही ठे, ए नारी संसार रे ॥ अथवा चिंता शी करुं, ए ठे संसार अ
 सार रे ॥ तुमे० ॥ २० ॥ जाणी असार ए कारणे, ठांहुं तुं ए परिवार
 रे ॥ एम कांय गुन परिणामथी, रहूं करतो एम विचार रे ॥ २१ ॥ तु
 मे० ॥ आवी राणी एणे समे, हुं सूतो एहबुं जाणी रे ॥ राणी पण
 सूति खरी, मनमां कांय त्रांति न आणी रे ॥ २२ ॥ तुमे० ॥ आलिं
 गन मुजनें कलुं, म्हें पण नवि दाख्यो विकार रे ॥ पूर्वपरें वरत्यो तदा

एम, करतां थई सवार रे ॥ ३३ ॥ तुमे० ॥ रयणी अनर्थनी खाणी
गई, करे करणी निज परजातें रे ॥ बेठा आस्थानिकामंमपें, मली रा
जकचेरी विख्यात रे ॥ ३४ ॥ तुमे० ॥ चोथे खंमैं चौदमी, कही प
अविजय एम ढाल रे ॥ ओताजन सुणजो सवे वली, आगल वात
रस्ताल रे ॥ ३५ ॥ तुमे० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रि मंमल जेलुं मळ्युं, वारु करे विचार; विमलमति मुखनें वली,
पनण्युं निज परकार ॥ १ ॥ पनणे मंत्री एणिपरें, अवसर नहीं महा
राय; गुणधर कुमर प्रगुण नहीं. राज्य नारनें ठाय ॥ २ ॥ परजानें
जे पालवी, ते पण धर्म कहंत; कहे नरपति अम कुलतणी, एहवी
स्थिति आवंत ॥ ३ ॥ दूत धर्मनो देखीने, रहेवुं नहीं घरमांही; मंत्री
कहे तुम्ह मन रुचि, आदरीयें उत्साहिं ॥ ४ ॥ अनुक्रमें दिवस गयो
वही, रात्री पडी तव राय; वासलुवनमांही मन वगर, सूतो चित्त
सुखदाय ॥ ५ ॥ सेज रमंतां कवण गुण, जास न मन्न इमन्न; प्रीति
विदूणो प्रेम रस, जाणे अलूणुं अन्न ॥ ६ ॥ नयणें आवी नीडडी,
जामिनी पाठिले जाम; आव्युं सुपनुं एहवे, नांखुं ते अनिराम ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ देशी जट्टिआणीनी ॥

॥ देखे स्वपनुं एम, उज्ज्वज घरनें माथे हो वली बेठो सिंहासन उपरें ॥
आवी यशोधरा माय, प्रतिकूज नांखी पाडयो हो गयो सातमी जूमिनें
परिसरें ॥ १ ॥ आवी पूठे माय, आलोटतो आलोटतो हो वलि हुं
वगी मेरु चडयो ॥ इणसमे जाग्यो जाम, तव म्हें मनमां चिंत्युं
हो ए खणुं विषम आवी अडनुं ॥ २ ॥ पण परिणामें सार, गुं निप
जगं एहथी हो तेहनी खबर पडे नहीं ॥ पण साधन परलोक, कर
वा मांमयुं रुहुं हो वली जे यानार याव सही ॥ ३ ॥ धरमध्यानथी
एम, रात गइ हवे बेठो हो आस्थानें जईनें मुदा ॥ जोडी कचेरी
ताम, आवि यशोदा माता हो विनयें उठयो हुं तदा ॥ ४ ॥ मुक्त
पूठे सुखदात, म्हें कीथो परणाम हो पीठिकायें बेसारीयां ॥ एह

थयुं नलुं काम, कहेलुं निज अनिप्राय हो माता जिणे इहां आवो
 आं ॥ ५ ॥ न कहुं संजमवात, स्नेहें मुजनें माता हो संजम लेवा
 नवि दीये ॥ स्वप्न जणावे वात, अंबाथी अंतराय हो आशंका माहरे
 हिये ॥ ६ ॥ वचन न मात ठेलाय, दुःप्रतिकार ते जांख्या हो
 मात पिता ठाणंगमां ॥ विरम्युं चित्त वली मुज, तिणे रहेवाय
 न इहां हो बलती चयनी आगमां ॥ ७ ॥ तिणें कहुं एहवी वात,
 जिणे मुज आणा आपे हो स्वप्न कहुं ते रीतलुं ॥ बोळ्यो एम वि
 चारि, माता स्वपनुं लाधुं हो सांजलजो परतीतलुं ॥ ८ ॥ कुमरनें था
 पी राज्य, मस्तक मुख मुंढावी हो सयलसंग त्यागि थयो ॥ श्रमण
 थइ गुनसंग, घर उपर जब बेठो हो तिहांशी वली पडी गयो ॥ ९ ॥ रा
 त्रीनें पावले पहोरें, देखिनें हुं जाग्यो हो ते सांजलीने खल जली ॥
 थू थूकार करंत, माबा पगलुं चांपे हो पृथ्वीमंजल वली वली ॥ १० ॥
 अपमंगल थाउं दूर, चिरंजीवो तुम्हें पुता हो निर्विघ्नें मही पालजो ॥
 स्वपननें घातनिमित्त, जांखे मोशी मुजनें हो पुत्रवचन मुज पालजो
 ॥ ११ ॥ स्वप्न शास्त्रनी जाण, कहे एम आपो सुतने हो राज्य तुम्हें
 घरमां रहो ॥ ल्यो तुम्हें साधुवेष, इत्वर कालनी दीक्षा हो घरमां
 बेठा तुम्हें ग्रहो ॥ १२ ॥ म्हें कलुं वचन प्रमाण, तव वली बोली
 पडिआ हो तास उपाय हवे सांजलो ॥ जल थल खहचर जीव, हणी
 कुलदेवी पूजो हो विघ्न सवे दूरें टलो ॥ १३ ॥ शान्तिकरम करो एम,
 वेदमां जांख्या विधिथी हो म्हें कलुं ढांकी काननें ॥ माता शी कहो
 वात, शान्तिकर्म हिंसायें हो करतां लेवां प्राणनें ॥ १४ ॥ धर्म अहिंसा
 मूल, जांख्यो ठे सहु शास्त्रें हो तेहनें बाधा किम करो ॥ मनथी हणी
 यें जीव, तो पण नवमां नमीयें हो नवसायर थाये दुस्तरा ॥ १५ ॥
 जे करे परने दुःख, पामे पोतें तेहलुं हो अफज कर्म जाये नहीं ॥
 शान्तिकरम पण तास, परनें पाप न चिंते हो इह परजव सुखीउं
 सही ॥ १६ ॥ “यतः ॥ तेणे जहा संधि मुहे गहीए, सकम्मुणा कि
 चइ पावकारी ॥ एवं पयापेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मुक्क

अथ ॥ १ ॥ कृतकर्महृयोनास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्य
 मेव नोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं ॥ १ ॥” निज पर आत्म जीव,
 जे सरिखा करी जाणे हो तेणे मोक्षमार्गनें साधीयें ॥ माता बोली
 ताम, पुण्य पाप परिणामें हो होये वेद ते एम आराधीयें ॥ १७ ॥
 “यतः ॥ जस्त न लिप्पई बुद्धी, हंतु ए इमं जगं निरवसेसं ॥ पावेण
 सो न लिप्पइ, पंकयकोसोव सज्जिजेण ॥ १ ॥” अथवा जो होये
 पाप, तो पण कीजें तनुनें हो नीरोगतानें कारणे ॥ कारणें करीयें
 पाप, तो पण दोष न लागे हो बली होये विघ्ननिवारणे ॥ १८ ॥
 तव म्हें कछुं हे मात, किहांथी परिणाम रूढो हो, अकारज करवुं
 ठे जिहां ॥ हाजाहज विप स्वाय, ते नर किहांथी जीवे हो जो अमृत
 बुद्धि करे तिहां ॥ १९ ॥ पाप नहीं जग अन्य, हिंसा उपर नांखुं हो
 जिणें सद्गुणें जीववुं इच्छता ॥ तिणे जे वेदवचन, ते पण खोटुं जाणो
 हो बली जेह्थी दोष न प्रीठता ॥ २० ॥ यतः ॥ “न धम्म कक्का
 परमठि कक्कं, न पाणहिंसा परमं अकक्कं ॥ न पेमरागा परमठि
 बंधो, न बोहिलाना परमठि जानो ॥ १ ॥” बली नीरोगी थाय,
 रूप आउखुं पामे हो जे अजयदान दाता सदा ॥ सौजागी शिरदार,
 परजव पण जो जावे हो पण दुःख न पामे ते कदा ॥ २१ ॥ यतः ॥
 “दीहाउउं सुहवो, नीरोगो होइ अजयदाणेण ॥ जम्मंतरेवि जीवो,
 सयजजणसलाहणिकोय ॥ १ ॥” तिणे व्रत पाजवुं श्रेय, देह आ
 रोग्यनें काजें हो बली पाप करी देह गुं करुं ॥ तिणें मूको विखवाद,
 घोर पाप जिणें होय हो ते हिंसामां चित्त नहीं धरुं ॥ २२ ॥ चोथे खंमें
 दाज, पन्नरमी ए नांखी हो पण मोशीनी एम मति खसी ॥ धन ध
 न ए नरराय, जीवहिंसा नवि कीधी हो इम पद्मविजय मुनियें इ
 नी ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माय कहे सुण मादरुं, वचन करे किम व्यर्थ; मात वचन जिहां
 मानवुं, नहिं तिहां शाम्ननो अर्थ ॥ १ ॥ एम कहीनें मुज पाये पडी,

तव में चिंत्युं एम; इत ठे वाघने इत नई, कष्ट थयुं करुं केम ॥ २ ॥
 एक दिशा अंबावयण, अन्यदिशा वयचंग; गुरु विषाक व्रत जंग
 ये, सुणियुं ठे गुरुसंग ॥ ३ ॥ एम चिंतवतो अंबनें, कहे सुणो
 एक वात; जो तुम्ह वाहलो जीवयो, तो मूको ए धात ॥ ४ ॥ जे
 हथी दुर्गति जाईयें, ते किम करियें मात; अथवा हुं मुज आत्म
 नो, घणुं तो करशुं घात ॥ ५ ॥ पठें मुज मांसें पूजजो, कुलदेवीने
 काज; एम कही खजते काढीउं, लाव्यो नहीं मन लाज ॥ ६ ॥ आ
 स्थान मंरुपमां थयो, कोलाहल तिणें काल, हाहाकार सहुए कहे,
 काम न करो विकराल ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ तूंगीआ गिरि शिखर शोहे ॥ ए देशी ॥

॥ ऊठी अंबा कहे म करो, साहस एवहुं एम रे ॥ कर जाली कहे
 अहो तुजनें, मात उपरें प्रेम रे ॥ १ ॥ अहो नावि नाव बलीउ ॥
 ए आंकणी ॥ तुज मुए में जीवहुं केम, ते कारण सुए पुत्त रे ॥ प्र
 कारांतरें मात मारी, एह तुजनें जुत्त रे ॥ २ ॥ अहो ॥ बोल्यो कु
 कुट इण अवसरें, शब्द सुण्यो तस मात रे ॥ मात कहे सुए पुत्र श्रुति
 मां, नांखीयुं विख्यात रे ॥ ३ ॥ अहो ॥ एह एहनो कल्प नांख्यो,
 जो ए अवसर जास रे ॥ शब्द सुणीयें तेहनो अथ, करीयें वध वली
 तास रे ॥ ४ ॥ अहो ॥ तेह कारण एह कुकुट, माख तुं शुनकाज
 रे ॥ तव कह्युं में मात सुणजो, न करुं एह अकाज रे ॥ ५ ॥ अ
 हो ॥ जीवहिंसा करुं नाहि, तुम्ह आणा जो होय रे ॥ तो मरुं हुं
 एह निश्चय, अवर न हणुं कोय रे ॥ ६ ॥ अहो ॥ मात कहे तूं
 कहे जो एम, तो सुण माहरी वाणि रे ॥ पीठमय कुकुट बनावी, मा
 ख तूं निज पाणि रे ॥ ७ ॥ अहो ॥ एटलुं मुज वचन माने, एम
 कही तरवार रे ॥ जूटी लेईनें पडी पाए, मुज बीजी वार रे ॥ ८ ॥
 अहो ॥ एम सुणी मुज मात नेहें, नाण नेत्र विलीन रे ॥ मातनुं
 म्हे वचन मान्युं, मति थई मुज दीन रे ॥ ९ ॥ अहो ॥ ज्ञानबहु
 पण आत्म अर्थ, कांय नावे काज रे ॥ दूर देखे नयन पण निज,

रूप देखे न चाज रे ॥ १० ॥ अहो० ॥ लेप्पकारनें दुकम कीधो, कू
 कडानो ताम रे ॥ तेह पितनो करी कुकुट, लावीउ तिण ताम रे ॥
 ॥ ११ ॥ अहो० ॥ मात कुजदेवी समीपे, लेई मुजनें जाय रे ॥ कू
 कडो आगल ते थापी, कहे मुजनें माय रे ॥ १२ ॥ अहो० ॥ म्यान
 थी ए खड्ड काढ्युं, तव कहुं म्हें तेम रे ॥ माता कहे कुजदेवीने हवे,
 धरी मुजहुं प्रेम रे ॥ १३ ॥ अहो० ॥ स्वप्न मातुं पुत्रे दीतुं, तस नि
 वारण थाय रे ॥ एह कूकडो पुत्र मारे, कुशल करजो माय रे ॥ १४
 ॥ अहो० ॥ एम कही मुज शान कीधी, एह कुकुट मारी रे ॥ मारीउ म्हें
 कूकडो जब, पूजा कीधी तिवार रे ॥ १५ ॥ अहो० ॥ सिद्धकर्मा स
 पकारनें, कहे देव निःशेष रे ॥ रांध्य तूं ए मांस लेई, हरखियें जेह दे
 खी रे ॥ १६ ॥ अहो० ॥ म्हें कहुं रे मात ए शुं, मांस खाधे थाय रे ॥
 दान ध्यान तप नियम मंत्रह, औषध विजयें जाय रे ॥ १७ ॥ अहो० ॥
 जेर खाधे रुअहुं जे, मारे एकज वार रे ॥ मांस नवनव नरक घाले,
 दुःख दौर्भाग्य अपार रे ॥ १८ ॥ अहो० ॥ वैद्य औषधें मांस आपे, ते
 पण एहनी ब्हार रे ॥ विजत्स डुर्गंधइंद्रिय मलथी, उपन्युं ए असार रे
 ॥ १९ ॥ अहो० ॥ मांस वर्जे सांजलो गुण, चोर शकुन पिशाच रे ॥
 नूत ग्रहनें अग्नि ए सवी, तृणसमा होय साच रे ॥ २० ॥ अहो० ॥
 सुखें जीवे सज्जति होय, ए जिनशासन नीति रे ॥ सुणो परदर्शनें जां
 ख्युं, तेह सघली रीति रे ॥ २१ ॥ अहो० ॥ विपपरें जे मांस वर्जे,
 स्वर्गलोकें जाय रे ॥ मुनि वशिष्ठ कहे इणपरें, महा नारत ठाय रे
 ॥ २२ ॥ अहो० ॥ “यतः ॥ यावज्जीवं च यो मांसं, विषवत्परिवर्ज
 येत् ॥ वशिष्ठोऽनगवान्नाह, स्वर्गलोकस्य संस्थितिः ॥ १ ॥ यावन्ती
 पशुरोमाणि, पशुगात्रेषु नारत ॥ तावद्वर्षसहस्राणि, पच्यन्ते नरके
 नगः ॥ २ ॥ आकाशगामिनो विप्राः, पतन्ति मांसजक्षणात् ॥ विप्राणां
 पतनं दृष्ट्वा, त्याज्यं मांसं विवेकिनिः ॥ ३ ॥ शुक्रगोणितसंनूतं, मां
 सं यः प्रादते नरः ॥ सजनः कुरुते शौचं, हसन्ति तेन देवताः ॥ ४ ॥
 किं जापद्मो मनिर्यमः, तीर्थस्नानैश्च नारत ॥ यदि स्वादति मांसानि,

सर्वमेतन्निरर्थकं ॥ ५ ॥ तिलसर्पपमात्रं तु, योमांसं नहते नरः ॥
 सयाति नरकं घोरं, यावच्चइदिवाकरौ ॥ ६ ॥ इत्यादि महानारते ॥
 अंबा बोली पुत्र न करो, एहमां कांय विचार रे ॥ वचन माहरुं सर्व
 मान्युं, करो एहनो आहार रे ॥ १३ ॥ अहो ॥ सत्य मांस न एह
 कल्पित, तेहमां शो दोष रे ॥ एम कहे में वचन मान्युं, कीधो पापनो
 पोष रे ॥ १४ ॥ अहो ॥ जेह नांखुं तेह कीधुं, अशुनकर्म बंधा
 य रे ॥ सानुबंधी बंध तिणे समे, पड्यो ततकृण राय रे ॥ १५ ॥
 ॥ अहो ॥ बीजे दिन हवे कुंअर आप्यो, राज अनिषेक कीध रे ॥
 प्रवर्ज्या हवे ग्रहणहेतें, उद्यम सबलो लीध रे ॥ १६ ॥ अहो ॥ खंम
 चोथे शोलमी ए, पद्मविजयें ढाल रे ॥ नांखी समरादित्य केरा, रास
 मां सुरसाज रे ॥ १७ ॥ अहो ॥ सर्व गाथा ॥ ५११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपने कहे नयणावली, आर्यपुत्र सुणो एक; पुत्रराज्य सुख पेखी
 ने, करगुं काल विवेक ॥ १ ॥ में चिंत्युं मन मांहि एम, वात ए केम
 विरुद्ध ॥ रात्रिने हमणां केरडी, अहो अहो चरित्र अशुद्ध ॥ २ ॥
 अथवा एम पण देखीयें, जीवतो मूके जाण; मूआ साथें कोईक मरे,
 नारीचरित्र पिठाण ॥ ३ ॥ नीचगति नारी होय, विषहर गतिपरें
 वंक्र; मूठ न जाणो मांहिलो, जेदनें नजे निःशंक ॥ ४ ॥ एह विचार
 एण अवसरें, करवो न घटे कोय; एम चिंतवतो बोलीउ, इम
 हीज करवुं होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राग खंजाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी ॥

॥ चिंते राणी एम, एह नृपति दीक्षा लीये जी ॥ हुं नवि जावें साथ,
 तो लोकें निंदिजीयें जी ॥ १ ॥ मरण लहे जो राय, तो पठें मुज चिंता
 नहीं जी ॥ न मरुं जो रायनें पीठ, तो पण मिश काहुं अहिं जी ॥ २ ॥
 पालवुं बालनुं राज्य, वली मंत्रि सुख ना कहे जी ॥ एहवा जेह नि
 मित्त, तेह कलंक सवे दहे जी ॥ ३ ॥ मारण करुंअ उपाय, विषनो

जनमां आपीयें जी ॥ वेगो नोजन काम, तव सविय आहार ते था
 पीयें जी ॥ ४ ॥ नासा मुखनें ठांकि, आहार कराववा आवीआं जी ॥ च
 तुर पुरुष सुजाण, राणी पण तेडावीआं जी ॥ ५ ॥ नोजन अंते
 जाम, उठे राय चलू करी जी ॥ वंची सदुनी दृष्टि, तंबोलमां तव
 विष धरी जी ॥ ६ ॥ नखिउं ते तंबोल, वासनुवनमांहि गयो जी ॥
 आववा मांमयुं घेन, विष विकार सबलो थयो जी ॥ ७ ॥ जड थई
 जीन अत्यंत, लोचन मीचाणां तदा जी ॥ नख थया शामल वान,
 मुख कुमलाणुं मुऊ जदा जी ॥ ८ ॥ दुःख अनुभवतो ताम, पडीयो
 सिंहासन थकी जी ॥ खेद लहे पडिहार, जोवे मुऊ साहसुं चकी जी
 ॥ ९ ॥ हाहा गुं थयुं एह, एम कही ठूकडो आवीउं जी ॥ गुं थयुं
 रे महाराय, तव मुऊ उत्तर नावीउं जी ॥ १० ॥ जाण्यो जेरवि
 कार, गुंवारव तिणें कख्यो जी ॥ धाउं रे लोको धाउं, राय सिंहासनथी
 पड्यो जी ॥ ११ ॥ तेडयो वैद्य सुजाण, विषविकार उतारवा जी ॥
 चिंतें राणी ताम, रायने पूरो मारवा जी ॥ १२ ॥ जो आवे इहां वैद्य,
 तो जीवाडे नृप नणी जी ॥ एम चिंतवती तेह, हाहाकार मुखें नणी
 जी ॥ १३ ॥ ताणी थूवट पूर, मुऊ उपर आवी पडी जी ॥ करती
 बहु आंकंद, आंसुधारा नवि थडी जी ॥ १४ ॥ गजुं दाव्युं तिणि
 वार, मर्मपीडायें मरी गयो जी ॥ आव्युं आरत ध्यान, नव सघलो
 अहिजें थयो जी ॥ १५ ॥ सिद्धिनामें पाढ, दक्षिणदिशि मोरडी
 नणी जी ॥ कुवें उपनो मोर, एक दिन मोरडीनें हणी जी ॥ १६ ॥
 जेई व्याथ जुवान, दीधो गाम तलारने जी ॥ नवि आवी मुऊ पांख, वे
 दना तहु ते कारणें जी ॥ १७ ॥ खमतो नूख अपार, कीडा खाउं हुं
 नित्य प्रत्यें जी ॥ तिणें पापें मुऊ देह, पामी विस्तार कालज जते जी
 ॥ १८ ॥ पिष्ट तणो थयो नार, नाटिक मुऊनें शीखव्युं जी ॥ रूडो
 जाणी तेह, राय नणी जई दाखव्युं जी ॥ १९ ॥ गुणधर जे मुऊ
 पुत्र, जेह जाणीने राखिउं जी ॥ पूर्वनवनी मांघ, जेणे प्राणीवध
 दाखिउं जी ॥ २० ॥ ते मुऊ मरणनें दिन्न, आर्जव्यानवश ते मरी

जी ॥ करहाडदेजें गाम, धान्यपुरकनामें पुरी जी ॥ ११ ॥ कुतरी
गनें आय. उपनी ते कुतरापणे जी ॥ जन्म थयो जब तारन, महोदो
थयो ते तिहां कियो जी ॥ १२ ॥ जाणे मननी वात, मोकव्यो गुणधर
नृपनणी जी ॥ तार्यें आव्या दोय, आस्थान सजा नूपजतणी जी ॥ १३ ॥
नचरी विशालायें तेह, रावने प्रीति घणी थइ जी ॥ प्रशंसा अम्ह
दोय, राख्याथी शाता नइ जी ॥ १४ ॥ चोथे खंमें ढाल, सत्तरमी
शोहामणी जी ॥ पद्मविजय कहे एह, नविजन मन सुख कामणी
जी ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अकालमृत्युनामें अठे, श्वानाधिपशिरदार ; श्वान ते तेहनें सोपी
उं, आणी हर्ष अपार ॥ १ ॥ नीलकंठ नररायनो, पालकपंखी जाति ;
मुफनें आप्यो मोदगुं, चारुगुं वली इणि जाति ॥ २ ॥ प्रजापालण व
ली पारधि, अतिवद्वन मुफ एह ; श्वाननें यतनें साचवे, जीवघात
करे तेह ॥ ३ ॥ वचन प्रमाण करी वड्यो, केतोहिक गयो काल ;
पालंतां अम्ह प्रेमगुं, वात सुणो विकराल ॥ ४ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥ ॥ जुंमखडानी देशीमां ॥

॥ एक दिन प्रासाद उपरें, इंडनीजजिहां गोष ॥ जुं गति कर्मनी ॥ नय
णा वली चित्रशालिमां, करति कूब्जगुं जोष ॥ १ ॥ जुं ॥ गोषथी मोरे मान
नी, देखी उपन्युं ज्ञान ॥ जुं ॥ जातिसमरण जेहनें, आव्युं आरत ध्यान
॥ २ ॥ जुं ॥ क्रोधवजें तिहां कलकव्यो, चंचुनखें करे चोट ॥ जुं ॥ लो
ह जाठी जेई कूब्जनी, मुफ उपर करे दोट ॥ ३ ॥ जुं ॥ राणी प्रहारें
विद्वल थयो, पडीउं मार्ग सोपान ॥ जुं ॥ जुवटुं खेले राजीउं, लूतं
तो गयो तिणें नाथ ॥ ४ ॥ जुं ॥ राणीना अनुचर आवीया, ग्रहो ग्रहो
कहेता वाण ॥ जुं ॥ तेह कोलाहल सांजली, आव्यो जननी श्वा
न ॥ ५ ॥ जुं ॥ पकड्यो मुफनें कूतरें, देखी तेह नूपाल ॥ जुं ॥ हा
हारव करतां हण्यो, तेह श्वान विकराल ॥ ६ ॥ जुं ॥ तेह प्रहार
थी लोही वम्युं, मूक्यो मुफनें ताम ॥ जुं ॥ धरणीपीठ पड्या बिहुं,

शोक लह्यो नूस्वामी ॥ ७ ॥ जु० ॥ मरणसमय अम्ह विहुं तणो,
 जाणी बोले राय ॥ जु० ॥ आर्यिकानें जिस तातनो, शोक होये तिम
 याय ॥ ८ ॥ जु० ॥ कल्लागरु चंदन वली, काष्ठ लविंगनां आणि ॥
 जु० ॥ दहन दीठ दीठ दाननें, सर्ग पमाडवा जाणि ॥ ९ ॥ जु० ॥
 मानजी मोर तेचिंतवे, अहो इणें तातनें काज ॥ जु० ॥ दानादिक
 दीयां वणां. पण मुज वेलाएं आज ॥ १० ॥ जु० ॥ कीडा खाउं नू
 न्यें मरूं. वली श्वानें मुज खरूं ॥ जु० ॥ कर्मगुरुतायें करी, तिरजंचनी
 गति जिहूं ॥ ११ ॥ जु० ॥ प्राण गयां इणि अवसरें, हवे उत्पत्तिनुं
 ताम ॥ जु० ॥ सुवेजनग पविम दिशें, दुःप्रवेश वन नाम ॥ १२ ॥
 जु० ॥ कुंटकवृक्षवहुल जिहां, तिहां एक कपर्ड जीव ॥ जु० ॥ तेह
 नी कृष्णें उपन्यो, दुःख लहेतो सदैव ॥ १३ ॥ जु० ॥ मा काणी वाप
 कुंटजो, दुःख सहेतां मुज जोय ॥ जु० ॥ कालप्रसव विना जनमी
 उ. कर्मनें शग्म न होय ॥ १४ ॥ जु० ॥ नूखयकी नाशी गयुं, जननी
 स्तनमां दृश्य ॥ जु० ॥ हुं नूखें खाउं गोखरूं, अनुकरमें ययो वृक्ष ॥
 ॥ १५ ॥ जु० ॥ इणि अवसर माय कूतरो, मुउं आरतध्यान ॥ जु० ॥
 निणदीज वनमां उपन्यो. नाग ते विपनुं यान ॥ १६ ॥ जु० ॥ विडु
 समणि परें लोयणां, अंधकारनो राणि ॥ जु० ॥ चपल जीज दोय लप
 लपे, दीनतां कालपाश ॥ १७ ॥ जु० ॥ दर्डरनुं नक्ष्ण करे, तव में
 विग्न दिचाणि ॥ जु० ॥ पकड्यो पुढ्यी नागनें, तस पण कोप अपा
 र ॥ १८ ॥ जु० ॥ मशीउं मुज वदनें तदा. मांहो मांहे धरी खार ॥
 जु० ॥ ग्वायें विहुं परस्परें, इण अवसर तिणि वार ॥ १९ ॥ जु० ॥
 आदि गंत मुजने गृह्यां, खावा मांमयो ताम ॥ जु० ॥ त्रट त्रट त्रो
 ते सिंग निद्रां. चट चट फाडे चाम ॥ २० ॥ जु० ॥ घट घट शोणित
 पावनो. कट कट मरडे हाड ॥ जु० ॥ तिम खातां खातां यकां, पद्दोती
 नाम न्द्रादी ॥ २१ ॥ जु० ॥ ते जड्यी मानुं बीहतो, नातो कनेवर
 जाट ॥ जु० ॥ जीवपंखी उमी गयां. तेह स्थानकने ठाम ॥ २२ ॥
 जु० ॥ तेह विद्याना नयरीयें. दुष्टादका नदी नाम ॥ जु० ॥ महोटा

इहमां माठजी. कुखें उपन्यो ताम ॥ १३ ॥ जु० ॥ रोहित मत्स्यनी
जातिमां. हवे जे कालो शाप ॥ जु० ॥ एह नदीमां उपन्यो, सुसमार निज
पाप ॥ १४ ॥ जु० ॥ चोथे खंमे अठारमी. ढाल कही मनोहार ॥ जु० ॥
पद्मविजय कहे सांनलो. सुणतां जय जयकार ॥ १५ ॥ जु० ॥ ५७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मत्स्य अने सुसमार ते. अनुक्रमें मलिआ दोय ; पकड्यो सुऊने पु
ठ्यो, सुसमारें धरी सोय ॥ १ ॥ इण अवसर आवी तिहां, स्नान
करण संकेत ; चेमि नाम चिलाइका, देखी ऊंपा देत ॥ २ ॥ सुऊने
मूकी तिण समे, पकड्यो दासी पाय ; नदीमांहे नाशी गयो, हुंतो
करतो हाय ॥ ३ ॥ बुंवारव करे बापडी. पकडी राखी पाणि ; माठी
आव्या सोकजा, जवर ऊतखा जाण ॥ ४ ॥ सूकावी ते मानिनी,
माख्यो ते सुसमार; काल केतोइक अतिक्रमे, आगल सुणो अधिकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ म्हारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ एकदिन माठीयें नाखी जाल, पकड्यो सुऊ ततकाल रे ॥ जु० कर्म
कमाणी ॥ महामत्स्य जाणीनें नेटणुं कीधूं, तेतो गुणधर राजायें लिधूं
रे ॥ १ ॥ जु० ॥ नयणावलीनें पासें लायो, नूपति मन हरख ते पायो
रे ॥ जु० ॥ कहे निजमातनें पूठनो देश. रंधावो तात उद्देश रे ॥ २
॥ जु० ॥ वली अज्जा पण सनमां धारो, ब्राम्हणनें ए अवधारो रे
॥ जु० ॥ आपणमाटे उपन्यो जाग, पकं तलीनें रंधावजो लाग रे ॥
३ ॥ जु० ॥ ए सानव्यूं वली नयणें दीतुं, उपन्युं जातिस्मरण सीतुं
रे ॥ जु० ॥ एम सांनजी पुढखंम ते माहरो, आप्यो ब्राम्हणनें करी
प्यारो रे ॥ ४ ॥ जु० ॥ शेष शरीर ते ठोलीकरीनें, मांहि त्रिगडु हिंग
नरीनें रे ॥ जु० ॥ शींच्यो हलदरनें वली नीर, उपजावी अति सुऊ पीर
रे ॥ ५ ॥ जु० ॥ माखण नरी तावडीमां तलीउ, सवि जाणुं कानें ख
लनलीउ रे ॥ जु० ॥ पण धर्मध्यानतो आव्यूं नाहीं, महा तीव्रवेदना
मांहि रे ॥ ६ ॥ जु० ॥ एम दृढकर्म निगड बंधाणुं, नारक सम वेद
न टाणुं रे ॥ जु० ॥ तोही शरीरथी जीव न जाय, इणरामे सुसमार

जे माय रे ॥ ७ ॥ जु० ॥ चंमालपाडे ते बकरी जाई, विशाला नयरी
 मां आई रे ॥ जु० ॥ तेहनी कुखें अज हुं हूँ, पाम्यो यौवन आग
 लें जूँ रे ॥ ८ ॥ जु० ॥ मैथुन अर्थे मात जोगवतां, दीगो यूथपति
 जोगवतां ॥ जु० ॥ क्रोधें मर्मदेशें मुज साखो, निजवीरजमां अव
 ताखो रे ॥ ९ ॥ जु० ॥ यतः ॥ “ कम्ममलविनडीएणं, तह मरंतेण
 मंदजग्गेणं ॥ अप्पा हु अप्पणचिय, जणीउं जणणीए गप्पंमी ॥ १ ॥ ”
 दूकडो प्रसव काल जव आयो, गयो आहेडें नररायो रे ॥ जु० ॥
 आहेडेयी वलीउं राय, तिहां क्षेत्रमां बकरी देखाय रे ॥ १० ॥ जु० ॥
 गर्जथी हलके हलके चाले, राय खाली आव्यो ते साले रे ॥ जु० ॥
 वाण नाखुं वकरीनें वागुं, हरख्यो नृप लहने लागुं रे ॥ ११ ॥ जु० ॥
 गर्ज जाणीनें पेट विदाखुं, तिहां म्हें तो जीवित धाखुं रे ॥ जु० ॥
 सोंप्यो अजापालने तिहां रायें. तेपण बीजीनुं अण पाये रे ॥ १२ ॥
 ॥ जु० ॥ पारधिफल काजें कुजदेवी, पूजे महिष तणी बलि देवी रे
 ॥ जु० ॥ पन्नर पामा नोजन काजें, मराव्या गुणधर राजें रे ॥ १३ ॥
 जु० ॥ ब्राह्मण अर्थे मांस रंधाव्यो, मुजनें बारणें बंधाव्यो रे ॥ जु० ॥
 मेय पवित्रमुखो कहेचाय, काक गुनक बोटयूं न खवाय रे ॥
 ॥ १४ ॥ जु० ॥ तिणें मुजनें सुंवाडी जिमीआ, विप्रें आचमन ते क
 रीआं रे ॥ जु० ॥ अंतेंउर लेइ राजा आव्यो, देखी मुज मनमां नाव्यो
 रे ॥ १५ ॥ जु० ॥ जातिस्मरण उपन्युं ज्ञान, ययुं सर्व वृत्तांत विज्ञान
 रे ॥ जु० ॥ ब्राह्मण वेग हारोहार, प्रणम्या म्हें चित्त उदार रे ॥
 ॥ १६ ॥ जु० ॥ विप्र कहे ए तातनी पांति, ए आर्थिकानी वली
 खानि रे ॥ जु० ॥ ए कुजदेवीनी पंक्ति जाणि, तव म्हें चिंत्युं मन
 आनि रे ॥ १७ ॥ जु० ॥ ए मुज पुत्र करे मुज अर्थें, पण सवि
 जाये व्यर्थ रे ॥ जु० ॥ नोजनें वेगो सह परिवार, नवि दीगी नय
 पावली नार रे ॥ १८ ॥ जु० ॥ इणि समे दासी परस्पर नांखे. कहो
 नांम दुर्गधना दाने रे ॥ जु० ॥ महिष तो ताजा हणीआ नूपें, तव
 एरु घोडी करी नूपें रे ॥ १९ ॥ जु० ॥ प्रेममंजुषा सुण्य तूं वात,

मांसनो नवि गंध आयात रे ॥ जु० ॥ नयणावलीयें मत्स्य जे खाधो,
अजीणें थयो कोढ ते बाधो रे ॥ १० ॥ जु० ॥ तास शरीरनो दुर्गंध
जावे, चायरो जे फरसीनें आवे रे ॥ जु० ॥ एक कहे सुण्य सुंदरी बीजुं,
ताहरी वात सांजली खीजुं रे ॥ ११ ॥ जु० ॥ रायने जेर देऩे माखो,
ते पाप व्याजें वधाखो रे ॥ जु० ॥ एक कहे ए म करो वात, पटकण
मंत्र जेदात रे ॥ १२ ॥ जु० ॥ ऊठो अन्य ठेकाणें जईयें, ठबको को
ईनो नवि लहीयें रे ॥ जु० ॥ ते उठि चाली अन्य ठाम, तव में जोयुं
ठाम ठाम रे ॥ १३ ॥ जु० ॥ एकण पासें वेठी दीठी, नयणावली
डुःख उक्कीठी रे ॥ जु० ॥ मक्षिका सहस्रगमे डुःख देती, कर्म उदय
थतां वार केती रे ॥ १४ ॥ जु० ॥ चोथे खंमैं ढाल ए नांखी, नली
उगणीशमी चित्त राखी रे ॥ जु० ॥ पद्मविजय कहे कर्म कमाई, कोई न
करजो नाई रे ॥ १५ ॥ जु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मेपपणे चिंत्युं मनैं. केहवा कर्म विपाक ; उदयें आव्या एहनें,
राणी रुए वराक ॥ १ ॥ नयण वयण थण जेहना, जीतें जुवती जग
त ; कमलचंदनैं कुंजनी, उपम अधीकी वत्त ॥ २ ॥ तपसी पण मुनि
वरतणा, चित्त तणी ए चोर ; हवे कामीजन हैयडलूं, कठिण न चीजे
कोर ॥ ३ ॥ एम चिंतवुं इण अवसरें, राय कहे सूपकार ; महिषनुं
न रुचे मांस ए, आणो अन्य उदार ॥ ४ ॥ आणा रायनी आकरी,
सूपकार संजाल ; कालक्षेपना नयथकी, ते मुऊने ततकाल ॥ ५ ॥
एक पासुं ठेयूं इणें, नडयुं नूपति काम ; निपजावी नररायनें, मो
कलीयुं धरी माम ॥ ६ ॥ तातने पुण्यजणी तिहां, विप्रने दिये विशेष ;
कांयक नयणावली कनें, खाय आपजे शेष ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीशमी ॥

॥ राग मारु ॥ सागरीआ तूं म म गर्व करे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसरें मुऊ मात जे बकरी, मारी गुणधर राय ॥ तेह कलिं
गदेशें थयो पाप्मो, अनुक्रमें महोठो थाय रे ॥ १ ॥ सुणो नविको

मत कर्म करो. एम किम जवजलधि तरो रे ॥ ए आंकणी ॥ नार
 वही आव्यो तिणें नयरी, नदी उतरे जेते ॥ नूपतुरंग आव्यो जल
 पीवा. माख्यो तस तेते रे ॥ २ ॥ सु० ॥ रायनें खबर करी ते पुरुषें,
 राय कहे जावो ॥ तव लाव्या ते पुरुष महिषनें, कोप थयो चावो रे
 ॥ ३ ॥ सु० ॥ राय कहे सूपकारनें इणि परें, एह छुष्ट पाडो ॥ एहने
 जीवतां नडयुं करज्यो. दुःख देवण गाडो रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ तिणें
 पण सयल दीशालोह कीजा, ठोकी बांध्यो तास ॥ एक कडाह जलें
 नगी मूकी. कर्म तणो नही नास ॥ ५ ॥ सु० ॥ त्रिगडु हिंग लवण
 मांदि मूकी, चोक फेर करी आग ॥ खेर काष्ठ होमैं हवे अग्नि, बजती
 नहीं कोय माग ॥ ६ ॥ सु० ॥ कंठ होव तालू अति शूके, तरपा पण
 तेदवी ॥ उल्लहार जल पीतां वेदन, पासुं नरक जेहवी रे ॥ ७ ॥ सु० ॥
 वेदमांदि तव आग ते उठी. मांस निकळ्युं बीअ पास ॥ राय कहे
 हवे महिषनुं नडयुं, जावो हमारी पास रे ॥ ८ ॥ सु० ॥ जिणे जिणे
 दिगतें मांसज पाक्युं. ठेदी ते ते अंश ॥ सूपकार मोकळे नरपतिनें,
 तोदि जाय नहीं हंस रे ॥ ९ ॥ सु० ॥ धी रेडी वली लूण वाटीनें,
 गड्युं दुःख देवा ॥ पीरमनारो रायनो आव्यो, वीजुं मांस लेवा रे
 ॥ १० ॥ सु० ॥ सूपकारें तस स्वाहसुं निरख्युं, तव तेणें मर खाधो ॥
 रोम कंण्यां गलीउं तस गाढो. हाडबंध बांधो रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ समकालें
 म्हें जेमडे कियो, काल मरीने दोय ॥ विजाला पुरीयें चंमालपाडे,
 कुकटी उदरें जांय रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ माजरीं अम माता पकडी, उक
 रें जेड जाय ॥ खातां अमयुगल तिहां पडीउं, गयो माजरी ते ठाय रे
 ॥ १३ ॥ सु० ॥ अम उपरें तिहां सूपहुं टांक्युं, चंमालिणी आवी ॥
 नेदनी बाफयकी अमे जीव्यां. ए पण जुड जावी रे ॥ १४ ॥ सु० ॥
 इमां फोटी अम्हें निकळ्यां वादिर. चंमाल सुत पाजे ॥ पिठचार चंड
 चंडिका मद्रज. दुउं तरुण काजें रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ अर्धी चणोठी स
 गिणी नृजा. दीगं कोटवाजें ॥ नयखेलण योग्य जाणी ग्रहियां, नृपनें
 देवाजें रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ राजा दग्ग जहीने मांण्यां, कोटवालने

नांवे ॥ जिहां जिहां जाउं तिहां तिहां एहने, जावजे सुज साखें रे
॥ १७ ॥ सु० ॥ तहन करे काजदंस कोटवालह. हवे एक दिन राजा
॥ अंतर्गुं रमवा चान्दो. क्रीडा वसंत ताजा रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ कुसु
माकर उद्यानं पोद्दोतो. तव कोटवाल अस लेय ॥ राजा केनि घरे करे
क्रीडा, गणीगुं बहुजेय रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ अमने कोटवाल जेई आव्यो,
अनोक वृद्धपंती ॥ तिहां शशिप्रज आचारज दीठा, मुनिवर बहु उपां
नि रे ॥ १९ ॥ सु० ॥ वीशमी ठालें ए चोथे खंडें. समरादित्यरासैं ॥ पद्म
विजय कहें मुनिवर मलीया, सबहुं सुख यागे रे ॥ २० ॥ गा० ॥ ६१७ ॥

॥ दाहा ॥

॥ अलिक वंदना एणे करी, धर्मजान दिये साध; तपसिरी देखी ते
हनी, सुणि नस वयण समाधि ॥ १ ॥ उपशम कांयक आणीनैं,
पूठे धर्मप्रपंच; साधु कहे साधारणो, सर्वनो एकज संच ॥ २ ॥
प्रीते तत्त्व न प्राणीआ. मूढ गणे मनजेय; तेह धर्म सुणतां अकां,
उपजे नहीं कोइ खेय ॥ ३ ॥

॥ ठाल एकवीशमी ॥ वात स काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिविधें हिंसा वर्जवी, अलिक न नांखवी वाणी रे ॥ विगर दिधूं
कल्पें नहीं, एक तृणशलीअ प्रमाण रे ॥ १ ॥ सांजलो श्रीगुरु देश
ना. नाव धरी नवि जीव रे ॥ त्रिविधें अब्रह्म वर्जवुं. अब्रह्म होय क
लीव रे ॥ २ ॥ सां० ॥ नवविध परिग्रह वर्जवो. रात्रीनोजन टाली
रे ॥ दोष वेंतालीश वर्जवा. आहार तणा संचालि रे ॥ ३ ॥ सां० ॥
संन्यासिक बोव्यो तदा, एहतो मुनिवर धर्म रे ॥ पण कहो सागा
री तणो, मुनि कहे तेहनो मर्म रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ श्रावकनां व्रत बार
जे, संन्यासावे मुनिराय रे ॥ सांजली कहे मुनिवर खरुं, पण ए म्हें न
कराय रे ॥ ५ ॥ सां० ॥ वेदमां पशुवध नांखिउं, कुलकर्मागत जेह
रे ॥ पूरव पुरुषें आचख्यो, ठांमी न शकूं तेह रे ॥ ६ ॥ सां० ॥ सूरि
कहे जो नवि तजे, तो ए कुकुट जोडि रे ॥ दुःख पाय्या तिम पाम
शो, लहेशो अनर्थनी कोडि रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ कोटवाल कहे किम

प्रभु. पाम्या अनर्थे जंमार रे ॥ तव मुनिवर धुरखी कहे, अमचूं च
 रित्र उदार रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ जिम पीठ कुकुटनें हण्यो, जिम डःख
 पाम्यो अत्यंत रे ॥ श्रुतज्ञानी गुरुयें तिहां, संजलाव्यो विरतंत रे ॥ ८ ॥
 ॥ सां० ॥ यतः ॥ “सिंहि साण सप्प पसया, मिणो हरएअईअ मे
 तीय ॥ महीस य कुकड पस्की, जाया संसार जलहिंमी” ॥ ९ ॥
 बूज्यो दंमवासिक तिहां, सांजली श्रीगुरुवाणि रे ॥ कहे गुरुजी माह
 रे सम्युं, हिंसा अनर्थनी खाणि रे ॥ १० ॥ सां० ॥ व्रत आपो श्रावक
 तणां, तव गुरुजि न उपदेश्यो रे ॥ पंच नमस्कार आपीउ, तेहनो
 मर्म प्रकाश्यो रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ प्राणातिपात प्रमुख वली, उच्चराव्यां
 व्रत वार रे ॥ हवे निजचरित्र ते सांजली, कुकुट हर्ष अपार रे ॥ १२ ॥
 ॥ सां० ॥ जातिसमरण पामीआ, उपन्यो बहुसंतोष रे ॥ जुवन गु
 रुना धर्मनी, पाम्या बोधिनी पोष रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ सानुबंधी कर्म
 नीठव्यां, हर्ष न मायो अंगें रे ॥ तिणे कुकडूकू बोलीआ, राचता ना
 चता रंगें रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ इण अवसरें नरपति तिहां, राणी जया
 वली संग रे ॥ जोग जोगवतां सांजव्यो, कुकुटशब्द सुचंग रे ॥ १५ ॥
 ॥ सां० ॥ धनुषें तीर चढावीयो, राणीनें कहे एम रे ॥ देख तुं शब्दवेधीप
 णं, कुकुट मारुं ए प्रेम रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ खेंची बाणनें मूकीउं, माख्या
 अमनें तण रे ॥ राणी जयावली जोगवी, ततक्षण जे नूपेण रे ॥ १७ ॥
 ॥ सां० ॥ तन कूखें अमे उपन्या, बोधीतणे परजावें रे ॥ गर्जप्रजावें दोह
 लो, उपन्यो ने सुणो जावें रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ अजयदान देउं जीवने,
 पया दुआ परिणाम रे ॥ अजयदान दीधूं घणुं, जन्म ययो अम
 ताम रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ दोहदपरिमाणे ठवे, नाम हमारुं तात रे ॥
 दे सुन अजयरुचि ठव्यो, बीजी अजयमति जात रे ॥ २० ॥ सां० ॥
 अये नगपति मन चिंतवे, पुत्र ठहुं सुवराज रे ॥ पुत्रीनो वली विवाह
 जयें, ए दीय उगुच काज रे ॥ २१ ॥ सां० ॥ इण अवसरें नृप नीक
 लो, आदिदेष्टु वाद्वार रे ॥ पोद्दतो वीशाला उद्यानमां, सार्यें निजप
 गिहार रे ॥ २२ ॥ सां० ॥ वायुं कुतुम सुरजी तिहां, जाणी जोयुं उ

ध्यान रे ॥ तिलकवृद्धनें ठूकडा, दीठा मुनि गतध्यान रे ॥ १३ ॥ सां० ॥
 सुदत्तनामैं मुनिवरु, देखी कोप्यो नूप रे ॥ पारधिमां अशुकन थयां,
 पडीउ चिंताकूप रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ करी उपडव एहनें हवे, मानुं
 शकुन निदान रे ॥ ठूंठूंकार करी सूकीया, मुनि उपरें माहा श्वान
 रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ वेगें जालिम जम समा, आव्या मुनिवर पास रे ॥
 जाज्वल्यमान अग्निपरें, मुनिवर देह प्रकाश रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ तप
 तेज ते न शक्या सही, उषधिगंध जिम नाग रे ॥ निर्विष तिम निःप्र
 ना थया, तेह चुनक धरे राग रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ तपपरजावें प्रदहि
 णा, देई श्वाननुं वृद्ध रे ॥ मस्तक धरतीयें खोशीनें, प्रणमे तेह मुणींद
 रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ श्री समरादित्य रासमां, चोथे खंमें ढाल रे ॥ एकवीश
 मी पदमें कही, सुणतां मंगलमाल रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देखी अचरिज दूरथी, उपन्युं चित्तमां एम; श्वान पुरुष ए सम
 जणा, नहीं नरश्वान हुं नेम ॥ १ ॥ तप चरणे मुनि ततपरा, अकुशल
 चिंत्यूं आज; इणसमे पुरीथी आवीउ, केई जन वंदन काज ॥ २ ॥ जिन
 धमें जावितजिके, अरहदत्त इण नाम; शेरपुत्र शोहामणो, आव्यो
 वंदन आम ॥ ३ ॥ मेदिनीपतिनो मित्र ते, दीठो नृप अवदात; मुनि
 उपसर्ग ते मोटिको, परलोकनो करे पात ॥ ४ ॥ प्रणमी नूपनणी
 कहे, कसुं एह सुं काम; कहे नरपति नर कूतखा, सरिखुं कीधुं स्याम
 ॥ ५ ॥ अरहदत्त कहे इणि परें, पुरुषसिंह परधान; अश्वथी हेठा
 उत्तरो, वंदो ए जगवान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हाररो हिरो म्हारो साहिबो ॥ ए देशी ॥

॥ देश कलिंगनो अधिपति ॥ साहिबा मारा ॥ अमरदत्त राजान हो ॥ पुत्र
 सुदत्त नामें तेहना ॥ सां० ॥ नरपति निर्मलवान हो ॥ १ ॥ संवेग
 रसनीनो मारो, समताशुं लीनो मारो, मुनिमां नगीनो मारो साहि
 बो ॥ साहिबा मारा ॥ वंदो मुनिवर पाय हो ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम
 जोबनमांहि वरतता ॥ सां० ॥ एक दिन आव्यो तलार हो ॥ चोर

साथें एक लावीउं ॥ सा० ॥ वीनवे नृपनें तिवार हो ॥ १ ॥ सं० ॥
 ॥ स० ॥ मु० ॥ परवर पेशीनें इंणो ॥ सा० ॥ लीधुं डव्य अपार हो ॥
 माखो महार्किकने वली ॥ सा० ॥ गृहीउं निसरती वार हो ॥ २ ॥
 ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ हवे जिम कहो तिम कीजियें ॥ सा० ॥ सांजली
 ते नरराय हो ॥ धर्मशास्त्र नणनारने ॥ सा० ॥ तेडी सुणावे प्रकार
 हो ॥ ४ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ श्यो दंम एहनें दीजियें ॥ सा० ॥ तव
 नर बोझा तेह हो ॥ घात कखो चोरी करी ॥ सा० ॥ कीधुं कर्म अठे
 ह हो ॥ ५ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ त्रिक चोक चाचरें फेरवो ॥ सा० ॥
 सहु जनने संजलावि हो ॥ नेत्र उपाडो एहनां ॥ सा० ॥ काननें नाक
 कपावी हो ॥ ६ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ हाथने पग वली ठेदीयें ॥
 सा० ॥ इंणिपरें जीवनो नाश हो ॥ करवो एम रुपिवयण ठे ॥ सा० ॥
 सांजली वयणविन्यास हो ॥ ७ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ चिंतवे अहो अहो
 नृपकृजे ॥ सा० ॥ करवां एहवां पाप हो ॥ तिणें ए राज्य सुखें सखुं ॥
 सा० ॥ जेहथी बहु संताप हो ॥ ८ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ आणंद ना
 म जाणेजने ॥ सा० ॥ सोंपी राज्यनो नार हो ॥ सुधर्मगुरु पासें थ
 चा ॥ सा० ॥ गेह तजी अणगार हो ॥ ९ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ सु
 निवंदन करी निस्तरो ॥ सा० ॥ सांजलि आवक वाणि हो ॥ मुनि वं
 द्या जव तिणे समे ॥ सा० ॥ ययुं मुनि पूरण जाण हो ॥ १० ॥ सं०
 ॥ स० ॥ मु० ॥ धर्मज्ञान देई जांखीउं ॥ सा० ॥ वेश तूं निरवद्य ठाण हो ॥
 पञ्चानाप नृप उपन्यो ॥ सा० ॥ जाणी अकळ अप्पाण हो ॥ ११ ॥
 सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ राय वेशी मन चिंतवे ॥ सा० ॥ में कखो मुनिवर
 घान हो ॥ प्रायश्चित्त मुजनें नहीं ॥ सा० ॥ विण निज मस्तक पात हो
 ॥ १२ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ आत्म अकार्य कजंकथी ॥ सा० ॥
 इ पित एक मुहुन हो ॥ धागी न शकुं तिणे हवे ॥ सा० ॥ निपजावुं
 एह नुन हो ॥ १३ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ इण समे मुनिनें उपन्युं
 ॥ सा० ॥ मणपकय वरनाण हो ॥ जाणी आशय नूपनो ॥ सा० ॥
 मुनियर कजे एम शानि हो ॥ १४ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ एतुज प्राय

हित नहीं ॥ सा० ॥ जे तें कल्पना कीध हो ॥ आत्मघात पण वारीउ
 ॥ सा० ॥ ते पण समय प्रसिद्ध हो ॥ १५ ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥
 यतः ॥ “जाविय जिणवयणाणं, ममत्तरहियाण नहि दु विसेतो ॥
 अप्पाणंमि परंमिय, तो वळे पीडमुनउवी ॥ १ ॥” कलंक दुःखित
 निज आतमा ॥ सा० ॥ जे चित्त चिंतवे तास हो ॥ जैनक्रिया जलें
 धोयतां ॥ सा० ॥ निर्मल आये खास हो ॥ १६ ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥
 नव अनुबंध वधे घणो ॥ सा० ॥ करतां आतम घात हो ॥ नव कोडि
 पाम्यो नहीं ॥ सा० ॥ जिनवरवयण विख्यात हो ॥ १७ ॥ सं० ॥
 ॥ स० ॥ सु० ॥ तिणे जिनआण अंगीकरो ॥ सा० ॥ सांजली चिंत
 वे राय हो ॥ अहो मन वात जाणे मुनि ॥ सा० ॥ मुज मन अचरिज
 आय हो ॥ १८ ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥ प्रायश्चित्त मुज पापनुं ॥ सा० ॥
 निश्चय लहेसुं ए पास हो ॥ आणंद जल नरी नयणडां ॥ सा० ॥ च
 रणे पडे नृप तास हो ॥ १९ ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥ प्रायश्चित्त प्रभु
 नांखियें ॥ सा० ॥ मुज कहे सुण महाराय हो ॥ एक मिथ्यात्व अ
 ज्ञान जे ॥ सा० ॥ तास अनाव जो आय हो ॥ २० ॥ सं० ॥ स० ॥
 ॥ सु० ॥ चिंतवुं विपरीत जे ॥ सा० ॥ ते मिथ्या परिणाम हो ॥ तें
 पण विपरीत चिंतवुं ॥ सा० ॥ मुनि अपशकुननुं ठाज हो ॥ २१ ॥
 ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥ करीअ कदर्थना वारीयें ॥ सा० ॥ ए अपश
 कुन निदान हो ॥ तुज मन इणि परें उपजे ॥ सा० ॥ नवि करे ए कदि
 स्नान हो ॥ २२ ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥ तुंम मुंम मुंमिंत वली ॥ सा० ॥
 नीखशी जीवे जेह हो ॥ वली पाखंड विरुद्ध ए ॥ सा० ॥ पावन न
 करे तेह हो ॥ २३ ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥ मध्यस्थ जाव करी सुणो
 ॥ सा० ॥ उत्तर एह रसाल हो ॥ चोथे खंमें बावीशमी ॥ सा० ॥ पद्म
 विजय कही ढाल हो ॥ २४ ॥ सं० ॥ स० ॥ सु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६९० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ पलक एक होय पवित्रता, मनमां होय अनिमान ; करे प्रार्थ
 ना कामिनी, शुचि हुं एहवी शान ॥ १ ॥ जीवविराधना जल तणा,

नहीं कोइ धर्म स्नान; सजति जो स्नानें होये, मत्स्यदेडक बहुमान
॥ १ ॥ चङ्गदीद्वारें जोषथी, विप्रें पण वडरीति; अस्नानव्रत जलूं
आदखूं, नवि जाणो ए नीति ॥ ३ ॥

॥ ठाल त्रेशवीशमी ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुणि तुंज स्नाननी वातज कहूं, पांच शौच पुराणमां लहुं ॥ सत्य
शौच तप शौचज वली, त्रीजुं इंडिय निग्रह मली ॥ १ ॥ चोथुं सर्व
जीवनी दया, जलनुं शौच पांचमुं कही गया ॥ वली आरंभें वरते
जेह, मैथुन सेवे रहेतो गेह ॥ २ ॥ शौचपणुं ते ब्राह्मण जणी, न
कहूं युधिष्ठिर में पाप गणी ॥ ल्यो माटीना नार हजार, शत कुंजा वलि
लीजें वारि ॥ ३ ॥ तीरथ शतगमे करे सनान, पण जो छुष्टाचार नि
दान ॥ तेह पवित्र ब्राह्मण नहीं कदा, पापप्रमादें वरते सदा ॥ ४ ॥
जिम मदिरानुं जाजन होय, सहसवार जो धोवे तोय ॥ पवित्र न
थाये तिण परि जाणि, छुष्ट अंतरगत चित्तनुं न्हाण ॥ ५ ॥ आत्म
नदी संजम जल जरी, सत्य प्रवाह शील तट करी ॥ दया नदी पां
मव करो स्नान, जलथी शुद्ध न आत्म निदान ॥ ६ ॥ इत्यादिक शिव
शान्ते घणा, जांख्या नेद ते स्नानज तणा ॥ सर्व शास्त्रमां प्राणीद
या, न्हातां न रहे तेहनी मया ॥ ७ ॥ वली दातणनो कह्यो विचार,
आरु तथा उपवास सजार ॥ दंतकाष्ठ संजोग निवारि, संजोगें सात
कुज संहार ॥ ८ ॥ महाजारतमां वात ए कही, वली मार्कण्डपुराणें
जही ॥ संक्रांतिदिन पडवे प्रतिपदा, नौमि वारशि वली वरजी सदा
॥ ९ ॥ ते कारण दातणनो दोष, म करो करीयें मन संतोष ॥ वली
अस्नानव्रत नियमना धार, विषय कपाय जीत्या अणगार ॥ १० ॥
मज्जाय ध्यानमां राता नित्य, एहवा सुनिवर नित्य पवित्त ॥ वलि शिर
नुं मुं मन जे कह्युं, प्रथम व्रत राखणनें धर्युं ॥ ११ ॥ पाखंड पण
ए मंगल करे, जो चित्तमां सुनि मंगल धरे ॥ सहुनें शास्त्रें निहा कही,
मंगल जो पाले व्रत वही ॥ १२ ॥ अन्यालिंगथी व्रट जे थया, जे
नजिमें जे मोहूं गया ॥ जैनलिंगथी व्रट जो थाय, तो तस वज्रलेप

कहेवाय ॥ १३ ॥ श्वेतांबर केहवाओ वेष, किम अवतार करे सुविशेष ॥
 कहो महादेव मनैं ए तुमैं, जिम निःसंदेह जाणुं अमे ॥ १४ ॥ दं
 म कंबल ग्रहे शुद्ध आहार, अजारोम प्रमार्जन धार ॥ तुंबिफल
 नाजन होय करें, निह्नाजोजन कोप न धरे ॥ १५ ॥ श्वेतवस्त्र राखे
 करे दया, मुक्ति जैनधर्ममां सया ॥ पापनिकंदननैं अवतार, जुग जु
 ग कीधा में अणगार ॥ १६ ॥ एह प्रजासपुराणें कथा, सांजली बो
 लो म सुखथी वृथा ॥ सुरनैं पण ए श्रमणनुं रूप, मंगलरूप कहां
 सुण नूप ॥ १७ ॥ यतः ॥ प्रजासपुराणे ॥ “अन्यलिंगपरिच्रष्टो, जैन
 लिंगेन सिध्यति ॥ जैनलिंगपरिच्रष्टो, वज्रलेपो नविष्यति ॥ १ ॥
 श्वेतांबराः कीदृशास्ते, (कीदृशाः किमाकाराः) कर्म कुर्वति कीदृशं ॥ अव
 तारः कथं तेषां, महादेव निगद्यतां ॥ २ ॥ दंमकंबलसंयुक्तं, अजारोमप्र
 मार्जनं ॥ गृह्णाति शुद्धमाहारं, शास्त्रं दृष्ट्वा चरति च ॥ ३ ॥ तुंबिफलकरा
 निह्ना, जोजनं श्वेतवाससः ॥ न कुर्वति कदा कोपं, दयां कुर्वति जंतुषु
 ॥ ४ ॥ मुक्तिस्तु जैनधर्मेण, पापनिष्कंदनाय च ॥ अवतारः कृतो तेषां,
 मया देवि युगे युगे ॥ ५ ॥” महाचारतमां जांखुं एम, जस कुल ज
 ति न थाये प्रेम ॥ अवगतिआ तस पूर्वज थाय, ते नर मोहैं किमे
 न जाय ॥ १८ ॥ शिवशासनमां जैन प्रमाण, केता जांखुं तास वखा
 ण ॥ सांजली नृपनुं गयुं मिथ्यात, कहे तुम ज्ञान अहो साक्षा
 त ॥ १९ ॥ इम करतो मुनि चरणे नमे, गुरुजी कोप न करशो तुमैं ॥
 में अज्ञानपणे कयुं कर्म, ते खमजो प्रभु तुमचो धर्म ॥ २० ॥ मुनि क
 हे मुनि समता परधान, उठ म कर संच्रम कोइ ठाण ॥ सर्व जीवनुं ख
 मीयें अमे, तिणे अम कोप न चित्तमां गमे ॥ २१ ॥ आक्रोश तर्जना
 घातना करे, धर्मचंश वली हृदयें धरे ॥ अग्रिम अग्रिम विरह ते जा
 व, जान ते होये शुद्ध स्वभाव ॥ २२ ॥ वली मुनि जावे कर्मविवाग,
 नूपति हरख्यो धर्म ते राग ॥ एहुना ज्ञानथी ठानुं नही, पूबूं तातनैं
 आर्यिका कही ॥ २३ ॥ इम चिंतीनैं पूठयुं जदा, मुनिवरें जांखुं सघ
 लूं तदा ॥ पिठकुकुटवध मांकी करी, जयावली सुतनैं दीकरी ॥ २४ ॥

निहां जगें सांजली राय विचार, चिंतवे अहो संसार अपार ॥ अहो
जवनाटिक किणि परें लहे, ज्ञानी गुरु विण कहो कुण कहे ॥ १५ ॥
एम चोथे खंमें ए कही. ढाल त्रेवीशमी पदमें सही ॥ समरादित्य न
रपतिनो रास, सांजलो आगल वातविलास ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो संसार असारता, अबला अधिर सनेह; अहो गुरुता मोह
रायनी. अकलविवाग अठेह ॥ १ ॥ कुकुटपिठनो वध कखो, देवता
दीधुं दान: तेह विपाक एम तातनें, परिणम्यो काढे प्राण ॥ २ ॥ में
तो जीव माया घणा, आलें धरी अन्नाण; नरक विना मुऊनें नहीं,
दोंगो हीणुं ठाण ॥ ३ ॥ पूठुं अथवा मुनिप्रत्ये, मुनि लही मननी वा
त: कहे नृपनें चिंता किसी, वजी सांजल अवदात ॥ ४ ॥ जैन
धर्म जो पडिवजे, पापनो पश्चात्ताप; त्रिविधें आरंजने तजी, आ
दरे चारित्र आप ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ नरपति ॥ चाग्रि लेई आप, जीव सवे मैत्री करे ॥ न० ॥ राखी मध्यस्थ
जाय, बैराग्यजावना आदरे ॥ १ ॥ न० ॥ पाली निरतिचार, पूर्व दुःक
त खेपवे ॥ न० ॥ कारण विण नव कर्म, अशुच न बांधे तेहवे ॥ २ ॥
न० ॥ ह्व करी कर्मनी जाल, पुण्यपरंपरा साधतो ॥ न० ॥ आराधक
वर्ष तेह. गुणगुणठाणे वाधतो ॥ ३ ॥ न० ॥ श्रेणिदूषक चढी जीव,
यानिकर्मनो ह्व करी ॥ न० ॥ पामी केवल ज्ञान, शाश्वत शिवल
जीवरी ॥ ४ ॥ न० ॥ जिहां नहीं रोगने शोग, जन्म जरा मरवुं नहीं ॥
न० ॥ अव्याबाध अरूप, अशरीरी पदवी लही ॥ ५ ॥ न० ॥ बोव्यो
ने नृपज, तात आर्थिका एणी परें ॥ न० ॥ पाम्या कर्मविपाक, एहवे
अव्यक्त करे ॥ ६ ॥ नरिपति ॥ में कखां कर्म अधोर, शी ग
नि दोंगो मादरी ॥ न० ॥ नोगव्या विण किम जाय, एहमां कुण तुज
मादरी ॥ ७ ॥ न० ॥ मरुति पासुं केम, तव गुरु कहे सुण्य नृपति ॥
न० ॥ एक चरण परिणाम, काढे कर्मनी संतति ॥ ८ ॥ न० ॥

पातिक विष परिणाम, अमृतसम चारित्र कह्युं ॥ न० ॥ कर्मगिरि
 पवि रूप, चिंतामणि दुर्विध लह्युं ॥ ए ॥ न० ॥ शिवसुख फल
 सुररुख, चरण परिणाम कह्यो सही ॥ न० ॥ विषलव खाये कोय,
 तास उपाय करे नहीं ॥ १० ॥ न० ॥ पामे आपद तेह, कल्याकृत्य
 मुंजी रहे ॥ न० ॥ नरसुख सघलां ठांनि, जीवित ह्य ततहण लहे
 ॥ ११ ॥ न० ॥ तिम ए जीव प्रमाद, वशयो पाप करम करी ॥ न० ॥
 नवि करे तस प्रतिकार, जन्म मरण करे नव फरी ॥ १२ ॥ न० ॥
 जो करे तास उपाय, अमृत सम शक्ति करी ॥ न० ॥ कालकूट विष
 होय, तोपण तस लीये संहरी ॥ १३ ॥ न० ॥ विषलवनो श्यो नार,
 तिम नवनाव अनादिमां ॥ न० ॥ सेवी पाप अघोर, प्रतिपहू सेवे
 आल्हादमां ॥ १४ ॥ न० ॥ बहुनव संचित पाप, ह्य कस्य चारित्र
 आदरी ॥ न० ॥ एक नवनो शो नार, गुरुवच सुणी हरखें करी ॥ १५ ॥
 न० ॥ पूठे चरण परिणाम, शुं कहीयें तव गुरु कहे ॥ न० ॥ सम्यक्
 ज्ञानथी तीव्र, रुचिथी पापनिवृत्ति लहे ॥ १६ ॥ ग० ॥ तुम दरि
 सणें थयो धन्य, आज महानिधि में लह्यो ॥ ग० ॥ आण करुं
 तुम्ह एह, जो तुम्हें श्रवण योग्य कह्यो ॥ १७ ॥ न० ॥ नृत्यनें कहे
 नरनाथ, जई कहो मंत्रीप्रमुख नणी ॥ न० ॥ अनयरुचि ठवो राज्य,
 आण करो ए अम तणी ॥ १८ ॥ न० ॥ मत करजो मुऊ खेद, जैन
 नी दीक्षा हुं वरुं ॥ न० ॥ अंगीकरी ते नृत्य, जई संनलाव्यूं तिणे खरुं
 ॥ १९ ॥ न० ॥ सांनली हुं पण तेह, अनयमति सार्थें ग्रही ॥
 ॥ न० ॥ अंतेउर सविषाद, पहोता नृप पासें वही ॥ २० ॥ न० ॥
 दीठो मुनिनें पास, संवेगरस जावितमति ॥ न० ॥ बेठो धरती हेठ,
 ठत्र चामर ठंफ्यां जति ॥ २१ ॥ न० ॥ होय न होय ए राज, जय
 जय शब्दथी प्रणमती ॥ न० ॥ सिंहपंजर गत रीति, किम बेठा करे
 वीनति ॥ २२ ॥ न० ॥ गतदाढा जिम सर्प, राज्यत्रष्ट नरनी परें ॥ न० ॥
 बेठा शोक मजार, तव नूपति एम उच्चरे ॥ २३ ॥ न० ॥ मुनि नां
 ख्यो संबंध, वात कही ते सांनली ॥ न० ॥ इहापो थयो ताम, अमची म

ति बहु खलजली ॥ १४ ॥ न०॥ जाति समरण ज्ञान, उपन्युं अम बिहुनें
 तदा ॥ न० ॥ मूर्खीगत थयां दोय, अमें धरती ठलीयां यदा ॥ १५ ॥
 ॥ न० ॥ अंतेउर परिवार, तेह देखीनें रुदन करे ॥ न० ॥ ए वली
 वीजुं दुःख, मानिनी नयण आंसू ऊरे ॥ १६ ॥ न०॥ मूर्खी लही अम
 माय, अनुक्रमें चेतन पामीयां ॥ न०॥ मात आश्वासना कीध, रायनें
 चरणे नामियां ॥ १७ ॥ न० ॥ कहे संसार असार, देखी अम मन
 उन्नयुं ॥ न० ॥ अमणपणुं तुम साखि, लीजीयें एम अम्हें उन्नयुं
 ॥ १८ ॥ न० ॥ राय कहे जिम सुख, एहमां प्रतिबंध मत करो ॥ न०॥
 नाणेजनें दिउ राज्य, विजयधर्म अनिधा धरो ॥ १९ ॥ न० ॥ जिन
 वर चैल्य मऊर, अछाईमहोत्सव करी ॥ न० ॥ लेई अमनें साथ,
 वज्रि परधान अंतेउरी ॥ २० ॥ न० ॥ लिये दीक्षा गुरु पास, चोथे
 खंमें मन धरी ॥ न० ॥ चोवीशमी वर ढाल, पद्मविजय कही
 सुख करी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ७५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ में कहुं गुरुनें पाय नमी, नयणावलीने नाथ; संजलावो शुद्ध
 देशना, पार लहे जवपाय ॥ १ ॥ योग्य नहीं जिनधर्मनें, कीधूं घणुं
 अकाज; ब्रिजी नरगें ततक्षणें, जागे कहे गुरुराज ॥ २ ॥ रूपि अ
 नुतय तव बहु करे, कहे गुरु मत करो एम; चारित्र तुमें चोखुं
 करो, मान्युं गुरुवच प्रेम ॥ ३ ॥ अनुक्रमें चरण आराधिनें, काल करी
 तनकाल; उपन्या देवजोक आठमे, सुख जोगवे विशाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ ढाल ॥ ॥ कोशलदेशें रे, साकेत नयरीयें नरपति ॥ विनयंधर रे,
 तेदनी गणी जगदीमती ॥ तेहनो सुत रे, नाम जशोधर हुं थयो ॥ पा
 मतीपुत्रें रे, जीव अजयमति आवीयो ॥ १ ॥ जुटक ॥ आविउ ईशा
 नमोन नृपती, गणी विजया नाम ए ॥ विनयमती तस नाम थाणुं,
 फला औन्यां नाम ए ॥ स्वयंवरा तें आवी वरवा, बहु थामंवरथकी ॥
 नयन चादि आवाज आया, में पण संजनी ते वकी ॥ २ ॥ ढाल ॥ मन

हरख्यो रे, तातें लगन जोवाडीउ ॥ अनुकरमें रे, वरघोडे मुऊ चाडीउ ॥
 वाजंते रे, बहुविध तूर मंगल तणां ॥ नाचंते रे, पात्र पगें पगें अति
 घणां ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ अति घणां मंगल बिरुद बोले, नाट चारण
 लोक ए ॥ माता प्रमुख सवि नारी गावे, धवल मंगल थोक ए ॥ आमं
 बर बहु करी चाल्यो, राजवृंदें परिवख्यो ॥ धवलगज शिर उपरें हुं, मस्तक
 वली ठत्रज धख्यो ॥ ४ ॥ ढाल ॥ नरनारीयें रे, प्रासादतल रह्यां देखियें ॥
 अनुकरमें रे, राजमार्गमां विशेषीयें ॥ इण अवसरें रे, दाहिए लोचन
 फुरकीयुं ॥ हरषें करी रे, चित्तमां में आलोकियुं ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ आलो
 चिउं कांय हरख आशे, एहथी पण अनिनवो ॥ इण अवसर दीठा
 फिरता, गोचरीयें साहवो ॥ कल्याण शेठनें नवन आंगण, पूर्व अन्या
 सें करी ॥ कपन्युं मुनिराज देखी, जातिसमरण चित्त धरी ॥ ६ ॥ ढाल ॥
 मूर्त्ताविशें रे, पडतां गजशिरथी जळ्यो ॥ नामें रामनड रे, पुरुषें पासें
 बेठां कढ्यो ॥ तूरादिक रे, बंध कख्यां तिणे अवसरें ॥ खेद लही नृप रे,
 आवी चिंते इणि परें ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ एणि परें पूगफलादि मदथी, हों
 शें तिणें सिंचावीउ ॥ चंदन पाणी प्रमुखथी तव, तास चेतन आवीउ
 ॥ तात पूठे पुत्रकुं ए, कहुं में तव एम ए ॥ संसार विलसित तात ए
 ठे, तात कहे ते केम ए ॥ ८ ॥ ढाल ॥ एह वचननो रे, अवसर नहीं
 तव में कहुं ॥ वात मोहोटी रे, संक्षेपें किम जाये कहुं ॥ सहु तेडो रे,
 बेसो एकांतें सजा करी ॥ सहु तेडया रे, बेठा सुणवा चित्त धरी ॥ ९ ॥
 त्रु० ॥ चित्त धरी पूठे वात कुं ठे, तिण समेमें नांखिउं ॥ संसार
 निर्गुण मोहमुंजित, प्राणी एम जिनदाखीउं ॥ चित्त चिंतवे आलोच
 अवला, प्रवर्त्ते अहीतें सदा ॥ अनागत नवि काल पेखे, वर्त्तमान जुवे
 तदा ॥ १० ॥ ढाल ॥ साधारण रे, जन्म जरा रोग शोगडा ॥ एक मरणनें
 रे, वली वाहलाना विजोगडा ॥ प्रमादनी रे, चेष्टा थोडी बहु दुःख दी
 ये ॥ सुर असुरनें रे, नर तिरिनें जाणो हिये ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ पितृमय
 कुकुट हण्यो तेणें, जुउ परिणम्यो केटलो ॥ एम कही सुरेंदत्तना नवथी,
 नांख्यो जोगव्यो जेटलो ॥ १२ ॥ ढाल ॥ सहु सांजली रे, कहे अकारय

कर्मनां ॥ लहे संवेग रे, सुणीअ विपाक विहामणा ॥ मात तातनें रे, प
 रिजन सहु वैरागीयां ॥ देखि जांखुं रे, सांजलो चित्तलय लागीयां ॥ नव
 थी मुऊ रे, चित्त विरक्त थयुं घणुं ॥ आपो आणा रें, सफल करुं नरनव
 पणुं ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ मोहवश तव तात बोले, पुत्र तुऊ कुण ना कहे ॥
 ताहरो नव सफल ठे तिणें, एह कन्या किमज रहे ॥ परणीनें ए प्रजा
 पालो, पुण्य बांधो इणि परें ॥ में कहुं धुरथी तात तुमनें, पाणिग्रहण
 ते कोण करे ॥ १४ ॥ ढाल ॥ तात जांखे रे, परणवामां शो दोष ठे ॥ में
 जांखुं रे, पाणिग्रहण सुखशोष ठे ॥ औषध विनु रे, व्याधिमोहनं गेह
 ठे ॥ शुद्धध्याननो रे, वयरी नवि धृति रेह ठे ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ विहेपनो
 ए मित्र जांख्यो, शांतिनो प्रतिपद् ए ॥ मदजनवन दुःख उदय कारण,
 पाप आवास लद् ए ॥ नरनव साधननें होय समरथ, तोहि पण
 सीदाय ए ॥ सिंह पंजरमां पड्यो तिम, मोद् किमे न सधाय ए ॥ १६ ॥
 ॥ ढाल ॥ रयण कंचन रे, आलमांहि विष्टा जरी ॥ कुंण नाखे रे, तिम ए
 नरनव लही करी ॥ कुण सेवें रे, विषय वचन जिननां लही ॥ तिणे दीजें
 रे, आणा तातजी मुऊ वही ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ नयनमां तव नीर आणी,
 कहे तात अम नेह ए ॥ पीडे अतिशय तेह कारण, रहो अमचे गेह
 ए ॥ में कहुं स्नेह न कीजीवें एह, निमित्त मुख्य संसार ए ॥ दीप परें
 ढण उपजे विणसे, तास द्ये नवपार ए ॥ १८ ॥ ढाल ॥ बोले
 नृपति रे, ईशानसेन नृपनी धूआ ॥ खेद करणे रे, तव में कहुं आणी
 मया ॥ कहेवरावो रे, तेहनें एह विचार ए ॥ जो वूजे रे, सांजली मुऊ
 अधिकार ए ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ अधिकार सांजली कहे राजा, एह वात
 कही खरी ॥ पचवीसमी ए ढाल जांखी, खंम चोये सुखकरी ॥ वि
 बुध वनमविजय केरो, शिष्य पद्मविजय कहे ॥ रास समरादित्य केरो,
 सुणतां जयलघी लहे ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ७७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुगेदितनें नरपति कहे, शंखवर्धन सुण वात : जिम निपनी तिम
 नहें नुमें, नंजजायां सुखशान ॥ १ ॥ कुमरी पासें जइ करी, आव्यो

नूपतिपाय ; कहे सिद्धा ए कुमरना, मनोरथ सुणो महाराय ॥ १ ॥
जई नांखुं में जतनथी, कांयक कहे नृपकाम ; आसनथी ते उतरी,
अंजलि करी कहे आम ॥ ३ ॥ अवनीपति आणा करुं, में नांखुं
तव एम ; इहां कुमरने आवतां, राजमारगमां प्रेम ॥ ४ ॥ साधुदर्श
नथी सखर, जाति समरण जाम ; उपनाथी नव नव अवल, ततह्नी
ए नांख्या ताम ॥ ५ ॥ संजलाव्या सरवे अमें, जशोधरा मुख जाम;
नयणा वली सुतनी वधू, इण अवसर थयुं आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥

॥ सांजरीआ गुण गावा मुजनें हीरना रे ॥ ए देशी ॥

॥ एम सांजलतां मूर्छा पामी नृपधूआ रे, कांय हुउं हुउं आकुल
सवि परिवार रे ॥ चंदन सींचे चेतन पामी तव पठे रे, कांय पूठयो
पूठयो में तस ए अधिकार रे ॥ १ ॥ सांजलजो अहो कर्मविपाक वि
चित्रता रे ॥ कांय नांखुं इणि परें राजकुमरीयें ताम रे ॥ में नांखु
किम तेह विचित्रता तव कहे रे, तेह जशोधरा माहरुं जाणजे नाम
रे ॥ २ ॥ सां० ॥ नवमां नमतां कर्मनाटिक शुं नवि होये रे, तव
में नांखुं सांजलो कुमरीवात रे ॥ एह चरित्रें राजकुमर मन उजगुं
रे, कांय दीक्षा इहे जिनवर नांखीख्यात रे ॥ ३ ॥ सां० ॥ राय कहे
वरावे कहो हवे अमें करीयें किशुं रे, तव सा बोली कहो जईनें महा
राय रे ॥ एह संसार स्वरूप देखी कहो कोणनें रे, नवि वैराग्य करे
जिणें शिवसुख थाय रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ तिणे संसार तणा प्रतिबंध
थकी सखुं रे, कीजें जे मन उपजे कुमरनें जाव रे ॥ मुजनें आणा द्यो
जिम हुं दीक्षा ग्रहुं रे, सुणि राजा संवेग लह्यो नवनाव रे ॥ ५ ॥ सां० ॥
कहे कुमरने पुत्रमात्र नहीं माहरो रे, धर्म पमाड्यो तिणें गुरु माह
रो होय रे ॥ तिणें संसारमां रहेवुं सरीयुं माहरे रे, दीक्षा लेखुं अमें
पण दंपती दोय रे ॥ ६ ॥ सां० ॥ में नांखुं तव तातजी तुम एम
ज घटे रे, नवि कीजें कांय एह वार्ते प्रतिबंध रे ॥ तव तिहां देवरा
व्युं महादान वली करें रे, सघजे देहरे जिनपूजा संबंध रे ॥ ७ ॥

॥ सां० ॥ कुलक चाता मुज जसवर्द्धन नामथी रे, तेहनें थाप्यो
राज्यनो नार विशेष रे ॥ माय पिता परधान लोक बली केईशुं रे, वि
नयनतीशुं लीथो साधुवेष रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ इंडनूति आचारथ पासैं
पुण्यथी रे, लीथो संजम सद्गुणें शुन परिणाम रे ॥ ए निर्वेद कारण
मुज चरित्र कह्युं सवे रें, सांजल रें तुं धनकुमर अनिराम रे ॥ ए ॥
॥ सां० ॥ धन कहे रूडुं निर्वेदकारण दाखिउं रे, नांखो मुजनें करवा
ने जे योग्य रे ॥ गुरु कहे चरण सामग्री जगमां दोहिली रे, पामीनें
कोण हारे मूरख लोग रे ॥ १० ॥ सां० ॥ विस्तारें सुणी दुर्जनवात च
रित्रनी रे, हरख्यो हरख्यो धनकुमर कहे प्रेम रे ॥ लेउं चारित्र
गुरुजी तुम आणायकी रे, माय तायनें समजावुं जई एम रे ॥ ११ ॥
॥ सां० ॥ गुरु कहे जिम सुख उपजे तिम कीजें तुमैं रे, आव्यो मात
पितानें पासैं धन रे ॥ परम संवेगें वात कही मुनिवरतणी रे, प्रति
बुद्ध्या माय ताय करे व्रतमन्न रे ॥ १२ ॥ सां० ॥ योग्य पुत्र ठे गेह
नार सांणुं हवे रे, एम करी धनकुमरनें नांखे नेह रे ॥ मणि मोती
मुखनार डव्य तुमैं आदरो रे, अमें प्रवर्ज्यां लेशुं शिव सुखगेह रे
॥ १३ ॥ सां० ॥ धन कहे सारपणुं शुं दीतुं डव्यमां रे, जन्म जरानें
मरण न गव्हे काय रे ॥ अर्थ मनोरथ पूरा पण न करी शकुं रे, अ
थवा पुण्य गये पण संवित जाय रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ परलोकें पण न
दांय सखाइ कोइनें रे, तात कहे तें ए तो नांखुं साच रे ॥ धन कहे
आत्मा आपो साथें व्रत अहुं रे, तात कहे ए साचुं पण सुण वाच रे
॥ १५ ॥ सां० ॥ यौवनें इंडिय दमवा कंदर्प दुर्दमो रे, धन कहे अवि
वेरु ने यौवन जाण रे ॥ नहीं तरुणनें घरढो जीव अनादिनो रे, गर
दा पण बहु विषय पिपास वखाण रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ यतः ॥ “अगं
गतिन भजितं मुंमं, दशनविहीनं जानं तुंमं ॥ वृद्धोयाति गृहित्वा दंमं,
तदपि न मृचन्याशापिंमं ॥ १ ॥” पूर्व दाल ॥ निंदा न गणे न विचारे
परमात्मनें रे, डव्य संयोगें केश करे बली श्याम रे ॥ पारव मर्दन सेवी
दंग कर्जिन कर रे, हिंमे टेक अकी बली राखी माम रे ॥ १७ ॥ सां०

वृद्धनावथी बीहतो जनम कालांतरें रे, दाखे पण नवि देखे आयु
 स्वीण रे ॥ केई परलोकना अर्थी यौवन वय ठते रे, बीज चपलपरें
 जीवित जाणे हीण रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ धरी विवेक असार विषय
 ठांमी करी रे, हरिणपरें वली मरणथी बीहता तेह रे ॥ चारित्र धर्म
 सेवे जे परलोक साधवा रे, यौवन वृद्ध तणो नहीं हेतु एह रे ॥ १८ ॥
 ॥ सां० ॥ इंडिय दमीया आतम दमीउ मूलथी रे, तेहथी सुरनर
 सुख वली मोहनां सुख रे ॥ एम जाणी कोण इंडिय न दमे मूरखो
 रे, अशुन संकल्प मूल ते अनंग ठे दुःख रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ जिनव
 यणें जावित संकल्प करे नहीं रे, समता धरतो रहे नित्य गुरुनें पाय
 रे ॥ निर्वेदी जावनथी कंदर्प गुं करे रे, सार किशुं ए पुजलनो समुदा
 य रे ॥ २० ॥ सां० ॥ शब्दादिक शुन अईनें अशुन होये वली रे,
 अशुन होय ते परिणमे शुन परिणाम रे ॥ ए जड आतम चेतननें
 संबंध किश्यो रे, इव्यांतर संजोगें सुखनुं न ठाम रे ॥ २१ ॥ सां० ॥
 अन्य संजोगें आत्मिक सुख न होये कदा रे, तिणे मुक्त न गमे वि
 षय प्रमादनो संग रे ॥ तातप्रजावें विघ्न जशे सवि माहरां रे, मान्युं
 तातें कुमरवचन मनरंग रे ॥ २२ ॥ सां० ॥ करी अछाई महोत्सव
 दिये दाननें रे, मात पितानें बीजो परिजन संग रे ॥ तेह जशोधर
 गुरुनें पासें आदरे रे, धनकुमार अधिक मन दीकारंग रे ॥ २३ ॥
 ॥ सां० ॥ चोथे खंमें ढाल कही ठवीशमी रे, श्रीगुरु उत्तमविजय प
 सायें एह रे ॥ पद्मविजयें श्रीसमरादित्यना रासमां रे, सुणतां मंगल
 माला श्रोतागेह रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ७१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनकुमरें दीक्षा धरी, कीधो क्रियाकलाप ; सूत्रअन्यास करी सवे,
 जपतो मौनथी जाप ॥ १ ॥ एक विहार अंगी करे, जावना जावे
 सर्व ; गामें एक निशगमे, नगरें पंच निर्गर्व ॥ २ ॥ कोसंबीपुरें अ
 नुक्रमें, आव्या ते रुषिराय ; नंदनें हवे धनसिरि तणो, कहुं संबंधक
 आय ॥ ३ ॥ सघले खोव्या समुझमां, जडया नहिं ते जाम ; उलंघ्या

अर्णव हवे, तरुणीवयणें ताम ॥ ४ ॥ कंचननें वली कामिनी,
देखी चूक्यो नंद; कोसंबी आवी करी, मन सुख धरी रह्यो मंद
॥ ५ ॥ समुद्धत ते शेठीउ, नाम उवे निजनंद; गोचरी फरतां नग
रमां, मातंग जेम मुणिंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्त्यावीशमी ॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ फरता आव्या गोचरी, नंदतणे घरवार ॥ मेरे लाल ॥ धनसिरियें तव
उलख्या, उपन्यो तस शोक अपार ॥ मे० ॥ १ ॥ नारीकुकर्म्म जोजो
तुमें ॥ आंकणी ॥ दूधें सींच्यो लीवडो, नवी मीठो थाय लगार ॥ मे० ॥
किम नवि एह मूज हजी, कहे मुज अवतार धिःकार ॥ मे० ॥ २ ॥
ना० ॥ केम मुज नजरें ए चडयो, हवे करीयें एह उपाय ॥ मे० ॥
जिम जीवे नहीं मूलगो, एण अवसर ते रुपिराय ॥ मे० ॥ ३ ॥ ना० ॥
जाचना समय अतिक्रम्यो, जाणिनें वलीआ तेह ॥ मे० ॥ षेण लही
धनसिरी धणुं, उलखी मुज चिंते एह ॥ मे० ॥ ४ ॥ ना० ॥ शीघ्र
गयो केम ए कहो, बोलावी दासी ताम ॥ मे० ॥ जई जुउं किहां ज
इए रहे, होय तिम मुजनें कहे ताम ॥ मे० ॥ ५ ॥ ना० ॥ दासी आ
ण अंगीकरी, चाली मुनिवरनें माग ॥ मे० ॥ मुनिवर आहार मव्यो
नहीं, पण अवसरनो नहीं लाग ॥ मे० ॥ ६ ॥ ना० ॥ पुरदेवी उद्या
नमां. पोद्दोता तव चोथो जाम ॥ मे० ॥ लागो तिणें विचख्या नहीं, का
उस्तग ग्या तिणे ताम ॥ मे० ॥ ७ ॥ ना० ॥ जई धणसिरिनें ते क
णुं, धणसिरि कहे नंदनें एम ॥ मे० ॥ में पुरदेवीनें मानियुं, तुम रोग
दत्तो तव प्रेम ॥ मे० ॥ ८ ॥ ना० ॥ करि उपवास वदि आठमे,
तुम्ह आयतने करुं वास ॥ मे० ॥ आठम गई परमादथी, स्वप्नें तव
प्रेमीखान ॥ मे० ॥ ९ ॥ ना० ॥ विहाणे तुमें जाता रह्या, तेषो जां
नी न शकी वात ॥ मे० ॥ कीथो वे उपवास में, तिणे जाउं तिहां
माझात ॥ मे० ॥ १० ॥ ना० ॥ पूजापो आणी दिउं, नंदें पण आ
णो दीव ॥ मे० ॥ तव चाकर झगसाथि जे, दासी पण सायें लीध ॥
मे० ॥ ११ ॥ ना० ॥ तिहां जई दीग मुनिवरु, इण अवसर आ

व्यो एक ॥ मे० ॥ काष्ट तणी नरी गामली, कठिआरो धरत विवे
 क ॥ मे० ॥ १२ ॥ ना० ॥ जांगो अहू तिहां कियो, आथमवा ला
 ग्यो सूर ॥ मे० ॥ कठिआरो मन चिंतवे, मुऊनें अयुं अतिहि असूर ॥
 मे० ॥ १३ ॥ ना० ॥ काष्ट ग्रहे नहीं को इहां, तिहां मूकी वृषन ते
 लीध ॥ मे० ॥ निज घर पहतो वेगशुं, धनसिरि चिंते नलूं कीध ॥
 मे० ॥ १४ ॥ ना० ॥ एहज काष्ठें बालशुं, चिंतवी गई चंमिका पा
 य ॥ मे० ॥ पूजा करी चाकर नणी, नोजन आपे मन जाय ॥ मे० ॥
 ॥ १५ ॥ ना० ॥ सूता सढुये अनुक्रमें, एकाकिणी निकली नारि ॥ मे० ॥
 मुनिपासैं ते काष्टनो, खडकें तिहां अति संजार ॥ मे० ॥ १६ ॥ ना० ॥
 ध्यानमां मुनिवर नवि लहे, अज्ञानें प्रजाली आग ॥ मे० ॥ ज्वाला फरसे
 मुनितनु, चिंते मुनिवर महानाग ॥ मे० ॥ १७ ॥ ना० ॥ अनुकंपायें म
 निवरु, बलतां काउस्सग अमग ॥ मे० ॥ अहो ए जीवने हुं अयो, कार
 ण दुर्गतिने मग ॥ मे० ॥ १८ ॥ ना० ॥ धन जे नर मुक्तें गया, न
 होय कर्मबंधनुं हेत ॥ मे० ॥ मुऊ उदेशी नरगमां, ए पोहोचरो डुः
 खसंकेत ॥ मे० ॥ १९ ॥ ना० ॥ कारणें कारय नीपजे, एम नांखे श्री
 जगनाथ ॥ मे० ॥ नवि शोचुं मुऊ जीवने, शोचुं ए जीव अनाथ ॥
 मे० ॥ २० ॥ ना० ॥ बाहिरमति जिनवयणथी, पडीउ डुःखसाय
 र एह ॥ मे० ॥ मोही क्लिष्ट प्राणी नणी, अथवा नहीं डुःख ए रेह ॥
 मे० ॥ २१ ॥ ना० ॥ धिक् संसार असारनैं, एम जावतो शुन परिणा
 म ॥ मे० ॥ पापिणीयें माखो रुषि, एहने किहां सजति ठाम ॥ मे० ॥
 ॥ २२ ॥ ना० ॥ पन्नर सागर आउखे, उपन्या रुषि शुक्रविमान ॥
 मे० ॥ सातमे देवलोकें सही, सुख नोगवे ते असमान ॥ मे० ॥ २३ ॥
 ना० ॥ चोथे खंमैं ए कही, वर सत्त्यावीशमी ढाल ॥ मे० ॥ पद्मविजय शो
 हामणी, सुणतां होय मंगलमाल ॥ मे० ॥ २४ ॥ ना० ॥ सर्व गाथा ॥ ८४ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ चंमिकादेहरे चपलथी, दासीयें पेसतां दीठ; धनसिरिने पूछे
 धसी, स्वामीनी कहो विसिठ ॥ १ ॥ किहां जई आव्यां ते कहो, मा

निनी कहे मथ्यरात ; परदक्षिणा पूर्वे करी, जगवतीनें जलि जांति ॥ १ ॥
 इण अवसर अवजोकीयो, अगनीनो उद्योत ; शुं ए एम शोची करी,
 सूती शंक सहोत ॥ २ ॥ विहाणे देवि पूजी हवे, चाली करी अति
 चूप ; पंचत्व लह्यो पंथें रुषि, आलोक्यो ते अनूप ॥ ४ ॥ चाकरनें
 चेटी कहे, अहो एकुप अपराध ; एह शुं जाणीये आपणें, सीऊयो
 केणीपरें साध ॥ ५ ॥ चेटी मनमां चिंतवे, मोकली काले मुऊ ; जोवा
 वली मथ्यजामिनी, गई तेहनुं ए गुऊ ॥ ६ ॥ अजुवालुं आलोकीयुं, तिण
 वेजा ततकाल ; अहो मुऊ एह अनर्थमां, कारण करी विकराल ॥ ७ ॥

॥ ढाल अछावीशमी ॥ जगतगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ गाढजानो धणी आवीउं रे, व्यतिकर दीगो तेह ॥ फरियादी गयो
 रावनें रे, अहो मुऊ पाप अठेह ॥ १ ॥ रुपि कियें मारीउं रे ॥ मुऊ
 काष्ठयो वलीउं जेह ॥ माहरा धिग जन्मनें रे ॥ ए आंकणी ॥ मुऊ
 माठी गति होयजे रे, सुणि कोप्यो राजान ॥ हुकम कखो कोटवाल
 नें रे, रुपियातक करो जाण ॥ २ ॥ रुपि ॥ चंमिकादेहरे चालीउं रे,
 कांप धरी कोटवाल ॥ पूठे पूजारि प्रत्यें रे, रात्रि रखुं कोण काल ॥ ३ ॥
 ॥ रुपि ॥ चोर जांठ कोई नवि रह्यो रे, पूजारि कहे एम ॥ समुद्र
 दत्तनी गेहिनी रे, एक रही धरी नेम ॥ ४ ॥ रुपि ॥ कहे तलार शे हे
 तुयें रे, रात्रि रही ए नारि ॥ पूजारि कहे नवि लहुं रे, तव चिंते ते
 तलार ॥ ५ ॥ रुपि ॥ आठम नौमी चौदशी अठे रे, वसवा केरो
 दिन्न ॥ तेहमां आज एके नहीं रे, वातथी थई खण खण ॥ ६ ॥
 रुपि ॥ मंगज वार हतो वली रे, पाठले पोहोरें वृष्टि ॥ योगनिपात
 मज्यां खरो रे, स्त्रीविण नहीं कोई छुष्ट ॥ ७ ॥ रुपि ॥ जाठ एहनें
 आयात ॥ ८ ॥ रुपि ॥ पूठे सार्थपनी गेहिनी रे, घरमां ठे के नाहि
 ॥ ओजना लदी कहे काम शुं रे, कहे कोटवाल उवाह ॥ ९ ॥ रुपि ॥
 मज्यां धरी कांवे करी रे, परअनिप्रायनो जाण ॥ कहे रे पापिणी वि
 मरुं रे, मुनिचरनांत अजाण ॥ १० ॥ रुपि ॥ निजकर्म शंकी घणी

रे, चेटी बोली ताम ॥ मुऊ शेठाणीयें मोकली रे, जोवा मुनिवर ताम
 ॥ ११ ॥ ऋषि० ॥ हुं बीजुं जाणुं नहीं रे, सुणी उपन्यो संदेह ॥
 अहो गवेषणा केरहुं रे, कारण नहीं ए करेह ॥ १२ ॥ ऋषि० ॥
 फरि ते पूढे सुंदरी रे, मकरो जय मनमाहिं ॥ मोकळ्यां तुम्ह शे कार
 णे रे, ते जांखो तुमें आहिं ॥ १३ ॥ ऋषि० ॥ सा कहे निहा ले
 अवा रे, कालें त्रीजे जाम ॥ आव्या विण लीधे वळ्या रे, तव मुऊ
 मोकली आम ॥ १४ ॥ ऋषि० ॥ जोई आवीनें में कछुं रे, ऋषि
 रहेवानुं ताम ॥ कार्यतो जाणुं नहीं रे, कहे कोटवाल ते ताम ॥ १५ ॥
 ॥ ऋषि० ॥ तिहां जईनें शुं कीधलूं रे, तव बोली सा नारि ॥ चंद्रिका
 नी पूजा करी रे, मुनि नमीआ न लगार ॥ १६ ॥ ऋषि० ॥ कोटवा
 ल तव चिंतवे रे, पूजानें मिश एह ॥ परिजन वंची मारीउ रे, मुनि
 वर नहीं संदेह ॥ १७ ॥ ऋषि एणे मारीउ रे ॥ ए आंकणी ॥ बोला
 वी घरमां जई रे, तव खोनाणी तेह ॥ जाव लखीने जांखीयो रे, वात
 सुणो मुऊ एह ॥ १८ ॥ ऋषि० ॥ ऋषिघातकने खोलवा रे, मुऊने
 मोकळ्यो राय ॥ पगलुं तुम घर आवीउं रे, तिणे चालो नृपपाय
 ॥ १९ ॥ ऋषि० ॥ सांनलीनें धरणी ढली रे, तव चिंते कोटवाल ॥
 निश्चय कर्म एणें कछुं रे, नहिंतो जय किम जाल ॥ २० ॥ ऋषि० ॥
 नाठो नंद बाहीरथकी रे, वात सुणीनें ते कान ॥ धनसिरि लाव्या
 नृप कन्हे रे, जोई चिंते राजान ॥ २१ ॥ ऋषि० ॥ इण आकारें ए
 हवुं रे, कर्म करे किम जाय ॥ शे कारण तुं तिहां गई रे, पूढे एणि
 परें राय ॥ २२ ॥ ऋषि० ॥ दोन लही बोली नहीं रे, तव शंका नृप
 आय ॥ फरि पूढे केहनी धूआ रे, किहांथी आवी रहाय ॥ २३ ॥
 ॥ ऋषि० ॥ पूर्णजडनी हुं धूआ रे, सुसम्म नयरथी आय ॥ समुड
 दत्तनी गेहिनी रे, तव तस शोध कराय ॥ २४ ॥ ऋषि० ॥ न जडयो
 नर्ता तेहनो रे, तव कीधो विश्राम ॥ नृपपासें न बोली शके रे, एह
 वो धरी मन नाम ॥ २५ ॥ ऋषि० ॥ पूर्णजड पासें मोकळ्यो रे, ले
 खवाहक ततकाल ॥ एहनें पूठावे तदा रे, एहज वात नृपाल

॥ २६ ॥ ऋषि० ॥ लेखवाहक लेख लावीउ रे, वांचे नरपति एम ॥
 धणसिरि नामें अम धूआ रे, अम कुजखंपण नेम ॥ २७ ॥ ऋषि० ॥
 राय विचारे एणियें रे, निश्चय कीधुं काम ॥ पापिणीनी अहो मूर्खता
 रे, अहो क्रूरहृदया वाम ॥ २८ ॥ ऋषि० ॥ नारी अवध्य कही
 तिणें रे, दीधो देश निकाल ॥ जातां सांज समय तदा रे, नूख तरश
 अतराल ॥ २९ ॥ ऋषि० ॥ देवलमां सूती जई रे, एहवे करडयो ना
 ग ॥ महाक्लेशें मरी उपनी रे, वालुप्रजा दुःख जाग ॥ ३० ॥ ऋषि० ॥
 उग्रपाप तुरतज फले रे, एहमां नहीं संदेह ॥ सात सागर नारक
 पणो रे, दुःख नोगवे निज देह ॥ ३१ ॥ ऋषि० ॥ एणी परें चोथो नव
 कह्यो रे, दंपतीनो अधिकार, हवे जय विजय चाता तणो रे, नाखुं
 सखर विचार ॥ ३२ ॥ ओताजन सांजलो रे ॥ ए आंकणी ॥ आषा
 ढ वदि एकादशी रे ॥ च्यालीशें मंमाण ॥ पूरो वीसल नगरमां रे, चोथो
 खंम प्रमाण ॥ ३३ ॥ ओता० ॥ अछावीश ठालें करी रे, समरादि
 त्यनें रास ॥ जाड्वा वदि तेरश दिनें रे, संपूरण सुविलास ॥ ३४ ॥
 ॥ ओ० ॥ विजयदेवसूरि पटथरू रे, श्रीविजयसिंह सूरिश ॥ स
 ल्यविजय शोहामणा रे, सोनागी तस शिष्य ॥ ३५ ॥ ओ० ॥ तास
 कपूरविजय कवि रे, खिमाविजय वर तास ॥ जिनविजय शिष्य
 तेहना रे, जेहनें आस्र अन्यास ॥ ३६ ॥ ओ० ॥ गीतारथ गीरुआ
 पणा रे, नड्क समतावंत ॥ उत्तमविजय शोहामणा रे, तेहनो शिष्य
 मद्धंत ॥ ३७ ॥ ओ० ॥ तस पदपद्म घमर समो रे, पद्मविजय इण
 नाम ॥ गाथा एम दरपें करी रे, गुणी जनना गुणग्राम ॥ ३८ ॥ ओ० ॥
 पुण्य उपार्जन जे करी रे, तेहयो नविजन लोक ॥ सकल दुःखनो ह्य
 करी रे, पामो शिवफल रोक ॥ ३९ ॥ ओ० ॥ सर्व गाथा ॥ ८८६ ॥
 ॥ इति श्री संविज्ञापक्रीय पंक्तिप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणेशिष्य पं
 क्ति श्री पद्मविजयगणेशिष्ये श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे ध
 नकुमारधनश्रीदंपत्योः संगतयोश्चतुर्यो नरनवः समाप्तः ॥ चतुर्थखंडे
 मने गाथा ॥ ८८८ ॥ एक गाथा तथा काव्य अने सवैयो मलीने ॥ २८ ॥

॥ अथ ॥

॥ पंचम खंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रगट प्रतापी पास जी, प्रणमुं प्रेमें पाय; समरी साची शारदा,
करे जेह कविराय ॥ १ ॥ पंचमखंड प्रारंभीयें, सुणो संघ समुदाय;
सुणतां समता रस वधे, पातक दूर पलाय ॥ २ ॥ जंबुद्वीपनुं जरत
जे, नयर काकंदी नाम; समुद्रदेशपरें शोजती, तंतुखुं खांतिका ता
म ॥ ३ ॥ पतिव्रता जनमन परें, परपुरुषें प्राकार; उलंगाये नहीं अ
धिक, उज्ज्वल धन आगार ॥ ४ ॥ द्वारतोरण अति दीपतां, सिंहबा
लखुं साच; गिरिवर केरी जुं गुफा, तरतो दीसे ताच ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ लाबल दे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥

॥ सूरतेज नृप नाम, सूरतेजरिपु ठाम ॥ आज हो ॥ राणी रे लीलाव
ती जाणी तेहनी रे ॥ १ ॥ पूरण करी सुर आय, धनसुर उपन्यो
आय ॥ आ० ॥ तेहनी रे कुखें तव चंद्र स्वपन लखुं रे ॥ २ ॥ संजला
वे जरतार, तव ते करे उच्चार ॥ आ० ॥ सामंत मंजलमां शशिस
म सुत होयशे रे ॥ ३ ॥ प्रसवसमय थयो जाम, गुनजोगें सा ता
म ॥ आ० ॥ प्रसव्यो रें तिणें पुत्र रत्नसम परगढो रे ॥ ४ ॥ निवृत्ति
नामें नारि, खाये वधामणी सार ॥ आ० ॥ संतोषे तस दान देईने
नूपति रे ॥ ५ ॥ एम करतां थयो मास, जयकुमार ते तास ॥ आ० ॥
थापे रे अनिधान अनुक्रमें वाधतो रे ॥ ६ ॥ करतो कला अन्यास, पू
र्वधरम निवास ॥ आ० ॥ चारित्रें घणो राग थयो तस जन्मथी रे ॥
॥ ७ ॥ एक दिन रमवा उद्यान, चंद्रोदय अनिधान ॥ आ० ॥ दीठा
रे तिहां सनतकुमार सूरिसरु रे ॥ ८ ॥ तेजें सूर्य समान, उतखा प्रा
सुक थान ॥ आ० ॥ उदधि परें गंजीर शीतल जिम चंद्रमा रे ॥ ९ ॥
रतनपरें बहु मूल, सहुजननें अनुकूल ॥ आ० ॥ सरगपरें रमणिक
वाच्य नहीं शिवपरें रे ॥ १० ॥ नयरी श्वेतंबिका राय, जशवर्म सुत

मुनिराय ॥ आ० ॥ स्वपरसमय ग्रहो सार बहु मुनिपरिवस्यो रे ॥ ११ ॥
 देखी लह्यो संवेग, मन चिंते अतिवेग ॥ आ० ॥ एह संसार असार
 एहवा पण ठामता रे ॥ १२ ॥ कुण ए केम कस्यो त्याग, पूढुं जई
 महाजाग ॥ आ० ॥ जई वंद्या सहु मुनिने वली सूरिशनें रे ॥ १३ ॥
 वेगो गुरुनें पाय, करकज जोडी गाय ॥ आ० ॥ गुरुजी ए संसार वैरा
 ग्य हेतु खरो रे ॥ १४ ॥ तो पण बाह्य निमित्त, विण नवि उजगे चि
 न ॥ आ० ॥ ते कारण विशेषहेतु तुमचुं कहो रे ॥ १५ ॥ चिंते सूरि
 खर एम, वयणविन्यास अहो केम ॥ आ० ॥ एहनो रे ए विवेक
 देखी मन रंजीयुं रे ॥ १६ ॥ हेतु विशेष अवधार, ते पण ठे संसार
 ॥ आ० ॥ सूरि कहे जो सुणवा इहा तो सुणो रे ॥ १७ ॥ अल्प
 निदान विवाग, महोटा सुणी महाजाग ॥ आ० ॥ चित्रांगद विद्याधर
 पानें व्रत जीयुं रे ॥ १८ ॥ इणहीज नारहवास, श्वेतांबिका पुरी खा
 त ॥ आ० ॥ जशवर्मा नृप तेहनो पुत्र हुं जाणजे रे ॥ १९ ॥ ज्यो
 तिनी कहे तव एम. जन्ममात्रची नेम ॥ आ० ॥ विद्याधर नरपति
 यागे ए बालको रे ॥ २० ॥ हुं बहु वल्लभ तात, एक दिन तस्कर
 यात ॥ आ० ॥ करवा रे छेई जाता दीग में तदा रे ॥ २१ ॥ चोर घ
 णा कहे एम. अम तुम शरणुं नेम ॥ आ० ॥ राखो रे तुमें तव में तस
 मुक्तादीया रे ॥ २२ ॥ रमवा गयो हुं वार, सयलो ए अधिकार ॥
 ॥ आ० ॥ निपन्यां रे तिहां बाहरि पंचम खंममां रे ॥ २३ ॥ पहेली
 दाज रताज, सुणतां मंगलमाल ॥ आ० ॥ समरादित्यना रासमां
 पयविजयें कही रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गंगा लोक नयर तणा, कहे नृपनें कोटवाल; नृप कहे कुंमर
 जाणे नदी, नेम करजो नतकाल ॥ १ ॥ तस्कर ग्रही तुम्हें पुरतणा,
 नमनें करी विद्याण; मागजो सुणि निणे मागीया, जब मुकने थयुं जाण
 ॥ २ ॥ गीतालो महागयथी, चाव्यो चतुर सुजाण; तामलिनि
 माव्यो कुत, सत्तमां याणी माण ॥ ३ ॥ चतः ॥ “त्रयः स्थानं न

मुंचंति, काकाः कापुरुषाः मृगाः ॥ अपमाने त्रयोयांति, सिंहाः सत्पु
रुषा गजाः ॥ १ ॥ ईशानचंद्र अवनीपति; साहमो जई सनमान;
देई कहे सुंदर कछुं, आव्या आपण ठाण ॥ ४ ॥ जाणो ए निज राज्य
ठे, नयरमां कखो निवेश; आपे मुज आवास तिम, रहेवा तेह नरेश
॥ ५ ॥ जीवन ल्यो तुम्ह जे गमे, एम कहेवरावे राय; मैतो ते नवि
मानीयुं, तस हित जिणे परें ताय ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग धमाल ॥ पासजी हो ॥ अहो मेरे ललनां ॥ ए देशी ॥
॥ वसंतसमय एक दिन हवे आव्यो, रहेतां तिहां सुखमांहि ॥
ललनां ॥ अविवेकीजन आनंदकारी, दिन दिन अधिक उल्लाह ॥ १ ॥
मनमोहन मेरे दिल वश्यो हो, अहो मेरे ललनां ॥ दिल वश्यो मन
वश्यो मुज ॥ मन० ॥ ए आंकणी ॥ मलयवायु तिहां वाया मनोहर,
फूल्यां वन उद्यान ॥ ललनां ॥ लोकथोक तिहां जोवा चाव्या, कोकि
लरव सुणे कान ॥ २ ॥ मन० ॥ मित्रें परिवृत्त हुं पण चाव्यो, करी
तनु शोना विशेष ॥ ल० ॥ अनंगनंदन उद्यानमां जातां, आव्यो रा
जपंथनें देश ॥ ३ ॥ मन० ॥ नाम विलासवती नृप पुत्री, गोंखथी
दीगो मुज ॥ ल० ॥ कोई जवांतरनें अन्यासें, रागथी अतिशे अलूज
॥ ४ ॥ मन० ॥ बकुलमाला गुंथी निजहारें, नाखी मुज शिर तेह ॥
॥ ल० ॥ दीगी मुज वसुनूति मित्रें, आपी कंठदेशें में एह ॥ ५ ॥ म
न० ॥ ऊर्ध्व जोयुं तज तिहां दीतुं, वदनकमल अदभूत ॥ ल० ॥ हर्ष
लह्यो हुं ते पण दुई, तोष विषाद संयुत ॥ ६ ॥ मन० ॥ हुं तनुथी
तिहां आगल चाव्यो, चित्त मूकी तस पास ॥ ल० ॥ तेहनूं ध्यान क
रत घर आयो, पण नहीं क्रीडा विलास ॥ ७ ॥ मन० ॥ शीर दुःख्या
ना मिशथी बीसरज्यो, मित्रादिक परिवार ॥ ल० ॥ अननुनूत दुःखने
अनुभवतो, कृण निडा करी तिणवार ॥ ८ ॥ मन० ॥ रात्री गई क
छुं कृत्य घोष, आव्या मित्र ते पास ॥ ल० ॥ जवन उद्यानमां क्री
डा करतां, लिये तंबोल सुवास ॥ ९ ॥ मन० ॥ शून्य चित्त लही

वसुचूति पूछे, किम वासर शशिवान ॥ ल० ॥ कृणमां ध्यानी मुनिपरें
 दीसो, करी तनु चेष्टा ठान ॥ १० ॥ मन० ॥ जींल्या जुहारी परें कृ
 ण हरखो, तव में कसुं नहीं कांय ॥ ल० ॥ मित्र कहे में जाणुं स
 यलूं, चिंता तुज नारीनी थाय ॥ ११ ॥ मन० ॥ नेत्र बाणें करी विं
 ध्यां सबजो, तिणे करी दीर्घ निःश्वास ॥ ल० ॥ मत चिंता कर तुज
 नें डेठे, माल ते दूती तुज पास ॥ १२ ॥ मन० ॥ एक पखी प्रीतें बहु
 चिंता, तुज चिंता न लगार ॥ ल० ॥ तुम्ह संयोग उपायमां वरतुं,
 राखो चित्त हर्ष अपार ॥ १३ ॥ मन० ॥ धावि विलासवतीनी पुत्री,
 अनंगसुंदरी इण नाम ॥ ल० ॥ तास संघातें प्रसंग कस्यो तिणे, ग
 मनागमन थयुं ताम ॥ १४ ॥ मन० ॥ दिवस वहि गया जब बहुते
 रा. तव मन चिंते एम ॥ ल० ॥ काम कसुं नहीं मित्रें माहकूं. कहो
 दवे करीयें केम ॥ १५ ॥ मन० ॥ मारवर्गो सज्या जई सूतो, मूर्छित
 मृन मृद जेम ॥ ल० ॥ ग्रह आवेश थयो अथ विहिनी, आपवर्गो
 नहीं तेम ॥ १६ ॥ मन० ॥ एक दिन आव्यो मित्र हरखसुं, कहे सीधुं
 तुम काम ॥ ल० ॥ कहो केम सीधुं तव ते जांखे, हुं गयो धावि धू
 आ धाम ॥ १७ ॥ मन० ॥ भ्लानवदन देखी में पूढयूं, अनंगसुंदरी
 कहो बात ॥ ल० ॥ शी चिंता तव प्रेमें बोली, सुणि माहरो अवदा
 त ॥ १८ ॥ मन० ॥ सा कहे आदर्शपरें दुःख जेहनें, संक्रमे नहीं
 तन यात ॥ ल० ॥ कहि तो पण गुं लेखे लागे, विरला परदुःखें दुःखा
 त ॥ १९ ॥ मन० ॥ “यतः ॥ विरला जाणंति गुणा, विरला जा
 णंति लज्जियकथाइ ॥ सामण धणा विरला, परदुःखे दुत्किया विर
 ला ॥ २० ॥” में कसुं तुज आशा करुं पूरी, तव बोलीसा नारि ॥ ल० ॥
 गयध्या सुज सही अतिदुःखिणी. तेहनो कस्यो सर्व विचार ॥ २० ॥
 मन० ॥ मदन नहोत्तवमां नर दीगो, रूपें जिम पंचवाण ॥ ल० ॥ ते
 दखी अंत अयस्या जोगवे, माला प्रमुख थदीनाण ॥ २१ ॥
 मन० ॥ पण नवि उजग्यो कांण हतो ए. में पण करी बहु शोध ॥
 ल० ॥ सर्व व्यापार तज्यां तेणे सखियें, सुज पण ते नवि ल० ॥

॥ ११ ॥ मन० ॥ सखिजन कर ग्रही उपरितल चढी, मारगें निरखे तेह ॥ ल०
॥ वात संजारी अश्रुपात करे, जिम आपाढनो मेह ॥ १३ ॥ मन० ॥ ए
म करतां ते मूर्खी पामी, तव मुज संभ्रम आय ॥ ल० ॥ उठि कह्युं
में किहां ठे देखावो, रखे तस जीवित जाय ॥ १४ ॥ मन० ॥ कहे वसु
नूति वन्युं ए कालें, पण सुणो आगल वात ॥ ल० ॥ सांजलतां उप
जरीं शाता, सुणियें आगल अवदात ॥ १५ ॥ मन० ॥ बीजी ढाल ए
पंचमखंमें, समरादित्यनें रास ॥ ल० ॥ पद्मविजय कहे गुणिगुण
गातां, होवे नित्य जीजविलास ॥ १६ ॥ मन० ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुपा धरी अवनत करी, वदन सुणो हवे वात; वसुनूति कहे वेग
शुं, वीज्या शीतल वात ॥ १ ॥ चंदन शीतल चरचिआं, जीव वल्यो
तस जाम; नयन उघाडी निरखती, तस पूढ्युं में ताम ॥ २ ॥ शी
पीडा एम सामटी, ते कहे दर्शन तास; न अरुं तिण कारण मदन,
पीडे देतो पास ॥ ३ ॥ धारण तेहनै धारवा, में कह्युं राजकुमार; चिंता
न करो चितमां, कह्युं तेहनो परकार ॥ ४ ॥ लाध्यो ते लहण अकी,
ढोगालो ते ठयल्ल; कटिसूत्रक संतोष करी, आप्यो मुज अवल्ल ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ घोडी ते आई थारा देशमां मारूजी ॥ ए देशी ॥
॥ इण समे आवी तिहां कणे ॥ साहिवजी ॥ विलासवतीनी मात हो,
सुणो साहिव काम ए नीपन्युं ॥ साहिवजी ॥ कहे रायें फरमावी
शुं ॥ सा० ॥ वीणा संजारी ख्यात हो ॥ १ ॥ सु० ॥ विणा वजाव
वी नृप कनें ॥ सा० ॥ सांजली कह्युं परमाण हो ॥ सु० ॥ विणा
चार्यणी तेडीनें ॥ सा० ॥ नवि लोपे गुरु आण हो ॥ २ ॥ सु० ॥
हुंतो तिहांथी आवती ॥ सा० ॥ विगर कहे निजगेह हो ॥ सु० ॥
घणुंअ विशेषें खोजीउ ॥ सा० ॥ पण नव लाधो तेह हो ॥ ३ ॥
॥ सु० ॥ चिंता पिशाचणीयें ग्रही ॥ सा० ॥ तिणें मुज उदवेग आय
हो ॥ सु० ॥ तव में कह्युं चिंता तजो ॥ सा० ॥ हुं उलखुं ते जाय
हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ मेजवशुं संजोग ए ॥ सा० ॥ अनंगसुंदरी कहे

ताम हो ॥ सु० ॥ कोण जुवान ते जांखीयें ॥ सा० ॥ तव कह्युं स
 वजुं काम हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ उलखाव्यो में जली परें ॥ सा० ॥ जां
 खी नाम निशान हो ॥ सु० ॥ अनंगसुंदरी तव कहे ॥ सा० ॥ एह
 वी बात निदान हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो निरुद्यम केम अई रह्या ॥ सा० ॥
 तव में जांखुं तास हो ॥ सु० ॥ नहीं निरुद्यम पण चिंतवुं ॥ सा० ॥
 एह उपाय ते खास हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ सा कहे समरूप कुलकनी ॥
 ॥ सा० ॥ हरतां कांय न दोष हो ॥ सु० ॥ आव प्रकार विवाहना
 ॥ सा० ॥ शास्त्रमां जांख्या जोप हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ ब्राह्म १ प्राजा
 पत्य २ आर्य ३ ॥ सा० ॥ कृत्विज ४ धर्म ५ चार हो ॥ सु० ॥
 गांधर्व ६ आसुर ७ राक्षस ८ वली ॥ सा० ॥ पैशाच ९ अधर्म चार
 हो ॥ ९ ॥ सु० ॥ कन्या नूपित करि दीये ॥ सा० ॥ ते विवाह कह्यो
 ब्राह्म हो ॥ सु० ॥ निजविजवोचित धन दीये ॥ सा० ॥ ते प्राजाप
 त्य नाम हो ॥ १० ॥ सु० ॥ गाय दान पूर्वक दीये ॥ सा० ॥ तेतो
 आर्य कहाय हो ॥ सु० ॥ सर्वजातिधन दक्षिणा ॥ सा० ॥ तेतो वेद
 सुगाय हो ॥ ११ ॥ सु० ॥ वरकन्या राजीपणो ॥ सा० ॥ नहिं कोई
 अवरुनुं काम हो ॥ सु० ॥ ते गांधर्व कह्यो वली ॥ सा० ॥ परठन्न प
 रणो जाम हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ जे पण वंधें परणियें ॥ सा० ॥ तेतो
 आसुर जाण हो ॥ सु० ॥ वजात्कारथी परणवुं ॥ सा० ॥ ते राक्षस प
 दिचाण हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ सूती रमतो होय जे ॥ सा० ॥ अणजा
 णो लें जाय हो ॥ सु० ॥ ते पैशाचिक जाणियें ॥ सा० ॥ हरणमां
 दोर न कांय हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ में कह्युं बात खरी कही ॥ सा० ॥
 पण गंगी नग्गाय हो ॥ सु० ॥ अप्रतिहत गतिकुमरनें ॥ सा० ॥
 वनी जीवन सुगनाय हो ॥ १५ ॥ सु० ॥ परणावे राजा कदी ॥ सा० ॥
 तव नहीं बीजो उपाय हो ॥ सु० ॥ दर्शन वेदुनें जिम होये ॥ सा० ॥
 चिंतयो तेह सुगाय हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ अनंगसुंदरी तव जणो ॥
 सा० ॥ जागो नुमें कुमार हो ॥ सु० ॥ हुं पण लुवन उद्यानमां ॥
 सा० ॥ जायुं राजकुमारी हो ॥ १७ ॥ सु० ॥ में ए बात अंगीकरी

॥ सा० ॥ चालो कारण तेह हो ॥ सु० ॥ वचन सुणी वसुनूति
नां ॥ सा० ॥ परम आणंद लह्यो देह हो ॥ १७ ॥ सु० ॥ मोह अ
ज्ञानें मानतो ॥ सा० ॥ सवि दुःखनो लह्यो पार हो ॥ सु० ॥ वसुनू
तिनें कह्युं तुम तणुं ॥ सा० ॥ वचन न करुं नाकार हो ॥ १८ ॥
सु० ॥ जवनउद्यानें अमें गया ॥ सा० ॥ जिहां षट्कृतुनी शोह
हो ॥ सु० ॥ जाति अनेकना फूलिया ॥ सा० ॥ वृक्ष देखी होय मोह
हो ॥ १९ ॥ सु० ॥ अनंगसुंदरी आवी कहे ॥ सा० ॥ एह चंदनल
तागेह हो ॥ सु० ॥ तिहां आवीनें बेसीयें ॥ सा० ॥ तव अमें गया
तिहां नेह हो ॥ २० ॥ सु० ॥ दीठी विलासवती तिहां ॥ सा० ॥ स
खीयें परिवृत जेह हो ॥ सु० ॥ कूर्मोन्नत पद जेहना ॥ सा० ॥ नि
र्मल नख ससनेह हो ॥ २१ ॥ सु० ॥ उरुजुगरंजा उपमा ॥ सा० ॥
सिंहलंकी शुनवान हो ॥ सु० ॥ कटिमेखला खलकी रही ॥ सा० ॥
जवननितंब पंचबाण हो ॥ २२ ॥ सु० ॥ लावण्य जलनी कूपिका ॥
सा० ॥ नाजिमंजल गंजीर हो ॥ सु० ॥ कमल नालशी बांहडी ॥
सा० ॥ नासिका चंचज्युं कीर हो ॥ २३ ॥ सु० ॥ चंदलावयणी विराज
ती ॥ सा० ॥ चंपकवरणी धार हो ॥ सु० ॥ कोट उरें घणुं शोहतो ॥
सा० ॥ मुक्ताफलनो हार हो ॥ २४ ॥ सु० ॥ आंखडी पंकजपांख
डी ॥ सा० ॥ अर्धशशीसम नाल हो ॥ सु० ॥ कामधनुष जमुहा
वनी ॥ सा० ॥ अधर प्रवाला लाल हो ॥ २५ ॥ सु० ॥ जिन ध्याना
नखें दाऊतो ॥ सा० ॥ मदनधूम मानुं केश हो ॥ सु० ॥ अथवा शेष वेणें
वश्यो ॥ सा० ॥ दंत दाढिम कलीवेश हो ॥ २६ ॥ सु० ॥ रूप देखी
रीऊयो घणुं ॥ सा० ॥ चित्तमां सनत्कुमार हो ॥ सु० ॥ नेत्रकटाक्षें
निरखीउ ॥ सा० ॥ विस्मय पामी नार हो ॥ २७ ॥ सु० ॥ त्रीजी पांचमा
खंममां ॥ सा० ॥ पद्मविजय कही ढाल हो ॥ सु० ॥ समरादित्यना रास
मां ॥ सा० ॥ आगल वात रसाल हो ॥ २८ ॥ सु० ॥ सर्व गाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आदर देई उनी थई, विलासवती तिणि वार; सन्मानी बेसारतो,

कामनीनें ते कुमार ॥ १ ॥ अनंगसुंदरी कहे अम प्रत्ये, आसन बे
 सो एधि; वेठा तव अमें विहुं जणां, तंबोज आण्यो तेषि ॥ २ ॥
 मित्रनूति इण नामथी, कन्या रक्षाकार; आवी प्रणम्यो आदरें, कीधो
 में सत्कार ॥ ३ ॥ विलासवती तुमनें वदे, नरपति एहवी वात; वी
 णा तुमनें विसरी, कालें कोपकरात ॥ ४ ॥ आज वजाववी अवल
 थी. संनारो करि शान; आणा तव अंगीकरी, निकली अवसर जा
 न ॥ ५ ॥ तिर्थां आंखें ताकती, जवन गई जयनीत; मारबाण विंधी
 मनें, कंपे जेम चकीत ॥ ६ ॥ वसुनूति कहे वालहा, जईयें आपणी
 जाग; जे कारण वेशी रह्या, विलासवती विण बाग ॥ ७ ॥ उ
 ठ्या वेहु इहां थकी, आव्या द्वार उद्यान; अनंगवती नृप रा
 णीयें, दीठो मुऊ दिल आण ॥ ८ ॥

॥ टाल चोथी ॥ माहारुं मन मोह्युं रे माधव देखवा रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ मुऊनें देखीरे राग ते उपन्यो रे, काम न राखेरे माम ॥ कार्य अ
 कार्य हिताहित नवि गणे रे, विद्वज थई तेह वाम ॥ १ ॥ विषयपि
 पाना रे विपसी जगतमां रे ॥ ए आंकणी ॥ निजथानक अमें पोहोता
 प्रेमणुं रे, चिंतवता तेह थान ॥ राग होये जे उपर जेहनो रे, तेह
 नें तस बहु मान ॥ २ ॥ वि० ॥ कुसुममाल तंबोज विलेपणुं रे, मू
 के विलासवई सखि साथ ॥ पूर्व ठतां पण ते अंगीकखां रे, राग धरी
 निजदाथ ॥ ३ ॥ वि० ॥ अनंगसुंदरीनें आप्यो कंठथी रे, द्वार ते
 जगनमां सार ॥ निज घर जाणी नित्य नित्य आवजो रे, खेद म कर
 जो लगार ॥ ४ ॥ वि० ॥ एम नांखीनें विसर्जी ते प्रत्ये रे, एम कर
 तां कोई काज ॥ एक दिन घरथी निकलतां मनें रे, दासी कहे उजमा
 ल ॥ ५ ॥ वि० ॥ अनंगवती नृपराणीयें मोकली रे, तुमनें तेडवा
 काज ॥ आप इहायें कुंवर पधारीयें रे, पाउ धारो तुमें राज ॥ ६ ॥
 वि० ॥ अंचा कहे ते करवुं मादरे रे, कुमार करे रे विचार ॥ रायें स
 वले प्रवेश आणा करी रे, चिंतवी चाव्यो तेवार ॥ ७ ॥ वि० ॥ वाम
 नरम कुण्डलुं तव मादरे रे, न गणुं ते मनमांदि ॥ जई दीठी शोका

तुर विद्वजा रे, प्रणमी धरीय उच्चाहि ॥ ७ ॥ वि० ॥ राणी कहे शर
 णागत ताहरें रे, कंदर्पनो नय जोर ॥ मंदिर उद्यानथी जातां अकां
 रे, दीठा तुम तिण गोर ॥ ८ ॥ वि० ॥ ते दिनथी पंचबाण पण मा
 हरे रे, थयो दशकोडी ते बाण ॥ तुम गुणथी मुज हृदय ते बांधीयुं
 रे, शब्दसहित अप्रमाण ॥ ९ ॥ वि० ॥ तुम संयोगें मुज तनु ठा
 रीयें रे, शक्तिमंत जे होय ॥ ते परप्रार्थना जंग करे नहीं रे, दीन उ
 षार करे सोय ॥ १० ॥ वि० ॥ आपद आवती न गणे चित्तमां रे,
 पूरे पर अनिलाष ॥ उलटी प्रार्थना हुं तुजनें करुं रे, तिणे ए अनंग
 थी राख ॥ ११ ॥ वि० ॥ वयण सुणी वज्रघात परें थयो रे, बोव्यो
 ताम कुमार ॥ मात ! शुं बोव्यां रे एम नवि बोलीयें रे, एतो महा अ
 नाचार ॥ १२ ॥ वि० ॥ इह परलोकें दुःखदायक घणुं रे, कुलआचार
 न एह ॥ संकल्पजोनि मदन ए नांखिउ रे, तिणे संकल्प तजेह
 ॥ १३ ॥ वि० ॥ तुम तनु नोगनो खप नहीं माहरे रे, शक्तिमंता न
 र तेह ॥ जे निज धर्म न ठंमे सत्त्वथी रे, नवि खंमे शील रेह ॥
 ॥ १४ ॥ वि० ॥ नवि उजंघे निज आचारने रे, न करे निंदित काम ॥
 निजकरणीमां मुंजाये नहीं रे, तेहनें किशुं करे काम ॥ १५ ॥ वि०
 ॥ यतः ॥ “ ते पंढिआ जे विरया विरोहे, ते साहुणो जे समर्थ चरं
 ति ॥ ते सत्तिणो जे न चलंति धम्मे, ते बंधवा जे वसणे हवंती ॥ १॥ ”
 पहेरो विवेकसन्नाह तुम प्रेमशुं रे, जेहथी अनंगनय जाय ॥ जो
 तुम वल्लभ हुं हुं मातजी रे, तो केम एम कहाय ॥ १६ ॥ वि० ॥
 कृण सुख अर्थें बहु दुःख नरगमां रे, नोगववां बहु काल ॥ अविवेकी
 जन अनिलाषा करे रे, ठांमो एह जंजाल ॥ १७ ॥ वि० ॥ यतः ॥
 “ खिणमित्त सुका बहुकाल दुका, पणाम दुका अनिकामसुका ॥ सं
 सार मुक्कस्स विपक्कनूआ, खाणि अण्णाणउ कामजोगा ॥ १ ॥ ” ला
 ज करी तव अनंगवती कहे रे, जलुं जलुं कयुं रे कुमार ॥ में तेडा
 व्यो परीक्षाकारणो रे, पण धन तुम अवतार ॥ १८ ॥ वि० ॥ जाउं
 सुखें निजस्थानक इम सुणी रे, चाव्यो करी परणाम ॥ घर आव्यो

कांय वेजा अतिक्रमी रे, निपन्युं तिणे समे आम ॥ १० ॥ वि० ॥
 विनयंथर कोटवाल ते आवीउ रे, जस नरपति घणुं हेत ॥ ते कहे
 कुमर एकांत व्याणा करो रे, कहेवी बात संकेत ॥ ११ ॥ वि० ॥ तव स
 दु मित्र गया निजस्थानकें रे, हवे कहेगो कोटवाल ॥ पद्मविजय कही
 पंचम ग्वंममां रे, चौथी टाज रसाल ॥ १२ ॥ वि० ॥ सर्वगाथा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तुम्ह राज्यें शक्तिमती, सन्निवेश ठे सार; वीरसेन कुजपुत्र वडो,
 दयावंत दातार ॥ १ ॥ शरणागत राखण सखर, अजिमानी आधार; स्व
 ग्गंजीर शोहामणो, सफल जनम संसार ॥ २ ॥ जाणि गरज जाया
 तणो, लेइ नारीनें व्हार; सुजट परिवृत्त शामटो, चाव्यो चतुर विचार
 ॥ ३ ॥ जातां नयर जयस्थलें, जिहां श्वशुर जनवास; बाहिर श्वेतां
 वी चनें, वेगें कीथो वाम ॥ ४ ॥

॥ टाज पांचमी ॥ देवतणी रुद्रि नोगवि आव्यो ॥ ए देशी ॥

॥ इण अन्तर एक चोर ते आव्यो, मोहडे थास न माये ॥ जय का
 यर नयणां न हीमाये, कंठ प्राण तस आय के ॥ १ ॥ जाईउ सुणो हो
 दुं रे अनाथी, नहीं इहां माहरो साथी के ॥ जाइ० ॥ ए आंकणी ॥
 शरण नुमाये आव्यो एणी परें, तव बोले तेह वाणी ॥ जय म करे
 मुक्त वेतां तागे, केश न त्रोंडे प्राणी के ॥ २ ॥ जा० ॥ गृहिणी कहे
 अन्यायी दोशे, तिणे म करो ए काम ॥ कुजपुत्र कहे जो न्यायी दोवे,
 तो आवे जे काम के ॥ ३ ॥ जा० ॥ जेहवो होय तेहवो में राख्यो,
 सलें वेग तुं इहां जाई ॥ ते कहे जय कायर जिम हरणो, अंग धूजे
 न विगई के ॥ ४ ॥ जा० ॥ नागीहृदय जयथी थरहरतुं, तिम साथ
 न थरहरती ॥ मळननें परनिंदा वाणी, तिम नवि गति विस्तरती के
 ॥ ५ ॥ जा० ॥ वाचक वचन परें पग खजता, जम परें ए नरनाह ॥
 नेरना वाचर पुंते आवे, तेदनी जीनि अथाह के ॥ ६ ॥ जा० ॥
 तेद म कर कुजपुत्रे जांयुं, वेगाग्यो एकांत ॥ रावपुरुष आवि इम
 गीने, आगो नो मखोनें के ॥ ७ ॥ जा० ॥ जाये पाताले के जलधि

उलंघे, शक्रनें शरणो जाय ॥ तो पण नवि ठोडीजें एहनें, चोरी करी
 करी आय के ॥ ७ ॥ जा० ॥ कुलपुत्र कहे चोर राखवो न घटे, शर
 णागत न अपाय ॥ जेम कहो तेम करीयें तव बोव्या, आपो अम ए
 नाय के ॥ ८ ॥ जा० ॥ रायकोपानलमांहि पतंग सम, मत थाउं तु
 म कहीयें ॥ कहे कुलपुत्र ए केम अपाये, शरणागत जे लहीयें के ॥
 ॥ ९ ॥ जा० ॥ नृपनर कहे केम राखशो एहनें, बलथी लहेछुं एह ॥
 कुलपुत्र कहे मुज प्राण धरंते, नवि खंभाये रेह के ॥ १० ॥ जा० ॥
 एम कही खड्ग लीधुं निज करमां, सन्नद्ध होय परिवार ॥ राजपुरुष
 पोहोता नृप पासैं, जांख्यो सर्व विचार के ॥ ११ ॥ जा० ॥ मुज आ
 णालोपकनुं शरणुं, जेह करे तस मारो ॥ एम कही नृपें बहु सैन्य
 मोकलीयुं, करता बहु होकारो के ॥ १२ ॥ जा० ॥ लाग्युं युद्ध परस्प
 रें बेहुनें, इण अवसर तिहां आयो ॥ राजकुमर जशोवर्म रमीनें, ब
 हु असवारें ढायो के ॥ १३ ॥ जा० ॥ पूढे तव सरवे संनलाव्यूं, बो
 द्यो सुत नरराय ॥ मुज माख्या विण ए शरणागत, वत्सल नविअ म
 राय के ॥ १४ ॥ जा० ॥ युद्ध शम्युं नृपतियें जाण्युं, रायें मानी वात ॥
 चोर बोलावी सहु निजथानक, हेमैं कुशलें आयात के ॥ १५ ॥
 जा० ॥ अनुक्रमें जयथल नगरें पोहोता, प्रसव्यो पुत्र हुं ताम ॥ ए
 म तुज ताय मुज माय तायनें, मुज उपगारी आम के ॥ १६ ॥ जा०
 मात पिता पासैं में सूणीउं, सघलो ए अधिकार ॥ गुणकीर्त्तन करतां
 दिन काढे, माने बहु उपगार के ॥ १७ ॥ जा० ॥ कारण एह कह्यानुं
 सुणीयें, ईशानचंद जे राय ॥ रहवाडी रमी अनंगवती घरे, हरख धरी
 जब आय के ॥ १८ ॥ जा० ॥ पंचमखंमें पद्मविजयें कही, पंचमी
 रूडी ढाल ॥ समरादित्यना रासमां सुणीयें, सुणतां मंगल माल के ॥
 ॥ १९ ॥ जा० ॥ सर्व गाथा ॥ १४ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनंगवती दीठी ईसी, विलखित कर रुह वयण ; नयणें आंशू नाख
 ती, नरपति पूढे सयण ॥ १ ॥ एछुं तव कहे अंगना, शीज राख्यानो

स्वाद; राय कहे किम उच्चरो, अंगें धरी आल्हाद ॥ १ ॥ पूर्वे करतां
 प्रार्थना, वास्तर घणा व्यतीत; सनत्कुमार ए सुखीयें, आज ए कीध
 अनीति ॥ ३ ॥ राजा तव रीगें चढ्यो, कहे मुऊनें कर काम ॥ मारो
 सनत्कुमारनें, नवि जाणे कोई नाम ॥ ४ ॥ में पण ते तिहांची मानीउं,
 मनमां चिंत्युं आम; जोड्यो मुऊ अकार्यमां, मुऊ नरगें नहीं ताम
 ॥ ५ ॥ नीचसेवा नरपति तणी, एम चिंता चित्त माय; किमहीक
 दीर्घायुयकी, न मरे तो होये न्याय ॥ ६ ॥

॥ दान ठी ॥ शारद बुद्धिदायक ॥ हवे अवसर जाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नरपतिनी आणा, तो पण केम लंघाय ॥ पगलुं नरे जेहवे, तेहवे ठी
 क ते आय ॥ करे विजंव ते ए हवे, तव एक निमितीउ बोले ॥ ठील न
 करो दमणां, नहीं ए ठीकनें तोले ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ सोमा नाम ए ठी
 क ते जांखी, आरोग्य फलने आपे ॥ पूर्वरूपि एणि परें जांख्युं ठे, तिणें
 दुःख दोहग कापे ॥ वली निमित्तंतरथी जाणुं, निर्दोषवस्तुमां आण ॥
 राजार्थे कीथी ठे तोपण, तुऊ मनमां अप्रमाण ॥ २ ॥ “यतः ॥ पडी
 सेदमजतं वा, द्वाणी बुद्धा खयं असिद्धिं च ॥ आरोग्य मञ्जुलानं, ष्ठी
 पंमि पयाहिणं दिशासु ॥ १ ॥” पण जिम तुऊ चित्तमां, ठे तेम
 आगे एद् ॥ पण जा तुं वहीजो, नहीं तो विपरीत तेह ॥ तव में
 मन चिंत्युं, निश्चिदेश ए नाम ॥ एहना बहु प्रत्यय, दीठा ठे केई काम ॥
 ॥ ३ ॥ त्रुण ॥ एम चिंती गयो जननी पासें, पूढे जननी मुऊ ॥ देखुं
 तुं उदवेग मरीखुं, भ्जानवदन ते तुऊ ॥ माताथी नवि ठातुं करीयें, एम
 विचारी जांख्युं ॥ माता कहे ए कुमरनें तातें, ताहकं कुल सवि रा
 ग्युं ॥ ४ ॥ ए काम म करजे, एम सुणी हुं इहां आव्यो ॥ माहकं वृ
 नांन ए, तुमनें नव सुणाव्युं ॥ आचारज जांखे, सांनली में विचा
 र्युं ॥ स्त्रीचरित्र अहो जुड, विपनें वली अ वधाख्युं ॥ ५ ॥ त्रुण ॥ अहो
 पाणिनी ए सापिणी सगिरी, कूटहृदय जुड राखे ॥ मोहदे मीठी दिल
 नां मूठी, प्रेमथीज न्युं दाणे ॥ नरितापरें उनय कुल दरणी, गर्दिनहिंसा
 नेदवी ॥ नंगीनिरीक्षा परें न लहे, धर्मवात ते केदवी ॥ ६ ॥ ए चिं

तानुं शुं, काम कहो ठे माहारे॥ पण राजा किणी परें, वात एह अवधारे॥
 अथवा यौवन वय, माहरुं देखि माने॥ खरी वात संजलावुं, जई राजा
 नें काने ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ अथवा राणी मारी जाये, तिणे ए पण किम क
 रीयें ॥ एक तो मनवंडित तस न कहुं, वलि संकटमांधरीयें ॥ राजाने
 जो खरुं न नांखुं, तो कुलकलंक ते आवे ॥ तो पण एहवुं काम ते
 न करुं, जिणें परपीडा थावे ॥ ८ ॥ कहे विनयंधर सुणो, मुजने शुं फर
 मावो ॥ कुमर कहे तुमें तो, राय दुकम बजावो ॥ मुज जीवे शुं ठे, एहवुं
 नांखे जाम ॥ श्रीहरनामें ब्राह्मण, मार्गें ठीक्यो ताम ॥ ९ ॥ त्रु० ॥ वजी
 ब्राह्मण बहु मोहोटे शब्दें, वातो करता चाजे ॥ शुं कहीयें घणुं दोष न
 एहने, सम करीयें जे आजे ॥ सुणी विनयंधर बोळ्यो एणि परें, तुममां
 नहीं कोइ दोष ॥ सिद्धादेश ठीक ए शब्दें, काढ्यो सघलो शोष ॥
 ॥ १० ॥ कहे शुं बहु नांखुं, कहो जेहवुं होय तेह ॥ विनवि नूपतिने, देव
 रावुं दंम देह ॥ कहुं में शुं नांखुं, अंबा कहे ते प्रमाण ॥ तव कहे विनयं
 धर, मुजनें थयुं विन्नाण ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ मुजनें थयुं विन्नाण वच
 नें, एहज दुष्ट ठे राणी ॥ जई राजाने करुं विनति, करे सहु सम जा
 णी ॥ एम कही उठयो ते जेहवे, तेहवे में बेसाखो ॥ में कहुं अंबा
 उपर एवढो, न करो कोप वकाखो ॥ १२ ॥ एह चंचल जीवित, का
 जें केम दुःख दीजें ॥ कहे विनयंधर सुणि, एवढी वात केम पीजें ॥ मू
 को मुज जाउं, तव में एम नांखीजें ॥ एह वार्ते आग्रह, अंशमात्र नवि
 कीजें ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ एम करतां जो बलथी करशो, तो हुं तजशुं प्रा
 ण ॥ एम सांजलीने रोवा लागो, विनयंधर असमान ॥ अहो अवि
 चाखुं कारज नृपनुं, एहवा पुरुषमां शंका ॥ में कहुं तातने एम न क
 हियें, कर्म परणति मुज वंका ॥ १४ ॥ तव विनयंधर कहे, हुं पापी शिर
 दार ॥ हुं शुं करुं नांखो, में कहुं तुं आणाकार ॥ कर नृपनी आणा, तव
 बोळ्यो ते तलार ॥ जिम तिम शुं बोळ्यो, किम तुम कर्म विकार ॥ १५ ॥
 ॥ त्रु० ॥ धन्य तुमें कृत्य पुण्य गुणाकर, सुरतरु सरिखो दाता ॥ जो
 नवि विनवुं राजानें, अनुकंपायें राता ॥ उगारवी राणीनें जाणो, तो

चिंतवो उपाय ॥ तुम्हनें उगारी आणंडं, कोप न करे वली राय
 ॥ १६ ॥ में कह्युं विचारी, जो न करे नृप आण ॥ तो वसुनूतिशुं, जा
 उं देशांतर ठाण ॥ ते मान्युं तलारें, बोले तव कोटवाल ॥ आज सुवर्ण
 नूमि, जाय जाज ततकाल ॥ १७ ॥ त्रुण ॥ संध्यासमयें बिहुं नीक
 लीआ, साथें वली कोटवाल ॥ प्रवहण स्वामी समुद्रदत्तनें, सोंप्या
 थई उजमाल ॥ घणी जलामण देई मुऊ प्रणमी, कहे मुऊ कोप न
 करज्यो ॥ नेत्रें नीर ऊरंतां वलतां, कहे तनुजतन ते करजो ॥ १८ ॥
 चाव्युं हवे प्रवहण, उपयोगी कर्णधार ॥ वसुनूति पूढे, मित्र एकशो वि
 चार ॥ तव सहु संजलावे, अनंगवती अधिकार ॥ नृपनें नवि जांख्युं, अ
 नंगवती उपगार ॥ १९ ॥ त्रुण ॥ सुवर्णनूमि पोहोता अनुक्रमें, दोय
 मासनें काल ॥ उतरी श्रीपुर नगरें पहोता, पंचमे खंमें ढाल ॥ पद्मवि
 जयें ठही जांखी, समरादित्यनें रास ॥ गुणवंता गुण गातां होवे,
 घर घर लीजविलास ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्वेतांविका वासी मढ्यो, समृद्धदत्त सुतसार; वाणिज्ज अर्थे आ
 वीउ, मनोरथदत्त मनोहार ॥ १ ॥ माहरो बालथी मित्र ते, संच्रम
 पाम्यो मोय; निश्चय उंजखी प्रणमीयो. हर्ष विपाद मन होय ॥ २ ॥
 नृपनें कुशल पृष्ठुं मनें, निज घर लाव्यो नेह ॥ जोजन उत्तर एम
 जण, कारण आगम केह ॥ ३ ॥ राय निवेदें नवि रह्यो, आव्यो आणे
 ठाम; माउज आवे माहरो, सिंहलद्वीपनो स्वामि ॥ ४ ॥ तिहां
 जावुं मुऊ ततक्षिणे, जोजो जातुं जिहाज; मनोरथदत्तें मानीयुं, जिम
 नांगो मद्दाराज ॥ ५ ॥ मित्र विजोगना मान्यथी, काढयो बहु तिणे
 काज; उतावज लही एक दिन, मुऊनें कहे मयाल ॥ ६ ॥ जावुं तु
 माहरो जोवशुं, तो प्रवहण जावे नित्य; तुम्ह विजोगनें कातरें, एट
 जा दिवस अतीत ॥ ७ ॥ आजज माहरो जाववुं, में जांख्युं एम
 ठाम; एट एक लावी आपीयो, उदयनि जांखे आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जोलिडा हंसा रे विषय नराचियें ॥ ए देशी ॥
 ॥ कौतुक सहित ए पट स्वामी सुणो, उंठीजें जव एह ॥ कोइ न
 देखे रे आपणनें तदा, तव में पूढ्युं सनेह ॥ १ ॥ पुण्य प्रमाणे रे
 सवि सुख संपजे ॥ ए आंकणी ॥ में तव उंढयो रे तेमहीज नीपन्युं,
 उत्पत्ति पूढी में ताम ॥ तव ते नांखे रे इहां आव्या पढी, सिद्धसेन एक
 नाम ॥ २ ॥ पुण्य ॥ आणंदपुरनो वासी तेह ठे, बहु विद्या जस
 सिद्ध ॥ ते सिद्धपुत्रशुं प्रीति अई घणी, एक दिन में तस कीध ॥ ३ ॥
 ॥ पुण्य ॥ चमत्कार कोई विद्यामां अठे, के नहीं कौतुक मुज ॥ तव
 तिणे नांख्युं रे देखाडुं तने, विद्यासाधन गुज ॥ ४ ॥ पुण्य ॥ शर
 शव प्रमुखनी सामग्री करो, जावुं ठे समशान ॥ तैयारी करी अमें बिहु
 चालीआ, आयमीउं तव ज्ञान ॥ ५ ॥ पुण्य ॥ अंधकारमां रे घूक गुह
 ड करे, जइ तिणे मंजल कीध ॥ अत्रिकुंम करी मुज अप्रमत्त कस्यो,
 मुज कर खड्ड ते दीध ॥ ६ ॥ पुण्य ॥ ओडी वेजा रे मंत्र जाप कस्यो,
 तव यहुकन्या रे एक ॥ चंडमुखी मृगनथणी राजती, कलशस्तनी वर टे
 क ॥ ७ ॥ पुण्य ॥ सुरतरु कुसुमें रे वेणा शोचती, गगनथी उतरे ते
 ह ॥ में मन चिंत्युं रे मंत्रशक्ति गुरु, सिद्धनें प्रणमी रे एह ॥ ८ ॥ पुण्य ॥
 मुज समरणनुं रे कारण नांखीयें, सिद्धसेन कहे ताम ॥ मित्रने दिव्यद
 र्शनना रागथी, एह अमारे रे काम ॥ ९ ॥ पुण्य ॥ तव ते देवी रे सु
 जने जोई करी, कहे तूठी तुज आज ॥ माग तूं कांयक तव में नांखी
 युं, तुम्ह दरशनें सखुं काज ॥ १० ॥ पुण्य ॥ खाली न जाये रे देव
 दर्शन कदा, यहुकन्या कही एम ॥ नयन मोहन पट रथण ते आपीउं,
 प्रणमी लीधो रे प्रेम ॥ ११ ॥ पुण्य ॥ “यतः ॥ अमोघा वासरे वि
 द्युत्, अमोघं निशि गर्जितं ॥ अमोघा उत्तमा वाणी, अमोघं देव
 दर्शनं ॥ १ ॥” गइ निजस्थानक ते जहुकन्यका, विहाणे अमें
 पुरमांहि ॥ आव्या इंगि परें उत्पत्ति ए कही, लीधो तेह उहाहि
 ॥ १२ ॥ पुण्य ॥ मनोरथदत्तशुं रे सायर तट गया, देव विमान परें
 दीठ ॥ ध्वजमाला शोजित वर जिहाज ते, अतिशय तेह विशिष्ठ

॥ १३ ॥ पुण्य० ॥ ईश्वरदत्त तस अधिपति उठीउ, आप्युं आसन सा
 र ॥ करीअ प्रणामने वेठा ते सहु, सौप्या अमने संजार ॥ १४ ॥
 पुण्य० ॥ मनोरथदत्त कहे मुज बांधवा, स्वामी ए वली मित्त ॥ जीवित
 माहुरुं रे एहनें जाणजो, जालवजो बहु रीत ॥ १५ ॥ पुण्य० ॥ पोतप
 ति कहे जाऊं गुं कहो, मुज पण एहवा रे एह ॥ वेठा जाऊं रे मनमोदें
 करी, दरियानें वलि देह ॥ १६ ॥ पुण्य० ॥ पवनें पूखो रे सढ उंचो क
 री, मनोरथदत्त परिणाम ॥ करी उनो रह्यो वाहण चलाविआं, निर
 जामकें सहु ताम ॥ १७ ॥ पुण्य० ॥ तेरशमे दिन सायरमां जतां, च
 टिउ मेव अकाल ॥ बीज ऊवूके रे गरजारव करे, अंधकार असरा
 ल ॥ १८ ॥ पुण्य० ॥ सायर कंपे रे कळोल उठले. वायु विपमा रे वाय ॥
 मदमत गजपरें वश नहीं जिहाज ते, निर्यामक ते खेदाय ॥ १९ ॥ पुण्य० ॥
 तिणे समे ठेव्या रे में धीरज धरी, सढना दोर संजालि ॥ सढ संकेव्यो
 रे नांगर मूकीयां, पण सागर विकराल ॥ २० ॥ पुण्य० ॥ नार गुरु ति
 णें कर्मविपाकथी, नांग्युं जिहाज तिवार ॥ सघला अलगा रे थया वि
 जोगीया, पाम्या दुःख अपार ॥ २१ ॥ पुण्य० ॥ फलक लह्युं में रे आ
 युनबंध्या, दिवस थया तिहां त्रण ॥ तट देखीने रे निकलीउ हवे,
 जाणुं पुण्य अगण्य ॥ २२ ॥ पुण्य० ॥ पंचमखंमें रे सातमी ढाल ए, पू
 रण दुई सुप्रमाण ॥ पद्मविजय कहे नवसायर तरो, जिम होय
 कोटि कव्याण ॥ २३ ॥ पु० ॥ सर्व गाया ॥ २०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबुवृक्ष तजें जड, चिंतवे इणि परें चित्तः वसुनूति रह्यो वेगलो,
 मादरा बलन मित्त ॥ १ ॥ पडीउ एहवे पर्यानिधि, कहां जीव्यो हुं
 नेमः मित्र विना दवे मादरे. नवि जीवहुं ए नेम ॥ २ ॥ अथवा सु
 कपरें एह पण, जांयंतो होय जोयः तां मजहुं थाय तेहगुं, हवे
 जो नावी होय ॥ ३ ॥ जव जोयुं तव जाणिउं, पलव्यो नहीं ते पट्टः
 निमनय पाम्यो वेगगुं, प्रेमयत्री परगट्ट ॥ ४ ॥ उत्तर सनमुख थावी
 उ, जगती वेदनी जातिः गिरि नदीनें कांठे गयो, फनसफलादि संजा

लि ॥ ५ ॥ आहार करी अवनती तलें, रूडो राजकुमार; बेगो तव जोडे बिहुं, सारस दीठां सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ धनदिन वेला धन घडी तेह ॥ ए देशी ॥

॥ दीठां रे सारस सारसी दोय, क्रीडा रे करतां लटपटी अतिघणी रे ॥
चिंतुं रे मनमां ए रे स्वाधीन, जाया रे न विरहे वेगली निज तणी रे ॥ १ ॥
सुखमां रे काढे कालनिचिंत, एम विचारतां सहसकिरण गयो रें ॥ सं
ध्यानी करणी करी ते कुमार, देवगुरु प्रणमी वाम पासें थयो रे ॥ २ ॥
बहुदिन खेदथी आवी रे निंद, रात गईनें जाग्यो हुं तदा रे ॥ प्रणमी
रे देवगुरुना पाय, चाव्यो वनवननी शोना जोउं यदा रे ॥ ३ ॥ गिरि
नदीकांते जाउं रे जाम, दीठी रे पदपंति शोहामणी रे ॥ चक्रांकुशरेखा
शोणित तेह, लघुनें सुकमालथी जाणी स्त्रीतणी रे ॥ ४ ॥ चाव्यो रे
पगले पगले तेह, दीठी रे दूरथी तापसनी कनी रे ॥ वांकलां पहिस्थां व
स्त्रनें ठामि, सोवनवरणी देह ते अतिबनी रे ॥ ५ ॥ अलते रे रंजित
चरणसरोज, रशना रे योग्य नितंव शोहामणा रे ॥ सुजन चित्त परें ना
नी गंजीर, सुकृतपरिणाम परें उन्नत कुच घणा रे ॥ ६ ॥ तपथी वि
निर्जित मोह अंधार, हृदयमां पेशण वेण मिश्रें थयो रे ॥ रक्त अशोक
परें कर जास, नयन ते हरणीनेत्र जाग जयो रे ॥ ७ ॥ गलस्थल
चंद्रमंजल परें जास, अधर ते पामल कुसुम शोणितपरें रे ॥ बाबडी
वाम करें रही जास, फूल रे विणती तेह दक्षिण करें रे ॥ ८ ॥ देखीनें
चिंतव्युं में इण जाति, वनडुःख सहे पण लावण्य केहवुं रे ॥ आघो
जई जालांतरें जोयुं जाम, देखुं रे रूप विलासवती जेहवुं रे ॥ ९ ॥ व
नवासें रहेती एटलो फेर, स्मरणपवनें काम संधूकीउं रे ॥ फूलनी ठा
बडी लेई जब जाय, तब हुं विकार गोपवी ठूकीउं रे ॥ १० ॥ प्रणमी
में नांख्युं तपनी थाउं वृद्धि, तामलिप्ति नगरीथी आवीउं रे ॥ श्वेतां
बी नगरी वासी हुं जाण, सिंहलद्वीप जणी हुं धावियो रे ॥ ११ ॥
जिहाज नांग्युं थयो एकाकी एम, कहो कोण थानक ए किहां रहो तुमें
रे ॥ संचांत थई करी तिठीं रे दृष्टि, वचननो उत्तर नवि दीधो किमे

रे ॥ १० ॥ चालीरे निज आश्रम जणी तेह, मनमां में चिंत्युं नारीने
 एकली रे ॥ वलिअ तापसिणी एहशुं शुं काम, वलीरे पूढीश कोई नरने
 अटकली रे ॥ १३ ॥ वलीउं रे पाठो आव्यो ते ठाम, वलीरे विचाखुं
 जोउं ए जाये किहां रे ॥ जोतां रे दीठी मंथरचाजि, चालती पाढल जोती
 ते तिहां रे ॥ १४ ॥ नवी रे दीठो कोई प्राणी ताम, मूकी रे ठाबडी वेणि स
 मारती रे ॥ पहेखुं पण वांकलुं पहेखुं रे फेर, वाहु करी उंची अंगने मरडती
 रे ॥ १५ ॥ आवे बगासां कामविकार, में मन चिंत्युं ए शुं एम करे रे ॥ अथवा
 रे विरुद्ध विचार शो मुऊ, एम करी चाव्यो गिरिनदी परीसरें रे ॥ १६ ॥
 प्राणवृत्ति करी दिवस गमाय, सूतो रे रयणीयें स्वप्नं तव लखुं रे ॥
 दिव्यस्त्रीयें एक कुसुमनी माल, आपीनें इणपरें मुऊनें तिणें कह्युं रे
 ॥ १७ ॥ पूर्वे निपजावी ए ठे रे माल, आपी रे में तुऊनें तिणें लीजि
 यें रे ॥ में पण जेई आपो कंठदेश, पाठले पहरें देखी जागीजीयें रे
 ॥ १८ ॥ मनमां दरखी चिंतवुं एम, कन्यानो जान सुपन ए सूचवे
 रे ॥ अटवीमां केम दोठो मुऊ जान, चिंतव्युं रे दक्षिण नेत्रनें फरकवे
 रे ॥ १९ ॥ स्वप्न शकुन अनुसारें रे एम, चिंतवुं अन्य परिचय मुऊ
 नदीं रे ॥ महारे रे विजासवतीनुं रे काम, पूर्वे निपनी माला देवें
 कदी रे ॥ २० ॥ तापसिणी दीठी तस अनुहार, विधि रे विचित्र प्रकारें
 घटे नदा रे ॥ कोण जाणे तेहज होय तो होय, नहिं तो किम मदन
 विकार ए करे तदा रे ॥ २१ ॥ “ यतः ॥ अघटितघटितानि घटयति,
 नृघटित घटितानि जर्जरीकुरुते ॥ विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमा
 नेव चिंतयति ॥ १ ॥ ” तोपण व्रतिणीसायें रे जोग, न घटे पण एह
 नुं दर्शन पामीउं रे ॥ एणें कणुं माहरे करवुं ठे तेह, उग्यो रवि पूर्व
 दिगावत्र कामीउं रे ॥ २२ ॥ चक्रवाकना टव्या रे वियोग, पंचम स्व
 में नांजलजो गुणी रे ॥ समरादित्यना रासमां एह, आवमी ढाल ते
 पयविजय जणी रे ॥ २३ ॥ सर्वे गाथा ॥ २३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रास वली नमणी तपो. गमणिक देखी रास; कामज्वरथी काननें,

जोवा लागो जाम ॥ १ ॥ रमणी जोतां कुमरनें, केशों गयो बहु काल;
आंवा तलें आवी करी. बेगो हुं नृप बाल ॥ २ ॥ शूकां पत्र तणो सु
एयो. इणि अवसर आराव; बलि कोट विस्तारीनें, दृष्टें जोयुं दाव
॥ ३ ॥ मध्यवयें आवी महा, तापसिणी एक ताम; नूतितिलक जालें
कस्युं. कमंमल कर वाम ॥ ४ ॥ पुत्रजीव माला प्रगट, जमणा करमां
जोय; जटाकलाप बांध्यो जकडि, वल्कलवस्त्र वर होय ॥ ५ ॥
तपतापित कश तनु ययुं, अष्ठिचर्म अवशेष; देखी गोपव्यो मद
ननें, प्रणम्या पाद विशेष ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ राग गोडी ॥ वे कर जोडी ताम रे, नझा
वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ मुजनें देखी तास रे, आंशु आवीआं ॥ बेगी चीरंजीव कही
ए ॥ १ ॥ ए गुं उलखे मुज रे, एम में चिंतव्युं ॥ अथवा झानी
होय व्रती ए ॥ २ ॥ गुं नवि जाणे एह रे, इण अवसर कहे
॥ वेसो कुमर ए नूतलें ए ॥ ३ ॥ पूजी धरती तेह रे, बेगी ता
पसी ॥ कहे हुं कहुं ते सांजलो ए ॥ ४ ॥ इण जरतें वैताढ्य रे, पर्व
तमध्य ठे ॥ उंचो पचवीश जोअणां ए ॥ ५ ॥ जोजन पहोलो पञ्चा
श रे, तेह रजत तणो ॥ पूर्वापर सायर अडयो ए ॥ ६ ॥ विद्याधरनी
श्रेणि रे, दक्षिण उत्तरें ॥ धरतीशी दश जोअणां ए ॥ ७ ॥ दक्षिण
नगर पंचाश रे, शाठ उत्तर दिशें ॥ गंधसमृद्ध पुर तेहमां ए ॥ ८ ॥
सहेसबल तिहां राय रे, सुप्रजा नारया ॥ मदनमंजरी हुं सुता ए ॥
॥ ९ ॥ यौवन पामी जाम रे, परणावी मनें ॥ पवनगति राजा प्रत्यें
ए ॥ १० ॥ रमतां तेहगुं रंगें रे, काल गयो बहु ॥ गगनमारग एक
दिन हवे ए ॥ ११ ॥ क्रीडा करवा काज रे, नंदनवन गयां ॥ बेगी
कनक शिलातलें ए ॥ १२ ॥ सहसा पडीउ हेठें रे, मरण लह्यो त
दा ॥ आयु अशिरशी मुज पति ए ॥ १३ ॥ मुजनें उपन्यो शोक रे,
नमती नूयें पडी ॥ मूर्छाशी चेतन लही ए ॥ १४ ॥ उमवा जाउं जा
म रे, उमाये नहीं ॥ विद्या पण चाली नहीं ए ॥ १५ ॥ दाधा उपर

ज्ञान रे. ए गुं वली ययुं ॥ इणि अवसर तिहां आवीउं ए ॥ १६ ॥ देवा
 नंद इण नाम रे. मित्र मुज तातनो ॥ तापस व्रत अंगीकयुं ए ॥ १७ ॥
 कयुं मादहं वृत्तांत रे. जती मरी गयो ॥ गगनगामिनी तिम गइ ए
 ॥ १८ ॥ जल आंगु जरी नयण रे, मुऊनें एम कहे ॥ वढ संसार ए
 एद्वो ए ॥ १९ ॥ कृष्णजंगुर संजोग रे, इंडिय चपल ठे ॥ जीवलोक
 अशावतो ए ॥ २० ॥ एम जाणी करे धर्म रे, उत्तम प्राणीआ ॥
 ब्रण लोक बांधव समो ए ॥ २१ ॥ दीक्षा आपो मुज रे, में इणिपरें
 कयुं ॥ तापस बोझा तेहवे ए ॥ २२ ॥ विद्या केम गई तुज रे, में
 कसु नवि जहुं ॥ तव ज्ञानें करी बोलीआ ए ॥ २३ ॥ शोकें करी सि
 इकट रे, उजंघ्यो तमें ॥ कुसुमदाम शिखरें पढी ए ॥ २४ ॥ विद्या
 गई तुज एम रे, आशानन थकी ॥ तव में जांख्युं सांजलो ए ॥ २५ ॥
 उपगारी इद लोक रे. विद्यायें सखुं ॥ व्रत आपी अनुग्रह करो ए
 ॥ २६ ॥ नव पूठी मुज तात रे, आचार संजलावी ॥ लावी इहां मु
 जवन दीयुं ए ॥ २७ ॥ एक दिन पूजन देव रे, सायर उपकंठें ॥ गई
 नव दीतुं पाटियुं ए ॥ २८ ॥ कन्या बलगी एक रे. जल कछोलमां ॥
 चउजेखा परें निर्मली ए ॥ २९ ॥ आचारज कहे ताम रे, हुं हरपि
 त थयो ॥ मनोरथ तरुफल उगीआं ए ॥ ३० ॥ तापसिणी कहे ताम
 रे, जोयुं में जई ॥ जाणि तव ए जीवती ए ॥ ३१ ॥ कमंमल जल ठां
 दे रे. नेत्र उवाटीआं ॥ लावण्यथी कुजवती लही ए ॥ ३२ ॥ धीरी आ
 तुं रत्न रे. यमें तापस अहुं ॥ एम कटी फल आणी दिआं ए ॥ ३३ ॥
 मरगायुं में प्राणे रे, लई आश्रम गई ॥ देखाडी कुजपति जणी ए
 ॥ ३४ ॥ कुजपतिने परणाम रे. करीने ते रही ॥ तव आशिष दिये
 कजरानि ए ॥ ३५ ॥ पंचमे खमें दाज रे. नवमी ए कही ॥ पद्मविज
 य एह मनमां ए ॥ ३६ ॥ नव गाथा ॥ ७७७ ॥

॥ दोहा ॥

मिलीयो आया ने कसो, में पठयुं एम जाम ; तामजिमिथी ते
 मर. में पठयुं किति नाम ॥ १ ॥ किहां जाइ नें कुज किछुं, तव नवि

बोली तेह ; नाखी दीर्घ निःश्वासनें, तव में चिंत्युं एह ॥ १ ॥ उत्तम
कुलमां उपनी, आखे नहीं तिणें आप; पूठिश कुलपतिनें पठें, पामिश
तिहां जबाप ॥ २ ॥ कुलपति आवश्यक करी, संध्या समय समाधि ;
पासैं कुलपति पूठियुं, बेशीनें निराबाध ॥ ४ ॥ कन्या ए कुणकिम लही,
एह अवस्था आज ; आगलें केहवुं एहनें, कहो निपजशे काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सांजव्य रे तुं सजनी मारी, रजनी क्यां रमिआवी जी ॥ ए देशी ॥
॥ मुऊनें कहे कुलपति सांजव्य तुं, तपपरजावें जाणुं जी ॥ ताम
जिति नरपतिनी पुत्री, रूप तणुं जे ठाणुं ॥ १ ॥ नृपसुत सुणीयें जी
॥ ए आंकणी ॥ नर्तास्त्रिहें एम अवस्था, पामी ठे निरधार जी ॥ में
पूठयुं किम कन्या नहीं ए, कुलपति कहे तिवार ॥ २ ॥ नृप० ॥
इव्यथी कन्या जावें परणी, में पूठयुं किम एम जी ॥ तव सघलूं धुर
थी संजलाव्युं, पति जावानी सीम ॥ ३ ॥ नृप० ॥ एकदिन सुणीउ
लोक दयणथी, कुमरनें माखो रायें जी ॥ इणें चिंत्युं मोहें करीनें,
शी गति हवे मुऊ आय ॥ ४ ॥ नृप० ॥ तेहज समशानें जई जोई,
करवो प्राणविजोग जी ॥ प्राण अधिक मुऊ वल्लन केरी, वात करे
एम लोग ॥ ५ ॥ नृप० ॥ अरधी रातें ते एकाकिणी, घरमांथी ते
चाली जी ॥ तस्कर लूटो अचल सार्थपने, वेचाथी तेणे आली ॥ ६ ॥
॥ नृप० ॥ जिहाज बेसारी बर्बरकुलें, जातां जांग्युं जिहाज जी ॥ एक
पाटियुं एहना करमां, आव्युं जीवित काज ॥ ७ ॥ नृप० ॥ त्रणे दिवसें
ए तट पामी, हवे आगल सुणो वात जी ॥ नर्ता लहेशे जोग जोग
वशे, आशे जगत विख्यात ॥ ८ ॥ नृप० ॥ परजव साधि मानवनो
जव, सफलो करशे एह जी ॥ एम सांजलीनें हुं घणुं हरखी, राति गई
जब तेह ॥ ९ ॥ नृप० ॥ सूरज उदयें में कछु कुमरी, ए संसार अनि
त्य जी ॥ यौवन चंचल अथिर ए लखमि, धैर्य धरे सुविदित ॥ १० ॥
नृप० ॥ सा कहे स्वामिनी साचुं जांखो, व्रत आपो उपगारी जी ॥ में क
हुं यौवन वय ठे पहेली, मदन न शकीयें वारी ॥ ११ ॥ नृप० ॥ ज्ञान

सूर्य कुजपतिने पूठयुं, तुज वृत्तांत मन आणी जी ॥ अतीत अनागत
 नवजुं जांख्युं, तुज पति मिलन प्रमाणी ॥ १२ ॥ नृप० ॥ नर्त्ता तुज
 जीवे ठे कुजले, सांजजी विस्मय धारी जी ॥ अण हुंता पण कटक यु
 गल दिये, कुजपताये उतारी ॥ १३ ॥ नृप० ॥ हार लता देवा जब कोटें,
 द्राव नाख्यां तव नांही जी ॥ चित्त ठामें आख्युं तव विलखी, अइ अति
 संच्रममांही ॥ १४ ॥ नृप० ॥ में जांख्युं संच्रम मत कर तुं, ताहरुं
 चित्त उदार जी ॥ व्रतनो अवसर हमणां तुज नहीं, सांजव्यो एह वि
 चार ॥ १५ ॥ नृप० ॥ तापसकन्या वेपें विचरे, एम करतां गयो काल
 जी ॥ एक दिन कुजपतिसिद्धपर्वतें, गया दर्शन किरपाल ॥ १६ ॥ नृप० ॥
 एनो फुल विणवा चाली, सोड तिहांथी आवी जी ॥ पाठल जोती प्र
 न्देदे करी, देहूटी नीनीलावी ॥ १७ ॥ नृप० ॥ में पूठयुं तुं किम खे
 दाणी, तव ते बोलि एम जी ॥ मारा बांधव सांजखा मुऊनें, तेहनो मु
 ज यणो प्रेम ॥ १८ ॥ नृप० ॥ में जांख्युं कुजपति आवण दे, तुज बांधव
 मंत्रवजं जी ॥ एम नुणी मौन करी ते दिनथी, निज आत्म नहीं व
 जें ॥ १९ ॥ नृप० ॥ अतिथि नवि बहु माने देवनुं, पूजन पण नवि कर
 ती जी ॥ फुल बीणवा पण नवि जाये, नविअ दुताशन नमती ॥
 ॥ २० ॥ नृप० ॥ विद्याधरनां जुगल आलेखे, सारसजुगल ते जोवे
 जी ॥ श्री नरतार पूराणी वातो, सुणवा तत्पर होवे ॥ २१ ॥ नृप० ॥
 में मन चिंत्युं यौवन आख्युं, यौवनें मद बहु बाधे जी ॥ मदथी मद
 नविज्ञान मदनयो, कम विकार न बांधे ॥ २२ ॥ नृप० ॥ “यतः ॥ न
 वि अतिगवियदोही, पाएणं तिहुअणं मितो जीवो ॥ जो जोवणम
 णुपणो, दिआर न्हीठ नया दोड ॥ १ ॥” दशमी ढाल ए पंचमखंमें,
 मदन पराजय करजं जी ॥ पद्मविजय कहे ते नविप्राणी, नवसाय
 र मयु करजं ॥ २३ ॥ नृप० ॥ नवे गाथा ॥ ३०५ ॥

॥ दोहा ॥

१ गहरी नागयेतडी, रुक् अशोक अवधारि; दंतली कीडा हंसगुं,
 जेठ बीड तितार ॥ १ ॥ नान्ही तिगासो नीकली, तपोवन बाहिर

तेह; देखी जाती दृष्टिही, सलक्यो मुऊ सनेह ॥ १ ॥ आज न देखुं
एहनो, अवलतनु आकार; जोऊं किहां ए जाय ते, चालि हुं एम वि
चार ॥ ३ ॥ ठटकी लइने ठावडी, गई जिहां कुसुमनी जागि; चपलता रा
खो चोंपगुं, लखती चिहुं दिश लागि ॥ ४ ॥ अशोक वृद्ध तजें अवनियें,
जई उनी रही जाम; कदलीवन अंतर करी, रहि हुं पूठें राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीधारमी ॥

॥ उठय कलालण जर घडो हे, दारुडारो मूल्य बताव्य ॥ ए देशी ॥
॥ मोहटे स्वरथी रोवती हे, बोले एणिपरें वाणि ॥ सांजलजो वनदेवता
हे, एह ते तेहज ठाण ॥ १ ॥ मारा कर्म विपाकनी हे ॥ ए आंकणी ॥
गति नवि नांखि जाय ॥ प्राणवध्नन विण माहरी हे, गति ते शीपरें आय
॥ २ ॥ मा० ॥ आर्यपुत्र मिय्या इहां हे, तापसिणी मुऊ जाण ॥ प्र
णम्योने उलखावीउ हे, नाम अनें निजठाण ॥ ३ ॥ मा० ॥ में उत्तर
नवि वालीउ हे, नारी मतिथी रे ऊण ॥ मदन नैदाणी बोली नहीं हे,
हवे कहो गति मुऊ कूण ॥ ४ ॥ मा० ॥ पूठें में जोयूं घणुं हे, पण न
वि दीठो कोय ॥ आर्यपुत्र ते के नहीं हे, देववेष धर होय ॥ ५ ॥
मा० ॥ हवे तो जे होय ते होजो हे, पण न विजोग, स्वमाय ॥ मदन
अनल बलतीयकी हे, कोई रीतें न जीवाय ॥ ६ ॥ मा० ॥ अयमत्ता
लता वेलडी हे, बांधीनें गलपास ॥ मरवुं माहरे इणि परें हे, जीवन
नी नहीं आश ॥ ७ ॥ मा० ॥ सार करे जो मुऊ पति हे, तापसिणी मु
ऊ मात ॥ सरखीनें संजलावजो हे, ए माहरो अवदात ॥ ८ ॥ मा० ॥
लाजथी हुं नवि कही शकुं हे, एम कही दीधो पास ॥ देवगुरु प्रण
मी करी हे, जूलाव्यो ते निरास ॥ ९ ॥ मा० ॥ एण अवसर हुं डो
डती हे, जई ठेद्यो तस पास ॥ परलोकें पण जायतां हे, नवि पूठें शा
बास ॥ १० ॥ मा० ॥ तव सा चिंते धिगू मनैं हे, सांजल्यूं सघलूं ए
ण ॥ मुख नीचुं करीनें कहे हे, नवि कछुं लजावशेण ॥ ११ ॥ मा० ॥
करशो म कोप मो उपरि हे, तव में नांख्युं तास ॥ तपसी कोप करे
नहीं हे, धीरज धरी सुविजास ॥ १२ ॥ मा० ॥ कुलपति वचन अ

मोघ ठे हे, तुरतज मजरो तेह ॥ चाल आश्रमप्रत्ये जाईये हे, गयो
 अमें इम करी नेह ॥ १३ ॥ मा० ॥ तापस कुमर जोवा नणी हे, मो
 कलीया तिणि वार ॥ कयाविनोद करतां थकां हे, वेठी पासें ना
 री ॥ १४ ॥ मा० ॥ तापस कुमर आवी कहे हे, अमें नवि दीगो
 कोय ॥ कुमरी सहुनें जलाविनें हे, चाली खोलवा सोय ॥ १५ ॥
 मा० ॥ नवितव्यताये देखाडीयुं हे, मुजनें दर्शन तुज ॥ आश्रमपद
 चालो तुमें हे, जीवाडो एह गुज ॥ १६ ॥ मा० ॥ एम सांजली हुं
 चालीउ हे, आगल गई तिणि वार ॥ आसन मुजनें आपीयुं हे, दीगी
 तिण समे नारी ॥ १७ ॥ मा० ॥ विलासवती मुज देखोनें हे, उठी ऊनी
 आय ॥ सखियो साथें मोकले हे, अर्थ ते शौचनें जाय ॥ १८ ॥ मा० ॥
 थयो मय्यान्हसमय जदा हे, फनसादिक फल आणि ॥ प्राणवृत्ति क
 राविनें हे, आवी तापसिणी तेठाण ॥ १९ ॥ मा० ॥ राजपुत्र सुणो
 वारता हे, थम घर पोहोता आय ॥ शी प्रादुणागति तुम करूं हे, व
 सनवल्लल फल खाय ॥ २० ॥ मा० ॥ पण ए विलासवती अठेहे हे,
 अधिकी जीवन पाहिं ॥ विधियें पूर्वे दीधली हे, फिरी अमें दीध उ
 छाहिं ॥ २१ ॥ मा० ॥ एम कहीनें रोवे घणुं हे, वारी में तिणी वार ॥
 जगवती एम न कीजियें हे, जाणो स्वरूप संसार ॥ २२ ॥ मा० ॥
 अग्निशायें परणाविच्यां हे, फेरा फरीच्यां रे ताम ॥ जगवतीनी आ
 णा लही हे, गयां सुंदरवन नाम ॥ २३ ॥ मा० ॥ सर्वे ऋतु राढा म
 ली हे, देखी पाम्या वछास ॥ सुतां पल्लव साथरे हे, कीधो काम
 विज्ञान ॥ २४ ॥ मा० ॥ एणी परें रजनी निर्गमी हे, एम अनुक्रमें
 कोई फाज ॥ एकदिन शोना वनतणी हे, देखे स्त्री असराल ॥ २५ ॥
 मा० ॥ एम ए पंचम खंभमां हे, जांखी अग्यारमी ढाल ॥ पद्मविजय
 ए गतमां हे, सुणतां मंगलमाल ॥ २६ ॥ मा० ॥ सर्वे गाथा ॥ २३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विनता शोना वनतणी, जोती न खसे जाम ; कुंसुम वीणती किम
 ली, वनर न थिये थाम ॥ १ ॥ उठे पट हुं एटले, नवि देखे मुज

नारि; अचरिजथी एम उठिउ, तरुणी न देखे तिवार ॥ ३ ॥ आर्य
पुत्र हा एम लवे, पडी ते मूर्छा पामि; मन चिंत्युं में माहरे, कीधुं
अवलुं काम ॥ ३ ॥ पट उठयो पाठो करी, सिंच्युं जलें शरीर; सज्ज
थई कहे शब्दथी, नथएँ जरती नीर ॥ ४ ॥ नवि दीठा तुम नयण
थी, तव में नांख्युं तास; हुं शुं जाणुं एहमां, नांखे नारिविजास
॥ ५ ॥ केम नवि जाणो कहो तुमें, सर्व कछुं तव साच; कामिनी
पण परिहा करे, वस्त्रनी वात अवाच्य ॥ ६ ॥ काल गमावी केटलो, एक
दिन में कछुं एम; सुण सुंदरी निजदेशमां, पोहोंचीएं तिम करो प्रेम ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ अढीआनी ॥ देशी ॥

॥ पूठे नगवती ताम, जइयें निज पुर ठाम ॥ जो आणा करो ए, म
हेर नजर धरो ए ॥ १ ॥ तेणीयें आणा दीध, निन्नपोत ध्वज की
ध ॥ केइक दिन गया ए, केलि करे सया ए ॥ २ ॥ इण अवसर ति
हां आय, निरजामक चित्त लाय ॥ नावडे बेसीनें ए, खाडिमां पेसीनें ए
॥ ३ ॥ मुऊनें कहे एम वात, दीप कडाह विख्यात ॥ रहे ते वाणिउ ए,
सार्थप जाणीउ ए ॥ ४ ॥ मलयदेश नणी जाय, तुम ए ध्वज देखाय ॥
मोकलीआ अमें ए, चालो तिहां तुमें ए ॥ ५ ॥ में कछुं मारे नारि, क
होतो आवियें दहारि ॥ ते कहे चालीयें ए, विलंब न चालीयें ए ॥
॥ ६ ॥ पोहोता मोहोटे जिहाज, सारथवाह समाज ॥ तिणें आदर
कखो ए, शुनस्थानक धखो ए ॥ ७ ॥ एक दिन पाठलो जाम, राति
शेष रही ताम ॥ लघुशंका थई ए, उठयो हुं तई ए ॥ ८ ॥ तिण स
मे सारथवाह, जाग्यो देखी लाह ॥ चिंते ए रूअडी ए, नारी न कू
अडी ए ॥ ९ ॥ राति समय ठे एह, कोइ न जाणे रेह ॥ दरिआ
मां धरुं ए, धारि अंगीकरूं ए ॥ १० ॥ लघुशंकाने काम, बेगो जब ति
णें ठाम ॥ नाख्यो हुं पडयो ए, पुणें फलक जडयो ए ॥ ११ ॥ पंच
राती रह्यो मांहि, मलयकूल उहाहिं ॥ जलनिधि उतखो ए, नव नवे
अवतखो ए ॥ १२ ॥ में मन चिंत्युं एम, सार्थवाहें कछुं केम ॥ नारी
जोनें करी ए, नहिं प्रयोजन वरी ए ॥ १३ ॥ एह विलासवती नारि,

मुक्त वियोग चित्त धारी ॥ नहिं जीवित धरे ए, आपघात करें ए ॥
 ॥ १४ ॥ नवि जाणे ए शेठ, कीची केवल वेठ ॥ नारी विना सही ए,
 जीवतुं मुक्त नहीं ए ॥ १५ ॥ निंबपादप तिहां देखी, गयो हुं सर्व
 उगेखी ॥ मरवा मन करी ए, जोखुं दिश फरी ए ॥ १६ ॥ दीतुं दूर
 श्री ताम, सरोवर एक अनिराम ॥ चकवे बोलतुं ए, मानुं ए रोवतुं
 ए ॥ १७ ॥ ब्रमर गुंजारवें गाय, मानुं वली नाटक थाय ॥ कल्लोल
 मित्र धरी ए, उंचि बांह करी ए ॥ १८ ॥ दीतो हंस तिहां एक, ना
 रीवियोगी नेक ॥ करुणस्वरें रुवे ए, आंखें आंशु चुवे ए ॥ १९ ॥ कृ
 ण रोवे कृण गाय, अन्य हंसी जोइ थाय ॥ विभ्रम आणतो ए, निज
 न्वी मानतो ए ॥ २० ॥ जाणी हंसी अन्य, खेद करे ते विखिन्न ॥ म
 रवा मन करे ए, शोक घणो धरे ए ॥ २१ ॥ मूर्खा पामे तेह, बलि
 चेतन जेद जेह ॥ इत्यादिक सहु ए, दीतां लक्षण बहु ए ॥ २२ ॥
 कन्या विचार में ताम, दुःखीउ ए पण आम ॥ एम जाणी करी ए, पं
 मितें परिहरी ए ॥ २३ ॥ इणि परें चिंतवुं जाम, फिरतो हंस ते ताम ॥
 व्रतजाने मय्या ए, देवें विरह टव्यो ए ॥ २४ ॥ सा पण दुर्बल अंग,
 कृजित न करे चंग ॥ आंकें शक्ति नहिं ए, बिहुं हरख्यां सही ए ॥ २५ ॥
 मुक्त मन चिंता थाय, जीवतां संपद पाय ॥ विरह दूरें टले ए, कांता
 याची मले ए ॥ २६ ॥ कुजपतियें कहुं नारि, मुख नोगवी संसार ॥
 परजव नाथजो ए, जव सफलजो अजो ए ॥ २७ ॥ तिणें मरजो नहीं नारि,
 तमविचित्र अवधार ॥ एहने खोलवि ए, नवि जाये जोलवि ए ॥ २८ ॥
 नागिफलनो आदार, कगीने फिरे अपार ॥ सायरने तटें ए, दुःख
 जिगधी मिटे ए ॥ २९ ॥ पंचम खंमें ढाल, वारमी एह रसाल ॥ प
 रविजयें कही ए, जविजनं सदेही ए ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अर्कजोजन नयो आगलें, आवतुं फलक ते एक; दीतुं ते में दृष्टि
 थी, तारें नयो अतिरेक ॥ १ ॥ तीरें आय्युं ते तुरत, विलासवती
 गिलग; नयणें दीडी नेहखुं, वपन्यो अति उमंग ॥ २ ॥ अवजायें मुक्त

उलख्यो, आश्वासना में आपि; पूठयुं ए शुं निपन्युं, पनणे ते मुऊ पा
प ॥ ३ ॥ स्वामी पडिआ सायरें, जाण्युं सघले जाम; सार्थवाह ध
री शोकनें, कहे मुऊ पडवा काम ॥ ४ ॥ परिजनशुं हुं परिवरी, वा
ख्यो सारथवाह; रात गइ उग्यो रवि, थयुं तोफान अथाह ॥ ५ ॥
फिहाज नांग्युं जन सहु गयां, में तुम पुण्यप्रमाण; पाम्युं तिहां एक
पाठियुं, जलनिधि लंघी जाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ढोला रहो तो हुं रांधुं खीचडी ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां में मनें एणी परें चिंतव्युं, अहो मायावी शिरदार ॥ साजन
सुणो हे ॥ अध्यवसाय हीणा घणा, ए सारथवाह असार ॥ १ ॥ सा० ॥
जुउ जुउ कर्मविटंबणा, कांय कर्म करे ते होय ॥ सा० ॥ जु० ॥ ए आंक
णी ॥ अथवा ए अचरिज को नहीं, कांय कारणथी होय काज ॥ सा० ॥
पण विण कारण नवि होय, कांय पापथी केम होय राज ॥ २ ॥ सा० ॥
॥ जु० ॥ पूठे विलासवती तुमें केम पडया, तव में कीध मन विचार
॥ सा० ॥ दोष न कहियें पारका, एम चिंतवी बोख्यो तिवार ॥ सा० ॥
॥ ३ ॥ जु० ॥ परमादे हुं पडी गयो, जड्युं फलक ते तूऊ परें मुऊ
॥ सा० ॥ उतख्यो जलनिधि अनुक्रमें, फरतां तुऊ मलीउ ए गुऊ
॥ सा० ॥ ४ ॥ जु० ॥ कहे नारी हुं तरशी हुं घणी, तव में कहुं सां
जल वात ॥ सा० ॥ सरोवर ठूकडुं इहांथकी, चालो तिहां जईयें सुख
शात ॥ सा० ॥ ५ ॥ जु० ॥ कांय नारि नितंबना नारथी, वली समुइ
मां उपनो आक ॥ सा० ॥ थोडुं चाली तव आकती, नवि चाली शकुं
सुणो वात ॥ सा० ॥ ६ ॥ जु० ॥ तव म्हें कहुं ए वडतलें, तूं बेश
छेई आबुं नीर ॥ सा० ॥ नलिनीपत्र दडीउं करी, तव बोली अई ते
धीर ॥ सा० ॥ ७ ॥ जु० ॥ तुम दर्शनना सुख आगलें, मुऊ तरष न
पीडे कांय ॥ सा० ॥ में कहुं धीरज धारीयें, जाणजे जल छेईनें आ
थ ॥ सा० ॥ ८ ॥ जु० ॥ नयनमोहन पट उढ्य तूं, जिम अटवीमां वि
ध्र न आय ॥ सा० ॥ पल्लवशय्या पाथरी, न्यग्रोधहेवल ते गाय ॥

ना० ॥ ए ॥ जु० ॥ वात मनावी बलशकी, गयो जल जेवा तेणी
 वार ॥ सा० ॥ जल फनसादिक फल प्रत्ये, जेइ आव्यो वर आहार
 ॥ ना० ॥ १० ॥ जु० ॥ नयनमोहन पट मूकि तुं, पीयो पाणी लाव्यो
 तेइ ॥ सा० ॥ तोही उत्तर नवि दिये, में कह्युं हांसी करो केह ॥
 सा० ॥ ११ ॥ जु० ॥ तो पण जब बोली नहीं, तब में एम चिंतन
 कीध ॥ ना० ॥ इहां तो ए रमणी नथी, अन्यथा केम बोल न दीध
 ॥ ना० ॥ १२ ॥ जु० ॥ साथलें फरश्यो कर जदा, तोपण नवि आ
 वी दाय ॥ सा० ॥ बलि मावुं लोचन फरकीयुं, पडियुं करमांथी पा
 य ॥ सा० ॥ १३ ॥ जु० ॥ खेद लह्यो शंका थइ, खोलवा मांमी ते
 नागि ॥ सा० ॥ देवी देवी मुख जंपतो, किहां गइ मुऊ प्राण आधार
 ॥ ना० ॥ १४ ॥ जु० ॥ वेलुयलें देखे तिहां, अजगरघसणी दुःख
 दाय ॥ ना० ॥ ते अनुसारें हुं चालीउं, दीतो वनगहन सन्नाय ॥
 सा० ॥ १५ ॥ जु० ॥ कल ठवि नेत्र रातडां, गलतो बली तेहज पट
 ॥ सा० ॥ मद्माकाय अजगर तिहां, देखी थइ मुऊ चटपट ॥ सा० ॥
 ॥ १६ ॥ जु० ॥ मारी विलासवती एणें, तेणे अवसर मुऊ गइ शान
 ॥ ना० ॥ रात दिवस शीत उण्णनें, न लहुं वस्ति के रान ॥ सा० ॥
 ॥ १७ ॥ जु० ॥ सुख दुःख उत्सव आपदा, बली चालतो के रह्यो
 ठाय ॥ ना० ॥ कांय मरण जीवित पण नवि लहुं, ए अवस्था कांय
 न कदाय ॥ ना० ॥ १८ ॥ जु० ॥ मृत्पायें धरणी ढव्यो, जाणियें गया
 तिहां मुऊ प्राण ॥ ना० ॥ बलि लायग्नी लहेरें करी, चेतना लही
 नेहें अजाण ॥ ना० ॥ १९ ॥ जु० ॥ ए देह सोंपूं अजगर
 प्रत्ये, थायें उदरमां देवीनंग ॥ सा० ॥ जब अजगर पासें हुं गयो,
 निणें नंकोपूं निज अंग ॥ ना० ॥ २० ॥ जु० ॥ में जाणुं मुआं
 पण दंडियुं, ए नारीनुं मजनुं थाय ॥ सा० ॥ अजगरनें क्रोध पमा
 दया, तयो मस्तक उपर वाय ॥ सा० ॥ २१ ॥ जु० ॥ जयथी तेणें
 पट पातो बन्धो, जेइ नारी तेणें बहुमान ॥ सा० ॥ हृदयें देइ मन
 चिंतयें, ए पटकांते तजुं प्राण ॥ सा० ॥ २२ ॥ जु० ॥ प्रेम बिलु

दो ए प्राणीउ, मन चिंतवे आल पंपाल ॥ सा० ॥ सुखिया निसनेही मुनि,
जिणे ठोडी सयल जंजाल ॥ सा० ॥ १३ ॥ जु० ॥ पंचम खंमं ए तेरमी,
कही ढाल अति सुरसाल ॥ सा० ॥ कवि पद्म कहे श्रोता सुणो, सुण
तां होय मंगलमाल ॥ सा० ॥ १४ ॥ जु० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूती जिहां श्यामा हती, तिहां वडतलें ततकाल ; शाखाचुं फांसो
दीउ, करवाने में काल ॥ १ ॥ फूलायो हुं जेटले, रुंधायो तिणे रान ;
कंठ तिणे कानन नम्युं, सयली गइ तव शान ॥ २ ॥ पेसे गगन पाता
लमां, नयन ते नीकलीयांह ; अननुनूत ते अनुनव्यूं, मुंजाणो मन
मांहि ॥ ३ ॥ पाणिवलनें पांतरे, स्वपन परें सुखवास ; दीगो रुषि एक
दृष्टियी, सिंचे जल आसास ॥ ४ ॥ चेतन पामी चिंतवुं, अहो न मूउ
आज ; तापसनें कहुं ए तुमें, कीधुं शानें काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ सोनाने केरुं मारुं वेडलुं रे लो, रूपला इंढोणी हाथ ॥
॥ मारा वाहलाजी रे ॥ हवे न ठोडुं तोरीचाकरीरे लो ॥ ए देशी ॥
॥ तापस कहे सुण्य वातडी रे लो, दूरथी दीगो तुज ॥ मारा वाला
जी रे ॥ कुसुम लेवा हुं आवीयो रे लो, करुणा उपनी मुज ॥ मा० ॥
॥ १ ॥ एम मरण नवि किजीयें रे लो ॥ ए आंकणी ॥ कोइ उत्तम जन
आचरे रे लो, निंदित मारग एह ॥ मा० ॥ कारण पूढी निवारीयें
रे लो, चिंतव्युं एम धरी नेह ॥ मा० ॥ २ ॥ एम० ॥ उतावलां आव
तां थकां रे लो, तेंतो कीधूं ए काम ॥ मा० ॥ मा साहसें एम बोल
तो रे लो, डोडी आव्यो आम ॥ मा० ॥ ३ ॥ एम० ॥ ताहरो पा
स त्रुटि गयो रे लो, तूं पडीउ तव हेठ ॥ मा० ॥ में सींच्यो जलथी
तुनें रे लो, आयु प्रमाणो होय नेठ ॥ मा० ॥ ४ ॥ एम० ॥ एहवुं
तूं केम आचरे रे लो, तापस पूढे एम ॥ मा० ॥ लाजें उत्तर नवि
में दिद्यो रे लो, तापस कहे धरी प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥ एम० ॥ तपसी
मात पिता समां रे लो, कहो मूकी खलखंच ॥ मा० ॥ अणजाण्यो ते

गुं करे रे लो, कारजनो परपंच ॥ मा० ॥ ६ ॥ एम० ॥ तव में धुर
 यी नाखियुं रे लो, निपन्युं जे वृत्तांत ॥ मा० ॥ तव संसार असारता रे
 लो, नाखे तद् महांत ॥ मा० ॥ ७ ॥ एम० ॥ शरदमेव सम आउखुं
 रे लो, कुसुमित तरुसम रुद्धि ॥ मा० ॥ विषय स्वप्न सम नाखीया
 रे लो, संजोग विजोगुं गिद्ध ॥ मा० ॥ ८ ॥ एम० ॥ ठाम्यतुं ए व्य
 वसायनें रे लो, धर्म विना केम सुख ॥ मा० ॥ में कह्युं साचुं रूपि क
 हो रे लो, पण मुज प्रेयसीडुःख ॥ मा० ॥ ९ ॥ एम० ॥ तेणें नवि
 विरद खमी शकुं रे लो, मरण अधिक मुज डुःख ॥ मा० ॥ तिणें मुज
 मृथा जिम ए मिले रे लो, तेम नाखो करो सुख ॥ मा० ॥ १० ॥
 एम० ॥ तपनी कहे तुमें सांजलो रे लो, मलय पर्वत ए नाम ॥ मा० ॥
 मनोरथपूरक टुक ठे रे लो, मनचिंतित करे काम ॥ मा० ॥ ११ ॥
 एम० ॥ तद् उपरें चढी चिंतवो रे लो, जे मनमां अनिप्राय ॥ मा० ॥
 जंया करी ते पामीयें रे लो, सुणि प्रणम्यो रूपिपाय ॥ मा० ॥ १२ ॥
 ॥ एम० ॥ चाव्यो हुं ते पर्वतें रे लो, पोहोतो त्रीजे दिन्न ॥ मा० ॥
 निद्रां चढी में चितव्युं रे लो, प्रिया उपरें मुज मन्न ॥ मा० ॥ १३ ॥
 ॥ एम० ॥ जंया कयो में जेटले रे लो, अहो अहो प्रमाद ॥ मा० ॥
 विद्याधरें एम वांजतां रे लो, जलप्यो धरी विषवाद ॥ मा० ॥
 ॥ १४ ॥ एम० ॥ चंदनलताना गेहमां रे लो, लावि आस्वाश्यो तेण
 ॥ मा० ॥ रे महापुम्य गुं तूं करे रे लो, उत्तम आकारेण ॥ मा० ॥
 ॥ १५ ॥ एम० ॥ कहे तुज कारण गुं अत्रे रे लो, तव में कह्यो संव
 ॥ मा० ॥ १६ ॥ एम० ॥ कदियें एद्र वतावीठ रे लो, कामित पडण निर्वंध ॥
 मा० ॥ १७ ॥ एम० ॥ तव कांयक दसिनें कहे रे लो, विद्याधर एम
 नाणि ॥ मा० ॥ स्नेहकाय अहो मानवी रे लो, स्नेह ते डुःखनी खा
 णि ॥ मा० ॥ १८ ॥ एम० ॥ स्नेह विवेक रहे वेगलो रे लो, दुर्गति
 बांधन स्नेह ॥ मा० ॥ कुशलपदु शत्रु कह्यो रे लो, निवृत्ति अर्गला
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ एम० ॥ स्नेह पराजव्या प्राणिआ रे लो, न
 मने आगनी काज ॥ मा० ॥ काजांचित नवि ते जुए रे लो, धर्म न

सेवे रसाल ॥ मा० ॥ १९ ॥ एम० ॥ सिंह पंजरगतनी परें रे लो, स
मरथ थकी सीदाय ॥ मा० ॥ तेणें तजीयें ए स्नेहनें रे लो, विवेकदी
पकें जुउं जाय ॥ मा० ॥ २० ॥ एम० ॥ कर्मविचित्र सवि जीवनां रे
लो, केम गति होवे एक ॥ मा० ॥ मनवंठित फल साधवा रे लो, च
उविह धर्मविवेक ॥ मा० ॥ २१ ॥ एम० ॥ पंचम खंडें चौदमी रे लो,
पद्मविजय कही ढाल ॥ मा० ॥ समरादित्यना रासमां रे लो, धर्मशी
मंगलमाल ॥ मा० ॥ २२ ॥ एम० ॥ सर्व गाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो दृष्टांत शोहासणो, एह तणे अधिकार ; मलयदेशमां गांमडुं,
कर्णिकार श्रीकार ॥ १ ॥ सज्जिजशेवनी सुंदरी, सिंहा नाम सुजाण ;
पति उपर प्रेमज घणो, पतिने न अंश प्रमाण ॥ २ ॥ बिहुनें वात
वणी इसी, एक दिन सुणीयुं एम ; कामितपडण करी मरे, पामे
वंठित प्रेम ॥ ३ ॥ पति चाढ्यो प्रेमें करी, चिंतवे एणिपरें चित्त ; ना
र्या एह नवांतरें, नवि पामुं ए प्रीति ॥ ४ ॥ एम करी जंपा तिणें
दीउं, सांजले सिंहा कान ; इण धासुं मन एणि परें, मुज पति एह प्र
माण ॥ ५ ॥ विरह म थाउं नवांतरें, पतिरागें पडी तेह ; कोण एह
मां लेहेसो कहो, दंपती निःसंदेह ॥ ६ ॥ जुक्ति रहित जाणी करी, को
ण करे एह अकाज ; सुणी जाणूं मे सयण ए, एहवुं नांखे आज ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ योगमाया गरबे रमे जो ॥ ए देशी ॥

॥ अजगरनी जे वातडी जो, में संजलावी तस कान जो ॥ त्रीजो दिन
आज तेहने जो, कहे खेचर सुणो सुप्रमाण जो ॥ १ ॥ धीरजथी
सवि संपजे जो ॥ ए आंकणी ॥ केटले वैगलूं ते बन्युं जो, में कहुं
दश जोजन थाय जो ॥ तव विद्याधर बोलीयो जो, तूं खेद म कर मन
जाय जो ॥ २ ॥ धी० ॥ जीवे ठे तुज प्रेयसी जो, तेहनो सांजल अधि
कार जो ॥ विद्याधरनो अधिपति जो, चक्रसेन नामें अवधार जो
॥ ३ ॥ धी० ॥ तेणे अप्रतिहत चक्रानिधा जो, महाविद्या साधवा हे

त जो ॥ पूर्वसेवा वार मासनी जो. हवे उत्तरने संकेत जो ॥ ४ ॥ धी० ॥
 अटतालीश जो जन तणी जो. कांय क्षेत्रशुद्धि करी सार जो ॥ अज
 य देई तहु जीवने जो. महा उद्यमथी तिण वार जो ॥ ५ ॥ धी० ॥ निज
 समजे विद्याधरा जो. तेहने एम हुकम ते कीध जो ॥ सात दिवस जगी
 सांनजो जो, सहु जीवनी हिंसा निषिद्ध जो ॥ ६ ॥ धी० ॥ मलय
 गिरि गुफा नामथी जो. सिद्धिनिजया अजिधान जो ॥ स्फाटिक मणि
 जपमालिका जो, एकाकी रह्यो तिणें थान जो ॥ ७ ॥ धी० ॥ सात
 लाख मांमथो जापनें जो. पूरा थया दिवस ते सात जो ॥ सिद्धि सवा
 रें थायजो जो. तेणें जाणुं कुशलनी वात जो ॥ ८ ॥ धी० ॥ एटला
 क्षेत्रमां मरे नहिं जो, ए काममां सहु सावधान जो ॥ सांनली में पण
 चिंतव्युं जो. ए वात युक्तें परधान जो ॥ ९ ॥ धी० ॥ पट उढ्यो हतो
 एणियें जो. केम एकजो पट गले तेह जो ॥ मनुष्य गढ्युं होय जो
 एणें जो, तो संकोचाये केम देह जी ॥ १० ॥ धी० ॥ में कह्युं खेच
 रनें तिहां जो, मुज आशासना तुमें दीध जो ॥ थाउ मनोरथ तुम
 नणा जो. मुज अकुशल पद निषिद्ध जो ॥ ११ ॥ धी० ॥ खोली
 लायुं सादारी प्रिया जो. मुज बोले खेचर ताम जो ॥ शानें कलेश करो
 तुमें जो. आज तो अमनें एह काम जो ॥ १२ ॥ धी० ॥ कालें सहु
 ज्ञाना मजी जो, पासीयुं खबर ते तास जो ॥ मेलवयुं अमें तूमनें
 जो. तुमें रदो इहां सुखवान जो ॥ १३ ॥ धी० ॥ मान्युं वचन में ते
 वनुं जो. अक्षयपदो गति रदो जेय जो ॥ गगनें उद्योत अयो तदा
 जो. नाय मंगल गीत विशेष जो ॥ १४ ॥ धी० ॥ देवदिमान परें दी
 पनुं जो. आयुं विद्याधरनुं विमान जो ॥ कहे खेचर मुज देखजो
 जो. विद्या निरुन्नाति निदान जो ॥ १५ ॥ धी० ॥ गयुं विमान
 तिहां कणें जो, बहु विद्याधर पन्धिर जो ॥ विहाणें मुजनें ते
 दी गयो जो. चतुर्जन नर्माप उदार जो ॥ १६ ॥ धी० ॥ करीय प्र
 णाम दत्ता राजा जो. गर आनन दीयुं नाम जो ॥ वात गुणावी वे
 रनें जो. तय वाच्यो मेचर सामी जो ॥ १७ ॥ धी० ॥ मत संताप

करो तुमें जो, तुम मेलवशुं आज नारी जो ॥ इणो समे दोय विद्या
धरा जो, प्रणमी कहे एक तिवार जो ॥ १७ ॥ धी० ॥ तुम आणा
थी वनांतरें जो, नमतां एक दीठी नार जो ॥ अजगर जयथी नासती जो,
आर्य पुत्र हा करती होकार जो ॥ १८ ॥ धी० ॥ वस्त्र जिधुं तेणें अजगरें
जो, लाव्या मलयशिखर अमें नारी जो ॥ शून्य हृदय कृण रही करी जो,
उठि कृण नयनमां वारि जो ॥ १९ ॥ धी० ॥ अमें कह्युं जय न क
रो तुमें जो, तुज किहां गयो जरतार जो ॥ सा कहे पाणी लेवा गयो
जो, तव अमें करी शोध अपार जो ॥ २० ॥ धी० ॥ पण नवि अ
मनें ते मढ्यो जो, सा नवि लीये अन्ननें पान जो ॥ हा हा आर्यपुत्र
राखियें जो, एम कहेती रहे तिणे आन जो ॥ २१ ॥ धी० ॥ खेचर
पति मुजनें कहे जो, तुमें जुवें तुमची के नाहिं जो ॥ साथें खेचर हुं
तिहां गयो जो, जोई पाम्यो अति उत्साह जो ॥ २२ ॥ धी० ॥ देई
आश्वासना तिहां कणे जो, लावि दिये खेचर आहार जो ॥ खेचर
पतिनें आवी कह्युं जो, महाराज ए माहरी नारी जो ॥ २३ ॥ धी० ॥
वात घणी रूअडी थड जो, तुम नांग्या दुःख वियोग जो ॥ कहो ते
वली तुम शुं करुं जो, तुमें दीसो उत्तम कोइ लोग जो ॥ २४ ॥
धी० ॥ समरादित्यना रासमां जो, कही पंचम खंमें रसाल जो ॥
॥ पद्मविजय शोहामणी जो, रूडी पन्नरमी एह ठाल जो
॥ २५ ॥ धी० ॥ सर्व गाथा ॥ ४६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देखी लक्ष्मण देहनां, एणि परें चिंत्युं आप; विद्याधर पतिवल्लहो,
पामीश प्रबल प्रताप ॥ १ ॥ अजितबला विद्या अठे, ते आपुं हुं तु
ज; उत्तम पुरुष में उलखी, मोद थयो एम मुज ॥ २ ॥ प्राये अवि
घन पामशो, परगट जास प्रनाव; बालपणे बतलावीयो, जोशीयें
एह जमाव ॥ ३ ॥ उदय तेहनो आवियो, एम विचारी आप; विद्या
लीधी वेगशुं, उत्तम सुणी आलाप ॥ ४ ॥ विद्याधर गया वेगशुं, आ
खी साधन आम; साधन खेत्र शिरोमणि, केम करुं विकट ए काम

॥ ५ ॥ उत्तर साधक नहिं इहां, संनाखो वसुनूति; इण अवसर आवी मिले, आखुं ते अदन्त ॥ ६ ॥

॥ ठाज शोलमी ॥

॥ बाबा किसनपुरी तुम बिना मढिआं उजर पडी ॥ ए देशी ॥

॥ विद्यालिङ्गि सूचवे तेह, आव्यो वसुनूति ससनेह ॥ मन हरख न माय, आव्याजी जलें रे तुमें अहोजी अहो ॥ तापसनो पहेखो ते वेश, आलिंगन कखो हर्ष विशेष ॥ १ ॥ मन० ॥ में मन चिंतव्युं तापस आम, आलिंगन दिये शानें काम ॥ मन० ॥ देवीसहित हुं प्रणम्यो तास, चिरंजीव कहे मुजनें जास ॥ २ ॥ मन० ॥ अविधवा आउं नारी आशीप, अहं उजखी धूपुं में शीश ॥ मन० ॥ आणंद आंशु नयणें न माय, आसन आप्पुं वेठा ठाय ॥ ३ ॥ मन० ॥ चरण पखाजे नारी तिवार, वृत्तांत पूठे करावी आहार ॥ मन० ॥ किट्ठांथी आव्यानें सायर तव्या केम, ते कहे फलक जखुं थयुं हेम ॥ ४ ॥ मन० ॥ पांचे दिवसें पाम्यो पार, मलयतटें उतखो तिणी वार ॥ मन० ॥ आव्यो तापस जांवा तीर, आश्वास्यो मुज देखी पीर ॥ ५ ॥ मन० ॥ कुजपति पासें मुज लेइ जाय, में वंधा तव आशीप दाय ॥ मन० ॥ आहार करावी पूठी वात, में पण कह्यो सधलो अघदात ॥ ६ ॥ मन० ॥ में कह्युं तापस कीजें स्वामि, मित्रविजोगीनें ए अनिगम ॥ मन० ॥ कुजपति कहे कर्तव्य ठे एह, पण नवि चूटे तं नुरनेद ॥ ७ ॥ मन० ॥ हुंकर कर्मतणा रे विवाग, हुंकर जांख्यां विषयलो व्याग ॥ मन० ॥ सुनिनो मारग दोहिलो जाणी, पालवुं दोहिलुं गती अपिठाणी ॥ ८ ॥ मन० ॥ नमजीनें तजियें संसार, पण एत जांनव बीजो प्रहार ॥ मन० ॥ ज्ञानें करी जाणुं हुं एम, मित्र नास्यो नरुगे सुख हेम ॥ ९ ॥ मन० ॥ तेवा करतो रहे अम पास, सुनि नयनें अर्ध मत्तवानी आश ॥ मन० ॥ तिहां रहेतां अघो एत मो सराव, कुजपति तेवा कर्मां विशाज ॥ १० ॥ मन० ॥ आजथी ज्ञाने दिवग अतीत, एक तापस कहे वात प्रतीत ॥ मन० ॥ कुजप

ति आगल हरख धरेह. मुऊ सांजलतां सर्व कहेह ॥ ११ ॥ मन० ॥
 ताहरुं वृत्तांत में सूणीयुं कान, में कह्युं मित्र ए माहरुं गान ॥ म
 न० ॥ कुलपतिनी आणा लही ताम, कालें हुं आव्यो ते तीरथ ठा
 म ॥ १२ ॥ मन० ॥ खेचरें कह्यो मुऊ तुऊ अधिकार, खोजतो आ
 व्यो एणहिज ठार ॥ मन० ॥ तव में विद्या प्रापतिवात, संजलावी तस
 हाय ते यात ॥ १३ ॥ मन० ॥ ज्योतिपी वचन मिथ्या नवि आय,
 अहो जावी सहु वनतुं जाय ॥ मन० ॥ करो मन इक्षित ए तुमें
 काम, आशो अवश्य विद्याधर स्वामि ॥ १४ ॥ मन० ॥ पूर्वसेवा करवी
 षट मास, मांझी मलय शिखर अन्यास ॥ मन० ॥ मौनपणे ब्रह्म
 चारी धाय, परिमित आहार फलादि कराय ॥ १५ ॥ मन० ॥ कह्युं
 में विलासवती थयुं काम, षट मास छुःकर गया मुऊ आम ॥ मन० ॥
 हवे अहोरातिनुं काम ठे जोय, कहे विलासवती सुणो सोय ॥ १६ ॥
 ॥ मन० ॥ तुम मनोरथ पूरा आउ, वहेला वहेला आउ खेचर राउ
 ॥ मन० ॥ कायर हृदय जाणी में तेह, मलयगिरि दरिमां ठवि एह
 ॥ १७ ॥ मन० ॥ मांझी प्रधान सेवा हवे तब, देवता ठवी करी कुसु
 मनो जह ॥ मन० ॥ दिशापाल कह्यो वसुनूति, पदमासन बांध्युं अ
 दनूत ॥ १८ ॥ मन० ॥ मुझामंजल कीधां आप, मंत्र लहूनो मांझ्यो
 जाप ॥ मन० ॥ कांश्क वेला बीती जाम, आकाश हसवा लाग्युं ताम
 ॥ १९ ॥ मन० ॥ गाज अकालें के सायर होज, पृथ्वी कंप के देखी अ
 योज ॥ मन० ॥ मदमातो मयगल सकषाय, जलकणीआ शीतल ठं
 टाय ॥ २० ॥ मन० ॥ विलासवतीनें आक्रमे तेह, क्रोधें कुंमलित सुं
 ढि करेह ॥ मन० ॥ गुलगुल करतो अंकुशकान, सन्मुख आवतो देखे
 ते आन ॥ २१ ॥ मन० ॥ हा आर्य पुत्र एम करती नारी, नवि अखो
 जाणो धीरज धारी ॥ मन० ॥ एह बिनीतिका गई असराल, आवि
 पिशाचिणी अतिविकराल ॥ २२ ॥ मन० ॥ वरणें काली रातां नयण,
 अट्टाट्ट हास्य करे निजवयण ॥ मन० ॥ करपदनी गलें माला धारि,
 गगन उद्योत करे तिणी वार ॥ २३ ॥ मन० ॥ शोणित खरड्युं च

मे ते जाण. वल्ल ते पहेलुं दुःखनी खाणि ॥ मन० ॥ रुधीर पीती नाजन
 कयाज. विनासवती वाम कर संजाल ॥ १४ ॥ मन० ॥ रेरे दुष्ट विद्याधर
 नंग. दुर्गविदग्ध अयो मनरंग ॥ मन० ॥ किहां जाईश मुख कहेती एम,
 हांजना कर्ती आवी तेम ॥ १५ ॥ मन० ॥ तेहथी नवी होनाणो
 धीर. हवे माकिण आवी करे पीर ॥ मन० ॥ विण वादल गरजारव
 याग. नाचे धड बेताल बहु धाय ॥ १६ ॥ मन० ॥ वरसे रुधीर धा
 ग अतराल. नगन ऊर्ध्वकेश अति विकराल ॥ मन० ॥ बोले शिवा
 कर्ती फंतकार. तो पण नवि होच्यो हुं लगार ॥ १७ ॥ मन० ॥ ह
 वे चांयां उपमर्ग ते थाय, राक्षसिणी आवी लेई जाय ॥ मन० ॥ कूप
 मां नाण्यां जेम पाताल. चंड सूर्य नाठा सम काल ॥ १८ ॥ मन० ॥
 दादा जेदनी अनिविकराल, मनुष्य मस्तकनी पहेरी माल ॥ मन० ॥
 नानिजगें वण लटके जात. मनुज कलेवर कापे विलास ॥ १९ ॥
 ॥ मन० ॥ मार मार कहे सुखें आलाप, महा विकराल तणुं नहीं
 माप ॥ मन० ॥ तो पण नवि बीहिनो हुं लगार, चार घडी रहे रा
 नि निवार ॥ २० ॥ मन० ॥ मंत्र अयो समापत प्राय, सुगंध
 नग रायग हवे वाय ॥ मन० ॥ फूलवृष्टि जय जय रव थाय,
 हिन्नगंड तिदां मंगल नाय ॥ २१ ॥ मन० ॥ अयो उद्योत आकाशें
 जाम. अजिनवला आच्यां हवे ताम ॥ मन० ॥ देवदेवी बहु परिवस्यां ते
 य. मनना करे गुन मादरी एह ॥ २२ ॥ मन० ॥ पंचम खंमं शो
 जमी दाज. नांजनां हांच मंगलमाल ॥ मन० ॥ समरादित्यना रास
 नां नार. पराविजय कहे जयजयकार ॥ २३ ॥ मन० ॥ सर्व गाथा ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो नादगो उपयोग ए, अहो व्यवसाय अनंत; अहो पुरुषोत्त
 म पण अति, निष्ठ अई हुं नंत ॥ १ ॥ विरम्य तुं ए व्यवसायथी, त
 न नें चिंत्युं एम : मंत्र अहो मादरे, कतो ठलमां पदुं केम ॥ २ ॥
 मंत्र अहो कवी प्रणमोड. अज अवसर तिदां थाय : विद्याधरनां वृंद
 , मय मनोहर नाय ॥ ३ ॥ सुणि देवी कहे ए महु, प्रेम तुज प्रण

मंत ; चंमसिंह प्रमुखा चतुर, नृत्य जाव जावंत ॥४॥ तुम पसाय एम कही
तुरत. अंगी करे अतिरेक; कहे देवी तुज कीजीयें, खेचरपति अजिषेक ॥५॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ सीरोहीरो शालू हो, के उपरें जोधपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ में कसुं मुज मित्रनें हो, के बलि नारी देखे ॥ तब बोलाव्यो तस
हो. के नवि बोले रेखे ॥ तस जोयो जईने हो, के नवि दीठो जा
म ॥ बहु विद्याधर गुं हो, के गगन गयो ताम ॥ १ ॥ तिहां एक नि
कुंजमां हो, के अरहो परहो नमतो ॥ अम देखी क्रोधें हो, के अति
शय धमधमतो ॥ दोय करमां रुंखनी हो, के शाखा जेई कहे ॥ मुज
मित्रनी नारी हो, के डुष्टो केम रहे ॥ २ ॥ ते सांचली चिंतव्युं हो,
के देवी अपहरी ॥ मुजफोक परिश्रम हो, के पूढुं वात खरी ॥ रे
वसुनूति कहो हो, के देवी किहां गइ ॥ वसुनूति न सांचले हो,
के वचन ते थिर थई ॥ ३ ॥ खेचरनी साया हो. के ए मनमां धरी ॥
कस्यो घा मुज उपर हो, के तेणें आकर्ष करी ॥ वंचावी गातनें हो,
के शाखा अपहरी ॥ कर पकडी नांखुं हो, के देवी कियों हरी ॥ ४ ॥
फिरी फिरी जब पूढुं हो, के तव उपयोग करी ॥ मुज उलखी बोव्यो हो,
के सांचल वात खरी ॥ तुज विद्या साधंतां हो, के राति ते दोय जा
म ॥ विद्याधर टोळूं हो, के आव्युं एक ताम ॥ ५ ॥ उपसर्गनी शंका हो,
के में सनमां आंणी, योडी थई वेला हो, के तव बोले राणी ॥ हाहा
आरजसुत हो, के मुजनें जेई जाय ॥ राख राख वसुनूति हो, के मुज
आपद थाय ॥ ६ ॥ सुणी मुज आशंका हो, के संच्रमयी थई ॥ तव
तेह गुफामां हो, के में जोयूं जई ॥ नवि दीठी ज्यारें हो, के धायो विमा
न पुठें ॥ नवि जाणुं किहां गइ हो, के तव चिंतूं रूठें ॥ ७ ॥ हरि खेचरें देवी
हो, के पण ए किहां जाओ ॥ मुज क्रोधअगनिमां हो, के एह पतंग था
गे ॥ किसी फकर म करशो हो, के अजितबजा सीधी, कहे देवी ति
णें समे हो, के शी चिंता लीधी ॥ ८ ॥ कहि वात सवे तस हो, के दे
वी क्रोधें चढी, दिश दिश तिणे मूकी हो, के खेचर श्रेणी वडी ॥ एक

खेचर आवी हो, के पवनगति जांखे ॥ ए स्त्री में दीठी हो, के अंनगरती
 राखे ॥ १० ॥ सुणो नग वैताढ्ये हो, के तुम आणायें गयो ॥ रहनेउर चक्र
 बाल हो, के नयर तिहां नयो ॥ उद्देग घणो करे हो, के तिहांना सहु
 लोका, ठाम ठाम पूजा बलि हो, के होम हवन थोका ॥ ११ ॥ एक खेचर
 नें में हो, के पूठयो अवदात ॥ कहे ते अम स्वामी हो, के अनंगरती यात
 ॥ कंदर्पना वगथो हो, के एक दिन अपहरी ॥ विद्यासाधकनी हो, के ना
 री ते जूचरी ॥ १२ ॥ नवि इहे नारी हो, के तव ते हठ करी ॥ लेवा
 परवत्थो हो, के सुणीहुं छेप धरी ॥ कह्युं ठे कोई पासैं हो, के लावो
 खट्ट मुद्रा ॥ एम करीनें उठयो हो, के क्रोध धरी तदा ॥ १३ ॥
 कहे पवनगति तव हो, के प्रसन्न थई सुणो ॥ ए वात कहुं तुं हो,
 के नदीं प्रत्यक्ष सुणो ॥ सिंहिणीने श्वानज हो, के केम परानवे ॥
 तव में कह्युं आगज हो, के वात कहो हवे ॥ १४ ॥ हुं वेगो तिहारें
 हो, के वात कहे आगें ॥ असमंजस देखी हो, के शीजतणो रागें ॥ महा
 काजी देवी हो, के इहां उपनर्ग करे ॥ जूमिकंपनें विजली हो, के बहु नि
 र्यात थरे ॥ १५ ॥ आवी कहे नृपनें हो, के उत्तम पुरुष थई ॥ केम नी
 चनुं काय हो, के करे तुफ मति गई ॥ तव अजगो उजो हो, के कायायें
 करी ॥ पण नदीं कांय मनथी हो, के एहवी वात धरी ॥ १६ ॥ पुरदेव
 जां कोपे हो, के नगर विनाश करे ॥ ते कारण मांमया हो, के शांति कर
 न नगरे ॥ तव में तल पूठ्युं हो, के कहो सा किहां रहे ॥ नृपचुवन उया
 नें हो, के आचनत्रे ते कहे ॥ १७ ॥ हवे हुं तिहां पहतो हो, के गगन
 नसें गयो ॥ नंदनें हुं देखी हो, के मनमां गह गयो ॥ विद्याधर वृद्ध हो,
 के पग्यो ते रही ॥ कर देई गजोथो हो, के नृख तरप सही ॥ १८ ॥
 तमचो विण आणा हो, के हुं न गयो पासैं ॥ तिहांथी तुम पासैं हो, के
 आयो वयासैं ॥ हवे तुम मन गमतुं हो, के काम ते कीजीयें ॥ पूठे
 गगननिसें थरे, के तव ते यदिजीयें ॥ १९ ॥ देवता उपदेजें हो, के
 तव ते नंद वयो ॥ निणे दूननें भूकी हो, के किजें जाणपणुं ॥ दाल पं

चम खंमें हो, के सत्तरमी गणी ॥ समरादित्य रासमां हो, के पद्म
विजय जणी ॥ १ ए ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्मदत्त खेचर जणे, एशुं बोल्या आम; रमणी निज कोई राखतां,
श्यो तिहां वचननो साम ॥ १ ॥ समरसेन कहे साचजूं, एह न खमाये
आज; वायुवेग मन वांठियो, कहे न सीज्युं काज ॥ २ ॥ वायुमित्र
कहे वेगशुं, जाणो तुमें सुजाण; चंमसिंह हसीउं चतुर, एह वात
अप्रमाण ॥ ३ ॥ सुनट वीररस सामटा, समजाव्या सुविशेष; राज्य
स्थिति ए राखवी, दूत मूको तस देश ॥ ४ ॥ पवनगति तेह पेखीउं,
दूरस करीने दूत; समजावी सघली स्थिति, आखी निज आकूत ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥ राग बंगालनी देशी ॥

॥ अनंगरति ठे तिहां महाराय, दूत कहे जइ एम निरमाय ॥ साज
न सांजलो ॥ अपजश केरुं कारण जेह, उत्तम पुरुष न आचरे तेह
॥ १ ॥ सा० ॥ लोकने हांसीनुं कारण थाय, अरिअण मनमां आनं
द पाय ॥ सा० ॥ धीरज जेहथी नाशी जाय, एम अवगुणनो होय स
मुदाय ॥ २ ॥ सा० ॥ इह नव परनव दोय विरुद्ध, कोण आचरे
कहो महामति मुद्ध ॥ सा० ॥ परदारा हरवी महापाप, चित्त विचारो
राजन आप ॥ ३ ॥ सा० ॥ मूको ए माठो व्यवहार, एम कहेवरावे सनत्कु
मार ॥ सा० ॥ आपो मुज जाया तुमें आप, शानें उपजावो संताप ॥ ४ ॥
सा० ॥ बोव्यो तेह अनंगरति राय, कहेजे तुं तुज रायनें जाय ॥ नारी
नापियें ॥ एतो पटराणी करी घर थापियें ॥ नारी० ॥ ए आंकणी ॥ नूचर
मुज मनावे आण, सदसद् व्यवहारनो ए जाण ॥ ५ ॥ नारी० ॥ जिणें अं
गीकरी तेहनी नारी, परनारी अम नहींअ लगार ॥ नारी० ॥ पाप पुण्य तो
तिहां गणाय, घर मूकीनें रणमां जाय ॥ ६ ॥ नारी० ॥ कहेवुं होय
तस कहेजे जाय, आविश हुं रण सन्मुख धाय ॥ नारी० ॥ सांजलो
दूत ते वलीउं खिप्प, पोहोतो विलासवतीनें समीप ॥ ७ ॥ नारी सांजलो
॥ ए आंकणी ॥ खेद म करजो मनमां रेह, शोध लाधी ठे तुमची एह

॥नारी॥ थोडा दिनमां टलगे विजोग. सत करजो मनमां कांय शोग
 ॥७॥ नारी॥ बोली विलासवती हवे ताम, आर्यपुत्र धरणी मुऊ नाम
 ॥सा०॥ तेंणें मुऊनें नवि खेद ते कांय, पूठजो आर्यपुत्रनें सुखसाय
 ॥ ८ ॥ सा० ॥ वलि आव्यो दूत बीजे दिन्न, संनलावे सनत्कुमारनें
 कन्न ॥ सा० ॥ कटुक वयण सुणी जाग्यो क्रोध, यया उजमाल ते स
 घना जोध ॥ १० ॥ सा० ॥ अमरप धरतो मूके हुंकार, ब्रह्मदत्तनें
 रणरस बहु तार ॥ सा० ॥ समरसेन करे जुजआस्फाल, रोपें नयन
 कस्यां विकराल ॥ ११ ॥ सा० ॥ नृकुटी चढावी नाखे दृष्टि, वायुवेग
 खड्गें करि मुष्टि ॥ सा० ॥ रिपुहृदयें करे तिहांथी प्रहार, वायुमित्र तेह
 मां शिरदार ॥ १२ ॥ सा० ॥ मुख अंधार करे चंमसिंह, क्रोधानल
 जलतो अविह ॥ सा० ॥ पिंगल गंधार उठाले बांहिं, मतंग धरती कें
 पावें त्यांहिं ॥ १३ ॥ सा० ॥ अमितमेघ हरख्यो मनमांहि, संगरआसन्न
 जाणी उघाह ॥ सा० ॥ गिरिदरिमां पडठंदा आय, देवोसह हसीउं
 निम जाय ॥ १४ ॥ सा० ॥ मरण आव्युं हवे ठूकडुं तास, तुमें को
 प्या नंग्याम निवास ॥ सा० ॥ तुमें रहो हुं जावें खड्गसहाय, आवुं
 नृचरनुं वीर्य देखाय ॥ १५ ॥ सा० ॥ सहु कहे तुमचा करजो जा
 य. नेदनुं तेज तेहथी न खमाय ॥ सा० ॥ तो तुमची शी वात कहा
 य. इणनमे अजितवजा तिहां आय ॥ १६ ॥ सा० ॥ माहारे काजें
 रचिणें विमान, मित्र नहिंन वेतो तिणें आन ॥ सा० ॥ वाग्यां समरनां
 मंगल नूर. चाव्या विमान चढ्या बल नूरि ॥ १७ ॥ सा० ॥ जय
 जय जोंचें तेणी वाग, नाम नगर पुर जोतां उदार ॥ सा० ॥ पोहोता
 गेताउच पर्वत पान, देवी आदेशें कस्यां हेठ आवास ॥ १८ ॥ सा० ॥
 सर्वतिया वश करवा काज. अछम करी करे पूजा समाज ॥ सा० ॥
 अर विद्यापर आव्या पास, वात पोहोती अम शत्रुसकाश ॥ १९ ॥
 सा० ॥ पुढ्या नाम मेनापति जेह, मोकलीयां अम सनमुख तेह ॥
 सा० ॥ पविने नवनें अटारपी टाज, जांखि ए वरसाम वंगाल ॥ २० ॥
 ॥ सा० ॥ मनरादित्यना गनमां तार, पयविजय कही जयजय कार

॥ सा० ॥ कायर ते यरहर कंपाय, सूरवीर सन्नद्ध ते आय ॥ ११ ॥
सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ५५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सनमुख आव्यो बल सबल, सांजली ययो बहु शोर; खड्ग में लीधुं
खांतगुं. जाजिम करवा जोर ॥ १ ॥ दूत आव्यो दुर्मुख तणो, बो
दयो आवी वाणी; अनंगरतिनो आवीउं, सेनानी सपराण ॥ २ ॥
सांजलजो एक मन सवे, नूमीचरना नृत्य; कहेवराव्युं तिणें कोम
गुं, सज्ज थाउं गुन रीति ॥ ३ ॥ अनंगरतिगुं आवीया, युद्ध करण
जय काज; पण मुज कर तुमें पामजो, खरी उतारुं खाज ॥ ४ ॥ अनं
गरती नवि आवीउं, सांजली सनतकुमार; मूक्युं खड्ग ते मानथी, खे
चर बोदया खार ॥ ५ ॥ चंद्रसिंह उठयो चटक, सेनानी अई सार; आ
णा आपो अम जणी, बजती म करो वार ॥ ६ ॥ आणा आपी आदरें,
कुसुममाल तस कंठ; नाखी सेनानी कीउं, आव्यो लही उल्लंठ ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सूररस पूरमुख नूर आणी घणो, चालीआ समरवर करण देश ॥ सि
द्ध गंधर्व सुर असुर जोवा मित्या, सुरवरें गगन जरीयुं विशेष ॥ १ ॥
सू० ॥ खेचरें संग्रह्यो हुं विमानें रह्यो, सार तरवार परहार पडतां ॥
मांहो मांहिं नट लडे वेहु नायक अडे, करत बेहु हतप्रहत रोगें च
ढतां ॥ २ ॥ सू० ॥ चंद्रसीहो अबीहो कहे एहनें, दुस्मुहो सम्मुहो
आंहीं आयो ॥ रे डुराचार परहार कख आगलें, तुज पराक्रमें सनें
जय न लायो ॥ ३ ॥ सू० ॥ करे गदा युद्ध मांमी तदा ते करे,
चंद्रसिंह उपरें घात विरसो ॥ तेह वंचावीउं क्रोधथी चाविउं, घात
खमि हवे जमराय सरिसो ॥ ४ ॥ सू० ॥ उत्तमांगें दिउं रंगें परहार
तिम, रुधिर वमतो महा दुःख खमतो ॥ जय जय ख ययो तेह जम
घर गयो, दल सयल जाय दिशिदिशि जमतो ॥ ५ ॥ सू० ॥ कुसुम
बुधि नई तूति चंद्रसिहनें, चढिउं वेयट्ट हवे कुमर निरतो ॥ रखने
उर चक्रवालथाल पोहोता वही, दोय खेचर तस पास धरतो ॥ ६ ॥

॥ स० ॥ तेह जईनें कहे तूं हजी किम रहे, जा तपोवन जपो देव
जाणं ॥ अहव मुज कोह अनजोह पतंग सम, या हवे आहवे करत
नाणं ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांजली तिहां बली देहली तेहनी, धरणी आरुफा
लतो वयण जंपे ॥ एह नूगोवरो पोयरो गुं लहे, आणि मुज माणि
एम किम पयंपे ॥ ८ ॥ सू० ॥ मुज कपायानजें ए बजे किम नहीं,
देव्य अंतर हवे रेख नाहीं ॥ नूमि अति आवीउ मर मुज नावीउ,
तुमें पण केम अन्नाण मांहिं ॥ ९ ॥ सू० ॥ एम कही क्रोध लही सै
न्य निजमां तदा, तूरि वजडावतां समर चेरी ॥ पढम रण देखवा श
कि निज लेखवा, सज्ज होय सुनट सहु कवच पहरी ॥ १० ॥ सू० ॥
केई करवाज महाकाल जमजीहसी, सुहडवर रुहिर पीवा अतिनी ॥
कर ग्रही महा गया जाणुं असणीजया, घणुं कुटिल खल परें धरे
अमिनी ॥ ११ ॥ सू० ॥ केई निज नारिस्तन फरसन व्यग्रथी, विगर
नवाह उवाह कीनो ॥ केई रमणी मृगनयणी आंशु जरे, पण सुन
ट विकट तिहां मन न दीनो ॥ १२ ॥ सू० ॥ केई रमणी रमण विधन
जाया करं, किम मरे मन धरे तुरत आयो ॥ अपर रमणी जल पान
कनां जरे, जायण नयण आंशु जरायो ॥ १३ ॥ सू० ॥ कांइ सुडा
अनुष्ठा जद्री रागजो, दाखवे नारी जरतार आगें ॥ एम तिहां देखी उ
नेयी फगी आविआं, मनतकुमारपुर कहत रागें ॥ १४ ॥ सू० ॥ कटु
क कणें सुणी रक्त वणें थयां, जेगी वजडावतो समर केरी ॥ प्रलयना
जजय जिम बद्ध निम नहु करे, सज करे नहु एक एक प्रेरी ॥ १५
॥ स० ॥ पीवनां आनवा अमल आरोगता, अनुशंसा करी फरी जगा
वे ॥ द्रव चामर ध्वजा प्रगुण करि नहु सज्या, केई चंदनादि अंगें ल
गावे ॥ १६ ॥ स० ॥ अज्ज जयजय करे अमरख बहु धरे, चलत वी
मान मन मान धारी ॥ पयअवृद्धे ग्गुं नैन्य गुज परें मच्चुं, वाम
पार्श्वे नमस्कृत्य नारी ॥ १७ ॥ सू० ॥ चंमलीहो अवीहां रह्यो आ
गये, जायो देवानंदो जिमणें जायो ॥ पिंगलगंधार विचमां रह्यो खे
ल्यो, मदनमां मदनपणें हुं म्हायो ॥ १८ ॥ सू० ॥ अनुवल मयल

तिहां निकट देखी विकट, वेगें वायुवेगनें पूबुं एम ॥ नामनें ठाम श
 त्रुतणां नांखियें, तेह कहे गह गहे सूनो प्रेम ॥ १९ ॥ सू० ॥ कंच
 नदाढ ए शगड मुह आगलें, वाम पासें अशोको सशोको ॥ काल
 जिह दस्केणें लस्केणें हीणडो, मध्यें विरूप नयणें विलोको ॥ २० ॥
 सू० ॥ पूठें अनंगई गयमई देखजो, समरवर करण मांहोमांहिं ला
 गा ॥ चूरि रणतूर पूरें लडे सूर तिम, जेह कायर तिके जाय नागा
 ॥ २१ ॥ सू० ॥ शीशसंकुल मही बहुल रुधिरें चरी, नायका साय
 का दो चलावे ॥ कुंत असि शक्ति बहु हेत नाखंती ते, सिंह शी
 आल परें ब्रीहलावे ॥ २२ ॥ सू० ॥ जेइ करवाल तस जालमांहिं
 दिउं, कंचनदाढ जम दाढसरिसे ॥ सोर महाघोर थयो अनंगरति
 सैन्यमां, सैन्य महादैन्य थइ तास विरसें ॥ २३ ॥ सू० ॥ ऊठिउं रू
 ठीउं अनंगरइ डुठमइ, समरसेन प्रमुख वर साथ जेई ॥ तास स
 नमुख थस्यो समरें हुं नवि खस्यो, सुजट अति विकट जेइ साथ केई
 ॥ २४ ॥ सू० ॥ में कह्युं खेचरा सैन्य बहु क्य जह्युं, वाद तुज सा
 थ अविवाद लागो ॥ सुजटने किम हणो पापपुण्य नवि गणो, केम
 मुजगुं जाये दूर नागो ॥ २५ ॥ सू० ॥ केहवो तुजगुं फूज मुज
 एहवो, खेचरां नूचरां वाद केहो ॥ समरमां बोलवुं म कर तुं एहवुं,
 जयविजय साखिया कहेसो एहो ॥ २६ ॥ सू० ॥ एह शीयाल सिं
 हवाल ए देखियें, अशनिनो मेह मुज देह माथे ॥ वरशिउं करशिउं
 चर्मरयणें करी, जगवती गुणवती मुज हाथें ॥ २७ ॥ सू० ॥ केम
 मायाबलें एम तूं फूजतो, आवि निजजुलवल सबल कीजें ॥ एम में
 नांखियुं सिद्ध सुर साखियुं, एम कही मांहोमां घा करीजें ॥ २८ ॥
 सू० ॥ मारिउं शक्तियें धरणि मुज पाडियो, जयविजुर सैन्य मुज
 दैन्य कीधुं ॥ हर्ष जर उठले शोर बहु ते करे, जाणो अमें एहनूं रा
 ज्य लीधुं ॥ २९ ॥ सू० ॥ उठि में जेइ गदा मारि शिरमां जदा, ते
 पडयो रडवडयो धरणि पीठें ॥ कालरव कारिउं तेहनें वारिउं, हुं ग
 यो तेहनें पास दिठें ॥ ३० ॥ सू० ॥ ऊठव्यो तेहनें देइ आशासना,

जुज बहुजुज करतां न थाकूं ॥ पवनहत जलहरा मत्त जिम गयव
ग. तेम एक एकनो ठलह ताकूं ॥ ३१ ॥ सू० ॥ जींतीउ तेह विद्या
वले न्वेचगे, जयजयशब्द आकाश बोले ॥ सुर असुर सिद्ध विद्याहरा
नहु मली. कुसुमवृष्टि करे बहु अमोले ॥ ३२ ॥ सू० ॥ खंम
ए पंचमे ढाल उंगणीशमी. सरस रस समरनी एह नांखी ॥ स
मर आदित्यना रासमां ए नली, पद्मविजयें धरी चित्त राखी
॥ ३३ ॥ सू० ॥ सर्व गाथा ॥ एए२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयवाजां तिहां वाजियां, अनंगरती तव आप; आपतां पण
इतुं नदीं. जाणी राज्यसंताप ॥ १ ॥ गयो तपोवन गेलिशुं, विद्या
धर्मे वृंद; परवसिचो परवारशुं, आणी हर्ष अमंद ॥ २ ॥ पुरप्रवेश
कोथा पने, बीठी छुवेल अंग; नारी नयणें नीरजर, हृदय उपन्यो रंग
॥ ३ ॥ विद्याधर विस्मय लह्या. देखी रूपनिधान; प्रणम्या तेहना
पदकजें. पदगणी पदेचान ॥ ४ ॥ मुजनें दोय कटक मली, व्याप्यो
राज्यनें थान; न्याय नीतियें दिन गमुं, वारु बधते वान ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीशमी ॥

॥ वेण म बाज्यो रे विछज वारुं तुमनें ॥ ए देशी ॥

॥ एम कम्नां कोई काल गयो तव. एकदिन पाठली रानें ॥ विलास
नयणें नयनें नृतां, गज दीगें वरगातें ॥ १ ॥ नवि तुमें जोजो रे पुण्य
नणां फल नैगें ॥ ए आंकणी ॥ पुरावण सखिचो चवढंतो, वन अं
जन तम अ्याम ॥ मेमगिनि तम वयणें पेटो, जागी तेहवे ताम ॥ २ ॥
॥ नवि ॥ शम्भुनगें मुजनें नंचजावें, में पण नांखुं नास ॥ सयल
विद्याधर पुजिन आजे, मुन तुज गुणनो राशि ॥ ३ ॥ नवि ॥ सांजली हर्ष
नयणें ते दितयी. जल नगे नाथनी ॥ अनुक्रमें शुनदिनें जायो सुतने,
रुप ते दितये धर्मा ॥ ४ ॥ नवि ॥ मंजुशिका दानीयें सुतने, जनमें
मन नाथनी ॥ दान देई तेजनें मंतोरी, दानि हरे गमाव्या ॥ ५ ॥

नवि० ॥ अजितबला परजावें पाम्यो, राज्यलक्ष्मी सुत एह ॥ मास
 ययो तव चिंती अजितबल, नाम ठव्युं गुणगेह ॥ ६ ॥ नवि० ॥
 अनुक्रमें कुमरजाव ते पाम्यो, इण अवसर में विचाखुं ॥ बहुदिन
 मात पिता मलीयां यया, तिणें मिलवुं एम धाखुं ॥ ७ ॥ नवि० ॥
 मावित्र दुःप्रतिकारज जांख्यो, रिहि लहीशे लेखे ॥ सज्जनशुं नोगवी
 नहीं जे वली, दुर्जन नयणें न देखे ॥ ८ ॥ नवि० ॥ अजितबला देवीने
 आशय, जांख्यो तिणें ते जाणी ॥ विकूरव्युं विमान ते तेहमां, बहेढो ल
 ही सुत राणी ॥ ९ ॥ नवि० ॥ पोहोतो श्वेतांबिका उद्यानें, पवनगति मोक
 लिउं ॥ वात सुणी जब तेहना मुखथी, नृप साहामो निकलीउं ॥ १० ॥
 नवि० ॥ नृप देखी साहामो जई प्रणम्यो, हुं निज बहु परिवारें ॥ माहरी
 रुद्धि देखीनें मावित्र, अतिआनंद दिल धारे ॥ ११ ॥ नवि० ॥ नयरप्रवेश
 आमंवरें कीधो, रहि तिहां केइक दिन ॥ तामलिप्ति नयरीयें पोहोतो, श्व
 शुरनें मिलवा मन्न ॥ १२ ॥ नवि० ॥ विलासवती जे दिनथी गई ठे, ते दि
 नथी खेदाणो ॥ सिद्धादेशवचनथी सघलो, परमारअजिणें जाण्यो ॥
 ॥ १३ ॥ नवि० ॥ अनंगवती उपरें बहु रीशें, धमधम्यो ईशान चंद ॥
 तेहने बहु प्रणिपत्य करीनें, उपजाव्यो आणंद ॥ १४ ॥ नवि० ॥ ता
 तपासैं आव्या वलि फरिनें, केइक दिन तिहां रहीआ ॥ कालक्रमें सु
 ऊ मात तातनें, धर्मनूपतियें ग्रहियां ॥ १५ ॥ नवि० ॥ मुऊ लघु ना
 ई जशकीर्त्तिनिलयनें, आपी राज्यनो नार ॥ वेअढगिरि पोहोतो र
 यनेउर, चक्रवाल पुर सार ॥ १६ ॥ नवि० ॥ सुखमां तिहां हुं राज्य
 पालतो, इण अवसर तिहां आव्या ॥ श्रमणगुणें शोजित चउ नाणी,
 बहुशिष्यें शोहाव्या ॥ १७ ॥ नवि० ॥ चित्रांगद नामें आचारय, मुजने
 कखुं परिवारें ॥ जइ आमंवरशुं में वंद्या, धर्मलाज दिउं त्यारें ॥ १८ ॥
 ॥ नवि० ॥ मुनि कहे मुऊनें सांजव्य नूपति, पुण्य कस्यां ते पाम्यां ॥ ए
 म जाणीनें पुण्य करो तुमें, सुणी में पदकज नाम्यां ॥ १९ ॥ नवि० ॥
 पुण्य कहो केम करियें गुरुजी, एम में पूठयुं जाम ॥ सम संवेग मूल
 जिनदार्शित, धर्म कहे गुरु ताम ॥ २० ॥ नवि० ॥ धर्म परिणम्यो

पान्थो समकित. अणुव्रत लीधां बार ॥ चरण नमी करी ने में पूछुं,
कहां प्रभु करो उपकार ॥ ११ ॥ जवि० ॥ प्रियाविरह दुःख ज
नित संतापद्. केम उपन्यो ए स्वामी ॥ पूर्वजवें शी करणी कीधी,
केम फरी रुद्धि प्रिया पामी ॥ १२ ॥ जवि० ॥ वीशमी ढाल ए पं
चम खंमें, समरादित्यनें रास ॥ सांजलो गुरुमुखपद्मथी नांखे, पूरव
जव सुविजास ॥ १३ ॥ जवि० ॥ सर्वे गाथा ॥ ६२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरतन्त्रे इणमें जलुं. नयर कंपिलपुर नाम ; चंडगुप्त राजा चतुर,
वारु तेदनें वाम ॥ १ ॥ जयासुंदरी जग जाणीयें, रामगुप्त अनिरा
मः नामें सुत तुं गुणनिजो, रूपवंत जिम राम ॥ २ ॥ उत्तरापंथ
अवनीपति, भूया तास गुणधाम ; हारप्रजा जिम हरप्रिया, वारु ते
करी वाम ॥ ३ ॥ आब्यो वसंत ते अन्यदा, जवनदीर्घिका जालि ;
नरनारी निरतां विहुं, क्रीडा करे तिणें काल ॥ ४ ॥ वाव्यकांठें रंजावनें,
कुंकुम गगकृत अंग ; वेठां जव वेहु जणां, स्त्री नरतार सुसंग ॥ ५ ॥

॥ टाज एकवीशमी ॥ सावरमतीयें आवीजां नर पूर जो ॥ एदेशी ॥

॥ इण अयसर एक हंसजुगल तिद्दां आवियुं जो, तें कर लीधी हंस
ली कौतुक काम जो ॥ हंस ते लीधो नारीयें करमां रंगलुं जो, कुंकुमरंग
थी फल्ल्यां हाथथी ताम जो ॥ १ ॥ सांजलजो तमें अल्पनिदान
फले वणुं ने ॥ ए आंकणी ॥ एक एकनें उजखे नहीं कुंकुमरागथी जो,
निगदें पीडित मग्याना परिणाम जो ॥ करे ते रुंधी थासने पाणीमां
पदयां जो. पण कोड विचित्र जाणो कर्मपरिणाम जो ॥ २ ॥ सां० ॥
पंजमन प्राण थवां तव दुःख उपन्युं वणुं जो, वली ते नीरें कुंकुम रंग
धोनाय जो ॥ नावीनावथी उंचुं जायें तव विहुं जो, तव अन्यान्वें राग
थरी. ईश्याय जो ॥ ३ ॥ सां० ॥ एद्द कर्म तुम बांध्युं विरहत्तुं
आगदें जो. एद्द ने जाणो तुमचो कर्मपरिणाम जो ॥ में चिंत्युं अ
हो अल्पनिदान गहु फले जो. निणें हनें मादरें परिग्रह्याणुं काम जो
॥ ४ ॥ सां० ॥ में कहु जगजन सुख उपरें किरपा करी जो, सांजल

तां निजचरित्र थयो वैराग्य जो ॥ नव अटवी उतारो दीक्षा आपिनें
जो. गरु कहे जिम सुख उपजे तिम महाजाग जो ॥ ५ ॥ सां० ॥
देई राज्य अजितबल कुंवरनें में तदा जो, करि उद्धोषणापूर्वक दीधुं
दान जो ॥ वसुनूति राणी परिजन परिवारशुं रे, लीधी दीक्षा सुणि ज
यकुमरनिदान जो ॥ ६ ॥ सां० ॥ एह विशेष कारण में म्हाखूं जांखियुं जो,
जय कहे शोचन कारण एह विशेष जो ॥ नव अटवीथी उतरियें प्रभु
किणीपरें जो ॥ उतरीनें कहो जावुं कियें देश जो ॥ ७ ॥ सां० ॥
गुरु कहे अटवी इव्यजाव डुजेदथी जो, इव्य अटवीनो सांजल तुं
दृष्टांत जो ॥ कोई नगरथी नगरांतर जावा नणी जो, कोई सार्थप उ
द्धोषणा एणि वृत्तांत जो ॥ ८ ॥ सां० ॥ मुऊ साथें जे आवे तेहने
पोहोंचवुं जो, एम सांजली बहु साथ थयो तस साथें जो ॥ मारगना
गुण दोष ते साथनें दाखवे जो, सांजलजो इण मारग ठे दोय पाथ जो
॥ ९ ॥ सां० ॥ एक सरलने बीजो वक्र ते जाणियें जो, पण ते वक्रें
बहु कालें पहोंचाय जो ॥ सुखथी जातां अंतें रुजुमां अवतरे जो,
लहीयें इक्षित पुर सुखनो समुदाय जो ॥ १० ॥ सां० ॥ रुजुमार्ग बहु
पासैं पण अति सांकडो जो, बहु कष्टें पहोंचाये इक्षित शहेर जो ॥
अति विपम तिहां उतरतां बीहामणो जो, वाटें विमकारि हरि वाघ न
महेर जो ॥ ११ ॥ सां० ॥ मारगमां पण उतरवा ते नवि दीये जो,
तेहने आप पराक्रमथी करी ध्वंस जो ॥ जइशुं पण पूठें पूठें आव
शे जो, पुरमां पहोंचियें तिहां जगें एहनो अंश जो ॥ १२ ॥ सां० ॥
उन्मारगें पग मूके तोले मूलथी जो, मार्गें हींमे ते उपर नहीं जोर
जो ॥ आगल जातां रूख मनोहर आवशे जो, स्निग्ध सुगंधीपत्र कुसु
म बहु मोहोर जो ॥ १३ ॥ सां० ॥ शीतल ढाया शोचने जेहनी रूख
डी जो, पण तिहां बेठा पामे जीव विनाश जो ॥ तो खावानी वात
तो जाणो वेगली जो, तिहां नवि बेसजो धरो जीवन आश जो ॥
॥ १४ ॥ सां० ॥ वली बीजां जाड शडयां पडयां आवशे जो, पांरुपत्र
कुसुम फल वर्जित तेह जो ॥ नहिं मनोहर वीशामो करवो पडे जो,

मुहूर्त मात्रतो करजो जुन मनरेह जो ॥ १५ ॥ सां० ॥ मारगकांठें
 वेग पुरुष वणा हरो जो, रूप मनोहरने वलि मीठां वयण जो ॥ तु
 मनें तेहरो आबो इहां पण मार्ग ठे जो, तेहनुं वचन न सुणवुं न
 जावुं नयण जो ॥ १६ ॥ सां० ॥ कृण पण साथथी मत रहेजो को
 इ वेगजा जो, एकाकीनें नय निश्चय होय प्राय जो ॥ दावानल थोडो
 पण अप्रमादी थइ जो, उलंघवो अन्यथा बहु अनर्थ थाय जो ॥
 ॥ १७ ॥ सां० ॥ उंचो पर्वत उपयोगें उलंघवो जो, ते उपयोग विना जाये
 प्राण ते ताम जो ॥ वंशजाल अतिगव्हर गुपिल उलंघवी जो, उपड्व
 हांय निणें नवि करवो विश्राम जो ॥ १८ ॥ सां० ॥ एक खामि ल
 घु मारग जातां आवरो जो, नाम मनोरथ नट वेगो नित्य पास जो ॥
 ते कदेरो ए खाम लगारेक पूरजो जो, पण नवि पूरजो मनमां आणी
 तान जो ॥ १९ ॥ सां० ॥ जो पूरशो तो मोहोटी वधती ते जरो जो,
 निर्णे अवगणना करीनें जावुं नाय जो ॥ फल किंपाकनां पंच जाति
 नां मनोहरु जो, नवि जोवां नवि खावां स्वाद वणाय जो ॥ २० ॥
 सां० ॥ मद्दा विकराल पिशाच ते बावीश वाटमां जो, कृण कृण उ
 पडव करतां गणवा नाहिं जो ॥ नीरसविरस जातपाणी ते पण दो
 दिवुं जां, गेद न करवो वावरतां ते माहिं जो ॥ २१ ॥ सां० ॥ नि
 त्य प्रयाण ते करवुं मुक्त आणा वही जो, वहेवुं नियमारातें पण दो
 य जाम जो ॥ एम जातां अटवी क्लेमें उलंघीयें जो, निवृत्तिपुर पामी
 नें सुखनुं थाम जो ॥ २२ ॥ सां० ॥ क्लेश उपड्व तिण नगरीथी
 वेगजा जो, ए दृष्टान हवे उपनय कहुं सार जो ॥ सारथवाह ते त्रण
 जोह सुमणि नमो जो, अरिहा देवनां देव करे उपगार जो ॥ २३ ॥
 सां० ॥ अगोष्ठपणी १ विक्रेपणी २ संवेगणी ३ तथा जो, निर्वेदनी
 ४ ५ धर्म कथा चउ जेय जो ॥ ते उद्योगणा मोहना अर्थी जीव
 ता जो, स्वायना जोक ते साथें थया अमेय जो ॥ २४ ॥ सां० ॥
 अर्थी निवृं गति प्रमण करणनी जाणीयें जो, साधुधर्म ते सूयो मा
 य होय जो ॥ आयकधर्म ते वांको मोटुं पोहांचवुं जो, पण अंतें

मुनिधर्ममां आवे सोय जो ॥ १५ ॥ सां० ॥ इहित पुर ते शिवनगरी
 शोहामणी जो, जिहां नहीं जनम मरणनें रोगना शोग जो ॥ बाघ
 सिंह दोय राग द्वेप बहु उपडवें जो, जेहथी नवि लेवाये संजम जो
 ग जो ॥ १६ ॥ सां० ॥ श्रमणपणुं लीधे पण केड मूके नहीं जो,
 जिनवरमारग चूकानें गलि जाय जो ॥ नारी पछु पंदग संजुत वसती
 यका जो. तेहज रुंख जाणो जस मनोहर ठाय जो ॥ १७ ॥ सां०
 निरवद्य वसतो शडिते पंमुर दज रुंखडां जो, पासढादिक जे उपदेश
 विरुद्ध जो ॥ दायक ते मारग तट वेठा बहु जना जो, ते वैरी सम
 वोलावे थइ शुद्ध जो ॥ १८ ॥ सां० ॥ साखी जन ते श्रमणशीलंगर
 आधारकू जो, क्रोधदावानल पर्वत ते महामान जो ॥ वंशजाल माया
 लघु खामी ते लोचनी जो, मनोरथ नट ते इहारूप अमान जो ॥
 ॥ १९ ॥ सां० ॥ थोडी पण पूरीयें तो पार न पामीयें जो, शब्दादिकना
 विषय ते फल किंपाक जो ॥ जेह बावीश पिशाच ते जाणो परीस
 हा जो, संयम जीवित हरे एहनो ए विपाक जो ॥ २० ॥ सां० ॥
 मधुकरवृत्तियें अरस विरस मुनि आहारजे जो, नित्यप्रयाणुं ते जाणो
 अप्रमाद जो ॥ वे पहोर रातें पण सज्जाय ते नित्य करे जो, एणि प
 रें अटवी उल्लंघे आव्हाद जो ॥ २१ ॥ सां० ॥ पोहोंचें अनुक्रमें शि
 वनगरी सुखशाश्वतें जो, सांजली समकित देशविरति परिणाम जो ॥
 जयकुमरें गुरु पासें ते अंगीकखां जो, पेठो नयरीमां पोहोतो निज
 ठाम जो ॥ २२ ॥ सां० ॥ युवराज्यें आप्यो निजतातें तेहनें जो,
 नित्य नित्य सेवे मुनिवर सनतकुमार जो ॥ नांखी पद्मविजय ए पंचम खं
 दमां जो, ढाल एकवीशमी सुणतां जयजय कार जो ॥ २३ ॥ सां० ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मास कलप करी मुनिवरू, विचखा श्रीजगवंत; आवे धणसिरि इहां
 कने, ते सुणजो विरतंत ॥ १ ॥ नारकमांथी नीकली, संसरी बहु
 संसार; अनंतर नवें अनुजव्युं, अज्ञान कष्ट अपार ॥ २ ॥ मरण
 लही जयकुमरनो, अनुज अयो धणुं इठ; विजयनाम तस ठावियुं,

कुमार थयो उक्किठ ॥ ३ ॥ विजयनें जय वल्लन नहीं, काल गयो एम
कांव; कर्म विचित्र थकी ललुं. मरण तेह महाराय ॥ ४ ॥ जयकु
मार राज्यें ठव्या, सहुएं मजी सामंत; विजयदेप लही विलखिउं,
नल्ल थई नासंत ॥ ५ ॥ सामंत मंमलें समजीनें, बांध्यो मरडो बांहिं;
वारवटिउं जे बाहिरे, दुःख देवे दिलमांहिं ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ आदरा मोहला उपर मेह, ऊबूके विजली हो लाल ॥ जबूण ॥ ए देशी ॥
॥ एणि अनवर प्रतिहारी, आवी एम विनवे हो लाल ॥ आवीण ॥ दारदेश
नुम जननी, आवी ठे हवे हो लाल के ॥ आवीण ॥ कांयक कार्य उदेशी,
दग्गिण अनिलपे हो लाल के ॥ दरि० ॥ तव नृप संच्रम पामि, गयो
नन नन्मुगें हो लाल ॥ गयो० ॥ १ ॥ कहे माता तुमें केम, पधा
यां इहां जगें हो लाल ॥ प० ॥ तव रोती कहे सुत, शोकानल बहु
जगें हो लाल ॥ शो० ॥ सुतनें जीवित दान, आपो तव नृप वदे हो
जान ॥ आ० ॥ कोणथी जय ए कुमारनें, तव राणी वदे हो लाल के ॥
॥ न० ॥ २ ॥ प्रतिपद्धीनें जतनथी, राखवो नृपथिति हो लाल के ॥
॥ ग० ॥ अन्यमामंत प्रेयाथी, उपडवनी तती हो लाल के ॥ उ० ॥
नन करो एम विचारि, राज्य चिंतक नरें हो लाल के ॥ रा० ॥ कीधुं का
म ते मुज पण, नमतुं आदरे हो लाल के ॥ ग० ॥ ३ ॥ पण एहनें
ननु बाधा, न थाये तिम करो हो लाल ॥ न० ॥ तव नृप कहे जो मा
न, प्रतिपद्धी प खगे हो लाल ॥ प्र० ॥ तो कोण निजपद्धी कहो,
मानजी सादरे हो लाल के ॥ मा० ॥ केम करो वात उर्ना इहां, आवी
पारं हो लाल के ॥ आ० ॥ ४ ॥ मांहिं लावि देई आसन, वेरो एणिपरें
था लाल के ॥ वे० ॥ रेरें लावो कुमारनें, रोख्यो जिण धरें हो लाल
के ॥ रो० ॥ तेवनें तेव्या पुन्य, गया तव नृप मनें हो लाल ॥ ग० ॥
विजय राज्य ए केवळुं, जेवथी एम वने हो लाल के ॥ जे० ॥ ५ ॥ रा
ज्यमनें नरें सुत, नान ए शी करी हो लाल के ॥ वा० ॥ बंधुजननें राज्य,
नया ए नयागी हो लाल ॥ ल० ॥ परम प्रमाददेनुफल, कहुथां

जेहनां हो लाल के ॥ क० ॥ विदितसंसार स्वरूपनैं, केम माने मनां हो
 लाल के ॥ के० ॥ ६ ॥ राज्य देई कुमारनैं, मातनैं सुख करुं हो लाल
 के ॥ मा० ॥ एह राज्य बहु दोष, निधाननैं परिहरूं हो लाल ॥
 ॥ नि० ॥ इण अवसर पूर्व कृत, कर्मना दोषथी हो लाल के ॥ क० ॥
 वध परिणाम वध्यो नृप, उपर रोषथी हो लाल के ॥ उ० ॥ ७ ॥ आ
 व्यो नृपतिपास, सिंहासणें आपीठ हो लाल ॥ सिं० ॥ कनकक
 लश नरी नीर, सुगंधें व्यापीठ हो लाल ॥ सु० ॥ एक लिये निज
 हाथ, बीजा सामंतनैं हो लाल ॥ बी० ॥ करी अजिषेक नमी पद, पू
 ठे मातनैं हो लाल के ॥ पू० ॥ ८ ॥ मात गयो शोकानल, तव जन
 नी कहे हो लाल के ॥ त० ॥ इंधणथी कहो अनल ते, केम हानी
 लहे हो लाल के ॥ के० ॥ नृपति कहे कारण किशुं, नवि जाणुं अ
 मो हो लाल के ॥ न० ॥ मात कहे नरकांत ए, राज्य जाणो तुमो
 हो लाल के ॥ रा० ॥ ९ ॥ न गणे सुकृतिका पुरुष, उचित जाणो नहीं
 हो लाल ॥ उ० ॥ काल अनागत देखे, न विषय मुंज्यो सही हो
 लाल ॥ न० ॥ स्वर्ग तथा अपवर्ग, स्वाधीन जे सुख अठे हो लाल
 ॥ स्वा० ॥ ते तो आचरे राज्यांध, पुरुष जिम सविगठें हो लाल ॥
 पु० ॥ १० ॥ अचिंत चिंतामणि रत्न, समान ए नरनवो हो लाल ॥ स० ॥
 हारीनैं ए राज्य, थकी नरगें जवो हो ॥ थ० ॥ तुं तो राज्यने योग्य, जाणुं
 तुज लक्ष्मणें हो लाल ॥ जा० ॥ राज्यमां पापपुण्य तुज, अनुज ते न
 हीं गणे हो लाल के ॥ अ० ॥ ११ ॥ मित्र कुमित्र मले तिणें, पाप
 ते आचरे हो लाल के ॥ पा० ॥ तेहवुं पाप नहीं जग, जे एह नवि
 करे हो लाल के ॥ जे० ॥ तिणें आशंकती एहनें, ते तुज नीपजे हो ला
 ल के ॥ ते० ॥ केम शोकानल बूजे नैं, टाढ़क संपजे हो लाल के ॥
 ॥ टा० ॥ १२ ॥ नृपति कहे सुणो मात, शाने तुम दुःखधरो हो ला
 ल के ॥ शा० ॥ कुमर विचक्षणने लेउं, चरण ते हुं खरो हो लाल
 के ॥ च० ॥ द्यो आणा मुज मात जी, आतम हित करूं हो लाल के ॥
 आ० ॥ मात कहे सुणो पुत्तजी, ए नहीं पाधरूं हो लाल के ॥ ए० ॥ १३ ॥

पाजो प्रजा युवराज्य. तवो कुमर प्रत्ये हो लाल ॥ ठ० ॥ नूप कहे एह
 वात, विरुद्ध ते सांप्रते हो लाल ॥ वि० ॥ करी राज्यनो अजिपेक, हवे
 केम पाजटे हो लाल ॥ ह० ॥ चित्त विरक्त संसारथी, तिणें मुक्त ए
 घटे हो लाल ॥ ति० ॥ १४ ॥ द्यो आणा मुक्त श्रमण, पणुं जिम लीजी
 ये हो लाल ॥ प० ॥ एम कही मातनें चरण, वञ्चें शिर दीजीये हो लाल
 ॥ व० ॥ मात कहे जिम तुम मन, माने तिम करो हो लाल के ॥ मा० ॥
 पण मुक्तने तुमें साथ, लेईनें संचरो हो लाल ॥ ले० ॥ १५ ॥ नृप
 कहे जीवित मरण, संजुत बखाणीये हो लाल ॥ सं० ॥ सुकृत कखा
 यिणुं दुःख, मह्यां इणे प्राणीये हो लाल ॥ स० ॥ दुर्लभ नरनव धर्म,
 जिणंदनां दोहिलो हो लाल ॥ जि० ॥ नव नव ए संसार, संजोग ते
 गोहिलो हो लाल ॥ सं० ॥ १६ ॥ तिणें अंवा तुमें जुक्त, विचाखुं चि
 नगुं हो लाल ॥ वि० ॥ हवे ते विजयकुमारनें, शिख द्ये नीतिगुं हो
 लाल के ॥ शी० ॥ एह प्रजा प्रतिपालण, करजो हेजगुं हो लाल के
 ॥ रु० ॥ जिम न संजारे तातने, लही उदवेगगुं हो लाल ॥ ल० ॥ १७ ॥
 पुर्व पुमर अजित जग, मजिन न कीजीये हो लाल के ॥ म० ॥ रा
 जरुपिनुं चरित्र, सदाये धरीजीये हो लाल ॥ स० ॥ जिम नरनव स
 फलो दारे, तंम करीजीये हो लाल के ॥ ते० ॥ हवे सामंतनें शीख
 ये, इम चरीजीये हो लाल के ॥ इ० ॥ १८ ॥ तुमचो ए राजान,
 नानरें जेपजो हो लाल ॥ ता० ॥ कुमर प्रजानें हितकर, मत उवे
 मजो हो लाल के ॥ म० ॥ उन्नयजोक मुखकारक, तुमें वस्तावजो हो
 लाल ॥ तु० ॥ एम करी कुन अनुरूप सदा जश पावजो हो लाल
 ॥ न० ॥ १९ ॥ केड कहे तुम विगदें, अमें दुःख आणीयां हो लाल
 ॥ प्र० ॥ पण तुम इतिन विग, करे कोण प्राणीया हो लाल ॥ क० ॥
 ननि वरजोक साधन नणी, नरपति कवीया हो लाल के ॥ न० ॥
 नय नय नयन प्रगंस, करे नृप पृथिया हो लाल ॥ क० ॥ २० ॥ स
 नरपति आचार्य, नमीये जायवा हो लाल ॥ स० ॥ जिणे समे उ
 रीया आत्म, नय निपायवा हो लाल ॥ त० ॥ पद्मविजय कहे तिणें

समे, जे बन्धु ते कहुं हो लाल के ॥ जे० ॥ पंचम खंडमां ढाल, बा
वीशमी एम लहुं हो लाल ॥ बा० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ६०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रवृत्ति मुनिनी पेखवा, मूक्यो माहण जेह ; सिद्धारथनामें सखर,
तव तिहां आव्यो तेह ॥ १ ॥ स्वामी मनोरथ सीधला, सनत्कुमार
सूरीश ; आव्या तिंडुक वन इहां, उठे सुणि अवनोश ॥ २ ॥ सात
आठ पद सन्मुखें, रोमांचित जइ राय ; वंदि चाव्यो वांदवा, साथें
सज समवाय ॥ ३ ॥ सामंतादिक सहु मली, विजयनें कही विरतंत ;
महादान महामोहवें, दीनादिकनें दित ॥ ४ ॥ पूजाविविध प्रकारनी,
विरचावे विधिसार ; देहरे सर्व जिणंदनें, आदर धरी अपार ॥ ५ ॥
शुनतिथि करण दिवस लही, रथ बेशी महा राय ; परवरिउं परिवा
रहुं, जुगतीयकी नृप जाय ॥ ६ ॥

ढाल त्रेवीशमी ॥ टुंक अनें टोडा विजें रे ॥ ए देशी ॥

॥ चारित्र लेवा चोंपहुं रे, नरपति चाव्यो जाय ॥ संजमरंग लागो ॥ व
रवरिआ कहेवरावतो रे, अर्थी इक्षित दाय ॥ १ ॥ सं० ॥ लोक अछे
रुं देखतो रे, अहो उत्तम आचार ॥ सं० ॥ काल नहीं दीक्षा तणो
रे, अहो लघुवय सुविचार ॥ २ ॥ सं० ॥ आज अनाथ अई पुरी रे,
दुःख धरे बहु लोक ॥ सं० ॥ अंगुलियें देखावता रे, लोक धरे मन
शोक ॥ ३ ॥ सं० ॥ तूर शब्द आये घणा रे, केइक हर्ष धरंत ॥ सं० ॥
धन्य धन्य एहनी मावडी रे, धन्य धन्य तात कहंत ॥ ४ ॥ सं० ॥ बंदी बोले
बिरुदावली रे, एम मोटे मंमाण ॥ सं० ॥ गुरुचरणें ते आवीउं रे,
तिंडुक वन उद्यान ॥ ५ ॥ सं० ॥ सनत्कुमार सूरीकनें रे, मात सहि
त नूपाल ॥ सं० ॥ मुख्यप्रधानें परवखो रे, चारित्र लिये ततकाल ॥
॥ ६ ॥ सं० ॥ राय नयरना जन सहु रे, वंदी निज घर जाय ॥ सं० ॥
मास कलप पूरे अये रे, गुरु विचरे अन्य ठाय ॥ ७ ॥ सं० ॥ सूत्र
नण्या बहु खांतिहुं रे, मुनिवर जय अणगार ॥ सं० ॥ श्रमणपणुं ते
पालता रे, निरतुं निरति चार ॥ ८ ॥ सं० ॥ विजय नूपति हवे चिंतवे रे,

अत्रो नवि माखो एह ॥ सं० ॥ जातो रह्यो ए हाथथी रे. हवे करुं
 कारण केह ॥ ए ॥ सं० ॥ निजविश्वासी नर प्रत्ये रे, घातक मूके
 सय ॥ सं० ॥ घातक नर चित्त चिंतवे रे, न्याय के ए अन्याय ॥ १०
 ॥ सं० ॥ निष्कारण केम मारीयें रे, इम करी पाठा जाय ॥ सं० ॥ नृ
 पनें कहे अमें मारीयो रे, तव नृप हर्षित आय ॥ ११ ॥ सं० ॥ हवे जयमु
 नि एम चिंतवे रे, जई प्रतिबोधू जाय ॥ सं० ॥ जावीजाव संबंधथी रे, सं
 जम सन्मुख आय ॥ १२ ॥ सं० ॥ आणा मागी गुरुतणी रे, केइक मुनि परि
 वार ॥ सं० ॥ स्वजन आलोकन कारणें रे, आव्या पुरनें बार ॥ १३ ॥ सं० ॥
 सुणि कांप्यो घातक प्रत्ये रे, तेडाव्या नर तेह ॥ सं० ॥ पूठे कहो केम
 मारियो रे, कोण थानक अरि जेह ॥ १४ ॥ सं० ॥ मुनि आव्या जाए
 करी रे, बोझ्या ते नर ताम ॥ सं० ॥ केश अलंकार विण अमें रे,
 नवि उजखीआ जाम ॥ १५ ॥ सं० ॥ नंदिवर्धन पुरें पूठिउ रे,
 कोई देखी अणगार ॥ सं० ॥ जयमुनि कहो तुमें किहां अठे रे,
 निणें देखाडयो वार ॥ १६ ॥ सं० ॥ नागदेहरें ए रह्यो रे, करतो
 निश्चन थान ॥ सं० ॥ शून्य अरण्य जाणी करी रे, माखो अमें तिणें
 थान ॥ १७ ॥ सं० ॥ नृप कहे कोइक मारियो रे, पण पापी रह्यो
 एम ॥ सं० ॥ नहिं तो आवे किहां थकी रे, आपणी नयरी सीम
 ॥ १८ ॥ सं० ॥ पण दूजी कांय गयुं नथी रे, मारगुं हवे इण ठाम
 ॥ सं० ॥ मान्युं ते पुरुषे तिहां रे, हवे वंदननें काम ॥ १९ ॥
 ॥ सं० ॥ जइ मुनिचरणनें बंदिया रे, धर्मलाज दीयो ताम ॥ २० ॥ सं० ॥
 कन्यायें संनजावियो रे, जिनवर जाखित धर्म ॥ सं० ॥ नवि विरम्यो
 संसारथी रे, मुनि जाण्यो तस मर्म ॥ २१ ॥ सं० ॥ पंचम खंमे ए
 कह्यो रे, जेनीशमी नर टाज ॥ सं० ॥ पद्मविजय कहे रासमां रे, सुण
 नो गंगन नाज ॥ २२ ॥ सं० ॥ सर्व गाथा ॥ ३१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि जहे सुणो मदागयजी, सुख दुःख कर्म पसाय; संसारी म
 न स रने, निम्नो जाणे न्याय ॥ १ ॥ सुख इंध प्राणी सयल. सुखत्रं

मूल सुधर्म ; तेहनुं फल ते सुरूपता, प्रियसंजोग परम् ॥ १ ॥ जो
ग विपुल सौभाग्यता, नीरोगता निर्धार ; अवलंबन करि आकरुं, ध
र्म ते सयल आधार ॥ २ ॥ सहुसुं मैत्री समाचरे, दीजें अढलकदा
न ; करुणा जीवनी कीजियें, सयल धर्म सावधान ॥ ४ ॥

॥ ठाल चोवीशमी ॥ हमचडीनी देशी ॥

॥ सांजली नूपति इणि परें चिंते, मरणनो जय इणो जागो ॥ तिणें
एम बोले ठे पण सांजलो, हवे किहां जाशे जागो रे ॥ १ ॥ हमचडी ॥
एम चिंती कहे स्वामी साचुं, पण सुणजो मुळ वात ॥ जे दिनथी तु
में दीक्षा लीधी, ते दिनथी विख्यात रे ॥ २ ॥ ह० ॥ धर्म करेवा मां
मथो स्वामी, गुरु कहे रूढुं कीधुं ॥ रही थोडी वेला पठी चाढ्यो,
गेह जणी दिल दीधुं रे ॥ ३ ॥ ह० ॥ एह डराचारीनें मारुं, आजज
हार्यें रातें ॥ जाई मुनि उपर एम उपजे, क्लिष्ट कर्मनी वातें रे ॥ ४ ॥
॥ ह० ॥ पूर्व घातक पुरुषनें तेड्या, रयणीयें कस्यो विचार ॥ चालो
आपण मारीयें एहनें, एह दुष्ट आचार रे ॥ ५ ॥ ह० ॥ चंड आथ
म्यो जिणि वेलायें, तव ते पुरुषनें लेई ॥ जय अणगार समीपें पोहो
तो, दीठो चित्तुं देई रे ॥ ६ ॥ ह० ॥ पवनरहित स्थानक जिम
दीवो, तिम मुनि ज्ञाणमां लीनो ॥ तीव्र कषाय उदयथी तेणें, नरगें
जवा मन कीनो रे ॥ ७ ॥ ह० ॥ अधिक कषायें खड्डु ते काढ्युं, सु
कृत वासना नाठी ॥ करम परिणतें आखो गलीउ, कोप अनल चढी
नाठी रे ॥ ८ ॥ ह० ॥ ग्रीवादेशें एक प्रहारें, मस्तक दूरें नाख्युं ॥ वि
जयरायनां एह अकारज, एम सहु मुनियें आख्युं रे ॥ ९ ॥ ह० ॥
अहो अहो कर्म तणी गति जुउ, जीवचरित्र विचित्र ॥ एम कही सहु
मुनिवर खशिआ, जय अणगार पवित्र रे ॥ १० ॥ ह० ॥ मैत्रीनाव
सयल जीव उपरें, ध्यानथकी नवि चलिआ ॥ निजतनु उपरें ममत
न आयुं, हली मली समता मलीआ रे ॥ ११ ॥ ह० ॥ ह्रीणप्राय
हवे पाप करम ठे, जेस्या शुद्ध स्वनाव ॥ संयम थिरता धीरज धोरी,
आसन सिद्धि स्वनाव रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ शुन परिणामें काय तजी

नैं, सुरलोक आनंत नामें ॥ नवमे देवलोकें ते पड़ोता, सुख सागर
 नैं धामें रे ॥ १३ ॥ ह० ॥ तिरिप्रचनाम विमानें आयु, सागर तास
 अटार ॥ सांचजजो हवे विजयरायनो. जे कहुं तूं अधिकार रे ॥ १४ ॥
 ॥ ह० ॥ माहापुरुषनो घात करीनैं, आत्म कृतारथ माने ॥ निजमं
 दिर आवीनैं नित्य नित्य, वरते पापस्थानें रे ॥ १५ ॥ ह० ॥ साधु
 विहाणें विहार करीने, गया गुरुनी पासैं ॥ सद्गु वृत्तांत सुणाव्युं गुरु
 नैं, तिम समता अन्यासैं रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ पश्चात्ताप घणो गुरु कीधो,
 अटो शिष्य सुसीतो ॥ ते दिनथी ते विजयरायनैं, पाप उदय सुजगी
 गो रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ व्याधि वेदना बहु अनुभवतो, हत्या अनुमो
 दंतो ॥ आयुक्ष्यें ते चोथी नरगें, पंकप्रचार्यें पोहोतो रे ॥ १८ ॥ ह० ॥
 दश नागर आयु नोगवतो, जय विजय ए दोय ॥ जाईनो अधिकार
 कह्यो हवें, दंपती जिणि परें होय रे ॥ १९ ॥ ह० ॥ ढाल चोवीश
 मो गणि परें जांखी, पंचमे खंमे पूरी ॥ पंचम खंम संपूरण हूउ, वात
 न गद्दी अधूरी रे ॥ २० ॥ ह० ॥ वैशाखवदि बीजें ए पूरो, विशल न
 गरें कीथो ॥ श्रीविजयसिंहसूरीश्वर कैरो, सत्यविजय सुप्रसिद्धो रे
 ॥ २१ ॥ ह० ॥ ताम कपूरविजय वर कोविद, खिमाविजय तस शिष्य
 ॥ गीतारथ गुणवंत सांचागी, जिनविजय सुजगीश रे ॥ २२ ॥ ह० ॥
 उन्नम उन्नमविजय कहाया, तास शिष्य मतिवंतो ॥ गीतारथ स
 मताना नागर, जे मद्रिमार्यें महंतो रे ॥ २३ ॥ ह० ॥ श्रीकल्याण
 पाग सुप्रतायें, समरादित्यनो रास ॥ पद्मविजय गणि जांखे सुणतां,
 पर पर लीजविजाम रे ॥ २४ ॥ ह० ॥ सर्व गाथा ॥ ३४१ ॥
 इति श्री नंदिदासकीय पंक्तिप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणेशिष्य पंक्ति प
 द्मविजयगणेशिष्ये श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे जयविजय स
 लोदग्याः संगनयोः पंचमो नरनवः समाप्तः ॥ ५ ॥ पंचम खंमे
 गो गाथा (३४१) उक्त गाथा तथा काव्य ॥ १८ ॥

॥ अथ ॥

॥ षष्ठ खंमस्य प्रारंभोयं ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीकल्याण प्रभुपास जी, करतां नवि कल्याण; पादपद्म तसु प्रण
मीये, महिमा जस मंमाण ॥ १ ॥ सरस्वती गुरु प्रणमुं सदा, समरा
दित्य स्वरूप; वर्णवतां मुक्त वदनमां, आवि वसो अनुरूप ॥ २ ॥
पंचम खंम प्रेमें करी, पूरण कखो प्रमाण; हवे ठछो खंम होंशथी,
ओता मुणो मुजाण ॥ ३ ॥ जंबुद्वीप लख जोयणो, तेहमां नारत
खेत; माकंदी पुरी मोटकी, सिरिदेवी संकेत ॥ ४ ॥ अधर्म जिहां
आवे नहीं, न्याय तणोज निवास; कालदोषथी निकली, उपड्व र
हित आवास ॥ ५ ॥ प्रिय बोले सहु प्राणीआ, सरल खजावी सार;
धर्मी नेही व्रत धणी, परजा वसे अपार ॥ ६ ॥ कालमेघ नरपति कह्यो,
वैरीनें विकराल; सज्जन नयननें शशीसमो, करुणावंत कृपाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ जाव आवकना जांखियें ॥ ए देशी ॥

॥ नगरगेठ चूडामणि, बंधुदत्त तिहां बहुगुणी ॥ परतणी, नारीथी उप
रांठो रहे ए ॥ १ ॥ पण प्रार्थनायें नहीं, परधनें निरलोनी सही ॥ पण
अहीं, धर्म उपार्जणमां नहीं ए ॥ २ ॥ असंतुष्ट पर उपगारें, धन आ
गममां नहीं क्यारें ॥ ते प्यारें, दोषें दलिडी नहीं विजवथी ए ॥ ३ ॥ सुर
तरु परें खंध उपरें, पाद सूकी फल बहु परें ॥ तिणि परें, अर्थीनिवह
फल जोगवे ए ॥ ४ ॥ हारप्रजा तस नामिनी, कुल रूपसम शोहाम
णी ॥ कामिनी, साथें सुखनें जोगवे ए ॥ ५ ॥ आनत कल्पथी अव
तख्यो, सुर आउखो पूरो कख्यो ॥ उर धख्यो, हारप्रजायें सुपन लह्यो ए
॥ ६ ॥ उज्ज्वल करिवरें कनकनें, कलशें जे सीचंती रे ॥ शोहंती रे,
मुक्ताफल हारें करी ए ॥ ७ ॥ दिव्यकमल उपरें रही, चीवरधवल
धरंती रे ॥ पहेरंती रे, विविध रतन कटिमेखला ए ॥ ८ ॥ उत्तरवस्त्रें
ढांकीआ, स्तनजुगकमल करे रह्या ॥ बहु महमह्या, जभर गुंजारव

निहां करे ए ॥ ए ॥ एहवी लखमी देवता, उदर पेसती दीठी रे ॥
 मीठी रे. जागी जागी हरखणुं ए ॥ १० ॥ संजलाव्युं नरतारनें, तव
 जगता तव चासे रे ॥ थाजे रे. लक्ष्मी निवाससुत ताहरे ए ॥ ११ ॥
 नांजनी धर्म करे सदा. प्रसव समय क्रमें आयो रे ॥ जायो रे, बाल
 क पूरण दिहाडले ए ॥ १२ ॥ शेर वधाव्यो दासीयें, दीधुं दान संतो
 प रे ॥ पोप रे. कीधो हरप तणो घणो ए ॥ १३ ॥ मास थयो
 जव तेहनं. तव नाम धरण तस दीधुं रे ॥ सीधूं रे, पितामहनं जे ह
 तुं ए ॥ १४ ॥ कुमरनाव पाम्यो जदा, कला ग्रही तिणें बहु तदा ॥
 ए नदा, लब्धि पदानुमारि नीपनो ए ॥ १५ ॥ विजयजीव हवे ना
 र्क्यो. नरकमांथी नीकजियो रे ॥ रुजिउ रे, बहु संसारमां अनुक्रमें ए
 ॥ १६ ॥ जगते नवें कांय तप करी. इण पुरें कार्तिकनामें रे ॥ शुच
 थामें रे. जया जाया कुखें उपन्यो ए ॥ १७ ॥ पुत्रीपणो ते अनुक्रमें.
 जवमां एणें अनिधानें रे ॥ शुचवानें रे. यौवन पामी वालिका ए
 ॥ १८ ॥ कर्मपरिणाम अचिंतथी. वजि जावी जावना जोगथी ॥ क
 र्मनांगथी. मद्दा थामंवरें परणीयां ए ॥ १९ ॥ राग घणो लब्ही उप
 रें. धरणनें पण नदीं तास रे ॥ मुऊ पास रे, रखे आवे एम चिंतवे ए ॥ २० ॥
 एम विषय विटंबणा सारीखा. जोगवतां गयो कोई काल रे ॥ सुरसा
 ज रे, मदन मदीतमव आव्यो अन्यदा ए ॥ २१ ॥ मलयसुंदर उद्या
 नमां. क्रीडा कर्या देतें रे ॥ नुनंकेतें रे. रथ वेशी धणो गयो ए ॥ २२ ॥
 पौडानो वग्याजे ववे. इणो अवसरें देवनंदी रे ॥ पंचनंदी रे, शेरनो
 पुज दादासणो ए ॥ २३ ॥ क्रीडा करी उद्यानमां. रथ वेशी वल्यो पाठो
 रे ॥ थाजे रे. ते वग्याजे आवीयो ए ॥ २४ ॥ आमा साहामा विहु
 नित्या. तंहे नरमें नंगाला रे ॥ मठगला रे, ढाल प्रथम पत्रें कही
 ए ॥ २५ ॥ रत्न गाथा ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलय नय रथ मोदका. समरालें न नमाय; देवनंदी कदे दाव
 यो. धरणनें नारमां पाव ॥ १ ॥ उमागे रथ इहांथकी. आवे मुऊ

रथ आम; कहे धरण संकडाशमां, न फरे मुऊ रथ नाम ॥ १ ॥
 तिणें उंसारी तुम तणो, रथ जिम थाये राह; तव देवनंदी त्राडिउ,
 आणी अंग उवाह ॥ २ ॥ कहो तुमथी ऊणिम किसी, अममां ठे
 कांई आज; रथ तिणें हुं केम फेरवुं, धरण कहे धरी लाज ॥ ४ ॥
 एतो सम विहुनें अठे, विहु थाका बलवंत; राजपंथ रोक्यो रथें, कोइ
 कोईनें न कहंत ॥ ५ ॥ वात नगरमां विस्तरि, कारणिआनें कान; पो
 होती तव पंचे मजी. न्यायें करता न्यान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आठो रंग व्याजो रे माणिगर माहाराजा ॥ ए देशी ॥
 ॥ आठो न्याय करजो रे, चातुरचोवटिआ ॥ ए आंकणी ॥ आलोच
 करतां रे नयरी महार्द्धिका, एतो दोय शेठ महंत महंत ॥ आ० ॥ ठो
 रु तेहनां रे अति उठांठजां, वारी न शकीयें एहनें तंत ॥ १ ॥ आ० ॥
 जई निचंठो रे दोय कुमारनें, एम शिखामण अतिघणी देह ॥ आ० ॥
 चार जण सूक्या रे वयथी परिणम्या, धर्मरथमां विशारद तेह ॥ २ ॥
 ॥ आ० ॥ वचन विन्यास कुशल समता घणी, धर्मी धर्म सहाय ॥
 ॥ आ० ॥ इह परलोक अपाय देखायवा, निपुण घणा कृत न्याय ॥
 ॥ ३ ॥ आ० ॥ बहुमत जननें रे ते च्यारे जणा, आव्या ते कुंअर पा
 स ॥ आ० ॥ उजा यईने रे आदर दे घणो, हवे शीक्षा दीए ता
 स ॥ ४ ॥ आ० ॥ पूर्वज केरा रे धनथी मानशो, नविअ कमाया तुमें
 कोय ॥ आ० ॥ केणें कमाईनें रे दान दीधुं घणुं, जेणें जश जगतमां
 होय ॥ ५ ॥ आ० ॥ मात पिताने रे केणें संतोपीआ, के कखो दीन
 दुःखीनो उद्धार ॥ आ० ॥ के कांय धर्मनुं रे काज कराविधुं, फोकट
 श्यो रे अहंकार ॥ ६ ॥ आ० ॥ बुधजन तुमची रे हांसी करे सदा, उ
 सरो तुम इण ठाम ॥ आ० ॥ निज निज ठामथी रे रथ पाठा करो,
 तुमचो वकर जाये आम ॥ ७ ॥ आ० ॥ हरख्यो जाखें रे देवनंदी खरुं,
 लाज्यो धरण कुमार ॥ आ० ॥ कहे तुमें अमनें रे शीख दीधी खरी,
 मुऊने पडो रे धिःकार ॥ ८ ॥ आ० ॥ हांसी दुइ रे एह चरित्रथी, का
 चा गर्जसमान ॥ आ० ॥ मानुं माहरो रे आतम इणि परें, तुमें तो बु

द्विनियान ॥ ९ ॥ आ० ॥ रथ उंसारो रे जई देशांतरें, पामी इव्य अ
 पा ॥ आ० ॥ वरसैं दिवसैं रें जे करगो घणो. दीन अनाथ उकार
 ॥ १० ॥ आ० ॥ पेसगो तेहनो रे रथ आगल थकी, तव ते बोल्या महं
 न ॥ आ० ॥ एह हठाग्रह रे शानें तुमें करो, तव तिहां धरण बोलंत
 ॥ ११ ॥ आ० ॥ जाता अमनें रे ते विण नवि होये, तव बोल्या तेह चार.
 ॥ आ० ॥ एतो जाणे रे नगर महर्दिका, धरण कहे धरी प्यार ॥ १२ ॥
 ॥ आ० ॥ जणावो तेहने रे अमें जाशुं खरा, देवनंदी कहे आम ॥ आ० ॥
 दोर न एहमां रे सुखें एमज करो, संचलावे तस ताम ॥ १३ ॥
 आ० ॥ जेठ नयरना रे मली बोलावीआ, तेहना मातने तात ॥
 आ० ॥ बात सुणावी रे तव अंगीकरे, सम दीधा सुविख्यात ॥ १४ ॥
 आ० ॥ साहाय्य न करवुं रे निज सुतनुं तुमें, बोलाव्या तिहां दोय ॥
 आ० ॥ दिनार पण लख रे विदुने जुजुआं, आपे महाजन सोय ॥ १५ ॥
 आ० ॥ पत्र लिखाव्यां रे विदुना हाथनो, वरस दिवसैं जे कोई आ
 य ॥ आ० ॥ अधिक पराक्रम रे निजइव्यें करी, फोरवगो जेह जाय ॥
 ॥ १६ ॥ आ० ॥ तेहनो रथवर रे आगल चालगो, मुडित कीधो ते
 दनो पन ॥ आ० ॥ मूक्यो कागल रे पुरजंमारमां, हवें चाले तेह जत्त
 ॥ १७ ॥ आ० ॥ जांम ते लीयां रे योग्य जेहने हतां, उत्तरापंथें चा
 न्यो एक ॥ आ० ॥ बीजो पूरव रे दिश जणी चालीठ, मनमां धरतो
 नें टंक ॥ १८ ॥ आ० ॥ चिंतवे लठी रे गयो देशांतरें, मलगो कहो
 दवे केम ॥ आ० ॥ मागी न शकी रे दवे केम मारीयें, उपनो खेद ते
 एम ॥ १९ ॥ आ० ॥ एक प्रयाणुं रे तेहवें पोहोचीआ, तव तस मा
 ननें तान ॥ आ० ॥ पुत्रननुनी रे चिंता करणनें. पूति महर्दिकने
 मरियान ॥ २० ॥ आ० ॥ बहूगो वेदुनी रे मोकली पूंठियि, साथें सब
 न रगियार ॥ आ० ॥ निज निज पतिने रे ते आवी मली, पाम्या हर्ष
 अपार ॥ २१ ॥ आ० ॥ नष्ट स्वमें रे दाल बीजी कही, ए तो जली
 समरादित्यनं गन ॥ आ० ॥ पय कहे रे दवे सुणो आगलें, सुणतां
 नीजविजाय ॥ २२ ॥ आ० ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नित्यप्रयाणुं नवनवुं, एकदिन दीतुं एम ; साथ वहंते शामटे, धर
ऐं धारी प्रेम ॥ १ ॥ वनमां एक विद्याधरो, सौम्यरूप शिरदार ; उ
पडे ने अवननी पडे, पास गयो धरी प्यार ॥ २ ॥ पंखविहूणो पंखिउ,
उपडे पडे अपार ; तेणी परें केम करो तमें, पूछे एह प्रकार ॥ ३ ॥
गमन उत्सुक गगनें घणा, पण न जवाये प्राय ; वात कहो वहेजा
थई, कहेवा जेहवी कांय ॥ ४ ॥ आकृति देखी एहनी, वलीवचन वि
न्यास ; चमत्कार लहि चित्तमां, नणे ते एहवी जास ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वीर वखाणी राणी चेजणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ अमरपुर वैताढ्य पर्वतें जी ॥ तिहां हुं विद्याधरपुत्त ॥ हेमकुंमल इं
ण नामथी जी, नांहि विद्याधरसुत्त ॥ १ ॥ अमर० ॥ एकदिन एक
विद्याधर जी, विद्युन्माली तिहां आय ॥ तातनो मित्र तिऐं पूछिउ
जी, आमणा डुमणा किम जाय ॥ २ ॥ अम० ॥ तेह खग कहे मुऊ
तातनें जी, विंऊथी आवीउं एथ ॥ वाटमां उजेणी नयरीयें जी, सि
रिप्रज नाम नृप तेथ ॥ ३ ॥ अम० ॥ जयसिरि नाम तेहनैं धूआ
जी, कोकण नृपसुत नाम ॥ नविअ शिशुपालने दीधली जी, जाचतां
पण तेऐं ताम ॥ ४ ॥ अम० ॥ वल्ल नृपपुत्र श्रीविजयनें जी, आप
तो तेहनो तात ॥ क्रोध चढीउं शिशुपालनें जी, आवीउं चिंतवि घात
॥ ५ ॥ अम० ॥ विवाह अवसरें निकली जी, मयणनी पूज निमित्त ॥
तेह विचमांथी हरि गयो जी, पामीआ सहु तिहां नीत ॥ ६ ॥ अम० ॥
श्रीविजयें केडी कीथी घणी जी, युद्ध लाग्युं ते अपार ॥ ठोडवि जय
सीरी लेई वय्यो जी, पण तस गाढ प्रहार ॥ ७ ॥ अम० ॥ वेदना
थी घणुं व्याकुलो जी, नारी देखी कहे एम ॥ एह जीमशे तव जी
मशुं जी, अन्यथा माहरे नेम ॥ ८ ॥ अम० ॥ तेह महा दुःखमांहे
पडो जी, तास दुःख देखी हुं एम ॥ तात संसार कहे एहवो जी, दुःख
दायक नहिं खेम ॥ ९ ॥ अम० ॥ खेद म करो एह वातमां जी, सां
नल्युं में तव तेह ॥ चिंतव्युं कालें हिमवंत गयो जी, उषधिनी नग

गेद ॥ १० ॥ अम० ॥ गंववेरति मुज मित्रशुं जी, तेह गांधर्व कुमार
 ॥ उपधि वनय ऊगुं तिहां जी, एक वर गुफा मजार ॥ ११ ॥ अम० ॥
 ते कहे मुजने सांजतो जी, लोकनी साचली वात ॥ मंत्र मणि औपधि
 केरडो जी, मोटो प्रभाव कहेवात ॥ १२ ॥ अम० ॥ एह औपधिनो
 मद्रिमा सुगो जी, खड्गप्रहारें करी जास ॥ हाड जो कापीयां होय तो
 जी, जीवितनी नही आश ॥ १३ ॥ अम० ॥ नीरमां एह पखाली
 नं जी, ठांटियें एह जो वारि, वेदनाने वण रुजवे जी, ततहण दीठ
 प्रनिकार ॥ १४ ॥ अम० ॥ ते नणी तिहां जई लावीयें जी, टालियें
 निरीविजय दुःख ॥ विद्या संजारी किमहीक करी जी, गगनगामिनी
 जग्यो सुख ॥ १५ ॥ अम० ॥ औपधि जेई तिहांथो वल्यो जी, रखे
 श्रीविजय दुःख आय ॥ तिणें करी वेगथी चालतां जी, आवीयो इण
 दीज वाय ॥ १६ ॥ अम० ॥ विश्राम निमित्त इहां उतस्यो जी, शौच
 हणुं चरणनुं ताम ॥ हणैक रही वेगथी चालवा मन कसुं जी, वि
 या संजारी ते जाम ॥ १७ ॥ अम० ॥ अजिनव जण्यो तिणें वीससुं
 जी, वज्रा गमन नंत्रम मुज ॥ पद एक सांजसुं नही मुनें जी, तिणें
 पदुं ए कसुं तुज ॥ १८ ॥ अम० ॥ धरण कहे शुं करशो हवे जी, खग
 नद नांदिं उपाय ॥ जिणें करी नृपसुत विणसजो जी, ए मुज दुःख
 बह आय ॥ १९ ॥ अम० ॥ खेद बहु उपजे चित्तमां जी, नवि थयो पर
 उपगार ॥ पुण्डीणी न नमीदित लह जी, हवे कहे धरण कुमार ॥ २० ॥
 अम० ॥ कटर संजजाववानो होये जी, तो मुज आगजें नांखि ॥
 गेद पद जो कदि मुज जड जी, तो मानुं पामीआ लाख ॥ २१ ॥
 ॥ अम० ॥ गेद विद्या संजजावतो जी, तुरत पद पूरीयुं तेण ॥ हर
 गीत देमकुंमल घणुं जी, नृपसुत जीविउ जेण ॥ २२ ॥ अम० ॥
 ते मुज चरणनीयें कदा जी, बांजीउ धरणकुमार ॥ जाउ इहित करो
 गीतवी जी, तिणें थयो मुज उपगार ॥ २३ ॥ अम० ॥ देमकुंमल
 जे सांजतो जी, नुनें तो मोटोटा मद्राजाग ॥ उपधिवलय खंम आवी
 द ही, कजडो उपाय धरी गम ॥ २४ ॥ अम० ॥ प्रार्थनाचंग किम

कीजीयें जी, लीयी औषधि तिणें ताम ॥ साथ चेला थया धरणते जी,
हेमकुंमल गयो ताम ॥ २५ ॥ अम० ॥ खंम ठेठे ते त्रीजी कही जी,
पद्मविजयें ए ठाल ॥ श्री समरादित्य रासमां जी, सुणतां होय मंग
लमाल ॥ २६ ॥ अम० ॥ सर्व गाथा ॥ ए१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक वासर व्यतिक्रम्या, एकदिन गिरिनें तीर ; साथ सहु आवा
सीउ, धरणो साहस धीर ॥ १ ॥ इण अवसरें आडा जतां, दीठा
नील ते दीन ; वस्त्र वृद्धनी ठालनां, जलविनुं होय जिम मीन ॥ २ ॥
कृष्णवरण कोदंम करें, चुनकवृंद वलि साथ ; रोता न रहे रानमां,
हैयुं न रहे हाथ ॥ ३ ॥ पास तेडीनें पूबियुं, कारण रोवो केह ; ते
कहे स्वामी अम तणो, जम परें अरिने जेह ॥ ४ ॥ कालसेन कलीउ
अति, केसरीनो ते काल ; केसरीनाम सुणो कदा, फोकट न नरे फाल ॥ ५ ॥

॥ ठाल चोथी ॥ सीता हो प्रिया सीता ॥ राग प्रजाती ॥ ए देशी ॥
॥ एक दिन हो प्रभु एक दिन सुणियुं कान, केसरी हो इहां केसरी
आव्यो उद्यानमां जी ॥ एकलो हो तेह एकलो निकट्यो बाहार, शर
धनु हो लेइ शर धनु पूख्यो मानमां जी ॥ १ ॥ अंतरें हो रह्यो अंतरें
वडने सिंह, दीठो हो नवि दीठो तिणें पासें गयो जी ॥ सिंहें हो कखो
सिंहें पुठैथी घात, लेई हो नील लेई कटारी साहामो थयो जी ॥ २ ॥
माख्यो हो तेह सिंहने माख्यो ताम, मस्तक हो खंम मस्तक खंम त्रोडे
हरी जी ॥ चिंतवे हो तव चिंतवे अमचो स्वामि, निश्चय हो अमें
निश्चयथो जाशुं मरी जी ॥ ३ ॥ बलशुं हो अमें बलशुं अगनीमां पे
शि, नारी हो सुणो नारी तास गरजवती जी ॥ वारी हो पण वारी न रहे
तेह, बलवा हो हवे बलवाने आवी ठती जी ॥ ४ ॥ तातने हो तस
तातने तेडवा अम्ह, मूक्या हो तिणें मूक्या नारी उगारवा जी ॥ आशो
हो केम आशो अम पति शूर, शक्ति न हो अम शक्ति न तेह उगारवा
जो ॥ ५ ॥ दुःखिया हो अमें दुःखिया नहीं उपाय, स्त्रीपरें हो अमें
स्त्रीपरें केवल रोईयें जी ॥ बोल्या हो तव बोल्या धरणकुमार, नरनुं

दो एम नरनुं पत्य सवि खोईयें जी ॥ ६ ॥ दाखवो हो मुऊ दाखवो
 पछीनाथ, जीवे हो कदि जीवे तो जीवाडीयें जी ॥ पडिआ हो तेह
 पडिया चरणे ताम, चालो हो प्रभु चालो तुमने देखाडीयें जी ॥ ७ ॥
 जो तुम हो प्रभु जो तुम अनुग्रह बुद्धि, तो तुमें हो प्रभु तो तुमें चालो
 उतायला जी ॥ रखे हो प्रभु रखे थाय विनाश, उपधि हो ग्रही उपधि
 नें धन्यां पावलां जी ॥ ८ ॥ परवखो हो निज पुरुषें परवखो तेह, वे
 सर दो वरवेसर अमचारी करी जी ॥ पोहोंतो हो तिहां पोहोंतो दीगो
 तेह, बडने हो तजें बडनें पासें चय धरी जी ॥ ९ ॥ रुधिरें हो तस रुधिरें
 नीची देह, स्नेहें हो वली स्नेहें नारी तिहां रुवे जी ॥ सबरें हो कही
 तबरें स्वामीने वात, उठवा हो जाय उठवा तव नूयें सूवे जी ॥ १० ॥
 धरणें दो तव धरणें माग्युं नीर, आय्युं हो जल आय्युं नलिनीपान
 मां जी ॥ उपधि हो तिहां उपधि नाखि मांहि, शिरनो हो खंम
 निखंम जोड्यो शानमां जी ॥ ११ ॥ पाणी हो ठांट्युं पाणी ठांट्युं
 तउ, व्रण नवि हो नव व्रण नवि तिहां दिसे जरा जी ॥ महिमा हो
 तन महिमा अगम अपार, उठी हो तेह उठीनें वेगो धरा जी ॥ १२ ॥
 अधिकुं दो ययुं अधिकुं पूर्वथी रूप, धरणी हो वली धरणी हरखी अ
 निवणी जी ॥ लागो हो हवे लागो पछीपति पाय, जांखे हो तुमें जांखे
 जोविन दीउ मुऊ जणी जी ॥ १३ ॥ नारी हो प्रभु नारी सगर्जा एह, उ
 गरीहा प्रभु उगरी अम आशा फली जी ॥ करीयें हो हवे करीयें जे क
 दो तेह, बोले दो तव बोले धरण करि मति जली जी ॥ १४ ॥ कीजें हो
 दया कीजें दया नवि जीव, बोव्यो हो तव बोव्यो कालसेन आणी मया
 जी ॥ पारथी हो कर्म पारथी न करुं काम, जीवुं हो जिहां जीवुं त्यां पावुं
 दया जी ॥ १५ ॥ धरण दो कहे धरण कयुं सवि काम, एम कही हो
 तेह एम कही निजथानक गया जी ॥ नवनवां दो तेह नवनवां करतां
 प्रयाण, जानां दो हवे जानां केईक दिन यया जी ॥ १६ ॥ पोहोता हो
 तेह पोहोता आया मुंदी गाम, सुखमां दो हवे सुखमां साय ते उतखो
 जी ॥ पावनीं दो कयो पाखीनां कयो उपवास, धरणें हो निज धरणें

आत्म उद्धखो जी ॥१७॥ तिणे समे हो तिहां तिणे समे एक चंमाल,
 तींखी हो तस तींखी खांधे गूजी धरी जी ॥ गेरु हो तस गेरुयें जींण्युं
 गात्र, चोर न हो पण चोर न चोर ग्रह्यो करी जी ॥ १८ ॥ विरसुं
 हो वजी विरसुं मिमिम वाय, जाये हो लेई जाये जुवानने मारवा
 जी ॥ देखी हो तेह देखी मोहोदो साथ, बोले हो नहीं बोले मुऊ डुः
 ख बारवा जी ॥ १९ ॥ सुणजो हो सहु सुणजो महासर गाम, वासी
 हो नामें वासी नामें मोरीउं जी ॥ कामें हो जतां कामें कुशस्थल गा
 म, तलवरें हो मुऊ तलवरें इंणी परें धोरीउं जी ॥ २० ॥ दोप हो मुऊ
 दोप नथी इहां कांय, ठोडवो हो मुऊ ठोडवो शरणागत प्रत्यें जी ॥ सु
 णजो हो वजी सुणजो एक मुऊ वात, मरणथी हो बहु मरणथी डुःख
 बहु सांप्रतें जी ॥ २१ ॥ पूर्वज हो मुऊ पूर्वज थया निकलंक, मेळुं
 हो कणुं मेळुं कुज में माहरुं जी ॥ ठोडवो हो तिणें ठोडवो दीनदया
 ल, वीरुद हो कांय वीरुद दयानुं ताहरुं जी ॥ २२ ॥ सांजली हो
 तव सांजली धरणकुमार, चिंतवे हो चित्त चिंतवे चोर न एह ठे जी ॥
 वचनें हो करी वचनें जाणुं एम, तलवर हो कहे तलवरनें कहे जे
 द ठे जी ॥ २३ ॥ खमज्यो हो तुमें खमज्यो सुहूर्त मात्र, नूपनें हो
 ड्य नूपनें ड्य देई करी जी ॥ ठोडवुं हो कदि ठोडवुं नाग्य जो होय,
 ते कहे हो जाउं ते कहे जाउं शीघ्रज चरी जी ॥ २४ ॥ माला हो लेई
 माना मुक्ताफल साथ, सहस हो दश सहस दिनारनी ते नली जी ॥
 जेटी हो नृप जेटीने कणुं वृत्तांत, कीथो हो नृपें कीथो पसाय नर अट
 कली जी ॥ २५ ॥ आवी हो तिहां आवी मूकाव्यो चोर, जीवित हो तुमें
 जीवित दीधूं गुनपरें जी ॥ नांखी हो एम नांखी तलवरने वाणि, पाणने
 हो तेह पाणने आश्वासन करे जी ॥ २६ ॥ ठेठे हो खंम ठेठे चोथी ढाल,
 नांखी हो ए नांखी अति शोहामणी जी ॥ जाणो हो नवि जाणो दयालु
 एम, वाणी हो एह वाणी पद्मविजय नणी जी ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संवल तस देई सखर, बोलाव्यो ते ताम; एह अवस्था आर्थ तु

म. मन हो जिणें सुऊ काम ॥ १ ॥ गयो चंमाल गुण गावतो, करे
 प्रयाण कुमार; उत्तरापंथ अचलपुरें, सुखमां पहोता सार ॥ २ ॥
 घावर नयें आपीयो. वेचि सघली वस्त; अठ गुण लाज आसादिउं,
 मयलुं करतो गस्त ॥ ३ ॥ पुण्यउदय तस पाधरो, चातुर चारे मा
 न; करनां कोडि कमाईउं, वाणिज्य तणो विलास ॥ ४ ॥ माकंदी पु
 र मोयलुं. जरीयुं तेणें जंम; साथ करी ते शामटो, चाव्यो तेज प्रचं
 म ॥ ५ ॥ प्रतिदिन करत प्रयाण ते, अनुचर साथें अपार; कादंब
 री घटवी कनें. तंवू कल्या तैचार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जाउं जाउं रे रुठडा नाथ, तुमहुं नहीं बोलुं ॥

॥ वृषज नहुंके तिणें वनें. कांय सोर करे शीआल रे ॥ कांय वनजें
 ला सांडो सांदि लडे, कांय वानर देता फाल ॥ १ ॥ सांजलो वातडि
 यां जोजो जोजो रेकर्मनिदान ॥ सां० ॥ रुद्धि चंचल कुंजरकान ॥
 ॥ सां० ॥ जेदहुं कपटीनुं थ्यान ॥ सां० ॥ नरपतिनुं जेहवुं मान ॥
 ॥ सां० ॥ ए आंकणी ॥ सिंहनाद केसररी करे वजि. किहांयक गजवर
 हुंके रे ॥ नाज नमाज चंदन घणा, क्यांहि वृद्ध वली माकंद ॥ २ ॥
 ॥ सां० ॥ अजगर फणिधर मणिधरा, कांय नीम अटवी महा घोर
 रे ॥ जण दिन साथ वयो तिहां, कांय फिरता चिहुं दिश चोर ॥ ३ ॥
 ॥ सां० ॥ जलथानक आळुं यदा, कांय उतल्या तेहने तीर रे ॥ ना
 इ थोडें जमिया नहु. कांय जांगी तननी पीर ॥ ४ ॥ सां० ॥ चोकी
 मली चिहं दिजें. कांय स्वतां सयजां लोक रे ॥ चरम जाम ययो राति
 नो, तव नवगना आख्या योक ॥ ५ ॥ सां० ॥ मार मार करता यका,
 कांय वगसे नीज अपार रे ॥ जाग्यां नहु जन साथनां, तव जुळे जो
 यहुंकर ॥ ६ ॥ सां० ॥ माया लुजटें साथनें, कांय नाठा नीज ते जा
 य रे ॥ वजि जेजा मित्री आवीया, कांय करता बहु जन घाय ॥ ७ ॥
 सां० ॥ लुजट थोडा ते साथमां, कांय सवर सेना नहीं पार रे ॥
 जेज पारतें कुंठिउं, कांय जामने बहु नरनारि ॥ ८ ॥ सां० ॥ वंदी

पकड्या केईनें, वलि डव्य लेई गया तेह रे ॥ पल्लिपतिनें सोंपता, सवि
सूद्धम बादर जेह ॥ ए ॥ सां० ॥ कालसेन पल्लीपति, कांय पूढे बंदी
वान रे ॥ किहांथी साथ ए आवियो, वलि कोहनो साथनिदान ॥
॥ १० ॥ सां० ॥ इण अवसर तिहां उलख्यो, नृत संगम नामें तास
रे ॥ साथें सबवाह पुत्रनें तेह, आव्यो हतो गुणराशि ॥ ११ ॥
॥ सां० ॥ सिंहप्रहारनें टालवा, कांय संजारी ते वात रे ॥ पूढे कहीं
दीगो हतो, ते कहे नवि जाणुं ख्यात ॥ १२ ॥ सां० ॥ कालसेन क
हे सांजलो मुऊ, प्राण दीयां हुंतां जेण रे ॥ उत्तरापंथ जणी चाल
तां, पण नवि जाणुं नामेण ॥ १३ ॥ सां० ॥ तव तुमनें दीग हता,
ए गया वरपनी वात रे ॥ जम परें सिंह सनें मव्यो, मुऊ कीधो ह
तो प्राणांत ॥ १४ ॥ सां० ॥ उत्तरापंथ जातां थकां, मुऊ कीधो ति
णें उपगार रे ॥ किम जीवाड्यो मुऊनें, कांय न लह्यो तास प्रकार
॥ १५ ॥ सां० ॥ संजारी संगम कहे, ए सघली साची वाणी रे ॥
कालसेन तव बोलीयो कहो, तेह गया किए ठाण ॥ १६ ॥ सां० ॥
संगम आंगु रेडतो कहे, दैवनें पूढो एह रे ॥ पल्लिपति कहे तेह कि
म, तव संगम बोव्यो तेह ॥ १७ ॥ सां० ॥ साथ तेहुनो जाणजो,
इहां धाड पडी अम जाम रे ॥ दीग शर धनु लेईनें, कांय दोडतां
साहामा ताम ॥ १८ ॥ सां० ॥ तेहनी खबर हवे नहीं, ते सांजली
पल्लीनाह रे ॥ मूढी लही धरणी ठव्यो, कांय धरतो दुःख अथाह ॥
॥ १९ ॥ सां० ॥ वलकलवायरे विंजतां, कांय चेतना लाधी जाम
रे ॥ माखो के नवि मारीयो, कोई पूढे सबरनें ताम ॥ २० ॥ सां० ॥
सबर कहे नवि मारीयो पण, एकनें कीध प्रहार रे ॥ तव बंदी जोया
तिणें, पण न लह्यो तेह मजार ॥ २१ ॥ सां० ॥ ते धन सहु एक
त्र करीनें, आश्वाश्यो सहु साथ रे ॥ व्रणकार्य करे लोकनां, ते सा
यनो पल्लिनाथ ॥ २२ ॥ सां० ॥ दश दिशि सबरनें मोकल्या, कांय
खोलवा धरणकुमार रे ॥ आप गयो तस खोलवा, कांय धरतो
दुःख अपार ॥ २३ ॥ सां० ॥ ठंढे खंमें पांचमी, रूडी पद्मविज

च कद्री ढाल रे ॥ समरादित्यना रासमां, कांय सुणतां मंगलमाल
॥ २४ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ १५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवि ज्ञाथा कोइ थानकें, आव्यो फरी आवास; सबर आव्या दि
जो दिशि थकी, सहुये थई निराश ॥ १ ॥ शोक लह्यो कालसेन तव,
बोले एम जवाप; दुर्जननें जो सुख दिये, सज्जन होय संताप ॥ २ ॥
पन्नगनें पयपान जे, ते विषवृद्धिनुं हेत; दुःखदायक हुं देखजो,
निणिपरें मुऊ संकेत ॥ ३ ॥ गुं बहु बोले सहु सुणो, एह प्रतिज्ञा
आज; पांच दिवसमां ए पुरुष, संपद मेलवुं साज ॥ ४ ॥ एम कर
नां जो ए नदीं, मिले तो करगुं एम; अग्निमां पेशी आपणां, प्राण
नजीगुं प्रेम ॥ ५ ॥ कुलदेवी कादंबरी, अटवीनी आधार; दश नरनो
बनि देयगुं, लहीयें जो ए लगार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठछी ॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥

॥ एदवी मानी मानता, बहु दिन संवल दीध रे ॥ कुंवर मतिव
नो ॥ मोकल्या सवा दिगो दिगो, खोलवा केडि ते कीध रे ॥ १ ॥ कुं० ॥
खोल करणनें नीकल्यो, आमण डमणो आप रे ॥ कुं० ॥ जिम जिम
नेत्र जडे नहीं, तिम तिम धरे संताप रे ॥ २ ॥ कुं० ॥ धरणो पण
जवे साथथी, नागो लही लेय रे ॥ कुं० ॥ इव्यमां उदधिवलय ठे,
पारें पंथें एय रे ॥ ३ ॥ कुं० ॥ दिग्मूढ चालतां थकां, दिवस रह्यो
रही कांय रे ॥ कुं० ॥ निणिंयनिलय गिरि गयो, नयस्थानक बहु होय
रे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ दम्तिकलेवर बहु जिहां, सिंह करे सिंहनाद रे ॥ कुं० ॥
दावानल लागे घणा, वननेंसा उनमाद रे ॥ ५ ॥ कुं० ॥ अजगर वा
न अजि थणा, काव्यायनी दरे प्राण रे ॥ कुं० ॥ थाकी लखमी वा
टमां, नयण प्रस्वेद पिताण रे ॥ ६ ॥ कुं० ॥ अहो अहो माहारा
जयनी, पणिनि विचित्र प्रकार रे ॥ कुं० ॥ प्राणप्रिया दुःख एम ल
रे, चिंतवे घणन कुमार रे ॥ ७ ॥ कुं० ॥ लखमी पण चित्त चिंतवे,
रुम पण ए सुख सुख रे ॥ कुं० ॥ जिहां ए आपद पामीयो, धरण

लखुं महा दुःख रे ॥ ७ ॥ कुं० ॥ उदक फलादिक नवि मख्यां, जि
 एं होय लखमीने त्राण रे ॥ कुं० ॥ सूतां पालव साथरे, अस्त थयो
 जब नाण रे ॥ ८ ॥ कुं० ॥ रात्रि गई बीजे दिने, दिवस रह्यो ए
 क जाम रे ॥ कुं० ॥ वडढाया हेठल पडो, मूह्नीनो परिणाम रे ॥ ९ ॥
 कुं० ॥ मुंजाणी तस चेतना, तालू जीन शुकाय रे ॥ कुं० ॥ धरण
 विचारे एहवुं. जीवलोक दुःखदाय रे ॥ १० ॥ कुं० ॥ प्राण आपुं हुं
 तेहनें, सज्ज करे कोय ए नारि रे ॥ कुं० ॥ अंगें तस कर फेरवे, मूक
 तो आंशुधार रे ॥ ११ ॥ कुं० ॥ चेतना वली तव एम कहे, लागी
 तरश अपार रे ॥ कुं० ॥ जल लावुं धीरी अजे, रहेजे इणहिज ठार
 रे ॥ १२ ॥ कुं० ॥ वृद्ध उपरें चढि जोईयुं, पण नवि जल कहिं लख
 रे ॥ कुं० ॥ ताम उतरी निज कर तणी, लेइ नसा तिणें विख रे ॥
 ॥ १३ ॥ कुं० ॥ तुवरी वनस्पति रसें, कीधुं उदक समान रे ॥ कुं० ॥
 निज साथलनुं मांस जे, वनदवें पचव्युं जान रे ॥ १४ ॥ कुं० ॥ नारी
 माटें ए सवि कखुं, नारी विना न जीवाय रे ॥ कुं० ॥ औषधियें ब्रण
 रूऊव्यो, आव्यो नारीनें ठाय रे ॥ १५ ॥ कुं० ॥ पाणी पीउं ए लावी
 उ, वनदवमां ए सिख रे ॥ कुं० ॥ शशकमांस ए लावीउं, इणि परें
 कुंअरें कीध रे ॥ १६ ॥ कुं० ॥ आहार कस्यो तिणीयें हवे, कांयक
 काल गमाय रे ॥ कुं० ॥ दिनकरना अनुमानथी, उत्तर सन्मुख आय
 रे ॥ १७ ॥ कुं० ॥ पोहोता एक सरोवरें, अर्क अस्तंगत आय रे ॥
 कुं० ॥ नवि पेतां तिणें नयरमां, यद्देवलमां ठाय रें ॥ १८ ॥ कुं० ॥
 पहोर रात्रि गई तव कहे, लब्ही अलब्ही अवतार रे ॥ कुं० ॥ आर्यपुत्र
 तरशी घणुं, तव बोव्यो ते कुमार रे ॥ १९ ॥ कुं० ॥ आणुं उदक नदी
 थकी, तुं रहेजे सुख साय रे ॥ कुं० ॥ घट लेई पाणी लावीउं, लखमीनें ते
 पाय रे ॥ २० ॥ कुं० ॥ सूतां धरण लब्ही हवे, राति चरम एक जाम रे
 ॥ कुं० ॥ लब्ही जागी तिणे समे, चिंतवे मनमां आम रे ॥ २१ ॥ कुं० ॥
 एह अवस्था पामियो, मुज विधि ठे अनुकूल रे ॥ कुं० ॥ एहथी अ
 धक लहे आपदा, तो होय अति मंजुल रे ॥ २२ ॥ कुं० ॥ ठही

ठहा खंममां, पद्मविजय कहि ढाल रे ॥ कुं० ॥ दुर्जन सुजन पटंत
रो, सुणजो नवि सुविशाल रे ॥ १४ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ १७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर तिहां आवीठ, चंमरुइ एक चोर; रयण नांम लेई र
यणीयें, कीधुं कर्म कठोर ॥ १ ॥ कोटवाल केडें थयो, नाशी न शक्यो
नेम; देहगमांहिं दडवडी, पेठो जीवन प्रेम ॥ २ ॥ पेठो देई बार
णां, आरुद्धक नर आय; वेठा बोले वारणो, अप्रमादी हो नाय ॥ ३ ॥
नांनयूं लढीयें ते सवे, तस्कर पगरव तेम; चिंतवे नारी चित्तमां, का
रण ए ठे कम ॥ ४ ॥ पूठुं जो पूगे कदा, मनह मनोरथ मुज;
तान निकट गइ तेहवे, पूठे इणि परें गुज ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जीणा मारुजीनी करहलडीनी देशी ठे ॥

नृप कहे निजपुत्री नणी, फट पापिणी हतीयारी

मुखडुं कांय देखाडे हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ लखमी कहे तुं कोण अठे, वारणें ढाल कल्लोल एवडो केह
नो थाये दो राज ॥ तेह कहे कहेणुं पठें, पण मुज आपे पा
णी मादरं काज नथाय हो राज ॥ १ ॥ सा कहे जल देणुं अ
मैं, कारण मुजनें जांखो तव ते चित्तमा चिंते हो राज ॥ कुंन व
गवर ठीकरी, मादरे जांग्य ए दीने जांखे ते इणि जांते हो राज
॥ २ ॥ चंमरुइ दुं चोर हुं, कहुं संक्षेपें वात विस्तारें न कहाय हो
राज ॥ नृपनो गतन करंमियां, चांगीनें हुं लाव्यो तलवर जाणज थाये
हो राज ॥ ३ ॥ ते मुज पठें आवीया, तेह बहु हुं एक क्षीण शक्ति
वती जाया हो राज ॥ जीवितनी आजा बडी, रयणीयें अंधारी आव्यो
॥ मुज गया हो राज ॥ ४ ॥ बोले बाहिर ते नग, तव लछीमन चिंते
मुज निगिजो अतुल्य हो राज ॥ तो इतिन मुज नीपनुं, एम चिंती
परे सुणजे तज नदीं टांये मंगुज हो राज ॥ ५ ॥ पाणीनुं गुं काम
ने, मुज जांयानुं मादरं वचन करे जो प्यारें हो राज ॥ ते कहे दा

ख उतावली, सा कहे पुरी माकंदी कार्तिक शेष धन धारे हो राज
 ॥ ६ ॥ नामें लखमी हुं तस धूआ, पूरवनें जिम वैरी धरणें मुजनें
 परणी हो राज ॥ मुज अनिष्ट सूतो इहां, मूक तुं ए धन चोखुं हुं
 थाउं तुज धरणी हो राज ॥ ७ ॥ ए एहनुं कहुं पामशे, पूठशे जो
 कदि राजा तेहने उत्तर देशुं हो राज ॥ आ माहारो नर्तारि ठे, ए तो
 नवि उलखियें एम करी जममुख देशुं हो राज ॥ ८ ॥ चोर कहे
 साचूं कहुं, पण ए पुरीनो वासी मुज उलखे सहु प्राणी हो राज ॥
 सा कहे तास उपाय श्यो, तस्कर कहे चोर गुटिका माहारी पास व
 खाणी हो राज ॥ ९ ॥ दीठो प्रत्यय जेहनो, चिंतामणिनें सरिखी
 आंजुं उदक संजोगें हो राज ॥ नवि देखे कोई मुजनें, सहस नयन
 जो इंदो जोवा आवे रंगें हो राज ॥ १० ॥ खंधरुज नगवाननी, आपी
 ते ठे नरनी वाततो कहियें केही हो राज ॥ अलही जल तस आ
 पीयुं, अंजन कीधुं बिहुयें ठानी राखी देही हो राज ॥ ११ ॥ रतन क
 रंमक मूकीयो, धरणनी पासें तेणें रहियां ते एकदेशें हो राज ॥ वि
 हाणें धरण ते उठियो, कोटवाले तव दीठो रयणकरंम विशेषें हो
 राज ॥ १२ ॥ देवकुलमाहिंशी काढियो, बांधी कीधो आगें चिंते ए
 खुं जाय हो राज ॥ अथवा विधि प्रतिकूलथी, अमृत ते विष होय
 गोपय सायर आय हो राज ॥ १३ ॥ रज्जुकृष्ण सर्प होय, परमाणु
 पण मेरु सुत पण वैरी आय हो राज ॥ मुषक विवर रसातलं, होय
 प्रकाश अंधारूं सापण सरिखी माय हो राज ॥ १४ ॥ खंति कोहं
 मदव माण, आर्यव माया आय तोष ते लोन ठराय हो राज ॥
 सत्य ते अलिक समो वडे, वाघण सरिखी नारी जाऊं शुं कहेवाय
 हो राज ॥ १५ ॥ अथवा एहथी न बूटीयें, पण ए पीडा करतां अ
 धिकी मुजनें साले हो राज ॥ नवि दीसे लही किहां, शी गति होशे
 एहनी विरह न लही कोई कालें हो राज ॥ १६ ॥ अथवा रूडुं ए
 थयुं, ए पण आपद लहेती जो होती मुज संगें हो राज ॥ अनुक्रमें
 रायकुलें जावीआ, अवसरें नृपनें विनव्यो पकड्यो महाबुजंग हो

गज ॥ १७ ॥ मायावी वाणीग वेजें, चोखा धननी साथें जेह आण ते
करीयें हो राज ॥ सोंपो ए चंमालनें, कहेजो नृपनी आण एहने
जमवरें धरीयें हो राज ॥ १८ ॥ तिमज कछुं ते तलवरें, कहे मह
त्तर चंमाल केहनो ठे आज वारो हो राज ॥ कहे चंमाल मोरीआ
तणो, महत्तरें तव तेडाव्यो आव्यो तस कहे मारो हो राज ॥ १९ ॥
पद्मंर दिवसरह्यो पाठजो, जो एहने नवि मारो नाशी जाये किवारें हो
राज ॥ नृपनी आण डुकर वणी, लेई जाउ मशाएँ मोरीयें मान्युं
व्यारें हो राज ॥ २० ॥ मोरीउ लेई चाव्यो तिहां, मुज जीवितनो
वाना नववाहसुत एह हो राज ॥ उंजख्यो तेहनें जली परें, अहो
अहां कर्मविचित्र एह अवस्था केह हो राज ॥ २१ ॥ त्यां जइ बंधन
टोडीयां, चरणे लागी बोव्यो मुजने उंजखो स्वामी हो राज ॥ धरण
कहे नवि सांजरे, तव धुरथी सवि जांख्युं तुम परें हुं जह्यो स्वामी हो
राज ॥ २२ ॥ इव्य देई नृपने बहु, विण अपराधी मुजने उगाखो जली
नाते हो राज ॥ धरण कहे ए केटखुं, मोरीयो बोले ताम ताम जही
एकांतें हो राज ॥ २३ ॥ ठठे खंमैं सातमी, पद्मविजय ए जांखी
राज अधिक उल्लासें हो राज ॥ श्री समरादित्य रासमां, सांजलजो
द्वे आगें मंगल माना आशे हो राज ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आवी केम ए आपदा, मोरीउ कहे महाराज; पूठो देवनें सांप्रतें,
कहेवाहुं नहिं काज ॥ १ ॥ मनमां चिंते मोरीउ, नहिं बोले ए ना
थ; कचपचनुं कामज नदीं, दमणां वाजी दाथ ॥ २ ॥ पाण कहे
प्राणमी करी, निश्चय इहांथी नाथ; काजकेप करतां थकां, पडीयें कोइ
क पाज ॥ ३ ॥ धरण कहे धोरज धरी, मुजनें सुखथी मार; आण
सगें अवनपीपति, दिलमां दुःख न धार ॥ ४ ॥ पण तुज कष्टें प्राण
नृप, नहिं गारुं निश्चय; मोरीउ कहे मुज प्राणनी, वात न कांय
विचार ॥ ५ ॥ सात पेदिनो गुं नगो, अमचो अवनपीपाल; शत अ
नृप अवनया सदा, कोण नदीं कोइ काल ॥ ६ ॥ नवि जाय जो ना

शीनें, मरवुं तो मुऊ नेम; सज्जन स्नेह इत्या होये, जलपय मलीआं
जेम ॥७॥ यतः ॥ “हीरेणात्मगतोदकाय सुगुणादत्ताः पुरा तेऽखिलाः,
हीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कशानौ द्रुतः ॥ गंतुं पावकमु
न्मनस्तद्वनवदृष्ट्वा च मित्रापदं, युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री
पुनस्त्वीदृशी ॥ १ ॥ ” एम विचारी आत्मशुं, धरण कहे सुण धीर; तुम
वयणें जाउं तुरत, पाण कहे गइ पीर ॥ ८ ॥ पंथ देखाड्यो पाधरो,
प्रणमी धरणना पाय; पाठो वलीउं प्रेमशुं, जलदी धरणो जाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ सोनाने केहूं मारुं बेडलुं, मारूजी वाव्य खोदाव ॥ ए देशी ॥
॥ जातां इणि परें चिंतवे, किहां गई माहरी नारि ॥ लघुनीति करवा
काम उठि न जगाडिउं, मुऊ रागें रे तिणी वार ॥ १ ॥ मूशी कोईक
तस्करें, लेई गया निर्धार ॥ बोली नहीं मुऊ धात विचारी चित्तमां,
राग घणो रे मुऊ नारि ॥ २ ॥ नवि देखुं जो नारीनें, तो मुऊ अफ
ल संसार ॥ एम चिंतवतो तेह जोवा लागो हवे, रेडतो आंशु रे धा
र ॥ ३ ॥ रिजुक्कलिकामां न्हाईउं, इण अवसर तेह चोर ॥ रिजुवालि
कायें आवी विचारे एणी परें, नारी ए कर्म कठोर ॥ ४ ॥ तुरत ठां
मयो निज धव प्रतें, महा आपदमां नाखि ॥ निजकुल न कस्यो वि
चार आवी मुऊ संप्रति, नवि उलखती रे साखि ॥ ५ ॥ एहनी संगें
हुं रही, जीवुं केतो काल ॥ दुर्गति द्वार ए नारी अनर्थनी खाण
ठे, सापण सम विकराल ॥ ६ ॥ चंचल चपलानी परें, मुखें मीठी
असराल ॥ एहनां चरित्रनो पार न लहीयें पंढितें, जिम तिम बो
ले रे आल ॥ ७ ॥ यतः ॥ सर्वईउं ॥ “बिनुमें हसती बिनुमें रुदती,
बिनुमें बहु बोल कटुक सहे ॥ बिनुमें अतिरंग विरंग बिनुं, बिनुमें दृगनी
र शुं आय रहे ॥ बिनुमें कटु वात सहे अपनी, बिनुमें मधुरो पण
नाहीं सहे ॥ कवि पद्म कहे जगदीश बिना, त्रियकी करनी कहो को
न लहे ॥ १ ॥ ” तिणें ए नारीयकी सखुं, जिणि वार्ते जाये प्राण ॥
अंग आनूषण लेइ गयो तस ढोडीनें, शुद्ध विचारी रे जाण ॥ ८ ॥

जड़ी विचारें एहवुं, लड़ी थइ एह वात ॥ धरण मुठ रिपु मुज जाउं
 दान्यलवनें, गंदेयुं रे हवे सुख शात ॥ ए ॥ कांठे चालतां एहवे,
 लड़ी धरणकुमार ॥ रोम राय उल्लास करीनें पृठतो, किम रे मली तूं
 नाहि ॥ १० ॥ तव रोया जाली वणुं, धरण कहे ए संसार ॥ आपद
 जाजन जाली न रोईयें एणि परें, आपद गइ इण वार ॥ ११ ॥ तुज
 मिनीउं हं धन्य थयो, तव बोली तेह वाम ॥ पकडी तसकरें मुज
 नुं लड़ी लघुनीति, करवा केरे रे काम ॥ १२ ॥ शीजनंग करवा तिणें,
 कीया दया रे प्रकार ॥ में नवि मान्युं तेह गयो मुज मुशीनें, बलथी
 नेम रे जे नाहि ॥ १३ ॥ चोर कदर्येनाथी मुने, उपनुं दुःख अपार ॥
 जे तुम दीठा एम थवस्था दुःख करी, सुणि चिंते रे कुमार ॥ १४ ॥
 में दिन चिंतयुं निम थयुं, कहे नारीने रे एम ॥ फिकर न करीयें कां
 य चाजो तुमें नय जड़ी, चिंते रे थइ गयुं केम ॥ १५ ॥ आव्यो कृतां
 नला मुयवही, पापनी परणति एह ॥ गयां विचारपुरगाम सूरज
 नर आथम्यो, रयणी रे गई पण तेह ॥ १६ ॥ नवि रहेवुं इण थानि
 ने, जईयें दंतपुर नाम ॥ तिदां मुज माउजगेह सूकी तुजनें पठें, कर
 नुं रे कांयद काम ॥ १७ ॥ मान्युं लवीयें तव जवा, मान्युं दंतपुरें
 पाय ॥ इण थवनर हवे वात पल्लिपतिनी सुणो, जोजो रे किणी परें
 जाव ॥ १८ ॥ नाउंशाद् मुन नवि जडयो, चित्त उपनो रे संताप ॥
 निज नरनें तेह लाय जजायी जली परें, इणि परें करे रे आलाप
 ॥ १९ ॥ एहना मा आपनं तुमें, पोहोचावजो धरि खांति ॥ हवे
 निने एम दिन कांदेवरी देवी तेह, मान्युं ठे रे जे एकांत ॥ २० ॥
 नाम जयुं नहि पण देवी जति, ते देवीने काज ॥ तेह प्रतिज्ञा कीथ
 ने नरनें नर पठें, मांमणो तेहनां रे माज ॥ २१ ॥ ठेठे खंमें
 लाइया, एप्रियतय कही टाज ॥ सझन कत गुणजाण दोये जुड
 लाइया, मांमण रे गंगज माज ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

एकरपनिमें साध्या, कांदेवरीनी कीथ; पूजा विविध प्रकारनी.

आमंवरथी ६६ ॥ १ ॥ स्नान कछुं सरितातटें, वलकल पहेछां
वास; कणवीर माल करी शिरें, चय विरचावे खास ॥ २ ॥ चंमिका
देहरे ते चव्यो, धरतो धरणनुं ध्यान; इणि अवसर ते अटवीयें, जा
तो धरण सुजाण ॥ ३ ॥ सबरें दीठ सुरोदयें, लह्मी धरणेनं व्हार;
बांधी सबरें ते बिहुं, आण्यां तेह उदार ॥ ४ ॥

॥ ठाल नवमी ॥ दक्षिण दोहिनो हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ आवे जेते हो राज, देखे तेते हो राज ॥ तेहनें खेतें रे, वृद्धें
रुधिर त्रिशूल कछां ॥ सडिआ पडिया हो राज, वृद्धें घडीआं हो
राज ॥ उदेही जडिआं रे, शिखरमां सर्पजुगल धखां ॥ १ ॥ जीवव
ध आय हो राज, रुधिर सींचाय हो राज ॥ नृपति पाय रे, ग्रह
नूत जहू राहस घणा ॥ आघो जाय हो राज, देखे तिहांय हो
राज ॥ शबसमुदाय रे, कोट बणायो नहीं मणा ॥ २ ॥ मस्तकमा
ला हो राज, धड विकराला हो राज ॥ तोरण शाला रे, कीधी तिहां
बीहामणी ॥ गजवर दंता हो राज, दीसे महंता हो राज ॥ महानय
दिंता रे, हाड चाम डुर्गंध घणी ॥ ३ ॥ सबर जुवान हो राज, रह्या
तिणें थान हो राज ॥ खड्डू जेइ पाणि रे, निजडी रोवे दुःख धरी ॥
नरनें कपालें हो राज, दीपे विशाल हो राज ॥ तिहां ततकाल रे,
मंगल दीपश्रेणी करी ॥ ४ ॥ चामर लटके हो राज, पूठडे जटके
हो राज ॥ कीधा सटके रे, गज मुक्ताफल साथीआ ॥ गुगल गंध हो
राज, होय संबंध हो राज ॥ मदवरगंध रे, दिसे फिरता हाथिआ ॥
॥ ५ ॥ खड्डू कोदंम हो राज, कर धखो घंट हो राज ॥ पुढ महिष
खंढ रे, शोजे कात्यायनी करें ॥ देखी विचारे हो राज, धरण तिवारें
हो राज ॥ सिंहनी वारे रे, बलीउ कोइक तत्परें ॥ ६ ॥ पण पुण्य
पाप हो राज, जे हुइ ठाप हो राज ॥ तस संताप रे, टालि शकियें
किणी परें ॥ इणि परें करतां हो राज, जईने धरता हो राज ॥ जिहां
थरथरता रे, नरसमुदाय धखा घरें ॥ ७ ॥ पाये लागी हो राज, का
जसेन सागी हो राज ॥ कुमरनो रागी रे, आवी गदगद उच्चरे ॥ मेल

व्यो न मुजने हो राज, मुं कहुं तुजने हो राज ॥ पण एम बुजीने रे,
 जनमांतरें द्वे मत करे ॥ ७ ॥ में दुःख दीधुं हो राज, अवलुं कीधुं
 हो राज ॥ ने दुःख नीधुं रे, जाणें तूही कात्यायनी ॥ चिंति चंग हो
 राज, नाम कुरंग हो राज ॥ बोलावे संग रे, लावो बलि सुनायनी
 ॥ ८ ॥ इगिजनामें हो राज, कासिद ठामें हो राज ॥ काढ्यो तामें
 ने, पकडी केज माया तणा ॥ थर थर धूजे हो राज, कांय न सूजे हो
 राज ॥ ग्नांजणी पूजे रे, काढि खड्ड पछिपति जण्या ॥ ९ ॥ लोक
 ए जोय हो राज, मनमां जे होय हो राज ॥ मागजे कोय रे, जीवित
 गिण तुज दीजीयें ॥ जयवी तेह हो राज, बोढ्यो नरेह हो राज ॥
 त्रिगिण एह रे, बोलाव्यो न वदीजीयें ॥ १० ॥ पछिनाह हो राज, चिंते
 तुगद हो राज ॥ मननो लाह रे, पूछा विण किम मारीयें ॥ चिंते
 थरणो हो राज, अंतें मरणो हो राज ॥ उपगार करणो रे, कृण एक
 मात्र उगारीयें ॥ ११ ॥ चिंती कुरंग हो राज, बोलाव्यो रंग हो राज ॥
 जहनें जंग रे, तुम मामीनें बीनयो ॥ एहनें म मारो हो राज, जयथी
 नागो हो राज ॥ मुज अवगारो रे, वात आखर मुजनें रीऊवो ॥ १२ ॥
 पण म नजरें हो राज, देखी सुपरें हो राज ॥ खमीयें किणपरें रे,
 मागे आगजथी मुजनें ॥ पछिपति नयण हो राज, जलनरी वयण
 हो राज ॥ बोजे सयण रे, कुण एहवुं कहे गुजनें ॥ १३ ॥ मूर्खी नडी
 उरी हो राज, धरणी पडीउ हो राज ॥ चेतन जडीउ रे, तव इणपरें
 बोलावतो ॥ हुड निदां जाई हो राज, मनमां जाई हो राज, कृण
 ए जाई रे, सज्जवाहतुन परें चालतो ॥ १४ ॥ जोवे ते ठोर हो राज, जई
 रिदोर हो राज ॥ कोइ न ठेर रे, तेहज नर ए एम कहे ॥ पोतें
 निगटे हो राज, तव ने दग्गे हो राज ॥ ठोटे परखी रे, बंधन तेहनां ग
 उदर ॥ १५ ॥ द्रवमे नरण हो राज, नांजणो धरण हो राज ॥
 मागजे नरण रे, गम अपराध तुं मादगो ॥ धरण ते जांखे हो राज,
 गमगम जांखे हो राज ॥ एह सगव्य रे, दोष नहिं ते तादगो ॥ १६ ॥
 १७ ॥ काम नो राज, अपराध ठाम हो राज ॥ पछिपति ताम

रे, कहे शुं काम कछुं अमें ॥ नर नवि माखो हो राज, मुज
वच धाखो हो राज ॥ काम सुधाखो रे, मुज मनोरथ पूरतां
तमें ॥ १७ ॥ पल्लिपति चिंते हो राज, उलखे न तंते हो राज ॥
नयनी आंते रे, बोले ठे ए इणि परें ॥ पूठे तास हो राज, नांख तुं जा
स हो राज ॥ मरण अन्यास रे, श्या दुःखथी तूं आदरे ॥ १८ ॥ कहे कु
मार हो राज, वात विस्तार हो राज ॥ श्यो अधिकार रे, काम करो
तुमें निज तणुं ॥ कालसेन जाण हो राज, करे उलखाण हो राज ॥
कृतगुण हानी रे करनारो हुं अति घणुं ॥ १९ ॥ तुमें जीवाडयो हो
राज, तुज विणसाडयो हो राज ॥ दुःखथी काढयो रे, नाग बालपरें
मुजने ॥ हुं महापापी हो राज, तुज संतापी हो राज ॥ एम विजापी रे,
कृतघ्नशेखर हुं अयो तुजनें ॥ २० ॥ कुंअर जाणी हो राज, लाज ते
आणी हो राज ॥ कहे मुख वाणी रे, जीव्या निज पुण्ये करी ॥ ठठे रसा
ल हो राज, खंमें विशाल हो राज ॥ नवमी ढाल रे, पद्मविजय
पूरी करी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृतघ्न किम तुजनें कहुं, सज्जनमां शिरदार; अज्ञानें करी इणिपरें,
पश्चात्ताप प्रकार ॥ १ ॥ पण तें शुं प्रारंजीउ, एह कहो अवदात; प
ल्लिपति तव कहे पठें, वारु धुरथी वात ॥ २ ॥ सार्धवाह सुत सांज
ली, अहो स्थिर स्नेह अपार; कृतज्ञता कहुं केटली, वर्णवे वारं वार
॥ ३ ॥ पण सांजलो पल्लिपति, देउं तुज उपदेश; पूजो देवगुरु
प्रत्ये, बलि पुष्पादिक बेश ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ बे बे मुनिवर विहरण पांगस्यां जी ॥ ए देशी ॥
॥ धर्म न होये जीव हस्याथकी जी, जलथकी अनल न होय रे ॥
गायना शृंगथी दूध न संजवे जी, विषथकी अमृत किम जोय रे ॥ १ ॥
॥ धर्म ॥ यतः ॥ “सकमलवनमग्नेर्वासरं नास्वदस्ता, दमृतमुरग
वक्रात् साधुवादं विवादात् ॥ रुगपगममजीर्णात् जीवितं कालकूटात्,
अजिलषति वधात् यः प्राणिनां धर्ममिहेत् ॥ १ ॥ नरकें ते पोहोचें जी

सर्वे ते धनवृद्धस्य, क्षारि तिष्ठन्ति किंकराः ॥ १ ॥ वृद्धुद्वितैर्व्याकरणं न जुज्यते, पिपासितैः काव्यरसो न पीयते ॥ न वंदसा केनचिदुत्थृतं कुलं, हिरण्यमेवाज्येय निष्फलाः कलाः ॥ २ ॥” ते पण तातनी मात परें नही जी, मुऊने नोगववी किएही रीती रे ॥ मात पितानी छाणाथी हवे जी, चाव्यो बहु साथ लेई गुननीती रे ॥ १४ ॥ धर्म ॥ लक्ष्मी पण साथे लेईने आवियो जी, सायरकांठे नगरी नाम रे ॥ रूडी वैजयंती नरपतिने मल्यो जी, दीधुं बहुमानने आप्थुं ठाम रे ॥ १५ ॥ धर्म ॥ जान तथाविध न थयो चिंतवे जी, जाउं परतीरें पासुं रुद्धि रे ॥ जिहाज करीने किरियाणां नखां जी, लगन मुहूर्त्त जोई परसिद्ध रे ॥ १६ ॥ धर्म ॥ सायरकांठे आवी पूजीयो जी, दीधां बहु अरथी जनने दान रे ॥ देव गुरु प्रणमी वेठा जयाजमां जी, उपाड्यां नांगर जल असमान रे ॥ १७ ॥ धर्म ॥ पूखो ते सढनें वाहण चालीयां जी, ठेठे ते खंमे दशमी ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे चीनदीपें जवा जी, धरणोजी चित्तमां अति उजमाल रे ॥ १८ ॥ धर्म ॥ सर्वगाथा १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वाहण तीरवेगें वहे, केइक दिन अतिक्रांत ; मध्यान्हें मारुत घणो, एक दिन अति उद्घ्रांत ॥ १ ॥ गाजे सायर गजपरें, संकेल्या सढ ताम ; जीवितनी आशा जया, नांगर मूक्यां नाम ॥ २ ॥ अथडातुं ते अनुक्रमें, वाहण जाग्युं वेग ; आउसंवंधें अनुक्रमें, आव्युं फलक ते एग ॥ ३ ॥ तिणें करी एक अहो रात्रिमां, पोहोतो सोवन दीव ॥ मन चिंते मुऊ मानिनी, दुःख दीतुं हा दैव ॥ ४ ॥ परिजन पण परहो गयो, करी विलाप तिणें काल ; कदलीफल केरो करे, रूडो आहार रसाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ प्रणमी सदगुरु पाय, गायशुं राजिमती सति जी ॥ ए देशी ॥

॥ सूरज आथम्यो जाम, पल्लव साथरो पाथरी जी ॥ टाढ उमावण काज, अरणीथी अग्नि पेदा करी जी ॥ १ ॥ प्रणमी श्री गुरुनें देव, सूतो ने प्रात समय थयो जी ॥ जाग्यो जाम प्रजात, सूर्यराय

जब जगजयो जी ॥ १ ॥ अग्रि फरसित नूमि, दीठी कनकमयी आई
 जी ॥ देखी चिंते एम, धातु क्षेत्र ए गुनमई जी ॥ २ ॥ कीधी इंटयो
 ताम, धरण नाम अंकित करी जी ॥ कीया संपुट आई, कनक कखुं
 अग्रिमां थरी जी ॥ ४ ॥ कया दशतहस संपुट, निन्न पोतध्वज बांधी
 उं जी ॥ चीनयही एक जिहाज, पुणें जावि सांधीउं जी ॥ ५ ॥ सु
 वचन नारायवाह, नाम असार तिहां नखां जी ॥ कोइक द्वीपयी
 पामि, जगोणुं देवपुर संचर्यां जी ॥ ६ ॥ आव्या जब तिणें ताम,
 निन्नपोन ध्वज निरखीउं जी ॥ मूक्यां नांगर ताम, मूक्या निर्जामक
 जखीउं जी ॥ ७ ॥ बीजा धरणकुमार, वात सुणावे तेहने जी ॥
 सुवचन नारायवाह, नामें दया बहु एहने जी ॥ ८ ॥ चीनद्वीप ज
 न नाम, देवपुर जावा मन करे जी ॥ तुम कहेवरावे एम, आवो
 नो जगजमांदि धरे जी ॥ ९ ॥ बोल्या ताम कुमार, नाम नखुं गुं
 एहमा जी ॥ निर्यामक कहे ताम, इव्यशक्ति नहीं तेहमां जी ॥ १० ॥
 निरियजं थयो निर्इय, पण व्यवसाय न ठंहीयो जी ॥ तादृशतो नहीं
 नाम, धरण कहे तव मंनियो जी ॥ ११ ॥ एहुनी इठा जो होय, ए
 इजी नूमि आवो अहीं जी ॥ तंडी जाव्यो तेह, धरण कहे कोपशो
 नहीं जी ॥ १२ ॥ कांयक कारण पामि, पृथुं तुमनें एणी परें जी ॥
 जगजमां तंडुं इव्य, नांयो मुजनें गुनपरें जी ॥ १३ ॥ तव ते
 धाजो नाय, रमनी वान माहारी सुणो जी ॥ इव्य गहुं मुज सर्व,
 यत वचन कहे मुगुणो जी ॥ १४ ॥ सांवन टंक दजार, जेईनें नाम
 न आवीरो जी ॥ धरण कहे सुणो वान, हुं तुमनें जखें पावीयो जी
 ॥ १५ ॥ तादी नायो नाम, सांवनथी वादण नरो जी ॥ पोहोंचीणुं ज
 न मोर, जागर इव्य देणुं परो जी ॥ १६ ॥ कहे सुवचन तव शीठ, नार
 निया मोचन नरो जी ॥ नुं धदुमान के मुज, मयल कमं जे मुख नणो
 ॥ १७ ॥ तादी नायुं नाम, वादण कनक गणी नयुं जी ॥ वेठो
 नाराय ताम नय नरोद्वनण करुं जी ॥ १८ ॥ दगल्या चित मजा
 ॥ १९ ॥ जगजमां जगजी जी ॥ २० ॥ तं माहारी नारी, धरण कहे सुवचन

नणी जी ॥ १९ ॥ आणंद्यो तव शेर, वाहण चाले अनुक्रमें जी ॥
 पंच जोजन गया जाम, एक अचरिज होय तिण समे जी ॥ २० ॥
 सुवर्णदीपनी स्वामि, सुवर्णनामा वाणमंतरी जी ॥ कंपावे ते समुद्र,
 मानुं अकालनी वीजली जी ॥ २१ ॥ रेरे सारथवाह, कांय उपचा
 र कस्यो नहीं जी ॥ मुऊ आणा विण एह, कनक लेई जाईश कहीं
 जी ॥ २२ ॥ धरीयुं तेणीयें जिहाज, निर्यामकने एम कहे जी ॥
 बलि द्यो पुरुषनी मुऊ, ते विण डव्य ए कुण लहे जी ॥ २३ ॥ अथ
 वा मारुं हाथ, धरण विचारे एम सुणी जी ॥ नाखी देवाड्युं डव्य,
 लखमी मुऊ आपी गुणी जी ॥ २४ ॥ उपगारी मुऊ एह, देवी तो
 एणी परें नणे जी ॥ बलि थाउं हुं आज, प्राण आ अवसर कुण गणे
 जी ॥ २५ ॥ देवीने कहे वाणि, एह अजाणपणें थयुं जी ॥ प्रसन्न
 थई द्यो मुऊ, बलि तुमें कांय नवि गयुं जी ॥ २६ ॥ देवी बोले ताम,
 सायरमां जंपा दीयो जी ॥ लखमी चिंते एम, देवीयें मुऊ अनुग्रह
 कीयो जी ॥ २७ ॥ सारथवाहने एम, लढी नलावी एम कहे जी ॥
 सोंपजो अम माय ताय, एम करी सायरमां वहे जी ॥ २८ ॥
 विंध्यो ताम त्रिशूल, देवी सोवन दीपें लावती जी ॥ देवी थइ उपशां
 त, वाहणने नवि बोलावती जी ॥ २९ ॥ वाहण चाट्यां जाय, हेम
 कुंमल इण अवसरें जी ॥ रयण दीपें ते जाय, दीठोनें उलख्यो नली
 परें जी ॥ ३० ॥ देवीपरिचित ताम, मागी उषधियें सज कस्यो जी ॥
 पुण्यप्रमाणें ताम, जीवितशेपें आयु धस्यो जी ॥ ३१ ॥ यतः “वने
 रणे शत्रुजलाग्निमध्ये, महार्णवे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं विपन्न
 स्थितं वा, रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि ॥ १ ॥” अग्यारमी ए ढाल,
 ठठे खंमैं शोहामणी जी ॥ समरादित्यनें रास, पद्मविजय नावें
 नणी जी ॥ ३२ ॥ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हेमकुंमल उलख्यो हवे, पूठे धरण पवित्त : सिरीविजय संबंध
 कहो, तव कहे तेह त्वरित ॥ १ ॥ जीवाड्यो में तिहां जई, सुणी

धरण नंतुष्टः धरण लेई विद्याधरो, गुण संजारी गरिष्ट ॥ १ ॥ रयण
 नर नतिग्रामणो, दीप अति उदामः रतनगिरि अति रूअडो, नाना
 विध तन्नाम ॥ ३ ॥ विद्याधर कीडाविपे, तत्पर तरुणी गीतः सुर
 निगानना दश दिशें, आवे पण नहिं इत ॥ ४ ॥ सरोवरतीरें सुहंकरू,
 दंभादिकनी दारः वृद्धश्रेणी वारू परें, शोने अति श्रीकार ॥ ५ ॥
 वाय्वकांतं क्षण विजम्या, संग्रहे फल सहकारः वाय्वमां नाहि
 वायवै, पुनं वात प्रकार ॥ ६ ॥

॥ राज वाग्मी ॥ ए ठिमी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ हेमकुंमल पुने धरणानें, किम तुमनें मली एह ॥ तव धुरथी मांमी
 ने नयनी, वात कदी दती जेह रे ॥ १ ॥ प्राणी पुण्यतणां फल जो
 जो ॥ धनन नज्जन दोय पटंतर, अणु मेरु सम होजो रे ॥ प्राणी ॥
 ॥ ए प्रांतणी ॥ अदो अदो दुष्टता अंतरी केरी, कीधुं मोहोदुं अकाज ॥
 दवे तुमें कदो ते करियें तव कदे, कीधुं सघनूं काज रे ॥ २ ॥ प्राणी ॥ पण
 भुज जाया छ गिणी दोगें, कीजें ताम संजोग ॥ हेमकुंमल मनमांहि
 निवारें, रयण तणां कने जांग रे ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ हेमकुंमल कहे मे
 नवें समणां, पण एक नांजनी वात ॥ रतनगिरि नामें इहां परवत, सु
 गोवन नुरग्याने ॥ ४ ॥ प्राणी ॥ किन्नर ते सुऊ मित्र वखाण्यो, तेहने
 मनमें मांजारे ॥ तुमने देवपुरें पनें मूकीज, मलगे नारी तिहारे रे
 ॥ ५ ॥ प्राणी ॥ धरण तनें जिम तुम मन जाणो, तव ते धरणने लेई ॥ ५
 गोला ग्यणगिनि तम जाना, वर्णवीयें कदो केई रे ॥ ६ ॥ प्राणी ॥ तिलक
 गमान गनन गिरि चरनें, नचिर नवन अति दीपे ॥ गोंख जित्ति
 बादागरी गोला, नुरविमानने जीपे रे ॥ ७ ॥ प्राणी ॥ उजो अईने आ
 ॥ ८ ॥ प्राणी ॥ तीस उचित वयचार ॥ किहांथी आख्याने ए कोण ते,
 उजो वला नवु निवार रे ॥ ९ ॥ प्राणी ॥ आजय निज विद्याधर जांखे,
 गणन अरावना जाव्यो ॥ दगरित अई ते नांजनी राख्यो, केईक दिन
 ॥ १० ॥ प्राणी ॥ ग्यण लेईने धरणने जाव्यो, देवपुर नवरने
 ॥ ११ ॥ प्राणी ॥ गोधीने इणिकने जांखे, शोधने इहां निजनागी रे ॥

॥ १० ॥ प्रा० ॥ हेमकुंज निजधानकें पोहोतो, धरण गया पुरमां
हि ॥ टोप शेर हवे देखे तेहने, मनमां लहे उत्साह रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥
अहो आकार अपूरव दीसे, एकाकी किम एह ॥ सुखशाता पूठि घरें
जाव्यो, शेर कहे हवे तेह रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ किहांथी आव्या तुमें
इण नयरें, तव ते धरणें जाख्युं ॥ माकंदी निकव्याथी मांमी, देवपुर
पर्यंत दाख्युं रे ॥ १३ ॥ प्रा० ॥ रतन शेरने राखवा आप्यां, राखजो
गोपवी एह ॥ बाहणनी हवे वात सुणेजो, धरण पड्या पठी जेह रे
॥ १४ ॥ प्रा० ॥ आश्वासना लक्ष्मीने करतो, सुवचन सारथवाह ॥
ए संसार असार ठे सुंदरी, सहुने एहज राह रे ॥ १५ ॥ प्रा० ॥
जिहां संजोग वियोग त्यां दीसे, खेद म करशो नारी ॥ ताहारी आथ
गई नहीं एहमां, जाणजे गइ ठे माहारी रे ॥ १६ ॥ प्रा० ॥ एलक्ष्मी
तुं लखमी विहुंने, पहोचाहुं तुम गेह ॥ तब नयनें आंशु नरी बोली, ल
खमी मायागेह रे ॥ १७ ॥ प्रा० ॥ तुम जीवतां मुजनें शी चिंता, ए
क दिन शेर विचारें ॥ एह डव्यनें सुंदरी सुंदर, हाथे आवी कोण हारें
रे ॥ १८ ॥ प्रा० ॥ तेहतो मरण तपस्वी पाम्यो, एहलुं मन मुज सा
यें ॥ कुण मूरख कर आव्युं ठांमे, चित्त करुं मुज हाथे रे ॥ १९ ॥
प्रा० ॥ हास्य करंता निज वश कीधी, लंघटनें शी बार ॥ घरणी करी
नें राखी घरमां, धन पण राख्युं सार रे ॥ २० ॥ प्रा० ॥ केइक दिन
पोहोतुं अनुकरमें, देवपुरें ते जिहाज ॥ जेटणुं लेइ राजानें मलि
उ, तूठो ते नरराज रे ॥ २१ ॥ प्रा० ॥ तेहलुं दाण मूक्युं नर
रायें, पोहोतो जिहाज मजार ॥ ठेठे खंमैं बारमी ठालें, पद्म
कहे अधिकार रे ॥ २२ ॥ प्रा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिनथी आव्युं चालतुं, जिहाज ए सांनव्युं जाम; निकव्यो धरण
ते निरखवा, दोय जण दीठां ताम ॥ १ ॥ हरख्यो हैयडे हेजशुं, दू
जाणां ते दोय; पण आसन देइ पूठियुं, पूर्ववृत्तांत पलोय ॥ २ ॥ सं
जलाव्यो तिणें सामटो, सुवचन चिंते शेर; अहो अहो कर्मनी गति

अजय, देव देवत्री देव ॥ ३ ॥ केवल कीध अकाज में, समीहित
पण नदि निहः चिंती आग्ने वचनयी, कारज सुंदर कीध ॥ ४ ॥
जीवंता तुम जाईया, व्यो तुम सयजी लाठि; कहे धरण तुमें सवि
कणुं, पाठि न गखी पाठि ॥ ५ ॥ मुजनें जाया मेलवी, कीधुं सधलुं
कामः जायानें कहे जाईयें, आवो पुरमां आम ॥ ६ ॥

॥ दाज तेरमी ॥

॥ वापडजी रे जिजडजी तुं कां नवि बोले मीतुं ॥ ए देशी ॥

॥ सांननजां जाई नागीचमिद्र, काम करे ठे केहवां ॥ लखमी कहे
जान नयगीमां, घापण जागुं रहेवा रे ॥ १ ॥ सां० ॥ आज तुमें
पण इहां रहेवुं, धरणें मानी यात ॥ स्नान करावीनें दोय चिंते, करवो
पणनां यात रे ॥ २ ॥ सां० ॥ मदिरा पाईनें आहार कराव्यो, आवी
जेमनें गयणी ॥ नद्या सुंदर पाथरी सूतां, धरण तथा निज घरणी रे ॥
॥ ३ ॥ सां० ॥ मुंजाणा मदिरानें जोरें, तेहवे अवसर जाणी ॥
आंतां दोयां पण नें फनव्यो, लखमी हर्ष जराणी रे ॥ ४ ॥ सां० ॥
मुचं जागीं बहु मज्जनें, मायन कांठे ठाम्यो ॥ ते यानक गचां तेहवे
जीनज, यायगं आवया मांम्यो रे ॥ ५ ॥ सां० ॥ चेतन जाधुं तव ते
चिंते तुं ए नयुं केवुं ॥ इंजान अथवा मतिवित्रम, अथवा सत्य
ए केवुं रे ॥ ६ ॥ सां० ॥ मायन तट देखीने विचारे, निश्चय साधुं एह ॥
नज्जिनें चिंते जहीनुं, चमिद्र अहो दुःखरेद रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ उन्मार
में न केन प्रपन्ना, दुःखदायक ए जोग ॥ मुख्य मीठी वली दिलथी
जगी, मदिना जाजनां गोग रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ अग्नि पवननें जुजंग अ
जगाये, नानी चिन न कजाने ॥ दोषनी खाण कलेजनुं कारण, मोहें
जगत कजाय रे ॥ ९ ॥ सां० ॥ यतः ॥ "अनृतं सादसं माया, मूर्ख
व्यभिचिंजता ॥ अनौचित्यं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥ १ ॥
अनर्थं ज्ञानं नय, धर्ममार्गस्य दीपिका ॥ शुचां कंदः कलेर्मूर्त,
नयानां नानिर्गमना ॥ २ ॥ जलणो विषेण्ड सुदं, पवणो नृयगाय
पण जलण ॥ मदिना मणो न वेण्ड, वदणहि विणय मद्रस्मेहि

॥ ३ ॥ ” अथवा सुवचन श्रोतने न घटे, पण एहनो शो दोष ॥ विषय
 राग वाह्यो नारीशुं, ते कारण ए शेष रे ॥ १० ॥ सां० ॥ इण अ
 सरें तिहां टोपश्रोतना, पुरुष खोलता आव्या ॥ देखी नयणें आंशु
 रेंडी, इण परें तिणें बोलाव्या रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ रातें पण तुमें किम
 नवि आव्या, श्रोतनें उंपनी चिंता ॥ अमनें जोवा मोकल्या श्रोतें,
 आव्या इहां खोलंता रे ॥ १२ ॥ सां० ॥ चालो श्रोतनें दरिसण आपो,
 श्रोतनी चिंता जांगो ॥ अहो पुरुषनो अंतर देखो, कुमर विचारवा
 लागो रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ यतः ॥ “वाजिवारणलोहानां, काष्ठपाषा
 णवाससां ॥ नराणां रमणीनांच, अंतरं महदंतरं ॥ १ ॥” ते नरसा
 रें धरण ते चाव्या, मजिथ्या श्रोतने जाम ॥ एकांतें बेसारी श्रोतें,
 वात ते पूढी ताम रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ आमण दूमण एम केम दीसो,
 होय ते नांखो साचुं ॥ तव ते धरण विचारे मनमां, किम करी फाटे
 माचुं रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ वात लज्जामणी नवि कहेवानी, नयणें
 नीर जराय ॥ कहे कांईए नहीं श्रोत कहे सुणो, चीनथी जयाज जे
 आय रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ ते तुमने मलियुं के नाहीं, तव ते गदगद वाणी
 ॥ मलीयुं कुमर कहिने रेडे, आंशुधार वहाणी रे ॥ १७ ॥ सां० ॥
 मानुं नारी मरण लही एहनी, अन्यथा एहवो न शोक ॥ श्रोत कहे
 ठे कुशज प्रियाने, जिहाज तेहज के फोक रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ वाह
 ण तेहज ने नारी जीवे, श्रोत कहे तव एम ॥ तुमनें शोक कहो हवे
 श्योठे, जव सहुने ठे खेम रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ जिम तिम उत्तरने पड
 उत्तर, बोले कुमर जिवारें ॥ श्रोत कहे शूने मनें नांखे, मनमां तुं शुं धारे
 रे ॥ २० ॥ सां० ॥ तें मुज गुरुनावें पडिवजिउ, किम गुरु आणा
 खंमे ॥ नवि कहेवानुं पण ते धरणो, आणायें कहेवा मंमे रे ॥ २१ ॥
 सां० ॥ जीवितथी नारी जीवे ठे, पण शीलें नवि जीवे ॥ श्रोत कहे
 किम जाण्युं तव कहे, कारयथी जिम दीवे रे ॥ २२ ॥ सां० ॥ किणी
 परें नीपनुं तव ते धरणें, जोजन जिमणथी मांमी ॥ सयल कहुं
 जिम ठेहली वारें, सायर तट गयां ठांमी रे ॥ २३ ॥ सां० ॥ अनुक्रमें

जीवनों तुमने मज्जित, बात ते सर्व प्रकाशी ॥ ठेठे खंभे तेरमी ढालें,
पूरे वान ते जाशी रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुवचन उपरें जंतरजी, कोप्या जेम कृतांत; धरण धरी निज धाम
मां, आच्यो गव उपांत ॥ १ ॥ बात सयल तिहां वीनवी, नरपति
करवा न्याय; तेडाच्यो सुवयण तदा, प्रणमे आवी पाय ॥ २ ॥ पूठे
नृप परगट कहां, सुणीये रुद्धि सफार; केम कमाणा तव कहे, हरखी
दया मजार ॥ ३ ॥ आवि रुद्धि कुज अनुक्रमें, नृप कहे किहांथी
नारि; मात पिताये मुजनें, परणावी बहु प्यारि ॥ ४ ॥ सन्मुख नर
पति जेवनें, जांवे सांजजी जाम; शेठ कहे सुण साहिवा, अलिक
कहे ए ग्राम ॥ ५ ॥ सुवचन कहे साचुं किशुं, शेठ कहे तव सार; कं
पननें ए कामिनी, धरण तणी अवधार ॥ ६ ॥ साचुं एहज सांजले,
सांजजी उपनी शंक; पण बोले परगट पणे, मानुं मन निःशंक ॥ ७ ॥

॥ राज चन्द्रमी ॥ श्रीनमिजिननी सेवा करतां ॥ ए देशी ॥

॥ अयो अपुन्य तुंदी निमिजित, कहो इहां प्रत्यय तास साचो जी ॥
गजहार ए नर बोले, शेठ साधारण खास वाचो जी ॥ १ ॥
॥ अयो ॥ एह प्रत्यय जे तेदज जीवे, सुवचन बोले ताम राया जी
॥ अयोनाम काने नवि सुणीयुं, एतो कहे ठे ग्राम जाया जी ॥ २ ॥
॥ अयो ॥ परतो तुम तव ते नगगये, धरण तेडाच्यो पास तेह जी ॥
निज नर सुनी नारी तेडावी, आवी तिहां उच्चास एह जी ॥ ३ ॥
॥ अयो ॥ उठा विण जेवनें उपगये, आच्यो गव हजुर जाम जी ॥
पूठे न नारी ए नरनां, योज के नदी नुर ताम जी ॥ ४ ॥ अहो ॥
नारी नरे कळीये नवि दीजे, पूठे धरणनें गव देजे जी ॥ ए तुमची
जामी के नारी, तव कहे धरण ते गव तेजे जी ॥ ५ ॥ अहो ॥
॥ अयो ॥ एह जे नवि सुणीयुं, दये पुढ्यानुं काम गुं ते जी ॥ नृप
॥ अयो ॥ एह जे नवि सुणीयुं, दये पुढ्यानुं काम गुं ते जी ॥ ६ ॥ अहो ॥
॥ अयो ॥ एह जे नवि सुणीयुं, दये पुढ्यानुं काम गुं ते जी ॥ नृप

कहे धरण जणी ए सुवचन, उलखे के नहीं केह मागे जी ॥ ७ ॥
 ॥ अहो० ॥ धरण कहे नृप एहने पूठो, एह कहे ते प्रमाण माहारे
 जी ॥ तव सुवचने पूठे नृपति, ठे कांईए उलखाण ताहारे जी ॥ ८ ॥
 ॥ अहो० ॥ सुवचन कहे ए कुणने हुं कुण, राय कहे ए वात रही
 जी ॥ वाहणमां डव्य किशुं ठे दाखो, सुवचन कहे नरतात अही
 जी ॥ ९ ॥ अहो० ॥ कनक इंठयो दश सहस संपुट ठे, पूठ्या पठी
 कहे एम धरणो जी ॥ राय कहे तस तोज कहो तुमें, कहे नवि
 जाणुं नेमकरणो जी ॥ १० ॥ अहो० ॥ निजवस्तुनो तोज न
 जाणो, तव कहे एमज एह कीथां जी ॥ सुवचननें नांखे तव बोले,
 धरणे वचन कहां जेह सीथां जी ॥ ११ ॥ अहो० ॥ नरपति याको
 न्याय करंतां, तव कहे धरण विचारी रंगें जी ॥ अलिकवादी हुं एह
 ने आपो, ए धननें ए नारी संगें जी ॥ १२ ॥ अहो० ॥ सुवचन कहे
 मुऊ आल देईने, बोले ठे जुउ केम नाई जी ॥ टोपशेठ तव त्रटकी
 बोळ्यो, रे पापी कहे एस कांई जी ॥ १३ ॥ अहो० ॥ एहबुं करीनें
 एम तुं बोले, जेठ कहे वली रोप आणी जी ॥ शुं बहु बोले जो ए
 नारी, धरणनो सयलो कोश जाणी जी ॥ १४ ॥ अहो० ॥ कहुं एह
 मां जो जूतुं होवे, तो घरबारशुं जीव आपुं जी ॥ धोज करावो ते
 अमें करीयें, पण एहनें अमें खिव नापुं जी ॥ १५ ॥ अहो० ॥ धर
 ण विचारे ए मुऊ स्नेहें, बोले इणपरें तेण माहारे जी ॥ न घटे उदास प
 णुं करी जंपे, सुणो नृप सखुं दिव्येण वारे जी ॥ १६ ॥ अहो० ॥
 वाहणमां सोवन संपुट जे ठे, तेहमां धरण मुऊ नाम होशे जी ॥
 जो सुवचन निकले तो एहनुं, राय कहे थयुं काम तोशे जी ॥ १७ ॥
 ॥ अहो० ॥ पंचोली लेवा मोकलिआ, लाव्या संपुट ताम निरख्या
 जी ॥ धरण नाम दीतुं नहीं ज्यारें, लोक थया सहु ताम विलखा
 जी ॥ १८ ॥ अहो० ॥ राय कहे नवि अनिधा दीसे, सुवचन कहे न
 रराय जाणो जी ॥ पण तुम आगल अलिक कहिनें, किम धारे ए
 ठाय प्राणो जी ॥ १९ ॥ अहो० ॥ घरबारनें जीव कबुल कखो ठे, धर

लने कहे ए केम राय जी ॥ धरण कहे जूतुं नवि बोलुं, फोडो संपु
 टने एम ताय जी ॥ २० ॥ अहो ॥ फोडया संपुट नाम ते दीतुं,
 सांय्यो राय अपार ताम जी ॥ महा चोर ए वाणिग वेशें, करे अन्या
 य प्रकार काम जी ॥ २१ ॥ अहो ॥ जमघर सुवचन शेर पहोचावो,
 अजडिने देशनिकाल दीजें जी ॥ धरणने डव्य सर्व ए सोंपो, वलि
 कदा कांय तनकाल कीजें जी ॥ २२ ॥ अहो ॥ धरण कहे प्रभु
 ड्यें सगियुं, सुवचन अजय प्रधान करियें जी ॥ चिंते राय अहो नर
 अंनर, अं एदने उपमान धरीयें जी ॥ २३ ॥ अहो ॥ नृप कहे ध
 रण ए वान अयटती, एण तुज वचन लंघाय तिणें जी ॥ तुज मन
 माने निम कर तव ते, बोल्यो कीध पसाय वयणें जी ॥ २४ ॥ अ
 हो ॥ लंछे ग्वंमं टाज चौदमी, समरादित्यने रास जांखी जी ॥
 पंक्ति उत्तमविजय सुसेवक, पद्मविजय सुविलास राखी जी ॥
 ॥ २५ ॥ अहो ॥ सर्व गाथा ॥ ४१८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरु पंचाती शेरिया, सुवचन लेई साथ; धरण लेई प्रथवी धणी,
 नरु गया नगिनानाय ॥ १ ॥ संपुट धरणने सोंपीया, शेरें गणी
 ने सवे; धरण सुवचनने धीरता, आपे इम निर्गर्व ॥ २ ॥ कुंणने दे
 गवशें कदो, वान ग्वजिन नवि होय; ग्वद मूकिनें खांतिगुं, साहस
 धरेंवि सोय ॥ ३ ॥ लाख नोवन तुमें नवि लख्या, आदर मुजनें
 आप; इम मुजनें नम आगियुं, लाखनो ग्यो आलाप ॥ ४ ॥ एह
 मंजम नयणें अने, जांगुं तुम इणि जांत; तुम मन माने तेडलुं, सो
 वन लो यई मान ॥ ५ ॥ लाख्यो सुवचन नवि लख्यो, धरण यई
 मन धीर; लख लख नोवन आर्षीयां, परनी जांजे पीर ॥ ६ ॥

॥ दास पद्मगमी ॥ गट गट जांजां जन नोवन बाजे ॥ ए वेशी ॥
 ॥ नृपने लेई मनमान, टोपशेठगुं आख्या आन रे ॥ जस नोवन
 लखनो बाजे ॥ ए आरणी ॥ कर्ी आननें नोजन कीया, बहु दान
 जगजने दीसो रे ॥ १ ॥ जस ॥ टोपशेठने चरणो लागो, टोपशेठ

कहे शुं मागो रे ॥ जस० ॥ कहे धरण जो न कहो नाकारो, तो
 मागुं एकज वारो रे ॥ १ ॥ जस० ॥ हरबें करी चिंते शेर, हुं धन्य स
 दु मुज हेत रे ॥ जस० ॥ सुरतरु चिंतामणिनूत, मुज पास मागे
 अदनुत रे ॥ २ ॥ जस० ॥ कहे शेर सुणो सुविनीत, पुत्रकलत्रने ए
 सवि वित्त रे ॥ जस० ॥ दासत्व निमित्तें जाचो, तोही मुज मन नवि
 काचो रे ॥ ४ ॥ जस० ॥ कहे धरण जो एम विचारो, त्रण वचन
 आपो सुखकारो रे ॥ जस० ॥ त्रण वचन दियां तव मागे, मुज स
 हस रतन द्यो रागें रे ॥ ५ ॥ जस० ॥ दीधां तिहां रयण हजार, ते
 हमांथी धरणकुमार रे ॥ जस० ॥ लेई आठ रतन करी पूजा, शेर
 जी तुम सम नहीं दूजा रे ॥ ६ ॥ जस० ॥ इणि परें गुणस्तवना कर
 तो, पग वचमां निज शिर धरतो रे ॥ जस० ॥ मुज एह प्रार्थना जाणो,
 शेर चिंते तव समजाणो रे ॥ ७ ॥ जस० ॥ ठलिउं मुज वचनें एणें,
 किम ना कहेवाये इणो तेणें रे ॥ जस० ॥ शेरें बहु आदर करीयो,
 निज नयरनणी संचरीउं रे ॥ ८ ॥ जस० ॥ निज नयरने बाहिर
 आवी, मेरा दीधा चुन जावी रे ॥ जस० ॥ नरपति तव सामो आवे,
 महा महोत्सवशुं पधरावे रे ॥ ९ ॥ जस० ॥ निज जुवनें लावे राया,
 स्नान नोजन करत पसाया रे ॥ जस० ॥ बहु नूषणने वली स्नान,
 पोहोचाडया निज घरथान रे ॥ १० ॥ जस० ॥ माय तायने हरख न माय,
 सहु चैत्यें पूजा विरचाय ॥ जस० ॥ तेडया वली रायने घेर, सत्कार
 कस्यो बहु पेर रे ॥ ११ ॥ जस० ॥ परधान पागीआ जेह, सहु सत्काखा
 चुन रेह रे ॥ जस० ॥ पूढे हवे मायने ताय, तुम घरणी कहो किहां
 जाय रे ॥ १२ ॥ जस० ॥ कहे धरण सुणो तुमैं वात, ए मत पूढो
 अवदात रे ॥ जस० ॥ जे नारीने उचित ते कीधुं, जनकादि विचारे
 ए सीधुं रे ॥ १३ ॥ जस० ॥ मुझा देउं एहने आज, एम चिंतवी ते
 पुरराज रे ॥ जस० ॥ आव्यो घर ऊठी राय, तव धरण उचित करे
 नाय रे ॥ १४ ॥ जस० ॥ आगमन प्रयोजन कहीयें, नृप कहे मुझा
 तुम लहीयें रे ॥ जस० ॥ कहे धरण न मुझा काम, एक वात सुणो

गुण काम रे ॥ १५ ॥ जस० ॥ कहे राय कहो ते करीयें, कहे धर
ण जो मुक्त आदरीयें रे ॥ जस० ॥ तो मूको बंदीवान, तुम राज्यमां
अनयनं जान रे ॥ १६ ॥ जस० ॥ रायें दीधी तव आण, मुक्त राज्य
मां कीजें जाण रे ॥ जस० ॥ हिंसा नवि करजो कोय, नहिंतर नृपदं
न ते वीर रे ॥ १७ ॥ जस० ॥ नरपति निज स्थानक आव्या, गुण
धरणा नणा चित जाव्या रे ॥ जस० ॥ बहु कालें मित्र जे मलीआ,
नेदणुं जीतामां दलीआ रे ॥ १८ ॥ जस० ॥ गया मलयसुंदर उ
द्यान, निद्रां नागजतानें आन रे ॥ जस० ॥ नामें रे विलग कहायो,
ते कृपित नार्गनिं जायो रे ॥ १९ ॥ जस० ॥ बहु लालि पालि करे
नाम, देखनिं धरण उद्यान रे ॥ जस० ॥ सांनरी लक्ष्मी ते ठाम, चिंते
अर्थे दुजय काम रे ॥ २० ॥ जस० ॥ कामी परमार्थ न देखे, वैरा
अर्थी एम लेखे रे ॥ जस० ॥ जाय आगज धरणकुमार, अशोक
अर्थी निण ठार रे ॥ २१ ॥ जस० ॥ प्रासुक्यानक तिहां दीठा, हे
ठामां जागा मीठा रे ॥ जस० ॥ बहु शीघ्रतणो परिवार, गयो चित्त
अर्थी ठामविहार रे ॥ २२ ॥ जस० ॥ अर्हदत्त आचारयनाम, नाणी
अनंतं सुखरंग रे ॥ २३ ॥ जस० ॥ जित्यो जिएं खूब अनंग, पण ईहे
अनंग विचारे धीर रे ॥ जस० ॥ पन्नरमी ठेके खंमैं, पद्ये कही ढाल
अनंग रे ॥ २४ ॥ जस० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४७ ॥

॥ दोहा ॥

१ ॥ आचारज अग्रजोहितें, धरण विचारे धन्य ; जीवित सफलं जगत
मां, आगमन जास अगन्य ॥ १ ॥ कंचनने बलि कामिनी, सयण कु
सुम कय लोक ; ईदजाज परें उन्नये, फिरी करे पापज फोक ॥ २ ॥
अनंगमां मुक्त एव रे, पाहुं जे परिवार ; केवल मोदनी कल्पना, धर्म
निज न आचार ॥ ३ ॥ नियमा करी अर्हायें नदी, धर्म ने गृहेतां
अनंग ; आनरे जिता अति, नहिं निद्रां धर्मनं नाम ॥ ४ ॥ अनें तज
न आचार, आन नदी निजें कांय ; चितमां अग्रे चाग्रिने, समकूं

आव्युं सोय ॥ ५ ॥ चरण कमलनी चौपश्युं, वारु साथ वयंस; धर्म
लान दीधो धुरें, आचारज अवतंस ॥ ६ ॥

॥ ठाल शोलमी ॥ जीरे जीरे स्वामी समोसखा ॥ अथवा,
तुज विण गति नहिं जंतुनी ॥ ए देशी ॥

॥ गुरुचरणें जब उपविशे, गुरु कहे किहांथकी आव्या रे ॥ धरण
कहे आव्या इहांथकी, चारित्र्युं अमें नाव्या रे ॥ १ ॥ श्रीगुरुराज
कृपा करो ॥ ए आंकणी ॥ अहो अहो आकृति एहनी, एहनो जुब
विवेक रे ॥ चित्तपरीक्षा कारणें, बोढ्या मुनिवर ठेक रे ॥ २ ॥ श्री० ॥
इंद्रियलालच ठांमवी, नवि करवो ते कषाय रे ॥ चित्त निरीहपणे
करी, संजम पालवुं थाय रे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ विषय अनादिनी वासना,
तजवी दोहेली जाण रे ॥ न तजे तो ए गृही समो, ठांम्युं न ठांम्युं
समाण रे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ कर्मदोषें न पाली शके, असदालंबन करतां
रे ॥ संजम ठांमे ते नवि गृही, मुनि पण नहीं रहे फिरता रे ॥ ५ ॥
श्री० ॥ वे जब निष्फल तस गया, तिणें तुलना कखा पाखे रे ॥ न घटे
घर तुज ठांम्युं, धरणो तव एम जांखे रे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ जगवन् तुमें
साचुं कछुं, तजवा जोग्य ए धाम रे ॥ उपादेय चारित्र ठे, तुलना
विवेकनुं काम रे ॥ ७ ॥ श्री० ॥ आचारज मन चिंतवे, जाण्यो यथा
र्थ संसार रे ॥ बोधि लहे जिनधर्मनी, करुं प्रशंसा विस्तार रे ॥ ८ ॥
श्री० ॥ बूजे जिम मित्र एहना, बोले एम विचारी रे ॥ जाणवा
जोग्य ते जाणियो, वत्स धन्य माता ताहारी रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ दुर्लज
बोधि ते तें लही, करि सफलो अवतार रे ॥ ताहारुं कारज सीज्जे, ले
तुं संजमजार रे ॥ १० ॥ श्री० ॥ विषयना लालची जीवडा, परमारथ
नवि देखे रे ॥ इहां दृष्टांत ते माहरो, सांजलो चित्त विशेषें रे ॥ ११ ॥
॥ श्री० ॥ इणहीज क्षेत्रमांहिं वसे, अचलपुरी नामें नयरी रे ॥
जितशत्रु तिहां नरपति, जिणें जीत्या सहु वैरी रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥
अपराजित सुत तेहनें, समरकेतु बीजो जाण रे ॥ अपराजित जुवरा
जियो, बीजो कुमरनें ठाण रे ॥ १३ ॥ श्री० ॥ कुमरनें आप्युं उजे

लीनुं. नोगव्या जनुं राज रे ॥ समरकेसरी नामें राजीयो, ययो उ
 छंउ ते काज रे ॥ १४ ॥ श्री० ॥ अपराजित ते उपरें, चढिउ एक
 दिन तेह रे ॥ जय करी जाम पाठो वल्यो, आवणनें निज गेह रे ॥
 ॥ १५ ॥ श्री० ॥ धर्मीराम नन्निवेशें, आव्यो देखतो ताम रे ॥ पुण्य
 उदय मानुं पग्गडो, सूरितर रोह नाम रे ॥ १६ ॥ श्री० ॥ देखी सं
 वेग ते उपन्यो, पूठे धर्म विचार रे ॥ देशना दिये गुरु तेहने, पडिवू
 ज्यो ते कुमार रे ॥ १७ ॥ श्री० ॥ चारित्र क्य उपशम थयुं, इंडजा
 न नम जाणी रे ॥ सवि संसार दीक्षा लिये, तप संजम करे नाणी
 रे ॥ १८ ॥ श्री० ॥ गुरु चरणें हवे विचरतां, पोहोता नगरा गामें रे ॥
 निदां उठेणीया आवीया, साधु वंदनकामें रे ॥ १९ ॥ श्री० ॥
 गेहसगिता शिष्य जे, आर्यगहु गुण गेह रे, तेहना सुनिवर एह ठे,
 गेह गुन नमनेह रे ॥ २० ॥ श्री० ॥ पूठे गुरु उल्लेणीमां, निरुप
 समविचार रे ॥ मुनि कहे सुंदर विहार ठे, पण एक बात विचार रे ॥
 ॥ २१ ॥ श्री० ॥ गेह नमें आंजमी, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ ओताजन
 सुगजां दवे, आगल वान रसाल रे ॥ २२ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७६ ॥
 ॥ दोहा ॥

पण नृप पुंगवितपुत्र दाय, नइक नहीं तस जाव; मुनि उपसर्ग
 मया करे, देखाने निज दाय ॥ १ ॥ अपराजित मुनि एम सुणी, चि
 नमां करे निचार; समरकेतु नमजण विना, अहो प्रमाद अपार ॥ २ ॥
 पुत्रने पण नवि पाजये, आणा लही गुरु आज; जाउं हुं उल्लेणीयें,
 समजाये सन ताज ॥ ३ ॥ साधुवपयी गुन नहीं, बोधबीज बलि
 दाय; मुनि अने नमजावया, एउ विचारी उपाय ॥ ४ ॥ आण ल
 रा आनायेनी, आव्या ने उदण; आर्यगहु गह अनुसरी, वसी
 मा आर्यगजा ॥ ५ ॥

॥ दान नमस्स ॥ मुनयो ज्ञानें जाजिम जाटणी ॥ ए देशी ॥
 ॥ गेहनी नमसे मुनिवर बोझीया, नुम प्राहुणा अणगार ॥ आकार
 ॥ गेहनी नमसे नम आर्यचि, अपराजित कहे तवार ॥ १ ॥ मुनिवर

स्याद्वाद समजे सहु ॥ ए आंकणी ॥ कहे हुं आत्मलब्धिक बुं तेणे
 करी, देखाडो तुम जेह ॥ थापनाकुल तिहां जावुं नवि घटे, मूके
 चेलो एक तेह ॥ १ ॥ मु० ॥ कुल देखाडीनें वली वारीआ, एह प्र
 त्यनीकनुं गेह ॥ एम कहीनें चेलो पाठो वल्यो, पेठा तिहांहिज ते
 ह ॥ २ ॥ मु० ॥ मोहोटे शब्दे धर्मलान दियो, देखी अंतेउर ता
 म ॥ अहो मुनिनें करशे कदर्थना, जाणशे कुमर ते जाम ॥ ४ ॥
 ॥ मु० ॥ संज्ञा करे जे जाउं वहेला फरी, बधिर परें मुनिराय ॥ ध
 र्मलान कखो तेहथी आकरो, जिम ते कुमर सुणाय ॥ ५ ॥ मु० ॥
 आव्या दोय कुमर दोडया तिहां, मनमां हर्ष न माथ ॥ देई द्वारनें
 अतिशय मुनितणे, वंध्या मुनितणा पाय ॥ ६ ॥ मु० ॥ धर्मलान
 दीधो तव बोलीया, नाचो तुमें अम पास ॥ मुनि कहे गीत वाजित्र
 विण नाचवुं, केम शोचे सुविजास ॥ ७ ॥ मु० ॥ कुंवर कहे अमें
 गीत वाजित्र करुं, मुनि कहे ताम श्रीकार ॥ विषम तालगीत वाजित्र
 इणें कखुं, कृत्रिम कोप अणगार ॥ ८ ॥ मु० ॥ कहे रे मूर्ख गोपना
 ठोकरा, नवि जाणो रे विन्नाण ॥ अमनें नचाववा होंश घणी करो, सु
 णि कोप्या ते अजाण ॥ ९ ॥ मु० ॥ मुनिमारणनें साहमा दोडी
 आ, तव मुनि करुणारेवंत ॥ अवर उपाय नहिं इहां कामनो, चिं
 तवे इणि परें चित्त ॥ १० ॥ मु० ॥ कुशल घणुं नियुद्ध व्यापारमां,
 हलूवें एकनें जालि ॥ सांध्यो सर्व उतारी अंगनी, बीजो आव्यो त
 स ढाल ॥ ११ ॥ मु० ॥ तेहने पण तिमहीज मुनियें कखो, उधा
 डी हवे बार ॥ निज ठामें जई एकांतें करे, सजाय ध्यान अणगार ॥
 ॥ १२ ॥ मु० ॥ कुमर पडया हवे हाले चाले नहीं, दीठा सहु परिवार ॥
 पाणीयें सींचे तनु उलांसता, बोले न जाम लगार ॥ १३ ॥ मु० ॥
 राय पुरोहितने संनलावतां, सुणो इणें व्यतिकरें एह ॥ साधुयें कु
 मर कख्या इणविधथकी, जूपति खबर करेह ॥ १४ ॥ मु० ॥ जूप
 सूरि पासें जई प्रणमीआ, जगवन् खमो अपराध ॥ कहे बालकनो तव
 सूरि बोलीया, अमें जाणुं नहीं साध ॥ १५ ॥ मु० ॥ तव वृत्तांत

तनु गये काणुं, तव बोझ्या सूरियाय ॥ अतिप्रतिबंधी निज तनु उपरें, साधे
 तव अमाय ॥ १६ ॥ मु० ॥ नित्य परलोकधी बोहे मुनिवरा. स्वमता
 समता रे जाय ॥ प्राणना जययी दुःख देवे नहीं . ए उत्सर्ग स्वजा
 न ॥ १७ ॥ मु० ॥ पण कोई आचरीयुं अपवादधी, होयतो पूबुं रे
 साय ॥ एम करी पूने तवजा साधने, पण ते कहे निराबाध ॥ १८ ॥
 ॥ मु० ॥ एद्र वातमां अमें जाणुं नहीं, सूरि कहे माहाराय ॥ ए अ
 न मुनियें तो कीधुं नहीं, नृप कहे जूठ न थाय ॥ १९ ॥ मु० ॥ सू
 रि कहे एक मुनिवर प्रादुणा, कीधुं होय जो तेण ॥ राय कहे ते सा
 धुं तियां अने, जसें पूबुं हुं जेण ॥ २० ॥ मु० ॥ एक मुनिवरें जई
 तेदनें वागव्या, गाल तरुतजें ताम ॥ ध्यान धर्मनुं मुनिवर धारता,
 अंगे नग्यनि जाम ॥ २१ ॥ मु० ॥ उलखी मुनिवरनें चित्त लाजिउं,
 प्रगल्भो नायना पाय ॥ धर्मज्ञान देईने एम कहे, सांजल रे माहाराय
 ॥ २२ ॥ मु० ॥ उहे गंधें सत्तरमी कही, उत्तम एहवी ढाल ॥ पद्म
 पित्रय कहे श्रीता सांजलो, आगल वातरसाल ॥ २३ ॥ मु० ॥ ५०४ ॥

॥ दोहा ॥

१. कुमरें आरज जातव्युं, मुनि उपसर्ग महेत; करतां वाग्या कांय
 नति, निजगयें निगयेंत ॥ १ ॥ कुमर अनाथ ते कीथला, तव ज
 न नग्यानेत; नृप कहे जाज्यो मुनिवरु, अधिक कछुं अम हेत ॥
 २. ॥ अमुजव राजें अम जणी, दोष ते खमो दयाल; कुमर अंग
 नाती करी, एउवुं नहीं करे आज ॥ ३ ॥ संयो तो माजी कहे, मु
 निवर जई मयागय; अमची दीजा आदरे, न करे फरि अन्याय ॥
 ४. ॥ मुन तेरे में याजा करी, पण तस जोउं परिणाम; मुनि
 कहे एउं वेगने, नृपनि पनणे ताम ॥ ५ ॥ बोली न शके वापडा,
 माजी वया दयाव; अयनीयनिजुं आचीया, ठावा कुमरने ठाय
 ६. ॥ आरजव पनें जिन्या, दीजा काप्र दयाय; बोले पयाणे बज
 ७. ॥ ५०५ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥

॥ शेंत्रुंजा गढना वासी रे, मुऊरो मानजो रे ॥ ए देशो ॥

॥ मुनिवर कहे सुणो वाणी रे, मुनिनी कदर्थना रे ॥ ते तरु फूल ए फल तो, नरगनी वेदना रे ॥ तेहनो पश्चात्ताप जो होय, तो साह्यकारी थाउं परलोय ॥ १ ॥ चरणनी सेवा सारी रे, नवदुःख कापरो रे ॥ उपडव सघला टाली रे, शिवसुख आपरो रे ॥ कुमर कहे प्रभु कस्यो उपगार, लाज्या अमें अमचे आचार ॥ २ ॥ च० ॥ लेखुं दीक्षा पामी रे, मात पिता तणी रे ॥ आणा तव ते बोढ्या रे, दीधा गुरु नणी रे ॥ जोडयां अंगने गुणसंघात, लीधी प्रवर्ज्या करि प्रणिपात ॥ ३ ॥ च० ॥ दीक्षा पालतां नावें रे, बिहु जनने तदा रे ॥ केईक दिन गया जाम रे, हवे सुणो एकदा रे ॥ कर्म उदयें पुरोहित कुमार, जाण्यो यद्यपि धर्मनो सार ॥ ४ ॥ च० ॥ प्राणो दीक्षा दीधी रे, एम मन आवीयो रे ॥ गुरु उपरें द्वेष जाग्यो रे, पण न खमावीयो रे ॥ ईशानदेव लोकें उपनो देव, रतिसागरमां पडयो ततखेव ॥ ५ ॥ च० ॥ एक दिन अप्सरा साथें रे, बेठां उपनो रे ॥ दीनजाव वलि निझा रे, कामराग नीपनो रे ॥ कंण्या कल्पवृक्ष देखाय, सुरजि कुसुममाला कुमलाय ॥ ६ ॥ च० ॥ लाजने शोना नाठी रे, देवदुष्यज खश्यां रे ॥ कोप करे घणो अरति रे, नयन नम्यां जिश्यां रे ॥ हैये उपनो खेद तेवार, देवीउ विलपे तेम परिवार ॥ ७ ॥ च० ॥ एम अज्ञानें विलपुं रे, शाता शी इहां रे ॥ तीर्थेकर पद्मनाज रे, पूबुं जइ तिहां रे ॥ किहां उपजीश हुं चिंते देव, सुलज दुर्जनबोधी जिनदेव ॥ ८ ॥ च० ॥ आव्यो पूर्वविदेहें रे, जिनवरनें नम्यो रे ॥ पूठया पढी कहे जिनजी रे, ऊपजशो तुमो रे ॥ जंबुद्वीपना नरत मजार, कोसंबी नगरी अवधार ॥ ९ ॥ च० ॥ आइश तुं दुर्जनबोधी रे, गुरुद्वेषें करी रे ॥ इत्यादिक नव पहिलो रे, नाख्यो तस चरी रे ॥ सांजली कहे अहो गुरु प्रत्यनीक, अल्पें एवडा उदयनी नीक ॥ १० ॥ च० ॥ आ लोकनो उपकारी रे, जिन कहे जाणीयें रे ॥ श्यो तस प्रत्युपकारें रे, कहोने

बग्याणियें रे ॥ परलोक उपगारनी शी वात, टाले अन्नाणनें मिथ्या
 न ॥ ११ ॥ च० ॥ सुविद्रित किरिया आपे रे, थापे गुणजणी रे ॥
 जनन जगनें मरण रे, रोग शोक अवगुणी रे ॥ टाले जे संसार आ
 वान, बाध्यत सुख पामे सुविलास ॥ १२ ॥ च० ॥ एहवा गुरुने वेषें
 रे, गुणवपी-थयो रे ॥ पूर्वधी विपरित थाये रे, अति संसार जयो रे ॥
 अब कहे प्रभु नाचुं एह, किहारे ए कहां कर्मनो ठेह ॥ १३ ॥ च० ॥
 प्रभु कहे जगता जवमां रे, अंत एहनो अज्ञे रे ॥ मूंगो बीजुं नाम रे,
 तुल्य आता वशें रे ॥ देव कहे पहेजुं शुं नाम, जिणें बीजुं ए नांखो
 नामि ॥ १४ ॥ च० ॥ पहेजुं नाम अशोक रे, जिनजी कहे हतुं रे ॥
 नांजत तेहनो देतु रे, मूंगो जिम अतुं रे ॥ कोसंबी एहज पुरसार,
 अनीन काजनी वात विचार ॥ १५ ॥ च० ॥ तापस नामें शेर रे, दा
 नादिक करे रे ॥ पण परमाटी तेह रे, इय धणुं धरे रे ॥ करतो नि
 न्य निन्य बहु व्यापार, आरत ध्यान धरे ते अपार ॥ १६ ॥ च० ॥
 पर सुअर अयो मरीनें रे, निजवर देखीनें रे ॥ जाति समरण ज्ञान रे,
 नास निजोरीनें रे ॥ एक दिन वापनो दिवस ते आय, जोजननी वेला
 तव आय ॥ १७ ॥ च० ॥ पीरसवा वेला जाम रे, आवी ठूकडी रे ॥
 मांस सेई माजारी रे, चाव्यो दडवडी रे ॥ तव सूपकारी चिंते मन्न,
 तेना अतिक्रम चटयो बहु दिन ॥ १८ ॥ च० ॥ गृहपतिना तव ज
 गयी रे, सुअर नागीयो रे ॥ मांस ते रांध्युं ताम रे, कोथें हुकारीयो
 रे ॥ उपना मरीनें तेहज गेह, सुअर नागपणें थयो तेह ॥ १९ ॥
 च० ॥ एत पणें सूपकारी रे, देखी उपनुं रे ॥ जातिसमरण ज्ञान रे,
 भावनें नीरनुं रे ॥ कर्मविचित्रथी न थयो कोथ, अनुकंपा उपनी
 जतो जोग ॥ २० ॥ च० ॥ रांधण तापनें देखी रे, कोजाहल कथो
 रे, गहू निरां दांडी आव्या रे, अत्री जमथर धन्यो रे ॥ तिहां तम
 भावनें नीरनुं रे, मनुज आयु बांध्युं अनिगम ॥ २१ ॥ च० ॥
 भावनें नीरनुं रे, निज गुत कामिनी रे ॥ बंधुदना चरें आयो रे,
 भावनें नीरनुं रे ॥ अमोहदन दीजुं अनिधान, वरस एक बोले

थई शान ॥ ११ ॥ च० ॥ मात पिता सूपकारी रे, देखीने वली रे ॥
जातिसमरण पाम्यो रे, एम कहे केवली रे ॥ कर्म अचिंत्यनी शक्ति
निहाली, पुत्रवधू ते माता नाजि ॥ १२ ॥ च० ॥ सुतने तात नि
हाली रे, महा वैरागीयो रे ॥ माता पिता किम जांखुं रे, एम मन जा
गीयो रे ॥ मौनपणुं धखुं जाणी जाम, मूंगो नाम प्रसिद्ध अयो ताम
॥ १३ ॥ च० ॥ ढाल अढारमी एह रे, ठछा खंममां रे ॥ समरादित्यने
रासें रे, रंग अखंममां रे ॥ श्री गुरु उत्तम विजयनो शिष्य, पद्मविज
य कहे सुणत जगीश ॥ १४ ॥ च० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केवल ज्ञानी एम कहे, वोढ्या बार वरष; चउनाणी चारित्रीयो,
मेघनाद सुमुनीश ॥ १ ॥ आव्या ते उद्यानमां, वारु वयण विन्यास;
सुमंगल साधु शिरें, शीखविआ शुन जास ॥ २ ॥ नागदत्त घर निर
खजो, आंगणो बेठो आय; अशोकदत्त तस एम कहे, चेतन सुणि चि
त्त लाय ॥ ३ ॥ गुरुजी तुजनें ज्ञानथी, कहे सुण तापस काम; मौन
धरे शुं मनथकी, धर्म करो गुणधाम ॥ ४ ॥ सूअर सापनें पुत्रसुत, म
रीनें कर्म पसाय; तहत्तो करी मुनि तिहां गया, संजलाव्यो सदनाव
॥ ५ ॥ यतः ॥ “तावस किमिमिणा सुणवएण, पडिवज्ज जाणित्थं ध
म्मं; मरिउंण सुअरोग, जाउ पुत्तस्स पुत्तोत्ति” ॥ १ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ मनमोहनां जिनराया ॥ ए देशी ॥

॥ कहे मूंगो करि परणाम, कहो ते गुरु ठे किण ठाम रे ॥ गुरु वंदिये
शुननावें ॥ जिम नवनथ दुःखडां नावे रे ॥ गुरु ० ॥ ए आंकणी ॥ इहां
चैत्य ठे शक्रावतार, मुनि कहे तिहां गुरुगुण धार रे ॥ १ ॥ गु ० ॥ मूंगो
कहे चालो जईयें, गुरु प्रणमीनें सुख पईयें रे ॥ गु ० ॥ विस्मित मूं
गानो परिवार, जाणे जायतो अवल विचार रे ॥ २ ॥ गु ० ॥ जई
प्रणम्यो गुरुना पाय, धर्मलाज दीये गुरुराय रे ॥ गु ० ॥ पूठे तव
मूंगो स्वामी, किम अतीत वात तुमें पामी रे ॥ ३ ॥ गु ० ॥ गुरु कहे
अमें नाणथी जाणुं, नाण अतिशय एह वखाणुं रे ॥ गु ० ॥ प्रतिबोध

यजे एम जाणी. गुरु जांवे धर्मनी वाणी रे ॥ ४ ॥ गु० ॥ मूंगो प्रति
 बोध ते पाम्यो. पण मूंगो नाम न वाम्यो रे ॥ गु० ॥ एम बीजुं नाम
 न जाणी. न्याजनी कहे धर्म नराणो रे ॥ ५ ॥ गु० ॥ प्रतिबोध लही
 न जी गीने. प्रभु पद्मनाभ कहे नीतें रे ॥ गु० ॥ बैताढयमांहिं तुमैं देखी.
 निज कुंमल जुगल विशेषी रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रतिबोध तिहां तुम था
 जे. निव्यामनि दूर पलाजे रे ॥ गु० ॥ सुणी वंदना प्रभुनें कीधी, गयो
 कोनंवी सुप्रसिद्धि रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ मूंगाने देखी जांखे, तुजथी प्रति
 बाध प्रभु दाने रे ॥ गु० ॥ मुज वृजवजे निरधार, तव बोढ्यो मूक
 विचार रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ उद्यम करुं शक्ति प्रमाणें. सुर लेई गयो वेअढ
 बाणे रे ॥ गु० ॥ कूटनिश्चायतन देखाव्यो, वलि वात ते एम सुणा
 व्या रे ॥ ९ ॥ गु० ॥ ग्यणावतंसक नाम. ए कुंमल जुगल उदाम रे
 ॥ गु० ॥ कुंमल वजी कूट ए दोय, मुज अतिशय वल्लन जोय रे
 ॥ १० ॥ गु० ॥ गिज्ञानमूढ विवरनें देजें, तिहां कुंमल देवनिवेशें रे
 ॥ गु० ॥ आपे चिंतामणि ग्यण. पनें जांखे एहवुं वयण रे ॥ ११ ॥
 ॥ गु० ॥ जे चिंता करीवें तेह. एक दिनें एक पूरे तेह रे ॥ गु० ॥
 एतनी जरनें बैताढयें जाजे. मुजनें कुंमल देखाजे रे ॥ १२ ॥ गु० ॥
 मारी एणें ए वात. कोनंवी गया सुवशात रे ॥ गु० ॥ देवता गयो
 आप विमान. अनुक्रमें चवीउं निणें थान रे ॥ १३ ॥ गु० ॥ बंधुमती
 कुंमल द्यावो. एक दोदद नान सुदावो रे ॥ गु० ॥ शरदकालें सहकार
 नी द्या. पण नीपजे नवि तम वंठा रे ॥ १४ ॥ गु० ॥ गर्जपीडा
 पाम्यो नाव. धर्मत यई नारी निगश रे ॥ गु० ॥ मग्गो ए निश्चय ना
 मी. एम जाते नान विचारी रे ॥ १५ ॥ गु० ॥ मूंगो चिंते माय
 मग्गो. जिनचाणी न अन्यथा रेंद रे ॥ गु० ॥ अन्यथा वैअढ न जया
 न. एम चिंता निजमां नाव रे ॥ १६ ॥ गु० ॥ चिंतामणि पामें मागो. दो
 दद एम शरदकाल रे ॥ गु० ॥ अनुक्रमें जायो पुन, नाम शरददच
 चिंतामणि रे ॥ १७ ॥ गु० ॥ शरदकाल गुमनें चरणे, बालकनें ल
 लल न्याव रे ॥ १८ ॥ गु० ॥ तम जानक गंगा मांमैं. नित्य नित्य एम

काल गमाडे रे ॥ १८ ॥ गु० ॥ कुंवरपणुं पाम्यो जिहारें, नित्यधर्म
सुणावे तिहारें रे ॥ गु० ॥ गयो काल केतोएक एम, नवि लागो ध
र्मनो प्रेम रे ॥ १९ ॥ गु० ॥ एक दिन वली अशोकदत्त, पूरव नवनी
कहे वत्त रे ॥ गु० ॥ पण अरहदत्तनें अंग, नवि लागो धरमनो रंग रे
॥ २० ॥ गु० ॥ उलटुं कहे मूकनें एम, विलाप करे ठे केम रे ॥ गु० ॥
अहो कर्मपरिणतिनी शक्ति, अशोकदत्त करे व्यक्ति रे ॥ २१ ॥ गु० ॥
एम चिंतवी वैराग्य पामी, आरंज परिग्रह वामी रे ॥ गु० ॥ लीथो
इंणें संजमजार, अरहदत्त परण्यो वधू चार रे ॥ २२ ॥ गु० ॥ जोग
जोगवतां केई काल, थयो दुर्लजबोधी निहाल रे ॥ गु० ॥ चारित्र
निरतिचार पाली, अशोकदत्त पापनें गाली रे ॥ २३ ॥ गु० ॥ काल
करीने देवता थाय, अशोकदत्त मुनिराय रे ॥ गु० ॥ पदमें उगणीशमी
ढाल, कही ठेके खंमें रसाल रे ॥ २४ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ५६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचत्व चाता पामियो, अरहदत्तें सुण्युं एम; शोक थयो तेहने स
बल, पामी बहुलो प्रेम ॥ १ ॥ पंचम कव्य ते पामीयो, आव्यो तस
उपयोग; अरहदत्तनो अवधिथी, जाण्यो सघलो जोग ॥ २ ॥ करूं
उपाय हवे आकरो, जिम बूजे ए जीव; व्याधि विकुर्वी वेगशुं,
आण्युं दुःख अतीव ॥ ३ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ बेडले नार घणो ठे राज, वातां

केम करो ठो ॥ ए देशी ॥

॥ पग सोजीनें थांजा हूआ, बांहि ते जेहवी दोरडी ॥ लोचन मिचा
णां जड जीहा, पेट जिंसी गागरडी ॥ १ ॥ श्रीगुरु आशातन फल
एह, प्राणी केमही न बूजे ॥ ए आंकणी ॥ निझ नाठी आवी अरति,
वेदनाथी लह्यो खेद ॥ वैद्य तेडावी इव्य सहु घरनुं, आपी कहे तस
जेद ॥ २ ॥ श्री० ॥ ढालो वेदन तिणें पण मांझ्या, औषधना उप
चार ॥ कांय विशेष थयो नहीं तेहथी, वैद्यें कस्यो परिहार ॥ ३ ॥
॥ श्री० ॥ तीव्रवेदनथी एणि परें बोले, एक दिन पण न रहाय ॥

निर्णे हं अग्निमां पेयी मग्गुं. सुणि वांधव खेदाय ॥ ४ ॥ श्री० ॥
 मुहो पामी पत्नी गंवें. गंवें सहु परिवार ॥ इण समे सवर वैद्यनें
 नपें. आआं सुअवतार ॥ ५ ॥ श्री० ॥ खांधे कोयलो अरहदत्तना,
 वर पानें जई वांजे ॥ सवरवैद्य हं विद्यासागर, कोई नहीं मुज तोजें
 ॥ ६ ॥ श्री० ॥ जीगवेदना टालुं खसनें, वहिर तिमिर वली टालुं ॥
 गजनें उदग्ग्यथा मज्जव्याधि. टालुं कहुं ते पालुं ॥ ७ ॥ श्री० ॥ वो
 नाआं नुर्णाने बहुमानें, परिजन कहे सुण वैद्य ॥ मुह माग्गुं तुमने
 आर्पणुं, जजोदर टालो ए सद्य ॥ ८ ॥ श्री० ॥ तेह कहे हं धर्म
 वैद्य हं, नहिं हं ड्यनो लोदी ॥ कष्टसाथ्य एव्याधि ठे सुणजो. तिणें
 नुग्ग्या नयिनोदी ॥ ९ ॥ श्री० ॥ इह नवनें परजव नीआणुं, तज
 वु पदज नाई ॥ इह लोकें कुपथ्य आहारादिक, थातुकोप जिणें वाइ
 ॥ १० ॥ श्री० ॥ परजवनुं जे पाप न करवुं, तेह नियाणुं टालो ॥
 इह लोक पाप परलोक संबंधें. तिणें इह लोक अजुवालो ॥ ११ ॥
 ॥ श्री० ॥ नेदमां मुख्य मिथ्यात निवारो, समकितगुं चित्त लावो ॥
 दान क्रिया अन्नान करग्यो. आरंज सहु वरजावो ॥ १२ ॥ श्री० ॥
 द्रवम चरम पोग्ग्यायें करग्यो, चित्त मज्ज शोधन कारी ॥ जिनवर वयण
 सगाय नजेगें. बीजी पारमी अर्थकारी ॥ १३ ॥ श्री० ॥ हिंसा अ
 निर अवननें अन्नप्र, मुहो परिग्रह वागो ॥ करवुं नदी वली रात्रि
 लोजन. समता मारव वागो ॥ १४ ॥ श्री० ॥ माया टाली लोच न
 लया. वनवुं यत समजानें ॥ चित्त निरीहपणे वजि रहेवुं, अग्रति
 उर दिगलें ॥ १५ ॥ श्री० ॥ नावजजोदर टालुं इणि पर, तो ड्य
 नो अयो नार ॥ सोजति परिजन एम विचारें. मग्गवाथी एमार ॥ १६ ॥
 ॥ श्री० ॥ अग्गदत्तनें गोणें परिजन, मग्गवाथी एदज वारु ॥ अरह
 दत्त विणे ए मग्गवाथी. अगिही वान विचारु ॥ १७ ॥ श्री० ॥ पण
 अराज नहिं बीजो एदतो. तिणें दाकार कदायो ॥ वैद्य कहे मुज श
 ॥ १८ ॥ श्री० ॥ निश्चय मन करजा
 ॥ १९ ॥ श्री० ॥ कुशीन संग तजजे इह

जवनी, वस्तु न मनमां सुणजे ॥ १९ ॥ श्री० ॥ मुऊनें मत मूके तुं
माहारुं, कह्युं ते करजे नाई ॥ एम कही मंत्रमंजल आलेख्युं, अरह
दत्त तिहां ठाई ॥ २० ॥ श्री० ॥ नगर लोक सहु मलियो जोवा, उष
ध मंत्र्यां तेणें ॥ उज्ज्वल वस्त्र उठाड करीनें. मंत्र जप्यो हवे एणें
॥ २१ ॥ श्री० ॥ देवशक्तिथी कोलाहल करे, नैरव शब्द ते मूके ॥ २२
थिवी आलोटीनें ऊठे, देवशक्ति नवि चूके ॥ २३ ॥ श्री० ॥ वीशमी
ढाल ए ठेठे खंमैं, समरादित्यने रास ॥ पंढित उत्तमविजयनो जंपे,
पद्मविजय सुविलास ॥ २४ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप धरी व्याधि रह्यो, बहु कलिमल जंबाल; डुरनिगंध दयामणो,
जीषण अतिशय जाल ॥ १ ॥ आप सरीस अठ एक शत, व्याधिरूप
परिवार; पापविपाक मानुं परिवस्यो, देवनी शक्ति उदार ॥ २ ॥ अ
चरिज जन देखी इश्युं, कहे अपूरव कोय; दीतुं नहीं नहीं देख्युं, जोपें
एहवुं जोय ॥ ३ ॥ रोग रूप कुणें निरखियो, सबर वैद्य सुखकार;
आवी उंध अवलपरें, पाम्यो दुःखनो पार ॥ ४ ॥ वैद्यें पडिबोह्यो वली,
नासे इणि परें नास; पाप व्याधि तुं पेखजे, काढी तुऊ सकाश ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ केसर वरणो हो के काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥
॥ हवे एम करजे हो के जिम ए व्याधि ॥ मारा लाल ॥ फरि नवि व
लगे हो के दुष्ट उपाधि ॥ मा० ॥ आरोग्य सुखनो हो के देश तूं पाम्यो
॥ मा० ॥ पाप करमनी हो के व्याधि ते वाम्यो ॥ मा० ॥ १ ॥ हवे
तुं करजे हो के इणि परें काम ॥ मा० ॥ मूल उहेदे हो के पापनुं ठाम
॥ मा० ॥ जेहथी पामे हो के सुख अनंत ॥ मा० ॥ जन्मजराने हो
के मरण न हुंत ॥ मा० ॥ २ ॥ तुऊ परें मुऊने हो के एणियें ग्रही
यो ॥ मा० ॥ पाप ए व्याधिथी हो के दुःख बहु सहीयो ॥ मा० ॥
करतां मुऊनें हो के तास उपाय ॥ मा० ॥ कांयक टलिउ हो के हवे
नवि जाय ॥ मा० ॥ ३ ॥ शेष ढालवा हो के हुं अजोग ॥ मा० ॥

नरुं ईंजी परें हो के माहारा जोग ॥ मा० ॥ तुं पण उत्तम हो के
 करी उपाय ॥ मा० ॥ अथवा मुज परें हो के चालो जाय ॥ मा० ॥
 ॥ ४ ॥ लोक कहे ग्यो हो के उत्तम राह ॥ मा० ॥ सवरवैद्य कहे हो
 के सुणो उगाह ॥ मा० ॥ जिनगासनमां हो के दीक्षा लेवे ॥ मा० ॥
 व्याधि न आवे हो के फरी जे सेवे ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनुक्रमें सघली
 हो के व्याधि ने जाय ॥ मा० ॥ पण मुज जातिनो हो के वांक ते
 थाय ॥ मा० ॥ संजम मुजथी हो के नवि लेवाय ॥ मा० ॥ ताहारी
 वनम हो के जातिथी थाय ॥ मा० ॥ ६ ॥ तिणें व्यो संजम हो के
 अथवा जानो ॥ मा० ॥ माहारी साथें हो के म करो टाजो ॥ मा० ॥
 लोक कहे मुज हो के जाईयें लीधी ॥ मा० ॥ दीक्षा तुज पण हो
 के लेवी लीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अरुदत्तें तव हो के मान्युं एह
 ॥ मा० ॥ फोडक मुनिवर हो के पासें लेह ॥ मा० ॥ इव्यथी लीधी
 हो के पण नवि जायें ॥ मा० ॥ सवरवैद्य तव हो के थानक जावे
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ केडक दिवसें हो के थई तल अरति ॥ मा० ॥ कुलनें
 निश हो के न गणी विगति ॥ मा० ॥ लिंग ते ठांही हो के आव्यो
 पार ॥ मा० ॥ देवें जाणी हो के बात तेह ॥ मा० ॥ ९ ॥ पूरव रीतें
 हो के व्याधि कीथो ॥ मा० ॥ लोकें निंद्यो हो के दुःख बहु दीधो
 ॥ मा० ॥ वैद्यनें ग्योले हो के तल परिवार ॥ मा० ॥ लाधो तेह हो के
 अविचार ॥ मा० ॥ १० ॥ वैद्यनें जाने हो के फरिरोग आव्यो ॥ मा० ॥
 परो दलार हो के तेह नमायो ॥ मा० ॥ वैद्य कहे सुणो हो के
 सम्यक् सीधें ॥ मा० ॥ परिजन कहे ग्यो हो के दुःख इणे लीधुं
 ॥ मा० ॥ ११ ॥ ईंजे नखिं हो के लाज्या अम्में ॥ मा० ॥ पण उप
 दाय ॥ मा० ॥ करी प्रवेच हो के नुर दिये जिह्वा ॥ मा० ॥ १२ ॥
 कलहा जिह्वा हो के लीधुं फेरी ॥ मा० ॥ शांति करी गयो हो के
 नरुं नै जरी ॥ मा० ॥ नखि पर आव्यो हो के चाग्रि मूकी ॥ मा० ॥
 नखिनें जानें हो के गजिपुं अंरी ॥ मा० ॥ १३ ॥ व्याधि विकुर्यो

हो के तिवर जावें ॥ मा० ॥ बांधव बोल्या हो के किम फरि आवे
 ॥ मा० ॥ अवगुण थाये हो के किम नवि जाणे ॥ मा० ॥ एहनुं व
 चण ते हो के मानो ए टाणे ॥ मा० ॥ १४ ॥ अथवा जीवथी हो
 के जावुं दीसे ॥ मा० ॥ बोढ्यो तव ते हो के विशवा वीजें ॥ मा० ॥
 जावो वैद्यने हो के कहेशे जेह ॥ मा० ॥ करखुं प्रेमें हो के साचुं
 तेह ॥ मा० ॥ १५ ॥ बंधवें खोलतां हो के दीगो जाम ॥ मा० ॥
 कह मुख नीचुं हो के करीने ताम ॥ मा० ॥ मातुं कीधुं हो के किरि
 या न करी ॥ मा० ॥ रोग उपन्या हो के काया विफरी ॥ मा० ॥ १६ ॥
 कहो उपाय हो के सबर ते बोले ॥ मा० ॥ विषयलोलुपी हो के
 एह अतोले ॥ मा० ॥ उद्यम हीणो हो के नहीं उपाय ॥ मा० ॥
 थागे आगल हो के बहु अपाय ॥ मा० ॥ १७ ॥ नरक तिरिनां हो
 के दुःख बहु खमशे ॥ मा० ॥ पूठो एहनें हो के जुउ काय गमशे
 ॥ मा० ॥ तुम आग्रहथी हो के करुं वली साजो ॥ मा० ॥ मुऊखुं
 हिंमे हो के तो रहे ताजो ॥ मा० ॥ १८ ॥ जई संजलाव्युं हो के
 मान्युं प्राणे ॥ मा० ॥ वैद्य कहे सुणि हो के हवे मम माणे ॥ मा० ॥
 जे जे हुं कहुं हो के ते ते करजे ॥ मा० ॥ मुऊथी अलगो हो के कृण
 मत रहेजे ॥ मा० ॥ १९ ॥ हाहा जणतो हो के कीयो नीरोगी
 ॥ मा० ॥ लोकें जांख्यो हो के म थए जोगी ॥ मा० ॥ वैद्यें आप्यो
 हो के कोयलो हाथे ॥ मा० ॥ नयरथी निकळ्यो हो के लेईनें साथें ॥ मा०
 ॥ २० ॥ ठेठे खंमें हो के जांखी ढाल ॥ मा० ॥ ए एकवीशमी हो
 के वात रसाल ॥ मा० ॥ दोहिलो बूजे हो के दुर्जन बोही ॥ मा० ॥
 पण तस देवता हो के करशे सोही ॥ मा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गामांतर हवे ते गया, सुरमाया करे सार; धूम्रतणा अंधारथी,
 दृष्टि दुःख दातार ॥ १ ॥ वंश फूटे ज्वालावली, शुद्ध चले असमा
 न; बलतूं गाम बताविने, चाढ्यो तेह अचान ॥ २ ॥ तृण नारो शिर
 तोलीने, अरहदत्त कहे आम; उलायें तृणथी अगनि, कहो किम

करो ए काम ॥ ३ ॥ सुर कहे तुं एम समजणो, अग्रि न बूजे एम;
देह इण्ण लेई दाहमां, कहो यरे जाये केम ॥ ४ ॥ क्रोध अनल जिहां
हिय वणी. आवे पवन अन्नाण; बहु प्राणी बलता तिहां, नवि आवे
तुज नाण ॥ ५ ॥ बोली न शक्यो वापडो, पण नवि बूज्यो पहाण;
आगल चाली आविआ, महोकम करी मंमाण ॥ ६ ॥

॥ दाल बावीशमी ॥ वलिहारी रे तुज वेपनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ द्वारे द्वारे देवता रे, उन्नारग तिहां चालीउ रे ॥ कंटकाकुल नूठाम
रे जाज ॥ किम पंथयी कृपंथें ब्रजो रे, अरहदत्त कहे ताम रे लाल
॥ १ ॥ गुण आशातना मत करो रे ॥ ए आंकणी ॥ द्वारे द्वारे देवता
रे, देव कहे तुं जाणे एम खरुं रे, नवि जाईयें उनमग्ग रे लाल ॥ तो
हिम मोठमाग्ग तजो रे, किम संसारमां लग्ग रे लाल ॥ २ ॥ गुण ॥
द्वारे द्वारे देवता रे, एम सुणी मौन कयुं तिणें रे, पण नवि बूज्यो
तेह रे जाज ॥ आगल जाय तव देखतो रे, सूअर रूप करेह रे लाल
॥ ३ ॥ गुण ॥ द्वारे द्वारे देवता रे, विविध जाति कण कुंमनें रे, ठांमो
ननुचि ज्ञीय रे जाज ॥ विष्टाणुं राचि रह्यो रे, करी गाढो प्रतिबंध
रे जाज ॥ ४ ॥ गुण ॥ द्वारे द्वारे देवता रे, अरहदत्त देखी वदे रे,
एतो एततो अविवेक रे लाल ॥ कण मूकी विष्टा नखे रे, सुर कहे
एण तुं नेक रे जाज ॥ ५ ॥ गुण ॥ द्वारे द्वारे देवता रे, कहे तुं जाणे
ने गग रे, ने हरे तुं तुं अजाण रे लाल ॥ सुर कहे मुनिसुख ठांमि
ने रे, तुं केम यपो अत्राण रे लाल ॥ ६ ॥ गुण ॥ द्वारे द्वारे देवता
रे, ननुचि विषय पणविआ रे, तेहमां तुज बहु मान रे लाल ॥ सांज
ली मौन हरी रागो रे, पण नवि बूज्यो अज्ञान रे लाल ॥ ७ ॥ गुण ॥
द्वारे द्वारे देवता रे, एक गामें जईनें ग्या रे, देवकुजमां धरी
प्रांति रे लाल ॥ ने अंतर देगो पहे रे, जांक देखे विपरीत रे
लाल ॥ ८ ॥ गुण ॥ द्वारे द्वारे देवता रे, जांक वेसारे आनिकें रे,
द्वारे द्वारे देवता रे जाज ॥ बली बली पहे मूके बली रे, एतनी
विष्टा पहे रे जाज ॥ ९ ॥ गुण ॥ द्वारे द्वारे देवता रे, अरहदत्त

ए सूरखो रे, किम पडे हेतो एह रे लाल ॥ अर्चा पूजा नवि आदरे
 रे, तव सुर बोले तेह रे लाल ॥ १० ॥ गु० ॥ हारे हारे तुं किम रे,
 जाणे ठे एहवुं खरुं रे, ते कहे एहमां कांय रे लाल ॥ सुर कहेतो तुं
 विचारजे रे, संजम ठोडी पलाय रे लाल ॥ ११ ॥ गु० ॥ हारे हारे
 सुर शिव रे, गतिपूजनिक ते ठोडीनें रे, नरकादिकनो उपाय रे लाल
 ॥ करतो केम जाणे नहीं रे, सांजली मौन ते थाय रे लाल ॥ १२ ॥
 ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, माया एक विकुर्वतो रे, जींजुज चारी
 अनंत रे लाल ॥ क्षेत्र नखुं ठे तेहनुं रे, कूपक एक तस अंत रे लाल
 ॥ १३ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, शूको विषम जग्या घणी रे,
 तिहां एक लेश प्रवाल रे लाल ॥ एक बलद तिहां खायवा रे, चार सूकी
 असराल रे लाल ॥ १४ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, जातां लड
 थडीनें पडयो रे, नांग्यां अंग उपांग रे लाल ॥ देखी अरहदत्त बोलीयो
 रे, अहो ए बेज विरंग रे लाल ॥ १५ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे,
 जींजुआ चारिनें ठांमिनें रे, किहां खावा ए जाय रे लाल ॥ सुर कहे
 जाणे तुं खरो रे, ते कहे एटलूं न ठाय रे लाल ॥ १६ ॥ गु० ॥
 हारे हारे देवता रे, किम तुं सुरसुख ठांमिनें रे, जेह जींजुमई चारि रे
 लाल ॥ एक प्रवाल जव सारिखां रे, माणस सुख अवधार रे लाल ॥
 ॥ १७ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, तस अनिलाखायें आतमा रे,
 किम पाडे दुर्गतिकूप रे लाल ॥ ते सुणि कर्मसंचय गल्यो रे, चिंतवे
 एम सरूप रे लाल ॥ १८ ॥ गु० ॥ हारे हारे जाणियें रे, एह माणस
 नहीं देवता रे, मुज कहे एम वारं वार रे लाल ॥ वात रूडी संजलाव
 तो रे, जाइ पण एह विचार रे लाल ॥ १९ ॥ गु० ॥ हारे हारे पुहुं
 ए रे, तास परमारथ एहनें रे, चिंतवी पूछुं ताम रे लाल ॥ तुं कोण
 ठे मुज जाई परें रे, वात सुणावे आम रे लाल ॥ २० ॥ गु० ॥ हारे
 हारे देवता रे, कहे हुं परजायांतरें रे, अशोकदत्त तुं जाण रे लाल ॥ अर
 हदत्त तव बोलियो रे, कहो प्रत्यय अहीनाण रे लाल ॥ २१ ॥ गु० ॥
 हारे हारे देवता रे, कहे आपण बिहुंए मलि रे, वैताढ्य पर्वत गाम

रे लाज ॥ कुंमल जुगल जे थापीयो रे, प्रतिबोधननें काम रे लाज ॥ २२ ॥ गु० ॥ द्वारे द्वारे देवता रे, कहे देखाहुं तुजनें रे, मानी अर
ददने बाणी रे लाज ॥ दिव्य सरूप करी लेई गयो रे, देखाडया तिणें
ठग रे लाज ॥ २३ ॥ गु० ॥ द्वारे द्वारे तेहनें रे, कूट कुंमल सह
दर्शनें रे, जानिनमरण ज्ञान रे लाज ॥ उपहुं कर्मविचित्रथी रे,
जाग्यो जाग्यप्रधान रे लाज ॥ २४ ॥ गु० ॥ द्वारे द्वारे तेहवे रे, जा
वथी दीटा आदरे रे, देव स्वमावी ताम रे लाज ॥ निजस्थानक गयो
देवता रे, करी निज सयलूं काम रे लाज ॥ २५ ॥ गु० ॥ द्वारे द्वारे
नेहमां रे, पुरोहित सुत हुं जाणजे रे, धरण सुणो मुज वात रे
लाज ॥ विगथरु प्राणी तणा रे, नहिं तुज सम अवदात रे लाज ॥
॥ २६ ॥ गु० ॥ द्वारे द्वारे जे होय रे, अविराधक प्राणी नला रे, ते
मुमें कहे निगदाह रे लाज ॥ तिणे संजम तुमें आदरी रे, तरो संसार
अगाध रे लाज ॥ २७ ॥ गु० ॥ द्वारे द्वारे रुअडी रे, ठेके खमें ए कही
रे, बावीसमी वर टाल रे लाज ॥ पद्य कहे श्रोता घरे रे, होजो मं
गतमाज रे लाज ॥ २८ ॥ गु० ॥ नर्व गाथा ॥ ६५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कज जोडी भगगो कहे, आण कर्म अणुगार; संजलाहुं मावित्र स
ने, जनम तुम अधिकार ॥ १ ॥ वृज जो पुण्यज बलें, मुनि कहे सुखें
सजलाग; सकया मित्र लेई बहु, बहेलो ते बड जाग ॥ २ ॥ आवी
मावित्र आगलें, आजाप्यो अधिकार; वृज्यां बहु माने नहीं, सारो ए
भगग ॥ ३ ॥ जननी मित्र जनक बली, विधिपूर्वक बड वीर; व्रत
गहू मावें संगरे, धरणी नादम थीर ॥ ४ ॥ अग्ददत्त गुरु आदरें, शीखा
अगहू गुन; क्रिया पण बहु विध करे, गीतारय गुरु गुत्त ॥ ५ ॥

॥ दाज अवीसमी ॥

॥ गो बालनाना पावनी, आदिगनो अवतार रुहुं गोकुलीं ॥ ए देशी ॥

॥ गहू मावें संगरे, धरणी नादम थीर ॥ ४ ॥ अग्ददत्त गुरु आदरें, शीखा
अगहू गुन; क्रिया पण बहु विध करे, गीतारय गुरु गुत्त ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ गु० ॥ जावी तेहनी

नावना, तप सूत्रादिक जेह ॥ ६० ॥ एकल विहार अंगीकस्यो,
 विहार करे रुपि तेह ॥ १ ॥ ६० ॥ एक राति गामें वसे, नयरे वसे
 पंच राति ॥ ६० ॥ तामलीसि पुरी आविआ, काउस्सगें मुनि ठात ॥
 ॥ ३ ॥ ६० ॥ वात सुणो लखमी तणी, काढि देवपुर बाहार ॥ ६० ॥
 सुवचनें खोली तदा, करी प्रयत्न अपार ॥ ४ ॥ ६० ॥ नंदिवर्द्धन
 गामडे, थयो विहुनो संजोग ॥ ६० ॥ निज दीपें लेई गयो, नोगव
 तो सुख नोग ॥ ५ ॥ ६० ॥ कोइक काल व्यतिक्रमें, साथें लेइ ते
 नारि ॥ ६० ॥ तामलीसि पुर बाहिरें, उतरीयो परिवार ॥ ६ ॥ ६० ॥
 फिरती फिरती तिहां गइ, लह्यी जिहां मुनिराय ॥ ६० ॥ उलखीया
 रुपिराजनें, मनमां बहु खेदाय ॥ ७ ॥ ६० ॥ पाप करमना जोरथी,
 क्रोध लह्यी मनमांहि ॥ ६० ॥ वज्रघात परें ते थइ, चिंते किम ए
 आंहि ॥ ८ ॥ ६० ॥ दीठो में मुऊ पापथी, कांयक देउं कलंक ॥ ६० ॥
 कंठानरण त्रोडी ठवुं, एहनी पास निःशंक ॥ ९ ॥ ६० ॥ कोलाहल
 करयुं पठी, ठरगो तव ए चोर ॥ ६० ॥ चंद्रशासन ठे नूपति, हणगो
 ए इण ठोर ॥ १० ॥ ६० ॥ निहुरूपें ग्रही चोरने, लोप्रसहित ह
 एया काल ॥ ६० ॥ लिंगी पण चोरी करे, एह प्रसिद्धि जालि ॥
 ॥ ११ ॥ ६० ॥ जेम मन चिंत्युं तेम कस्युं, आव्यो धाई कोटवाल
 ॥ ६० ॥ आवी मुनि बोलाविआ, कांयक उत्तर आल ॥ १२ ॥
 ६० ॥ नवि बोले जव ते रुपि, नूपण खोले ताम ॥ ६० ॥ ठिन्न
 केंकण पासें पड्युं, दीठुं दूर न ठाम ॥ १३ ॥ ६० ॥ नयरी जन
 बोलावीया, वात देखाडी तेह ॥ ६० ॥ नरपतिनें जई वीनव्यो,
 चोर अपूरव एह ॥ १४ ॥ ६० ॥ विस्मित बोले नूपति, खोली करी
 खरी रीति ॥ ६० ॥ मारो एहनें तव तिहां, पूठे पूरव नीति ॥
 ॥ १५ ॥ ६० ॥ नवि बोल्या जव ते मुनि, तव उपनो तस कोप
 ॥ ६० ॥ अहो कपटवेशें रह्यो, नवि बोले करी लोप ॥ १६ ॥ ६० ॥
 मारण थानक लाविया, शूलीयें दीथो साध ॥ ६० ॥ करे चंमाल
 उद्योषणा, सुणो पाप अगाध ॥ १७ ॥ ६० ॥ साधुवेशें चोरी करी,

निर्णे ए माग्यो जाव ॥ ६० ॥ वलि कोइ करणे इणि परें, तस पण
 वय एम आय ॥ १७ ॥ ६० ॥ तप परजावें मुनि तणे, शूली धरती
 मांदि ॥ ६० ॥ पेठी मुनि विंध्या नहीं. कुसुमवृष्टि थइ त्यांदि ॥
 ॥ १७ ॥ ६० ॥ धर्म ते जयवंतो अत्रे. एम थइ लोकमां वाणि ॥ ६० ॥
 गयनें गई वधामणी. आच्यो नृप ते ठाण ॥ १७ ॥ ६० ॥ हर्षे करतो
 वंदना. पुढे विस्मय वात ॥ ६० ॥ केम ए स्वामी नीपन्युं, नांखो
 मुक्त अवनान ॥ २१ ॥ ६० ॥ नवि वोल्या जव ते मुनि, तव नर कहे
 पग्यान ॥ ६० ॥ व्रतविशेषवंता रुपि, न करे उत्तर दान ॥ २२ ॥
 ॥ ६० ॥ ठेठे गंमें ए कही, त्रेवीशमी वर ढाल ॥ ६० ॥ समरादित्य
 ना गममां, पयनें मंगलमाल ॥ २३ ॥ ६० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७ए ॥

॥ दोहा ॥

१ पुढो ते नारी प्रत्ये, तव नृप मूके तजार; नाठी लोकवचन सुणी.
 नवि नाथी ते नारि ॥ १ ॥ नृपनें कहे ते नवि जडी, नृपति कहे
 तव जान; शोधि करो सम्यगपरें, तव खोजण गया तास ॥ २ ॥ आ
 गम शून्य उद्यानमां. देवकुत्रें नवि दीठ; पण तस जर्ता पेखियो. ना
 संतो थो नीठ ॥ ३ ॥ कोटवाजें पकडी करी, नृपनें आण्यो नयण;
 पकड्यो नारी नाणो पति, जेठ ए जडो सुवयण ॥ ४ ॥ नारी तो
 इण नगरी नथी. नानंतां पकड्यो नाथ; तुम मन माने तिम
 वसं, ते सहु नुमचे दाय ॥ ५ ॥

॥ दास जोगीशमी ॥ सादिया मोति थोने हमारो ॥ ए देशी ॥

१ नृप तवे मुक्त मित्रां ते नार. ते कहे हुं न जाणुं निरधार ॥ सादि
 वा मुने मुक्त्यां तातुं. मोक्षतां तुम सुगज्यो ॥ ए आंकणी ॥ राय
 करे तो नातो केम, ते कहे जय जडो नातो एम ॥ १ ॥ सा० ॥ वि
 ण नृपति जव केम जागो, नृप पुढ्या पठी कहे एक आगो ॥ सा० ॥
 पकड्यो कही न नातुं मुज. तेवज मुक्त अपगय अवृज ॥ २ ॥ सा० ॥
 यज्यो शिवा नृपनें नृप नाणे, जो मुक्त व्यतिकर मयजो दाखे ॥
 ॥ ३ ॥ कोट शिवा कोट नती नार, सुवयण देवे तव अणगार

॥ ३ ॥ सा० ॥ उन्नखी आंशु नयणें नरीयां, मुनिवर चरित देखि चित
 ठरीयां ॥ सा० ॥ विस्मय लही कहे रायने एम, नवि कहेवा जेहबुं
 प्रचु नेम ॥ ४ ॥ सा० ॥ राय कहे संसार ए एहबो, एहमां अचरिज
 लहेबो केहबो ॥ सा० ॥ सुवयण कहे एकांत करीजें, तव नृप परि
 जन दूर धरीजें ॥ ५ ॥ सा० ॥ मुनि देखीनें घणुं पठतायो, नृपनें कहे
 हुं पापें नरायो ॥ सा० ॥ पुरुष श्वान हुं पुरुष म जाणो, सत्यसंधा
 मुनि पुरुष वखाणो ॥ ६ ॥ सा० ॥ कृतगुण जाण अपर उपगारी,
 व्रत धरुं सर्व अकारज वारी ॥ सा० ॥ एहमां सर्व वात मुऊ नांखी,
 राय आगल पूरी नवि दाखी ॥ ७ ॥ सा० ॥ तुऊ सम पुरुष ते श्वान न क
 हियें, प्रस्तुत वात कहो जिम लहियें ॥ सा० ॥ वात कही तव सध
 लो जाम, नरपति तुष्टमान थयो तान ॥ ८ ॥ सा० ॥ मूक्यो सुवयण
 मुनि नमि चाव्यो, आर्यमंगु पासें मिथ्यात टाव्यो ॥ सा० ॥ धर्म सां
 नली कखो पश्चात्ताप, धरणें रागें श्रमण थयो आप ॥ ९ ॥ सा० ॥
 नरपति प्रणमी मुनिवर पाय, हरखें निज भुवनें ते आय ॥ सा० ॥
 नय पामो तिहां नाठी लखमी, जातां वाट पडी तिहां विषमी ॥ १० ॥
 ॥ सा० ॥ लूटयां वस्त्रानरण ते चोरें, राति पाठिली एकज पोहोरें
 ॥ सा० ॥ पद्मोती नाम कुशस्थल गाम, तस नरपति मांमथुं एक
 काम ॥ ११ ॥ सा० ॥ राणीनें विघननिवारण माटें, पुरोहित गाम बा
 हिर इण वाटें ॥ सा० ॥ अग्निकरी चोवटे चरु रांधे, चोकि मूकी चिहुं
 दिश बांधे ॥ १२ ॥ सा० ॥ नख जेदित तंडुल करि मूक्या, मंत्र जाप
 करतां नवि चूक्या ॥ सा० ॥ इण अवसर देखी ते ज्वाला, इण मार
 ग आवी सा बाला ॥ १३ ॥ सा० ॥ उतखो साथ जाणीनें आवी,
 दीठी दिशापालें तव ठावी ॥ सा० ॥ शीवारुतनें लगती देखी, नय
 पाम्या राक्षसिणी लेखी ॥ १४ ॥ सा० ॥ अंन्या पगनें पडी करवाल,
 कर कंण्या मानुं जीवित शाल ॥ सा० ॥ पडीआ धरती तव ते नारी,
 बोले मत बीहो मन हारी ॥ १५ ॥ सा० ॥ हुं भुं मनुष्यणी एम कही
 थावे, पुरोहित पास नगननें जावें ॥ सा० ॥ देखी धैर्य धरी तस केश,

एकटी कहे बीडो मत लेश ॥ १६ ॥ सा० ॥ दिशापाल तव उठी
 आया, बांधी नयगमां लेई सथाया ॥ सा० ॥ नूपतिने जणव्युं कहे
 न्यारे, करजो विटंबणा विविध प्रकारें ॥ १७ ॥ सा० ॥ एहनुं मांस
 नहनें नवगव्युं, लेई अणुचि सुखमां धराव्युं ॥ सा० ॥ करीय विटंब
 णा अनिद्रिं निद्रंती, गाममांथी काढी ते अजह्नी ॥ १८ ॥ सा० ॥
 ऐसया नवि पामी कांई गामें, अटवीमां फिरती ठामठामें ॥ सा० ॥
 पूर्व कर्मनें उदयें मारी, गजवरें पाप करी अतिनारी ॥ १९ ॥ सा० ॥
 भूमप्रनायें चपनी तेह, योर पापनां फल ठे एह ॥ सा० ॥ सत्तर सा
 गर तेदनुं आय, संजम पाले धरण मुनिराय ॥ २० ॥ सा० ॥ क
 री संजमगा जून परिणाम, पादपोष करे अणसण ताम ॥ सा० ॥
 गाल करी चपना अणगार, आरण देवलोकमां अवधार ॥ सा० ॥
 ॥ २१ ॥ चंडतांति विमानें एह, एकवीश सागर आयु धरेह ॥ २२ ॥
 ॥ सा० ॥ धरण जठी दंपतीनो जांख्यो, नव ठछे खंमैं चित्त
 गायो ॥ सा० ॥ चौवीसमी ठालें ए पुरो, कीथो ठछो खंम सनूरो
 ॥ २३ ॥ सा० ॥ नाइयावदि दशमें गुरु वारें, विसलनगर चोमासुं
 निवारें ॥ सा० ॥ अटारजें एकताला वरपें, शांतिजिनेश्वर साह्यथी
 दपें ॥ २४ ॥ सा० ॥ विजयमिंद्र सूरि शिष्य सवाचो, सत्यविजय गुरु ज
 ममां गवायो ॥ सा० ॥ श्रीगुरु कपूरविजय तस शीरो, खिमाविजय
 तस शिष्य जगीश ॥ २५ ॥ सा० ॥ पंमित जिनविजय जयवंतो,
 विमलविजय जयवंतो ॥ सा० ॥ उत्तमविजय सुशिष्य सोनागी,
 नमस्तजसां जस मति जामी ॥ २६ ॥ सा० ॥ उत्तम समरादित्यनो रास,
 अटारिजय रते जीजविजय ॥ सा० ॥ सांजलतां दोघ मंगलमाला,
 नमस्तजसां सुख सुविजय ॥ २७ ॥ सा० ॥ सर्वगाथा ॥ ७११ ॥
 श्री श्री संनिवृत्तार्थ पंक्तिप्रवर श्री महुत्तमविजयगणेशिष्यपंक्ति
 ॥ ७१२ ॥ अटारिजयगणेशिष्यपंक्ति श्री समरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रवंधे धर
 ॥ ७१३ ॥ नमस्तजसां मंगलमाला ॥ ७१४ ॥ पद्योत्तमः समानः पद्यसुंदरे सर्वे गा
 ॥ ७१५ ॥ ७१६ ॥ ७१७ ॥ ७१८ ॥ ७१९ ॥ ७२० ॥ अने सर्वत्र ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

॥ सप्तम खंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिकरण श्रीशान्तिजी, समरुं सुखदातार; प्रणमुं शंखेश्वर प्रभु,
अडबडीयां आधार ॥ १ ॥ सातमो खंड शोहामणो, समरादित्य
संबंध; सेन वितेन दोय चातुसुत, पितराई परबंध्य ॥ २ ॥ जंबुद्वीप
लख जोअणो, वारू नारहवास; तिहां चंपा नयरी तणो, उत्तम ठे आ
वास ॥ ३ ॥ शेषफणा नोगज समो, पोढो ठे प्राकार; हिमगिरि शि
खर हरावता, जुवन तणो संनार ॥ ४ ॥ नंदनवन वनें जींतियुं, स
रोवरें मानकासार; महाजन जिहां अमत्सरी, दक्ष घणो दातार ॥
॥ ५ ॥ रूपवंत रत्नियामणी, सुंदर घणुं सुकुमाल; लज्जावंत महि
ला तिहां, विनयवंत सुविशाल ॥ ६ ॥ अमरसेन अवनपति, साधि
त दिशिवधु सार; ईयायें आवी वरी, लक्ष्मी पण तस बहार ॥ ७ ॥
जाया तस जयसुंदरी, सयल अंतेउर सिछ; अनुनवतो तेहसुं अव
ल, विषयनोग सुविसिछ ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ क्रीडा करी घरें आविउ ॥ ए देशी ॥

॥ इंणि अवसर देवलोकथी, चविउ पाली आय रे ॥ धरणजीव तिहां
उपनो, स्वप्न लहे सुखदाय रे ॥ १ ॥ इंणि ० ॥ दंम कनकमय दीपतो,
रयण विनूषित तुंग रे ॥ देवदुष्य ध्वज लहकतो, गयण नूपण मानुं
चंग रे ॥ २ ॥ इंणि ० ॥ वदनें उदरमां पेसतो, विस्मयकारि विचित्त
रे ॥ सूर्यउदयें देखी करी, जागी निंद अतीत रे ॥ ३ ॥ इंणि ० ॥ हर्षे
पति संजलावती, कहे तव नरपति एम रे ॥ सकल नरिंङ्केतु समो,
पुत्र अशो तुऊ नेम रे ॥ ४ ॥ इंणि ० ॥ सांजली तेह अंगीकरे, अनुक्रमें
साधे त्रिवर्ग रे ॥ उचित समय सुत प्रसवोयो, सुखमां तेह निसर्ग रे
॥ ५ ॥ इंणि ० ॥ हरषमती दासी तदा, दीध वधाई राय रे ॥ दान सं
तोषनुं नृप दीये, मास एक वहि जाय रे ॥ ६ ॥ इंणि ० ॥ सेनकुंमर

नाम आसीयुं, नये एक अयुं जाम रे ॥ नरकयकी हवे नीकव्यो,
 जय जर्जरीनो नाम रे ॥ ७ ॥ इण्णि० ॥ नमिउं तेह संसारमां, अनंतर
 नये नर आय रे ॥ कांयक कष्ट करी तिहां, नरपति कुजमां आय रे
 ॥ ८ ॥ इण्णि० ॥ अमरमेन नरपति तणो, जाई जघु हरिसेण रे ॥
 दण्डना तन जारया, तन कुबें गेजेण रे ॥ ९ ॥ इण्णि० ॥ जब जन
 नरो तव आसीयुं, नाम विनेनकुमार रे ॥ सेनकुमार अहे कजा, कर
 नो विनेनकुं प्रार रे ॥ १० ॥ इण्णि० ॥ पण नहिं सेनकुं तेहनें, एम
 कयमां तेह काज रे ॥ एक दिन जय जय ख ययो, कुसुमवृष्टि सुविशा
 ज रे ॥ ११ ॥ इण्णि० ॥ सुर तिह विद्याधरयकी, व्यापी रखुं आका
 म रे ॥ गव पुने निजपुरुषनें, कहो ए किशो प्रकाश रे ॥ १२ ॥
 इण्णि० ॥ गव करी प्रतिद्वार ते, जांवे तास निदान रे ॥ इण नय
 गोमां पामीयां, नाथवी केवजजान रे ॥ १३ ॥ इण्णि० ॥ जाणे लोका
 मोकना, जण जाजना जाय रे ॥ सुर विद्याधर बहु थूणें, सांजली न
 मदि ताव रे ॥ १४ ॥ इण्णि० ॥ हरखी चाव्यो वांदवा, आव्यो उपा
 जयकार रे ॥ नांगण अंनते पुतजी, जूं विद्युत् जातकार रे ॥ १५ ॥
 इण्णि० ॥ तिहांयक स्फाटिक विद्रुम कीहां, किहांयक चामर श्वेत रे ॥
 राज दिग् उपर फरकनो, कनक किंकिणी समवेत रे ॥ १६ ॥ इण्णि० ॥
 कण्ठ मारुणियें पगिय्यां, निम आविका समुदाय रे ॥ श्रीमम रूपें शोच
 नो, दुर्गा निजो देवाय रे ॥ १७ ॥ इण्णि० ॥ जय सायर तरियां जिकें, गुण
 सति गपण जेजुर रे ॥ शनिमम वयण गोना मली, नाशित तम अं
 जय रे ॥ १८ ॥ इण्णि० ॥ श्वेतांबरयी सादृणी, स्तवता नृपति ताम रे
 ॥ यमम रग्गी गने धूमने, कने पंचांग प्रणाम रे ॥ १९ ॥ इण्णि० ॥
 तेम मय्ये प्रणम जणि, भमिरया कते जाम रे ॥ आच्या दोय तिणे
 जय मय्ये प्रणम मुन ताम रे ॥ २० ॥ इण्णि० ॥ बंधुदेव सागर नार्मे,
 तेम जय मय्ये प्रणम रे ॥ यममगुन प्रणमी करी, सादृणी प्रणमे सार रे
 ॥ २१ ॥ इण्णि० ॥ जय मय्ये प्रणम रे ॥ पंचेजी पापनिवार रे ॥ पञ्चवि
 ॥ २२ ॥ इण्णि० ॥ जय मय्ये प्रणम रे ॥ २३ ॥ इण्णि० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सागर कहे नृप सांनलो, मत करजो मन खेद; अश्रुत एक दीतुं
अमें, सांनलजो तस जेद ॥ १ ॥ सांनलतां विस्मय थरो, रहि नश
कुं हुं राज्य; विस्मय प्रेखो वीतमी, अर्थ न जाणुं आज ॥ २ ॥ पूतुं एन
गवती प्रत्ये, ठावो नृप कहे ठीक; असंभाव्य अश्रुत किशुं, ते नांखो
तहकीक ॥ ३ ॥ सागर कहे मुज सहचरी, हाथें खोचो हार; अतीत
काज कोई उपरें, वीतरीठ इण वार ॥ ४ ॥ आज नोजन करी आवियो,
चित्रवाली चित्रकार; एक थरुं अचरिज इहां, नांखुं ते अधिकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ अरज अरज सुणोनैं रुडा राजीया होजी ॥ ए देशी ॥
॥ एहवे एहवे मोर एक चित्रमां होजी, जेवे उंचो रे श्वास ॥ हण

मां कणमां कोट हजावतो होजी, कीधो पिब विजास ॥ १ ॥ एहण ॥
पांख पांख खंखेरी उतखो होजी, राता वस्त्रमां हार ॥ मूकि मूकि
गयो निज स्थानकें होजी, हूठ चित्र प्रकार ॥ २ ॥ एहण ॥ देखी
देखी विस्मय उपनो होजी, कहाँ एशुं कहेवाय ॥ एहवे एहवे जय
जय रव थयो होजी, कुसुमवृष्टि ते आय ॥ ३ ॥ एहण ॥ सुरवर
सुरवर विद्याधर सत्या होजी, सांनली लोकनी वाणि ॥ पाम्यां पाम्यां
केवल साहुणी होजी, आय्यो हुं इण ठाण ॥ ४ ॥ एहण ॥ बोले बोले
नरपति सांनलो होजी, साचुं अचरिज एह ॥ एहबुं एहबुं संनवीयें
नहीं होजी, पूठे नगवती नेह ॥ ५ ॥ एहण ॥ नांखे नांखे तव तेह
साधवी होजी, एहमां अचरिज कांय ॥ करमें करमें शुं नवि संनवे
होजी, नियमा सफलां ते आय ॥ ६ ॥ एहण ॥ जेहवां जेहवां शुना
शुन बांधीयां होजी, तेहवां उदयें रे आय ॥ अशुनें अशुनें जल अ
गनि होये होजी, न्याय ते आय अन्याय ॥ ७ ॥ एहण ॥ चंद चंद
तिमिर हेतु होय होजी, घरसांथी मरी जाय ॥ अर्थ अर्थ अनर्थ
मित्र वेरीठ होजी, ननथी अगनि वरसाय ॥ ८ ॥ एहण ॥ शुनथी
शुनथी विप अमृत होय होजी, दुर्जन सज्जन होय ॥ अपजश अप

जश ते जश नीपजे होजी, न हणे युद्धमां कोय ॥ ए ॥ एह० ॥ पा
मे पामे अचिंती संपदा होजी, सुणी बोले नरनाह ॥ कोहना कोहना
कर्मनी परिणती होजी, बोले साहुणी राह ॥ १० ॥ एह० ॥ माहारा
माहारा कर्मनी परिणती होजी, बोले ताम नूपाल ॥ किम ते किम ते
शुं निमित्त कहो होजी, साहुणी जांखे रसाल ॥ ११ ॥ एह० ॥ ज
बु जंबुदीपना नरतमां होजी, शंखवर्द्धन नाम ॥ नयर नयर शंख
पाल नूपति होजी, धनसार्थप उदाम ॥ १२ ॥ एह० ॥ धन्या धन्या
तेहनें नारजा होजी, दोय पुत्र ठे तास ॥ धनपति धनपति धनावह
नामथी होजी, पुत्री धनसिरी खास ॥ १३ ॥ एह० ॥ जाणो जाणो
ते हुं राजिआ होजी, परणावी पुरमांहि ॥ तातें तातें तिहां सोमदे
वनें होजी, नरता उपरत त्यांहि ॥ १४ ॥ एह० ॥ जोग जोगनी वात
जही नहीं होजी, उपनो मुज निर्वेद ॥ चंड चंडकांताजिध साहुणी
होजी, पाउ धाखा गतखेद ॥ १५ ॥ एह० ॥ सखियें सखियें मुज
जणव्युं जदा होजी, गई हुं वंदन काम ॥ जिनघरें जिनघरें दीठां ते
गुणी होजी, सुंदर पण दह्यो काम ॥ १६ ॥ एह० ॥ कला कला
कुशल मानी नहीं होजी, श्रुतदेवी परें जेह ॥ धरम धरम कहेती
आविका नणी होजी, विस्मय थयो मुज देह ॥ १७ ॥ एह० ॥ पेठी
पेठी जिनघरमां तदा होजी, बंटा चाली में हाथ ॥ दीवो दीवो करी
फूल वरशिआं होजी, पूजी पडिमा जिननाथ ॥ १८ ॥ एह० ॥ धूप
धूप करी प्रभु वंदिआ होजी, आवी गुरुणीने पास ॥ प्रणमी प्रणमी
धर्मलाज तिणें दियो होजी, वेठी तास सकाश ॥ १९ ॥ एह० ॥
पूठे पूठे मुज तुमें किहांथकी होजी, में कहुं इहांथी आय ॥ जांख्यो
जांख्यो सखीयें माहारो होजी, जनक जननी ठाय ॥ २० ॥ एह० ॥
करमें करमें परणी ततदणें होजी, नरता मरण ते पामि ॥ नियम
नियम उपवास बहु करे होजी, मन वैराग्य प्रकाम ॥ २१ ॥ एह० ॥
देह देहडी गाले एणि परें होजी, सांजली तुम विरतंत ॥ जकें जकें
आवी वंदवा होजी, मावित आण जहंत ॥ २२ ॥ एह० ॥ खंम खंम

सातमे बीजी कही होजी, उल्लासैं एह ढाल ॥ पंढित पंढित उत्तमवि
जयनो होजी, जांखे पद्म ए बाल ॥ ३३ ॥ एहण ॥ सर्व गाथा ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साधवी कहे सारुं कछुं, आव्यां तुमें इहां आज; बलि वैराग्य
घणो वहो, करतां आतम काज ॥ १ ॥ ए संसार असार ठे, दुःख
जाजन दुःखदाय; धर्म कहे ते धर्मिणी, परिणम्यो तास पसाय ॥
॥ २ ॥ विरति देशथी पडिवजी, केतोक वीतो काल; जननी जनक
जमघर गयां, चिंतव्युं चित्त विचाल ॥ ३ ॥ साधुपणुं लेवं सखर, पूबुं
घातने प्रेम; ते कहे घरमांहिं तमें, नवि थाये किम नेम ॥ ४ ॥ जि
नवर घर निपजावियुं, रहिने घर आवास; प्रतिमा नरावी परवडी,
करुं निज ज्ञानप्रकाश ॥ ५ ॥ फुल बलि चंदन गंध फल, इव्यनो
व्यय ते देखि; जोजाई मन जावे नहीं, करकर करे अतिरेख ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पीउजी पीउजी नाम जपुं दिन रातिआं ॥ ए देशी ॥

॥ में मन चिंतव्युं जाई चित्त जोवं खरी, शुं मुऊ एहशुं काम हवै
रयणी पडी ॥ पोहोर रातें ते वासजुवन आगल रही, धनपति आव्यो
वासजुवनमां गहगही ॥ १ ॥ जिम जाई सांजले जोजाईनैं तिम
कहे, धरमदेशना मिशथी जिम संशय लहे ॥ साडी राखजे आपणी शुं
कहियें घणुं, सांजली चिंतवे तास पति कुशीजपणुं ॥ २ ॥ नगनी
जूठ न जासे तिणें एहथी सखुं, आवी जब ते नारि वदन अवजुं
कछुं ॥ पाय उल्लासी दीवो समारी तंबोल धरे, नारी निवारी मत
शय्या पर पग धरे ॥ ३ ॥ मन चिंतें स्त्री हांसी मुऊ करता हरो, जब
सूती तव जरतार उठयो धसमसे ॥ नारी कहे शुं कारण तव कहे
इणि परें, कांय नहीं पण नीसर मुऊ घर बाहिरे ॥ ४ ॥ सा चिंतें में
दुष्कृत कांय कीधूं खरूं, चिंतवि उठि सज्जाथी चित्त आलोच करूं ॥
बहु चिंता अंतें पति निडावश थयो, सा पण संनारे मुऊ दोष न
कोई नयो ॥ ५ ॥ शोकातुर थई चिंतवे मुऊ जीववुं नहीं, जिणथी

पति डहवाये अथवा एम सही ॥ मरतां नरतानुं होय लघुताई पणुं,
 लोक करे विकल्प आहुं अवलूं घणुं ॥ ६ ॥ ए डःख सहेवाये नहीं
 कहो शुं कीजीये, अहवा नणंद मुज माही काम ए दीजीये ॥ बुद्धि
 घणी जुगताजुगतुं मुज नांखशे, करशुं पठे ते काम नणंद जे आ
 खशे ॥ ७ ॥ मन डःखनें वली आंखें आंशु धारा वहे, रातिमाहिं क
 एमात्र न निडा ते लहे ॥ वासजुवन अकी आमण डमणी नीकली,
 में पूठयुं तस इणि परें किम रहे टलवली ॥ ८ ॥ रोते वदनें कहे अ
 पराध जाणुं नहीं, रूठो नरता कहे मुज निकल तुं बहि ॥ में कह्युं
 धीरीया करुं काम हुं ताहरुं, एम करी नाईनें कहुं सुण वचन ते मा
 हरुं ॥ ९ ॥ श्यो अपराध कखो तुज नारी ते कहो, ते कहे डष्टशीलानुं
 नाम ते मत लहो ॥ एहथी संतति बिगडे अपजश, विस्तरे, मलिन
 करे कुजनें वलि नरता संहरे ॥ १० ॥ उजय लोक बिगडे तिणें काम
 न एहनुं, में कह्युं किम जाण्युं तव चरि कहे तेहनुं ॥ सांनव्युं तूम
 पासें देशना मिश कह्युं, तव में कह्युं तुज पंमित पणुं रूडुं लह्युं
 ॥ ११ ॥ अहो तुज माहापणनें मुजशुं स्नेहज घणो, में कह्यो सामा
 न्यें एहमां दोपज पणो ॥ पण नवि एहनो दोष देखाडवा जाणजे,
 एटले तुं तुज नारीमां दोष म लावजे ॥ १२ ॥ शरमायो ने पश्चात्ता
 प करे अति, अहो मातुं कह्युं काम मनावी ते सती ॥ में एम धाखुं
 मानशे कल धवल सहु, एह नाई हवे बीजानी पण जे बहू ॥ १३ ॥
 इणि परें नांख्युं हाथ ठेकाणे राखजो, बीजुं सर्व पूरव परें एहनें नांख
 जो ॥ कपटें करम बंधाणुं मुजनें तिणे समे, अन्यदा दीक्षा में लही
 जिणें नव नवि जमे ॥ १४ ॥ नाई नोजाईशुं व्रत पालूं हुं सदा, आ
 युद्धयें सुरलोकें अया अमें अन्यदा ॥ आगलथी मुज नाई चवी इहां
 आवीआ, शेर पूर्णदत्त पुत्रपणे नाम ठावीआं ॥ १५ ॥ सागरनें
 वंधुदेव वधंता अनुक्रमें, हुं पण उपनी गजपुर नगरें तिण समे ॥
 शंखशेठनी जुन कांता नारी उरें, पुत्रीपणें यई नाम सर्वांगसुंदरी
 धरे ॥ १६ ॥ नोजाइउ पण देवलोकमांथी चवी, कोशलापुरमां नंदन

शेठ घरें हवी ॥ देविलाकुखें नारी पणे बिहुं अवतरी, श्रीमती कां
 तिमती अनिधा अनुक्रमें धरी ॥ १७ ॥ जैनधर्मी हुं श्रावक कुल उप
 नायकी, यौवन वय लही तिणें मुज देखे सहु ठकी ॥ बंधुदेव गज
 पुरमां एक दिन आवियो, मुजनें देखी काममांहि चित्त लावीयो ॥ १८ ॥
 पूढ्युं मुज वृत्तांत वर्द्धन नरनें जदा, सर्वांगसुंदरी ए शंखधूआ कहे
 तदा ॥ तास पिता कनें मागी तव ते एम कहे, योग्य तुमें हो पण ए
 साधर्मिक लहे ॥ १९ ॥ श्रावक विण जोग न करूं सुतनें दीकरी, में
 एम गुरुने पासें शुद्ध अगड धरी ॥ तव ते कहे मुजने पण साधर्मिक
 करो, तात कहे सुणो जिनवाणी हृदयें धरो ॥ २० ॥ नावथी श्राव
 क थाउं तव ते सांजली, मुजलोनें गयो साधु समीपें ते वली ॥
 धर्म सुणीने कपटें श्रावक ते थयो, क्रिया करे दानादि दिये एम काल
 गयो ॥ २१ ॥ एकदिन तातनी पासें आवी वीनवे, धन्य थयो हुं मत
 जाणो कहे केतवें ॥ तुमें उपदेश दीधो हुं पण पामीउं, जैनधर्मने
 मिथ्यामत सवि वामीउं ॥ २२ ॥ मुज परलोकनो बांधव देव गुरु
 समो, तुम सम अवर न होय अहो तुजनें नमो ॥ विदित संसार स्व
 नाव हुं तिणें मुज स्वप नहीं, कन्यानो तिणें निजदेशें जाशुं सही
 ॥ २३ ॥ शासनरागें मुजने मत वीसारजो, उचित काम मुज लख
 जो दृढधर्म धारजो ॥ पोतानो गणजो एम कही पायें पडे, शुद्धस्वना
 वथी तात सत्य चित्तमां घडे ॥ २४ ॥ बहुमानें वली तात कहे धन्य
 हो तुमें, जिणें लाधो जैनधर्म घणुं शुं कहीयें अमें ॥ सातमे खंडें ढाल
 ए त्रीजी मन धरो, पद्म कहे नविलोक के सहु जय जय करो ॥
 ॥ २५ ॥ सर्व गथा ॥ ८९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परमारथ तुमें पामीया, मत करजो परमाद ; एम कहि नीकलीयो
 इशे, नवि कीधो कांय नाद ॥ १ ॥ सजन मेलावो सर्वनो, करीनें पूढे
 काम ; परणावुं कहोतो पठें, तुम मन माने ताम ॥ २ ॥ सहु कहे
 श्रावक साचलो, सर्वांग सुंदरीसंग ; योग्य लह्यो हवे जिम तुमें, मन

माने सो उमंग ॥ ३ ॥ परणावे तव मुंज पिता, काढ्यो केईक काल ;
निज घर आव्यो नारगुं, करे उहव ततकाल ॥ ४ ॥ वासर गयो वेला
थई, मंगल दीप मंमाण ; कुसुम वृष्टि कीधि तिहां, वास आवास व
खाण ॥ ५ ॥ धूपघडी तिहां धगधगी, लटकावी फूलमाल ; आव्यो
नर्ता इण समे, सुणो वात सम काल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जिनवचनें वैरागीउ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर उदयें अयुं हो प्राणी, बांध्युं प्रथम जे कर्म ॥ नोगव्या
विण ठूटे नहीं हो प्राणी, कर्म न राखे शर्म रे हो सुणजो प्राणी,
कर्म न कीजें वे ॥ १ ॥ क्षेत्रपाल फिरतो यको हो प्राणी, आव्यो
तिणहीज देश ॥ कर्मपरिणाम अचिंत्य ठे हो प्राणी, दीठां दंपती
नव वेश रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २ ॥ कौतुक जोउं ए इहां हो प्राणी,
जिम नवि थाय संजोग ॥ रूप करी अन्य पुरुषनुं हो प्राणी, पाडवा
तास विजोग रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ३ ॥ गोंखमां वदन करी कहे
हो प्राणी, सर्वांगसुंदरी काम ॥ बंधुदेवें ते निरखिउ हो प्राणी,
आव्यो कषायने धाम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ४ ॥ अरति थई मुज
उपरें हो प्राणी, जाणुं कुशील ठे नारि ॥ कोईक बोलावी किम ग
यो हो प्राणी, इण परें करत विचार रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ५ ॥
स्नेहबंधन तूटी गयुं हो प्राणी, हुं आवी तिहां ताम ॥ चेष्टा कीध
सूवा तणी हो प्राणी, सखिउ गइ निज ताम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥
॥ ६ ॥ धार देई शय्या तणे हो प्राणी, बेठी एकज देश ॥ पति
ऊठयो सहसा तदा हो प्राणी, हुं पण ऊठि विशेष रे हो ॥ सु० ॥
॥ क० ॥ ७ ॥ में अपराध न पूढीउ हो प्राणी, पति तव सूतो ते
थी ॥ करतो विकल्प कोडयो गमें हो प्राणी, निडा आवी एथी रे
हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ८ ॥ हुं पण महाशोकें ग्रही हो प्राणी, धर
तियें बेठी ताम ॥ राति गई दुःखणी घणी हो प्राणी, जाणे त्रिभुवन
स्वामी रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ९ ॥ सहिउ आवी नरता गयो हो

प्राणी, पूठे सहीउ वात ॥ केम तुमें आमण डमणां हो प्राणी, तव
नवि बोवुं जात रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १० ॥ वात कहेवा जेहवी
नहीं हो प्राणी, शोकथी कंठ निरुद्ध ॥ सुधि बुद्धि पण नाशी गइ
हो प्राणी, फरि पूठे सखि सुद्ध रें हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ११ ॥ व्यति
कर सर्व सुणावीउ हो प्राणी, तव चिंते सखि एम ॥ स्वामिनीमां
दूषण नहीं हो प्राणी, पति पण निपुण ठे नेम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥
॥ १२ ॥ कर्मदोष परजव तणो हो प्राणी, निश्चय कारण एह ॥ स्व
जन पूठ्या विण पति गयो हो प्राणी, आव्यो चंपायें तेह रे हो ॥
॥ सु० ॥ क० ॥ १३ ॥ माता पिता पति उपरें हो प्राणी, कोप्यां
माहरे रे राग ॥ व्यवहार टाव्यो तेहछुं हो प्राणी, मुऊ उपनो वैराग
रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १४ ॥ ए संसार असारमां हो प्राणी, दुःख
तो शोहिलुं होय ॥ चारित्रधर्म ते दोहिलो हो प्राणी, चंचल जीवि
त जोय रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १५ ॥ गृह आश्रमथी हवे सखुं हो
प्राणी, जेहथी बहु जंजाल ॥ चारित्र लेवुं माहरे हो प्राणी, जिएथी
सुख असराल रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १६ ॥ इण अवसर तिहां आ
विथां हो प्राणी, गुरुणी जसवती नाम ॥ माता पिता आणा जही
हो प्राणी, दीक्षा ग्रहि अनिराम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १७ ॥ बंधु
देव परण्यो हवे हो प्राणी, श्रीमती नामें नार ॥ कोशलापुरें नंदरो
वनी हो प्राणी, धूया गुणजंमार रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १८ ॥ सा
गर परण्यो तेहनी हो प्राणी, जगिनी कांतिमती नाम ॥ ते वधू बिहु
लेई आविआ हो प्राणी, इणहिज चंपा ठाम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥
॥ १९ ॥ गुरुणी साथें विचरतां हो प्राणी, आव्या तुम पुरें राय ॥
फिरतां गोचरी गाममां हो प्राणी, बंधुदेव घर आय रे हो ॥ सु० ॥
॥ क० ॥ २० ॥ मुनिनैं वयर न राखवुं हो प्राणी, दीठां ते बिहु ना
र ॥ पूर्व जव अन्यासथी हो प्राणी, प्रीति थई ते अपार रे हो ॥
॥ सु० ॥ क० ॥ २१ ॥ यतः ॥ “जं अप्रसेइ जीवो, गुणं च दोसं च
इह जम्मंमी ॥ तं पावई परलोए, तेणय अप्पास जोएणं ॥ १ ॥

अन्यासेन क्रियाःसर्वा, अन्यासात्सकलाः कलाः ॥ अन्यासाद्धान
मौनादि, किमन्यासस्य दुष्करं ॥ १ ॥” पडिलान्यां अन्न पाणीयें हो
प्राणी, आव्या उपाश्रयें तेह ॥ धर्म सुणाव्यो दोयनैं हो प्राणी,
परिणम्यो विकसी देह रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ११ ॥ आविका यई
हवे वीनवे हो प्राणी, कीजें अम उपगार ॥ धर्म कहो घर आविनैं हो
प्राणी, बूजे अम परिवार रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १२ ॥ आणा लही
गुरुणी तणी हो प्राणी, गमनागमन करेय ॥ सातमे खंमैं चोथी कही
हो प्राणी, पद्यें ढाल ते श्रेय रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १४ ॥ ११ ए ॥
॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर आव्युं उदय, कर्म जे बीजुं कीध; राग घणो विहुं
नारीनो, शासन नक्ति सिद्ध ॥ १ ॥ व्यंतर आश्रित जुवननो, चिंते
इण परें चित्त; साधवी उपर साचलो, नक्ति जाव नलि रीत ॥ २ ॥
जोउं राग जोपैं करी, इण अवसर एक दिन; गई हुं एहना गेहमां,
वारू वासजवन्न ॥ ३ ॥ हार परोवे हर्षशुं, कांतिमती निजकाम; उ
नी यइ आदर दीये, आसन देवे आम ॥ ४ ॥ साहुणीउं बेठी स
खर, मुज पूठे महाराय; दीधी धर्मनी देशना, ऊठी अवसर ठाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ नंद सलूणा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ जावा मामुं जेटले रे लो, कांतिमती कहे तेटले रे लो ॥ आज
तुमारे पारणुं रे लो, अशन लीउं देहधारणुं रे लो ॥ १ ॥ आण
करी साहुणी नणी रे लो, में तिहां आहार लेवा तणी रे लो ॥ कां
तिमतीशुं गयां हवे रे लो, आहारना घरमां एहवे रे लो ॥ २ ॥
चित्रमोरमां अवतखो रे लो, व्यंतर मोर ते उतखो रे लो ॥ हार ग
ली यानकें गयो रे लो, मुज्जें विसंक्रम बहु थयो रे लो ॥ ३ ॥ पू
ठुं गुरुणीनैं जई रे लो, एम चिंतवी आलय गई रे लो ॥ वोहोरावी
नैं कांतिमती रे लो, वासजुवनमां आवती रे लो ॥ ४ ॥ हार जोयो
दीठो नहीं रे लो, मन चिंते ए शुं सही रे लो ॥ कौतुक मोहोहुं उ
पनुं रे लो, कहो जाई ए शुं नीपनुं रे लो ॥ ५ ॥ पूठे तव परिवारनैं

रे लो, दीगो कोई इहां हारनें रे लो ॥ परिजन कहे जाणुं नहीं रे लो, पण कोई आव्युं नहीं अहीं रे लो ॥ ६ ॥ इहां आर्या आर्या हतां रे लो, तुमें तिहां जाउं जोयतां रे लो ॥ कांतिमती कहे शुं कहो रे लो, एहुनें तृण मणि सम लहो रे लो ॥ ७ ॥ असं बंध कहो तेहनें रे लो, कनक पत्थर सम जेहनें रे लो ॥ वात चाली पुरमां घणी रे लो, कहुं में आवी गुरुणी नणी रे लो ॥ ८ ॥ गुरुणी कहे मुजनें इशुं रे लो, कमें नीपजे सहु किशुं रे लो ॥ तप चारि त्र अधिकां करो रे लो, मत इण घर पगलुं धरो रे लो ॥ ९ ॥ प्रवचनलाघव जाणीयें रे लो, ते तो प्रयत्नथी नाणीयें रे लो ॥ शरद चंद शासन तणुं रे लो, मलिनपणुं आये घणुं रे लो ॥ १० ॥ अधर्म लहे धरमी नवा रे लो, सज्ज होये दुर्गति जवा रे लो ॥ लंघे जिनआणा वली रे लो, संसारहेतु सहुनें नली रे लो ॥ ११ ॥ गुण ठांमी अगुणी अई रे लो, धर्मनी वाततो वही गई रे लो ॥ बोधी बोली संसारमां रे लो, रजले ज्युं पारावारमां रे लो ॥ १२ ॥ सांजली संवेग जावना रे लो, उपनी आतमपावना रे लो ॥ तप करे सुविशेष हवे रे लो, तस घर वरजे विण जवे रे लो ॥ १३ ॥ परिजन मन शंका घणी रे लो, आविकानें नहीं एक कणी रे लो ॥ आविका चिंतवे इणि परें रे लो, गुरुणीयें वात जाणी खरे लो ॥ १४ ॥ संकट जाणी न आवियां रे लो, धर्में आपण जाविअ्यां रे लो ॥ दोष अनेक परघर जतां रे लो, इह लोकनां निस्पृह अतां रे लो ॥ १५ ॥ आव्यां नहीं ते कारणें रे लो, अमें जशुं गुरुणी बारणो रे लो ॥ केईक काल एम वही गयो रे लो, एक दिन चित्त निरमल अयो रे लो ॥ १६ ॥ कर्मराशि पातली पडी रे लो, शुक्ल ध्यानमांहिं चढी रे लो ॥ जीववीरज उल्लशुं जदा रे लो, अपूर्व करण अशुं तदा रे लो ॥ १७ ॥ कूपकश्रेणिमांहे लही रे लो, केवलज्ञान ठातुं नहीं रे लो ॥ कर्म त्रुटुं जब माहरूं रे लो, व्यंतर चित्त अशुं पाधरूं रे लो ॥ १८ ॥ पश्चात्तापें हारनें रे लो, मूक्यो कर्म निवारणें रे लो ॥ कर्मविपाक मुऊ दाखिउ रे लो, सां

नली सहु जन हरखित रे लो ॥ १९ ॥ विस्मित थई कहे एहवुं रे लो, अहो एटलाथी डुःख केहवुं रे लो ॥ राजादिक कहे स्वामिनी रे लो, बहु डुःखनी खमी जामिनी रे लो ॥ २० ॥ चिहुं गतिमां नम तां थकां रे लो, डुःख ते कहो किम कही शकां रे लो ॥ नरक तिरी डुःख तो रह्यां रे लो, मनुष्यनां पण किम जाये सह्यां रे लो ॥ २१ ॥ गर्जनं जनम मरण जरा रे लो, प्रियविरहादिक डुहकरा रे लो ॥ मै शुनसुख माने जिके रे लो, खरज खनन सम ठे तिके रे लो ॥ २२ ॥ मुख मीठा विरसा पठे रे लो, धर्मथकी सहु अघ गठे रे लो ॥ बू जी सजा तव नूपति रे लो, बंधुदेव कहे शुनमती रे लो ॥ २३ ॥ धरम अमें अंगीकरुं रे लो, तुम आणा अमें शिरधरुं रे ॥ जिम सुख देवाणुप्रिया रे लो, विलंब न कीजें ए क्रिया रे लो ॥ २४ ॥ अछाई महोत्सव करे रे लो, दान देईनें उररे रे लो ॥ हरिसेननें राज्यें ठवि रे लो, दीक्षा लीये ज्युं सुरगवी रे लो ॥ २५ ॥ पुरुषचंडसूरिनें कनें रे लो, सायें प्रधाननें परिजनें रे लो ॥ पांचमी ढाल पठे कही रे लो, सातमे खंमें ए सही रे लो ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ १५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ खेद धरी ठल खोलतो, सेन तणां वीसेन; बिड न लाधुं ठल थकी, तव कखुं मौनज तेण ॥ १ ॥ एक दिन सूरज आयमे, फूल्या अकालें फार; नवन उद्यानमां नूपना, वनपालक तिणि वार ॥ २ ॥ आवि प्रधाननें उलगे, तिमज दीठा तिणें ताम; पाठा मूल प्रकृतें थया, जाणी चिंते जाम ॥ ३ ॥ अंबड अष्टांग निमित्तिउ, सिद्धपुत्र सुविचार; एकांतें आदर करी, पूढे प्रधान प्रकार ॥ ४ ॥ कुसुम विचार जावी कहो, तव बोळ्यो ततकाल; कोप न करशो को परें, शास्त्रवचन संजाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठही ॥ चंड सदहणा तिलिंग ठे ॥ ए देशी ॥

॥ कोप किस्यो देवपरिणति, नांखे एम प्रधानो जी ॥ कहो जेहवुं होय तेहवुं, तव बोळ्यो ते विज्ञान जी ॥ १ ॥ त्रुण ॥ विज्ञानथी कहे कुसुम ऊ

ग्यां, अकालें फल तास ए ॥ राज्य उलट पलट आशे, सांजलो सुविला
स ए ॥ तुरत सहज स्वनाव दूआं, तिणे थोडो काल ए ॥ क्लीणवेला
वलथकी वली, प्रनूतकाल निहाल ए ॥ १ ॥ कहे परधान करवुं किशुं.
नांखो तास उपाय जी ॥ दान प्रमुख शांतिकर्मशी, विघन विदारण आय
जी ॥ २ ॥ त्रुण ॥ आय इणिपरें निमित्तिउ कहे, देवगुरु पूजा करो ॥
जाव जीव कांय पाप ठांमो, गुण अधिक अंगें धरो ॥ पडिहार नृपनो इणें
अवसरें, आवि कहे महाराय ए ॥ बोलावे तुमें शीघ्र आवो, तव प्र
धान कहाय ए ॥ ४ ॥ कहो नृपनै जई इणि परें, आव्यो आण प्रमा
ए जी ॥ पूठे ताम निमित्तिउ, शे कारण नृप आण जी ॥ ५ ॥ त्रुण ॥
नैमित्तिउ कहे राजपुरशी, आव्यो नृपनर एक ए ॥ कव्याणकारी
तिणें तुम्हनें, तेडाव्या ठे ठेक ए ॥ संक्षेपशी हुं एह जाणुं, तव कहे
परधान ए ॥ कव्याणकारी कहो शुं ठे, बोले तव वरज्ञान ए ॥ ६ ॥
उच्चरो कांयक मुखथकी, तव ते इणि परें नासे जी ॥ जयइ जयलही
निलय, सुणी निमित्तिउ विमासे जी ॥ ७ ॥ त्रुण ॥ विमासी कहे नृप
कुमरनें, कन्या देवा काज ए ॥ आव्यो तिणें आणंद हेतु, वलि सुणो
एक आज ए ॥ जेह परणशें एह कुमरी, तेह आशें राय ए ॥ एह तु
मचा राज्य करो, वली अन्यनो आय ए ॥ ८ ॥ निमित्तिउ विसर्जिउ,
पूजी हर्ष लहीनें जी ॥ शांतिकर्म आणा करी, गयो नृप पासें वहीनें जी
॥ ९ ॥ त्रुण ॥ राय ऊठी आसन आयुं, दीगोनयणें दूत ए ॥ नृप कहे
रायपुर नृपनर ए, सुणो तस आकूत ए ॥ शंख नरपति एम कहावे,
सुता मुऊ शांतिमती ॥ आपी तुम्ह सुत गमे तेहनें, वाहाली जीवित
शी अति ॥ १० ॥ कहे मंत्री अनुकूल ए, कीजें तास वचन जी ॥ राय
कहे मानो सुखें, सेनकुमारनें दिन्न जी ॥ ११ ॥ त्रुण ॥ सामंत नयरी
जनने जणवे, मंत्री वर्द्धापन करें ॥ वाजे मंगल तूर नाचे, अंतेउरी
आणंद धरे ॥ आणंद सहुने उपनो पण, डुहवाणो विसेण ए ॥ सुणी
न शकुं एह व्यतिकर, देखी शकीयें केण ए ॥ १२ ॥ केइक दिन पठी
मोकले, परणवा सेनकुमारो जी ॥ बहु आंमबरें परिवद्यो, मंत्रीप्रमु

ख परिवारो जी ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ परिवारसेती गयो तिहारें, सामईयुं
 ते नृप करे ॥ ठोडाव्या सहु बंदिजनने, दान देवे शुन परें ॥ राजमार
 ग शुद्ध कीधो, पात्र नाचे पगपगें ॥ इत्यादिक परवेश महोत्सव, आरं
 वरथी जगमगे ॥ १४ ॥ उत्तरे नृपदत्त जुवनमां, लगन दिवस वरता
 वे जी ॥ अनुक्रमें गजशिर बेशीनें, विवाह मांमवे आवें जी ॥ १५ ॥
 ॥ त्रु० ॥ बहु परें शणगार करिने, पहेरी वस्त्र अलंकार ए ॥ रूप अद्भुत
 देखि चिंते, ताम सेनकुमार ए ॥ नव अनादि अन्यास दोषें, जाग्यो
 प्रेम अंकूर ए ॥ अहो एहवा नाव जगमां, उपजे नरपूर ए ॥ १६ ॥
 पाणिग्रहण थयुं तिहां, फेरा फरतां ताम जी ॥ दान दीये बहु नरपति,
 सुख नोगवे शुनधामो जी ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ बोलावीआ केई दिवस र
 हीनें, आव्या निजपुरी ऊमही ॥ नरपति अंतैउर नगर जन सहु,
 आव्यां सनमुख गहगही ॥ पेसारो महोत्सव करीनें, लाव्या निज आ
 वास ए ॥ तव विसेनकुमार डुजाणो, पूरववैर अन्यास ए ॥ १८ ॥
 काल गयो वली केटलो, आव्यो मास वसंतो जी ॥ कामिनीजन म
 दनाकुली, मलय अनील वायंतो जी ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ कोकिलरवें करी
 पथिक त्रशव्या, केसुडां फूली रह्यां ॥ अंबमंजरी तणे परिमल, त्रमर
 अति आणंद लह्या ॥ राढा मली तिहां अति अनोपम, ताम सेनकु
 मार ए ॥ वस्त्र उज्ज्वल अनें आनूपण, साथें सहु परिवार ए ॥ २० ॥
 अमर नंदन उद्यानमां, कनककटक धस्यां हाथो जी ॥ बाजुबंधनें
 कुंमलें, केडें कटिसूत्र ते साथो जी ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ तिणें साथें माथे
 मुकुट पहेस्यो, वेतो गजवर उपरें ॥ वाजते वाजे वंदिजनशुं, परिवस्यो
 जब नीसरे ॥ खंम सातमे पद्मविजयें, कही ठही ढाल ए ॥ समरादित्य
 ना रासमांहि, सुणतां मंगलमाल ए ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ऐरावण परें इंद जिम, सुरपरिवृत्त तिम सेन ; शांतिमती पण शो
 हती, नूपण बहु नरणेण ॥ १ ॥ रसणा मणि नेउरवर, द्वार कुंमल
 शोहंत ; चंद्रमुखी चतुरा घणुं, मानिनी जन मोहंत ॥ २ ॥ जडितर

तन जंपानमां, बेठी बाला तेह; डहवाणो देखी इशुं, जडो विसेनो जेह ॥ ३ ॥ पूरव कर्मविपाकशुं, अवलूं सूजे आम; मारूं एहनें मूलथी, ठावो फेडुं ठाम ॥ ४ ॥ अमरनंदन उद्यानमां, आव्यो कुमर आराम; वावि सरोवर वृद्धनें, देखी हर्ष उदाम ॥ ५ ॥ ऊतरीउ अवनी तजे, क्रीडा विविध प्रकार; करतां दिन सवि नीकव्यो, आव्या निज आगार ॥ ६ ॥ एम नित्य रमवा आवतो, सेनकुमर सुहमन्न; मारा पूठें मूकतो, विसेन कुमर विखिन्न ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ लोहारणी जायो दीकरो ॥ लोहारी हे ॥

॥ तेहनूं फूलणीउ दिउ नाम के ॥ लाल सुरंगी हे ॥ ए देशी ॥

॥ एम करतां बहु दिन गया ॥ सुणो प्राणी हे ॥ एक दिन अया म ध्यान्ह ॥ लाल गुणखाणी हे ॥ परिजन सहु विरला अया ॥ सु० ॥ रह्यो निज जवननें आन ॥ ला० ॥ १ ॥ निज निज कामें चर गया ॥ सु० ॥ हवे धरी तापसवेश ॥ ला० ॥ आव्या विसेण कुमरना ॥ सु० ॥ कपट करी कायक्लेश ॥ ला० ॥ २ ॥ नलिका प्रयोगें खडग धरी ॥ सु० ॥ देखे सेन कुमार ॥ ला० ॥ दुकम कखो आव वा तणो ॥ सु० ॥ आव्या जाम तिवार ॥ ला० ॥ ३ ॥ शे कारण तुमें आविया ॥ सु० ॥ एम पूठे सेनकुमार ॥ ला० ॥ ते कहे गुरु आणाथकी ॥ सु० ॥ आवो एकांतें ठार ॥ ला० ॥ ४ ॥ कुमर विचारे चित्तमां ॥ सु० ॥ तपस्वी गुरु वचकार ॥ ला० ॥ थोडो ए दोष एहमां नहीं ॥ सु० ॥ शुद्ध हृदय एम धारि ॥ ला० ॥ ५ ॥ गया एकांतें जेटले ॥ सु० ॥ तूरी फुंटावी लीध ॥ ला० ॥ काढि खडग खंध देशमां ॥ सु० ॥ गाढ प्रहार ते कीध ॥ ला० ॥ ६ ॥ कोप्यो कुमर चिंते शुं अशुं ॥ सु० ॥ वलिया माबे पास ॥ ला० ॥ अचलित वीर्य कुमर घणुं ॥ सु० ॥ पडिया तेहनें पास ॥ ला० ॥ ७ ॥ घातक कोजाया घणुं ॥ सु० ॥ जींत्या एकें चार ॥ ला० ॥ खड्ग फुंटावीनें लीध्यां ॥ सु० ॥ देखी एह प्रकार ॥ ला० ॥ ८ ॥ शोर कखो वनपालिका ॥ सु० ॥ तव आव्या चोकिआत ॥ ला० ॥ खड्गयी मारवा

मांभीया ॥ सु० ॥ तव कुमर निपेध करात ॥ ला० ॥ ए ॥ क्लोच
 जह्या नबला अया ॥ सु० ॥ जीवितनी नहीं आश ॥ ला० ॥ मारे
 सुअानें शुं होई ॥ सु० ॥ आशा अफल अई जास ॥ ला० ॥ १० ॥
 राय सुणी तिहां आविआ ॥ सु० ॥ बंधाव्या ते चोर ॥ ला० ॥ नूप
 कहे ए शुं अयुं ॥ सु० ॥ कुमर कहे तिणें वोर ॥ ला० ॥ ११ ॥
 कांय अमें जाणुं नहीं ॥ सु० ॥ घातकनें कहे ताम ॥ ला० ॥ शुं ए
 कशुं कोणें मोकल्या ॥ सु० ॥ निमित्त विना नहिं काम ॥ ला० ॥
 ॥ १२ ॥ नवि बोल्या ते तव फरी ॥ सु० ॥ पूढे एम त्रण वार ॥
 ला० ॥ तो पण जब नवि बोलीआ ॥ सु० ॥ तव तस दीधो मार ॥
 ला० ॥ १३ ॥ नविअ खमाणा कोरडा ॥ सु० ॥ जीवितनी वली
 आस ॥ ला० ॥ नूप कोष न खमी शक्या ॥ सु० ॥ वात कइ सवि
 तास ॥ ला० ॥ १४ ॥ कुमर विसेनें मोकल्या ॥ सु० ॥ कीधुं एह
 अकाज ॥ ला० ॥ कोप्यो विसेन कुमर नणी ॥ सु० ॥ सेन कहे
 सुणो राज ॥ ला० ॥ १५ ॥ कुमर विसेन ए नवी करे ॥ सु० ॥ स्व
 जन तणो हितकार ॥ ला० ॥ तातनो सुत जश अरथीउ ॥ सु० ॥ न
 करे विरुद्ध कुमार ॥ ला० ॥ १६ ॥ जीवित इबक एम कहे ॥ सु० ॥
 तिणें कीजें सुपसाय ॥ ला० ॥ घातक मूको तातजी ॥ सु० ॥ ताम
 गवेसे रांय ॥ ला० ॥ १७ ॥ कुमर विसेनना निश्चयें ॥ सु० ॥ कोप्यो
 राय अपार ॥ ला० ॥ काढी मूको मुज राज्यथी ॥ सु० ॥ कुजदूष
 क ए कुमार ॥ ला० ॥ १८ ॥ काढो ए घातक जीवथी ॥ सु० ॥ तव
 पडिउ सेन पाय ॥ ला० ॥ नांखे जो ए इम करो ॥ सु० ॥ तो मुज
 दुःख अति आय ॥ ला० ॥ १९ ॥ आशे अवस्था मुज तणी ॥ सु० ॥
 जिणें तुम उपजे शोक ॥ ला० ॥ तेह सुणी नृप चिंतवे ॥ सु० ॥
 अहो अंतर जुउ लोक ॥ ला० ॥ २० ॥ नृप कहे तुजनें जे गमे,
 ॥ सु० ॥ पण नहिं जुगती वात ॥ ला० ॥ कुमर कहे अनुग्रह क
 खो ॥ सु० ॥ करतां ए अवदात ॥ ला० ॥ २१ ॥ मूक्या घातक जी
 वता ॥ सु० ॥ कुमर राख्यो जिणें पास ॥ ला० ॥ व्रणकर्मनी आणा

करी ॥ सु० ॥ नूप गयो निजवास ॥ ला० ॥ ११ ॥ लोकवाद एहवो
थयो ॥ सु० ॥ अहो हीणुं कखुं काम ॥ ला० ॥ एम अपजश विसे
ननो ॥ सु० ॥ सेन सुणी दुःखधाम ॥ ला० ॥ १२ ॥ विण अपराधें
अहो जुउ ॥ सु० ॥ अपजशनाजन थाय ॥ ला० ॥ निंदित दुर्जन
आचरे ॥ सु० ॥ ते एहथी न कराय ॥ ला० ॥ १४ ॥ लोक निरंकुश
न विचारे ॥ सु० ॥ जुक्ताजुगतुं जेह ॥ ला० ॥ अथवा पूरव कर्मथो ॥
सु० ॥ निपजे सघलुं एह ॥ ला० ॥ १५ ॥ दुहवाणो सेन एणी परें ॥
सु० ॥ हवे रुजाणो प्रहार ॥ ला० ॥ शुन दिवसें न्हायो वली ॥ सु० ॥
दान दीये अपार ॥ ला० ॥ १६ ॥ मूक्या बंदि लोकनें ॥ सु० ॥ पू
ज्या नयरीना देव ॥ ला० ॥ मंगल तूर वजावीथां ॥ सु० ॥ वधामणुं
करे हेव ॥ ला० ॥ १७ ॥ सातमे खंमें सातमी ॥ सु० ॥ पद्मवि
जय कही ढाल ॥ ला० ॥ श्री समरादित्यरासमां ॥ सु० ॥ धर्म
थी मंगलमाल ॥ ला० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ १११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति दर्शन नवि लहे, कुमर विसेन किवार ; नवि मन चिंते नीपन्थुं,
इच्छित काम ए वार ॥ १ ॥ उचित करे नहिं एक पण, परिजन
परिचय त्याग ; उल्लवमां नवि आवीउ, किम हंसामां काग ॥ २ ॥
सेनकुमर ते सांजली, चित्तमां करे विचार ; अठतुं आल दीये जना,
न सहाये निरधार ॥ ३ ॥ तिहां जईनें कहि तातनें, लावुं चरण लगा
य ; जगतीपति जई वीनव्यो, कहे मुऊ करो पसाय ॥ ४ ॥ कुमर विना
आणंद किश्यो, नृप कहे सांजल न्याय ; कुलकलंकनी वात किम,
करतां जश कहेवाय ॥ ५ ॥ सेन कहे साचो नहीं, विकल्प तणो वि
चार ; आचरे नहीं अकार्यनें, आण करो ए वार ॥ ६ ॥ जोलो तुं
जोलाय ठे, देखे सघलुं दूध ; पण ए कुटिल पराक्रमी, लागे मुऊ
मन लूध ॥ ७ ॥ कहे कुमर नांखो किशुं, गुणथी अति गंजीर ; बालसजाव
बाहिर कखो, पण धरे अपजश पीर ॥ ८ ॥ राय कहे तुऊ मन रुचे, तिम
कर सुखें तेडावि ; तव स्वयमेव तिहां गयो, आखे इणिपरें आवि ॥ ९ ॥

॥ ठाल आठमी ॥ माला किहां ठे रे ॥ ए देशी ॥

॥ आमण डुमणनें वली डुबल ॥ बाढ्हा मारा ॥ आनूषण नहीं
 अंग रे ॥ वदनकमल कमलाणुं जेहनुं, देखे सेन विरंग रे ॥ १ ॥ उत्तम
 एहवा रे ॥ अपराधीशुं नेह, करे सुख देवा रे ॥ ए आंकणी ॥ त्रूटी
 जुनी खाटें सूतो ॥ वा० ॥ देखी विसेननें चिंते रे ॥ अठता अवगुण
 जन जब नांखे, दुःख नावे किणी रीतें रे ॥ २ ॥ उ० ॥ यतः ॥
 “ संतगुणविष्णुणासो, असंतदोसुनवेयजं दुःखं ॥ तं सोसेई समुदं,
 किं पुणहियं मणुस्साणं ॥ १ ॥ ” रे जाई उठो नृप पासें ॥ वा० ॥
 बालचेष्टा नवि कीजें रे ॥ पापचिंता न करो घटमांहिं, चित्त उत्साह धरी
 जें रे ॥ ३ ॥ उ० ॥ इष्टा विण अलंकार करावे ॥ वा० ॥ चंदन चरचे
 अंगें रे ॥ दौमजुगल पहिरावुं सेनें, दिउ तंबोल उमंगें रे ॥ ४ ॥
 उ० ॥ लावी नृपनें पाय लगाडयो ॥ वा० ॥ हवे उठव वत्ताव्यो रे ॥ अ
 नुक्रमें केईक काल गयाथी, सेन विश्वासें जाव्यो रे ॥ ५ ॥ उ० ॥ एक
 दिन कौमुदी महोत्सव करवा ॥ वा० ॥ नृप चाव्या उद्यानें रे ॥ नगरलोक
 क्रीडामां मंमथा, जुउ अचरिज इण थानें रे ॥ ६ ॥ उ० ॥ मत्त म
 तंगज बूटो अंनथी ॥ वा० ॥ आलानथंन उखेडी रे ॥ पादप नांजतो लो
 कनें सन्मुख, चाव्यो मीठ ठंढेडी रे ॥ ७ ॥ उ० ॥ हाट श्रेणी नांजे
 थयो कलकल ॥ वा० ॥ लोक ते चिहुं दिश नाठा रे ॥ राय जाणी कहे
 पकडो एहनें, केम बलथी सहु घाठा रे ॥ ८ ॥ उ० ॥ आणा लही तव
 सेनकुमारह ॥ वा० ॥ तेहनें सन्मुख धायो रे ॥ सिंहकिशोर परें गज
 ग्रहीनें ॥ वा० ॥ करि असवारी अंकुश
 जश कीर्त्ति बहु लीथी रे ॥ १० ॥ उ० ॥ दूजाणो ए जश सांजलीनें ॥
 वा० ॥ चिंते विसेन कुमार रे ॥ ए दुःख तो में खस्युं नवि जाये, करीयें
 क्रियो प्रकार रे ॥ ११ ॥ उ० ॥ जे थानार ते थाय्यो पण हुं ॥ वा० ॥
 मारुं माहारे हाथें रे ॥ एक दिन सेनकुमार उद्यानें, रह्या शांतिमती साथें
 रे ॥ १२ ॥ उ० ॥ संध्यासमयें केई नरसाथें ॥ वा० ॥ सेनशक्ति नवि

चारी रे ॥ क्रोधवशें निजबल अणतोली, चाव्यो मारवुं धारी रे ॥ १३ ॥ उ० ॥
 चंदनलता घरमांहिं पेटो ॥ वा० ॥ दीगो कुमर एकाकी रे ॥ शांतिमती
 दूजी देखीनें, काढ्युं खड्ड ते ताकी रे ॥ १४ ॥ उ० ॥ शांतिमती
 देखी कहे पीउनें ॥ वा० ॥ तव संच्रांत ते पामी रे ॥ घात कखो ते
 वंचावी लीधो, कलबल ठल नहीं खामी रे ॥ १५ ॥ उ० ॥ ए शुं एम
 शून्यहृदयें करीने ॥ वा० ॥ खड्ड ते अपहरी लीधुं रे ॥ काढि बुरी बली मारण
 कामें, काम अकारज कीधुं रे ॥ १६ ॥ उ० ॥ कर मरडीनें तेह फुंटावी ॥
 वा० ॥ लीधी सेनकुमारें रे ॥ तेहनी पीढायें पडयो हेगो, उठावे सेन
 त्यारें रे ॥ १७ ॥ उ० ॥ हाथ जाली सज्जायें बेसारी ॥ वा० ॥ पूढे संच्रम
 वातो रे ॥ कंठ रुंधाणो उत्तर न दीधो, उठयो चित्तथी हारी रे ॥ १८ ॥
 ॥ उ० ॥ नीकलियो हवे तिहांथी त्यारें ॥ वा० ॥ शांतिमती पति
 पूढे रे ॥ शी ए वात कहे तव मुजने, खबर नहीं ए शुं ठे रे ॥ १९ ॥
 ॥ उ० ॥ पण सामान्यें एहवुं जाणुं ॥ वा० ॥ राज्य अर्थें कोई प्रेस्यो रे
 ॥ इणें थानक रहेवुं मुज न घटे, जिणें जाई दुःखथी घेस्यो रे ॥ २० ॥
 उ० ॥ जो कदि नृप जाणो कोई लिंगें ॥ वा० ॥ तो घरमांथी काढे रे ॥
 अंबा शोक धरे कुललाघव, कुपुरुष कलंक ए चाढे रे ॥ २१ ॥ उ० ॥
 कुलनिंदा राखे ते सुपुरुष ॥ वा० ॥ एम सुणी बोले नारी रे ॥ तुम्हने
 केम नृप जावा देशे, कुमर कहे सुण प्यारी रे ॥ २२ ॥ उ० ॥ गुरुनें
 नांख्या विण जावुं ठे ॥ वा० ॥ तेहमां गुण बहु जाणी रे ॥ शांतिमती क
 हे हे स्वामी जी, प्रमाण तुमची वाणी रे ॥ २३ ॥ उ० ॥ सेनकुमार कहे
 चालो हवे ॥ वा० ॥ रखे कुमार ते नासे रे ॥ लह्या परिसह नांहि खमा
 ये, तिणें नवि रहे ए वासैं रे ॥ २४ ॥ उ० ॥ सातमे खंमें आठमी ढालें ॥
 वा० ॥ सज्जनवात ए जोजो रे ॥ पद्मविजय कहे दुर्जन सरिखा, न
 विका कोई मत होजो रे ॥ २५ ॥ उ० ॥ सर्व गाथा ॥ २४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सज्जन शेलडी सारिखा, आपे रस असराज; पीड्या पण पीडे
 नहिं, मोहोटा तेह मयाज ॥ १ ॥ अर्क हवे तिहां आयम्यो, परिजन

नैं कहे प्रेम ; आज इहां वसवुं अठे, जाउं सहुये जेम ॥ १ ॥ सज्या
हवे तिहां सज करी, मस्तक दुःखें मुऊ ; एम कही सहु अलगां कखां,
गांठि चित्तमां गुऊ ॥ ३ ॥ उंध्या सहुए एटले, अबलानें कहे एम; दे
शांतर दीरघ घणा, नीकलवुं तो नेम ॥ ४ ॥ आपद पण आवे कदा,
कर्म विचित्रनां काम ; अबलानो अवसर नहीं, न पडे सुजिनुं नाम
॥ ५ ॥ शांतिमती कहे स्वामी जी, फिकर न करीयें फोक ; तुम साथें
मुऊ वर्त्ततां, श्यो मुऊनें ठे शोक ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ शांतिमतीगुं चाव्यो तिहांथी, न कही कोईनें वात रे ॥ चंपावास
गाममांहिं, आव्या चालि रातो रात रे ॥ १ ॥ सज्जन परीक्षा इणिपरें
कीजें ॥ ए आंकणी ॥ अर्क उग्योनें याकी अबला, बेठां एक वनमांहिं
रे ॥ राय पुरवासी सारथवाह सुत, सानुदेव आव्यो त्यांहिं रे ॥ २ ॥
॥ स० ॥ उलखीनें चित्तमां एम चिंते, किहांथी रतिनें काम रे ॥ रा
य तो काठि न मूके एहनें, एह महागुणधाम रे ॥ ३ ॥ स० ॥ गु
णपक्षपाती हरिपेण राजा, तिणें कारण कोई अन्य रे ॥ कोई
समर्थ न काढवा एहनें, पण कोई उद्देग मन्न रे ॥ ४ ॥ स० ॥ प्रणमी
पूवुं एम विचारी, पूठे करि परणाम रे ॥ खेद म करजो अजाण्यो
पूवुं, कुंअर बोले ताम रे ॥ ५ ॥ स० ॥ खेद तणो अवसर नहीं
जांखो, तव बोव्यो सानुदेव रे ॥ तुम सुसरापुरनो हुं वासी, ताम
लीप्ति जावुं हेव रे ॥ ६ ॥ स० ॥ माहरो साथ इहां उतरीयो, आव्यो
आचमननें काज रे ॥ पासें सरोवर ठे अतिसुंदर, आव्यो तेहनी पा
ज रे ॥ ७ ॥ स० ॥ एह निकुंजमां पेसतां उपनो, मुऊनें अति आ
णंद रे ॥ में जाणुं इहां हरख ते यात्रो, दीठो तुम मुखचंद रे ॥ ८ ॥
॥ स० ॥ रायपुरें में दीठा तुमनें, उलख्या कारण तेण रे ॥ हर्ष
लह्यो पण खेद उपनो. दीठा एकाकी जेण रे ॥ ९ ॥ स० ॥ कहेवा
जेहवी होय तो जांखो, चिंते ताम कुमार रे ॥ अहो अनुराग वचन
चतुराई, जांखे एम उदार रे ॥ १० ॥ स० ॥ सांजली कारण पूठे

कहेगुं. पण तामलीतियें जावुं रे ॥ सार्थप कहे मुऊ साथें आवो,
 कुमर कहे ते नावुं रे ॥ ११ ॥ स० ॥ तात तणा असवार जो आवे,
 तो मुऊने लेई जावे रे ॥ सानुदेव कहे रहेगुं ईहां, जब ते आवीने
 जावे रे ॥ १२ ॥ स० ॥ ना ना करतां पण ते रहीउं, तव सेन कुमर
 ते जासे रे ॥ जाउं साथमां कोईने म कहेजो, मत आवजो इण
 वासैं रे ॥ १३ ॥ स० ॥ सार्थप चाव्यो आप साथमां, आव्या ते
 असवारो रे ॥ पूठे साथने नर नारी कोई, दीठां इणही प्रकारो रे ॥
 ॥ १४ ॥ स० ॥ साथ कहे इहां कोई न आव्युं, तव कहे मांहो मां
 हिं रे ॥ कुमरनो एह न मारग जावा, में नांखुं हतुं त्यांहिं रे ॥
 ॥ १५ ॥ स० ॥ रायपुर मारग चालो इहांथी, एम कही गया अस
 वारो रे ॥ थोडी वेलायें मोकले सार्थप, दंपतीने आहारो रे ॥ १६ ॥
 स० ॥ वात कहे सार्थप आवीने, सूर्य आयम्यो जाम रे ॥ लाव्यो
 साथमां पाठली रातें, कीध प्रयाण ते ताम रे ॥ १७ ॥ स० ॥ शांति
 मतीगुं कुमरने आपे, वेसवाने जंपान रे ॥ मारग जातां मेरा देईने,
 उतरीया कोई थान रे ॥ १८ ॥ स० ॥ एम नित्य नित्य प्रयाण करतां,
 वोढ्या केईक दिन रे ॥ एक दिन दत्तरती अटवीमां, उतथ्यो साथ ते
 वन्न रे ॥ १९ ॥ स० ॥ जय जाणी चोकी चिहुं पासैं, मूकी थई साव
 धान रे ॥ प्रात समय चोकी सहु ऊठी, सहु गया निज निज थान रे
 ॥ २० ॥ स० ॥ चाकर सर्वे लादवा लागा, आवी निन्ननी धाडी रे ॥
 बाण तणो वरसात वरसावे, शृंगना शब्द वजाडी रे ॥ २१ ॥ स० ॥
 मार मार करता ते आव्या, खेद लह्या कर्मकार रे ॥ आमहथीआ
 रा आगल दोड्या, लागुं युद्ध अपार रे ॥ २२ ॥ स० ॥ शांतिमतीने
 धीरज आपी, चाव्यो सेनकुमार रे ॥ केसरी हरणजूथ ज्यूं त्रसव्या, स
 बरसैन्य पडिहार रे ॥ २३ ॥ स० ॥ बीजी दिशिथी साथने नेव्यो,
 लुंठगुं नांमज सार रे ॥ आमहथीआरा पाड्या सघला, नाठी सघ
 ली नारी रे ॥ २४ ॥ स० ॥ कुमर आव्यो जन एह दिशायें, निन्न
 तणी पडी नासि रे ॥ एकाकी देखी पत्नीपति, आव्यो तास सकाशि

रे ॥ १५ ॥ स० ॥ नाख्युं खड्ग कुमर वंचावे, कुमरें दीध प्रहार रे ॥
 मूर्छा लही पल्लीपति पडियो, वीजे कुमर तिवार रे ॥ १६ ॥ स० ॥ हु
 कडा सरथी कमलिणी पत्रें, लावी शींचे नीर रे ॥ नयन उवाडी ताम
 विलोके, कुंण ए साहस धीर रे ॥ १७ ॥ स० ॥ रूपें मयण पराक्रमें
 केसरी, दयार्थें मुनिकुमार रे ॥ ठे सुकमाल पण दृढप्रहारी, शत्रुनें
 मित्र अनुहार रे ॥ १८ ॥ स० ॥ परमेसर ए दीसे साचो, काम अ
 क्षुत्तुं कीधुं रे ॥ एहवा पुरुषनें आपणें एणी परें, साथ लूटि दुःख
 दीधुं रे ॥ १९ ॥ स० ॥ सातमे खंमें समरादित्यना, रासमां नवमी
 ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ओता, आगल वात रसाल रे ॥
 ॥ २० ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ १८१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे मत आकुजा, नड्याउ जाग्यवंत; कहे पल्लीपति के
 हवुं, स्वस्यपणुं अम संत ॥ १ ॥ निन्न सैन्यें आवी नणे, इण अव
 सर कोई एम; पल्लीपतिनें पाडिउ, करगुं कहो हवे केम ॥ २ ॥ मार
 मार करता मनुज, तिहां सबरना ताम; आव्या देखी आफणी, शान
 करे पल्लिस्वाम ॥ ३ ॥ मुज जींत्यो ए माहापुरुष, मत करजो पर
 माद; शीआली करी ते सुणी, उपनो बहु आल्हाद ॥ ४ ॥ हाथ
 जोडी मूकी हवे, धनुष तीर धरी कंध; परगु तेहवे पाणीनें, आव्यां
 अंजलि बंधि ॥ ५ ॥ अजय ते आपो अम नणी, सेन कहे सुविचार;
 आयुध रहितनें अजय ठे, इण अवसर अवधार ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ सुणो हो तेहुं अनाथी ॥ ए देशी ॥

॥ पल्लीपति पाए पडे, कहे खमो मुज अपराध ॥ साथ तुमारो लुं
 टिउ, तिणें कीधुं रे पाप अगाध ॥ १ ॥ कुंमरजी कीधो रे अम उप
 गार, तुम सरिखा जगमां दू चार ॥ कुं० ॥ ए आंकणी ॥ एम कही
 करी उदघोपणा, संग्राम कीधो दूर ॥ निण जे लीधुं होये ते, लावो
 रे मुज हजूर ॥ २ ॥ कुं० ॥ कोई कनें कांई रहेशे कदा, तो टालुं तेह
 तुं ताम ॥ ततकाल सहु नेलुं करी, कहे जुउ रे ए दाम ॥ ३ ॥ कुं० ॥

कहे कुमर नहीं स्वामी आम्हो, सबवाह सुत जो आय ॥ तो उल
खीनें सघलुं लहे, सुणी तेहनें रे खोजवा जाय ॥ ४ ॥ कुं० ॥ एक
वन निकुंजें ते लह्यो, लाविया तेहनें ताम ॥ कहे पत्निपति नवि
जाणीउ, एहवा रूडा रे पुरुष ए ताम ॥ ५ ॥ कुं० ॥ एणें जींत्या अ
मनें एकले, अमें पडिवज्यो ए नाथ ॥ एहुना तुमें अमें तुम तणो,
लुंटी लीधो रे एणि परें साथ ॥ ६ ॥ कुं० ॥ चीज नाव ए तुम तणी,
लेजो संजाली जाय ॥ सार्थप विचारे चित्तमां, इण एकें रे कीध प
साय ॥ ७ ॥ कुं० ॥ सार्थप कहे सहु आवीउ, हरख्यो ते पत्नि
स्वामी ॥ कुमर विचारे एहनी, सज्जनता रे जुउ आम ॥ ८ ॥ कुं० ॥
प्रहार तस जंजाविया, दीधो कंदोरो आप ॥ जाणी प्रसाद अंगी क
ख्यो, पत्निनाथें रे मोहोटानी ठाप ॥ ९ ॥ कुं० ॥ ब्रणकर्म बीजा पुरु
पनां, वली करावे ते कुमार ॥ कहे पत्नी ठे ठूकडी, मुज पालि रे चा
लो ए वार ॥ १० ॥ कुं० ॥ उपगार कीजें मुज नणी, बोले ते सेन
विचार ॥ सार्थप प्रमाण ए वातमां, सानुदेव रे नांखे तिवार ॥ ११ ॥
॥ कुं० ॥ तुम दरिसणें दीठी अमें, तुमची मनोहर पालि ॥ इण
समे सानुदेवनो, सूपकार रे आव्यो ते काल ॥ १२ ॥ कुं० ॥ आंशु
नी धार खेंचे नहीं, कहे गयुं सर्व जे सार ॥ नृपसुता कहीं दीसे
नहीं, सुणी हुउ रे आकुलो कुमार ॥ १३ ॥ कुं० ॥ सानुदेव विजखो
अयो, पत्निपति अयो मूढ ॥ कहे राजपुत्री कोण अठे, मुज नांखो
रे तेहनं गूढ ॥ १४ ॥ कुं० ॥ कहे सानुदेव राजपुर तणो, शंखपाल
नामें राय ॥ तेहनी सुता आ कुमरनी, शांतिमती रे घरणी आय ॥
॥ १५ ॥ कुं० ॥ पत्निपति कहे केम बन्युं, तव कहे ते सूपकार ॥
संग्राममां साहमो गयो, जब धाई रे सेनकुमार ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बी
जी दिशाथी जेलीउ, लूंटियो सघलो सार ॥ आमहथीआरा पाडिआ
तव, बिहिनी रे शांतिमती नारि ॥ १७ ॥ कुं० ॥ निकली पटआवास
थी, हा आर्यसुत गया क्यांहिं ॥ मुज नलावी हती तिणें करी,
पूठे चाव्यो रे तेहनी राहि ॥ १८ ॥ कुं० ॥ अटवी नणी जातां थकां,

एक सवर मुजनें आय ॥ लकुट माखो चरणमां, हुंतो पडयो रे तिण
 हींज ठाय ॥ १९ ॥ कुं० ॥ मूर्छा लही वली चेतना, लाधी ते रुठयो
 ताम ॥ खोली घणी पण नवि जडी, हवे करो रे तुमें ए काम ॥
 ॥ २० ॥ कुं० ॥ हा देवि देवि एम जणी, मूर्छा लह्यो ते कुमार ॥ प
 ल्लिपतियें आश्वासीउ, मत करो रे खेद लगार ॥ २१ ॥ कुं० ॥ वेला
 थई ठे थोडली, अटवी ते नाहीं दूर ॥ देवी न बहु हींमी शके, मुज
 निहरे रे सेना जूरि ॥ २२ ॥ कुं० ॥ पवनवेगें चालता, नहीं अजाणुं
 कोइ ठाम ॥ हमणां लावीनें मेलवुं, एम कही रे मूक्या ताम ॥ २३ ॥ कुं० ॥
 सार्थपनें पल्लिपति कहे, हुं जाईश खोलवा नारि ॥ निजपुरुष केईक
 सोंपीनें, धीरज देज्यो रे सेनकुमार ॥ २४ ॥ कुं० ॥ सार्थप पण कहे
 कुमरनें, धीरज करो तुमें आज ॥ हवणां खोली लावीयें, जिहां
 होगे रे पुत्री राज ॥ २५ ॥ कुं० ॥ एम करी सहुये चालिआ, केई
 सुनट जेई संग ॥ सातमे खंमैं दशमी कही, ढाल पद्मे रे चढते
 रंग ॥ २६ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ३१४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संसरतां शान्तिमती, आर्यपुत्र किहां आज; दिशामूढ दिन आ
 थम्यो, पोहोती गिरिनदी पाज ॥ १ ॥ मनचिंते माहारी पति, आवी
 न मय्यो आहिं; विरहे कहो केम जीवियें, मरवुं आ वनमाहिं ॥
 ॥ २ ॥ अशोकवृक्ष अवलंबीनें, दीयो पाश दुःखराशि; वनदेवी
 वाणी सुणो, एहवी माहारी आशि ॥ ३ ॥ आर्यपुत्र मूकी अवर,
 नवि चिंत्यो मनमाहिं; जो जनमांतरे आर्यसुत, तो पति आजो
 त्याहिं ॥ ४ ॥ एम नीआणुं आदरी, आतम अधर करेअ; पाश तूटो
 धरणी पडी, मूर्छा ताम मलेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल आग्यारमी ॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ तापस कुमर आयो इण अवसर, संध्या सेवन काज ॥ देखी चिं
 तवे नामिनी कोण ए, रूपें रतिशिरताज ॥ १ ॥ अलगा रहियें ॥ व
 नदेवी परें ए आज ॥ अलगा ० ॥ ए आंकणी ॥ अथवा शुं मुज ना

रीनुं कारज, जाउं अवर ठेकाणें ॥ शास्त्रमां वाखुं नारिनुं दरिसण,
 पंढित एम वखाणो ॥ १ ॥ अ० ॥ नयणें लोह शलाका ताती, अं
 जन करवी रूडो ॥ पण जे अंगोपांग संठाणह, नारि निरखवी नूंमी ॥
 ॥ ३ ॥ अ० ॥ विष नखियें पण नोग न नजीयें, रसनाह्नेद वली रूडो ॥
 पण नवि अलिक वचन जंपीजें, नहिं विश्वासी कूडो ॥ ४ ॥ अ० ॥
 मुनिजननो अधिकार ए नाहीं, अथवा दीनउद्धार ॥ करवो ते पण शास्त्रें
 बोळ्यो, जीवदया विस्तार ॥ ५ ॥ अ० ॥ यतः ॥ “न धम्मकक्का परम
 णि कक्कं, न पाणहिंसा परमं अकक्कं ॥ न पेमरागा परमणि बंधो,
 न बोहिलाना परमणि जानो ॥ १ ॥” ए पण अटवीमां एकाकी,
 सूती तिणें ए दीन ॥ विद्याधरी ठे के ए कोण ठे, देखी पास विखिन्न
 ॥ ६ ॥ अ० ॥ एणें रूपेंने पाश गले श्यो, वात विरोधी एह ॥ अथवा
 कर्में शुं नवि थाये, कर्म विचित्र करेह ॥ ७ ॥ अ० ॥ कर्मफल जलें
 दीध आनूषो, आउखे चेतन आव्यूं ॥ आंख उघाडे तव मुनि तापस,
 देखी चित्त मराव्यूं ॥ ८ ॥ अ० ॥ नय न धरे मनमां कहे मुनिवर, हुं
 तापसकुमार ॥ सुणी प्रणमी तव आशीष जांखे, अविधवा हो नारी
 ॥ ९ ॥ अ० ॥ तुमें इहां किहांथी तव मुनि जांखे, तपोवन प्रमुख वि
 चार ॥ किम एकाकी किम इहां आवी, केम एहवो व्यापार ॥ १० ॥
 अ० ॥ एम सांजली शांतिमती चिंते, केम कहियें निज वात ॥ तो पण
 तपसीजन मानेवा, नहिं निज ऊणिम थात ॥ ११ ॥ अ० ॥ एम
 चिंती कहे रायपुर राजा, शंखपालनी बेटी ॥ साथ लूंटाणो तिणें ए
 काकिनी, नर्त्ता गयो मुक्त मेटी ॥ १२ ॥ अ० ॥ तास विजोगें ए व्यव
 सायह, कहिनें रोवा लागी ॥ तपसी कहे मत रोसोनागिण, नहिं सं
 सार सोनागी ॥ १३ ॥ अ० ॥ जेम नाटकीआ केरी बाजी, कृणमां
 होय विजोगा ॥ कृण संयोग कृणोकमां मोदज, कृणमां होवत शोगा
 ॥ १४ ॥ अ० ॥ कृणमां आपद कृणमां संपद, बुद्धिवंतें एम जा
 णी ॥ न करे विषाद विषम वेलांमां, अनुचित न करे प्राणी ॥ १५ ॥
 अ० ॥ धीरज धरतां आपद जाये, तिणें तुं ठोड विषाद ॥ वली

तुज लक्ष्मणी हुं जाणुं, सुणि कहुं करी प्रसाद ॥ १६ ॥ अ० ॥
 तुज नर्त्ता नवि मरण लह्यो ठे, कहे तुज सोवन कांति ॥ कोकिलस्वर
 सुप्रतिष्ठित चरणां, नानी दक्षिण वर्त्तवन्ती ॥ १७ ॥ अ० ॥ नितं वफ
 लक सुविशाल विराजे, शारद शशि सम वयण ॥ नवि कमलाणी ठबी
 मधुगुलिका, सरिखां ताहारां नयण ॥ १८ ॥ अ० ॥ तिलक नूपि
 त जालमंजल शोहे, कुटिल केश वली काला ॥ स्नेहाला घणुं तेणें
 तुज नांखुं, तुं ठे जाग्यविशाला ॥ १९ ॥ अ० ॥ अविधवा तुं ठे वली
 बीजुं, पुत्रवन्ती निरधार ॥ कुलपतिनें तुमें आवी वंदो, सुणी चाली तस
 द्दहार ॥ २० ॥ अ० ॥ कुलपति वंदे आशीप दीधी, मुनियें व्यतिकर
 नांख्यो ॥ कुलपति कहे मत तपजे वत्से, हवे दुःख दूरें नाख्यो ॥ २१ ॥
 ॥ अ० ॥ थोडा दिनमां पति तुज मज्जो, इण्हिज जाण उद्यान ॥
 जानें करी जाणुं हुं एहवुं, सा कहे वचन प्रमाण ॥ २२ ॥ अ० ॥
 तापसिणी पासें ते रहेतां, वीतो केतोक काल ॥ सातमे खंमें पद्मविज
 य कहे, एह अग्यारमी ढाल ॥ २३ ॥ अ० ॥ सर्व गाथा ॥ ३४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अटवीमां इण अवसरें, सबर पद्मापति सेन ; खोलि करी बहु खां
 तिणुं, किमे न जाधी केण ॥ १ ॥ वासरतो बोली गयो, न मली ते
 हनी नारि ; खेद लही विलखा थया, मढ्या अरण्य मजारि ॥ २ ॥
 कहे पद्मीपति कुमरनें, मत करजो मन खेद ; मिलजो निश्चय मानि
 नी, नणुं ते सांजलि जेद ॥ ३ ॥ सहुनें दिवस न सारिखा, काल
 क्लेप पण कांय ; आहार करो तुमें अन्ह तणा, प्राण रहे जिम प्राय
 ॥ ४ ॥ जुगतो आहार जाणी करी, आग्रहथी कखो आहार ; शय्या
 पायरी सोवतो, मानिनी मनमां धार ॥ ५ ॥

॥ ढाल वारमी ॥ महावीर जगमां जींत्यो जी ॥ ए देशी ॥

॥ पद्मिपति पण पासें सूतो, मूक्या चोकीदार ॥ तिणें समे सबर आ
 वीनें एणि परें, अतिशय करत पोकार ॥ १ ॥ सुणो हम वाणी जी, पद्मि
 पति पण उठि, धनुष लीयो ताणी जी ॥ पूढे पूढे वात सुजाण, कहो कि

सि काणी जी ॥ ए आंकणी ॥ ते कहे खबर पडे नहिं अमनें, पण सा
मान्यें जाण्यो ॥ साथ आव्यो अटवीमां जाणी, विश्वपुर केरो राणो
॥ २ ॥ सु० ॥ जाण्युं पल्लिपति नीकलरो, मोकली तेणें धाडी ॥ कहे
पल्लिपति मुज मन केरी, पोहोती नाहिं रुहाडी ॥ ३ ॥ सु० ॥ स्वामी
कारय साध्युं नाहीं, तो पण जावुं तड ॥ रखे साथ ए आवी लूटे, आ
यतो अतिअ अनड ॥ ४ ॥ सु० ॥ सानुदेवनें तेह सुणावी, कुमरनी
करजो सार ॥ दूरथी कुमरनें प्रणमी चाव्यो, जाणे तेह कुमार ॥ ५ ॥
॥ सु० ॥ जुउं गुरुता पल्लिपति केरी, एम विचारी ताम ॥ खड्डु लेई
कहे सानुदेवनें, पणयनंग नहिं काम ॥ ६ ॥ सु० ॥ तुमें सुखशातायें
इहां रहेजो, अथवा करजो प्रयाण ॥ हुं पल्लिपति खबर करेवा,
जाउं तुं सुण जाण ॥ ७ ॥ सु० ॥ सानुदेव नवि उत्तर आपे, सेनकुम
र कहे ताम ॥ बोलवा जेहवी वात नहीं ठे, एम धरी चाव्यो हाम
॥ ८ ॥ सु० ॥ अनुक्रमें युद्ध जागुं तिहां सबजुं, गगनांगण नखुं बाणें
॥ पल्लिपति कहे सेनकुमरनें, जुउं मुज शक्ति विन्नाण ॥ ९ ॥ सु० ॥
सेनकुमर पण खड्डु लेइनें, चाव्यो शत्रु साहामो ॥ सिंहपरें तिहां करे
पराक्रम, हरष पल्लिपति पाम्यो ॥ १० ॥ सु० ॥ अनुक्रमें युद्ध करंतां
हाच्या, पल्लिपति कुमार ॥ पकडीने लेई चाव्या विश्वपुर, आव्या हरष
अपार ॥ ११ ॥ सु० ॥ पण एक कुमरनुं देखी पराक्रम, सड्डु चमक्या
चित्तमाहि ॥ समरकेतु राजानें सघलो, कहे अधिकार उच्चाहिं ॥ १२ ॥
॥ सु० ॥ रूप पराक्रम देखी राजा, विस्मय पाम्यो चिंते ॥ कुण ए पु
रुष लोकोत्तर दीसे, करूं गवेषणा तंतें ॥ १३ ॥ सु० ॥ नरपति सुत
होशे सहि निश्चें, एम चिंती नृप बोले ॥ मारो पल्लिपति ए तस्कर, डुष्ट
नहीं इण तोळें ॥ १४ ॥ सु० ॥ कुमर कहे मुजशी मोहोटाई, एह मरे
हुं जीवुं ॥ तिणें मुजनें मारो एम नांखे, नहींतर जल नवि पीवुं
॥ १५ ॥ सु० ॥ राय विचारे शुं मुख बोले, एह महानुजाग ॥ अ
थवा एहनें एमज जुगतुं, राय कहे धरी राग ॥ १६ ॥ सु० ॥ जाति
वंश नांखो तुम केरा, तव तिहां सेनकुमार ॥ पासें आवुं अवलुं जोतो,

ता, तेहनें नित्य सुखशात ॥ पण प्रियमित्र जघन्य पुरुषना, देखो ए अ
 वदात ॥ १३ ॥ अव० ॥ इह परलोक एके न सधाये, एहवो अवसर
 आज ॥ नागदेव कहे शोक न धरीयें, जमराजानें राज ॥ १४ ॥ अव० ॥
 तास निवारक कोई न लहीयें, धर्मराय विण जाण ॥ इत्यादिक उपदे
 श देईने, दीक्षा दिये तिण ठाण ॥ १५ ॥ अव० ॥ गोरसत्याग प्रमुख
 करे किरिया, केईक दिन गया जाम ॥ निजुआ नारी वात सुणीनें, म
 नमां चिंते ताम ॥ १६ ॥ अव० ॥ जरतामारग चाले नारी, एम चिंती
 करे धर्म ॥ विषय पिपासा विण जरतानुं, दर्शन मन थयुं रम्म
 ॥ १७ ॥ अव० ॥ विरहयकी ते दुर्बल होई, अनुक्रमें ते विचरंत ॥
 तिणें नयरें आव्यो तस नर्त्ता, निजुआ जइ प्रणमंत ॥ १८ ॥ अव० ॥
 ध्यान योगमां दीगो तेहनें, मूर्छा आवी ताम ॥ ध्यानयोग मूकी ते
 निहु, कहे गुं थयुं ए आम ॥ १९ ॥ अव० ॥ सखिउं कहे ए इसरखं
 धनी, पुत्री निजुआ नाम ॥ तुम्हनें दीधी पण नवि परणी, मोहें मू
 र्छित आम ॥ २० ॥ अव० ॥ सांजली शोकातुर थयो तेहवे, स्नेह
 वथ्यो गयुं ध्यान ॥ पाणी कर्ममलनुं ठांटीने, आणी तेहनें शान ॥ २१ ॥
 ॥ अव० ॥ राग वणो नारीनो देखी, वली कटाकुनां वाण ॥ अंग उपां
 ग जोतां नारीनां, वींधाणां तस प्राण ॥ २२ ॥ अव० ॥ मदनविकार
 अति दुर्जय ठे, रमणिक तरुणी विलास ॥ एकांत थानक वननुं जाणी,
 चित्त विव्हल थयुं तास ॥ २३ ॥ अव० ॥ गुरुवच लोपुं के एह ठांनुं,
 दुष्कर वात ए दोय ॥ अथवा व्रत पालूं तो ए मुक्त, जनमांतरें पण
 होय ॥ २४ ॥ अव० ॥ मनइहित पामे व्रत पाले, एहवी गुरुनी वाच
 ॥ व्रत रहजे ने ए पण मलगे, एहवुं धाखुं साच ॥ २५ ॥ अव० ॥ सा
 तमे खमें तेरमी जांखी, पद्मे ढाल रसाल ॥ समरादित्यना रासमां
 रुढी, सुणतां मंगलमाल ॥ २६ ॥ अव० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि विनताना वशयकी, चलिते एहनुं चित्त; बोलावुं अबला
 प्रत्ये, जांवे जंपण रीति ॥ १ ॥ एम चिंती आखे इस्थुं, मत दुःख आणे

मन्न ; तुज स्नेहें हुं तडफडुं, कहूं ते सांजल कन्न ॥ १ ॥ व्रत जीधुं
किम वरजीयें, गुरुवच किम न गणाय ; पण सांजल्युं गुरु पासथी,
व्रतथी वंठित थाय ॥ २ ॥ उनय वात व्रतथी अठे, इह लोके गुरु
आण ; परजव तुज संगमपणुं, मजसे एह प्रमाण ॥ ४ ॥ निलुआ
कहे निरतुं करो, माहरे तुमें प्रमाण ; अणसण बिहुयें आदखुं, स्नेह
परस्पर आण ॥ ५ ॥ जरता आशय नामिनी, नर आशय धरे नारी ;
जनमांतर होज्यो अमें, एणि परें चित्त अवधारि ॥ ६ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥ सूरती महिनानी देशी ॥ अथवा ॥ चैत्रें

चतुर्जुज नाव्या, राधाजी करे रे विचार ॥ ए देशी ॥

॥ वृक्ष अशोकनें हेतल अणसण कीध उदार, बहु वारंती सखीजन
पण ते मन नवि धारि ॥ ते कोलाहल सांजली आव्या गुरुनाग देव,
लाज्यो प्रियमित्र ऊर्ध्व अई वंद्या ततखेव ॥ १ ॥ मनवंठित तुम नीपजो
एणीपरें दिये आशिप, मनचिंते कुण नारी ए रूप समान वरीस ॥
राग घणो प्रियमित्रनें उपरें लखीयें एम, तव सखीयें मांमी कह्यो धु
रथी जिणी परें प्रेम ॥ २ ॥ नागदेव तव चिंतवे अहो अहो मद
नविकार, मदन जेदाणा प्राणीआ सर्व करे परकार ॥ उत्तरीयें हवे
इहांथी नहीं उपदेशनो लाग, चिंतवी कहे प्रियमित्रनें सांजल तुं म
हाजाग ॥ ३ ॥ स्नेहालु होय सज्जन तिणें तें एकखुं काम, पण साबाश
ठे तुजनें व्रत नवि खंम्युं आम ॥ खेद म करजे करजे जावना
तत्वविचार, एम कही नागदेव गयो हवे प्रियमित्रनें नारी ॥ ४ ॥
नर नारी नृप वंदतां दोय मास वही जाय, तेहज परिणामें करी का
ल दो किन्नर थाय ॥ जोई पूर्व नव अवधिथी आव्यो तेह उद्यान, पूजा
करी उद्याननी कखुं देवल तिण थान ॥ ५ ॥ देव अनंगनें निर्वृत्ति
देवी थापी त्यांहिं, नंदन वन गया तिहांथी हर्ष धरी उहाहिं ॥ तिहां
एक दीठी विद्याधरी तास प्रीतमनो विजोग, तिणें अति दूबली जमती
वनमां धरती शोग ॥ ६ ॥ पूठे तेहनें तूं कुण किम एकाकी एम,
सा कहे मदनमंजुषा खेचरी हुं हुं नेम ॥ प्रीतम रागथी विद्या देवी

नी पूजा न कीध, नर्त्ता विजोग शराप ठ मासनो तेणीयें दीध ॥ ७ ॥
 एह निमित्तें तुज पति केरो याज्ञे विजोग, तिणें एकाकिणी वनमां
 नमीश तुं अरतिसंजोग ॥ चरणें पडी तव में कह्युं स्वामिनी करि सु
 पसाय, तव देवी कहे प्रेमथी नवि आपद देखाय ॥ ८ ॥ तिणें तें रू
 हुं कामं न कीधलुं पण सुण वात, नंदन वन तुं जायजे ऊपजशे
 सुखशात ॥ प्रियमेलक रूख ऊपरें धवल जमल फुल आय, स्निग्ध मा
 धवी लता आलिंगित हेठलें जाय ॥ ९ ॥ तिहां तुज मजशे जरता
 एम सुणी आवी एथ, पण नवि जाने आनक नवि जाणुं ठे केथ ॥
 किन्नर कहे धीरी या हुं तुज दाखुं तेह, अनुक्रमें खोली देखाड्युं या
 नक तिहां गई नेह ॥ १० ॥ प्रियमेलक सामर्थ्यथी मलीजं तस
 जरतार, निज पति आगलें धुरथी सर्व कह्यो अधिकार ॥ विद्याधर
 किन्नरनें प्रीति अई ते अपार, कांयक काल गमावी गयां सहु निज
 निज ठार ॥ ११ ॥ किन्नरी कहे निज स्वामीने ए दुःखतो न खमाय,
 निजप्रिय विरहतणुं तिणें कीजें तास उपाय ॥ जन्म लह्यानुं फल
 जे करीयें पर उपगार, तिणें ए वृद्ध ठवो जिहां आपण मलिआं
 सार ॥ १२ ॥ सांजलि प्रियमेलक ठव्यो निजकृत देवल पास, ठाम
 ठाम जणव्युं एम विरहीनी पूरे आश ॥ केईक विरही लोकनी आशा पूर
 ण कीध, तिणें प्रियमेलक तीरथ नाम थयुं प्रसिद्ध ॥ १३ ॥ ते का
 रण हुं जाणुं कुमर ए तिहां जो जाय, तो तस शक्ति अचिंत्यथी ना
 रीतुं मजवुं थाय ॥ राय कुमर मन हरख्या वात ते मानी साच, नूप
 विचारे मोकलुं निज नरगुं गुनवाच ॥ १४ ॥ पत्निपतिने पूढे नूपति
 तव कहे तेह, में पण सांजल्युं तपवन ठूकहुं आनिक एह ॥ राय क
 हे तुमें परिकर लेइने जाउं तब, पण तुमें घरणी लहीने निश्चय
 आवहुं इह ॥ १५ ॥ सांजली वयण ते चालीजं करतो नित्य प्रयाण,
 अनुक्रमें तपोवन ठूकडो पडोतो तेह सुजाण ॥ तापसना उपरोधथी
 थोडो लेइ परिवार, जइ तापसने वंदीया दिये आशीप तिवार ॥ १६ ॥
 पत्निपति तेह आनक लाव्यो राजकुमार, बहु पादप उपशोजित ते

देउलने द्वार ॥ कल्पपादप नवि उलखुं पण सामान्यें ए ठाय, पछि
पति वच सांजली चित्त निराश ते थाय ॥ १७ ॥ संजारे शांतिमती
नाखी दीर्घ निःश्वास, सा पण फूल ग्रहीने जाती निज आवास ॥ जावी
जावना जोगथी कर्म तणे परिणाम, बेठी वीशामे तिहां प्रियमेलकने
ठाम ॥ १८ ॥ नागरवेलि आलिंगित दीठो तिहां अशोक, संजारे तव
कुमरने करती चित्तमां शोक ॥ वाम लोचन इण अवसरें फुरक्युं ताम
कुमार, नमतो नमतो आवीउ ते प्रियमेलक ठार ॥ १९ ॥ देखी
जरता जाणी हरखी मनथी जोर, बहु कालें मव्या तिणें उत्कंठित
घन ज्युं मोर ॥ विरहमां जीवती रही तिणें पामी लज्जा ताम, परीक्षा
करुं एम उद्विग्न होशे के नहीं नाम ॥ २० ॥ किहांथी आव्या एम
करती विचार अनेक प्रकार, खप्त हशे के किम ए पामी खेद अपार ॥
खरी प्रतीतथी स्वस्थ थइ तिणें बहुरस जाव, वेदती मूर्छा पामती
देखी तापसी ताव ॥ २१ ॥ खेद जही अहो शुं थयुं रेडती आंशुधा
र, पाणीयें शींची पण नवि बोले तेह लगार ॥ तव बहु आक्रंद करीने
रोवा लागी तेह, दोडयो कुमर आवी कहे बीहो कारण केह ॥ २२ ॥ ते
कहे नय संसारनो बोले ताम कुमार, केम आक्रंद कथो तव वात
कहे धरी प्यार ॥ सातमे स्कंदें ए पदमें नाखी चौदमी ढाल, वात
सुणंतां होशे सहुने मंगलमाल ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रायपुरपति शंखरायनी, पुत्री पावन अंग; शांतिमती ए शोहाम
णी, आरतिविरह एकंग ॥ १ ॥ प्राणत्याग पतिविरहथी, करती तापसें
दीठ; कुलपतिनैं लाव्यो निकट, इणें पण एम आईछ ॥ २ ॥ जरता
मल्लो नलि परें, तणोवनमां ततखेव; कुसुम कारण इहां अनुक्रमें, व
जती आवी हेव ॥ ३ ॥ बेठी तव बीहामणी, मूर्छा पामी एम; कारण
तो कलीयें नहीं, पण अमनैं अति प्रेम ॥ ४ ॥ आक्रंद तिणें कीधो
अमैं, सांजली सेनकुमार; हरख विषादनैं अणु हवे, पामी दुःखनो
पार ॥ ५ ॥ मूर्छा वली हवे मानिनी, स्नेहैं जोवे स्वामि; कुलपति

वयण कूडुं नहीं, तरुणी जांखे ताम ॥ ६ ॥ चालो कुलपति चरणनै,
पामे परमाणंद; कारण विण ते कुलपति, उपकारी ते अमंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ पारधीआनी अथवा मन वशिआ ॥ ए देशी ॥

॥ तापसिणीउ चिंतवें रे, ए एहनो जरतार रे ॥ पुण्यवंतो ॥ नहिंतो एम
किम बोलती रे, सुंदर अंग आकार रे ॥ गुणवंतो ॥ १ ॥ अहो वि
धाता मेलवे रे, जेहनं जुगतूं जेह रे ॥ पु० ॥ आणंद आंशुजर हवे रे,
उठे शांतिमती तेह रे ॥ २ ॥ गु० ॥ पद्मिपति जोईरीजियो रे, अहो
अहो रूपनिधान रे ॥ पु० ॥ पुरुपरत्ननं एहवी रे, नारी रतन घट
मान रे ॥ ३ ॥ गु० ॥ विनय करी पद्मिपति रे, नारीनं करे परणाम
रे ॥ पु० ॥ स्वामिनी तुम्ह पति नृत्य लुं रे, ग्रहण योग्य नहीं नाम रे
॥ ४ ॥ गु० ॥ सुंदरी कहे स्वामी तणो रे, पामो तुमं सुपसाय रे
॥ पु० ॥ एम कही जोयुं पतिनणी रे, सेन कहे तिणें ठाय रे ॥ ५ ॥
॥ गु० ॥ एहने पसाय करीजीयें रे, एहवुं नहीं कांय सार रे ॥ पु० ॥
लाज्यो पद्मिपति घणुं रे, हवे मन चिंतें कुमार रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ अ
णचिंतव्युं ए केम अयुं रे, पादप दीवो ताम रे ॥ पु० ॥ अपूरव अ
तिशोहामणो रे, हरख्यो लही विशराम रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ पूढे पद्मिनाथनं
रे, शुं ए वृद्धनुं नाम रे ॥ पु० ॥ ते कहे हुं जाणुं नहीं रे, एह अपूरव
स्वामि रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ पूढे तापसिणी प्रत्यें रे, तिणें पण जांखुं
तेम रे ॥ पु० ॥ कुमर कहे तुम ठूकडो रे, एह न जाणो केम रे
॥ ९ ॥ गु० ॥ तापसिणी कहे आविआं रे, थोडो काल अयो तास रे
॥ पु० ॥ एह हजे बहु कालनो रे, कुमरने अयो विश्वास रे ॥ १० ॥
गु० ॥ निश्चय प्रियमेलक खरो रे, धवल कुसुमजुग दीठ रे ॥ पु० ॥
पद्मिपतिने दाखव्यो रें, तिणें पण दीठ उक्किठ रे ॥ ११ ॥ गु० ॥
पूजा करुं एह वृद्धनी रे, लावो उपगरण तास रे ॥ पु० ॥ शक्ति अ
चिंत्य ठे एहनी रे, पूगी अमची आश रे ॥ १२ ॥ गु० ॥ सवर पास
मंगावीयां रे, फूल चंदननं नीर रे ॥ पु० ॥ तिणें विधिपूर्वक पूजीयो
रे, कल्पवृद्धनं धीर रे ॥ १३ ॥ गु० ॥ आवर्जी एहनं गुणें रे, क्षेत्र

देवी आसन्न रे ॥ पु० ॥ कहे तूठी तुज उपरें रे, माग तुं जे होय
मन्न रे ॥ १४ ॥ गु० ॥ यतः ॥ “अमोघा वासरे विद्युत्, अमोघं निशि ग
र्जितं ॥ अमोघा उत्तमा वाणी, अमोघं देवदर्शनं ॥ १ ॥” तुम दर्श
नथी शुं पठें रे, अधिकूं ठे मुज आज रे ॥ पु० ॥ देवी मनमां चिंत
वे रे, नवि मागे कांई काज रे ॥ १५ ॥ गु० ॥ पण आग्रह करी आ
पीयें रे, रयण एक अनिराम रे ॥ पु० ॥ विष सघलां अपहरी लीयें
रे, रोग हरे गुणकाम रे ॥ १६ ॥ गु० ॥ एम चिंती कहे देवता रे, तुं
निर्लोची सार रे ॥ पु० ॥ मुज बहु माने लीजीयें रे, करवा पर उपगा
र रे ॥ १७ ॥ गु० ॥ मणिरयण ए माहरूं रे, सांजली करे विचार रे
॥ पु० ॥ देवता मान्य होये सदा रे, एम करी ग्रहे अविकार रे ॥ १८ ॥
॥ गु० ॥ करे प्रणाम तव एम कहे रे, चिरजीव आशीष रे ॥ पु० ॥
अदृश थई ते देवता रे, वाधी कुमर जगीश रे ॥ १९ ॥ गु० ॥ तापसि
णी विस्मय लही रे, कहे जाशुं अमें ठाय रे ॥ पु० ॥ अयो मध्यान्ह
समय हवे रे, तिणें अमथी न रहाय रे ॥ २० ॥ गु० ॥ कुलपतिनें
हुं वंदवा रे, आविश तुमचे संग रे ॥ पु० ॥ जई कुलपतिनें वंदिया
रे, दिये आशीष सुचंग रे ॥ २१ ॥ गु० ॥ आसन देई बेसाडीयो रे,
परिजनशुं ते सेन रे ॥ पु० ॥ तापसिणी कहे तेहनूं रे, सवि वृत्तांत
रसेण रे ॥ २२ ॥ गु० ॥ देई उपयोगनें उलखी रे, कुलपति आदर
कीध रे ॥ पु० ॥ जार्या सोंपी तेहनी रे, वली शिक्षा एम दीध रे ॥ २३ ॥
॥ गु० ॥ गेह आश्रम ठाम्यो अठे रे, पण एहशुं प्रतिबंध रे ॥ पु० ॥
तिणें अनुरूपथी देखज्यो रे, शो कहीयें परबंध रे ॥ २४ ॥ गु० ॥
वचन प्रमाण करे तदा रे, सातमे खंमें ढाल रे ॥ पु० ॥ पनरमी प
दमें कही रे, सुणतां मंगलमाल रे ॥ २५ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ४६८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलपति हवे मिलरो कदा, अबला विलपे एम; कुलपति समजा
वी कहे, प्राणी न करीयें प्रेम ॥ १ ॥ तुज हृदयें हुं नित्य वसुं, नित्य
पासें वसुं नारि; तेह सुणी कुलपति प्रत्यें, प्रणमे बहुले प्यार ॥ २ ॥

पूठी तापसिणी प्रत्ये, दंपती मलियां दोय ; दानादिक बहु देईनें, सर
क्यो तिहांथी सोय ॥ ३ ॥ विश्वपुरें ते आवीयो, संजलावे सवि वा
त ; नरपतिने ते नारीनी, सुणी हरख्यो सगधात ॥ ४ ॥ वधामणां
कीधां वली, करी आदर सत्कार ; पद्धिपतिनें पाठव्यो, सेन रह्या
तिहां सार ॥ ५ ॥ पितृराज्य परें प्रेमशुं, शांतिमतीशुं नोग ; विलसं
तां वासर गया, शुन अनुकूल संयोग ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ तूनें गोकुल बोलावे कान्ह ॥

॥ गोवालाण गोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे कर्म विचित्रथी रोग, नूपतिनें थावे रे ॥ नयणें थावे बहु शूल,
संथ्यो कंपावे रे ॥ व्यापी शिरवेदन जाम, दांत सवि हाले रे ॥ बहु था
सवचन निरोध, नयणें नवि जाले रे ॥ १ ॥ तेडाव्या वैद्य सुजाण, उप
ध अति कीधां रे ॥ पण गुण न थयो ते लगार, बंढित नवि सीधां रे ॥
वैद्य खेद लह्याने, अंतेउरीयो घणुं रूवे रे ॥ पडी खबर कुमरनें ताम,
मुखें नवि सूवे रे ॥ २ ॥ सुज उपगारी ए राय, जहे दुःख एहवुं रे ॥
केम जीवंतां ए स्वमाय, करुं हवे केहवुं रे ॥ धीकू जीवित माहुरूं जेण,
नहीं उपाय रे ॥ एम करतां सेन कुमारने, मूर्खां थाय रे ॥ ३ ॥ करी
वाय आशासना शांति, मती एम जासे रे ॥ आरोग्य मणि वर रयण,
अठे तुम पासें रे ॥ जलुं संजाखुं तें नारी, हरषथी लेई रे ॥ मणिरय
ण चाव्यो तव तास, शकुन शुन देई रे ॥ ४ ॥ कोईक कहे रहो चिरं
जीव, शीघ्रें चाव्यो रे ॥ नरपति पासें जई हाथ, ने पाय पखाव्यो रे ॥
उंज्यो मणि रयणें राय, शम्युं तव शूल रे ॥ यिर दांत थया गइ शीश
नी, वेदना मूल रे ॥ ५ ॥ शम्यो थासने उवड्यां नयण, संथ्यो थइ साजी
रे ॥ बोलवा लागो नृप जाम, सह्य थया राजी रे ॥ आवि शक्तिनें
उठयो राय, कुमर परशंस्यो रे ॥ राणीउ मंत्रि लह्या मोद, किणें नवि
खांज्यो रे ॥ ६ ॥ नृप पूठे सुजने कांय, खबर नहीं एह रे ॥ उपगार
क्यो किणें सुज, जांखो तुमें तेह रे ॥ कह्युं जिवाणंदें सर्व, बोड्यो तव
राय रे ॥ अमृतसम एह कुमार, मरण किम थाय रे ॥ ७ ॥ देव गुरु

सुपसायें एह, कहे ते कुमार रें ॥ नृप पनणे प्राण ए तुज, कहुं शुं वार
 वार रे ॥ कहे कुमर गुरु तुमें ताम, नृपति कहे साचुं रे ॥ जो गुरुतो
 वचन प्रमाण, करो अमें राचुं रे ॥ ७ ॥ कहे कुमर करुं तुम आण,
 कहे तव नूप रे ॥ जावुं नहीं सुजयी दूर, कहुं अनुरूप रे ॥ करे कुमर
 प्रमाण ते ताम, विसरजे कुमार रे ॥ तेडावी परिजन लोक, कहे निरधार
 रे ॥ ८ ॥ आवे कुमरने तेडवा कोय, तो सुज विण नाखे रे ॥ मत कहे
 जो कुमरनें वात, सहुने एम दाखे रे ॥ एक दिन आव्यो मंत्रीपुत्र,
 अमरगुरु नाम रे ॥ अई खबर नूपतिने ताम, तेडयो निजगाम रे ॥ ९ ॥
 कहे तेहनें नरपति एम, वाढ्हो सुज एह रे ॥ इण पडिवजीउ सुज पास,
 रहेवुं तुम गेह रे ॥ एम जाणी करजो तेम, सहु सुख पामे रे ॥ कहे
 अमरगुरु धन्य ए, तुम सरिखा कामे रे ॥ १० ॥ जिम हुकम करो ठो
 देव, करीशुं तेम रे ॥ जणवे हवे कुमरने नूप, अधिक धरी प्रेम रे ॥
 जातां हवे कुमरनी पास, अमरगुरु चिंते रे ॥ नवि मूके कुमरनें राय, अ
 धिक गुणसंते रे ॥ ११ ॥ कसुं निजवश राज्य विसेनें, तिणें न उपाय
 रे ॥ नृपदीक्षा लेतां सुज, कही गया ताय रे ॥ राज्य हारजो एह विसेन,
 उदरजो सेन रे ॥ नैमित्तिआनो आदेश, अठे वली तेण रे ॥ १२ ॥ सामं
 तनें दइ अपमान, उलंघे आचार रे ॥ बहु वाध्यो लोच असार, विसेन
 कुमार रे ॥ तिणें रहेवुं जुगतूं न अत्र, विचार ए कीध रे ॥ चरपुरुषें कु
 मरनें ताम, वधाई दीध रे ॥ १३ ॥ आववानो हुकम ते कीध, अनुक्रमें
 आव्या रे ॥ सेनकुमरें उठी ताम, मांहिं पधराव्या रे ॥ पूठे एम कुशल
 ठे तात, कुमरनें दाखो रे ॥ कहे कुशल ठे सहुनें तोय, कहुं ते चित्त
 राखो रे ॥ १४ ॥ नूपतियें तुमनें न दीठ, अयो वैराग्य रे ॥ तव संजम
 शुं मन लाय, महासोजाग रे ॥ निज सुतनें आपी राज्य, साथें परधान
 रे ॥ परिजनशुं संजम लीध, धरी शुनध्यान रे ॥ १५ ॥ तव चिंते सेन
 कुमार, अहो सुज राग रे ॥ जाई अम कुलनी स्थिति एह, अंतें वैराग रे ॥
 कहे कुमर प्रजानें तेह, केहवा ठे नांखो रे ॥ तव अमरगुरु कहे वात,
 थोडामां लाखो रे ॥ १६ ॥ नृपें लीधी प्रवर्ज्या जाम, अशुं दुःख एह रे ॥

तुमें परदेजों गया तास, बीजुं दुःख तेह रे ॥ मन माने ठे एम तेह, नहीं
अम नाथ रे ॥ कहे सेन वैसेन ठे ते केम, प्रजा अनाथ रे ॥ १७ ॥ एह
वे ठीक्यो पडिहार, अमात्यसुत ताम रे ॥ कहे चिरंजीवो वली आप, फु
रखुं नेत्र वाम रे ॥ अई चिंता कुमरनें ताम, अहो गुं आशे रे ॥ अथवा
नलुं करशे देव, विघन सहु जाशे रे ॥ १८ ॥ कहि शांतिमतीनें तास,
नोजननें स्नान रे ॥ सुखथी दिये निज अधिकार, चढते नित्य वान रे ॥
नित्य खबर मगावे राज्य, तणी निजसार रे ॥ एक दिन शांतिमति
नारी नें, स्वप्न उदार रे ॥ १९ ॥ कहि सातमे खंमें ढाल, ते शोलमी
सारी रे ॥ एतो समरादित्यनें रास, लागे घणुं प्यारी रे ॥ गुरु उत्तमवि
जयनो शिष्य, सुकोमल वाणी रे ॥ कहे पद्मविजय धरी प्यार, सुणो
नवि प्राणी रे ॥ २० ॥ सर्व नाथा ॥ ४९५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अंजन प्रमरनें अनुसरे, पत्र तणो नहीं पार; अंबक मन आणंद
करू, कल्पवृक्ष सुखकार ॥ १ ॥ स्वप्नें घणुं शोहामणो, चिंतित चिंता
चूर; पेखे उदरमां पेसतो, शांतिमती सुसनूर ॥ २ ॥ जागी पतिनें ज
णावती, तस फल दाखे तेह; सोजागी सुत होयशे, जगत नमावे जेह
॥ ३ ॥ सांजली धर्ममां सज होये, कांयक वीत्यो काल; पूरे मासें
सुत प्रसवीयो, करे उबव ततकाल ॥ ४ ॥ राय कुमर सहु रीफिआ,
अमरसेन अनिधान; उविउं तेहनुं ठाउकुं, सुणो हवे अई सावधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ चंपानयरथी आवीयो, वात लावीयो रे ॥ एक दिन अनुचर एक ॥
वात ते सांजलो रे ॥ १ ॥ जोवा प्रवृत्ति राज्यनी, सुख काजनी रे ॥
भूक्यो अमरगुरु तास ॥ २ ॥ वा० ॥ हाली मुहाली विरचिआ, नवि
अरचिआ रे ॥ जाणी अचलपुर नाथ ॥ ३ ॥ वा० ॥ मुक्तापीठें बल
करी, चंपा पुरी रे ॥ लीधी ओडा दिन मांहि ॥ ४ ॥ वा० ॥ हाथ कखो
नंमारनें, अधिकारनें रे ॥ हवे जाणो करो तेम ॥ ५ ॥ वा० ॥ वैसेन नाशी
नें गयो, दुःख बहु थयो रे ॥ तेहनी खबर नहिं कोय ॥ ६ ॥ वा० ॥

कोप्यो अमरगुरु सांजली, आवी वली रे ॥ कुमरनें कहे अवदात ॥
 ॥ ७ ॥ वा० ॥ बोले अमर्षयी एणि परें, कुण एम करे रे ॥ जाई पराज
 व एम ॥ ८ ॥ वा० ॥ निजपदें ठवुं विसेनने, अरिसेनने रे ॥ जांजवुं
 तो खरी वात ॥ ९ ॥ वा० ॥ दाहीण कर फुरक्यो तदा, जय कहे
 सदा रे ॥ बोढ्यो तदा गजराज ॥ १० ॥ वा० ॥ कुमर कहे ए जींतीउं,
 दुःख वीतीउं रे ॥ नृपने करावे जाण ॥ ११ ॥ वा० ॥ मारे तिहां जावुं
 लहुं, तुमने कहुं रे ॥ कोप्यो राय अपार ॥ १२ ॥ वा० ॥ ए नहीं कुम
 रने परिजव्यो, मुजने हवो रे ॥ पण मुजसेना साध्य ॥ १३ ॥ वा० ॥
 अमरगुरु कहे साचवुं, नाख्युं नलुं रे ॥ पण कुमरें न स्वमाय ॥ १४ ॥
 वा० ॥ समरकेतु नरपति कहे, चित्त गहगहे रे ॥ लशकर द्यो अस सा
 थ ॥ वा० ॥ १५ ॥ ठत्र चामर मुकुटें करी, चढिउं करी रे ॥ कुंमल
 हार शोहंत ॥ १६ ॥ वा० ॥ सामग्री बहु सज करी, अमरष धरी रे ॥
 शकुन मुहूर्त चुन जोग ॥ १७ ॥ वा० ॥ चाढ्यो अनुक्रमें आवीयो,
 सुख पावीयो रे ॥ देश सीमा ठे जळ ॥ १८ ॥ वा० ॥ मुक्तापीठने
 मोकढ्यो, दूत एक नलो रे ॥ बोले विचकूण बोल ॥ १९ ॥ वा० ॥
 कहेवराव्युं ए मुज तणुं, गुं कहुं घणुं रे ॥ आपो राज्य उदार ॥ २० ॥
 वा० ॥ एम तुम प्रीतडी बाधशे, नवि बाधशे रे ॥ नहिंतो करजे जुद्ध
 ॥ २१ ॥ वा० ॥ सांजली कोपें कलकढ्यो, कहे मति चढ्यो रे ॥ मूक
 वा लीधुं न राज्य ॥ २२ ॥ वा० ॥ जुद्धयी अप्रीति उपजे, बहु नीपजे
 रे, उत्तम सुनट संहार ॥ २३ ॥ वा० ॥ तो पण जुद्ध करुं अमें,
 सुणजो तुमें रे ॥ दूत कहे तव एम ॥ २४ ॥ वा० ॥ जमलोके जावा
 नणी, मति तुम तणी रे ॥ दीसे ठे निरधार ॥ २५ ॥ वा० ॥ आवी कु
 मारने वीनवे, जिम ते लवे रे ॥ जई एकांतें दूत ॥ २६ ॥ वा० ॥
 सांजलि ते पण कोपीयो, चित्त रोपीयो रे ॥ अमरष विरस अपार
 ॥ २७ ॥ वा० ॥ ढाल सत्तरमी ए नली, नवि सांजली रे ॥ सातमे
 खंमें रसाल ॥ २८ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ५२८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृकुटी चढावीनें जणो, कोपे थई विकराल; सौम्यवयण पण सह
 जथी, जीपण न शके जालि ॥ १ ॥ करनें आस्फाली करे, वरण ख
 लाते वाणि; एह मनोरथ अम अठे, हमची नही कोई हाणि ॥ २ ॥
 बिहुं बलमां बीजे दिनें, शोर करे संग्राम; सुनटनें दीधा सामटा, सि
 रिपाविहु शिर ठाम ॥ ३ ॥ दान बहु परें दीधलां, जाचक पाम्या जोर;
 रात्री गई रवि जगीउ, सबलो मांमयो सोर ॥ ४ ॥ मयगल गाजे मल
 पता, तुरंग घणा तेजाल; रथ आरोह्या राजवी, कर लेई करवाल
 ॥ ५ ॥ सुनट थया तिहां सज घणा, कुंत तीर कर लेय; बिरुदावली
 बोली जते, वाजित्र बहु वाजेय ॥ ६ ॥ अमरष वशें आवी मव्या,
 वागे वीरनी हाक; केईक कायर कंपता, वारु सांजली वाक ॥ ७ ॥
 ताकी सूके तीरनें, खंभे केई खरुष्य; उत्र ध्वजा केई ठेदता, साचुं
 शूर सरुष्य ॥ ८ ॥ सुनटकबंध तिहां सामटा, रुधिरलित्त वर गात;
 नाचे नाटिकनी परें, विस्मय जनविख्यात ॥ ९ ॥ आमिषलोलुप
 आवीआ, कंक गृध्रनें काक; गगन ते ठायो विहगशुं, बलती बहुली
 ठाक ॥ १० ॥ बलवंती सेना बहु, सेनतणी सपराण; पण मुक्ता
 पीठें प्रथम, जींत्यो सेन सुजाण ॥ ११ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥ रमतां ते फाटो घाघरो रे, दश गज फाटो चीर
 रे ॥ हुंवे ॥ आवो रे उलगाणा ॥ ताहरी कांकणी रे ॥ हुंवे ॥ ए देशी ॥
 ॥ सेन प्रशंसी सुनटनें रे, उठावे संग्राम रे ॥ करवा ॥ जाणो जमराजा
 उठयो निज घेर धरवा ॥ १ ॥ कुंत तीर तरवारना रे, घाले घात अ
 पार रे ॥ तिणें ॥ मानुं कट्पांत काल आयो समय एणें ॥ २ ॥ रणतूर
 वाजे वेगशुं रे, करीकुंनस्थल जेद रे ॥ थाये ॥ कायर लोक केई दूरथी
 पलाये ॥ ३ ॥ मुक्तापीठ लश्कर तणा रे, ठेदे उत्र निशाण रे ॥ ताकी ॥
 मुकुट ठेदे केई मदिराशुं ठाकी ॥ ४ ॥ एम करतां विंटी लीये रे, मु
 क्तापीठनें सेन रे ॥ राजा ॥ तोहे प्रहार करे शूर थई जाजा ॥ ५ ॥ शू
 रति ६ पण चित्त चमकिया रे, देखि ए संग्राम रे ॥ वारु ॥ एहवे सेन

हणे खड्डें दीदारू ॥ ६ ॥ पडियो पृथ्वी ऊपरें रे, जय जय रव करे
लोक रे ॥ मलीया ॥ सेनकुमर जश बोलवा रे हलीया ॥ ७ ॥ मंग
लतूर वजावीयां रे, सेन आव्यो तस पास ॥ गुण राणो ॥ मुक्तापीठ
देखि चित्त हरखाणो ॥ ८ ॥ विंजणें वायरो वींजीउ रे, चंदन शींच्यां
तास रे ॥ अंगें ॥ चेतना वली अइ स्वस्थता सुरंगें ॥ ९ ॥ कुमर कहे रूडुं
कछुं रे, नूपने घटतुं जेह रे ॥ कीधुं ॥ दीनपणुं तुमें चित्तमां न लीधुं
॥ १० ॥ पूर्वपुरुष तें अजवालीया रे, में लीधुं मुज राज्य रे
॥ नाइ ॥ ताहकूं तुज कुशलूं रहो सदाइ ॥ ११ ॥ तूं मुज नाई समोवडें
रे, लाव्यो निज आवास रे ॥ मानें ॥ करी वधाइ बोलावीउ बहु मानें
॥ १२ ॥ अमरगुरुने कुमर कहे रे, लावो विसेन नूपाल रे ॥ खोली ॥
थापो चंपायें चित्तमांहि तोली ॥ १३ ॥ अमरगुरु कहे तिम करूं रे,
पण रहेजो तुमें चंप रे ॥ स्वामी ॥ सेन कहे तव वात अनिरामी
॥ १४ ॥ रहेछुं चंपायें खरा रे, पण नृपतो विसेन रे ॥ जाणो ॥ नरप
तियें जिणें कीधलो ठे राणो ॥ १५ ॥ वात प्रमाण करी हवे रे, मो
कले निज नर एम रे ॥ नांखी ॥ एम कहे ठे तुम देवहित राखी ॥ १६ ॥
पूर्वजनुं ए राज्य ठे रे, नोगवो आवी एथ रे ॥ नाई ॥ ते पण गया
तस पास सुख दाई ॥ १७ ॥ सेन गया चंपानणी रे, महाजन आव्यूं
ताम रे ॥ साहामुं ॥ पाउ धारो अमें जेम सुख पामुं ॥ १८ ॥ सेन
कहे किम आवीयें रे, विना विसेन नूपाल रे ॥ अमें ॥ महाजन कहे
प्रभुछुं कहो ठो तुमें ॥ १९ ॥ अम नवितव्यता एहवी रे, एम चिं
तवी कहे तेह रे ॥ परजा ॥ अम पुण्यें अमें एहवाज सरजा ॥ २० ॥
नगर बाहिर आवासीया रे, केइक दिन गया ताम रे ॥ आया ॥ विसे
न पासें नर जे पठाया ॥ २१ ॥ अमरगुरुने ते कहे रे, कयंगला न
यरीयें तेह रे ॥ दीगो ॥ तिणें पण सांजव्यो सेन जे उक्किछो ॥ २२ ॥
अमें पण जईने नांखीउ रे, तुमचोजे समाचार ते ॥ आगें ॥ सांजली
ते अंगोअंगथी रे लागे ॥ २३ ॥ दुजाणो मनथी घणुं रे, कमलाणुं
मुख तास रे ॥ पापें ॥ महारथी ग्रह्यो तेह सुणो आपें ॥ २४ ॥ बोली

न शक्यो वयणथी रे, किम किम करी कहे एम रे ॥ वात ॥ पर छुज ब
लथी राज्य ए आयात ॥ १५ ॥ ते नवि नोगबुं हुं किमे रे, जाउ
तुमें निज ठाम शानें ॥ आया ॥ फरी मत आवजो छुं कहुं जाया ॥ १६ ॥
हवे जिम जाणो तिम करो रे, चिंतवे ताम अमात्य रे ॥ चित्तें ॥ राज्य
योग्य नहीं एह अनितें ॥ १७ ॥ आवी कुंमरनें कहुं रे, कुमर
बोल्या ताम रे ॥ वाणी ॥ तात जाई विना वातडी विराणी ॥ १८ ॥ अंध
कारमां नाचीआ रे, श्यो गुण राज्यमां आज रे ॥ धारो ॥ अमरगुरु
कहे बुद्धिनो जंमारो ॥ १९ ॥ प्रजा पण जे पालवी रे, महापुरुष
नो धर्म एह ॥ सारो ॥ कुमर कहे ए निज पुण्यथी विचारो ॥ २० ॥ सा
तमे खंमैं शोहामणी रे, एह अठारमी ढाल रे ॥ जांखी ॥ पद्म श्रोता
सुणो चित्त थिर राखी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिसेन राजरूपि हवें, काका सेनकुमार; सवलो व्यतिकर सांज
ली, चित्तमां करे विचार ॥ १ ॥ योग्य संजमनें जाणीयें, अधिकरण
कछुं एण; उद्धरीयें एह आतमा, करुणा तस करणेण ॥ २ ॥ सार्थें
साधु अनेकथी, आव्या तिणें उद्यान; वनपालकें अवनीपति, वीनवि
यो धरीवान ॥ ३ ॥ दान देइ वंदन जणी, अमर गुरुछुं आय; नष्ट
शोक उद्यानमां, दीठा मुनि सुखदाय ॥ ४ ॥ ब्रह्मचारी वड जागीया,
संजत सहु शिरदार; आणा श्री अरिहंतनी, निर्वहेतां निरधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ जंबु धाई पुष्करा ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधतां, मोह तिमिरनरनाश हो ॥ मुनिवर ॥ निरति
चार चरण धरे, नवि पडता मोहपाश हो ॥ मुनि० ॥ १ ॥ एहवा
मुनि नित्य वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ जेह निरंजन शंख ज्युं, जावना
जावता बार हो ॥ मु० ॥ शारद जल ज्युं हृदयथी, प्रणमुं ते अणगार
हो ॥ मु० ॥ २ ॥ एह० ॥ शिष्यनें चिंतामणि समा, मुक्तिमार्ग मूर्ति
मंत हो ॥ मु० ॥ शांति सुधारस जलनीधी, वंद्या ते जगवंत हो ॥ मु० ॥
॥ ३ ॥ एह० ॥ धर्मलान दीधो धुरें, रोमांचित ते कुमार हो ॥ मु० ॥

आणंद आंशु आव्यां तदा, मुनि कहे सुण तुं कुमार हो ॥ मु० ॥ ४ ॥
 एह० ॥ जाव धरमपरें साहरी, वात सुंदर सुविचार हो ॥ मु० ॥ तुज
 निर्वेदे मुनिपणुं. आव्युं मुज ए वार हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ एह० ॥ एह
 असार संसारमां, संजम तेहज सार हो ॥ मु० ॥ जीवित एह मानव
 तणुं, केवल क्लेश आधार हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ एह० ॥ इव्य अपार्जन
 क्लेश जे, नवि लहीयें तस पार हो ॥ मु० ॥ देव दानवनें पण सदा,
 मृत्यु तणो शिरमार हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ एह० ॥ करवो प्रमाद जे थो
 डजो, ते पण अनरथमूल हो ॥ मु० ॥ गुरुनाथित कहुं तेहनो, सं
 बंध आमूल चूल हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ एह० ॥ एहज जंबू जरतमां, उत्तर
 पंथ अपार हो ॥ मु० ॥ वर्द्धनापुरमां राजीयो, अजितवर्द्धन अवधा
 र हो ॥ मु० ॥ ९ ॥ एह० ॥ सखडनाम गाथापति, चंदा तेहनी नार
 हो ॥ मु० ॥ सर्ग नामें सुत तेहनो, निर्धन तेह अपार हो ॥ मु० ॥
 ॥ १० ॥ एह० ॥ सखड मरण लह्यो हवे, कीर्धा मरणनां काम हो
 ॥ मु० ॥ आजीविका हेतें करे, चंदा परघर काम हो ॥ मु० ॥ ११ ॥
 एह० ॥ अटवीमांहिथी लावतो, इंधण साग प्रमुख हो ॥ मु० ॥ विक्र
 यथी आजीविका, एस दिन काढे दुःख हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ एह० ॥ एक
 पाडोशी तेहनें, पासंग नामें शेठ हो ॥ मु० ॥ आव्यो जमाइ तस घरे,
 तेहनी करवा वेठ हो ॥ मु० ॥ १३ ॥ एह० ॥ बोलावी चंदा तदा,
 पाणो नरण निमित्त हो ॥ मु० ॥ पुत्र नूख्यो घरे आवरो, चिंतन धारी
 चित्त हो ॥ मु० ॥ १४ ॥ एह० ॥ नोजन शींके थापीनें, कटिका देई
 डुवार हो ॥ मु० ॥ श्वानादिकना नयथकी, चंदा चाली जिवार हो ॥
 मु० ॥ १५ ॥ एह० ॥ सर्ग तूरत आव्यो तदा, मूक्यो इंधण नार हो ॥
 मु० ॥ मात खोली पण नवि जडी, करतो कोप अपार हो ॥ मु० ॥ १६ ॥
 एह० ॥ काम कखूं हवे शेठनुं, पण नवि दीधूं काय हो ॥ मु० ॥
 आवी निजघर जेटले, करती महा विसाय हो ॥ मु० ॥ १७ ॥ एह० ॥
 दीनमुखी देखी करी, कोपथी बोव्यो सग्न हो ॥ मु० ॥ केम शूलीयें
 तुज दीधली, नूखपीडा अम लग्न हो ॥ मु० ॥ १८ ॥ एह० ॥ ते केम

तुजनें विसखुं, तव तस बोली मात हो ॥ सु० ॥ हाथ कपाणा ताह
 रा, एह शीके रह्युं जात हो ॥ सु० ॥ १ए ॥ एह० ॥ लेईनें केम खाधुं
 नहीं, एहवां वचनउच्चार हो ॥ सु० ॥ करतां कर्म बांध्यां तीणें, जास
 विपाक अपार हो ॥ सु० ॥ २० ॥ एह० ॥ एक दिन कर्मविचित्रथी,
 जावि जावनें जोग हो ॥ सु० ॥ बोधिबीज पाम्यां तिहां, मानतुंग
 सूरिसंजोग हो ॥ सु० ॥ २१ ॥ एह० ॥ श्रावकपणुं पाम्यां वली, चढते
 गुन परिणाम हो ॥ सु० ॥ चरण धर्म वली पडिवज्यां, गुणगण केरां
 धाम हो ॥ सु० ॥ २२ ॥ एह० ॥ करीय संक्षेपणा ठेहडे, आगम
 उक्त विधान हो ॥ सु० ॥ काल करीनें कपनां, दोय ते स्वर्ग विमान हो
 ॥ सु० ॥ २३ ॥ एह० ॥ समरादित्यचरित्रमां, पद्मविजय कही ढाल
 हो ॥ सु० ॥ सातमे खंमें शोहामणी, उगणीशमी सुविशाल हो ॥
 सु० ॥ २४ ॥ एह० ॥ सर्व गाथा ॥ ५एए ॥

॥ दोहा ॥

॥ तामलीसि इण नरतमां, नयरी इव्य निधान; कुमारदेव इत्यकामि
 नी, जुंजीआ नाम जुवान ॥ १ ॥ सर्गदेव हवे स्वर्गथी, आवि लीये
 अवतार; तेहनी कूखें ततकूणें, जन्म थयो क्रमें ज्यार ॥ २ ॥ अरुण
 देव अजिधा ठव्युं, क्रमें क्रमें थयो कुमार; चंदा इण अवसरें चवी,
 सुरवरथी सुविचार ॥ ३ ॥ नामें पामलापथ नयर, शोठ जसादित्य
 सार; अजुत नारी ईजुआ, तस कूखें अवतार ॥ ४ ॥ पुत्री अनुक्रमें प्रस
 वती, देईणि नाम ते दीध; अनुक्रमें दीधी अरुणनें, सघलूं जावी सिद्ध ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ विधाता वैरिणी रे ठहीमां गुंरे लख्युं रे ॥ ए देशी ॥

॥ विधाता वांको जाणो रे, जुठ गुं गुं रे थाये रे ॥ परण्या विण चढिठ
 जयार्जे रे, अरुणदेव इव्यनें ध्याये रे ॥ १ ॥ कडाहदीपें गया कमावा
 रे, कमाई ते रे वलीठ रे ॥ जयार्जे ते वाटमां जागुं रे, कमें जुठ गुंरे
 थयुं रे ॥ आव्युं एक पाटिउं हाथे रे, तिणें दुःख सहुये गयुं रे ॥ २ ॥
 महेसर सायें बीजो रे, ते पण तिहां सायर तरीयो रे ॥ आव्या जव
 सायर कांते रे, पामलावह बाहिर चरीठ रे ॥ ३ ॥ महेसर तिहां

बोव्यो रे, तुमारे सासरे जईयें रे ॥ कुंअर तव इणिपरें जांखे रे, इणि
वेला एम किम कहीयें रे ॥ ४ ॥ तव ते कहे बेसो बाहिर रे, नयरमां
हुं रे जाशुं रे ॥ नोजन हुं जईने आणुं रे, कहे ते सुखमां ठाशुं रे
॥ ५ ॥ देवकुलमां जईने सुतो रे, आकें करी उंढ्यो सारो रे ॥ महे
सर तो लेवा गयो आहार रे, हाट शरीयें फिरतो अपारो रे ॥ ६ ॥
इण अवसर उदयें आव्युं रे, देइणिनें कर्म बंधाणुं रे ॥ निजनवन
उद्यानें बेठी रे, तस्करनुं थयुं रे टाणुं रे ॥ ७ ॥ कटक जुगल बहु
मूजां रे, तस्कर तिहां लेवा आव्यो रे ॥ गाढां तिणें नवि नीकलीयां
रे, साथें बुरीका रे लाव्यो रे ॥ ८ ॥ तेणें कापी हाथनें लीधां रे,
जेई नासवा रे मामयुं रे ॥ वनपालीयें बुंबज पाडी रे, जाणे आव्युं रे
धाडुं रे ॥ ९ ॥ कोटवाल सुणी उजाणो रे, चोरतो आगे रे नासे रे ॥
नासतां हवे आको चोर रे, जाणूं हवे किहां रे जाशो रे ॥ १० ॥
पेठो देवकुलमांहि रे, अरुणदेव जीहां रे सुतो रे ॥ उदे तस कर्म
आव्युं रे, सहु जन कर्म खुतो रे ॥ ११ ॥ चोरें चित्तमांहि चिंती रे,
कडां मूक्यां तेहनी पासें रे ॥ पोतें शीखर अंधारे ठपायो रे, बुरी मू
की हीणें आसैं रे ॥ १२ ॥ उठयो अरुणदेव तव दीठां रे, जाणुं दे
वता रे तूठो रे ॥ जेई फांदिमांहि संगोपे रे, बुरी देखी चिंतें अपुठो
रे ॥ १३ ॥ तव आव्यो तिहां तलार रे, मनमां झोजना रे थइ रे ॥
कहे किहां जाईश डुराचारी रे, बुरीका पडी रे गई रे ॥ १४ ॥ पकडयो
तव बोले तेह रे, में अपराध श्यो रे कीधो रे ॥ ते कहे यो कटकनो
जोडो रे, कहे अरुण न में रे लीधो रे ॥ १५ ॥ आणी क्रोधनें त्राडयो
तीणें रे, तव पडीयां कटक नूपीतें रे ॥ उलख्या कोटवाले ताम रे, नू
पति पुर धरीठ नीतें रे ॥ १६ ॥ संजलाव्यो व्यतिकर राय रे, दीठो इ
व्यशुं रे तेह रे ॥ कहे यो शूलीयें ए चोर रें, तलवर पण सांजली एह
रे ॥ १७ ॥ लाव्यो जिहां शूलीनुं ठाम रे, शूलीयें ए रे दीधो रे ॥ इण
अवसर नोजन लाव्यो रे, देवकुलमां ए रे सीधो रे ॥ १८ ॥ महेसरें
खोल घणी कीधी रे, न दीठो कोई रे ठामें रे ॥ तव आसनदेशें जोयो

रे, न लह्यो कोई रे नामें रे ॥ १९ ॥ माली बनवासीनें पूठे रे, एहवो
 कीहां रे जाव्यो रे ॥ ते कहे नवि दीगो कोई रे, पण एक चोर जाव्यो
 रे ॥ २० ॥ हमणां तस माखो नाइ रे, कदा तिहां रे गयो रे ॥ कौतु
 कनो लीधो जाय रे, सुणी शोक रे थयो रे ॥ २१ ॥ आकुल व्याकु
 ल घणो आये रे, नाई ए रे छुं कछुं रे ॥ नाई मुऊनें ठाम देखाडो रे,
 मारुं हईडुं रे दछुं रे ॥ २२ ॥ तव ठाम देखाड्युं तिणें रे, तिहां को
 नाणो आयो रे ॥ शूलीयें श्रोतपुत्रनें दीगो रे, अरुणदेव रे जायो रे
 ॥ २३ ॥ एम कर्म विचित्रता जूउ रे, सातमे खंमैं रे सुणो रे ॥ कहे
 पद्म वीशमी ठालें रे, कस्यां कर्म ए रे सुणो रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मविपाक कडुआ घणा, मूर्छा पामे मन्न; पडियो प्रथवी उपरें,
 तडफडतो ते तन्न ॥ १ ॥ प्रेक्षक लोक आव्या पठें, पूठे जाली
 पाणी; शो ए कहो संबंध ठे, आखो उत्तर आणि ॥ २ ॥ महेसर बहु
 ले मोह्यी, बोले गदगद बोल; वाट उठि ए वातडी, अवलो थयो अ
 तोल ॥ ३ ॥ तामलीसियें तिलक सम, कुमारदेव कहेवाय, तेहनो
 सुत तुमैं जाणजो, अरुणदेव अजिधाय ॥ ४ ॥ इण नयरी वासी अव
 ल, जसादित्य जगजाण; जामाता तस जाणजो, आव्यो इणहीज
 ठाण ॥ ५ ॥ जिहाज नांगुं प्रिय जन गया, मनसां धरतो माम; न
 गयो सुसरानें घरे, अवसर जाणी आम ॥ ६ ॥ बेसाखो में बाहिरें,
 पुरमां गयो पिठाण; आहार लेइने आवीउ, ठावो खोव्यो ठाण
 ॥ ७ ॥ पाप उदय परगट थयो, आव्यो खोलतो आंहिं; दीगो एणी
 परें दृष्टिथी, किहां ए शूली क्यांहिं ॥ ८ ॥

॥ ठाल एकवीशमी ॥ इम म्हारा घणूं सवाइ ठोला ॥ ए देशी ॥

॥ एम कहेतां मूरठा नडीउ, प्रथवी उपरें ते पडीउ रे ॥ नविका कर्म
 तणी गति न्यारी, न शके कोई कर्मनें वारी रे ॥ १० ॥ पुरानी परें त
 डफडतो, उठ्यो केमहीक लडथडतो रे ॥ १ ॥ १० ॥ निजवध करवाने
 मांमे, लेइ पडर शिरछुं पठाडे रे ॥ १० ॥ प्रेक्षक लोकें धरी राख्यो, इण

परें जे संबंध दाख्यो रें ॥ १ ॥ ज० ॥ नगरीमां अयो विस्तार, जसादित्यें
सुण्यो अधिकार रे ॥ ज० ॥ निज पुत्री जेई तिहां आयो, दीगो अरुणदेव
मन जायो रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ अहो अहो ए वात ते केहवी, शेठपुत्रनी
जोवा जेहवी रे ॥ ज० ॥ मूर्छां जह्यां डुहितानें तात, ठांट्यां चंदन
विंजणें वात रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ काढो मुज कष्ट रे जाय, नवि शोक संता
प खमाय रे ॥ ज० ॥ मरगुं निश्चय ततकाल, सुणी वात ए प्रथवीपाल
रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ कोटवालगुं करतो रीश, कोटवाल कहे सुणो ईश रे
॥ ज० ॥ चोरितवस्तुगुं एह, पकडयो अमें करीयें केह रे ॥ ६ ॥
॥ ज० ॥ जसादित्य पासें वधठाम, नरपति आवी जणो आम रे
॥ ज० ॥ जाई दैवनो ए अपराध, अम बुद्धितणो नहीं बाध रे ॥ ७ ॥
॥ ज० ॥ कोई जावी जावविचार, एम बोले नूनरतार रे ॥ ज० ॥ शू
जियेंथी उताखो तेह, पण वेदन अतिशय देह रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ प्र
तिबोधनो अवसर जाणी, आव्या सूरि चउनाणी रे ॥ ज० ॥ अमरेस
र गणधर नाम, तप अतिशयथी अजिराम रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ सुरवर
पूजित गतपाप, सहुना गया शोक संताप रे ॥ ज० ॥ देवतायें पृथ
वी समारी, गंधोदक वरसे धारी रे ॥ १० ॥ ज० ॥ वली कनक कम
ल पण विरचे, फूल वरसे नें मुनिनें अरचे रे ॥ ज० ॥ तिहां बेशीनें
देशना देता, उपदेशमांहिं एम कहेता रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ मोहनिडा
म करो प्राणी, धर्म जागरणें जागो जाणी रे ॥ ज० ॥ तजो पाप
थानक अढारो, दशविध जतिधर्मनें धारो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ तजीयें
वयरी अंतरंग, दुःख दिये परमाद प्रसंग रे ॥ ज० ॥ थोडो पण करि
यें पमाय, तेहथी बहु कर्म बंधाय रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ दुःखदायक तास
विवाग, मानस तनु दुःख अताग रे ॥ ज० ॥ देइणीनें अरुणदेव
जेम, तव पूठे नरपति केस रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ तव सूरि पूर्वसंबंध, वि
स्तारथी कहे प्रबंध रे ॥ ज० ॥ जो एटला दुःकृत केरो, विपाक
आव्यो अधिकरो रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ एम सांजली केइ प्रतिबूझ्या,
संवेगथी कर्मगुं फूझ्या रे ॥ ज० ॥ अरुणदेव देइणी दोय, मूर्छांगत

ततक्षण होय रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ चेतना लही पास्यां ज्ञान, जातिस
 मरण चुनध्यान रे ॥ ज० ॥ आदान निदान सहु जाण्यो, चुनपरि
 णामें परमाण्यो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ प्रभु जे तुमें नांख्युं तेम, अमें ज्ञानें
 दीतुं एम रे ॥ ज० ॥ अमें पास्या जिनवर बोधी, अणसण देइ करो अम
 शोधि रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ जरा जनम मरण रोग शोग, टालो संसार संजो
 ग रे ॥ ज० ॥ गुरु कहे ए जुगती वात, डुर्गति जाये सदगति यात रे
 ॥ १९ ॥ ज० ॥ सुर नर सुखसाधे एह, निरवाण दिये वली जेह रे ॥
 ज० ॥ अणसण दिये नृप शोठ साखें, सहु धन्य धन्य मुखें नांखे रे
 ॥ २० ॥ ज० ॥ कहे बिहुं जण गुरुने स्वामी, वली कहो कांय अं
 तरजामी रे ॥ ज० ॥ गुरु कहे तुमें सघलुं कीधुं, मानवजवनुं
 फल लीधुं रे ॥ २१ ॥ ज० ॥ वली ठांनो ममत दुःखमूल,
 मैत्री सद्गुण अनुकूल रे ॥ ज० ॥ पूरव दुःकृत डुगंठो, एक रत्नत्रयी
 नें वंठो रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ परमात्मस्वरूप विचारो, सुणी तिमज
 करे सुप्रकारो रे ॥ ज० ॥ इण अवसर कहे नूपाल, संवेगथकी सुर
 साल रे ॥ २३ ॥ ज० ॥ एटलानां ए फल बतलावो, तो अमनें कु
 ए गति जावो रे ॥ ज० ॥ परमादवशें अमें पडिआ, अमें कर्मज
 जीरछुं जडिआ रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ गुरु कहे कर्मनी स्थिति एहवी,
 फलें अधिक अधिक वड जेहवी रे ॥ ज० ॥ जो अधिक अधिक
 वली बांधे, तो नरक तिरि गति साधे रे ॥ २५ ॥ ज० ॥ तिहां दुःख
 घणां जोगवशे, बहु काल लगें जोगवशे रे ॥ ज० ॥ ते लेखे ए थोडुं
 जाणो, तिणें नांखे त्रिभुवनराणो रे ॥ २६ ॥ ज० ॥ विष व्याधि
 जलणनें साप, गत्रुसंग दिये दुःख व्याप रे ॥ ज० ॥ इह नव दुःख
 पण परमाद, इह परचव आपे विपाद रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ परमादथी
 करत अकाज, गुरुलायव न गणे काज रे ॥ ज० ॥ एम तत्वातत्व
 विचार, गुरु उपर न करे प्यार रे ॥ २८ ॥ ज० ॥ एम संची बहुलां
 पाप, सदे वेदन नरकें आप रे ॥ ज० ॥ पूठे नृप तास ठपाय, तव
 नम्यग कह गुरुराय रे ॥ २९ ॥ ज० ॥ एम सातमे खंमें जाणो,

एकवीशमी ढाल प्रमाणो रे ॥ ज०॥ गुरु उत्तम एणि परें नांखे, नृप
पद्मविजय चित्त राखे रे ॥ ३० ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥६६६॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्व आरंज तजे सदा, चारित्र पाजे चित्त; आराधे अप्रमादनें,
नाणवृद्धि होय नित्य ॥ १ ॥ मिथ्यामत मूँजे नहीं, वर्द्धमान संवेग;
पूरव संचित खेपवे, वलि नासे अविवेग ॥ २ ॥ निमित्त विना बांधे
नहीं, नवां कर्म निर्धार; अनुक्रमें केवल ऊपजे, शाश्वत सुख श्रीकार
॥ ३ ॥ राय कहे सूरीसनें, कस्यो न केम अप्रमाद; एणें अप्रमाद
आराधीउ, पण बहुलो परमाद ॥ ४ ॥ अतिशय अप्रमादीपणुं, करे
कर्मनो अंत; पण थोडा अप्रमादशी, मोडयां कर्म महंत ॥ ५ ॥
आदरीउ अप्रमादनें, अशुन टव्यो अनुबंध; बीज अप्रमादनुं बोईयुं,
स्तवियें ए संबंध ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ मारे घरे आवज्यो रे रसिया ॥ ए देशी ॥

॥ तिणें कारण प्रचुजी नांखे, करवो नहीं परमाद सराखे ॥ दुःकृत
निंदा रे करीयें, इणि परें नवसायर सुखें तरीयें ॥ १ ॥ ति० ॥ आ
जोईयें गुरु पासें, प्रायश्चित्त विधिपूर्वक अन्यासें ॥ एम सुणी बूज्यो रे
राय, कारागार विमुक्ति कराय ॥ २ ॥ ति० ॥ जसादित्य माहेश्वर
साथें, चारित्र लिये नृप सजुरु हाथें ॥ एह सुणी अधिकार, कटक
चोर आव्यो तिणें तार ॥ ३ ॥ ति० ॥ पश्चात्ताप रे करंतो, गुरुनें इणी
परें तेह वदंतो ॥ में पापीयें ए काम, कीधुं निदंधस परिणाम ॥ ४ ॥
ति० ॥ धर्म उवेखी रे सार, अधरमनो कीधो अधिकार ॥ मानवचव
एहेलें खोयो, दुःखपरंपरानो मुख जोयो ॥ ५ ॥ ति० ॥ श्यो बहु
वचन विन्यास, प्राणत्याग करवो तुम पास ॥ कहो प्रचुजोग्य जे मा
हरे, दीधो गुरु उपयोग तिवारें ॥ ६ ॥ ति० ॥ लौकिक सुंदरता ना
व्यो, पण नवि नव वैराग्य ते आव्यो ॥ एम विचारी रे तास, दीधुं
अणसण शुन अन्यास ॥ ७ ॥ ति० ॥ दीधो वली नवकार, चोरें प
ण कस्यो अंगीकार ॥ निंद्यो आतम आप, गुरु वंदीनें धोयां पाप ॥

॥ ८ ॥ ति० ॥ अरुणदेवें कखो काल, देईणी तस्कर पण ततका
 ल ॥ त्रणे सुरवर रे थाय, तिणें सुण सेनकुमरजी राय ॥ ९ ॥
 ति० ॥ राज्य असारनें काम, कीधो शे कामें सग्राम ॥ जुगतूं काम न
 कीधुं, सेन कुमर पण बोव्यो सीधुं ॥ १० ॥ ति० ॥ कुल परानव न
 सहाणो, तिणें असुंदर कार्य कराणो ॥ जाणूं हवे तूम पास, दीक्षा
 यी उपशम होय तास ॥ ११ ॥ ति० ॥ आपो जोग्य जो जाणो,
 गुरु कहे योग्य तणे शिर ठाणो ॥ तजवा जोग्य संसार, कीजें लघु
 कारय निरधार ॥ १२ ॥ ति० ॥ सेनकुमर कहे साच, सुणो अमात्य
 गुरुनुं वाच ॥ अनुमति द्यो तुमें सारी, बोव्यो ताम अमात्य विचारी
 ॥ १३ ॥ ति० ॥ विघन म होयो रे तुमनें, आठ दिवस द्यो माग्यां
 अमनें ॥ अष्टाईमहोत्सव रे कीधो, दान अतुल जाचकनें दीयो ॥ १४ ॥
 ॥ ति० ॥ राज्य तय्यो निज पुत्र, अमरसेन राखे घरसूत्र ॥ शुनलग
 नें शुन वार, शांतिमती पण साथें नारि ॥ १५ ॥ ति० ॥ अमरगुरु सु
 खमंती, शकुन सवे अनुकूज निपंती ॥ हरिसेन गुरुनें रे पासें, दीक्षा
 लेईनें श्रुतअन्यासें ॥ १६ ॥ ति० ॥ अनुक्रमें सूत्रने किरीया, अर्थ
 धखो हूआ गुणदरीआ ॥ तुजना जिनकल्प केरी, करे गुरुआणा
 लहीय जलेरी ॥ १७ ॥ ति० ॥ पांच प्रकारनी तेह, तपने १ सूत्र २
 अर्थ ३ गुणगेह ॥ एकांत ४ वल ५ पंच जाणो, पाठांतर बीजो
 परमाणो ॥ १८ ॥ ति० ॥ यतः ॥ “तवेण सुत्तेण अत्तेण, एगंतेण
 वलेण य ॥ तुल्लणा पंचहा बुत्ता, जिणकणं पडिवळ्ळउ ॥ १ ॥ अत्र पाठां
 तरं विशेषावश्यके ॥ तवेण सुत्तेण सत्तेण, एगत्तेण वलेण य ॥ इत्यादि ॥
 तत्र सत्वजावना पंचथा ” पहेली उपामरा मांहिं, बीजी बाहिर धर
 त उठाहिं ॥ त्रीजी चोकमां रहेतां, चौथी शूना घरमां सहेतां ॥ १९ ॥
 ॥ ति० ॥ पांचमी समशानें जाय, सत्वजावना इणी परें थाय ॥ बृह
 त्कल्पमां विस्तार, जोजो इहां थाय ग्रंथ अपार ॥ २० ॥ ति० ॥
 यतः ॥ “पढमा उवस्सयंमी, विद्या बाहिं तईया चउकंमी ॥ सुन्नहरं
 मी चउची, तह पंचमीया मसाणंमी ॥ १ ॥ कीधी तुजना रे एम,

ढाले संग सद्गुणं प्रेम ॥ ग्रामें एकज राति, नगरें पंच राति विख्यात ॥
॥२१॥ति०॥ एक दिन विचरंता आया, कोलाग सन्निवेशें मुनिराया ॥
काउस्सग रह्या एक ठामें, प्रणमो ए मुनि नित्य शिर नामि ॥ २२ ॥
॥ति०॥ सातमे खंमें रे ढाल, बावीशमी नांखी सुरसाल ॥ समरादि
त्यनें रास, पद्मविजय कहे धरी उल्लास ॥२३॥ति०॥ सर्व गाथा ॥६९॥

॥ दोहा ॥

॥ राज्य विना हवे रडवडे, नाम विसेन कुमार; इण अवसर तिहां
आविथो धरतो द्वेष अपार ॥ १ ॥ मुनिवर दीठा मोटिका, पण को
ई कर्मप्रमाण; कोपें चित्तमां कलकट्यो, बोले इण परें वाणि ॥२॥
दीठो वलि दृष्टें करी, नहिं मुज पापनो पार; अथवा आ अवसर
नजो, एकाकी अवधारि ॥ ३ ॥ एकांतें आयु ६ नहीं, पद्मोचाडुं जम
पाणि; मनोरथ पूरुं मन तणा, अथवा मुज एम हाणि ॥ ४ ॥ नि
जकुल पुत्रनें निरखतां, कहो मारुं कोण रीति; वध करुं वलि अव
सरें, चाट्यो एम धरी चित्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ पट्टोदर पाटीयें पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ नवि कोईनें व्यतिकर नांख्यो, ए द्वेष हैयामां राख्यो ॥ मुनि सम
तारस चित्त चाख्यो ॥ १ ॥ नविजन वंदियें मुनि जावें, जिम नव नव
पातिक जावे ॥ नवि० ॥ ए आंकणी ॥ देवकुल पीठिकायें सूतो,
सूरज क्षेत्रांतरें पोहोतो ॥ आयो रातिनें नाग निचंतो ॥ २ ॥ न० ॥
गयो खड्डु लेई मध्यरातें, मुनिवर पासें एकांतें ॥ ध्यान निश्चल मुनि
वर ध्याते ॥ ३ ॥ न० ॥ एक अरतिनें बीजुं अज्ञान, ज्वळ्यो क्रोधनें
दीप्यो मान ॥ काढ्युं खड्डु जुजंग समान ॥ ४ ॥ न० ॥ कहे सांज
ल रे डुराचार, जीवलोक नयणें अवधारि ॥ हुं मारीश तुज निरधार ॥
॥ ५ ॥ न० ॥ ध्यानमां न सुणे मुनिराय, पण क्षेत्रदेवी तिणें ठाय ॥
सूणे गुणरागिणी चित्त लाय ॥ ६ ॥ न० ॥ विसेनकुमारने कोपी, ख
ड्डु वाहे जदा लाज लोपी ॥ अपहरी लीये दोष आरोपी ॥ ७ ॥ न०
अन्यो वलि तेहज ठाम, कहे धिग संक्लेश परिणाम ॥ अनार्यपणा

तुं धाम ॥ ८ ॥ न० ॥ सम शत्रु मित्र मुनि एह, वासी चंदन सम
 देह ॥ ते उपर केम करे एह ॥ ९ ॥ न० ॥ तुज मुख नवि जोवुं
 सार, दया आणीनें मूक्यो तिवार ॥ पण तीव्रकरम थयां ल्हार ॥
 ॥ १० ॥ न० ॥ न गणे ते देववचन, फरी मारण धाये तन ॥ देव
 ताये जाणी शुन पन ॥ ११ ॥ न० ॥ लोही वमतो नाख्यो तास,
 मुनि अवग्रह जाण्यो पास ॥ ह्मोनना लही उठव्यो तास ॥ १२ ॥
 न० ॥ अवग्रहथी काढयो बाहिरें, मूक्यो वनमां जई त्यारें ॥ अट्टश
 थया देवता ज्यारें ॥ १३ ॥ न० ॥ पापनी परिणति जुड माहारी, न
 वि शकीत एहनें मारी ॥ विसेन ते एम विचारी ॥ १४ ॥ न० ॥ एम
 करतो रुड ते ध्यान, अमरप धरतो अज्ञान ॥ थयुं नारक आयुबंधा
 ण ॥ १५ ॥ न० ॥ अग्निनिवेशथी दृढ थाय, क्रमें कोईक काल गमा
 य ॥ परिजन सहु निजयर जाय ॥ १६ ॥ न० ॥ पीडा बहु नूखनी
 खमतो, एकाकी मारग चलतो ॥ चोष्पीला अटवीमां नमतो ॥ १७
 ॥ न० ॥ निह्न गृध्र आवणनें काज, मांस जेवुं करे तस व्याज ॥
 माखो तिणें विसेणराज ॥ १८ ॥ न० ॥ मरी ठही नरगें जायो, मु
 निआशातन फल पायो ॥ बावीश सागर तस आयो ॥ १९ ॥ न० ॥
 हवे सेनराय अणगार, पाली संजम निरतिचार ॥ करी संक्षेपणा तजे
 आहार ॥ २० ॥ न० ॥ प्रणमी वीतरागना पाय, आदरे अणसण शु
 न ठाय ॥ प्रतिबंध रहित निर्माय ॥ २१ ॥ न० ॥ नावना आराधी
 नावें, देहपंजर मूकी जावे ॥ नवमे अवेयकें आवे ॥ २२ ॥ न० ॥
 त्रीश सागर आयु तास, एम सत्तम नव सुविलास ॥ पितराई नाइ
 पणें जास ॥ २३ ॥ न० ॥ सातमो कव्यो खंम रसाल, संवत अठार
 वेंताल ॥ जेठ वदि ठेठ त्रेवीश ढाल ॥ २४ ॥ न० ॥ विजयसिंह सूरिस
 सवाया, सत्यविजय सुशिष्य गवाया ॥ तस शिष्य कपूर कहाया ॥ २५ ॥
 न० ॥ तस खिमाविजय गुरुराय, जिनविजय विबुध तस थाय ॥ सोना
 गीजन सुखदाय ॥ २६ ॥ न० ॥ तस शिष्यमां उत्तमविजयो, जग
 माहिं जस जसविजयो ॥ जस नाम प्रनार्ते लिजयो ॥ २७ ॥ न० ॥

समरादित्यनो ए रास, कहे पद्मविजय सुप्रकाश ॥ पूरे पास कल्याण
जी आश ॥ १८ ॥ न० ॥ सर्व गाथा ॥ ७१८ ॥

॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीयपंक्ति प्रवरश्रीमद्भुत्तमविजयगणेशिष्यपंक्ति प
द्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सेनविसेन पि
तृव्यत्रात्रोः सप्तमो नरजवः समाप्तः ॥ ७ ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तोयं
सप्तम खंडः ॥ सप्तमखंडेसर्वगाथा ॥ ७१८ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

॥ इति श्री समरादित्यचरित्रे प्राकृत
प्रबंधे सप्तमः खंडः संपूर्णः ॥ ७ ॥

॥ अथ ॥

॥ अष्टम खंडस्य प्रारंभोऽयं ॥

॥ दोहा ॥

॥ पासजिनेसर पाय नमी, समरी सरसती माय; गुणगणदायक गुरु
तणा, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ सातमो खंड शोहामणो, पूरण करी
सुप्रमाण; अद्भुत खंड हवे आठमो, सांजलो सर्व सुजाण ॥ २ ॥ जं
बुद्धीप लख जोअणो, नरत क्षेत्र अनिराम; सुरपुरी सम शोहामणी,
नयरी अयोध्या नाम ॥ ३ ॥ वनवाडी विहारें करी, नित्य उड्डव आ
णंद; जुवती अद्भुत ठे जिहां, करणी गतिसुखकंद ॥ ४ ॥ लावण्य
उतपति लेखियें, सुदृशील समाचार; विधि कौशल्य प्रकर्ष वली, वि
स्मय ठाण विचार ॥ ५ ॥ पुरुषवर्ग पूरा वसे, अद्भुत चरित उदार;
गुणपक्षपातीने गुणी, वचन ते वदे विचार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ दानना ब्यसनी लोक ठे जेह, जोनी जश जेवानें तेह ॥ परधन जे

चाने पांगला, परस्त्री देखएने आंधला ॥ १ ॥ बीकण करवा तेह अ
 काज, मूढा पर मागएने काज ॥ गुण ग्रहवानो नहीं संतोष, मुंगा
 पारका जेवा दोष ॥ २ ॥ जिहां बंधन ते धम्मीलें होय. अथवा फूल
 बंधाये जोय ॥ दंत ठत्रने के प्रासाद, स्नेहनो दूय दीपकें अविवाद
 ॥ ३ ॥ मार शब्द सोगतीने कहे, निर्दयपणुं तिहां खड्डें लहे ॥ बुहियां
 मंदिर दीसे घणां, गज शालायें कलह नहीं मणा ॥ ४ ॥ कोरणी मं
 दिर मांहिं घणी, पण तिहां लोक नहीं कोरणी ॥ मैत्रीबिज्ज नामें तिहां
 राय, राज्यलक्ष्मी परें कीर्ति सुहाय ॥ ५ ॥ नीतिपरें नहीं दया विही
 न, शत्रुने कीया वली दीन ॥ पद्मावती पटराणी तास, सुख नोगवे
 तेहणुं सुविलास ॥ ६ ॥ नवमा अवेयकवासी देव, उपनो तेहनी कूखें
 हेव ॥ दीतुं सूपन तिणें परजात, एक सरोवर तिणहीज राति ॥ ७ ॥
 कमल सहित ते राजे वणुं, नृत्य करे मानुं वीचि तणुं ॥ चमरसमू
 ह गुंजारव करे, कांठे पंखी रह्यां परपरें ॥ ८ ॥ तरुअर श्रेणी चिहुं
 दिश फरी, एह उदर पेटुं संचरी ॥ जागी संजलाव्युं जरतार, नृपने
 पण अयो हर्ष अपार ॥ ९ ॥ पुत्र आशे रायहंस समान, नूप कम
 लाकर नोग अमान ॥ सांजली संतोष पामी नारी, त्रण वरग साधे
 सुखकारि ॥ १० ॥ अनुक्रमें गुन सुहूरत गुन योग, सुखथी प्रसवे पुत्र
 नीरोग ॥ कमलपरें कर पद सुकमाल, दासीयें वीनवीउं नूपाल ॥ ११ ॥
 रायतणे मन हर्ष न माय, दीये वधामणी करीय पसाय ॥ ठोडी दीये
 तीहां कारागार, हरख्यो जनपद चित्त उदार ॥ १२ ॥ आणंद ध्वज
 कीयां घरशिरें, पूजा विरचावे परपरें ॥ घरघर वाजे मंगलतूर, रम
 णी गीत गाये ससनूर ॥ १३ ॥ वधामणां लावे बहु लोक, नाचे त
 रुणी जनना थोक ॥ राय दीये बहु आदर तास, कहे तुम केरी वृद्धि
 ए खास ॥ १४ ॥ बहु आणंदमां गयो एक मास, विविध उल्लव कर
 तां उल्लास ॥ नाम ठवे गुणचंद कुमार, अनुक्रमें कुमर जाव लहे सार
 ॥ १५ ॥ शीखी कलाउं अनेक प्रकार, लेख गणित आलेख विचार ॥
 नाटक गीतनें वाजित्र चूत, होरा काव्यनें आर्या जुत ॥ १६ ॥ प्रहे

लिका मागधिका श्लोक, देखी अचरिज पामे लोक ॥ शयन विधि
विधि अन्नने पान, अष्टापद सम तालनुं मान ॥ १७ ॥ रमणी प्रतिकर्म
लक्षण नारी, पुरुषतणां लक्षण अवधारी ॥ हय गय गोएनें कूकड त
णां, मेढ लक्षण वली जाणे घणां ॥ १८ ॥ चक्र दंम मणि असिनें
ठत्र, कांगिणी चर्म लक्षण कहेवत्त ॥ चंद्र सूर राहुना चार, ग्रहना
चार अनें प्रतिचार ॥ १९ ॥ मंत्र तंत्र यंत्र केरी वात, व्यूह प्रतिव्यूह
तणा अवदात ॥ खंधा चारनां जाणे मान, नगरनिवेश जाणे तस
थान ॥ २० ॥ हयगय शिक्कानें धनुरवेद, धातुर्वाद वली मणिना चेद ॥
बाहुदंम मुठि अठि जुद्ध, वलि ते जाणें युद्धनियुद्ध ॥ सजीवनें निर्जीव
उपाय, नाजिका खेड शकुन रुत थाय ॥ २१ ॥ विषय प्रसंग समय
आविज, पण कला नणवा चित्त नावीज ॥ वली आसन ठे सिद्धिनां
सुख, क्लिष्ट कर्म उपशमीआं दुख ॥ २२ ॥ कन्यारूप प्रकर्ष न दीठ,
तिणे तस विषय प्रसंग अनिष्ठ ॥ गुरुने उपजावतो आणंद, सार्धे चा
करनां बहु वृंद ॥ २३ ॥ नंदनवन उपमवनमांहीं क्रीडा करतो अति
उज्ज्वल ॥ पुण्यतणुं फज एम नोगवे, दान याचकनें बहु उठवे ॥ २४ ॥
समरादित्य तणो ए रास, आठमे खंभें लीजविजास ॥ पंक्ति उत्तम
विजयनो बाल, पद्मविजय कहे पेहेजी ढाल ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवविसेण नारक जिके, उद्धत्यो इण काल ; संसरीज संसारमां,
सहेतो दुःख असराज ॥ १ ॥ अनंतर जवें तिणें आचखुं, कष्ट तथाविध
कांय ; वैताढ्य वारु परवतें, अवतरीयो ते आय ॥ २ ॥ रथनें उर चक्र
वालरम्य, विद्याधर वर थाय ; अनिधा वाणमंतर ईशुं, कीधुं अनुक्रमें
ताय ॥ ३ ॥ वाय्यो वयें विद्याधरो, रमतो रमतो रान ; मयणनंदन नामें
जनुं, अयोध्या उद्यान ॥ ४ ॥ तिहां आव्यो ते ततक्षिणें, इण अव
सर आवंत ; गुणचंद्र कुमर गुणी घणा, चित्र करण निचिंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आठे लालनी ॥ देशी ॥

॥ दीठो कुमरनें जाम, पाप उदय थयो ताम ॥ सुंदर लाल ॥ ततक्ष

ए कोपें कलकल्यो जी ॥ १ ॥ चिंतवे चित्तुं एम, ए पापी इहां केम
 ॥ सुं० ॥ कुण दुःख दायक देखीयें जी ॥ २ ॥ इहां करवो ज्यो विचा
 र, मारुं ए दुष्ट आचार ॥ सुं० ॥ आव्यो निकट कुमरनें जी ॥ ३ ॥
 कुमरनी हृदमां तेह, आवी न शक्यो एह ॥ सुं० ॥ तव चिंते इहां
 रही हणुं जी ॥ ४ ॥ रही अदृश्य प्रकार, विद्या शक्ति उदार ॥ सुं० ॥
 नीपण शब्दे जेखवुं जी ॥ ५ ॥ सहेजें तजरो प्राण, एम करी तेह
 अजाण ॥ सुं० ॥ शब्द कस्यो नैरव घणो जी ॥ ६ ॥ वज्रप्रहारें जे
 म, फुटे गिरिवर तेम ॥ सुं० ॥ तोहि कुमर खोल्या नहीं जी ॥ ७ ॥
 मित्र लह्या तिहां क्कोज, तेहनें करी थिर थोज ॥ सुं० ॥ कोप्यो अ
 ति वाणमंतरो जी ॥ ८ ॥ अहो धीरज एणें कीध, पापी दुष्ट प्रसि
 ५ ॥ सुं० ॥ फेरी पराक्रम दाखवुं जी ॥ ९ ॥ कंचन पादप नाम,
 करी नाख्यो शिरगाम ॥ सुं० ॥ कुमरपुण्यें दूरें पड्यो जी ॥ १० ॥ वा
 णमंतर दूजाय, चिंता एणि परें आय ॥ सुं० ॥ अहो पापी शक्ति घ
 णी जी ॥ ११ ॥ अधिक करे मन खेद, इण अवसरें अयो जेद ॥
 सुं० ॥ क्षेत्रपाल तिहां देवता जी ॥ १२ ॥ वाणमंतर ए देव, गमन
 रति शुन टेव ॥ सुं० ॥ ते देखी बीहीनो घणुं जी ॥ १३ ॥ विद्यानुं
 बल अल्प, नागो तेह अजल्प ॥ सुं० ॥ विद्याधर वाणमंतरो जी
 ॥ १४ ॥ आव्या नयर मजार, ते गुणचंद कुमार ॥ सुं० ॥ इणि अ
 वसर उत्तरापंथें जी ॥ १५ ॥ पाटण शंखपुर आय, शंखायन तिहां
 राय ॥ सुं० ॥ कांतिमती तस नारया जी ॥ १६ ॥ धूआ रतनवती
 तास, मुनि पण पाडे पास ॥ सुं० ॥ रूप मनोहर रतिसमी जी ॥ १७ ॥
 कला लावण्य निधान, वरचिंता असमान ॥ सुं० ॥ विधियें घड्यो के
 नवि घड्यो जी ॥ १८ ॥ चिंतवे इणी परें माय, खोजावुं शुन ठाय
 ॥ सुं० ॥ पृथ्वी बहु रयणें नरी जी ॥ १९ ॥ निज नर सबल सुजा
 ण, जोवा रूप विनाण ॥ सुं० ॥ पुरुष दिशो दिश मोकल्या जी ॥ २० ॥
 शिखविठं इणि रीत, रूपकला परतीत ॥ सुं० ॥ रत्नवती सम देखज्यो
 जी ॥ २१ ॥ ते ते राजकुमार, करी चित्राम सफार ॥ सुं० ॥ लावी

सुऊ देखाडीयें जी ॥ ११ ॥ अद्भुत कोई विज्ञान, पत्र ठेदादि समान
 ॥ सुं० ॥ ते कौशल्य पण दाखज्यो जी ॥ १२ ॥ ते पण करीय प्रमा
 ण, गया दिशो दिश जाण ॥ सुं० ॥ दीठा नृपसुत बहु तिणें जी ॥ १४
 पण नहीं नारीनें जोग, पण कांचक जे लोग ॥ सुं० ॥ ते चित्र्या चि
 त्राममां जी ॥ १५ ॥ फिरता आव्या तेह, नयरी अयोध्या नेह ॥
 सुं० ॥ दीठो गुणचंद कुमरनें जी ॥ १६ ॥ राधावेधविचार, धनुर्वेद
 प्रकार ॥ सुं० ॥ कला अन्यासतो देखित जी ॥ १७ ॥ विस्मय पा
 म्या चित्त, रूपकला सुपवित्त ॥ सुं० ॥ कुंअर नयरमां आविया जी
 ॥ १८ ॥ राजकन्या अनुरूप, पण न लखाये सरूप ॥ सुं० ॥ एकज
 वार वली देखित जी ॥ १९ ॥ आठमे खंमें ढाल, बीजी अतिहिं र
 साल ॥ सुं० ॥ पद्म कहे श्रोता सुणो जी ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ चित्रमती बोळ्यो चतुर, नूषण अद्भुत जाल; ते कहे दीतुं तो खरुं,
 एहमां नहीं कोई आल ॥ १ ॥ पण राणी उपदेशडो, करी शकीयें
 कहो केम; पडठंदो नवि नीपजे, अमनें खेद ठे एम ॥ २ ॥ चित्र
 मती कहे साचलुं. अमनें पण ए खेद; पण एहनी पासें रही, न
 णशुं एहनो जेद ॥ ३ ॥ रयणवती परें नित्य रही, प्रतिष्ठंद करूं पा
 ण; नूषण कहे ए जावतूं, जो पण दुःकर जाण ॥ ४ ॥ चित्रमती
 कहे चित्र कर, रत्नवतीनुं रूप; आलेखीनें आपणें, अद्भुत एह अनूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ कालिने पीली वादली ॥ ए देशी ॥

॥ चित्रकारसुत मिश अई, जई मलीयें राजकुमार ॥ नूषण कहे रूढुं
 कहुं, मिलवानो एह प्रकार ॥ १ ॥ जलो नांख्यो रे, चित्त राख्यो रे,
 तुम बुद्धितणो नवि पांमीयें वर पार ॥ ए आंकणी ॥ एम करतां मा
 लुम अशो, रत्नवती उपरें केहेवो राग ॥ नयरमां पेठा एम करी, पट
 आलेखी लेई पाग ॥ २ ॥ जलो ॥ दारदेशें गया जेटलै, तव रो
 क्या तस प्रतिहार ॥ दुकुम लही मांहिं मोकव्या, तव आवी करे न
 मस्कार ॥ ३ ॥ जलो ॥ आणाथी बेशी हवे, पट काढयो हर्षित

वयण ॥ देखाडी कहे इणि परें, शंखपुरथी आव्या अमें सयण ॥ ४ ॥
 ॥ नलो० ॥ तुम गुण सांजली आवीआ, दीठा जेहवा सुण्या कान ॥
 पृथवीनाथ तुमें अठो, पण अमचा नाथ राजान ॥ ५ ॥ नलो० ॥
 चित्रनो लव अमें जाणीयें, ते तुम पयनति प्रजाव ॥ चित्रनो पट दे
 खी कहे, गुणचंद्र कुमार ते ताव ॥ ६ ॥ नलो० ॥ एह कलानो लव
 कहो, केहेवी संपूरण होय ॥ चित्रकर्म एह उपरें, जगमां नवि दी
 से कोय ॥ ७ ॥ नलो० ॥ कोईयें न दीठो एहवो, रेखा केरो विन्या
 स ॥ मृगनयणीयें दक्षिण करें, शतपत्र धखुं सुविलास ॥ ८ ॥ न
 लो० ॥ मयणघरिणी मातुं चित्रमां, रहेती हरती अम चित्त ॥ दा
 नव मानव देवमां, एहवी नारी होये केम मित्त ॥ ९ ॥ नलो० ॥
 रूप लावण्य रती समुं, तुमें निपुणपणुं कखुं जोर ॥ कला अधिकथी
 माहरा ए, चित्तडा तणुं ठे चोर ॥ १० ॥ नलो० ॥ तेह कहे निपजा
 वीठं रे, विधियें जे ते लिखाय ॥ तो अम निपुणाइ पणुं, कहो केही
 परें वखणाय ॥ ११ ॥ नलो० ॥ कुमर कहे सुख हरखते, तुमें कि
 हां दीतुं ए रूप ॥ त्रिखुवन विस्मय उपजे, ते नांखो तास सरूप
 ॥ १२ ॥ नलो० ॥ ते कहे सांजलो कुमरजी, शंखपुरें शंखायन
 राय ॥ तेहनी ए ठे कुंअरी, रंजा पण हारी जाय ॥ १३ ॥ नलो० ॥
 रतनवती नामें करी, कंदर्प महोत्सवमां दीव ॥ जंपानें बेठी थकी, शिर
 ठत्र धखुं सुविसिष्ठ ॥ १४ ॥ नलो० ॥ बहु सखीउयें परिवरी, दक्षि
 ण करकमल विशेष ॥ जोईने पोहोता घरे, कीधो संजारी आलेख
 ॥ १५ ॥ नलो० ॥ पण तस रूप सुंदरपणुं, विश्वकर्मायें न लखा
 य ॥ तो जूरखजनें वचनथी, कहो किणी रीतें कहेवाय ॥ १६ ॥ न
 लो० ॥ मदनवशें गुणचंद्रजी, थया पण गोपवि आकार ॥ कहे कां
 दिये कामिनी कुण नम्या, हरनैं विषधर करे कांय ॥ १७ ॥ नलो० ॥ शुं
 रणें करी. शुं धवल करे कहो राय ॥ १८ ॥ नलो० ॥ एकें शब्दे चार
 नो, उत्तर करवो कहो तेह ॥ 'नहं गणा जोयं' कहे, गुणचंद्र कुमर ध

री नेह ॥ १९ ॥ जलो ॥ चित्रमती कहे साहिबा, तुम लहण वेग
 अति सार ॥ कुमर कहे बीजो कहो, कांय प्रसन्न ते अतिहिं उदार
 ॥ २० ॥ जलो ॥ बोव्यो विजासबुद्धि तदा, शुं रथमां होय प्रधान ॥
 बुद्धिवलें कोण लोकमां, जींते धरतो अनिमान ॥ २१ ॥ जलो ॥ शुं
 करती बाला कहो, नेउरनो शब्द करंत ॥ हसितवदन कुमर तदा,
 चक्रमंती ईम वदंत ॥ २२ ॥ जलो ॥ अहो अतिशय तुम बुद्धिनो,
 इत्यादिक प्रसन्न जबाप ॥ नूषण प्रमुखना वालीआ, सहु रीज्या नि
 जचित्त आप ॥ २३ ॥ जलो ॥ अंथ विस्तारना नयथकी, नवि की
 धो इहां परपंच ॥ कुंअर पण परमोदथी, अंग अंग अयो रोमांच ॥
 ॥ २४ ॥ जलो ॥ धनदेव नाम जंमारीनें, करे दुकुम ते लाख दिनार ॥ आ
 पो इणीपरें सांजली, करी तहत्तिने करे विचार ॥ २५ ॥ जलो ॥ जो
 ला कुमर दानेसरी, नवि लाख विना दिये दान ॥ पण नवि जाणे
 केहवुं, लाख केरूं होशो मान ॥ २६ ॥ जलो ॥ कुमरनें आगें ठग
 करूं, तव जाणे लाख प्रमाण ॥ फिरी थोडाशोक काममां, नवि नां
 खे एहवी आण ॥ २७ ॥ जलो ॥ एम विचारी ठग कखो, तव पूढे
 ए शुं कुमार ॥ ते कहे चित्रकर सुतजणी, देवराव्युं दान ते सार ॥
 ॥ २८ ॥ जलो ॥ कुमर विचारे एहनें, नासे ठे दान अपार ॥ ति
 एं ठग मुज देखावीने, कहे ठे जे दान निवार ॥ २९ ॥ जलो ॥ जा
 ए ठे एम धन तणो, हजुयें हजुयें होये नाश ॥ पण एहनी जूठ मू
 ठता, एकांतें बाह्यनी आशि ॥ ३० ॥ जलो ॥ त्रीजी आठमा खंड
 नी, कही पद्मविजय वर ढाल ॥ वली कुमरनां वयणडां, सुणजो न
 वि रंगरसाल ॥ ३१ ॥ जलो ॥ सर्व गाथा ॥ १०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव साथें जाये नहीं, अग्नि चोर अवनिस; साधारण ए संपदा,
 कहो नवि दीजें कीस ॥ १ ॥ अंते दिये अपकार ए, तिणें देवुं ते त
 थ्य; लाख अलप ए लेखीयें, परनवनुं नहीं पथ्य ॥ २ ॥ आ नवमां
 पण एहनें, दान लाख ए दोय; पोहोचे नहीं पूरुं तिणें. अपर आप

बुं होय ॥ ३ ॥ उबुं न होये अर्थमां, देतां बहु परें दान ; पुण्य वधे
 प्राणी तणुं, एहज गुण असमान ॥ ४ ॥ दान जोग न दाटियें, करी
 यें अनेक प्रकार ; राखि पण रहेगें नहीं, पाप तणे परकार ॥ ५ ॥
 प्रतिबोधीशुं ए पठे, अथवा एह उपाय ; समजावणनो सर्वथा, ठा
 बुं एम ठराय ॥ ६ ॥ ए शुं लाख ते एटला, अल्पज दीसे आम ;
 दोय लाख तिणें दीजीयें, तहत्ति नणे ते ताम ॥ ७ ॥ चित्रमती नू
 पण चित्तें, चित्तमां करे विचार ; अहो उदारता एहनी, अहो बुद्धि
 अवधार ॥ ८ ॥ दोहो सोरठी ॥ प्रणमी कुमरना पाय, धन मोकले
 धारी करी ; जोर आवासें जाय. चित्रमती नूपण चतुर ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ कालनिवेदी वयणथी रे, श्रीगुणचंद कुमार ॥ जाणि मध्यान्हने उ
 ठीआ रे, लाय मळान घरदारि रे ॥ १ ॥ प्राणी पुण्यतणां फल जो
 य, पुण्यथी सवि सुख होय रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ कनककल
 श गंधोदकें रे, मळान प्रमुख अशेष ॥ काम करे चित्त इच्छतो रे, रत्न
 वती सुविशेष रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ एकांतें शय्या रह्यो रे, चित्तवे
 अहो सा नारी ॥ कन्या ठे ए कारणें रे, करवो एहशुं प्यार रे ॥ ३ ॥
 प्रा० ॥ तेहमां दूषण को नहीं रे, इणें अवसरें सहु मित्त ॥ विशा
 लबुद्धि प्रमुख आवीआ रे. मांमद्यो विनोद सुचित्त रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥
 विद्याधर विद्याधरी रे, आलेख्यां अद्भुत ॥ नवनवां आनूपण रच्यां
 रे, देखाडे आकूत रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ अजिनव नेहनें सूचवे रे, दृष्टि
 परस्पर स्नेह ॥ प्रेम आरोह्यो अंगमां रे, दीसे परगट तेह रे ॥ ६ ॥
 प्रा० ॥ चित्रमती नूपण तदा रे, आव्या तेहज ताम ॥ दीतां कुमर
 निरखता रे, खेचरयुग्म अनिराम रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ गुलीयें खरडया
 कर वली रे. देखी प्रणमी तेह ॥ कहे ए शुं महाराजीआ रे, कुमर क
 हे जुठ एह रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ देखी चमक्या चित्तमां रे, सर्वकला सा
 वधान ॥ चित्रमां नाव देखाडवो रे, मुशकल ठे तेह तान रे ॥ ९ ॥
 प्रा० ॥ चित्र शास्त्रमां एम कहे रे, जास न लहीयें चरित्र ॥ वात क

ह्या विण चित्रनो रे, जाणीयें नाव पवित्र रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ तेहज
चित्रकर धुर कह्यो रे, एण समे थयो वियाल ॥ काल निवेदी बोली
यो रे, संध्यासमय संजाल रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ संध्या उपर नेहथी
रे, अस्ताचल रवि जाय ॥ संकेत थानकनी परें रे, सुरगिरि गुंजमां
ठाय रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ कुसुम सुगंध ते विस्तस्यो रे, पूजे रमणी अ
नंग ॥ दीपज्योति परगट थई रे, सांजली तेह सुरंग रे ॥ १३ ॥ प्रा० ॥
गुरुपद नमन समय थयो रे, ऊठया ताम कुमार ॥ जननी जनकनां
चरणनै रे, प्रणम्या विनय प्रकार रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ मावित्रें बहुमा
नीयो रे, गया निजवास जुवन्न ॥ आवी निडा अवसरें रे, रतनवती
शुं मन्न रे ॥ १५ ॥ प्रा० ॥ प्रात समय दीतुं स्वप्नमां रे, दिव्य कुसुमनी
खाल ॥ आपी कोईक एम कहे रे, ल्यो ए अति सुकमाल रे ॥ १६ ॥
प्रा० ॥ तुम मन गमती एह ठे रे, सांजली धरी निज कंठ ॥ तूर प्रजा
तनां वाजिअं रे, जाग्यो धरी उत्कंठ रे ॥ १७ ॥ प्रा० ॥ कालनि
वेदी बोलीयो रे, करतो तिमिर विनाश ॥ चक्रवाक दुःख टालतो रे,
करतो रवि सुप्रकाश रे ॥ १८ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक सुणी हरखिउं रे,
रतनावतीनो लाह ॥ अन्यथा स्वप्न न परिणमे रे, मंगल शब्दसनाह रे
॥ १९ ॥ प्रा० ॥ तुरत मली जोईयें हवे रे, एह निमित्त प्रनाव ॥
गुरुपदवंदन प्रमुख जे रे, आवश्यक करे ताव रे ॥ २० ॥ प्रा० ॥ जन
कादिक प्रणमी करी रे, बेठा जब निज ठाय ॥ आव्या मित्र वलि ए
हवें रे, गोष्टि चतुर्थ गूढ थाय रे ॥ २१ ॥ प्रा० ॥ (विशालबुद्धि बोळ्यो)
॥ यतः “सुरयर रमणस्स रइहरे, एियं बंनमिरं वधुधूयकरगा ॥ तरकण
वत्तविवाहा” ॥ कुमर कहे फरी नांखियें रे, फिरी नांखुं तिणो जाम ॥
ततक्षण पद तिहां पूरीउं रे, रमण निवारे आम रे ॥ २२ ॥ प्रा० ॥
चतुर्थपदं यथा “रमणस्स करं निवारेई ॥ १ ॥” विशालबुद्धि कहे रू
यडुं रे, पूछुं पद तुमें स्वामी ॥ चित्रमती कहे माहरुं रे, पूरो पद
इण ठाम रे ॥ २३ ॥ प्रा० ॥ यतः “नाविय रइसार रसा, समाणिउं
मुक्क बहुलसिक्कारा ॥ न तरइ विवरीयरयं, (कुमर बोळ्या यथा) एियं

વનારા લસાસામા ॥ ૧ ॥ (નૂપણ બોલ્યો) વિઝલમ્મીમઝલિયઢી,
 ઘણવિસ્સંનસ્સ સામિણિ સુચિરં ॥ વિવરીય સૂરય સહિયા, (કુમર
 બોલ્યા) વિસમઈ ઝરમ્મિ રમણસ્સ ॥ ૩ ॥” એમ કરતાં તિહાં આવીઝ
 રે, કહે એણિ પરેં પ્રતિહાર ॥ નૂપ બોલાવે તુમ નણી રે, રહવાડી પ
 રિવાર રે ॥ ૨૪ ॥ પ્રાઠ ॥ અનુક્રમેં કુમર ગયા તિહાં રે, અશ્વ સેલા
 વ્યા જોર ॥ આઘ્યા નિજ આવાસમાં રે, શેષ કલ્પ કરે ઠોર રે ॥ ૨૫
 ॥ પ્રાઠ ॥ એમ વિનોદ કરતાં ચકાં રે, કેડ, દિવસ વહી જાય ॥ એક
 દિન રત્નવતી તણું રે, રૂપ આલેખ કરાય રે ॥ ૨૬ ॥ પ્રાઠ ॥ ચોથી
 આઠમા સ્વંમમાં રે, પદ્મવિજય કહી ઢાલ ॥ સમરાદિત્યના રાસમાં રે,
 સુણતાં મંગલમાલ રે ॥ ૨૭ ॥ પ્રાઠ ॥ સર્વ ગાથા ॥ ૧૩૭ ॥

॥ દોહા ॥

॥ રત્નવતીના રૂપમાં, પરવશ થયો અપાર; ઝત્સુક જોવા અલજયો,
 નયનેં તે નિરધાર ॥ ૧ ॥ હેઠિ લચ્વી ગાહાવલી, ઇંણ અવસર તિહાં
 આય; નૂપણ ચિત્રમતી જલા, ચિત્ર જુવે ચિત્ત લાય ॥ ૨ ॥ વિસ્મય
 લહી વાંચી તદા, ગાહા ગુણજંમાર; ધન્ય કુંઝરી નૃપની ધૂઆ, કરે
 લસ ચાહ કુમાર ॥ ૩ ॥ અચરિજ અથવા નહીં ઇહાં, જે બહુ માનવા
 જોગ; દેવીનેં જઈ દાસિયેં, યુજ મલિઝ સંજોગ ॥ ૪ ॥ બુદ્ધિવંત તવ
 વોલીયો, ચિત્રમતી ચિત્ત લાય; પડઢંદો એ અપૂર્વ ઢે, અહો મુજ અચ
 રિજ થાય ॥ ૫ ॥ દીઠા વિણ એ દાસવી, નૂપણ બોલ્યો જાય; એતા
 દશ ઢે એહમાં, કૂડ નવિ લચ્વીયું કાંચ ॥ ૬ ॥

॥ ઢાલ પાંચમી ॥

॥ મનમોહન મનમોહન પાવન દેહડી જી ॥ એ દેશી ॥

॥ ઇંણે અવસર ઇંણે અવસર પ્રતિહાર આવીયો જી, નૃપ જાંચ્યું નૃપ
 જાંચ્યું તે સુણીયેં કુમાર હો ॥ વિશ્વનૂતિ વિશ્વનૂતિ ગંધર્વ આવીયો
 જી, તુમ દરિસણ તુમ દરિસણનો ધરે પ્યાર હો ॥ ૧ ॥ સ્વામી અ
 રજ સ્વામી અરજ સુણો એક અમતણી જી ॥ એ આંકણી ॥ કહે કુંઝ
 ર કહે કુંઝર તે મોકલો વેગજું જી, તિણેં મૂક્યો તિણેં મૂક્યો આ

व्यो ताम हो ॥ करी मुजरो करी मुजरो नें पासें उपविशो जी, कहे
सुणियें कहे सुणियें वात ते आम हो ॥ १ ॥ स्वा० ॥ नृप नांखे नृप
नांखे इणि परें तुम नणी जी, गंधर्व गंधर्व विचार संदेह हो ॥ पडिउं
पडिउं ते गुणचंड टालशो जी, सुणी हसीआ सुणी हसीआ कुमार ते
रेह हो ॥ २ ॥ स्वा० ॥ सुतनो जुउं सुतनो जुउं राग ते केटलो जी,
विश्वनूति विश्वनूति बोले तव एम हो ॥ गुण आदर गुण आदर
जाणो पण नहीं जी, सुतमात्रें सुतमात्रें नृपनो प्रेम हो ॥ ४ ॥ स्वा० ॥
चित्रमतीनें चित्रमतीनें नूषण दोय कहे जी, खरी वात खरी वात
कही ठे एण हो ॥ कहे कुमर कहे कुमर चालो आणा करूं जी, उ
ठि चाल्या उठि चाल्या विनयें जेण हो ॥ ५ ॥ स्वा० ॥ बिहुं हरख्या
बिहुं हरख्या निजजनवनें गया जी, नवि केहेवुं नवि केहेवुं कुमारनें
कांय हो ॥ विज्ञान विज्ञान कुमारनुं आलेखीनें जी, कहे नूषण कहे नूषण
चालो ठाय हो ॥ ६ ॥ स्वा० ॥ चित्रमती कहे चित्रमती कहे कहीनें
जायतां जी, शुं थाये शुं थाये तव कहे तेह हो ॥ नवि जावा नवि
जावा दिये तुमनें किमे जी, चित्रमई कहे चित्रमई कहे साचुं एह हो
॥ ७ ॥ स्वा० ॥ आलेख्युं आलेख्युं रूप कुमारनुं जी, कुमरें जे कुमरें
लखिउं हाथ हो ॥ अयोध्या अयोध्या मांदिंथी निकट्या जी, लेई
बेहुयें लेई बेहुयें पट्टिका साथ हो ॥ ८ ॥ स्वा० ॥ शंखपुरीयें शंखपु
रीयें पोहोता अनुक्रमें जी, कह्युं धुरथी कह्युं धुरथी कुमारवृत्तांत हो ॥
सुणी राणी सुणी राणी बिहुं रूप देखीनें जी, चित्त हरखी चित्त हर
खी तेह एकांत हो ॥ ९ ॥ स्वा० ॥ दान दीधुं दान दीधुं तास संतो
षनुं जी, रूप जोई रूप जोई करे विचार हो ॥ अहो रूप अहो रूप
अवस्थान केहवुं जी, अहो अतिशय अहो अतिशय देह आकार हो
॥ १० ॥ स्वा० ॥ रत्नवतीना रत्नवतीना रूप हेवल लखी जी, जेह
गाहा जेह गाहा वांची तेह हो ॥ मन चिंते मन चिंते माहरी धूआ
जी, एम ईंठे एम ईंठे चित्तशुं एह हो ॥ ११ ॥ स्वा० ॥ मोकलियुं मो
कलियुं रूप कुमारनुं जी, कुमरीनें कुमरीनें पासें ताम हो ॥ सखी मय

ए सखी मयण मंजुषा तिहां गई जी, चित्रपट्टिका चित्रपट्टिका दाखी
 जाम हो ॥ १३ ॥ स्वा० ॥ कहे कुमरी कहे कुमरी ए शुं ठे कहो जी,
 मोकल्युं तुम मोकल्युं तुम मायें एह हो ॥ कहेवराव्युं कहेवराव्युं ठे
 ए शीखजो जी, कहे कुमरी कहे कुमरी कोहोनो ए लेह हो ॥ १३ ॥
 स्वा० ॥ ते बोली ते बोली कांय जाणुं नहीं जी, ए इंद ए इंद होशे
 एम जाणी हो ॥ सह सनेत्र सहस नेत्र कहे सा तेहनें जी, ते बोली ते
 बोली होशे नाराण हो ॥ १४ ॥ स्वा० ॥ कल्लवरणें कल्लवरणें ते ठे
 तव कहे जी, सखी बोली सखी बोली त्यारें होशे चंद हो ॥ सा नां
 खे सा नांखे कलंक ठे तेहनें जी, सखि नांखे सखि नांखे कंदर्प अ
 मंद हो ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ बोली रयण बोली रयणवती तेह वाली
 यो जी, महादेवें महादेवें कहो केम होय हो ॥ सखी नांखे सखी
 नांखे कहो तुमें आपथी जी, अपूरव अपूरव दरिसण कोय हो ॥ १६ ॥
 स्वा० ॥ कहे रयण कहे रयणवती ए नर अठे जी, चढती वय चढ
 ती वय रूप जंमार हो ॥ निकलंकी निकलंकी सोवन कांति ठे जी,
 नेहालां नेहालां नयण अपार हो ॥ १७ ॥ स्वा० ॥ बोली मयण
 बोली मयण मंजुषा जलूं कल्युं जी, एहमां नहीं एहमां नहीं कांय
 संदेह हो ॥ हुं तो जाणुं हुं तो जाणुं ए तुम वर हुं जी, कोई ए
 हवें कोई एहवें कहे निःसंदेह हो ॥ १८ ॥ स्वा० ॥ हरखी ते हरखी
 ते सांजली शकुननें जी, आलेख्यो आलेख्यो प्रतिबंद तेह हो ॥ कहे
 सखीनें कहे सखी मातनें दाखवो जी, शीखी के शीखी के नहीं कहो
 एह हो ॥ १९ ॥ स्वा० ॥ जई दाख्युं जई दाख्युं तव घणुं हरखती
 जी. निजधूआ निजधूआ धन्यविन्नाण हो ॥ आलेखी आलेखी कुम
 रें जे कुमरी जी, लावी मूकी लावी मूकी तिणें तस गाण हो ॥ २० ॥
 स्वा० ॥ अनुरूप अनुरूप युगल देखी करी जी, मन हरखी मन ह
 रखी राणी कहे एम हो ॥ कहो रतन कहो रतनवतीने ए ठीक ठे
 जी. नित्य करजो नित्य करजो एहशुं प्रेम हो ॥ २१ ॥ स्वा० ॥ तु
 जनें पण तुजनें पण इणि परें कुंअरें जी, आराधी आराधी ठे अनु

रूप हो ॥ चित्रपट्टी चित्रपट्टीका बिदुयें मोकली जी, तिणें पण जइ
तिणें पण जइ कह्युं ते सरूप हो ॥ ११ ॥ स्वा० ॥ सखि बोली सखि बो
ली में जे तुम कह्युं जी, राजकुमार राजकुमार तुमारे जोग्य हो ॥ कला
आगर कलाआगर गुणनिधि देखीयें जी, एह जोगें एह जोगें को न
वि शोग हो ॥ १२ ॥ स्वा० ॥ पडबंदो पडबंदो देखी तुम तणो जी,
जुउ केही जुउ केही रीतें कह्युं रूप हो ॥ जाणुं निश्चय जाणुं निश्चय
मजरो एहयुं जी, पाणीग्रहण पाणीग्रहण जोग अनूप हो ॥ १४ ॥
स्वा० ॥ पांचमी कही पांचमी कही ढाल ए आठमे जी, खंमें रूडी
खंमें रूडी समरादित्य रास हो ॥ गुरु उत्तम गुरु उत्तमविजय कृपा
थकी जी, पद्मविजयें पद्मविजयें हर्ष उल्लास हो ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ १६ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी चिंते किहांथकी, मजबुं एहयुं सुज; मंद जाग्य जे मान
वी, सुरमणि नवि होये सुज ॥ १ ॥ अंबक फुरक्युं इणि समे, वामा
केरूं वाम; तुष्टमान थई ते तदा, कहे सुज सरीयुं काम ॥ २ ॥ मात
हुकमथी मानिनी, करे आवश्यक कर्म; नोजन करी चित्त जावतूं,
हरखें रहेती हर्म ॥ ३ ॥ पडबंदो जई पाणिमां, वदे अहो अंग वि
न्यास; नयन नेह अहो निरखियें, अहो अहो सर्व अन्यास ॥ ४ ॥
एम केई वासर अतिक्रम्या, गुणचंद पण एम ग्यान; करतां दिवस
केता गया, धरत परस्पर ध्यान ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठही ॥ सुरपति सेवित त्रिभुवन धणी ॥ ए देशी ॥

॥ जाणो मैत्रीबल नरवरु, परस्परें वात मनोहरु ॥ मन चिंतवे तव
नूपाल, ए योग्य वात सुरसाल ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ योग्य वात रसाल
जाणी, कुशल नर नृप मूकीआ ॥ रत्नवती पण कुमर केरूं, ध्यान क
बहुं न चूकीआ ॥ २ ॥ राजकन्या उचित करणी, सर्व ठांमी तेणियें ॥
राति दिन उदवेग करती, शून्यता करी जेणीयें ॥ ३ ॥ खाय बगासां अंग
मरडे, आवी तिहां मदनमंजुआ ॥ चिरंजीव तूं स्वामीनी हे, सफल
मनोरथ संजुआ ॥ ४ ॥ जिम कह्युं में तिम नीपनुं ठे, वर तुमारो ए

थगे ॥ कटिसूत्र आपी सांजलीनें, कहे वात ए किम हशें ॥ ५ ॥ कहे
 मयणमंजुआ तुम कनेंथी, गई देवी पास ए ॥ तव चित्रमती नूपण
 बिहुनें, दीठा तास सकाश ए ॥ ६ ॥ मुऊ कहे राणी जाउ कुमरी,
 पास नांखो इणि परें ॥ महाराय मैत्रीबल तनुज जे, कुमर गुणचंद
 गुणसिरें ॥ ७ ॥ दीधी तुनें ठे प्रार्थनाथी, रतनवती कहे ताम ए ॥ केम
 असंबंध एह नांखे, सखी कहे सुणोआम ए ॥ ८ ॥ राणी कहे आ
 राधीउ तिणें, प्रजापति तूठो घणुं ॥ तिणें जोग मिल्यो ए सुणीनें,
 दीये आनरण आपणुं ॥ ९ ॥ परमोद नरथी चिंतवे सा, एहनी घर
 णी थई ॥ एह शब्द सुणी संतापह, आपदा सघली गई ॥ १० ॥ देव
 गुरुनें वंदिआ वली, दान दीये महाराय ए ॥ एम नित्य करणी करत
 केईक, दिवस हरखें जाय ए ॥ ११ ॥ अजोध्या पुरी मोकले हवे,
 विवाह कारण नरपति ॥ एक मासें तेह पोहोती, जाणे अयोध्या नू
 पति ॥ १२ ॥ काराबंधन करे मोचन, नगर शणगारे तथा ॥ पात्र
 नाचे दान देवे, जनमें नवि खूटे यथा ॥ १३ ॥ वांचि पत्र चंदारमांथी,
 काढे आनूपण घणां ॥ घोटक शाला तिम शणगारे, रथध्वजा मंमि
 त तणा ॥ १४ ॥ लग्न शुन जोवराव्युं नलेरुं, देव गुरु प्रणमे वली ॥
 गीत मंगल वाजीत्र सुणतो, वंदिजन बिरुदावली ॥ १५ ॥ एम खंम
 आठमे ढाल ठही, समरादित्यनें रास ए ॥ पद्मविजयें कही रूडी, सु
 एतां लीलविलास ए ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १७० ॥

॥ दोहो सोरठी ॥

॥ करिवर चढ्यो कुमार, सहसनयन परें शोहतो; दीपे तस दीदा
 र, आदित्य अजितव उपनो ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ केसरीया चढो वर घोडे ॥

॥ अथवा ॥ सासनपति वंदन जईयें ॥ ए देशी ॥

॥ उज्ज्वल करिवर बेगो शोहे, लोक तणां चित्तां अति मोहे, चं
 द सूर काम रामके कोहे के ॥ १ ॥ केशरीये वागे वीराजे ॥ वागे विरा
 जेनें खूपशुं ठाजे के ॥ के० ॥ ए आंकणी ॥ मित्र विशालबुद्धि मुख

जेह, चाले पुंठें धरी ससनेह, जानणी मंगल गीत कहेह के ॥ १ ॥
 ॥ के० ॥ नयररामा अनिनंदना करती, चोकें चोकें जोवे संचरती,
 गुणचंदना गुण गावे फिरती तो ॥ २ ॥ के० ॥ आब्या तोरण मंमप
 माहिं, उतरिआ करिवरधी उह्वाहिं, सासु करे पुंखणाविधि त्याहिं
 तो ॥ ४ ॥ के० ॥ दीठी चित्र तणे अनुहार, रत्नवतीनुं रूप अपार,
 अधर बिंबफल सम मनोहार तो ॥ ५ ॥ के० ॥ चक्रवाक युग ज्युं
 कुच राजे, विस्तीरण नीतंबज ठाजे, मुख देखी शशधर पण लाजे तो
 ॥ ६ ॥ के० ॥ करपदतल शोणित सम रातां, सर्व अंग गुण जगवि
 ख्याता, लूठणडां करे लोक विधाता तो ॥ ७ ॥ के० ॥ सर्व अंगें घणुं
 देखण जोग, चित्त वाली जुये मुनिवर लोग, देखतां जाये सघला
 शोग के ॥ ८ ॥ के० ॥ देखी हरख्यो चित्त मजार, पाणी ग्रहण करे
 शुनवार, मंमल नमीआ हर्ष अपार के ॥ ९ ॥ के० ॥ दिनकर आ
 यमीउ शशी ऊगो, लेई वधू वासनवनें पूगो, साथें वधूसखी परिवृत्त
 रूगो के ॥ १० ॥ के० ॥ काल थोडो रही सही सहु जाये, अंग अं
 गें मलि क्रीडा कराये, सुख संसार तणां विलसाय के ॥ ११ ॥ के० ॥
 सुख निडा करतां गई राति, मंगलतूर वाजे परजाति, कमलनी ताम
 विकस्वर थात के ॥ १२ ॥ के० ॥ प्रात आवश्यक कीधां काम, चाल्या
 उद्यान जोवा अनिराम, क्रीडा करी आब्या निज ताम के ॥ १३ ॥
 के० ॥ देवपूजा नोजन विधि सारी, साथें रतनवती निज नारी,
 नोगवे सुख वर दुःख निवारी के ॥ १४ ॥ के० ॥ एम करतां केई दिन
 वही जाय, एक दिन हवे बलमैत्री राय, विग्रह राय निज सेवक
 प्राय के ॥ १५ ॥ के० ॥ आण न माने ते निज स्वामी, सेना मोकली
 ताम उदाम, जित्यो विग्रह करी संग्राम के ॥ १६ ॥ के० ॥ जाणी
 कोप्यो बलमैत्री नूप, स्वयमेव चढवा कीधी चूंप, जाण्युं कुमरें तेह
 स्वरूप के ॥ १७ ॥ के० ॥ सिंह उपर नवि ठाजे शीआल, तेह शी
 आल समो नूपाल, कहे नृपनें एम वयण रसाल के ॥ १८ ॥ के० ॥
 तिणें तुमें तातजी द्यो मुऊ आण, जिम तुम कोप अगनीनें ठाण,

थाय पतंग ते राय अजाण के ॥ १९ ॥ के० ॥ राय दिये तव लशकर
 साथ, कुमर कहे सांजलो नरनाथ, कोनाणो विग्रह सहु साथ के
 ॥ २० ॥ के० ॥ जब लगें जीतूं न एह नरींद, तब लगें तात परानव
 वृंद, केम करूं विषयसंग सुखकंद के ॥ २१ ॥ के० ॥ एम चिंती
 मूकी तिहां नारी, लेई लशकर कीधी असवारी, एक मासैं पोहोतो
 अवधारी के ॥ २२ ॥ के० ॥ आव्यो कुमर विग्रह एम जाणी, गढ
 रूहो करी बेठो ताणी, कुमरें वींटयो जिम दीपनैं पाणी के ॥ २३ ॥
 के० ॥ विण संजलावे ताम कुमार, विग्रह उपरें रोश अपार, एह
 चाकरनो ज्यो ठे नार के ॥ २४ ॥ के० ॥ बलीयो नाथ अठे निज
 पास, तिणे सहु सेना धरीअ उध्वास, मांमयुं जुद्ध अजग्र सरास
 के ॥ २५ ॥ के० ॥ दुर्गबलें ते नवि जींताये, तोहि मानथी अधिक
 नरायें, महा संग्राम करे चित्त लाय के ॥ २६ ॥ के० ॥ जाणी कुमर
 हवे कहेवरावे, मत करो जुद्ध तुमें इण दावे, एहनो यत्न विना
 जय यावे के ॥ २७ ॥ के० ॥ जाणी असाध्य पेटो कोटमाहें, विं
 टयो ठे चोक फेर ए प्राहें, नासरो ए कहो केणें राहें के ॥ २८ ॥
 के० ॥ वाहाला प्राणथकी तमो राय, तेह विनाश सहजमां थाय, ए
 पण नूपनैं सेवक ठाय के ॥ २९ ॥ के० ॥ नीतिमां पहेली साम वखा
 णो, युद्ध करणनो नहीं एह ठाणो, स्वामी सेवक संबंध पीठाणो के
 ॥ ३० ॥ के० ॥ अविनय नाशनो कीधो उपाय, तिणें पराक्रम एह
 गुं नवि थाय, महारा सम तुमने देइ नाय के ॥ ३१ ॥ के० ॥ हवे मत
 करजो एहवुं काम, तेह कहे जिम तुमें कहो स्वामि, तिमहीज करगुं
 प्रभु गिर नामी के ॥ ३२ ॥ के० ॥ आवमे खमें ए सातमी ढाल, पद्मविजय
 कह पुण्यविशाल, सांजलतां होय मंगल माल के ॥ ३३ ॥ के० ॥ स० ॥ २२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विशालबुद्धि नामें वली, इणपरें करे उपाय; राजपुत्रने रीजीगुं,
 वेहेंची दीये वताय ॥ १ ॥ चोकी मूकी चिहुं दिशें, रुंधे आहारनैं नीर;
 केईक दिन एम काडिया, धरतो साहस धीर ॥ २ ॥ इण अवसर तिहां

आवीउं, वाणमंतर वनमांहिं; रहवाडी रमतो कुंमर, देखी उपनो
दाह ॥ ३ ॥ अहो गुरुता एहनी, वीरयवंत विशेष; मुऊ सरिखो पण
मारवा. अवसर न लहे अशेष ॥ ४ ॥ पण दुःख देवा पाधरो, ए अ
वसर ठे आज; एम विचारी आवीयो, विग्रह पासें व्याज ॥ ५ ॥ प्रासा
द तलें वेगो प्रगट, विग्रह करे वखाण; किम आव्या पूढे कहो, वलती
बोले वाणि ॥ ६ ॥ मलय जावा असें मांझीयुं, दीगो विचमां दाव;
गुणचंद वररी मुऊ घणो, तुऊ पण तेह जमाव ॥ ७ ॥ उदय स्वमा
य न एहनो, साहाय्य करूं तुऊ साच; नयणें आज ए निरखीउं,
मनमां तुं हवे माच ॥ ८ ॥

॥ ठाल आवसी ॥ तुमें तो नलें विराजोजी शंखेशर के
वासी साहिब नलें विराजो जी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें तो नलें पधाखा जी, देवांशी कोई दीसो ॥ तुमें तो नलें पधा
खा जी ॥ ए आंकणी ॥ एहवुं जाणो साहायज कीजें, तो करीयें
इम काम ॥ विग्रह कहे मुऊ तिहां जई सूको, गुणचंदनुं जिहां ताम
॥ १ ॥ तु० ॥ रथणीमांहिं करवुं एहवुं, वाणमंतर कहे ताम ॥ एतो
आयत माहरे दीसे, जागो जव दो जाम ॥ २ ॥ तु० ॥ च्यार जणा
युं सज्ज यईनें, विग्रह रहियो जाम ॥ विद्या परनावें पण जणनें, लेई
चाव्यो धरी ताम ॥ ३ ॥ तु० ॥ गुणचंद शय्यापासें सूक्या, दीगो ता
म कुमार ॥ गुणचंदनें बोलावे एहवे, विग्रह धरी अहंकार ॥ ४ ॥
तु० ॥ मुऊ साथें तूं वयर करीनें, केम सूतो सुखमांहिं ॥ करी कर
वाल करें उठीनें, सुणी जाग्यो उहाहिं ॥ ५ ॥ तु० ॥ उठीनें कुंअर
तव बोव्यो, नलो नलो व्यवसाय ॥ खड्डू लीए करमां इणें अवसर,
अंगरकुक तिणें ताय ॥ ६ ॥ तु० ॥ कोलाहल सूणी आव्या तेहनें,
वारे ताम कुमार ॥ मत प्रहार करेजो कोई, माहारा सम इण वार
॥ ७ ॥ तु० ॥ रहेजो साक्षी तुमें इण समयें, हुं करयुं संग्राम ॥ इण
अवसर वाणमंतर खड्डू, दीये प्रहार उदाम ॥ ८ ॥ तु० ॥ मार मार
करतो तिम विग्रह, ऊठयो लेई परिवार ॥ नांख्यां शस्त्र ऊढो ऊढ

तेणें, पण वंचावे कुमार ॥ ए ॥ तु० ॥ पुण्य प्रबलने कलाकुशल
 वली, उत्कट बल परिणाम ॥ सिंह किशोर परें करिवरनें, कीधा
 सहु विणधाम ॥ १० ॥ तु० ॥ उपकारी विग्रहनें जाणी, नवि कीधो
 परिहार ॥ जाली केशने नाख्यो हेतो, दुज ते जय जयकार ॥ ११ ॥
 ॥ तु० ॥ विग्रहना परिवारनें जींते, कुमर तणो परिवार ॥ कोला
 हल उपनो तव नातो, वाणमंतर विण मार ॥ १२ ॥ तु० ॥ वाण
 मंतर चिंते अहो पापी, अहो एहनो महिमाय ॥ गुण करियो पण
 जाणे केहवो, एणी पेरे पण न मराय ॥ १३ ॥ तु० ॥ पण अयो
 ध्या नयरे जाइ, संजलावुं परिवार ॥ गुणचंद तो परलोकें पोहो
 तो, एम पण अगो अपकार ॥ १४ ॥ तु० ॥ एम विचारी चाव्यो
 तिहांथी, इण समे कहे कुमार ॥ उठ उठ महापुरीश करें ले, हर्ष
 धरी हथीआर ॥ १५ ॥ तु० ॥ एम कहिनें सूक्यो कुमरे, पण
 नवि उठयो तेह ॥ कहे सुखथी वली इणिपरें वाणी, सांजलजो
 गुणगेह ॥ १६ ॥ तु० ॥ तुमसाथें हवे मुजनें न घटे, हाथे लेवा
 हथीआर ॥ पूर्वे स्वामी हवणां जींत्यो, बहु तुमचो उपगार ॥ १७ ॥
 ॥ तु० ॥ तुम वश हुं पण तुमें नवि माख्यो, माख्यो माहारो सत्व ॥
 कुंमर कहे तुम सरिखा नरनें, एमज घटे ए तत्व ॥ १८ ॥ तु० ॥
 विग्रह कहे गुं मुज वखाणो, हुं पापी शिरदार ॥ जाणूं नांखे गुं कहो
 होवे. सांजलो एक इणि वार ॥ १९ ॥ तु० ॥ हुकम करो निजनरने
 स्वामी, मारे जिणी परें मुज ॥ मुज कापुरुषनी चेष्टा देखो, घणुं घणुं
 गुं कहुं तुज ॥ २० ॥ तु० ॥ कुंमर कहे कापुरुष ठो रूडा, जस एह
 वा परिणाम ॥ सूता शत्रुने नवि माख्यो, वलिअ जगाडयो आयाम ॥
 ॥ २१ ॥ तु० ॥ असंबंध वोळो नहीं सुखथी, मुजने दीधां प्राण ॥
 तिणें सुखथी पण में तुम सूक्या, तव बोळ्यो ते जाण ॥ २२ ॥ तु० ॥
 करी पत्तायनें सेवक कीजे, बोळ्यो ताम कुमार ॥ तात तणा सेवक
 तुमें तिणें, ज्येष्ठ आता मुज सार ॥ २३ ॥ तु० ॥ एम करतां जो

तुम मन माने, चालो तात सकाश ॥ विग्रह कहे चालो तिहां जइयें,
 बीक नहीं तुम पास ॥ २४ ॥ तु० ॥ वधामणां तिहां विग्रहें कीधां,
 चाव्यो कुंअर साथ ॥ विजयधर्म आचारय इणि समे, पाउ धाव्या मु
 निनाथ ॥ २५ ॥ तु० ॥ तृण मणि लेष्टु कंचन समवड, षटजीवना प्रति
 पाल ॥ कारण विण उपगारी जे गुरु, चौनाणी किरपाल ॥ २६ ॥ तु० ॥
 गुणचंदनें प्रतिबोधनो अवसर, जाणी लान अपार ॥ राज्य तजी मि
 थिला नयरीनो, लीधो संममनार ॥ २७ ॥ तु० ॥ गुणसंजव उद्या
 नें उतखा, लब्धिवंत मुनि साथ ॥ परिजन मुखथी वात सुणीनें, ह
 रख्यो पृथिवीनाथ ॥ २८ ॥ तु० ॥ लेई परिजन विग्रह संघातें,
 वंद्या गुरुना पाय ॥ सायर सम गंजीर रवि परें, तम टाले मुनिराय
 ॥ २९ ॥ तु० ॥ जिनवाणि परें जे निकलंकी, देखी शुन परिणाम ॥
 उपनो सर्व संग त्यागीना, वंदुं पद अनिराम ॥ ३० ॥ तु० ॥ साधुनुं
 दरिसण ते पावन, चिंती प्रणम्या पाय ॥ विग्रह सहित सहु साधु पण,
 धर्म लान देवराय ॥ ३१ ॥ तु० ॥ आठमें खंमें आठमी ढालें, गुरु बेसा
 रे पास ॥ पद्मविजय पनणें इण अवसर, वात सुणो उद्गास ॥ ३२ ॥ २६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर एक आवीयो, विद्याधर वररूप; वंदना करीनें वीनवे,
 सांजलो प्रभुस्वरूप ॥ १ ॥ कनकपुरें दृढप्रन करे, राज्य तिहां गुरुरा
 य; तेहनें आगलें तिणें पुरें, हमणां वात कहाय ॥ २ ॥ मार्ग पा
 म्याथी मांदिनें, आ नव लगे अधिकार; वारु तुमें वखाणीयो, तिहां
 हुं गयो तिवार ॥ ३ ॥ जनमुखथी में जाणीयो, संक्षेपें संबंध; अच
 रिज सांजलवा अठे, पनणो सहु परबंध ॥ ४ ॥ अंतराय अन्यलोकनें,
 न होये जो निरधार; अनुग्रह कीजें अम नणी, कहेता ताम कुमार
 ॥ ५ ॥ अमनें पण अनुग्रह होशे, एह कहे अवदात; ए इच्छा अम
 नें अठे, वलि जिम तुम मन वात ॥ ६ ॥ गुरुजी कहे गुणचंदनें,
 सांजल अई सावधान; विकया निडा वरजजे, कहुं ते सुण देई कान ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ साहेवजी ॥ श्रीविमलाचल जेटियें होजी ॥ ए देशी ॥

॥ कुंअरजी ॥ एह जरतमां जाणीयें होजी, मिथिला नयरी विख्या
त ॥ कुंअरजी ॥ कुं० ॥ विजयधर्म तिहां राजीयो होजी, राज्य करूं
अवदात ॥ कुं० ॥ १ ॥ कुं० ॥ वात शोहामणी सांनलो होजी ॥
ए आंकणी ॥ कुं० ॥ अग्र महीपी माहरे होजी, चंडधर्मा वाहाली
नारी ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ किएहिक अपहरी तेहनें होजी, इबोरियण
मन धारि ॥ कुं० ॥ २ ॥ कुं० ॥ वात ॥ कुं० ॥ मंत्रसाधननें कारणें होजी,
मंत्र सिद्धतां काम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ विजयदेवीयें मुक्त नांखीयो
होजी, सांनली मूर्छा हुं पामि ॥ कुं० ॥ ३ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ शीत
लचंदनें शींचीआ होजी, कीया विंजणे वाय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ चेतना
लही दुःखीयो धणुं होजी, देखी पण नृशकुं कांय ॥ कुं० ॥ ४ ॥ कुं० ॥
कुं० ॥ एम करतां त्रण दिन गया होजी, आव्यो चोथे दिन ॥ कुं० ॥
॥ कुं० ॥ एक जटाधर मानवी होजी, तीव्र तपें परिखिन्न ॥ कुं० ॥
॥ ५ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ नूति लगावी अंगमें होजी, मंत्र सिद्ध कहे आ
य ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ जे कामें तुमें आकुला होजी, नारी हरी में राय
॥ कुं० ॥ ६ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मंत्रसाधननें कारणें होजी, तेहनो एह
वो जीत ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ विण नांखे लेई जायवी होजी, पण शीलें
मुपविन्न ॥ कुं० ॥ ७ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पीडा पण नहीं उपजे होजी,
तिणें सत कर संताप ॥ राजनजी ॥ रा० ॥ मास ठए मजगें सही
होजी, कहीनें अदृश थयो आप ॥ कुं० ॥ ८ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मू
छां लही पूरव परें होजी, चित्त वजे कहुं एस ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ दीर्घ
विग्रह किम सहि शकुं होजी, द्यो प्रतिवचन ते प्रेम ॥ कुं० ॥ ९ ॥
॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मोहवजें जे जे कहा होजी, ते ते करूं आलाप ॥
॥ कुं० ॥ कुं० ॥ राज्य तज्युं कांय नवि गमे होजी, निशि दिन करूं
विजाप ॥ कुं० ॥ १० ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ दण दणमां मूर्छा लहुं हो
जी, दुःख लहुं नरक समान ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पंच मास किमे वही

गया होजी, पंच पत्य उपमान ॥ कुं० ॥ ११ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ एक
 दिन विण कारण गयुं होजी, माहारुं दुःख असराल ॥ कुं० ॥ कुं० ॥
 अंगो अंग आणंद अयो होजी, चित्त प्रसन्न ते काल ॥ कुं० ॥ १२ ॥
 ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ हुं मुण चित्तमां चिंतवुं होजी, कहो गुं कारण हेव
 ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वधामणी आवी तदा होजी, आव्या तिहुंकर देव
 ॥ कुं० ॥ १३ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रोम रोम हरख्यो घणुं होजी, सांज
 ली तेहनी वाणी ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ उठी प्रभु सनमुख गयो होजी, सं
 तोषी देई दाण ॥ कुं० ॥ १४ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वंदना करी नृप वृंद
 गुं होजी, दीधी सहुनें आण ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ हय गय रह सहु स
 ज करो होजी, जिनवर वंदन टाण ॥ कुं० ॥ १५ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥
 वस्त्र नूषण पहेरो सहु होजी, शोना करो सुर जेम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥
 समवसरण रचे देवता होजी, नाखुं कायक तेम ॥ कुं० ॥ १६ ॥
 ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ नयरीषी उत्तर दिशा होजी, नंदन वननो वाय ॥
 ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वायुकुमार जोजन लगें होजी, अपहरे तृण समुदा
 य ॥ कुं० ॥ १७ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मेघकुमार तिहां वरसता होजी,
 सुरजि शीतल नीर ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रतु सुर वरसे फूलनें होजी, पंच व
 रणनां रुचिर ॥ कुं० ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रयण प्राकार वैमाणीआ
 होजी, बीजो कनक प्राकार ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ ज्योतिषी सुर विरचे तिहां
 होजी, हवे त्रीजो गढ सार ॥ कुं० ॥ १९ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रजतनो
 जवनपति करे होजी, हवे व्यंतर करे काम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ प्रत्येकें
 तोरण ठवे होजी, मध्ये अशोक अनिराम ॥ कुं० ॥ २० ॥ कुं० ॥
 कुं० ॥ अमर खेंचाणा लोचगुं होजी, कुसुमजरें नमि माल ॥ कुं० ॥
 कुं० ॥ रयणसिंहासन मांढीआं होजी, पादपीठ सुविशाल ॥ कुं० ॥
 २१ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ त्रण ठत्र वर उजलां होजी, मुक्ताफलनी जाल
 ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ त्रिभुवननाथ ठे साहिबो होजी, विकसित कुंद ज्युं
 जालि ॥ कुं० ॥ २२ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ कनकदंम शोहामणो होजी,
 पवनें नाचतो जेह ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ सिंहचक्र ध्वज मोटको होजी,

गगनलेहन करे तेह ॥ कुं० ॥ १३ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ चामर गगन
 चालतां होजी, उज्ज्वल जिणी परें हंस ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ देवडुंडुजि
 घन गाजती होजी, सद्गुजन करे परशंस ॥ कुं० ॥ १४ ॥ कुं० ॥
 कुं० ॥ रविमंमल परें दीपतुं होजी, धरमचक्रपुर जास ॥ कुं० ॥ कुं० ॥
 नामंमल तेजें तपे होजी, अंतरकृत सवि खास ॥ कुं० ॥ १५ ॥ कुं० ॥
 कुं० ॥ त्रिभुवन नायकनुं रचे होजी, समवसरण एम सार ॥ कुं० ॥
 कुं० ॥ कनक कमल पगलां ठवे होजी, ते पण नव सुविचार ॥ कुं०
 ॥ १६ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ सात कमल पूर्वे रहे होजी, दोय उपरें ठवे
 पाय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पूर्वद्वारें पेशीनें होजी, तीरथ नमे जिनराय
 ॥ कुं० ॥ १७ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ बेठा प्रदक्षिणा देईनें होजी, पूर्व सन्मुख
 नाथ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पादपीठ पग थापीनें होजी, योगमुद्रायें धरी
 हाथ ॥ कुं० ॥ १८ ॥ कुं० ॥ यतः ॥ “संघाचार जाण्ये ॥ सिंहा
 सणे निसन्नो, पाए ठविकण पाय पीठमी ॥ कर धरीय जोग मुद्रो, जिण
 नाहो देसणं कुणई ॥ १ ॥” ॥ कुं० ॥ त्रिहुं दिशें जिन सारिखा
 होजी, प्रतिविंब धरे विख्यात ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ धूपघटी तिहां महमहे
 होजी, आवश्यकें घणी वात ॥ कुं० ॥ १९ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ कुमति मद
 जेहथी गले होजी, जिनवर सम देखाय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ चामर ढाले
 विहुं दिशें होजी, निर्मल तिहां सुरराय ॥ कुं० ॥ २० ॥ कुं० ॥ कुं० ॥
 अग्नि कोणे प्रभुजीयकी होजी, सिंहासन रचे ताम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥
 बेसे ज्येष्ठ गणधर तिहां होजी, गुणगण केरा धाम ॥ कुं० ॥ २१ ॥
 कुं० ॥ कुं० ॥ पेसे पूरव वारणे होजी, सुनि वैमानिक नारी ॥ कुं० ॥
 कुं० ॥ साधवी तिम प्रणमी करी होजी, बेसे अग्निकुणो ठारी ॥ कुं०
 ॥ २२ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ नवणपति वण ज्योतिषी होजी, तेहनी देवी
 जेह ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पेसे दक्षिण वारणे होजी, बेसे नैऋत कोणें
 तेह ॥ कुं० ॥ २३ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ नवणपति वण ज्योतिषी होजी,
 पेसे पश्चिम द्वार ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वाव्यकोणे ते उपविशे होजी, जिननें
 करी नमस्कार ॥ कुं० ॥ २४ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वैमानिक सुर तिम वली

होजी, नरनें नरनी नारी ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पेसी उत्तर बारणें होजी,
 बेसे ईशान कोणे ठारि ॥ कुं० ॥ ३५ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ साप नकुल मृग
 मृगपति होजी, कूकडने मार्जार ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ जातिवैर विसारीने
 होजी, बेसे बीजे प्राकार ॥ कुं० ॥ ३६ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ यान विमान
 नरदेवनां होजी, रहे त्रीजा गढमांहिं ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वधामणी दाय
 क कहे होजी, सांजलो वली उत्साहिं ॥ कुं० ॥ ३७ ॥ कुं० ॥ राज
 नजी ॥ दीठी राणी तिहां कणे होजी, सांजली लह्यो उल्लास ॥
 कुं० ॥ कुं० ॥ आठमे खंमें नवमी कही होजी, ढाल पदमें ए रास ॥
 कुं० ॥ ३८ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सामग्री सहु सज करी, गजवर बेगो गेलि; वाजीत्र बहुपरें वाज
 ते, करतां परें परें केलि ॥ १ ॥ नयरबाहिर जब नीकढ्यो, परिवृत्त
 बहु परिवार; समवसरण शोहामणुं, दीतुं दरिस उदार ॥ २ ॥ उ
 त्तर द्वारें आवियो, पुलकित अई पविष्ठ; जगविख्यात जिनेसरु, द
 रिसण नयणें दिष्ठ ॥ ३ ॥ प्रणमी जिएवर पाउले, स्तवना करे रसा
 ल; सावधान अई सांजले, स्वरपद वर्ण विशाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल स्तुतिनी ॥

॥ लावो लावोनें राज मोंधा मूलां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ नवि तुमें वंदो रे अरिहा देव जिणंदा, गुणगणकंदो रे नमतां जाये
 नवफंदा ॥ ए आंकणी ॥ जय परमेश्वर जगदानंदन, जय जगवद्वन
 नाथ ॥ जय त्रिभुवन एक मंगलरूपी, जय तुं शिवपुर साथ ॥ १ ॥ न० ॥
 जय जोगीसरसेवित पदकज, जय इंदियगजसिंह ॥ जय दुर्जय नि
 र्जित कंदर्पह, जय तुं अकल अवीह ॥ २ ॥ न० ॥ जय नविकमल
 विकाशन दिनकर, जय सुरनरनतपाय ॥ जय मनवंछित पूरण सुरग
 वि, जय तुं अमल अमाय ॥ ३ ॥ न० ॥ जय पारंगत जय निकलं
 की, जय स्यादाद सरूप ॥ जय गुणरहित गुणाकर स्वामी, जय अ
 शरीर अरूप ॥ ४ ॥ न० ॥ जय परिसह फोजें ऐरावण, जय अज

रामर देव ॥ जय नवचयनंजन अविनाशी, जय सुरतरुसम सेव
 ॥ ५ ॥ न० ॥ जय गतराक्षे गतवेदा, जय गतरोगनें शोग ॥ जय गत
 मान मत्तररति अरति, जय गतनोग विजोग ॥ ६ ॥ न० ॥ जय स
 र्वज्ञ तथा सविदंशी, जय तुं चरण अनंत ॥ जय अपुनर्नव जय ज
 य निरुपम, जय जगवंत नदंत ॥ ७ ॥ न० ॥ जय तुं अचल अनंत
 अखंमह, जय अक्षय अविकार ॥ जय निजगुण नोगीनें अयोगी,
 जय तुं मार्गदातार ॥ ८ ॥ न० ॥ जय जगबंधव जय जगरद्वक,
 जय निरीह निःसंग ॥ जय शाश्वत सुख अव्याबाधह, जय निज आ
 तम रंग ॥ ९ ॥ न० ॥ जय पूर्णानंदी परमातम, जय चिद्व्यमृत
 पानि ॥ जय निजगुणकर्ता तह नोक्ता, जय तुज अकह कहानी
 ॥ १० ॥ न० ॥ जय गुणनंत अलप मुज बुद्धि, जय जिनवर किम कहियें ॥
 उत्तमगुण जो पद्मविजय कहे, प्रगटे तो सवि लहीयें ॥ ११ ॥ न० ॥ ३ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जनपति एम जिनराजनी, स्तवना करी सनाह; प्रणमे गणधर सु
 निपति. एम अणगार उहाह ॥ १ ॥ उचित ध्यानकें उपविशे, पृथ्वी
 पति परिवार; दिये प्रभुजी पण देशना, नवचयनंजणहार ॥ २ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ हस्तिनागपुर वर जलो, जिहां पांमुराजा सार रे ॥

॥ प्राणी जिनवाणी सुणो, तुमें ठांमी मोहजंजाल रे ॥ पामी नरनव
 दोहिलो. मत खोवो आलपंपाल रे ॥ १ ॥ मत खोवो आल पंपाल,
 फिरी फिरी दोहिलो जिनधर्म रे ॥ जिनधर्मनो मर्म लही करी, जिण
 परें पामीयें शिवधर्म रे ॥ ए आंकणी ॥ जीव अनादि अनंत ठे, क
 में संजुत परवाह रे ॥ पापथी दुःखीउ धर्मथी, सुखीउ सवि दर्शन रा
 द रे ॥ २ ॥ सुखी ॥ चारित्र अत दोय नेदथी, धर्म परखीजें त्रण
 जेय रे ॥ एक कसनें बीजो ठेदथी, ताप कनक परें परखेय रे ॥ ३ ॥
 ॥ ताप ॥ जिहां सावय निपेध ठे, टाले रागादिक जिहां ध्यान रे ॥
 एह कशोटीयें शुद्ध ठे, जिम कनक कशोटीयें दान रे ॥ ४ ॥ जिम ॥

सूक्ष्म वादर जीवनी, जिहां हिंसानो नहीं त्याग रे ॥ तेह अशुद्ध धर्म
जाणीयें, वली रागादिक नहीं त्याग रे ॥ ५ ॥ वली० ॥ जिहां संयम
अप्रमत्तता, लीये आहारादिक जिहां शुद्ध रे ॥ ठेद शुद्ध ते धर्म ठे, ६
एिपरें नासे स्वयंबुद्ध रे ॥ ६ ॥ इण० ॥ पंच सुमति त्रण गुप्ति जे, सदा
काल पाले सविशुद्ध रे ॥ एहथी विपरीत जे होये, ते ठेदथी धर्म अशुद्ध
रे ॥ ७ ॥ ते ठे० ॥ नोजन परघर जायबुं, वली खड्गादिक धरे जेह रे ॥
तेह धर्म उहेदवो, जुक्ति नवि थापे तेह रे ॥ ८ ॥ जुक्ति० ॥ जीवादिक
स्यादादथी, घटे बंधादिक सदृजाव रे ॥ ते जुगते वली थापबुं, ए
शुद्ध धर्म ठे ताव रे ॥ ९ ॥ एशु० ॥ एह जुक्ति न खमी शके, ते ताप अ
शुद्ध विचार रे ॥ तिणें नित्यानित्य जाणीयें, जीव अस्तिनास्ति प्रकार
रे ॥ १० ॥ जीव० ॥ धर्म अनेक एम जीवना, ठरे सुख दुःख बंध
नैं मोस्क रे ॥ धर्म अनेक न मानीयें, तो उलटा होये दोष रे ॥ ११
॥ तो उ० ॥ अस्तिस्वरूपें जाणीयें, पररूपें नास्तिस्वजाव रे ॥ नहीं
तो विशिष्ट अजावथी, सवि एक रूप होय जाव रे ॥ १२ ॥ सवि० ॥
नित्य एकांतें नांखियें, तो किम दुःखद्वयनैं हेत रे ॥ अनुष्ठान करे
लोक ए, सुख लेहेवानें संकेत रे ॥ १३ ॥ सुख० ॥ कहियें एकांतें अ
नित्य जो, तो नवन अनंतर नाश रे ॥ जीव परिणामी अजावथी,
केहनें सुख दुःखनी आश रे ॥ १४ ॥ केह० ॥ जेदाजेद एम जाणीयें,
तिम एक अनेक विचार रे ॥ स्यादाद रीतें करी, उलखो आतम निर
धार रे ॥ १५ ॥ उल० ॥ मिथ्यात्वादिक बंधना, हेतुयें करी बांधे कर्म
रे ॥ सम्यक्तादिक जावथी, द्वय करी लहे शाश्वत शर्म रे ॥ १६ ॥
द्वय० ॥ जेदाजेद जीवनें तनु, रूपीनैं अरूपी तेम रे ॥ कर्त्ता जोक्ता उ
नय ठे, बंधादिक पण घटे एम रे ॥ १७ ॥ बंधा० ॥ जीव शरीर पण
निन्न ठे, जे कारण इण नव पाप रे ॥ अन्य शरीरें आतमा, परनव
जोगवे संताप रे ॥ १८ ॥ पर० ॥ अन्य करे अन्य जोगवे, ते तो न घ
टे सर्व प्रकार रे ॥ तेणें अजेद कोई रीति ठे, एम जेदाजेद उदार रे
॥ १९ ॥ इम० ॥ बंध अनादि प्रवाहथी, कंचन पहर सम तेह रे ॥

नहिं तो जुहू स्वरूपनै, कर्म बलगे इष्ट न एह रे ॥ २० ॥ कर्म० ॥
 तेहनो अंत पण नव्यने, होये पुत्र पिता परें जाण रे ॥ कूकडी अंग
 परें बली, अनव्यनै नित्य वखाण रे ॥ २१ ॥ अज० ॥ तास विनाश
 उपायनै, सेवी वरीआ सिद्धि अनंत रे ॥ तेह तणो नवि अंत ठे, प्र
 ध्वंस अजाव परें तंत रे ॥ २२ ॥ प्रध्वं० ॥ तेह कारण नवि कीजीयै,
 तेह कर्मविनाश उपाय रे ॥ समकित धुरें अंगीकरो, जिम सवि गुण
 धिरता याय रे ॥ २३ ॥ जिम० ॥ देव गुरुनै धर्मनी, रुचि ते समकित
 कहेवाय रे ॥ बीतराग सर्वज्ञ जे, ते देवपणे ठहराय रे ॥ २४ ॥
 ते दे० ॥ परिग्रह आरंज जिणें तज्या, ते तरण तारण समरह रे ॥ उ
 पगरण धर्मना जेह ठे, ते चारित्ररक्षण अह रे ॥ २५ ॥ ते चा० ॥
 केवलीयें जे नांखियो, ते धर्म कहीजें संत रे ॥ ए समकित व्यवहार
 थी, निश्चय निज आत्मतंत रे ॥ २६ ॥ निश्च० ॥ एम समजी अंगी
 कगे, तुमें सफल करो अवतार रे ॥ देशना सांजली एणी परें, लही
 परपदा हर्ष अपार रे ॥ २७ ॥ लहि० ॥ हाथ जोडी प्रणमी करी, कहे
 प्रभु तुम वचन प्रमाण रे ॥ तुम सम देशक को नहीं, धरे जाये इम
 करती वखाण रे ॥ २८ ॥ धरे० ॥ केईक समकित पामीआ, केई देशवि
 रति लहे सत्व रे ॥ सकल संग ठांमी करी, केई चारित्र लिये लही तत्व
 रे ॥ २९ ॥ केई० ॥ केई नडकनावी थया, कही आठमे खंमैं ढाल रे ॥
 पद्मविजयें दशमी नली, सूर्णो आगल वात रसाल रे ॥ ३० ॥ सू० ॥ ३५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें दीठी नारीनै, समवसरणमां सार; चिंता यह मुज चित्तमां,
 निश्चय ए मुज नारि ॥ १ ॥ केम ए इहां आवी कहो, बली संजाखुं
 वयण; मंत्र सिद्धे नांखुं मनै, राणी देखी रयण ॥ २ ॥ पूबुं जिन
 वरने प्रभु, परजव गुं कखुं पाप; राणी विरहथी रोवतां, सबल थयो
 संताप ॥ ३ ॥ इणि परें धारी आदरे, कुमरजी पूबुं केम; पूर्व कर्म
 विपाक जे, अरिहा नांखे एम ॥ ४ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥ हो पियु पातलीआ, नारी गुणावलि ताम जो ॥

॥ पंजरीयुं कर लीधुं ऊरते लोयणें रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ हो सुण राजनीआ ॥ जंबुद्वीप मजार जो, विंध्याचल इण नामें
परवत शोहतो रे लो ॥ हो सुण ॥ उषधिउं घणी तड जो, जाज्वल्यमान
दीपक परें तिणें मन मोहतो रे लो ॥ १ ॥ हो सुण ॥ चंदन प्रमुख
सुगंध जो, बहु पंखीगण शब्द करे शोहामणारे लो ॥ हो सुण ॥ सिंह
रसेण तुज नाम जो, शबर तणो तुं राय बलमां नहीं मणा रे लो ॥

॥ २ ॥ हो सुण ॥ बहु जीवनो करे घात जो, विषय मूर्छित तूं अति
शय घरणीयुं रहे रे लो ॥ हो सुण ॥ रोज हरिणनें रीठ जो, करे
विजोग जुगलनो मनमां सुख लहे रे लो ॥ ३ ॥ हो सुण ॥ सुख अजि
लाषी तेह जो, वनमां रहे ते बीहता तुजशी थर हरे रे लो ॥ हो सुण ॥
श्रीमती ताहरे नारी जो, गुंजाफल मालानां आनरणां धरे रे लो ॥

॥ ४ ॥ हो सुण ॥ पहेरे वल्कल वस्त्र जो, रूडी रे तरुआनी त्रोटो कान
मां रे लो ॥ हो सुण ॥ तेहनी साथें नित्य जो, गिरिनिकुंजमां सुख
नोगवतो मानमां रे लो ॥ ५ ॥ हो सुण ॥ ग्रीष्म ऋतु तिणि वार जो,
आव्यो रे एक गड मुनिवरनो तिहां कियो रे लो ॥ हो सुण ॥ पंचत्रष्ट
परिखिन्न जो, देखीनें अनुकंपा आवी तुज मननें रे लो ॥ ६ ॥ हो सुण ॥

तुज मनमां थई चिंत जो, विषम गिरि कंतारमां केम इणी परें नमे
रे लो ॥ हो सुण ॥ जई पूठयुं ततकाल जो, मुनि कहे नूला पंथशी
तिणें नमीयें अमें रे लो ॥ ७ ॥ हो सुण ॥ श्रीमती कहे नरतार जो,
एह तपस्वी फल मूलादिक आपीयें रे लो ॥ हो सुण ॥ विंध्यनी अटवी
जीम जो, पार उतारी एह तणां दुःख कापीयें रे लो ॥ ८ ॥ हो सुण ॥ एह

निधान समान जो, कीधी रे तुज जेट विधातायें खरी रे लो ॥ हो सुण ॥
एम सांजली तस वाणि जो, उठयो रे रोमांचित अति हरखें नरी रे
लो ॥ ९ ॥ हो सुण ॥ लाव्यो मूलनें कंद जो, अजुत फल लाव्यो तव
एम मुनिवर नणे रे लो ॥ हो सुण ॥ नवि कल्पे अम एह जो, जिण
वरें कीध निषेध नवी जेउं तिणें रे लो ॥ १० ॥ हो सुण ॥ बोव्यो शबर

नूपाल जो, अम उद्वेग होये तिणें कारण लीजीयें रे लो ॥ हो सु० ॥
 मुनिवर जाणी नाव जो, लानालान विचारी एम वदीजीयें रे लो ॥
 ॥ ११ ॥ हो सु० ॥ लावो फल मूल कंद जो, वरण गंध पलटाणां
 होये जेहनां रे लो ॥ हो सु० ॥ जे बहु कालनां लीध जो, शबरराय ते
 सांनली वयणां तेहनां रे लो ॥ १२ ॥ हो सु० ॥ परिणत फल मूल
 कंद जो, लाव्यो गिरि गुफाथी मुनि पडिलानीआ रे लो ॥ हो सु० ॥
 पंथ चढाव्या ताम जो, नारी सहित शुननावथी धन्य निज मानी
 आ रे लो ॥ १३ ॥ हो सु० ॥ मुनियें पण कह्यो धर्म जो, सांनली कर्म
 विवरथी तुमें अंगीकस्यो रे लो ॥ हो सु० ॥ दीधो तुम नवकार जो,
 शिव सुख कारण ते तुमें नक्तें हवें धस्यो रे लो ॥ १४ ॥ हो सु० ॥
 अतिशय ज्ञानी तेह जो, जाणी रे उपकार कहे वली इणि परें रे लो
 ॥ हो सु० ॥ पद्ममां एक दिन सार जो, सावद्य आरंज वरजीनें इणी
 परें करे रे लो ॥ १५ ॥ हो सु० ॥ एकांतें रहि ताम जो, नवपदनें तुं
 संजारे दृढ मन करी रे लो ॥ हो सु० ॥ तुजनें मारे कोय जो, तो पण
 ते रहेवुं समता शुन आदरी रे लो ॥ १६ ॥ हो सु० ॥ एम पाली जि
 नधर्म जो, पामशो सुरसुख ओडा कालमांहिं तुमें रे लो ॥ हो सु० ॥
 अंगीकार करे दोय जो, साधु वयण ए ठे तिणें निस्तरियां अमें रे लो
 ॥ १७ ॥ हो सु० ॥ मुनियें कीध विहार जो, एह अनियह पाले बिहुं
 जिम मुनि कह्यो रे लो ॥ हो सु० ॥ वर्धमान संवेग जो, एक दिन
 पडिमा पोसह तिहां दंपती ग्रह्यो रे लो ॥ १८ ॥ हो सु० ॥ तिहां
 आव्यो एक सिंह जो, गजकुंजस्थल दारणनें रसीउ घणुं रे लो ॥ हो
 सु० ॥ श्रीमती बीहिनी ताम जो, देखिनें निह उठयो धरी साहस
 पणुं रे लो ॥ १९ ॥ हो सु० ॥ धनुष तीर लिये हाथ जो, कहे मत बि
 हे नारी तूं एक शरें हणुं रे लो ॥ हो सु० ॥ श्रीमती बोले ताम जो,
 एहमां नहो संदेह पराक्रम तुम तणुं रे लो ॥ २० ॥ हो सु० ॥ पण
 गुरुवयण पलाय जो, गुरुयें कह्युं प्राणांत करे कोई वध प्रतें रे लो ॥
 ॥ हो सु० ॥ ते स्वमजो चित्तमांहिं जो, किम गुरुवयण वृथा करीयें

समरण ठते रे लो ॥ ११ ॥ हो सु० ॥ परनव बंधुनूत जो, ते गुरु
वयण रसायण करिनें जाणीये रे लो ॥ हो सु० ॥ नारीने कहे एम
निन्न जो, सत्य कह्युं तें वयण गुरु बहु मानिये रे लो ॥ १२ ॥
॥ हो सु० ॥ तुज मोहें कह्युं एम जो, सूक्युं धनुष्य तीर में गुरु
वयणें रह्यो रे लो ॥ हो सु० ॥ इण अवसर ते सिंह जो, उह्वा
ली लांगुलनें ते सन्मुख थयो रे लो ॥ १३ ॥ हो सु० ॥ तें चिंत्युं
मनमाहिं जो, गुरु आणा परिपालण कशवटि ए खरो रे लो ॥
हो सु० ॥ उपगारी एह सिंह जो, एम चिंतन चुन करता आव्यो डुह
करो रे लो ॥ १४ ॥ हो सु० ॥ दंपती दोय विनाश जो, कीधो रे उपसर्ग ते
तुमें अहिआसीआ रे लो ॥ हो सु० ॥ सोहम देवलोकमाहिं जो, दंपती
उपनां रुद्विंत आवासीआं रे लो ॥ १५ ॥ हो सु० ॥ पव्योपम एक आय
जो, नोगवतां अग्यारमी ढाल शोहामणी रे लो ॥ हो सु० ॥ आठमे खंमें
एह जो, पद्मविजय कहे वात सुणो आगे घणी रे लो ॥ १६ ॥ ३७६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबुद्वीपमां बिहुं जणां, अपर विदेह अनूप; नयर चक्रपुर निर
खियें, जलो कुरुमृगांक नूप ॥ १ ॥ कामिनी बालचंदा कही, तस कू
खें अवतार; समरमृगांक ठवे सुखें, नाम गुरु निरधार ॥ २ ॥ शा
लो नृपनो शोहतो, सुनूपण शिरदार; कुरुमती नारी कूखमां, तुज नारी
अवतार ॥ ३ ॥ अशोक देवी एहवुं, आप्युं नाम थिर आव; कलाग्र
हण करतां बिहुं, यौवन पाम्यां जाव ॥ ४ ॥ तुम विवाह थयो बिहुं
तणो, परण्यां दिन सुपसब्ध; सुख नोगवतां स्वर्गनां, जाणे काल न
जह ॥ ५ ॥ राग घणो स्त्री रमणनें, एम करतां एक दिन; पति
देखे पृथ्वीपति, परसंवेग प्रपन्न ॥ ६ ॥ राज्य देई तुज राजीउं,
देवीशुं लिये दिस्क; राज्य पाजे तुं रंगशुं, सहु अरिनें दिये शीख ॥
॥ ७ ॥ माखा निर्देय मन करी, बलि तीर्थेच विजोग; हवे विपाक
सुण तेहना, सघला कटुक संयोग ॥ ८ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ पहेलीनें वाडें होजी वीर जिनवर कहे ॥ ए देशा ॥

॥ तिणहीज विजयें होजी गंगा नयरीयें, सिरिबल राजा रे राज्य
करे तिहां जी ॥ तेहसुं सहजें होजी विग्रह तुज थयो, सुनट सनू
रारे गया सिरिबल जिहां जी ॥ १ ॥ तो पण तेहसुं होजी संग्राम
मांमीउ, शेष सैन्य पण तिणें मासुं यदा जी ॥ तुज पण माखो
होजी काल करी तिहां, रौड ध्यानथी रे गयो नरगें तदा जी ॥ २ ॥
सत्तर सागर होजी आउखुं ताहरुं, ताहरी राणी रे मरण ते सांनली
जी ॥ मूर्बा पामी होजी चेतना वली जही, करे नियाणुं रे इणि परें
ते वली जी ॥ ३ ॥ जिहां मुज स्वामी होजी होये उपना, तिहां मुज
होजो रे उपजवुं खरुं जी ॥ एम कही पेठी होजी बलती अग्निमां,
क्लिष्ट चित्तथी रे कष्ट सहुं आकरुं जी ॥ ४ ॥ सत्तर सागर होजी
आउखें उपनी, महा दुःख सहेतां रे अनुक्रमें बिहुं जणां जी ॥
तिहांथी निकली होजी पुकरा अर्द्धमां, जरत क्षेत्रमां रे निरधन
जे घणां जी ॥ ५ ॥ ते बिहुं उपनां होजी निन्न निन्न घरें, बिहुं
जण परण्यां रे अनुक्रमें दंपती जी ॥ आजीविकानुं होजी दुःख तुमें
अनुभवो, निह्यायें आच्यां रे एक दिन महा सती जी ॥ ६ ॥ देखी
तेहनें होजी सरधा वाधते, प्रासूक निह्या रे रोमांचित थई जी ॥
आपीनें पूठुं होजी किहां रहो ठो तुमें, तव ते बोली रे मुख्य जे
संजई जी ॥ ७ ॥ वसु शेठ घरने होजी पासें उपाशरे, नयरमां रही
यें रे एम सुणी हरखीयां जी ॥ सांजे लेई होजी फुल तिहां गयां,
सुव्रता गणिणी रे नामें निरखीयां जी ॥ ८ ॥ पुस्तक साहामी होजी
दृष्टि उवी करी, तनु जस नाला रे जमर ते लोयणां जी ॥ सुवयण
फमला होजी शोहे ज्युं कमलिनी, हरखें वंद्यां रे विस्मित दोय ज
णां जी ॥ ९ ॥ अंग अग्यारे होजी जीननें टेरुवे, धर्मलान दीधो
रे कर उंचो करी जी ॥ प्रभुजी वंदो होजी कुसुमबुछी करी, संसार
नागर सुखें जाउ तरी जी ॥ १० ॥ एम सुणी जिनवर होजी वंदि

देहरे, गणिणी समीपें रे आवी उपविशो जी ॥ गणिणी पूठे होजी
 किहां तुम वास ठे, गोचरीयां कहे एहु तो इहां वसे जी ॥ ११ ॥
 धर्में गयां गोचरी होजी एह तणे घरे, श्रद्धावंत घणा ठे सामिनी
 जी ॥ नक्तें आव्या होजी जिनवर वांदवा, गणिणी बोव्यां रे वात
 करी कामनी जी ॥ १२ ॥ धर्म ते जगमां होजी शरण आधार ठे,
 धर्मनें मूकी रे दुःख टाले नहीं जी ॥ इंदुजालसम होजी के सुपना
 समो, चलनें असार रे नरजव ए लही जी ॥ १३ ॥ धर्म करे नहीं
 होजी विषयनो लोलपी, चंदन बाली रे अंगारा करे जी ॥ धर्मथी
 लहीयें होजी शाश्वत सुख घणां, थोडे कालें रे कहुं इम जिनवरें
 जी ॥ १४ ॥ तिणे तुमें आव्यां होजी ते रूडुं कहुं, जिन मुनि दरि
 सण अति पावन कहुं जी ॥ एम तुमें सांजली होजी शुद्ध हृदय
 थकी, मांसने मधुनुं रे पञ्चस्काण तुमें लहुं जी ॥ १५ ॥ उठवा वेला
 होजी गणिणीयें कहुं, नित्य नित्य आवजो रे सुणवा धर्मनें जी ॥
 दुःख सह्य जाशे होजी तुमचा अंगथी, वचन ते मान्युं रे जाणी म
 र्मनें जी ॥ १६ ॥ घरे हवे आव्यां होजी धर्म ते नित्य करो, अनु
 क्रमें तुमनें रे शुद्ध श्रावकपणुं जी ॥ विषय विमुखथी होजी पाली
 धर्मनें, मरी ब्रह्मलोकें रे लहुं सुख सुरतणुं जी ॥ १७ ॥ सात साग
 रनुं होजी जाजेरुं आवखुं, तिहांथी चवीनें रे आव्यां नृपघरें जी ॥
 सबर जनममां होजी कर्म कखां तुमें, दुःख तस नरगें रे सहीयां
 परपरें जी ॥ १८ ॥ मनुजना नवमां होजी दुःख कांय जोगव्यां, उदयें
 आव्युं रे शेष रह्युं तिके जी ॥ एम जाणिनें होजी कर्म न कीजीयें,
 तास उदयथी नर बीहे जिके जी ॥ १९ ॥ लोकनाथनी होजी सांज
 ली वाणीनें, परम संवेगें रे आतम जावीयो जी ॥ कहे जिनवरजी
 होजी धर्म नलो कह्यो, प्रभुजी पसायें रे वैराग आवीयो जी ॥ २० ॥
 दीक्षा लेखुं होजी प्रभुजी पाउले, जगगुरु बोले रे प्रतिबंध मत
 करो जी ॥ लीधी दीक्षा रे जुवन गुरु कनें, एह वृत्तांत रे कह्यो में मा
 हरो जी ॥ २१ ॥ कनकपुरें में होजी ते तुमनें कह्यो, संवेग उपन्यो

रे सांजली वातडी जी ॥ गुणचंद चिंते होजी डुष्ट विपाक ठे, धिग
धिग कहियें रे मोहनी जातडी जी ॥ २१ ॥ आठमे खंमें होजी ढाल ते
वारमी, नांखी एम में रे पद्मविजय कहे जी ॥ समरादित्यनें होजी
रासें शोहामणी, सुणतां मंगलमाल नवि लहे जी ॥ २२ ॥ ४१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणचंद कुमर कहे गुणी, अमने कस्यो उपगार; कहेतां आप कथा
तुमें, प्रगट उताखा पार ॥ १ ॥ धर्म अमें धाखो खरो, पामी तुम प
साय; निथ्या विकल्प सवि मिटया, अमनें व्रत इहाय ॥ २ ॥ पण
गिही धरम पसाय करी, विग्रह कहे तव वाणी; महेर करी तुमें सुज
नें. आपो अनुवृत्त जाणी ॥ ३ ॥ विधियें आवक व्रत लीआं, बंद्या गुरु
बहु मान; गुरु धर्मलाज देई गदे, सुण तूं वात सयान ॥ ४ ॥
आव्या अवसर उलखी, अमें तुज बोधन आज; रत्नपुरीथी राजीआ,
कहे सीधुं अम काज ॥ ५ ॥ पाबुं तिहां जई पोहोंचबुं, मुनिवर तिहां
बहु सुज; वाट जोता होशे वली, तिणें सांजल कहुं तुज ॥ ६ ॥
अयोध्यामां अम तणुं, मलबुं अशे कुमार; दठवत होजे दाखवी,
अनुत हवे अणगार ॥ ७ ॥ लहु साधुगुं संचखा, गगनपंथ गुरुराय,
बंदे कुमर विग्रह बिहुं, अनुक्रमें अटश आय ॥ ८ ॥ हवे अयोध्या
हर्षगुं, चाल्या चतुर विचारी; वाणमंतरनी वाततो, पनणुं हवे प्रकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ हुं वारी रंग ढोलना ॥ ए देशी ॥

॥ तेहज दिवसें तिहां गयो हो राज, वाणमंतर खगजेह रे ॥ उमावे
एदवी वातडी ॥ कुमरना परिजन आगजें हो राज, कूड प्रपंच करे ते
ह रे ॥ १ ॥ उ० ॥ विग्रहरायें मारीयो हो राज, संग्रामें गुणचंद रे ॥
उ० ॥ अरण परंपरा सांजले हो राज, मैत्रीबल जे नरींद रे ॥ २ ॥
उ० ॥ नगपति ते नवि सरदहे हो राज, रत्नवती सुणे जाम रे ॥ उ० ॥
सृष्टा लक्ष्मी धरणी ठजी हो राज, आश्वासे परिजन ताम रे ॥ ३ ॥
उ० ॥ राय सुणी तिहां आवीउ हो राज, नयणें नीर न माय रे ॥
उ० ॥ रत्नवती चरणे नमी हो राज, कहे सुणीयें महाराय रे ॥ ४ ॥

३० ॥ हुं मंद जाग्य शिरोमणि हो राज, पेसूं अग्नि मजार रे ॥ ३० ॥
 आणा द्यो जीवित तजुं हो राज, गयो मुक्त प्राण आधार रे ॥ ५ ॥
 ३० ॥ प्राण निगोर हजी रह्यां हो राज, द्यो आणा मुक्त आज रे ॥
 ३० ॥ सुरलोकें संगम होये हो राज, आर्यपुत्रशुं काज रे ॥ ६ ॥
 ३० ॥ शोहागण सुणि वातडी हो राज, नृप कहे म करो शोक रे ॥
 ३० ॥ संजव नहीं एह वातनो हो राज, माने कोई न लोक रे ॥ ७ ॥
 ३० ॥ सिंहने मारे शिआलीयो हो राज, एह मनाये केम रे ॥ ३० ॥
 सिद्धादेशें जांखिउं हो राज, पुत्रजनम एम नेम रे ॥ ८ ॥ ३० ॥
 वचन अलिक न तेहनुं हो राज, नहिं मुक्त आकुल चित्त रे ॥ ३० ॥
 स्वप्न दीतुं में शोहामणुं हो राज, अविधवा तुक्त दित्त रे ॥ ९ ॥ ३० ॥
 जनमांतर कोई वैरीयें हो राज, कूड कपट कस्युं एह रे ॥ ३० ॥ तिणें
 ए वात न कीजीयें हो राज, जिण वातें जाये गेह रे ॥ १० ॥ ३० ॥
 दैवनी वात अचिंत्य ठे हो राज, वात होशे एह साच रे ॥ ३० ॥
 तो अमें पण किम जीवशुं हो राज, मान तुं साचीवाच रे ॥ ११ ॥
 ३० ॥ पवनगति काशिद प्रतें हो राज, सोकलीयो ठे आज रे ॥ ३० ॥
 पांच दिवसमां आवशे हो राज, पढे जुक्त करेशुं काज रे ॥ १२ ॥
 ३० ॥ तिणें मत था कतावली हो राज, मत करजे संताप रे ॥ ३० ॥
 रत्नवती कहे तातजी हो राज, जिम तुमची होय बाप रे ॥ १३ ॥ ३० ॥
 पण जो तुम आणा होये हो राज, तो देउं नित्य दान रे ॥ ३० ॥
 शांतिकर्म वली तिम करुं हो राज, देवपूजा बहु मान रे ॥ १४ ॥ ३० ॥
 कुशलवात आर्यपुत्रनी हो राज, सांजलीयें त्यां सीम रे ॥ ३० ॥
 माहरुं मन ठे एहवुं हो राज, आहार तणो करुं नीम रे ॥ १५ ॥
 ३० ॥ राय कहे करीयें सुखें हो राज, एहमां कोई न दोष रे ॥ ३० ॥
 रत्नवती हवे तिम करे हो राज, धर्म तणो वर पोष रे ॥ १६ ॥ ३० ॥
 नृपति निज थानक गयो हो राज, सा गई पूजनहेत रे ॥ ३० ॥ १७ ॥
 ए अवसरतिणें निरखीयां हो राज, पूरव पुण्य संकेत रे ॥ १७ ॥ सं
 जमवती साधवी ॥ ए आंकणी ॥ विचार नूमिथी आवतां होराज, नहिं

कोई चित्त विकार रे ॥ सं० ॥ ज्ञानी तपस्वी उपशमी हो राज, सुंदर
 अंग आकार रे ॥ १७ ॥ सं० ॥ जावना जावें परिणम्यां हो राज, सा
 दुणीनें परिवार रे ॥ सं० ॥ श्वेतांबिका नृपनी धूआ हो राज, कोशला
 नृपनी नारी रे ॥ १८ ॥ सं० ॥ चरणसिरियें विग्रह धखुं हो राज, सुसंगता
 जस नाम रे ॥ सं० ॥ देखतां रत्नवती तणो हो राज, नागो शोक उ
 दाम रे ॥ १९ ॥ सं० ॥ मनमां आणंद उपनो हो राज, आतमवीर्य उ
 द्वास रे ॥ सं० ॥ चिंतवें अहो जगवती तणो हो राज, रूपनें विषय
 उदास रे ॥ २० ॥ सं० ॥ अहो कुशलता एहनी हो राज, कृतारथ
 अहो एह रे ॥ सं० ॥ मुऊनें दरिसण ए अयुं हो राज, धन्य अई मुऊ
 देह रे ॥ २१ ॥ सं० ॥ दरिसण मात्रें जेहनां हो राज, पाप पमल
 जाये दूर रे ॥ सं० ॥ साधवी पासें ते गई हो राज, शृनध्यानें संपूर
 रे ॥ २२ ॥ सं० ॥ विनयशी गणिणी वांढियां हो राज, धर्मलान दि
 यो ताम रे ॥ सं० ॥ फरी वंदिनें बोलती हो राज, विनति सुणो ए
 क आम रे ॥ २३ ॥ सं० ॥ दुःखी जन वत्सल ठो तुमें हो राज, की
 जें एक पसाय रे ॥ सं० ॥ मुऊ घर आवो स्वामिनी हो राज, जो
 न विरोध कोई आय रे ॥ २४ ॥ सं० ॥ दुःख उपशम कांयक अयो हो
 राज, तुम दरिसणशी आज रे ॥ सं० ॥ संजलावो मुऊ धर्मेने हो
 राज, जिम होवे मुऊ काज रे ॥ २५ ॥ सं० ॥ धर्मशीला सुण वा
 तडी हो राज, एहमां कांय न विरोध रे ॥ सं० ॥ गुरुणी कहे अमें
 आवणुं हो राज, जेहशी होय तुम बोध रे ॥ २६ ॥ सं० ॥ कोईनें
 अप्रीति न उपजे हो राज, रत्नवती कहे ताम रे ॥ सं० ॥ धर्मी मुऊ
 गुरु जन अठे हो राज, नहिं कोई अप्रीतिताम रे ॥ २७ ॥ सं० ॥
 गणिणी कहे तो आवणुं हो राज, सा कहे कीथ पसाय रे ॥ सं० ॥
 चाव्यां सहु साथें हवे हो राज, रत्नवती घर जाय रे ॥ २८ ॥ सं० ॥
 आवमे खमें ए कही हो राज, तेरमी ढाल रसाल रे ॥ सं० ॥ पद्मविज
 य कहे सांजलो हो राज, सुणतां मंगल माल रे ॥ २९ ॥ सं० ॥ ४५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विनय करी विधिगुं वली, उत्तम आसन आपि; अलवें आगल
उपविशे, सुणवाने संजाप ॥ १ ॥ परिवार पण बेगो पठें, सुणवा धर्म
संकेत; ज्ञानी तव गुरुणी कहे, हवे करवा तस हेत ॥ २ ॥ ए सं
सार असारमां, जनम महा दुःख खाण; जरा वली जीरण करे, मर
ण दुःख असमाण ॥ ३ ॥ मोह विषयनें मान तिम, मत्सर क्रोधनें
माय; लोन साधर लख दुःख दिये, इंद्रिय विषय उजाय ॥ ४ ॥
सुखियो नहिं संसारमां, परमारथथी पेख; मुनिवर मूकी मानिनी,
दक्षपणें तुं देख ॥ ५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥ सुंदर ॥ पापथानक तजो शोलसुं ॥ ए देशी ॥

॥ सुंदर ॥ रोगी जिम वरवैद्यनें, करीय गवेषणा सार हो ॥ सुं० ॥ नि
ज दुःख तास निवेदीनें, करे तेहनो उपचार हो ॥ १ ॥ सुंदर ॥ धर्मथी
सवि सुख संपजे ॥ ए आंकणी ॥ सुं० ॥ वैद्यवचन अंगीकरे, सेवे
किरिया तेह हो ॥ सुं० ॥ कष्ट करे पथ्य सेवतां, आरोग्य अर्थी जेह
हो ॥ २ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ दुःख पण बाह्य गणे नहीं, नवि
मूक्या पण व्याधि हो ॥ सुं० ॥ निज मुख उलखीयुं जिणें, अनुक्रमें
आय अबाध हो ॥ ३ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तिम मुनिवर संसार
मां, जनम जरानें मरण हो ॥ सुं० ॥ व्याधें पीड्या वैद्यनुं, वीतराग
करे शरण हो ॥ ४ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तेहनुं कथन ते आचरे,
लीधा संजम नार हो ॥ सुं० ॥ किरिया कष्ट करे घणुं, सहे उपसर्ग
अपार हो ॥ ५ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ अंतर सम संतोषना, सुख
थी न गणे दुःख हो ॥ सुं० ॥ अंतर आव्याबाधनें, जाणुं निश्चय
सुख हो ॥ ६ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ वीतराग सुखीआ घणुं, नाव
रोग नहीं जास हो ॥ सुं० ॥ मोह तिमिर दूरें गयुं, ज्ञान सूर्य प्रका
श हो ॥ ७ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ त्रूटी नवनी वेलडी, दूकडुं ठे
शिवसुख हो ॥ सुं० ॥ सुखीआ तिणें थोडा होये, बहु दुःखीआ ल
हे दुःख हो ॥ ८ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ पण संसारी जीवनें, सुख

दुःखनो विपर्यास हो ॥ सुं० ॥ अंगना आहारादिकथकी, माने सुख
 विश्वास हो ॥ ए ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तुज दुःख कारण अम क
 हे, तव कही सवली वात हो ॥ सुं० ॥ परमार्थे जिम तुमें कह्युं, तिम
 साचो अवदात हो ॥ १० ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ पण पतिविरह
 साले घणो, गुरुणी बोल्यां ताम हो ॥ सुं० ॥ कुशल अठे वत्स तेह
 नें, धीरज धरि थिर थाव हो, परमाणंदें मिजाव हो ॥ ११ ॥ सुं० ॥
 ॥ ध० ॥ सुं० ॥ सा कहे किम जाणो तुमें, गुरुणी कहे स्वर तुज हो
 ॥ सुं० ॥ शोहागणीनें जोईयें, एहवो ठे ए गुज हो ॥ १२ ॥ सुं० ॥
 ॥ ध० ॥ सुं० ॥ रत्नवती कहे सांनलो, मत करजो तुमें क्रोध हो ॥
 ॥ सुं० ॥ गुरुणी कहे मुनिलोकनें, क्रोधतणो होये रोध हो ॥ १३ ॥
 ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ सा कहे प्रत्यय दाखवो, गुरुणी कहे शुं का
 म हो ॥ सुं० ॥ वीतरागनां वयणडां, न चले सुण अनिराम हो ॥
 ॥ १४ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ स्वरमंजुलमां नांखिउं, तेह कह्युं में ए
 ह हो ॥ सुं० ॥ तिणें नवि थाये ए अन्यथा, वलि प्रत्यय कहुं तेह
 हो ॥ १५ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तुज उतावळें नांखियें, मत कर
 जे मन रीश हो ॥ सुं० ॥ गुज प्रदेजें मस होजें, जाणजे विशवाविश
 हो ॥ १६ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ हवे तुं ताहरुं जाणजे, सा कहे
 साची वाणि हो ॥ सुं० ॥ में आकुलपणें नांखिउं, गणिणी कहे नहीं
 हाणि हो ॥ १७ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ स्नेही होये उतावला, पण
 मुज खमजे एह हो ॥ सुं० ॥ तुज उतावळें जे कह्युं, अणघटतूं में
 जेह हो ॥ १८ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ सा कहे शोक निवारीयो, की
 थो मुज उपगार हो ॥ सुं० ॥ पूढुं तुम एक वातडी, ए कुण कर्म प्र
 कार हो ॥ १९ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ गणिणी कहे ए थोडलो,
 ने अज्ञान विवाग हो ॥ सुं० ॥ पण ए रुझता केटली, सांनल माह
 री वाग हो ॥ २० ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ थोडे कमें में लह्यो, जेह
 विपाक अपार हो ॥ सुं० ॥ सा कहे सावधान अहुं, कीजें मुज उप
 गार हो ॥ २१ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ आठमे खंमें चौदमी, पद्मवि

जय कही ढाल हो ॥ सुं० ॥ गणिणी कहे हवे निज तणुं, सांजलो
चरित्र रसाल हो ॥ २२ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सर्व गाथा ॥ ४८३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयरी कोशलानो धणी, नर सुंदर नरनाह; अद्भुत इणहीज विज
यमां, अंगें धरे उत्साह ॥ १ ॥ आ नव पर्यायें अहुं, धर्मपत्नी तस धार;
एक दिन गयो अवनीपति, रमवा रान मजार ॥ २ ॥ अपहरीउं
अर्थें तदा, मूक्यो अटवी माहिं; मध्याह्नें तिहां मानिनी, ततकृण
दीवी त्याहिं ॥ ३ ॥ तव आदर ते अति करे, आवो अवनीपाल;
वेसो तुमें इण बेसणे, सेवा करूं संजालि ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ बटाउनी देशी ॥

॥ राय कहे तूं कोण ठे रे, कुण ए थानक सार ॥ तव ते कहे जस्कि
णी अहुं, मनोहरा नाम उदार रे, एतो विंध्यनुं रण अवधार रे,
तव नरपति कहे सुण नार रे, तूं एकली किम इण तार रे ॥ १ ॥
बलिहारी शीलवंतनी मेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ जस्किणी कहे अमें
दंपती रे, नंदनवनशी आज ॥ मलयाचल जई आवतां, इण थान
क आव्यां समाज रे, पति कोप्यो विण कोई काज रे, एकाकिणी
कीधी त्याज रे, तव बोळ्यो एम नरराज रे ॥ २ ॥ ब० ॥ बिदुयें काम
हीणुं कछुं रे, तुज मूकी गयो एह ॥ तूं पण सार्थें नवी गई, सुणी
बोली जहणी तेह रे, होये अन्यनुं रागी जेह रे, तिणशुं नहीं का
रज रेह रे, तव नृप कहे गुणगेह रे ॥ ३ ॥ ब० ॥ धर्म सतीनो ए
नहीं रे, बोले जहणी ताम ॥ दोष विना तजे रागीने, तेहनें सतिअ
पणानो श्यो ताम रे, नृप जांखे तव अनिराम रे, कुण दोष विना
तजे आम रे, सा कहे मूरखनां काम रे ॥ ४ ॥ ब० ॥ एम कही
नाखे कटाकुनें रे, उवेखे तेह राय ॥ लाज मूकी मोहें कहे, निज
बोळ्युं एम न पलाय रे, अनुरागीनें कोण तजे नाय रे, अनुरागी
तजो मुज कांय रे, नृप कहे परस्त्री तूं थाय रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ पुरुषने
सधली पर अठे रे, निजघर न जणी को होय ॥ राय कहे एम मत कहो,

जे विरोधी परलोय रे, कहे नारी अलिक वच तोय रे, परलोक वि
 रुद्ध ए जोय रे, कह्युं अनुरागी तजे कोय रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ राय कहे
 रागिणी कीसी रे, दुर्गति मोकले एम ॥ दोष नरी ते कारणें, परलो
 क अपेक्षा न केम रे, तव बोली देखाडती प्रेम रे, मुऊ वचन करे
 जो नेम रे, नहिं तो तुजनें नहिं खेम रे ॥ ७ ॥ ब० ॥ राय कहे अ
 में नवी गणुं रे, रंभा केरो नार ॥ कोप चढयो अई सामुंही, नृपतियें
 हकारी तिवार रे, तव अदृश्य अई ते नार रे, चाढ्यो निजनयर वि
 चार रे, हवे जो जो मार्ग मजार रे ॥ ८ ॥ ब० ॥ कंचनपादप मा
 रवा रे, नाख्यो पडियो दूर ॥ नृप जूवे उपरी जिशे, तव दीठी जह
 णी क्रूर रे, नाखे सा क्रोधनें पूर रे, नृकुटि करी गगनें जूर रे,
 हुं नाखीश तुजनें चूर रे ॥ ९ ॥ ब० ॥ बूटिश तूं वार केटली रे, तव
 बोढ्यो राजान ॥ रे पापिणि गोचर नहीं, नहीं तो तुज फेडुं थान
 रे, घंटी जिम चूरे धान रे, इम जहणी सांनली कान रे, दिव्य
 जोगें अदृश्य पहिचान रे ॥ १० ॥ ब० ॥ सैन्य मढ्युं निजरायनुं रे,
 हरख्यां सघलां लोक ॥ करे वधामणां सहु जना, जेटणां जावे थोकें
 थोक रे, नृप सावधान गतशोक रे, नवि विश्वसे चित्त ए टोक रे,
 रखे आवे गलामां तोक रे ॥ ११ ॥ ब० ॥ साधवी कहे में पूढियुं रे,
 किम न धरो विश्वास ॥ राय कहे ए सहजथी, तव पूढियुं फरी नृप
 पास रे, मुऊ प्रजले चित्त वेखास रे, अति आग्रहें पूढियुं तास रे,
 तव सर्व कह्युं सुखकास रे ॥ १२ ॥ ब० ॥ वात मनोहरानी कही रे,
 में नाख्युं सुणो स्वामि ॥ किम ए देपिणी तुम तणी, कहे राय हुं फे
 डुं ठाम रे, जो मुऊ कर आवे ए वाम रे, एक दिन वली नृप अनि
 गम रे, वासनवनमांहिं गयो जाम रे ॥ १३ ॥ ब० ॥ तव हुं वा
 सनुवन गई रे, दीढो तिहां में राय ॥ मुऊ सम रूपें नारीशुं, दीढो
 मुऊ मन शंकाय रे, उतरवा सांमुं पाय रे, नृपनें थयो ताम कषा
 य रे, पापिणी माया करी आय रे ॥ १४ ॥ ब० ॥ रे देवी ए पा
 पिणी रे, केहवी आवी आज ॥ एम कही दोडयो पूंठथी, केश पकडे

ते नरराज रे, मैं कह्युं शुं करो ए काज रे, तव बोलावे ते स्त्री पा
ज रे, आवी जो तुम समवेश व्याज रे ॥ १५ ॥ ब० ॥ मायास्त्री
कहे रायनें रे, ए दरिसण नहीं लाग ॥ पापिणी काढी सूकीयें रे, सु
णी पनणे नरपति वाग रे, चोकीआत तेडो मुऊ पाग रे, आव्या
तव सोंपी अजाग रे, एहनो करो रणमां ताग रे ॥ १६ ॥ ब० ॥
करजो कदर्यना बहुपरें रे, कीधी आणा प्रमाण ॥ पूर्व वयरीनी परें,
पापिणी पापिणी कहे वाणी रे, केई पकडे केशने पाणी रे, केई ता
णे वस्त्र अन्नाण रे, केई ताणे हाथ पिठान रे ॥ १७ ॥ ब० ॥ न
यर बाहिर लावी करी रे, कीधी कदर्यना फेर ॥ सूकी रणमां एकली,
इंणी परें जांखे यई नेर रे, फरी पकडीश जो ए सेर रे, तो हणछुं
ए समशेर रे, वलिआ एम कही तिणी वेर रे ॥ १८ ॥ ब० ॥ मैं मन
मां एम चिंतव्युं रे, अहो ए पापविकार ॥ विण अपराधें एवडां, प्रा
णी लहे दुःख अपार रे, पूरवकृत कर्मविचार रे, हवे जीवुं केही
प्रकार रे, मरवुं निश्चय ए धारि रे ॥ १९ ॥ ब० ॥ ऊंषा पर्वतथी
करुं रे, इस निश्चय करी ठीक ॥ पोहोती पर्वतें क्लेशथी, चढवा मांछुं
तहकीक रे, मुनिवर देखे गतजीक रे, दरिमां रह्या तेह नजीक रे,
कलपातें न बोले अलीक रे ॥ २० ॥ ब० ॥ नाम सुगृहित सूरि अठे
रे, साथें बहु परिवार ॥ संसाररणसार्थप समो, चिंतामणिसम हि
तकार रे, तपतेजें जिम दिनकार रे, गुणरण तणो चंमार रे,
दुःखीआनें ते आधार रे ॥ २१ ॥ ब० ॥ देखतां दिव्य ज्ञानी मुनि रे,
नाठो सर्व क्लेश ॥ वंद्या विनयें मुनिवरु, धर्मजाज दियो सुविशेष
रे, कहे वत्स सांजल उपदेश रे, मनमां मत कर संक्लेश रे, तुं
शीलवंती गुनवेश रे ॥ २२ ॥ ब० ॥ आठमे स्वर्में ए कही रे, वर प
न्नरमी ढाल ॥ समरादित्यना रासमां, गुरु उत्तमविजयनो बाल रे,
हवे गुरुजी वयण रसाल रे, कहेगें सवि जीवदयाल रे, जेहथी हो
शे मंगलमाल रे ॥ २३ ॥ ब० ॥ सर्व गाथा ॥ ७१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुं संसारमां सार ठे, आपद जाजन एह; मोहे मुंऊया मानवी, त
त्व न जाणे तेह ॥ १ ॥ श्रवणें जिनवच नवि सुणे, अहितें बांधे आ
प; तीव्र कर्म ते वेदतां, सूधो होय संताप ॥ २ ॥ वीतराग वयणां
विना, होये इणि परें हाणि; में कछुं तहति महा मुनि, वलि कहे
एक वखाण ॥ ३ ॥ पाप कछुं किछुं पूरवें, पामी ईश्या प्रकार; कहे
गुरु सांजल ते कथा, कहुं शेष सुप्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ चांदलीआनी देशी ॥

॥ इण जरतें उत्तरदेशें. ब्रह्मपुर नगरें सुविशेषें, ब्रह्मसेन नृपति शुज
वेशें रे ॥ १ ॥ शीलवंती ॥ तस विडुर विप्र इणे नाम, नृपनैं विश्वा
सनुं ठाम, पुरंदरा तेहनी वाम रे ॥ २ ॥ शी० ॥ चंडजशा तेहनी
पुत्ति, इहांथी नवमे जवें हुति, मावित्र जाणे अम नूती रे ॥ ३ ॥
॥ शी० ॥ जिनवयण जावित माय ताय, तुऊ वात ते हितनी कहा
य, तुऊनैं परिणमन न आय रे ॥ ४ ॥ शी० ॥ जववासना जेह
अणाई, बालनाव वली दुःखदाई, जशोदाम वसे शेताई रे ॥ ५ ॥
॥ शी० ॥ बंधुसुंदरी तेहनी नारी, तेहछुं तुऊ प्रीति अपार, तेहनें
वालो संसार रे ॥ ६ ॥ शी० ॥ अति संक्लेशी परिणाम, वलि गिरधर
जोगनैं काम, परजवनुं न जाणे नाम रे ॥ ७ ॥ शी० ॥ तुऊ मावी
त्रें घणुं वारी, ए पापिणी दुर्गति वारी, एहनी संगति नहिं तुम सा
री रे ॥ ८ ॥ शी० ॥ ते वचन न मान्युं तास, एक दिन वली गई तस
पास, बंधुसुंदरी दीठी निराश रे ॥ ९ ॥ शी० ॥ पूढ्युं तें किम तुं
एम, सा कहे पतिनो नहीं प्रेम, एहनें मदिरावतीछुं वेहेम रे ॥
॥ १० ॥ शी० ॥ माहरे नहीं हजीअ संतान, शुं जाणे यशे शुं ता
न, ते सांजली जांख्युं कान रे ॥ ११ ॥ शी० ॥ नवि करीयें एम
विषाद, उद्यम करीयें अविवाद, तव ते कहे जीणे नाद रे ॥ १२ ॥
॥ शी० ॥ नवि जाणुं कांय उपाय, परिव्राजिका एक इणे ठाय, उ
त्पन्ना नामें सुणाय रे ॥ १३ ॥ शी० ॥ ए वातमां कुशल वखाणी, पुर

बाहिर पूरव ठाणी, तेहनैं लावो तुमें आणी रे ॥ १४ ॥ शी० ॥
तुं तुरत गई तस गेह, बंधुसुंदरी तेडे नेह, परिव्राजिका आवी ते
ह रे ॥ १५ ॥ शी० ॥ तूं तो सोंपी गई निज घेर, पूजी कहे सा इणी
पेर, करो जगवती मुज पर महेर रे ॥ १६ ॥ शी० ॥ संजलाव्युं
निज वृत्तांत, परिव्राजिका कहे एकांत, तूं धीरज धस्य मन शांत रे
॥ १७ ॥ शी० ॥ मदिरावती उपरें खेद, आये तिम करशुं जेद,
निश्चय करीनैं तूं वेद रे ॥ १८ ॥ शी० ॥ सा कहे कीधो उपगार, ग
ई परिव्राजिका आगार, करे बिहुनैं विजोग प्रकार रे ॥ १९ ॥ शी० ॥
केई उषधि शक्ति अचिंत, वलि कर्म विचित्रताचंति, अयुं कारज
निश्चयतंत रे ॥ २० ॥ शी० ॥ मदिरावती ठांमी शेठें, शोकें ग्रहि ते
जुवे हेठें, तुज कर्म बंधाणुं ते नेठें रे ॥ २१ ॥ शी० ॥ आयुखुं ते अ
नुक्रमें पाली, अई हाथिणी तुं मत वाली, यूथाधिपनैं नहीं वाहाली रे
॥ २२ ॥ शी० ॥ लहि मरणनैं वानरी आय, यूथाधिपनैं न सुहाय, कखां
कर्म ते कहो किहां जाय रे ॥ २३ ॥ शी० ॥ जूथाधिपें दूरें कीधी, जर
ठाकूरें पकडी लीधी, सांकल बांधी दुःखें दीधी रे ॥ २४ ॥ शी० ॥ तिहां
मरीने कुतरी जाई, सवि श्वानने पण न सुहाई, ऋतुकालें पण दुजगा
ई रे ॥ २५ ॥ शी० ॥ दूत बहुलनैं विणगी देह, पडिआ कीडा अ
तिरेह, बहु क्लेश जोगवती जेह रे ॥ २६ ॥ शी० ॥ तिहांथी मरी अ
ई मार्जारी, कोई मार्जारनैं नहीं प्यारी, घर अनलें बली तिण वारी
रे ॥ २७ ॥ शी० ॥ मरी चक्रवाकी अई जाम, नरतार विहूणी ताम,
महा दुःखिणी अई अविराम रे ॥ २८ ॥ शी० ॥ तिहांथी चंमालिणी
हुई, पति अलखामणी रहे जुई, अनुक्रमें तिहांथी मुई रे ॥ २९ ॥
॥ शी० ॥ हवे नीलडीनो नव आयो, कोई सबरनैं संग न सुहायो,
संक्लेशें जे कर्म बंधायो रे ॥ ३० ॥ शी० ॥ पालिमांथी काढी मूकी,
कोई न जुवे साहामुं थूकी, हवे कर्मथी ते अई टूकी रे ॥ ३१ ॥
॥ शी० ॥ जमती तिहां विषम प्रदेश, सहेती बहुला संक्लेश, दीठा सु

निवर गुन लेश रे ॥ ३२ ॥ शी० ॥ आठमे खंमें ए ढाल, गुरु उत्तम
विजयनो बाल, शोलमी कहे रंगरसाल रे ॥ ३३ ॥ शी० ॥ ५४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मारगमां याका मुनि, जूला पंथ नयाल; ते मुनियें दीठी तुने. क
रुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ मोद थयो ताहरे मनें, पूढे मुनिवर पंथ;
कुण ए थानक ते कहो, थलीक न एहमां थंथ ॥ २ ॥ सजकंतार ए
साधुजी, पठिम दिश तुम पंथ; अथवा देखाहुं थमें, एहमां थलीक
न थंथ ॥ ३ ॥ मार्ग देखाडे मानिनी, चिंते विस्मित चित्त; अहो थण
गार थमत्सरी, प्रियचापी सुपवित्त ॥ ४ ॥ संग करे एह साधुनो, तेहनो
धन्य अवतार; गुन परिणामें एम सयल, कर्म खप्प्यां एक तार ॥ ५ ॥
धर्मजाच सुणी धर्मिणी, प्रणमी मुनिवर पाय; आरंज परिग्रह तस थ
लप, मार्दव बली थमाय ॥ ६ ॥ ते कारण बांध्युं तिहां, मनुज आथु
महानाग; विहार कखो तिहां मुनिवरें, मुनिवर एहज माग ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ आज आणंद थयो, प्रेमनां वादल वरण्यां दाहाडा सोहेला ॥ ए देशी ॥
॥ आज आनंद थयो, मुनिवर दरिसण दीतुं धन्य दिन आजनो ॥ ए
आंकणी ॥ मुनिवर विचखा पण नारीतणो, गुनजाव न टूटो जेह घ
णो ॥ आ० ॥ श्वेतांविका नयरी रायतणे, लही मरणें अपनी पुत्री
पणे ॥ १ ॥ आ० ॥ कोशला नयरी जूपें परणी, चौवन वय आवी
तस करणी ॥ आ० ॥ ते कर्म रथुं जे तुज शेष, जहणी तस कार
ण सुविशेष ॥ २ ॥ आ० ॥ तुज रूपें करीनें नृप बलीउं, तुज कर्म
शेष जे रह्यो बलीउं ॥ आ० ॥ तस उदयें कदर्थना बहु पामी, परि
ब्राजिका लाव्याथी स्वामी ॥ ३ ॥ आ० ॥ इम सांजली मोहतिमिर
गयो, तव जातिसमरण मुज थयो ॥ आ० ॥ संवेगथी गुरु प्रणमी
कहुं, कव एह कर्मज अंत लहुं ॥ ४ ॥ आ० ॥ गुरु कहे ए एकज
अहोराते, तव पूठ्युं में बलि सुख शातें ॥ आ० ॥ नृप जहणी कहो
जाणजे क्यारें, बलव गुरुजी बोल्या त्यारें ॥ ५ ॥ आ० ॥ रातें जव

जहणी पासैं, नरपति जाशे अति उल्लासैं ॥ आ० ॥ पण तुज स्वना
वथी फेर फार, देखी संकासे सुविचार ॥ ६ ॥ आ० ॥ मंत्रीश्वरनें ते
कहे वात, तव परीक्षा करवा अवदात ॥ आ० ॥ उलंधी जिन प्रति
मा जाम, जहणीनुं कपट लह्युं ताम ॥ ७ ॥ आ० ॥ मार मार करे
लेई करवाल, अदृश्य जहणी अई ततकाल ॥ आ० ॥ पढे नृप करशे
पश्चात्ताप, अहो राणी कदर्या में आप ॥ ८ ॥ आ० ॥ में कह्युं नग
वन् नहीं नृप दोष, ए कर्म कखां तेहनो रोष ॥ आ० ॥ गुरु कहे
साचूं पण मोहवशें, आवशे इहां विहाणुं वाय तिसैं ॥ ९ ॥ आ० ॥
तुज देखी तुजहुं सुखी होशे, ते पण सहुये नयणें जोशे ॥ आ० ॥
तिणें मत करजे मन संताप, में कह्युं प्रभु गयां माहारां पाप ॥ १० ॥
आ० ॥ तुम दरिसणथी नवजय टलीयो, संयोग वियोगथकी मली
यो ॥ आ० ॥ नृप आवे पण मुज नहीं रंग, जरा मरण पीडित किम
सुखसंग ॥ ११ ॥ आ० ॥ गुरु कहे अत्यंत सुखी कहियें, नवि लोक
नीतिनुं ए लहियें ॥ आ० ॥ जरामरण दोष जेहथी जाशे, वीतराग
वचन तुम थिर आशे ॥ १२ ॥ आ० ॥ तिणें तत्वथी लहेशो सुख
शात, एम कही रह्या जब गुरु विख्यात ॥ आ० ॥ में जाण्युं धन्य न
रपति एह, गुरु कहे सांजल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ आ० ॥ पंच परमे
ष्ठिनो नवकार, ते परम मंत्र चित्तमां धार ॥ आ० ॥ सवि नव टाले
शिवसुख आपे, गुणगण आवी अंगें व्यापे ॥ १४ ॥ आ० ॥ तव में
कह्युं किरपा करो सारी, हुं जाउं तुमची बलिहारी ॥ आ० ॥ पूरव सा
हामी मुज वाम दिशे, गुरु कहे तुं रहे शोजन वेशें ॥ १५ ॥ आ० ॥
हुं विनयें नमती एमज रही, जिनवर संजारे गुरुजी सही ॥ आ० ॥
अखलितादिक गुणहुं दीधो, उपयोगें में अंगी कीधो ॥ १६ ॥ आ० ॥
मुज नय जाणुं सवि दूर गयो, मानुं मोह ते मुज सनमुख थयो ॥
आ० ॥ राति काढजे ए समरण करतां, गिरिदरीमां एक पासैं रहेतां ॥
॥ १७ ॥ आ० ॥ मत धरजे नय मनमां कांय, हवे अम दरिसण वि
हाणे थाय ॥ आ० ॥ एम कही गुरु पोहोता निज गाम, हुं हरखी उ

पनो विश्राम ॥ १८ ॥ आ० ॥ रयणी गई एक पलक परें, नृप खोल
 तो आव्यो परपरें ॥ आ० ॥ कहे कोप न करशो रे राणी, अपराध करे
 शो न अन्नाणी ॥ १९ ॥ आ० ॥ में कह्युं तव कोप समय नाहिं, पू
 र्वकृत शेष करम आहिं ॥ आ० ॥ नृप कहे हुं निमित्त थयो ताहा
 रो, में जांख्यो कर्मविपाक माहारो ॥ २० ॥ आ० ॥ बहु नव नोग
 वीजं बहु रीत, तिहां तो तुमें नाहीं निमित्त ॥ आ० ॥ तिणें सर्वथा
 मुक्त कर्मनो दोष, इहां करवो नहीं कोईशुं रोष ॥ २१ ॥ आ० ॥ नृप
 कहे सामान्यें हुं जाणुं, तुज नाण विशेष हुं परमाणुं ॥ आ० ॥ तव
 धुरथी कही में सवि वात, नृप विस्मय पाम्यो सुविख्यात ॥ २२ ॥
 आ० ॥ गुरुजी किहां ठे ते देखावो, में कह्युं पासें ठे तुमें आवो ॥ आ० ॥
 गयो परिजन सहित तिहां राय, हरखी वंद्या गुरुना पाय ॥ २३ ॥
 आ० ॥ गुरुयें पण धर्मलान दीधो, गुरु आगें सवि अवदात कीधो
 ॥ आ० ॥ अहो दुःकृत ओहुं विपाक घणो, तो मुक्त शी गति आशे ते
 नणो ॥ २४ ॥ आ० ॥ तिणें जे मुक्त करवुं तेह कहो, गुरु कहे तुमें
 सावद्य सर्व जहो ॥ आ० ॥ करो अतीत कालनुं पडिक्कमणुं, वलि वर्त
 माननुं संवरणुं ॥ २५ ॥ आ० ॥ धरो अनागत कालनुं पञ्चस्काण,
 एम टलशे कर्मनुं वंधाण ॥ आ० ॥ एम शिवसुख आशे करतलें, नृप
 नांखे अनुग्रह कखो जलें ॥ २६ ॥ आ० ॥ एम करियें गुरुजी तुम
 आणि, मुज्जनें कहे सांजलो गुरु वाणि ॥ आ० ॥ गुरु धर्मसारथी
 सम नही मजे, एहथी नव नव पातक टले ॥ २७ ॥ आ० ॥ में कह्युं
 जुगतुं तव नरराय, महादान दीननें देवराय ॥ आ० ॥ वलि तिहां अ
 षाड् महोत्सव आय, सुरसुंदरसुत राज्यें ठाय ॥ २८ ॥ आ० ॥ अमात्य
 साथें बहु सामंत, मुज्जुं सहु अंतेउर वंत ॥ आ० ॥ व्रत लीधां
 अमें गुरुजी पासें, विधियें वर्धमान ते जुन आशें ॥ २९ ॥ आ० ॥
 एम आठमे खंमें सुविशाल, कही रूडी सत्तरमी ढाल ॥ आ० ॥ ए स
 मरादित्य तणे रासैं, वर पद्मविजयजुन अन्यासैं ॥ ३० ॥ आ० ॥ ५८४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एणि परें गुरुणी आखवे, कर्मविपाक ए मुऊ ; तिणें थोडुं कर्म तें क
खुं, तस विपाक ए तुऊ ॥ १ ॥ नोगवे बहु नयकारीउ, नरक तिरी
मां नेम ; रत्नवती सुण रंगशुं, कर्म कखां जाये केम ॥ २ ॥ दुःकृत
निजनो दोष ए, जाणी न तपीयें तेण ; सम्यग् देशविरति श्राविका,
साधवी वच श्रवणेण ॥ ३ ॥ तुमो धन्य जिणें घर तज्युं, दुःख दा
लिइ कखां दूर ; हुं पण धन्य थई हवे, पामी दरिसण पूर ॥ ४ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥

॥ कहान आवोजी उंरा रे, कहुं एक वातडली ॥ ए देशी ॥

॥ गुरुणीजी माहारा रे, स्वरनी वातडली ॥ तुमें नांखो केहवी रे, शी ठे
जातडली ॥ परमाणंद जोगें रे, के नरता तुऊ मले ॥ एम नांख्युंतुं मुऊ
नें रे, के संदेह केम टले ॥ १ ॥ गु० ॥ शुं पाम्या ते पण रे, के जिनव
र धर्मप्रतें ॥ गुरुणी कहे जाणुं रे, के एहवुं सांप्रतें ॥ इण अवसर हा
थी रे, के गुजगुज शब्द करे ॥ संध्या मंगलनां रे, के तूर वाज्यां सुपरें ॥
॥ २ ॥ गु० ॥ बंदीजन बोल्या रे, के धर्मथी शुं न होयें ॥ नंदा चंद्रारि
णी रे, के लावी कटक दोये ॥ उज्ज्वल फूज लाव्यो रे, के पुरोहित एम
कहे ॥ गुरुवंदन अवसर रे, के सुणी चित्त गहगहे ॥ ३ ॥ गु० ॥ सहु
शकुन ते रूडां रे, के देखीनें चिंतवे ॥ लह्यां जिनवर वयणां रे, के स्वामी
एम संजवे ॥ श्रुतदेवी सरीखां रे, के नगवतीयें कहुं ॥ परमाणंद योगें रे,
के ते पण सईहुं ॥ ४ ॥ गु० ॥ करि विनयनें नांखे रे, के राति इहां
रहो ॥ गुरुणी कहे कल्पे रे, के पण ए वात लहो ॥ आजय ठे पासें रे,
के तिणें अमें जाशुं तिहां ॥ फरी अवसरें आवशुं रे, होजो धर्मजा
न इहां ॥ ५ ॥ गु० ॥ सा वंदे पाया रे, उपाशरे तेह गयां ॥ करि रातनी
करणी रे, वली परजात थयां ॥ ऊठीनें पोहोतां रे, के गुरुणीनें पासें ॥ देश
नादिक सुणिने रे, के गई घर उल्लासैं ॥ ६ ॥ गु० ॥ एम बोल्या दि
हाडा रे, के चार ते अनुकरमें ॥ पांचमे दिन आवी रे, वधामणी एम ध
रमें ॥ गुरुणी शुं बेठां रे, आवी चंदसुंदरी कहे ॥ ताहरो नरता रे, आव्यो

सवि काज करी ॥ ४ ॥ गु० ॥ जगवतीनुं अन्यथा रे, के वयण होये
 नहीं ॥ रतनवती हरखी रे, के दीधुं दान उमही ॥ गुणचंदजी आव्या रे,
 मल्या तिहां रायनें ॥ विग्रहनी वातो रे, कही नमी पायनें ॥ ५ ॥ गु० ॥
 नृपें सन्मान दीधुं रे, गयो हवे धसमसी ॥ आवे रत्नवतीनें रे, पासैं जब
 उल्लसी ॥ तव दीठां गुरुणी रे, के नमे हरखें करी ॥ धर्मलान ते दीधो
 रे, कुमर कहे चित्त धरी ॥ ६ ॥ गु० ॥ मुज पुण्यना उदयनो रे, के पार
 न पामीयें ॥ सुगृहीत गुरु पासैं रे, मिथ्यात्व में वामीयें ॥ तुम पासैं देवी
 रे, के धर्म पामी अठे ॥ तुम दरिसण डुर्जन रे, के पाम्यो हुं अध गहे ॥ ७ ॥
 ॥ गु० ॥ कुशलानुबंधी रे, के पुण्यविना प्राणी ॥ एहवा नाव न लहे रे, गु
 रुणी कहे एम वाणी ॥ अनुक्रमें पामे रे, के सुख ते मुक्ति तणां ॥ बीजानुं
 छुं केहवुं रे, कुमर कहे तव वयणां ॥ ८ ॥ गु० ॥ पुण्य पापना द
 यथी रे, के यद्यपि मोक्ष लहे ॥ पण कारण पुण्यानुं रे, के बंधी पुण्य कहे ॥
 ते विण नवि लहीयें रे, के आराधकपणुं ॥ गुरुणी कहे रूडुं रे, के तुमचुं
 जाणपणुं ॥ ९ ॥ गु० ॥ एम करी धर्मचरचा रे, के गुरुणी ठाम गयां ॥
 दंपती होये धर्मी रे, के मनमां मगन जयां ॥ हवे बिहुं जण सांजले
 रे, देशना नित्य तिहां ॥ जाय धर्म आराधतां रे, कोईक काल इहां
 ॥ १० ॥ गु० ॥ रत्नवतीनें उपनो रे, सुत एक सोनागी ॥ राज्यें
 ठवे राजा रे, गुणचंद वडनागी ॥ मैत्रीवल राजा रे, के दीक्षा आदरे ॥
 धर्मयी सहु सामंत रे, आणा रायनी धरे ॥ ११ ॥ गु० ॥ निष्कंटक
 पाले रे, अलंकृत राज्य गुणें ॥ त्रण वर्गने साधे रे, अन्योन्य अबा
 धपणे ॥ सहुजन सुप्रशंसे रे, के देव गुरु सेवे ॥ एम राज्य पालंतां रे,
 कं दान अतुल देवे ॥ १२ ॥ गु० ॥ एणे अवसरें आव्यो रे, के जलदकाल
 रुडो ॥ हंस नाठा दूरें रे, विरहीनें अति चूंमो ॥ मोरडा तिहां नाचे
 रे, के गगजारव आय ॥ हरख्या बर्षइया रे, के विजली चमकाय ॥ १३ ॥
 ॥ गु० ॥ दाडुर बहु बोले रे, के पृथिवी नीर वहे ॥ नदीउ थई माती रे,
 लगेवर लहर लहे ॥ वगलानी पंक्ति रे, पंथी घर चाव्यां ॥ महिपीनें
 गायो रे, के टाढक जही माहाव्यां ॥ १४ ॥ गु० ॥ सरितापूर जोवा रे,

निकलीयो राजा ॥ निजपरिवार साथें रे, अवलवेश ताजा ॥ तृण काष्ठ
तणांणां रे, के सरितामां आवे ॥ कलुपित बहुपाणी रें, के कांठे नवि सावे
॥ १७ ॥ गु० ॥ बिहुं तट तिहां पाडे रे, जहे विस्तार घणो ॥ आश
म विनाशो रे, पार न पूर तणो ॥ जलचर बहु दीसे रे, के जमरी जल
खावे ॥ मरजादा मूकी रे, के बालनें बीहावे ॥ १८ ॥ गु० ॥ एम देखी
तमासो रे, के आव्या निजगेह ॥ ढाल आवमे खंमें रे, के अठारमी
एह ॥ गुरु उत्तमविजयनो रे, के पद्मविजय शीश ॥ सांजलजो श्रोता
रे, के सुणतां सुजगीश ॥ १९ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केईक दिन वलि व्यतिक्रम्या, शरद समय संजालि; अश्ववाहनी
आवीयो, नृप ते सरिता जालि ॥ १ ॥ मूजस्वनावें निरमली, कूर न
जलचर कोय; बुधजनसेवित ते बहु, सांजखुं देखी सोय ॥ २ ॥
संवेगें नृप संवरी, चित्तमां करे विचार; रुद्धि आंमंवर नवि रहे, करे
निजपर अपकार ॥ ३ ॥ नदीदृष्टांतें निरखियें, पुरुषनो एह प्रकार;
जावन तट पाडे जली, आतम मलिन अपार ॥ ४ ॥ वलि आरंज परि
ग्रह वधे, करे उन्माद कल्लोल; चरण धर्म वाडी चसे, तजे कृत्य सीम
अतोल ॥ ५ ॥ मोह तणी जमरी महा, परमारथ अण पामि; अबुद्ध
लोक घणुं अडवडे, देखी अद्भुत दाम ॥ ६ ॥ सरिता परें स्वनावथी, अ
लगी जाये उपाधि; अनुक्रमें तारी आतमा, अनुनवे अव्याबाध ॥ ७ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ नूलो मन जमरा रे कांइ जमे ॥ ए देशी ॥
॥ आप स्वनावमांहिं रमे, आवे जो रे विवेक ॥ पाप मित्रने परिहरे,
गुन परिणामनी टेक ॥ १ ॥ गुणचंदराय संवेगीउ ॥ ए आंकणी ॥
अध्यवसाय जला होये, अर्थ अनर्थनो कार ॥ अंतराय परलोकनो,
मिथ्यानिमान विस्तार ॥ २ ॥ गु० ॥ क्लेश होय जेहथी घणो, ज्ञान
नी परिणति नाश ॥ कपट करे वली आकरूं, लोनथी सर्व विनाश
॥ ३ ॥ गु० ॥ कर्मादान व्यापारनें, सेवे पाप अनेक ॥ कुशलजोग
जाये वेगलो, पापमति अतिरेक ॥ ४ ॥ गु० ॥ इव्य उपगार ठे यद्य

पि, पण अल्पकालिक एह ॥ परपीडा होये वणी, किस आदरीयें ते
 ह ॥ ५ ॥ गु० ॥ इव्यजाव उपकारमां, जाव ते जाणी प्रधान ॥ एम
 चिंतवतां वाधीउं, गुनपरिणाम निदान ॥ ६ ॥ गु० ॥ आवी मंदिर
 नरपति, संजलावे तेह वात ॥ रत्नवती मंत्री प्रत्यें, बोले ते अवदात
 ॥ ७ ॥ गु० ॥ जिम जाखुं तुमें स्वामीजी, कीजें इक्षित काज ॥
 कालक्षेप इहां नवि घटे, चंचल जीवित राज ॥ ८ ॥ गु० ॥ जाये
 धर्ममां जे घडी, तेह प्रशंसवा लाग ॥ सांजलि उद्घोषणा करी, देतो दा
 न अथाग ॥ ९ ॥ गु० ॥ सर्वदेहरे विरचावतो, पूजा अनेक प्रकार ॥
 झाता कल्पसूत्रें कही, रायपसेणी मजार ॥ १० ॥ गु० ॥ जीवाजिगम
 मांहे वजी, पूजा कहे जिनराय ॥ तेह उवेखे जे प्राणीआ, मूढा ड
 र्गति जाय ॥ ११ ॥ गु० ॥ धृतिबल पुत्र राज्यें ठवी, सद्गुनें देई सन्मा
 न ॥ खबर गुरुनी कढावतो, जाणी तेहनुं थान ॥ १२ ॥ गु० ॥
 रतनवती साथें लेइ, सामंतनें परधान ॥ चाव्या काशीदेशमां, संयमनुं
 धरी ध्यान ॥ १३ ॥ गु० ॥ वाणारसी नयरी वसे, विजयधर्म सूरि
 राय ॥ धर्मलान सूरिसर दिये, जब वंद्या गुरुपाय ॥ १४ ॥ गु० ॥
 पूठ्या पठी सघलूं कहे, आगम कारण सार ॥ वाणारसीपति बहु
 करे, इव्यथकी उपचार ॥ १५ ॥ गु० ॥ सद्गु साथें महामहोत्सवें, व
 धते गुन परिणाम ॥ संजम लेवे नरवरु, विचरे ग्रामानुग्राम ॥ १६ ॥
 गु० ॥ सूत्र नण्या क्रिया अन्यसी, समयें थया अजिप्राय ॥ एकल
 विहार अंगीकखुं, पूठ्या श्रीगुरुराय ॥ १७ ॥ गु० ॥ आणा जब गुरुजी
 करे, तव सूत्रादिक जेह ॥ तुलना पंच प्रकारनी, करे पूर्वे कही तेह
 ॥ १८ ॥ गु० ॥ यतः “सुत्तेणं अवेणं ॥ इत्यादि तथा पढमा उवस्सयंमी,
 वीया वाहिं तईया चउक्कंमी ॥ सुन्नधरंमी चउढी, तह पंचमीअ म
 साणंमी ॥ १ ॥” एणि परें सत्व तोली करी, एकल मद्धविहार ॥
 सूत्रविधे अंगी करे, पाले निरतिचार ॥ १९ ॥ गु० ॥ काल गयो एम
 केटलो, एक दिन करत विहार ॥ कोट्ठागसन्निवेशें गया, रहीआ ए
 कांत ठार ॥ २० ॥ गु० ॥ काउस्सगग करीनें रह्या, आठमे खंमैं ढाल ॥

उगणीशमी पदमें कही, सुएतां मंगलमाज ॥ ११ ॥ गुण ॥ सर्व ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलय जतां बाणमंतरो, मलिया मुनि माहंत ; कोप चढ्यो चित्त
कलकव्यो, चित्तमां एम चिंतंत ॥ १ ॥ पापी दीगो पापथी, कपट करे
छुउं केम ; मूकुं शिला इहां मोटकी, तुरत मरे ए तेम ॥ २ ॥ मारे ए
हनें माहरूं, सफल विद्याकुल सार ; रौडध्यानें छति रोषथी, वं
ठित करे विकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीशमी ॥

॥ नवमी वार्डे निवाखो रे, साधुजी शणगार ॥ ए देशी ॥

॥ पासैं पर्वतथी शिला रे, विद्याबलथी रे लीध ॥ मूके गगनथी मुनि
शिरें रे, पीडा अतिशय कीध ॥ १ ॥ पण नवि जावथी पीडिया रे,
जोवे खेचर तेह ॥ जीवता देखी कोपीयो रे, चिंतवे अहो छुउं एह
॥ २ ॥ जीवनशक्ति अहो घणी रे, अहो परनव पक्षपांत ॥ अवज्ञा
मुऊ उपरें रे, एहनी अपूरव वात ॥ ३ ॥ मूकी मोहोटी शिला बली रे,
तेहथी पीडी रे काय ॥ पण नवि जाव पीडाईउं रे, देखी क्रोध न
राय ॥ ४ ॥ त्रीजी वार तुरत तिणें रे, मूकी एक महंत ॥ पण तिम
हिज देखी करी रे, अतिशय खेद लहंत ॥ ५ ॥ चिंतवे मारी नवि श
कुं रे, करूं धर्ममां अंतराय ॥ कोईकनुं घर मूशीनें रे, मूकुं एहने रे पा
य ॥ ६ ॥ लोकनें कहुं महापापीयो रे, जूउं केहवां करे काम ॥ लोक
ते करजो कदर्थना रे, आपदा लहेशे रे ताम ॥ ७ ॥ जिम चिंतव्यूं तिम
हीज कखुं रे, संजलावे कोटवाल ॥ आव्यो तलार दीगा मुनि रे, परम
दयाल मयाल ॥ ८ ॥ तपशोषित तनु एहनूं रे, दीसे मूरति शांत ॥
चित्त आकुल नहीं एहनूं रे, जोगरहित एकांत ॥ ९ ॥ ए केम करजो
एहवुं रे, अथवा कपट विचित्त ॥ करूं परीक्षा एहनी रे, यद्यपि दीसे
पवित्त ॥ १० ॥ जाम निकुंजें निहालीयुं रे, उपनी शंका रे ताम ॥ पू
ठयुं पण नवि बोलीआ रे, तर्जना करतां प्रकाम ॥ ११ ॥ तो पण न
वि बोले यदा रे, तव खेचर हरखंत ॥ अध्यवसायनी क्रूरता रे, नरक

आगु बंधंत ॥१२॥ रौद्रध्यानं निकाचीयुं रे, हवे चिंतवे कोटवाल ॥ क
 हियें नृपनें जे गमे रे, तेह करो नरपाल ॥१३॥ संजलाव्युं नृपालनें रे,
 आच्यो विश्वसेन राय ॥ दीठा तव तेणें उखख्या रे, प्रणम्या नक्तें रे
 पाय ॥१४॥ पूढे कोटवालने तुमैं रे, कीधुं ठे प्रतिकूल ॥ ते कहे तेह
 वुं कांय नहीं रे, तव नृप कहे अनुकूल ॥१५॥ राज रुषि ए अम तणा
 रे, स्वामी गुणचंद राय ॥ निरुपसर्ग नृपालने रे, नरनव सफल क
 राय ॥१६॥ सयलसंग त्यागी गुरु रे, वरते ठे एह ध्यान ॥ अप्रतिबंध
 पणें रहे रे, कीधां ठे अनुष्ठान ॥१७॥ एकल विहार अंगीकखो रे, बो
 ल्यो ताम तलार ॥ धन्य धन्य करी स्वामीठ रे, नृप कहे श्यो ए विचार
 ॥ १८ ॥ कोटवाल कहे जिणें कछुं रे, ते नर ठे इण वार ॥ नृप कहे
 किहां ठे दाखवो रे, अदृश्य थयो तेणी वार ॥ १९ ॥ न जडयो तव
 नृपति नणे रे, कोईक उपसर्गकार ॥ सुर खेचर होशे सही रे, डष्ट तणो
 ए प्रकार ॥ २० ॥ कहो अंतैउरने तुमैं रे, जनपदनें सुविशेष ॥ आ
 व्या स्वामी तुम तणारे, गुणचंद जेह नरेश ॥ २१ ॥ धर्ममूर्ति धरी
 आवीठ रे, दीठे पाप पलाय ॥ शिव सुख कारण स्वामीजी रे, निःसंगी
 सुनिराय ॥२२॥ विजव शक्ति नक्ति घणी रे, वंदो निज उपगार ॥ को
 टवालें जणव्युं सवे रे, सहुनें हर्ष अपार ॥२३॥ आवि सहुयें वंदीआ
 रे, पूजा करी विस्तार ॥ गुणस्तवना बलि बलि करे रे, दरिसण विस्म
 यकार ॥ २४ ॥ आठमे खंमैं ए कही रे, समरादित्यनें रास ॥ पद्म
 विजय ए बीशमी रे, सुणतां लीलविलास ॥ २५ ॥ सर्व ॥ ६६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आच्यो कवाडी इण समे, सुणो कहे वात सरूप; ए अणगारने उ
 पणें, नाखी शिला अनूप ॥ १ ॥ आवी मार्ग आकाशयो, नवि दीठो
 नयणेण; नवि नाठा ने नवि चल्या, कोण जाणे कछुं केण ॥ २ ॥
 तम निर्घातें त्रासीयो, मूर्खी लह्यो महाराय; आगल नवि जाणुं अ
 वग, कीधुं सुनिने कांय ॥ ३ ॥ एह शिलाडग अपर जे, ते पण ना
 खी तेण; महापापी विण मानवी, जुडने न करे जेण ॥ ४ ॥ शोका

तुर यथा सांजली, राणी पुरजन राय; अहो अहो कृषिरायने, दु
ष्ट महा दुःखदाय ॥ ५ ॥ अहो क्लिष्टकर्मा अहो, अहो अलौकिक
एह; अहो निर्दयता एहनी, नहिं विवेकने नेह ॥ ६ ॥ अहो गुण
क्षेपी आकरो, मुनिवर महाव्रतवंत; अज्ञानीशुं न आचरे, मोहें सहु
मुजंत ॥ ७ ॥ पृथिवीपति एम विलपतो, जाणी मुनिवर जाण; पूरे
ध्यानें पारीयो, काउस्सग्ग एम कहे वाण ॥ ८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नरत नृप नावशुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर कहे सुणि राजिआ ए, कीधां कर्म न जाय, आपो आप
नोगवे ए ॥ एह अल्प दुःख राय ॥ १ ॥ नमो मुनिरायनें ए, धन
धन एहनी माय ॥ नमो ॥ ए आंकणी ॥ एह अनादि संसारमां ए,
कर्म संतान अनादि, दुःखें व्यापीरह्यो ए ॥ निज गुण रुद्धि आढा
दि ॥ २ ॥ नमो ॥ जन्म जरामरणें नख्यो ए, दीनता इष्ट विजोग,
शोग बहु उपजे ए ॥ वलि तनुमां अति रोग ॥ ३ ॥ नमो ॥ एम
जाणी वैराग्यथी ए, समकित मूल व्रत बार, वली चारित्र लिये ए ॥
ठांमी निज आगार ॥ ४ ॥ नमो ॥ ठठ अठमादिक तप करे ए, सीलं
ग सहस्स अढार, पालि सुरजव लहे ए ॥ शिवसुख अनुक्रमें सार ॥
॥ ५ ॥ नमो ॥ केईक क्लीब पुरुष वली ए, कामनोग लपटाय, बहु
दुःख नोगवे ए ॥ नीचनी सेव कराय ॥ ६ ॥ नमो ॥ नीम संग्राम
मांहे अडे ए, पेसे समुद्र मजार, मित्रादिकनें तगे ए ॥ विषयानिला
प प्रकार ॥ ७ ॥ नमो ॥ परजवनरगें संचरे ए, ठांमी चंचल आय,
लह्यां में दुःख घणां ए ॥ वार अनंती प्राय ॥ ८ ॥ नमो ॥ निन्न नि
न्न साते धरायें, दुःख तणो नहीं पार, कुंजीपाकें पच्यो ए ॥ तीव्र श
स्त्रें लह्यो मार ॥ ९ ॥ नमो ॥ करवतथी वेहेखो वली ए, काष्ठनें
जिम सूत्रधार, जेद्यो त्रिशूलें करी ए ॥ जंत्रें पीढ्यो अपार ॥ १० ॥
॥ नमो ॥ वक्रतुंम पंखी थई ए, खाधो करतो रीव, तातां जोतर
ए ॥ मूक्यां माहारी ग्रीव ॥ ११ ॥ नमो ॥ एम करी रथ वहेवराविउ
ए, तिल तिल खंम कखो कापि, दिशोदिश बलि करे ए ॥ हिंसानां ए

पाप ॥ १२ ॥ नमो ॥ जीन तालूथी काढतां ए, ए अलीक बोढ्यानो
 जेद, वलि परडव्य लीयो ए ॥ कान नाक करे ठेद ॥ १३ ॥ नमो ॥
 धगधगती लोहपुत्रिका ए, आलिंगन दिये देव, वैतरणीमां ठवे ए ॥
 उल्ल नीर नित्यमेव ॥ १४ ॥ नमो ॥ ठाय जाणी सामली तलें ए,
 वेसवा जावं जाम, पडे तस पत्रजे ए ॥ कान नाक ठेदे ताम ॥ १५ ॥
 ॥ नमो ॥ ताढ १ ताप २ चूख ३ तरशनी ४ ए, खरजनें ५ परवशता
 य ६, शोग ७ जय ८ ज्वर ए घणो ए ॥ दाह १० अतिशय आय ॥ १६ ॥
 नमो ॥ ए दश वेदना नरगमां ए, वलि कंक शुनकनें काक, रोता चूटे
 घणुं ए ॥ पाप कर्म परिपाक ॥ १७ ॥ नमो ॥ आंख मिंची उघाडीयें ए,
 नहिं सुख तेती वार, तिरीगतिमां वली ए ॥ पाम्यो दुःख अपार ॥
 ॥ १८ ॥ नमो ॥ दहन लंठननें वध होये ए, बहु वहेवरावे नार,
 खमी चूख तरशनें ए ॥ नवि करे कोइ सुतार ॥ १९ ॥ नमो ॥ नर
 जवमां परवशपणुं ए, निरधननें वली क्वीव, तिणें नरपति सुणो ए ॥
 शोक न करीयें अतीव ॥ २० ॥ नमो ॥ राय कहे तुमें स्वामीजी
 ए, कीथो सफल अवतार, कखो थिर आतमा ए ॥ अंतररिपु जय
 कार ॥ २१ ॥ नमो ॥ शोचण योग्य तुमें नहीं ए, ठाम्यो प्रमाद
 प्रसंग, अंगो तपसिरि करी ए ॥ प्राप्तप्राय शिवसंग ॥ २२ ॥ नमो ॥
 शोचवा योग्य ते ते थयो ए, जिणें कीथो उपसर्ग, गुरु कहे तव
 सुणो ए ॥ एहवो संसार संसर्ग ॥ २३ ॥ नमो ॥ परचिंता तुं शुं करे
 ए, कर निज आतम चिंत, सुणि नृप उच्चरे ए ॥ आणा करो नग
 वंत ॥ २४ ॥ नमो ॥ को पासें व्रत आदरुं ए, विजयधर्म गुरु पास,
 मुनि एणी परें कहे ए ॥ कखुं प्रमाण वच तास ॥ २५ ॥ नमो ॥
 गुणवंद मुनि हवे विचरीआ ए, वाणमंतर हवे तेह, करी महा क
 र्मनें ए ॥ रोगें थई व्हीण देह ॥ २६ ॥ नमो ॥ इंडिय हाणि जह्यां
 वणुं ए, अशुन उदय थयो तास, खजाव फखो वली ए ॥ करे आ
 कंद वेखास ॥ २७ ॥ नमो ॥ वैद्य निपुण उपदेशथी ए, विष्टा प्रमु
 ख मुख दीध, कंटक शय्या करी ए ॥ एम कांयक सुख सिद्ध ॥ २८ ॥ न

मो० ॥ रौडध्यान दोषें करी ए, तेत्रीश सागर आय, सातमी नरगें
 गयो ए ॥ महा दुःखनो समुदाय ॥ ३९ ॥ नमो० ॥ गुणचंड पण रु
 षि राजीउं ए, पाली संजम शुद्ध, करी संलेषणा ए ॥ नावना ना
 वी विबुद्ध ॥ ३० ॥ नमो० ॥ कर्मराशि बहु कृत्य करी ए, स्वामी सध
 ला जीव, नमी वीतरागनें ए ॥ ध्यानक जोई निर्जीव ॥ ३१ ॥ न
 मो० ॥ पादपोषणम अणसण करी ए, पाली निरतिचार, रुंधी चे
 ष्टा प्रत्ये ए ॥ बहु वंदे अणगार ॥ ३२ ॥ नमो० ॥ गाये देवांगना गीत
 मां ए, स्तवना करे नरदेव, त्यजी निजदेहनें ए ॥ यथा सर्वारथें देव
 ॥ ३३ ॥ नमो० ॥ तेत्रीश सागर आउखें ए, सुखसागर जीलंत, ए
 नरनव आवसो ए ॥ आवसो खंड ए हुंत ॥ ३४ ॥ नमो० ॥ एकवीश
 ढालें शोहामणो ए, समरादित्यनें रास, अठार बेंतालीशें ए ॥ शुद्धि
 दशमी नाइ मास ॥ ३५ ॥ नमो० ॥ श्रीविजयसिंह सूरेशना ए, अंते
 वासी मुख्य, क्रिया उद्धार कस्यो ए ॥ सत्यविजय सुशिष्य ॥ ३६ ॥
 नमो० ॥ कपूरविजय तस पाटवी ए, खिमाविजय तस शिष्य,
 कृमागुणशी ज्ञा ए ॥ जिनविजय सुजगीश ॥ ३७ ॥ नमो० ॥ उत्तम
 विजयजी तेहना ए, शिष्य शिरोमणि सार, पंमित गुणें आगला ए ॥
 समता रस जंझार ॥ ३८ ॥ नमो० ॥ कल्याण पासपसायशी ए,
 पद्मविजय कहे एस, विसलनगरें रही ए ॥ समरादित्य गुण प्रेम ॥
 ॥ ३९ ॥ नमो० ॥ सर्व गाथा ॥ ७११ ॥

॥ इति श्री संविज्ञपक्षीयपंमितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणेशि
 ष्यपंमितश्री पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्रा
 कृतप्रबंधे गुणचंड नृप वाणमंतरानिधानविद्याधरयोः अष्टमो
 नरनवः समाप्तः ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥ ७११ ॥ उक्तगाथा ॥ ५ ॥

॥ अथ ॥

॥ नवम खंभः प्रारब्धते ॥

॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पाय नमी, शांति सदा सुखकार; समरी सरसती स्वा
मिनी, गुरु गुण ज्ञान दातार ॥ १ ॥ आव खंभ कहा इणि परें, दिन
दिन चढते दाव; नवमो खंभ हवे निर्मलो, जांखुं आणी नाव ॥ २ ॥
समरादित्य शोहामणा, गुणक्षेत्री गिरिसेण; नृप सुतनें चंमाल नर,
सांनजीये सयणेण ॥ ३ ॥ इणो जंबु द्वीपें अठे, नरतक्षेत्र नरक्षुद्धि; उ
बेणी नयरी अवल, पृथिवीमांहि प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ मंदिर गढ मढ मालीआं,
विहार आराम विशेष; पोल पागार मारग पृथु, अमर जुवे अनिमेष ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ उनी नावलदे राणी अरज करे ठे, अब ॥

॥ को वरसालो घर कीजें हो ॥ गढबुंदीराहाडा ॥

॥ वाढ्हा चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥

॥ लखमी चल जाणी परिखामी सवि धीयें, रज्जुपरें मानुं बांधी हो ॥
सुणो नविअण नावें ॥ गुण गुणवंत केरा ॥ सहु जन गुणश्येणें करी
नूपित, रूपकला सहुयें साथी हो ॥ १ ॥ सु० ॥ जेहनी सीमा सरोव
र शोहे, नलिनीवनें सर शोहे हो ॥ कमलें नलिनीनें कमल ते अमरें,
अमर गुंजारवें मोहे हो ॥ २ ॥ सु० ॥ नामें पुरीससिंह तेहनो
राणो, सुंदरी राणी जाणो हो ॥ त्रण वर्ग साथतां काल गमावे, दंप
ती दोय वखाणो हो ॥ ३ ॥ सु० ॥ इण समे सुर सरवारथवासी,
तिहांथी चव्या आयु पाली हो ॥ सुंदरीकुखें उपनो जिहारें, जागी
सुपनें रवि जाली हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ पतिनें कहे में सूरय स्वप्नें, दीगो आ
ज प्रजातें हो ॥ कमलाकर विकस्वर करतो, किन्नर तस गुण गातें हो
॥ ५ ॥ सु० ॥ गगन विनूपे तिमिर विणासे, लोक करे परणाम हो ॥
आतपें सौम्य ते पेसतो उदरें, तेहनूं फल कहो स्वामी हो ॥ ६ ॥
॥ सु० ॥ नृप हरखी कहे तुज सुत होशे, त्रिभुवनमां विख्यात हो ॥

तद्वृत्ति करी पतिवचन प्रमाणी, अनुक्रमें जन्म ते जात हो ॥ ७ ॥
 ॥ सु० ॥ रूडे नखेतरेण करण मुहूर्त्तें, विण संक्लेशें आयो हो ॥ सिद्धिम
 ती दासीयें वधायो, नृप मन हरख न मायो हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ दा
 सीनें दान देईनें करावे, बंदीमोचन राय हो ॥ अनिवारित दाननें देव
 रावे, नयर महोत्सव मंदाय हो ॥ ९ ॥ सु० ॥ पद्मराय मुख जे नर
 देवा, तेहनें करता जाण हो ॥ बहु उज्ज्वल नित्य नित्य प्रते करतां,
 दूत मासप्रमाण हो ॥ १० ॥ सु० ॥ स्वप्न प्रमाणें पितामह केरूं,
 समरादित्य दिये नाम हो ॥ इण अवसर जीव वाणमंतरनो, नारक
 निकळ्यो ताम हो ॥ ११ ॥ सु० ॥ नानाचव तिरिगतिमां नटकी, बहु
 दुःख खमतो तेह हो ॥ कर्मवशें शीआलीउ दूत, मरण लही वली
 एह हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ इणहिज नयरीयें चंमालपाडे, गंठिग नाम
 चंमाल हो ॥ जह्नुदेवा नामें तस नारी, तास कुखें तिण काल हो ॥ १३ ॥
 ॥ सु० ॥ गिरिसेन नामें पुत्रज दूत, जडमति दुःखीयो दीन हो ॥
 कुरूपीपणें काल गमावे, पापराशि धनहीन हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ स
 मरादित्य पुण्यफल अनुभवता, पूर्व सुकृत अन्यासें हो ॥ सयल कला
 बालकालें शीख्यो, साखीमात्र गुरु पासें हो ॥ १५ ॥ सु० ॥ कु
 मर पणें पण पूर्व अन्यासें, शास्त्रचिंतन घणुं रातो हो ॥ तत्त्वजुक्ति
 यें वात ठरावे, जावे जावना अवदातो हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ जाति
 स्मरण जावना गुणथी, उपनो लोक प्रबुद्ध हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य
 उदयथी, कुशल जावमां सन्न हो ॥ १७ ॥ सु० ॥ नाण निर्मलनें
 त्याज्य विषयथी, आसन्न सिद्धिसंपत्ति हो ॥ उत्कट जीव वीर्य नहीं
 दुःकृत, तिणें एहवा गुणवत्ति हो ॥ १८ ॥ सु० ॥ राज्यलक्ष्मी उप
 र नहीं आदर, न करे शरीरसत्कार हो ॥ चित्रक्रीडानें विषय न
 सेवे, महा वैरागी कुमार हो ॥ १९ ॥ सु० ॥ वात कुमरनी एहवी
 देखी, चिंतवे मनमां नूप हो ॥ रूपें कंदर्पनें वित्त अतुल ठे, यौवन
 वय अनूप हो ॥ २० ॥ सु० ॥ रोग रहितनें इंडिय प्रवडां, राय कन्या
 घणुं इहे हो ॥ मुनिदरिसण न लह्यो पण मुनि परें, मनमां विकार न

प्रिठे हो ॥ ३१ ॥ सु० ॥ गीत कला नवि सेवे न पहेरे, नूषण न
करे मानो हो ॥ कृष्णता न सूके धर्म न चूके, पुण्य संनार अमानो
हो ॥ ३२ ॥ सु० ॥ जे दिनथी उपनो ते दिनथी, उपनी सवि मुज
चीज हो ॥ नृप कहे सवि सुख मुजनें होशे, एह कल्याणनुं बीज हो
॥ ३३ ॥ सु० ॥ पहेली ढाल ए नवमे खंमें, समरादित्यनें रासैं हो ॥ शिष्य
उत्तमविजयनो जंपे, आगल वात विलासैं हो ॥ ३४ ॥ सु० ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ डल्ललित गोष्टि देखियें, सोंपुं तेहनें संग; कलावंत क्रीडानिपुण,
मदन विशिष्ट मत्तंग ॥ १ ॥ उत्तम कुलमां उपना, तस संगें ततका
ल; अति प्रमोद उपजावशे, मुजनें तेह मयाल ॥ २ ॥ अशोक का
मांकुर अठे, ललितांग नाम लहंत; चतुर चूमामणि चिंतवी, कहे तेडी
चूकंत ॥ ३ ॥ जतन करी तुमें जोपशुं, समरादित्य सुजाण; लोक मा
रगमां लावीयें, ए ठे अमची आण ॥ ४ ॥ आण प्रमाण करी अधिक,
केतोक वीतो काल; सहु चेला विचरे सदा, खेले नव नव ख्याल ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बीजाजी हो रत्नकूडनें सुख सांकडुं हो बीजा,

केम करी करुं प्रवेश ॥ वयण वाढ्हा सयण रूडा ॥ ए देशी ॥

॥ वाहालाजी हो ॥ चालोनें रमवा जाईयें हो मित्ता, एम करी चाव्या
तेह ॥ ठेल वाढ्हा, सयण रूडा ॥ वा० ॥ विणा प्रयोगें देखावता हो
मित्ता. काव्य विनोद करेह ॥ ठे० ॥ १ ॥ वा० ॥ जलक्रीडा करे मो
दगुं हो मित्ता, जोवे सरोवर शोह ॥ ठे० ॥ वा० ॥ कामशास्त्र बोले
यणां हो मित्ता, जे सुणी उपजे मोह ॥ ठे० ॥ २ ॥ वा० ॥ बांधे
हिंचोला संखगुं हो मित्ता, हिंचे तिहां धरी प्रीति ॥ ठे० ॥ वा० ॥
गीत गावे अति रूअडां हो मित्ता, कामशास्त्र विरचित ॥ ठे० ॥ ३ ॥
वा० ॥ कुसुम साथरा पाथरे हो मित्ता, वरणवता पंचवाण ॥ ठे० ॥
वा० ॥ ते देखी चित्त चिंतवे हो मित्ता, समरादित्य सुजाण ॥ ठे० ॥
॥ ४ ॥ वा० ॥ वधते संवेगें करी हो मित्ता, अहो एह केम बोधाय
॥ ठे० ॥ वा० ॥ मूढदशा अति आकरी हो मित्ता, किम उपगार ते

थाय ॥ ठे० ॥ ५ ॥ वा० ॥ पण तेहना उपरोधथी हो मित्ता, नवि
 कहे कांय प्रतिकूल ॥ ठे० ॥ वा० ॥ तस प्रतिबोधन कारणें हो मित्ता,
 आचखूं तस अनुकूल ॥ ठे० ॥ ६ ॥ वा० ॥ प्रीति परम उपजावतो
 हो मित्ता, उपजाव्यो विश्वास ॥ ठे० ॥ वा० ॥ एक दिन सहु मित्रें
 मली हो मित्ता, मांमयो वातविलास ॥ ठे० ॥ ७ ॥ वा० ॥ बोले अ
 शोक एणी परें हो मित्ता, कामशास्त्र सम नांहिं ॥ ठे० ॥ वा० ॥ अव
 र कीशुं तव बोलीज हो मित्ता, कामांकुर उवांहिं ॥ ठे० ॥ ८ ॥ वा० ॥
 एहमां कांय न पूठवुं हो मित्ता, एहथी त्रिवर्ग सधाय ॥ ठे० ॥ वा० ॥
 चित्त आराधे नारीनुं हो मित्ता, तेहथी संरक्षण आय ॥ ठे० ॥ ९ ॥
 वा० ॥ शुद्धसंतति तेहथी होय हो मित्ता, तेहथी दानादिक धर्म ॥
 ठे० ॥ वा० ॥ दारा सुत शुद्धथी लहे हो मित्ता, अर्थ कामना शर्म
 ॥ ठे० ॥ १० ॥ वा० ॥ विपरीतें विपरीत नीपजे हो मित्ता, तिणें
 त्रण वर्गनुं हेत ॥ ठे० ॥ वा० ॥ कहे लजितांग नलुं कहुं हो मित्ता,
 एहमां दोष न देत ॥ ठे० ॥ ११ ॥ वा० ॥ पण एक अति नलुं
 जाणजो हो मित्ता, धर्म अरथ फल काम ॥ ठे० ॥ वा० ॥ काम
 विना ते निष्फला हो मित्ता, मोक्षनो नहिं फलताम ॥ ठे० ॥ १२ ॥
 वा० ॥ तेह लोकोत्तर मार्ग ठे हो मित्ता, ज्ञानध्यान फल तेह ॥ ठे० ॥
 ॥ वा० ॥ अशोक कहे इहां साखीया हो मित्ता, होय कुंमर जो एह
 ॥ ठे० ॥ १३ ॥ वा० ॥ कामांकुर कहे ए खरुं हो मित्ता, लजितांग
 कहे एम ताम ॥ ठे० ॥ वा० ॥ करीयें पसाय कुमारजी हो मित्ता,
 शोचनतर जे उदाम ॥ ठे० ॥ १४ ॥ वा० ॥ कुमर कहे मत कोपजो
 हो मित्ता, नांखुं हुं परमठ ॥ ठे० ॥ वा० ॥ सहु कहे कोप इहां किश्यो
 हो मित्ता, नाश अन्नाणनो जठ ॥ ठे० ॥ १५ ॥ वा० ॥ कुमर कहे
 कामशास्त्र जे हो मित्ता, करनारनें सुणनार ॥ ठे० ॥ वा० ॥ प्रगट
 करे अन्नाणने हो मित्ता, ते सुणजो अधिकार ॥ ठे० ॥ १६ ॥ वा० ॥
 प्रकृति असार विटंबणा हो मित्ता, परजव विष उपमान ॥ ठे० ॥
 वा० ॥ मोहदोषें देखे नहीं हो मित्ता, कृत्याऽकृत्य अज्ञान ॥ ठे० ॥

॥ १७ ॥ वा० ॥ रुधिर मांस अशुचि नरी हो मिता, रमणी केरी काय
 ॥ ठे० ॥ वा० ॥ नर्त्ता सुकरनी परें हो मिता, रहे नित्य तिहां लप
 टाय ॥ ठे० ॥ १८ ॥ वा० ॥ मंदबुद्धि देखे नहीं हो मिता, परमार
 यनी बात ॥ ठे० ॥ वा० ॥ बुधजनगर्हित जाणियें हो मिता, प्रकृति
 चपल न रहात ॥ ठे० ॥ १९ ॥ वा० ॥ बाल जीव माने घणुं हो
 मिता, काम संपादन हेत ॥ ठे० ॥ वा० ॥ क्लेश करे अकृत्य धरे हो
 मिता, व्याये कुथ्यान संकेत ॥ ठे० ॥ २० ॥ वा० ॥ कुशल मार्ग
 भूके वली हो मिता, पामे अति उन्माद ॥ ठे० ॥ वा० ॥ गुरुजननी
 निंदा करे हो मिता, लोकथी लहे अपवाद ॥ ठे० ॥ २१ ॥ वा० ॥
 अनुक्रमें जाये नरगमां हो मिता, वली एह नव दुःखदाय ॥ ठे० ॥
 वा० ॥ वधबंधन पामे घणां हो मिता, ईर्ष्या कुल घर आय ॥ ठे० ॥
 ॥ २२ ॥ वा० ॥ नय विपादनुं क्षेत्र ठे हो मिता, क्रोध तणो रे निवा
 स ॥ ठे० ॥ वा० ॥ धर्मशास्त्र निंदे तिणें हो मिता, रूडा न काम वि
 लास ॥ ठे० ॥ २३ ॥ वा० ॥ मध्यस्थ यईनें विचारजो हो मिता,
 किम साधे त्रण वर्ग ॥ ठे० ॥ वा० ॥ इव्य उपार्जे किणी परें हो मिता,
 किम वली साधे सर्ग ॥ ठे० ॥ २४ ॥ वा० ॥ कामकुशल प्राणी
 तणी हो मिता, कुजटा दीसे नार ॥ ठे० ॥ वा० ॥ कामकुशल नहीं
 तेहनी हो मिता, शीजवंती सुविचार ॥ ठे० ॥ २५ ॥ वा० ॥ तिणें कारण
 गुन संतति हो मिता, इत्यादिक न एकांत ॥ ठे० ॥ वा० ॥ कामकुशल
 प्राणी तणा हो मिता, पुत्र ते अति दुर्दंत ॥ ठे० ॥ २६ ॥ वा० ॥
 वनि तस्करपणुं तेहमां हो मिता, एम असमंजस बात ॥ ठे० ॥
 वा० ॥ धर्म अर्थ फल पण नहिं हो मिता, काम ते दुःख अवदात
 ॥ ठे० ॥ २७ ॥ वा० ॥ खरज खनन सुख जेहवां हो मिता, करता
 नावअंधकार ॥ ठे० ॥ वा० ॥ अशुन कर्म फलचूत ठे हो मिता,
 किम धर्म अर्थ फलसार ॥ ठे० ॥ २८ ॥ वा० ॥ शोक वधे लाघव
 होये हो मिता, वनि अविश्वासनुं ठाम ॥ ठे० ॥ वा० ॥ शरीरस्थिति
 दोये कामथी हो मिता, मुनिवर शरीर उदाम ॥ ठे० ॥ २९ ॥ वा० ॥

बहु सेवे जो विषयनें हो मिता, तो होये कृषी सुख रोग ॥ ठे० ॥ वा० ॥
 मोहीनें ए मनोहरु हो मिता, मिथ्यानिमाननें योग ॥ ठे० ॥ ३० ॥
 वा० ॥ नवमे खंमें बीजी कही हो मिता, मित्रबोधननी ढाल ॥ ठे०
 ॥ वा० ॥ पद्मविजय कहे आगलें हो मिता, दिये उपदेश रसाल ॥
 ॥ ठे० ॥ ३१ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोक्ष अलौकिक मानीयें, ते पण नाहि तहत्ति; वर मुनिलोक लौ
 किक वद्यो, सयल वीर्यनी सत्ति ॥ १ ॥ संपूरण कारय सवे, अव्याबा
 ध अनूप; जन्म जरा नहिं जेहनें, सुख उत्कृष्ट सरूप ॥ २ ॥ ज्ञान
 ध्यान पण गुण अढे, धर्मरूप ते धार; कृषोपशम दायक होये,
 सफल तदा संसार ॥ ३ ॥ काम अनिंदित कोइ कहे, पण ते नाहि
 प्रकार; तिरि पण नोगवतां तुरत, निंदित ठे निरधार ॥ ४ ॥ काम
 शास्त्र ते कारणें, करे अन्नाणप्रकाश; अदत्तग्रहण अवलोकीयें, नांखे
 जिनवर नास ॥ ५ ॥ यतः ॥ “तं नाम होइ सबं, जं हियमढं जण
 स्स दंसेइ ॥ जं पुण अहियंति सया, तं एणुकत्तोच्चयं सबं ॥ १ ॥
 ताजं कामुद्धिरण, समढसढं न तं बुहजणेण ॥ सुमिणेवि जं पियवं,
 पसंसियवं च डवयणं ॥ २ ॥” सुखदायी सहु सत्त्वनें, उपजावे उप
 शम्म; परशंसवुं ने जंपवुं, हृदयें जाणो रम्म ॥ ६ ॥ यतः ॥ “पस
 माइ नावजणयं, हियमेगंते सब सत्ताणं ॥ निउणेण जं पियवं, पसंसि
 यवं च सुविसुद्धं ॥ ३ ॥” सांनली विस्मय सहु लह्या, चित्तमां करे वि
 चार; अहो विवेक अहो नावना, अहो वैराग्य अपार ॥ ७ ॥ कृत
 ङ गुण अहो केहवो, एहवा अध्यवसाय; नवि होये मुनिवर मनें,
 एम चित्त अचरिज थाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ आवो हरि लाहरीआ वाहाला ॥ ए देशी ॥

॥ करे सहु मित्र मली वातो ॥ तेहमां अशोक कहे ख्यातो, सुणो
 कुमार कहुं अवदातो ॥ १ ॥ करे ॥ तुमें कहुं लोकोत्तर एह, इहां
 अधिकार कहुं केह, लौकिकमां कामशास्त्र गुणगेह ॥ २ ॥ करे ॥

कहे कामांकुर ए सारुं, कहुं अशोकें अवधारुं, कहे ललितांग लागे
 प्यारुं ॥ ३ ॥ करे० ॥ बोले हवे कुमर सुणो वाणी, लहे नहीं तत्व
 वात प्राणी, वणा कंदर्पी बाल अन्नाणी ॥ ४ ॥ करे० ॥ होये कर्म
 बंधहेतु काम, नहिं तेहसुं माहारे काम, जाणि पडे कूप कहो कुण
 आम ॥ ५ ॥ करे० ॥ देवाणो न उत्तर तिहां केणें, कहुं अंगीकार
 सहु तेणें, गया केई दिन नेहनर नयणें ॥ ६ ॥ करे० ॥ सहु मजी
 एम विचार कीधो, ए कुमार तो तपसीसम सीधो, आपणनो ए
 किम जाये लीधो ॥ ७ ॥ करे० ॥ अठे उपाय इहां एक, दाक्षिण्यवंत
 ए ठे ठेक, आपण मित्रहुं कीधा विवेक ॥ ८ ॥ करे० ॥ पाणिग्रह
 ए करो कहीयें एम, माने जो वचन धरी प्रेम, सहुयें धारी एहवो
 नेम ॥ ९ ॥ करे० ॥ वेशी एक दिन इणि परें जांखे, अशोक सुणो
 मित्र सहु साखें, एक पूबुं धरी मन अनिलाखें ॥ १० ॥ करे० ॥
 मानवी के नहीं मित्रनी वाच, कहे कुमर मित्रना त्रण ताच, अधम
 मध्यम उत्तम साच ॥ ११ ॥ करे० ॥ एक मित्र धणुं लाव्या पाव्या,
 कोई वातथी नवि अलगा टाव्या, पण आपदायें दूरें चाव्या ॥ १२ ॥
 करे० ॥ एतो तुमें अधम मित्र जाणो, हवे सुणो पर्व मित्र शाणो,
 मजे कोई पर्व उत्सव टाणो ॥ १३ ॥ करे० ॥ नवि हाव जाव करवो
 तास, पण कष्टे ते करे वेखास, राखे कांय लौकिक सुविजास ॥ १४ ॥
 करे० ॥ कांय विलपी विजंब करी मूके, ए तो मध्यम मित्र नवि
 चूके, हवे उत्तम रुधिर रेडे थूके ॥ १५ ॥ करे० ॥ एक लटक स
 जास होये तेह, मूकावे दुःखयकी एह, गौरवपणुं दाखवे बहु जे
 ह ॥ १६ ॥ करे० ॥ थोडे उपगार ते बहु माने, संपद पण ते तस
 घर आणे, आपदायें पण राखे ठाने ॥ १७ ॥ करे० ॥ एहमां उत्त
 म सरिखुं यावुं, कहे कामांकुर न रहस्य पावुं, एतो जगतजीव
 ज्युं लहियें तीर, कहे कुमर सुणो सहु अई धीर ॥ १८ ॥ करे० ॥
 परमार्थ मित्रना त्रण जेय, देह सुजन धरम जाणोय, जघन्य मित्र

ध्यान रे ॥ तिलकवृद्धनें ठूकडा, दीठा मुनि गतध्यान रे ॥ १३ ॥ सां० ॥
 सुदत्तनामें मुनिवरु, देखी कोप्यो नूप रे ॥ पारधिमां अशुकन थयां,
 पडीउ चिंताकूप रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ करी उपडव एहनें हवे, मानुं
 शकुन निदान रे ॥ तूंतूँकार करी मूकीआ, मुनि उपरें माहा श्वान
 रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ वेगें जालिम जम समा, आव्या मुनिवर पास रे ॥
 जाज्वल्यमान अग्निपरें, मुनिवर देह प्रकाश रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ तप
 तेज ते न शक्या सही, उषधिगंध जिम नाग रे ॥ निर्विष तिम निःप्र
 ना थया, तेह शुनक धरे राग रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ तपपरजावें प्रदहि
 णा, देई श्वाननुं वृंद रे ॥ मस्तक धरतीयें खोशीनें, प्रणमे तेह मुणोंद
 रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ श्री समरादित्य रासमां, चोथे खंमें ढाल रे ॥ एकवीश
 मी पदमें कही, सुणतां मंगलमाल रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देखी अचरिज दूरथी, उपन्युं चित्तमां एम; श्वान पुरुष ए सम
 जणा, नहीं नरश्वान हुं नेम ॥ १ ॥ तप चरणे मुनि ततपरा, अकुशल
 चिंत्युं आज; इणसमे पुरीथी आवीउ, केई जन वंदन काज ॥ २ ॥ जिन
 धमें नावितजिके, अरहदत्त इण नाम; शेरपुत्र शोहामणो, आव्यो
 वंदन आम ॥ ३ ॥ मेदिनीपतिनो मित्र ते, दीगो नृप अवदात; मुनि
 उपसर्ग ते मोटिको, परलोकनो करे पात ॥ ४ ॥ प्रणमी नूपनणी
 कहे, कछुं एह शुं काम; कहे नरपति नर कूतखा, सरिखुं कीधुं स्याम
 ॥ ५ ॥ अरहदत्त कहे इणि परें, पुरुषसिंह परधान; अश्वथी देवा
 उतरो, वंदो ए जगवान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हाररो हिरो म्हारो साहिबो ॥ ए देशी ॥

॥ देश कलिंगनो अधिपति ॥ साहिबा मारा ॥ अमरदत्त राजान हो ॥ पुत्र
 सुदत्त नामें तेहना ॥ सां० ॥ नरपति निर्मलवान हो ॥ १ ॥ संवेग
 रसजीनो मारो, समताशुं जीनो मारो, मुनिमां नगीनो मारो साहि
 बो ॥ साहिबा मारा ॥ वंदो मुनिवर पाय हो ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम
 जोबनमांहि वरतता ॥ सां० ॥ एक दिन आव्यो तलार हो ॥ चोर

साथें एक लावीउ ॥ सा० ॥ वीनवे नृपनें तिवार हो ॥ १ ॥ सं० ॥
 ॥ सं० ॥ मु० ॥ परघर पेशीनें इणें ॥ सा० ॥ लीधुं डव्य अपार हो ॥
 माखो महर्दिकने वली ॥ सा० ॥ गृहीउ निसरती वार हो ॥ ३ ॥
 ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ हवे जिम कहो तिम कीजियें ॥ सा० ॥ सांजली
 ते नरराय हो ॥ धर्मशास्त्र नएनारने ॥ सा० ॥ तेडी सुणावे प्रकार
 हो ॥ ४ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ श्यो दंम एहनें दीजियें ॥ सा० ॥ तव
 नर बोल्या तेह हो ॥ घात कखो चोरी करी ॥ सा० ॥ कीधुं कर्म अठे
 ह हो ॥ ५ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ त्रिक चोक चाचरें फेरवो ॥ सा० ॥
 सहु जनने संजलावि हो ॥ नेत्र उपाडो एहनां ॥ सा० ॥ काननें नाक
 कपावी हो ॥ ६ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ हाथने पग वली ठेदीयें ॥
 सा० ॥ इणपरें जीवनो नाश हो ॥ करवो एम रुषिवयण ठे ॥ सा० ॥
 सांजली वयणविन्यास हो ॥ ७ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ चिंतवे अहो अहो
 नृपकुलें ॥ सा० ॥ करवां एहवां पाप हो ॥ तिणें ए राज्य सुखें सखुं ॥
 सा० ॥ जेहथी बहु संताप हो ॥ ८ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ आणंद ना
 म जाणेजने ॥ सा० ॥ सोंपी राज्यनो नार हो ॥ सुधर्मगुरु पासें अ
 या ॥ सा० ॥ गेह तजी अणगार हो ॥ ९ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ मु
 निवंदन करी निस्तरो ॥ सा० ॥ सांजलि श्रावक वाणि हो ॥ मुनि वं
 द्या जव तिणें समे ॥ सा० ॥ अखुं मुनि पूरण जाण हो ॥ १० ॥ सं०
 ॥ सा० ॥ मु० ॥ धर्मलाज देई जांखीउं ॥ सा० ॥ बेश तूं निरवद्य ठाण हो ॥
 पश्चात्ताप नृप उपन्यो ॥ सा० ॥ जाणी अकळ अप्पाण हो ॥ ११ ॥
 सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ राय वेशी मन चिंतवे ॥ सा० ॥ में कखो मुनिवर
 घात हो ॥ प्रायवित्त मुजनें नहीं ॥ सा० ॥ विण निज मस्तक पात हो
 ॥ १२ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ आत्म अकार्य कलंकथी ॥ सा० ॥
 दुःखित एक मुहुत्त हो ॥ धारी न शकुं तिणें हवे ॥ सा० ॥ निपजावुं
 एह जुत्त हो ॥ १३ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ इण समे मुनिनें उपन्युं
 ॥ सा० ॥ मणपळव वरनाण हो ॥ जाणी आशय नूपनो ॥ सा० ॥
 मुनिवर कहे एम वाणि हो ॥ १४ ॥ सं० ॥ सा० ॥ मु० ॥ एतुज प्राय

हित नहीं ॥ सा० ॥ जे तें कल्पना कीध हो ॥ आत्मघात पण वारीउ
 ॥ सा० ॥ ते पण समय प्रसिद्ध हो ॥ १५ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥
 यतः ॥ “जाविय जिएवयणाणं, ममत्तरहियाण नहि दु विसेसो ॥
 अप्पाणंमि परंमिय, तो वळे पीडमुनउवी ॥ १ ॥” कलंक दुःखित
 निज आत्मा ॥ सा० ॥ जे चित्त चिंतवे तास हो ॥ जैनक्रिया जळें
 धोयतां ॥ सा० ॥ निर्मल थाये खास हो ॥ १६ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥
 जव अनुबंध वधे घणो ॥ सा० ॥ करतां आत्म घात हो ॥ जव कोडि
 पाम्यो नहीं ॥ सा० ॥ जिनवरवयण विख्यात हो ॥ १७ ॥ सं० ॥
 ॥ स० ॥ मु० ॥ तिणे जिनआण अंगीकरो ॥ सा० ॥ सांजली चिंत
 वे राय हो ॥ अहो मन वात जाणे मुनि ॥ सा० ॥ मुज मन अचरिज
 थाय हो ॥ १८ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ प्रायश्चित्त मुज पापनुं ॥ सा० ॥
 निश्चय लहेशुं ए पास हो ॥ आणंद जल नरी नयणडां ॥ सा० ॥ च
 रणे पडे नृप तास हो ॥ १९ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ प्रायश्चित्त प्रभु
 जांखियें ॥ सा० ॥ मुज कहे सुण महाराय हो ॥ एक मिथ्यात्व अ
 ज्ञान जे ॥ सा० ॥ तास अनाव जो थाय हो ॥ २० ॥ सं० ॥ स० ॥
 ॥ मु० ॥ चिंतवुं विपरीत जे ॥ सा० ॥ ते मिथ्या परिणाम हो ॥ तें
 पण विपरीत चिंतव्युं ॥ सा० ॥ मुनि अपशकुननुं ठाम हो ॥ २१ ॥
 ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ करीअ कदर्थना वारीयें ॥ सा० ॥ ए अपश
 कुन निदान हो ॥ तुज मन इंगि परें उपजे ॥ सा० ॥ नवि करे ए कदि
 स्नान हो ॥ २२ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ तुंम मुंम मुंमित वली ॥ सा० ॥
 जीखथी जीवे जेह हो ॥ वली पाखंड विरुद्ध ए ॥ सा० ॥ पावन न
 करे तेह हो ॥ २३ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ मध्यस्थ जाव करी सुणो
 ॥ सा० ॥ उत्तर एह रसाल हो ॥ चोथे खंमें बावीशमी ॥ सा० ॥ पद्म
 विजय कही ढाल हो ॥ २४ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पलक एक होय पवित्रता, मनमां होय अनिमान ; करे प्रार्थी
 ना कामिनी, शुचि हुं एहवी शान ॥ १ ॥ जीवविराधना जल तणा,

नहीं कोई धर्म स्नान; सजति जो स्नानें होये, मत्स्यदेडक बहुमान
॥ १ ॥ यज्ञदीक्षायें जोषथी, विप्रें पण वडरीति; अस्नानव्रत जलूं
आदखूं, नवि जाणो ए नीति ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेशवीशमी ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुणि तुज स्नाननी वातज कहूं, पांच शौच पुराणमां जहुं ॥ सत्य
शौच तप शौचज वली, त्रीजुं इंडिय नियह मली ॥ १ ॥ चोथुं सर्व
जीवनी दया, जलनुं शौच पांचमुं कही गया ॥ वली धारंजें वरते
जेह, मैथुन सेवे रहेतो गेह ॥ २ ॥ शौचपणुं ते ब्राह्मण जणी, न
कखुं युधिष्ठिर में पाप गणी ॥ ल्यो माटीना नार हजार, शत कुंजा वलि
लीजें वारि ॥ ३ ॥ तीरथ शतगमे करे सनान, पण जो दुष्टाचार नि
दान ॥ तेह पवित्र ब्राह्मण नहीं कदा, पापप्रमादें वरते सदा ॥ ४ ॥
जिम मदिरानुं नाजन होय, सहसवार जो धोवे तोय ॥ पवित्र न
थाये तिण परि जाणि, दुष्ट अंतरगत चित्तनुं न्हाण ॥ ५ ॥ आत्म
नदी संजम जल नरी, सत्य प्रवाह शील तट करी ॥ दया नदी पां
मव करो स्नान, जलथी शुद्ध न आत्म निदान ॥ ६ ॥ इत्यादिक शिव
शास्त्रें वणा, नांख्या जेद ते स्नानज तणा ॥ सर्व शास्त्रमां प्राणीद
या, न्हातां न रहे तेहनी मया ॥ ७ ॥ वली दातणनो कह्यो विचार,
आह तथा उपवास मकार ॥ दंतकाष्ठ संजोग निवारि, संजोगें सात
कुंज संहार ॥ ८ ॥ महाचारतमां वात ए कही, वली मार्कण्डपुराणें
जही ॥ संक्रांतिदिन पडवे प्रतिपदा, नौमि बारशि वली वरजी सदा
॥ ९ ॥ ते कारण दातणनो दोष, म करो करीयें मन संतोष ॥ वली
अखंमव्रत नियमना धार, विषय कषाय जींत्या अणगार ॥ १० ॥
नजाय ध्यानमां राता नित्य, एहवा सुनिवर नित्य पवित्त ॥ वलि शिर
तुंम मुंमन जे कखुं, प्रथम व्रत राखणनें धखुं ॥ ११ ॥ पारखंम पण
ए मंगल करे, जो चित्तमां सुनि मंगल धरे ॥ सहुनें शास्त्रें निह्ना कही,
मंगल जो पाजे व्रत वही ॥ १२ ॥ अन्यलिंगथी व्रष्ट जे थया, जै
नजिगें जे मोहें गया ॥ जैनलिंगथी व्रष्ट जो थाय, तो तस वज्रलेप

कहेवाय ॥ १३ ॥ श्वेतांबर केहवाशे वेष, किम अवतार करे सुविशेष ॥
 कहो महादेव मनें ए तुमें, जिम निःसंदेह जाणुं अमे ॥ १४ ॥ दं
 म कंबल ग्रहे शुद्ध आहार, अजारोम प्रमार्जन धार ॥ तुंबिफल
 नाजन होय करें, निहानोजन कोप न धरे ॥ १५ ॥ श्वेतवस्त्र राखे
 करे दया, मुक्ति जैनधर्ममां सया ॥ पापनिकंदननें अवतार, जुग जु
 ग कीधा में अणगार ॥ १६ ॥ एह प्रनासपुराणें कथा, सांनली बो
 लो म मुखयी वृथा ॥ सुरनें पण ए श्रमणनुं रूप, मंगलरूप कहां
 सुण नूप ॥ १७ ॥ यतः ॥ प्रनासपुराणे ॥ “अन्यलिंगपरिच्रष्टो, जैन
 लिंगेन सिध्यति ॥ जैनलिंगपरिच्रष्टो, वज्रलेपो नविष्यति ॥ १ ॥
 श्वेतांबराः कीदृशास्ते, (कीदृशाः किमाकाराः) कर्म कुर्वति कीदृशं ॥ अव
 तारः कथं तेषां, महादेव निगद्यतां ॥ २ ॥ दंमकंबलसंयुक्तं, अजारोमप्र
 मार्जनं ॥ गृह्णाति शुद्धमाहारं, शास्त्रं दृष्ट्वा चरति च ॥ ३ ॥ तुंबिफलकरा
 निहाना, नोजनं श्वेतवाससः ॥ न कुर्वति कदा कोपं, दयां कुर्वति जंतुषु
 ॥ ४ ॥ मुक्तिस्तु जैनधर्मेण, पापनिष्कंदनाय च ॥ अवतारः कृतो तेषां,
 मया देवि युगे युगे ॥ ५ ॥” महानारतमां नांखुं एम, जस कुल ज
 ति न थाये प्रेम ॥ अवगतिआ तस पूर्वज थाय, ते नर मोहें किमे
 न जाय ॥ १८ ॥ शिवशासनमां जैन प्रमाण, केता नांखुं तास वखा
 ण ॥ सांनली नृपनुं गयुं मिष्यात, कहे तुम ज्ञान अहो साक्षा
 त ॥ १९ ॥ इम करतो मुनि चरणे नमे, गुरुजी कोप न करशो तुमें ॥
 में अज्ञानपणे कछुं कर्म, ते खमजो प्रभु तुमचो धर्म ॥ २० ॥ मुनि क
 हे मुनि समता परधान, उठ म कर संच्रम कोइ ठाण ॥ सर्व जीवनुं ख
 मीयें अमे, तिणे अम कोप न चित्तमां गमे ॥ २१ ॥ आक्रोश तर्जना
 घातना करे, धर्मचंश वली हृदयें धरे ॥ अग्रिम अग्रिम विरह ते ना
 व, जान ते होये शुद्ध स्वभाव ॥ २२ ॥ वली मुनि नावे कर्मविवाग,
 नूपति हरख्यो धर्म ते राग ॥ एहुना ज्ञानयी ठानुं नहीं, पूढूं तातनें
 आर्यिका कही ॥ २३ ॥ इम चिंतीनें पूढुं जदा, मुनिवरें नांखुं सघ
 लूं तदा ॥ पितकुकुटवध मांफी करी, जयावली सुतनें दीकरी ॥ २४ ॥

तिहां लगे सांजली राय विचार, चिंतवे अहो संसार अपार ॥ अहो
 नवनाटिक किणि परें लहे, ज्ञानी गुरु विण कहो कुण कहे ॥ १५ ॥
 एम चोथे खंमें ए कही, ढाल त्रेवीशमी पदमें सही ॥ समरादित्य न
 रपतिनो रास, सांजलो आगल वातविलास ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ अहो संसार असारता, अबला अधिर सनेह; अहो गुरुता मोह
 रायनी, अकलविवाग अढेह ॥ १ ॥ कुकुटपित्तनो वध कखो, देवता
 दीधुं दान; तेह विपाक एम तातनें, परिणम्यो काढे प्राण ॥ २ ॥ में
 तो जीव माया घणा, आलें धरी अन्नाण; नरक विना मुक्तनें नहीं,
 होशे हीणुं ठाण ॥ ३ ॥ पूबुं अथवा मुनिप्रत्ये, मुनि लही मननी वा
 त; कहे नृपनें चिंता किसी, वली सांजल अवदात ॥ ४ ॥ जैन
 धर्म जो पडिवजे, पापनो पश्चात्ताप; त्रिविधें आरंजने तजी, आ
 दरे चारित्र आप ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ नरपति ॥ चारित्र जेई आप, जीव सवे मैत्री करे ॥ न० ॥ राखी मध्यस्थ
 नाव, वैराग्यनावना आदरे ॥ १ ॥ न० ॥ पाली निरतिचार, पूर्व दुःक
 त खेपवे ॥ न० ॥ कारण विण नव कर्म, अशुन न बांधे तेहवे ॥ २ ॥
 न० ॥ ह्य करी कर्मनी जाल, पुण्यपरंपरा साधतो ॥ न० ॥ आराधक
 यई तेह, शुनगुणठाणे बाधतो ॥ ३ ॥ न० ॥ श्रेणिरूपक चढी जीव,
 घातिकरमनो ह्य करी ॥ न० ॥ पामी केवल ज्ञान, शाश्वत शिवल
 वीवरी ॥ ४ ॥ न० ॥ जिहां नहीं रोगने शोग, जन्म जरा मरबुं नहीं ॥
 न० ॥ अव्याबाध अरूप, अशरीरी पदवी लही ॥ ५ ॥ न० ॥ बोळ्यो
 ते नृपाल. तात आर्थिका एणी परें ॥ न० ॥ पाय्या कर्मविपाक, एहवे
 अल्पदुःकत करे ॥ ६ ॥ गणपति ॥ में कखां कर्म अधोर, शी ग
 ति दोशे माहरी ॥ ग० ॥ नोगव्या विण किम जाय, एहमां कुण तुज
 बाहरी ॥ ७ ॥ ग० ॥ सजति पासुं केम, तव गुरु कहे सुण्य नृपति ॥
 न० ॥ एक चरण परिणाम, काढे कर्मनी संतति ॥ ८ ॥ न० ॥

पातिक विष परिणाम, अमृतसम चारित्र कह्युं ॥ न० ॥ कर्मगिरि
 पवि रूप, चिंतामणि दुर्विध लह्युं ॥ ए ॥ न० ॥ शिवसुख फल
 सुररुख, चरण परिणाम कह्यो सही ॥ न० ॥ विषलव स्वाये कोय,
 तास उपाय करे नहीं ॥ १० ॥ न० ॥ पामे आपद तेह, कृत्याकृत्य
 मुंजी रहे ॥ न० ॥ नरसुख सघलां ठांनि, जीवित क्य ततकृण लहे
 ॥ ११ ॥ न० ॥ तिम ए जीव प्रमाद, वशयो पाप करम करी ॥ न० ॥
 नवि करे तस प्रतिकार, जन्म मरण करे नव फरी ॥ १२ ॥ न० ॥
 जो करे तास उपाय, अमृत सम शक्ति करी ॥ न० ॥ कालकूट विष
 होय, तोपण तस लीये संहरी ॥ १३ ॥ न० ॥ विषलवनो श्यो नार,
 तिम नवनाव अनादिमां ॥ न० ॥ सेवी पाप अघोर, प्रतिपक्ष सेवे
 आल्हादमां ॥ १४ ॥ न० ॥ बहुनव संचित पाप, क्य कस्य चारित्र
 आदरी ॥ न० ॥ एक नवनो शो नार, गुरुवच सुणी हरखें करी ॥ १५ ॥
 न० ॥ पूठे चरण परिणाम, गुं कहीयें तव गुरु कहे ॥ न० ॥ सम्यक्
 ज्ञानथी तीव्र, रुचिथी पापनिवृत्ति लहे ॥ १६ ॥ ग० ॥ तुम दरि
 सणें अयो धन्य, आज महानिधि में लह्यो ॥ ग० ॥ आण करुं
 तुम्ह एह, जो तुम्हें श्रवण योग्य कह्यो ॥ १७ ॥ न० ॥ नृत्यनें कहे
 नरनाथ, जई कहो मंत्रीप्रमुख नणी ॥ न० ॥ अनयरुचि ठवो राज्य,
 आण करो ए अम तणी ॥ १८ ॥ न० ॥ मत करजो मुऊ खेद, जैन
 नी दीक्षा हुं वरुं ॥ न० ॥ अंगीकरी ते नृत्य, जई संजलाव्युं तिणे खरुं
 ॥ १९ ॥ न० ॥ सांजली हुं पण तेह, अनयमति साथें ग्रही ॥
 ॥ न० ॥ अंतेउर सविषाद, पहोता नृप पासें वही ॥ २० ॥ न० ॥
 दीगो मुनिनें पास, संवेगरस जावितमति ॥ न० ॥ बेगो धरती हेव,
 ठत्र चामर ठंढयां जति ॥ २१ ॥ न० ॥ होय न होय ए राज, जय
 जय शब्दथी प्रणमती ॥ न० ॥ सिंहपंजर गत रीति, किम बेग करे
 वीनति ॥ २२ ॥ न० ॥ गतदाढा जिम सप्य, राज्यचष्ट नरनी परें ॥ न० ॥
 बेग शोक मजार, तव नृपति एम उच्चरे ॥ २३ ॥ न० ॥ मुनि नां
 ख्यो संबंध, वात कही ते सांजली ॥ न० ॥ इहापो अयो ताम, अमची म

ति बहु खलजली ॥ १४ ॥ न०॥ जाति समरण ज्ञान, उपन्युं अम बिहुने
 तदा ॥ न० ॥ मूर्खीगत यथां दोय, अमें धरती ठलीयां यदा ॥ १५ ॥
 ॥ न० ॥ अंतेउर परिवार, तेह देखीनें रुदन करे ॥ न० ॥ ए वली
 बीजुं दुःख, मानिनी नयण आंसू जरे ॥ १६ ॥ न०॥ मूर्खी लही अम
 माय, अनुक्रमे चेतन पामीयां ॥ न०॥ मात आश्वासना कीध, रायनें
 चरणे नामियां ॥ १७ ॥ न० ॥ कहे संसार असार, देखी अम मन
 उलग्युं ॥ न० ॥ अमणपणुं तुम साखि, लीजीयें एम अम्हें उलग्युं
 ॥ १८ ॥ न० ॥ राय कहे जिम सुख, एहमां प्रतिबंध मत करो ॥ न०॥
 नाणेजनें दिउ राज्य, विजयधर्मे अनिधा धरो ॥ १९ ॥ न० ॥ जिन
 वर चैत्य मजार, अछाईमहोत्सव करी ॥ न० ॥ लेई अमनें साथ,
 वलि परधान अंतेउरी ॥ २० ॥ न० ॥ लिये दीक्षा गुरु पास, चोथे
 खंमे मन धरी ॥ न० ॥ चौबीशमी वर ढाल, पद्मविजय कही
 सुख करी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ७५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ में कह्युं गुरुनें पाय नमी, नयणावलीने नाथ; संजलावो शुद्ध
 देशना, पार जहे जवपाथ ॥ १ ॥ योग्य नहीं जिनधर्मेनें, कीधूं घणुं
 अकाज; त्रीजी नरगे ततहणें, जाशे कहे गुरुराज ॥ २ ॥ रुषि अ
 नुसय तव बहु करे, कहे गुरु मत करो एम; चारित्र तुमें चोखुं
 करो, मान्युं गुरुवच प्रेम ॥ ३ ॥ अनुक्रमे चरण आराधिनें, काल करी
 ततकाल; उपन्या देवलोक आठमे, सुख जोगवे विशाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ ढाल ॥ ॥ कोशलदेशें रे, साकेत नयरीयें नरपति ॥ विनयंधर रे,
 तेहनी राणी लखीमती ॥ तेहनो सुत रे, नाम जशोधर हुं ययो ॥ पा
 मजीपुरें रे, जीव अनयमति आवीयो ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ आविउ ईशा
 नसेन नृपनी, राणी विजया नाम ए ॥ विनयमती तस नाम आप्युं,
 कला शील्यां ताम ए ॥ स्वयंवरा ते आवी वरवा, बहु आम्बरयकी ॥
 नयर बाहिर आवास आप्या, में पण सांजली ते वकी ॥ २ ॥ ढाल ॥ मन

॥ १७ ॥ मा० ॥ तुज धर्मतणो पदपात, पण लोक मारग विख्यात,
 अनुसरतां होये सुखशात हो राज ॥ १८ ॥ मा० ॥ उपजे वली जब
 संतान, वय अतिक्रमे जाम जुवान, तव सेवहुं व्रत असमान हो
 राज ॥ १९ ॥ मा० ॥ कुंअर कहे रूढुं आओ, इण अवसर घरनें पासैं,
 सिद्धार्थ पुरोहित नासे हो राज ॥ २० ॥ मा० ॥ एहमां नहीं कांय
 संदेह, गज गुल गुल शब्द करेह, वाजे मंगल तूर सनेह हो राज
 ॥ २१ ॥ मा० ॥ बंदि बोले जय जय वाणो, अनुकूल शकुन सहु
 जाणी, हरख्यो नरपति गुणखाणी हो राज ॥ २२ ॥ मा० ॥ बोळ्यो
 कालनिवेदी ताम, मध्यान्ह समय थयो आस, सूरय आव्यो मध्य
 ताम हो राज ॥ २३ ॥ मा० ॥ केई प्राणी करता स्नान, केई देव
 पूजा केई दान, गुरुगुश्रूषा सनमान हो राज ॥ २४ ॥ मा० ॥ केई
 ध्यान सूकी अणगार, करवा जननें उपगार, गया गोचरीनें अधिकार
 हो राज ॥ २५ ॥ मा० ॥ सुणी कुमरनें आणा आपे, करो करणी
 उचित ते आपें, प्रणमे कुमर सुख व्यापे हो राज ॥ २६ ॥ मा० ॥
 रायें बहु दीधां दान, नयरी शोचा असमान, सुरलोक सरीसो वान हो
 राज ॥ २७ ॥ मा० ॥ देवतानी पूजाउ कीधी, नाचे पगें पगें पात्र प्र
 सिद्धि, अंतेउरी हरखमां गिद्धि हो राज ॥ २८ ॥ मा० ॥ मंगल
 वाजां बहु वाजे, नृप तेडे गणकसमाजें, पूढे लगन विवाहनें काजें
 हो राज ॥ २९ ॥ मा० ॥ कहे पंचमी आज प्रधान, नहिं अवर को
 एह समान, वधावी लिये राजान हो राज ॥ ३० ॥ मा० ॥ खंढ न
 वमे बढी ढाल, सुणतां होय मंगलमाल, कहे उत्तम विजयनो
 बाल हो राज ॥ ३१ ॥ मा० ॥ सर्व गाथा ॥ २२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आणा करी अमात्यनें, सामग्री करो सज्ज; तहति करी ते पण तु
 रत, करता तिमहिज कज्ज ॥ १ ॥ सुनटनें आपे सामटां, आयु-
 अति अवल्ल; अंतेउरीनें आपता, नाना आनरण नवल्ल ॥ २ ॥
 रथवर शोचा रूअडी, गाजे वली गजराज; अंबाडी अंबर अडी, सिंदू

रादिक साज ॥ ३ ॥ तुरंग तैय्यार कस्य अति, करणी उचित करेय;
 तोरण बांध्यां मणितणां, ध्वजपट कनक धरेय ॥ ४ ॥ सयल विधि
 कस्यो सहजमां, करी पूजा कुलदेव; प्रणमी मावित्र पावले, मित्र
 मानी स्वयमेव ॥ ५ ॥ रथवर वेठा कुंअरजी, सायें मित्रनो साथ;
 प्रगट परणवा चालीउ, समरादित्य सनाथ ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ कोडी सोनईये काशिदी ॥ मारा वाव्हा जीरे ॥

करनारो नहीं कोय, जईनें केजो ॥ सा० ॥ ए देशी ॥

॥ परणवा वरघोडे चढ्या ॥ वरराजा जीरे ॥ नाचे पगें पगें पात्र,
 जोवा चालो ॥ वरराजा जीरे ॥ मंगल तूर वजावते ॥ वर० ॥ लोक मळ्यां
 ते अमात्र ॥ १ ॥ जो० ॥ ढोल निशान जुंगल तणा ॥ वर० ॥ शब्द
 ते थाय सुरीत ॥ जो० ॥ अंतेउरी रथसां रही ॥ वर० ॥ गावे मंगल
 गीत ॥ २ ॥ जो० ॥ नयरी लोक आणंदियो ॥ वर० ॥ रायनें हर्ष न
 माय ॥ जो० ॥ संवेगें जावित मति ॥ वर० ॥ वर मन अचरिज थाय
 ॥ ३ ॥ जो० ॥ नवस्वरूप चित्त चिंतवे ॥ वर० ॥ लोक करे परशं
 स ॥ जो० ॥ विवाहनवनें आवीआ ॥ वर० ॥ उपना उत्तम वंश
 ॥ ४ ॥ जो० ॥ माहिरामांहिं आवीआ ॥ वर० ॥ दीठी कन्या द्योय
 ॥ जो० ॥ गजदंतमयी जिम पूतली ॥ वर० ॥ विघ्नमवती तिहां जोय
 ॥ ५ ॥ जो० ॥ वर आनरणें देहडी ॥ वर० ॥ कुंकुम विलेपन होय
 ॥ जो० ॥ सुजलित अंग शोहामणां ॥ वर० ॥ शोना जोवे सहु कोय
 ॥ ६ ॥ जो० ॥ कामलता बली शोचती ॥ वर० ॥ इंदु नीलम
 णिवान ॥ जो० ॥ हरि चंदन विलेपीयुं ॥ वर० ॥ राजे अति
 अतमान ॥ ७ ॥ जो० ॥ कुमर देखी मन चिंतवे ॥ वर० ॥
 अहो मुंदर आकार ॥ जो० ॥ अहो जावण्य निकलंकता ॥ वर० ॥
 अहो अहो विनय प्रकार ॥ ८ ॥ जो० ॥ मूर्ति शांति घणी अठे ॥
 वर० ॥ जाणुं होगे जोग्य ॥ जो० ॥ करी साक्षी अग्नि तणी ॥ वर० ॥
 करे कंसार आरोग ॥ ९ ॥ जो० ॥ पाणिग्रहण एम नीपन्युं ॥ वर० ॥
 फेरा फरिया ताम ॥ जो० ॥ उचित दान सवि दीधलां ॥ वर० ॥

कीयां सघलां काम ॥ १० ॥ जो० ॥ इण अवसर रवि आथम्यो ॥ व
 र० ॥ उग्यो नहंगण चंद ॥ जो० ॥ वाससुवन सजियुं तिहां ॥
 वर० ॥ मणिदीपकनां वृंद ॥ ११ ॥ जो० ॥ कुसुमसज्या तिहां पा
 थरी ॥ वर० ॥ लटके चंपक दाम ॥ जो० ॥ भ्रमरावली वली रण
 ऊणो ॥ वर० ॥ पडवासे गंधवाम ॥ १२ ॥ जो० ॥ दोय वधू बेठी
 जिहां ॥ वर० ॥ आब्या तिहां कुमार ॥ जो० ॥ मित्र अशोकादिकें
 करी ॥ वर० ॥ परवरीउ परिवार ॥ १३ ॥ जो० ॥ उनी अइ ते दोय
 वधू ॥ वर० ॥ कुमर सज्यायें निष्पन ॥ जो० ॥ उचित आनक
 वेठां सहु ॥ वर० ॥ मित्र नारी बहु पन्न ॥ १४ ॥ जो० ॥ कुंदलता
 प्रमुखा जिके ॥ वर० ॥ सखीउ बेठी पास ॥ जो० ॥ विभ्रमवतीनी
 कुंदलता ॥ वर० ॥ कामलता मानिनी खास ॥ १५ ॥ जो० ॥ कुंद
 लता लावी दीये ॥ वर० ॥ तंबोल कुसुमनी माल ॥ जो० ॥ विभ्रम
 वतीयें मोकली ॥ वर० ॥ व्यो तुमें कुमर रसाल ॥ १६ ॥ जो० ॥ निज
 करथी गुंथी अठे ॥ वर० ॥ धरती राग अत्यंत ॥ जो० ॥ मानिनी
 माधवी कुसुमनी ॥ वर० ॥ माला मन मोहंत ॥ १७ ॥ जो० ॥ कु
 मरनें आपी एस कहे ॥ वर० ॥ करो सफल अनुराग ॥ जो० ॥ कुमर
 कहे किम राग ठे ॥ वर० ॥ तव सा कहे लही लाग ॥ १८ ॥ जो० ॥
 हरप विषादें बोलती ॥ वर० ॥ कुमर गंजीर सुण वाणी ॥ जो० ॥
 नाम तुमारुं सांजव्युं ॥ वर० ॥ ते दिनथी तुम जाण ॥ १९ ॥ जो० ॥
 थाये दिन दिन दूबली ॥ वर० ॥ करे नित्य तुमची वात ॥ जो० ॥
 एहवी वात सुणी हवे ॥ वर० ॥ चिंतवे कन्यातात ॥ २० ॥ जो० ॥
 जुगतो राग ए जाणीनें ॥ वर० ॥ मोकली तुमनें पाणि ॥ जो० ॥
 सफल मनोरथ नीपनो ॥ वर० ॥ आव्युं सघलुं ठाण ॥ २१ ॥ जो० ॥
 कुमर विचारे चित्तमां ॥ वर० ॥ ठे सुऊ उपरें राग ॥ जो० ॥ रागी
 कहियें ते करे ॥ वर० ॥ कार्य अकार्य विनाग ॥ २२ ॥ जो० ॥ धर्म
 देशना कीजीयें ॥ वर० ॥ अवसर हमणां एह ॥ जो० ॥ एस स
 मरादित्य चिंतवी ॥ वर० ॥ कहे जो अम पर नेह ॥ २३ ॥ जो० ॥

तो अहितें वरतावतां ॥ वर० ॥ किम लहीयें अनुराग ॥ जो० ॥
 मानिनी कहे एम किम कहो ॥ वर० ॥ कुमर कहे सुणो वाग
 ॥ १४ ॥ जो० ॥ सातमी नवमा खंममां ॥ वर० ॥ समरादित्यनें
 रास ॥ जो० ॥ पद्मविजय शोहामणी ॥ वर० ॥ ढाल अधिक उ
 द्वास ॥ १५ ॥ जो० ॥ सर्व गाथा ॥ १५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो दृष्टांत शोहामणो, कामरुदेश कहंत; नामें मदन पुरवर
 नयर, प्रद्युम्न नृप पनणंत ॥ १ ॥ रति राणी रति रूपथी, विषयनुं
 सुख विलसंत; नृप रमवानें नीकल्यो, रहवाडी सुरमंत ॥ २ ॥ राणी
 तव गोंखे रही, राजमार्ग निरखंत; विमलमती सखवाहसुत, गुनं
 कर नाम शोहंत ॥ ३ ॥ जौवन वय तस जाणीनें, उपनो अति अवि
 वेक; अवलोकें आदर करी, अनिलापा अति रेक ॥ ४ ॥ तस दृष्टि
 अई तेह पण, गिरिधर थयो गमार; चित्त जाए ए अति चतुर, राणी
 हृदय विचार ॥ ५ ॥ एक देशें उनो रह्यो, जाणि जालिणी जाम; दा
 सीनें देखावती, आण तुं एहनें आम ॥ ६ ॥ कामी हृदय होय
 अति कठिन, लेई आवी ते व्हार; पद्योंकें बेगो पठें, वास गहे तिणि
 वार ॥ ७ ॥ बीडुं दिये तंबोजनुं, अई ग्रहं इणें एह; सुणिउं शब्द
 इणि समें, कलयल बंदि करेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ आज गर्इती हुं समवसरणमां ॥ ए देशी ॥

॥ राणी विचारे ए नूपति आव्यो, हवे नहीं अन्य उपाय रे ॥ धा
 व्यो बाहिर जवानें थानक, आव्यो हवे नरराय रे ॥ १ ॥ शील
 पालो नवि नाव धरीनें, शीलें सदगति होय रे ॥ शील विराधननां
 फल एहवां, इह नवमां पण जोय रे ॥ २ ॥ शी० ॥ राय कहे वार
 क नर तेडो, शौच करेवा जावुं रे ॥ गुनंकर सुणी चित्त विचारे, मर
 ण अवश्य इहां पावुं रे ॥ ३ ॥ शी० ॥ मरण बीक लही पड्यो सं
 थामें, मद्दा दुर्गंध अंधकारो रे ॥ विष्टाकूप कमिकुलें व्यापित, पडीयो
 तेहमां किनारो रे ॥ ४ ॥ शी० ॥ अशुचिनरीउं कमीयें स्वाधो, दृष्टि

प्रसार रोकणो रे ॥ अंग संकोच्युं वेदन पाम्यो, आकुल होय तिण
टाणो रे ॥ ५ ॥ शी० ॥ अंगरक्षक नृपनें तिहां जोयुं, आव्यो नृप
तिण ठायो रे ॥ शरीरस्थिति करीनें फरी आयो, राणीजुं काल
गमायो रे ॥ ६ ॥ शी० ॥ सांजे राय सनामां पोहोतो, राणी तव जो
वरावे रे ॥ नवि दीतो तव कहे एम राणी. कहो चाईउं किहां जावें
रे ॥ ७ ॥ शी० ॥ दासी कहे ए मरणना जयथी. पडियो कूप मऊ
रो रे ॥ चिंतातीत थई तव राणी. मृत जाण्यो निरधारो रे ॥ ८ ॥
॥ शी० ॥ तेह गुनंकर दुःखथी पीडयो. जवितव्यतानें जोगें रे ॥
आयुवलें कोई काल गमावे. अशुचि रस पान जोगें रे ॥ ९ ॥ शी० ॥
विष्टाकूप शोधननें काजे, उयाड्युं ते द्वार रे ॥ अशुचि निर्गम मार
गें निकल्यो, राति समय तिणी वार रे ॥ १० ॥ शी० ॥ देहठबी
विणवीनें नाठा, नखनें केश विरूप रे ॥ किमहीक अंग पखाली निज
घर, पोहोतो कष्ट सरूप रे ॥ ११ ॥ शी० ॥ बीहिनो परिजन जयथी
कोण ए, तेह कहे मत बीहो रे ॥ गुनंकर हुं पिता तव पूठे. विमल
मति मति लीहो रे ॥ १२ ॥ शी० ॥ गुं तें कीधुं जिणें एम हुउं, तव
कहे पुत्र विचारो रे ॥ मरण लह्यो मत जाणो पिताजी, तेहज हुं अ
वधारो रे ॥ १३ ॥ शी० ॥ पण जे करणीथी एम हुउं, ते संनलावुं
अजाग रे ॥ करी एकांतनें चांख्युं सघलूं. सांनली तात विरागो रे
॥ १४ ॥ शी० ॥ वातरहित घरमां तस थापे, सहस्र पाकादिक तेजें
रे ॥ परिमर्दन करीनें तस तातें, मूल स्वरूप करी मेले रे ॥ १५ ॥ शी० ॥
एक दिन देवतायतनें जातां, रति राणीयें दीतो रे ॥ पूर्वनी परें जा
लिणी मूकी, तेडावे कही मीतो रे ॥ १६ ॥ शी० ॥ मोहदोषें करी ते
पण आव्यो, थयुं वली पूरव रीतें रे ॥ कूपथी नीकल्यो वली सज्ज हुउं,
केईक काल व्यतीतें रे ॥ १७ ॥ शी० ॥ वली एणि रीतें कथुं फरी
जीव्यो, एम बहुवार गयो आव्यो रे ॥ ए दृष्टांत कह्यो हवे पूबुं,
कहो चित्तमां जो जाव्यो रे ॥ १८ ॥ शी० ॥ रतीनें राग हतो के
नाहीं, मानिनी कहे परमायें रे ॥ राग नहीं वली बुद्धि रहित सा,

कुमर कहे तल अर्थे रे ॥ १९ ॥ शी० ॥ राग नहीं मुऊ उपरें एह
 नो, परमाथें बुद्धिहीन रे ॥ ईर्ष्याकारण चपल स्वभावें, जोग बांढे ए
 दीन रे ॥ २० ॥ शी० ॥ वस्तुतत्त्व न समझे कोई, दुर्लभ नर अवतार रे ॥
 नवसमुद्रमां पामी न करे, धर्म ते मूढ गमार रे ॥ २१ ॥ शी० ॥
 संहरे त्रण जुवननैं मृत्यु, सहेजें क्रूर स्वभाव रे ॥ न विचारे एहनें
 वश आपण, किम धरे विषय विभाव रे ॥ २२ ॥ शी० ॥ अहितें
 वरतावे ते कारण, मुऊ उपर नहिं राग रे ॥ एम सांजली वहुउं दोय
 वूजी, लहे संवेग विराग रे ॥ २३ ॥ शी० ॥ शुद्धभावनायें कर्म
 खप्पां बहु, पामी देश चारित्त रे ॥ श्रद्धा अतिशयें कुमरनां पदजुग,
 प्रणमे अति सुविनीत रे ॥ २४ ॥ शी० ॥ विभ्रमवती कहे मोह गयो
 अम, उपनुं सम्यग नाण रे ॥ विषयरोग टलीउं नवजयथी, पीयु तुम
 वचन प्रमाण रे ॥ २५ ॥ शी० ॥ कामलता पण एमहीज जांखे, तव
 समरादित्य जासे रे ॥ नजें तुमें मानवनो नव पाम्यां, कुशल बुद्धि
 जिएं पासें रे ॥ २६ ॥ शी० ॥ तिणें तुम विषय त्याग घटे करवो,
 मोहजनित मोह हेतु रे ॥ मोहस्वरूप मोहानुबंधो, संक्लेश तिम
 समवेतु रे ॥ २७ ॥ शी० ॥ संक्लेश जनित ने संक्लेशहेतु, तिम संक्लेश
 अनुबंधे रे ॥ जाव जीव ठामो मोह चेष्टा, कुशल बुद्धिनैं संधे रे
 ॥ २८ ॥ शी० ॥ इत्यादिक वयणां सुणी अवणें, बोले वधूटी दोय रे ॥
 जाव जीव पञ्चसुं अमें अत्रम्ह, हरख्यो कुमर ते सोय रे ॥ २९ ॥ शी० ॥
 नवमे खंमैं ढाल अनोपम, आठमी अदभूत जांखी रे ॥ पद्मविजय कहे
 धन्य ए दंपती, जिएं एहवी मति राखी रे ॥ ३० ॥ शी० ॥ २९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरख्यो कुमर हैयाथकी, कहे अहो हलूआं कर्म; धन्यता उपशम
 धीरता, धारक अहो पतिधर्म ॥ १ ॥ इह लोकनी ईहा नहीं, अहो
 गंजीर अपार; एम चिंती आखे इरुं, साधु कसुं सुखकार ॥ २ ॥
 में पण जाव जीव सुणो, चोखुं व्रत कसुं चित्त; अहो अहो शोचन
 आदसुं, सुखथी कहे सहु मित्त ॥ ३ ॥ कुसुमवृष्टि देवें करी, उत्तम

अध्यवसाय; चिंते कुमर विचार एम, गुन परिणाम सुहाय ॥ ४ ॥ तदा
वरण क्यें तेहनें, अवधिज्ञान उप्पन्न; त्रिहुं काल जामे तदा, प्रगट सं
वेग प्रपन्न ॥ ५ ॥ व्यतिकर सुणि प्रथवीपति, प्रतिहारनें पास; सांनजी
राणी पण सवे, वलतो करे विखास ॥ ६ ॥ अणघटतुं अवनपति,
कहे काम ए कीध; राणी कहे रोती थकी, लाहविपय नवि लीध ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ पूठे प्यारीनें धनो प्रेमगुं हो ॥ ए देशी ॥

॥ इण समे आवी देवांगना हो ॥ सुणो नूपति ॥ दैये विराजे हार ॥
सहु मन मोहे जिहो राज ॥ मुकुट कुंमल कटकें करी हो ॥ सु० ॥ क
टिमेखना खलकार ॥ १ ॥ सहु० ॥ देवडुप्यथी शोहती हो ॥ सु० ॥
मणि नेउर रणकार ॥ स० ॥ बावना चंदन लींपीयुं-हो ॥ सु० ॥ सु
रतरु कुसुमने धारि ॥ २ ॥ स० ॥ मणि दीवापरें दीपती हो ॥ सु० ॥
सोमवदन अत्यंत ॥ स० ॥ देखी विस्मय पामीआ हो ॥ सु० ॥ ह
रष विषादें नमंत ॥ ३ ॥ स० ॥ बोले ताम देवांगना हो ॥ सु० ॥
म करो चित्त विषाद ॥ स० ॥ कुमरें घणुं जुगतूं कसुं हो ॥ सु० ॥
टाव्यो नव विखवाद ॥ ४ ॥ स० ॥ मोहमार्ग इणें साधीयो हो
॥ सु० ॥ अमृत ग्रहं तज्यूं जेर ॥ स० ॥ आपदा दूरें करी इणें हो
॥ सु० ॥ पुरुषातन इणि पेर ॥ ५ ॥ स० ॥ कुइता टाली उदारता
हो ॥ सु० ॥ कीधी अंगीकार ॥ स० ॥ तिणें कतारथ एह ठे हो
॥ सु० ॥ धन्य तुम कुज अवतार ॥ ६ ॥ स० ॥ राणी तुमें पण ठो
डि थो हो ॥ सु० ॥ नहिं शोचवा योग्य जेह ॥ स० ॥ शाश्वत सुख
इणें आदसुं हो ॥ सु० ॥ धन्य तुज कुख जिहां एह ॥ ७ ॥ स० ॥
बहुजननें शिव सुख तणुं हो ॥ सु० ॥ कारण तुज सुत नेम ॥ स० ॥
तिणें वेखास दूरें करो हो ॥ सु० ॥ नरपति कहे तव एम ॥ ८ ॥
स० ॥ कोण तुमें ठो ते कहो हो ॥ सु० ॥ देवी कहे सुण वाणि
॥ स० ॥ खड्ड प्रहरणें उलखी हो ॥ सु० ॥ सुदरिसणा अनिहाण
॥ ९ ॥ स० ॥ तुज सुतगुणअनुरागिणी हो ॥ सु० ॥ रहुं तुज नवन
मजार ॥ स० ॥ राय राणी सुणी हरखियां हो ॥ सु० ॥ धन्य गुणवं

त कुमार ॥ १० ॥ स० ॥ देवता पण रागी होय हो ॥ सु० ॥ देव
 ता बोले ताम ॥ स० ॥ कुमर प्रजाव घणो अढे हो ॥ सु० ॥ चालो
 जईयें ते ठाम ॥ ११ ॥ स० ॥ धर्मपिंद निहालियें हो ॥ सु० ॥ कहे
 ते करीयें काम ॥ स० ॥ देवी प्रणमीनें चालीयां हो ॥ सु० ॥ कुम
 र समीपें जाम ॥ १२ ॥ स० ॥ अवधें कुमरें जाणियुं हो ॥ सु० ॥
 हरपें उजा थाय ॥ स० ॥ प्रणम्या मावित्र पाउजें हो ॥ सु० ॥ बेठा
 आसण ठाय ॥ १३ ॥ स० ॥ प्रणमी पूढे तातने हो ॥ सु० ॥
 केम आच्या तुमें एथ ॥ स० ॥ अणघटतुं ए कीधळुं हो ॥ सु० ॥
 सुज नवि तेड्यो तेथ ॥ १४ ॥ स० ॥ नृप कहे देवीयें जांखीयुं हो ॥
 सु० ॥ तुम वृत्तांत अशेष ॥ स० ॥ राणी कहे गुणवंत तुं हो ॥ सु० ॥
 किम दीजें आदेश ॥ १५ ॥ स० ॥ कुमर कहे तुमें गुरुजना हो
 ॥ सु० ॥ तुम आणा करूं जेह ॥ स० ॥ गुणवंतपणुं सुज तो रहे हो
 ॥ सु० ॥ राय कहे सुणो एह ॥ १६ ॥ स० ॥ डुःकर काम तुमें
 कळुं हो ॥ सु० ॥ समरादित्य कहे वाणि ॥ स० ॥ नहीं डुःकर
 इहां सांजजो हो ॥ सु० ॥ चार पुरुषनुं कहाण ॥ १७ ॥ स० ॥
 केईक चार पुरुष हता हो ॥ सु० ॥ इव्य इबक तिहां दोय ॥ स० ॥
 दोय विषयना लोळुपी हो ॥ सु० ॥ मार्ग पडीवज्या सोय ॥ १८ ॥
 ॥ स० ॥ कोईक स्थानक पेखिउं हो ॥ सु० ॥ मणिरत्न कनकनी
 राशि ॥ स० ॥ नारी दोय रंजा समी हो ॥ सु० ॥ करती अति सुवि
 लास ॥ १९ ॥ स० ॥ जे पामळुं ते पामीआ हो ॥ सु० ॥ सन्मुख
 चाच्या ताम ॥ स० ॥ वाणी बई इण अवसरें हो ॥ सु० ॥ मा सा
 हस करो आम ॥ २० ॥ स० ॥ मस्तक उपरें पेखजो हो ॥ सु० ॥
 पर्वत पडशे एह ॥ स० ॥ कळुं जोतां देखिउं हो ॥ सु० ॥ रौद्रदर्श
 नची जेह ॥ २१ ॥ स० ॥ व्यापी रह्यो आकाशनें हो ॥ सु० ॥
 वाणी न शकीयें तेंह ॥ स० ॥ ते पण पडतो पेखीयो हो ॥ सु० ॥
 तास उपाय न रेह ॥ २२ ॥ स० ॥ इण समे वाणी सुणी तिहां
 हो ॥ सु० ॥ जे इहे अठकाम ॥ स० ॥ मरण जेहे ते इण परें

हो ॥ सु० ॥ बलिवलि लहे दुःख ताम ॥ १३ ॥ स० ॥ जेह निरीह ए
 दोयथी हो ॥ सु० ॥ नावे असारता तास ॥ स० ॥ तो क्रमें क्रमें
 दूरें खसे हो ॥ सु० ॥ काजें उपद्व नाश ॥ १४ ॥ स० ॥ तव एकेक
 ते चिंतवे हो ॥ सु० ॥ जे थानार ते थाय ॥ स० ॥ पण एतो नवि
 ठोडीयें हां ॥ सु० ॥ शीघ्र ते जेवा जाय ॥ १५ ॥ स० ॥ बीजा पण
 मन चिंतवे हो ॥ सु० ॥ अर्थ विषयगुं न फाज ॥ स० ॥ जेहना क
 दुःकर विपाक ठे हो ॥ सु० ॥ एम करी करता ताज ॥ १६ ॥ स० ॥
 दुःकर कार केहा कहो हो ॥ सु० ॥ तात विचारो चित्त ॥ स० ॥
 राय कहे जे प्रवृत्तिआ हो ॥ सु० ॥ जेवा विषयनें वित्त ॥ १७ ॥
 स० ॥ दुःकरकारी ते घणा हो ॥ सु० ॥ न विचारे जे विवाग ॥ स० ॥
 बीजानुं दुःकर किशुं हो ॥ सु० ॥ जुक्त करे जे ताग ॥ १८ ॥ स० ॥
 नवमी नवमा खंममां हो ॥ सु० ॥ समरादित्यनें रास ॥ स० ॥ पद्मवि
 जय शोहामणी हो ॥ सु० ॥ ढाल अधिक उल्लास ॥ १९ ॥ स० ॥ ३१७ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ पर्वत पडतो पेखीउं, ते आयु असराज; सुर असुरा नहिं आसरो,
 नीपण अति नयाज ॥ १ ॥ असमंजस कारक अति, विष सम
 जास विपाक; विषयनो त्याग बखाणीउं, अमृत सम आपाक ॥ २ ॥
 क्लेश रहित कुंअर कहे, सुखथी ए सेवाय; अर्थ त्याग पण इंगि
 परें, शुं दुःकर समजाय ॥ ३ ॥ राय कहे रुडुं कलुं. मोहमां पण मूजा
 य; कुमर पितानें तव कहे, दुरदंत ए दुःख दाय ॥ ४ ॥ सरण देखे
 निज मस्तकें, व्यापे जरा विशेष; वीर्य गले वारू परें, दिये वली गुरु
 उपदेश ॥ ५ ॥ दोष न आणे दृष्टिमां, करे अकारय काम; जिनवर देखा
 डयो जिके, न धरे धर्मनुं नाम ॥ ६ ॥ एम सांजली अवनीपति, जणे
 धरी शुन जाव; जेम कलुं ते तिमज ठे, देवी पण इंग दाय ॥ ७ ॥
 ॥ ढाल दशमी ॥

॥ माखीना गीतनी ॥ साहिब सांजल वीनति ॥ ए देशी ॥
 ॥ माय कहे वत्स सांजलो, अम बडपण ठे प्राय ॥ कुंअरजी ॥ तुम

उपदेश सुणो वली, चिंता नहीं तिणें कांय ॥ कुं० ॥ १ ॥ मा० ॥
 पण उदवेग ए उपजे, बाला यौवन वेष ॥ कुं० ॥ मन वंठित तस
 नवि थयुं, तिणें उदवेग विशेष ॥ कुं० ॥ २ ॥ मा० ॥ कुंअर कहे न
 करो तुमें, मन उदवेग लगार ॥ माताजी ॥ मन वांठित एहनुं थयुं,
 धन्य एहनो अवतार ॥ मा० ॥ ३ ॥ मा० ॥ मोह बीज एणियें जह्युं,
 सांनली एहवी वात ॥ माताजी ॥ बहूसुख साहामुं देखियुं. तव बो
 ली सुणो मात ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ तुमें स्नेहें करी एम कहो, पण
 तरीयुं अम काज ॥ मा० ॥ आर्यपुत्र घरणी तणो, शब्द जह्यो अमें
 आज ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ तुम प्रनावथी नीपनुं, अम मनवंठित
 जेह ॥ मा० ॥ धर्म कह्यो वीतरागनो, उपदेश्यो पीयु तेह ॥ मा० ॥
 ॥ ६ ॥ कुं० ॥ तिणें उदवेग न कीजीयें, राणी विचारे ताम ॥ कुं० ॥
 अहो रूपनें उपशम घणो, जाणे परमार्थ ते आम ॥ कुं० ॥ ७ ॥
 ॥ मा० ॥ गुरुनक्ति अहो केहवी, अहो अहो वयणविन्यास ॥ कुं० ॥
 अहो गंजीरता एहनी, एम चिंती कहे तास ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मा० ॥
 खड्गसेन पुत्रीतणुं, उचित ते घटतूं एम ॥ कुं० ॥ इणि परें करतां वा
 तडी, वात सुणो एक प्रेम ॥ कुं० ॥ ९ ॥ मा० ॥ विप्रपुरंदर नाम
 थी, राय जुवननें पास ॥ कुं० ॥ कोलाहल तिहां बहु थयो, जेह सु
 णी होय त्रास ॥ कुं० ॥ १० ॥ मा० ॥ राय कहे निज पुरुषनें, जा
 उं खबर करो एह ॥ कुं० ॥ कुंअर कहे मत जायजो, जांणुं तुं ठे जेह
 ॥ पिताजी ॥ ११ ॥ कुंअर कहे तुमें सांनलो ॥ ए आंकणी ॥ ए
 संसार विलास ठे, राय कहे ते केम ॥ कुं० ॥ कुमर कहे ए नट जे,
 अरध मुठ जव नेम ॥ पिताजी ॥ १२ ॥ कुं० ॥ तिणें सहु सज्जन रोवतां,
 नृप कहे दीगो आज ॥ कुं० ॥ कुंअर कहे कारण नहीं, मरणधर्मी
 नगराज ॥ पिता० ॥ १३ ॥ कुं० ॥ एहनें रोग हतो नहीं, नृप कहे
 किम मुठ एम ॥ कुं० ॥ कुमर कहे अवाच्य ठे, निंदित ठे वली तेम
 ॥ पिता० ॥ १४ ॥ कुं० ॥ नृप कहे संसारमां, गुं नहीं निंदित होय
 ॥ कुं० ॥ पण कैतुक मुज ए अठे, संनलावो तुमें सोय ॥ कुं० ॥

॥ १५ ॥ कुं० ॥ कोई विस्तार नहीं लहे, नहिं दुर्जन को एय
 ॥ कुं० ॥ कुंअर कहे मत एम कहो. सुणो जे नीपनुं तेथ ॥ पिता०
 ॥ १६ ॥ कुं० ॥ नर्मदा नारी ठे एहनें. तिणें दीधुं ठे जेर ॥ पिता० ॥
 मोकनो वैद्य उतावला. आणी मनमां महेर ॥ पिता० ॥ १७ ॥ कुं० ॥
 औपधें जीवे ते यया. वली एहनी जे पोज ॥ पिता० ॥ नैरुत कोणें
 कूतरो, ए पण एहनें तोज ॥ पिता० ॥ ॥ १८ ॥ कुं० ॥ एहज जेर
 ते दीधनुं. एहज विधि करो तास ॥ पिता० ॥ जीवशे तिणें ए विहुं
 जणां. रायनें ययो उद्वास ॥ पिता० ॥ १९ ॥ कुं० ॥ अहो ज्ञान
 जुउं कुमरनुं, एम कही वैद्यनें तेडि ॥ पिता० ॥ शिखवीनें तिहां सू
 कीआ, निज नरनें ते केडि ॥ पिता० ॥ २० ॥ कुं० ॥ नूप पूठे हवे
 कुमरने, गुं इण मारण हेत ॥ कुं० ॥ कुसर कहे अविवेक ठे, तो
 पण ए संकेत ॥ पिता० ॥ २१ ॥ कुं० ॥ बाहाजी पुरंदरने घणी, तो
 पण नारी अज्ञान ॥ पिता० ॥ अर्जुनदास जे निज घरे, तेहगुं लागो
 तान ॥ पिता० ॥ २२ ॥ कुं० ॥ श्रवण परंपरा सांजव्युं. मान्युं न विप्रें
 तोहि ॥ पिता० ॥ एम केई काल बही गयो, मात कहे हवे सोहि
 ॥ पिता० ॥ २३ ॥ कुं० ॥ पुत्र न सुंदर बहू अठे, उवेखे ठे केम
 ॥ पिता० ॥ याय संतान नाश वली, सांजव्युं विप्रें एम ॥ पिता० ॥
 ॥ २४ ॥ कुं० ॥ सांजजी बाडव चिंतवे, एम चांखे ठे जात ॥ पिता० ॥
 प्राणप्रिया ए नारी ठे, किम होशे ए वात ॥ पिता० ॥ २५ ॥ कुं० ॥
 दशमी नवमा खंडमां, पद्मविजय कही ढाल ॥ पिता० ॥ समरादित्यना
 रासमां, आगल वात रसाल ॥ पिता० ॥ २६ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सासु बहूने संप नहीं, एहवो पण अवदात; वली विशेषशी गुण
 वती, मत्सर नहीं सुऊ मात ॥ १ ॥ एटला काल जगें अहीं, चेद न
 जाण्यो नाय; नारी पण ठे निर्मली, ज्यो कीजें व्यवसाय ॥ २ ॥ चंचल
 नारी ते चित्तशी, एम चांखे अणगार; ते पण नवि थाये वितथ, वि
 षमा कामविकार ॥ ३ ॥ परीक्षा करूं तिणें पाधरी, एम चिंती एकां

त; चाखे नर्मदा जामिनी, समजो मन धरी खांत ॥ ४ ॥ सहिपति
आणायें माहरे, जवुं माहेसर जाम; शीघ्र आवीश हुं सुंदरी, केईक
दिन ठे काम ॥ ५ ॥ रहेजो रूढी रीतिगुं, नर्मदा कहे तव नारि; आर्य
पुत्र हुं आवगुं. नहिं रहुं हुं निरधार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अई प्रीतमगुं एकवार,
सलूणी वोजो हो ॥ ए देशी ॥

॥ तुम विण हुं नवि रही शकुं रे, एम कही रुदन करेय ॥ पुरंदर कहे
सुंदरी, जेहें कायरता स धरेय ॥ १ ॥ चरित्र नहिं रूढुं हो ॥ अहो
कोई न लहे एहनो पार ॥ चरि० ॥ माहरे तिहां कांय दुःख नथी रे,
तव कहे वचन प्रमाण ॥ पण जो मोडा आवशो तो, माहारां जाशे
प्राण ॥ २ ॥ चरि० ॥ बीजे दिवसें निकळ्यो रे, बाहिर दिवस गमाय ॥
रजनीयें पेठो गेहमां, करी माया रह्यो एक ठाय ॥ ३ ॥ चरि० ॥ म
थ्यगतें वासगेहमां रे, सूतां दीठां दोय ॥ सुरतप्रयासना खेदथी रे,
निशामां आव्यां सोय ॥ ४ ॥ चरि० ॥ कोपें अति घणुं कलकळ्यो रे,
नाठो दूरें विवेक ॥ चिंतवे यत्नगुं पालवी, नारीनें ते आपनी टेक ॥ ५ ॥
॥ चरि० ॥ पण अर्जुन ए दुष्ट ठे रे, नोगवे माहारी नारि ॥ माळूं एहनें
चिंतवी. कळ्यो सूतानें परहार ॥ ६ ॥ चरि० ॥ मारी ते वासना गेहथी
रे, रहीउं घर एक देश ॥ जोवुं नारी हवे गुं करे, तिहां रुधिर फरस
थयो जेश ॥ ७ ॥ चरि० ॥ तेहथी जागी जोईगुं रे, मरण लह्युं ते
जार ॥ चिंतवे हाहा मरी गयो, सुज जेहगुं अतिशय प्यार ॥ ८ ॥
चरि० ॥ मंदनागिणी हुं घणी रे, किलें माख्यो सुज स्वामि ॥ मारि
न मुज्जे पापीयें, किम जीवती रहुं ऽण ठाम ॥ ९ ॥ चरि० ॥ गई हवे
रतिसुखनी कथा रे. एम चिंती खणे खाड ॥ घाळ्यो अर्जुनने तिहां,
दुःख धन्ती अति गाढ ॥ १० ॥ चरि० ॥ जोईनें हवे नीकळ्यो रे, पोहोतो
ऽद्वित ठाण ॥ ता पण तिण आनक करे, वेदिका तस तनु अहि
नाण ॥ ११ ॥ चरि० ॥ नारी नहीं रूढी हो ॥ ए आंकणी ॥ दीप करे
नें घलि दीवे रे, पूजे प्रतिदिन तास ॥ आलिंगन वली तिहां करे,

एम स्नेहें अन्नाण विजास ॥ १२ ॥ नारी० ॥ आब्यो पुरंदर अन्यथा
 रे, देखाडयो न विकार ॥ कंइक दिन एणि परें जतां, देखे पूजा नित्य
 जार ॥ १३ ॥ नारी० ॥ चिंतवे अहो ए मूढता रे, अहो कहवो ते
 राग ॥ अथवा एहवी शास्त्रमां, चांखी ठे नारी अनाग ॥ १४ ॥ नारी० ॥
 पण सुधाधार नारी कही रे, कृपियें शास्त्र मजार ॥ तिणें सन माने
 ते करो, मुज काज न तास जगार ॥ १५ ॥ नारी० ॥ एम चिंतवी
 पूरव परें रे, जोगवे तेहजुं जोग ॥ बार बरस एम वही गयां, एतो
 मोहनी कर्मना जोग ॥ १६ ॥ नारी० ॥ एम करतां गत पाचमे रे,
 दिवसें रांध्यूं अन्न ॥ ब्राह्मणनें जमाडवा, पण नारीतुं जारमां सन्न
 ॥ १७ ॥ नारी० ॥ ब्राह्मण जमवा पूरवें रे, तिहां कसुं वजितुं दान ॥
 तव पुरंदर देखी करी, हसीनें कहे इणि परें वाणि ॥ १८ ॥ नारी० ॥
 हजीअ एगुं करो सुंदरी रे, सांजजी करे विचार ॥ निश्चय माखो मुज
 प्रति, तिणें बोजे ए इणें प्रकार ॥ १९ ॥ नारी० ॥ जो मारुं ए हाथ
 गुं रे, तो जेवाये बैर ॥ एम चिंतीनें आपीयुं रे, जोजन साहिं जेर
 ॥ २० ॥ नारी० ॥ ए व्यतिकर सुणी पूठीयुं रे, नूपें एम कुमार ॥ था
 ननें जे कारण दीउं रे, जेर कहो ते विचार ॥ २१ ॥ नारी० ॥ कुम
 र कहे ए कूतरो रे, आवी वेसे ते ठाम ॥ निजप्रिय उपडव जाणीनें
 रे, एहनें पण दिउं ताम ॥ २२ ॥ नारी० ॥ सात बार अर्जुन नणी
 रे, माखो इण नारि ॥ ते सुणजो हवे प्रथमथी, कमी उपनो देह
 मजार ॥ २३ ॥ नारी० ॥ तिहांथी गृहकोकिल थयो रे, उंदरनें
 वली जेक ॥ वली अजसीउं उपनुं तिम, सरपपणें अविवेक ॥ २४ ॥
 ॥ नारी० ॥ सातमे नव ते कूतरो रे, मारे सधजे नारी ॥ विषयथकी
 एम डःख जहे, अहो धिक् धिक् ए संसार ॥ २५ ॥ नारी० ॥ रागें राणी
 नें मारती रे, ते पण निज अन्नाण ॥ थानक नवि सूके किमे, अहो
 मोहशक्ति अप्रमाण ॥ २६ ॥ नारी० ॥ थान तणो व्यतिकर सुणी
 रे, नूपति लह्यो संवेग ॥ अहो संसार असारता, कर्म विचित्र पणुं
 अतिरेग ॥ २७ ॥ नारी० ॥ नवमा खंडमां ए कही रे, अगीआरमी

ए ढाज ॥ पद्मविजयें एह रासमां, सुणतां होय मंगलमाल ॥ १७ ॥
॥ नारी० ॥ सर्व गाथा ॥ ३९३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वैद्य आब्या इण अवसरें, जीवाड्यो कहे जाम; उद्योत अयो इ
ए अवसरें, देव डुंडुजिनदें ताम ॥ १ ॥ सांजले गीत शोहामणां, कहे
कहो रायकुमार; एह किछुं अदचूत अठे, बलि कहे कुमर विचार
॥ २ ॥ गुणधर्म शेरनो सुत गुणी, जिनधर्मनामैं जाण; आजज सुर
मां अवतखो, निश्चय अवधी नाण ॥ ३ ॥ मित्रनारी समजाववा, इ
हां ते आव्यो एह; प्रतिबोधी पाठां जतां, रुद्धि देखाडी रेह ॥ ४ ॥
सुगपद पाम्यो किम सखर, प्रतिबोध्या केणी पेर; कुमर कहे ए केम
कहुं, वाच्य नहीं ए धेर ॥ ५ ॥ तुम आग्रह्यी तातजी, पनछुं तास
प्रकार; जिनमत जावित जिनधरम, वसे न विषयविकार ॥ ६ ॥

॥ ढाज वारसी ॥ जंघु जरत नू जामिनी ॥ ए देशी ॥

॥ जावना जावे जावजुं, न गमे मनमां संसार रे ॥ धनदत्त मित्र एक
तेहनें, बंधुजा नामैं निज नारी रे ॥ १ ॥ पण ते धनदत्तजुं रमे, बहु
काल गमायो एम रे ॥ जिनधर्मतो इह लोकनी, नवि राखे अपेक्षा
प्रेम रे ॥ २ ॥ विण संजलावे कुटुंबने, शून्यघरमां काउस्सग रातें रे ॥
गहिया हवे जे बंधुजा, धनदत्त संकेत कखो वातें रे ॥ ३ ॥ ते शू
न्य घरमां आवीआं, एक पढ्यंक लेई ते डुछ रे ॥ पाईये खिजा लोह
ना. ढाढ्यां पढ्यंक पापें पूठ रे ॥ ४ ॥ जिनधर्मना पग उपरें, आव्यो
खीजो पग विंधाणो रे ॥ ते उपरें बिहुं जण चढ्यां, करे आलिंगन
अन्नाणो रे ॥ ५ ॥ मेषुन सेवे मोहजुं, तस जारें जेव्यो अत्यंत रे ॥
खीजो पेटो पृथिवीमां, जिनधर्मनें वेदना अनंत रे ॥ ६ ॥ कुशलबुद्धि
निदां चिंतवे, अहो विषय मुंजावे जीव रे ॥ शीज जाये दुरगति पडे,
निदां दुःख महे अतीव रे ॥ ७ ॥ धन्य मुनि सम सुख वखा, दूरें ठं
मया नारीना संग रे ॥ हुंतो न तजुं ए संगनें, घरमां रह्यो राखुं रंग
रे ॥ ८ ॥ मित्रनें निज जायां जणी, न करी शकुं जाव उपगार रे ॥

तो बीजानी श्री वारता, आत्मनरी आउं असारी रे ॥ ए ॥ अहो अ
हो दुःख हेतु थयो, अहो मुज संगति पण एह रे ॥ क्लिष्ट चेष्टा करे
एहवी, इह लोकें पण दुःख जेह रे ॥ १० ॥ परजव जाये दुर्गति,
हुं शानो कल्याणमित्रो रे ॥ कल्याणमित्र संगल करे, तेतो हुं थयो
एम अमित्रो रे ॥ ११ ॥ चार नहीं मुज एहमां, तेणें समरुं पंच न
वकार रे ॥ एम करी समरे तेहने, वली संनारे देव अणगार रे
॥ १२ ॥ पढमं ह्वई संगलं, कहेंतां तूटां तस प्राण रे ॥ ब्रह्मलोकमां
उपनो, प्रयुंजतो अवधिनाण रे ॥ १३ ॥ देवकृत्य कीया विना, आ
व्यो करुणा सन आणी रे ॥ मित्रनारी प्रतिबोधवा, करे एम विचार
सुजाण रे ॥ १४ ॥ राग अति एहनें अठे, तस नय विण नहिं प्रति
बोध रे ॥ एम करी माया मूकतो, वेदना अतिसुख विरोध रे ॥ १५ ॥
ग्रहेवाणी विशूचिकार्यें, अशुची चीकणुं जंवाल रे ॥ दुर्गंध अशुचि
नरुक्क जणी, पण जागे अति विकराल रे ॥ १६ ॥ दोय पासां चेदा
ईआं, हाहा सरण लहुं तूं एम रे ॥ वलगे धनदत्तनें वली, जंवाले
खरडाये ते तेम रे ॥ १७ ॥ पाप परें लिंपाईउं, महा अरति उपनी
अंगें रे ॥ अहो अहो ए गुं वनी गयुं, एम चिंतवे मननें जंगें रे ॥ १८ ॥
उत्तरवा कांय मांणीयुं, सा चिंतवे नेहगुं एतो रे ॥ बोले मरुं बहु
वेदना, अंग जांगे दुःख समेतो रे ॥ १९ ॥ ते कहे हुं गुं कहुं इहां,
माहारो नहीं कांई चारो रे ॥ सा कहे शरीर उलाशीयें, उलांसे तव
तिणी वारो रे ॥ २० ॥ कहे मुज हाथ चाले नहीं, कोई मूर्तिमंत
ए पाप रे ॥ ए सरीखुं तो दीतुं नहीं, अरतें ग्रहेवाणो आप रे ॥
॥ २१ ॥ सा चिंते मुज पापयी, ए उदयें आव्या रोग रे ॥ देवसमो
पति वंचीयो, कयुं विरुद्ध उजयलोग रे ॥ २२ ॥ पामी संवेगने रो
वती, हा आर्यपुत्र एम कहेती रे ॥ धनदत्त पण एम चिंतवे, अहो
दुःख समुदाय वहेती रे ॥ २३ ॥ ए संसार असार ठे, एह काया
अशुचि जंमार रे ॥ प्रिय मित्र वयण ते सांजल्यां, सुख नोगव्यां त
स उपगार रे ॥ २४ ॥ जेहवी में चेष्टा करी, तेहनां फल हुए पाम्यो

रे ॥ रे मित्र में मातुं कखुं, एम कहेतां मोह कांई वाम्यो रे ॥ १५ ॥
 जाणी समय प्रतिवाधनो, शवपूजण मिश करी आयो रे ॥ सुर निज
 रूप प्रगट करी, पूजा करे शव निरमायो रे ॥ १६ ॥ दरिखण दीतुं
 दोय जणे, वेदना पण थई उपशांत रे ॥ देखी देखी दोयें वंदीआ, अहो
 शक्तिरूपनें कांति रे ॥ १७ ॥ पूढे स्वामी तुमें कोण ठो, किम आव्यां
 आयो ठाम रे ॥ ते कहे हुं सुर आवीयो, जिन धर्म विंव पूजा काम
 रे ॥ १८ ॥ ते कहे किहां जिन धर्मनी, प्रतिमा तव तिणें देखाडी
 रे ॥ देखी चित्तमां चिंतवे, ए जीवरहित मानुं ठाडी रे ॥ १९ ॥ क्कोन
 लही कहे ए किशुं, इहां ज्यो परमार्थ वखाणो रे ॥ सुर परमार्थ कहेतां
 यकां, पाय प्रणमे धरी बहु मानो रे ॥ २० ॥ नवमे खंमैं बारमी,
 कही पद्मविजय एम ढाल रे ॥ समरादित्यना रासमां, सुणो आगल
 वात रसाल रे ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूढे सुरनें इणि परें, जिनधर्म किहां सुजाण; देव कहे थयो देवता,
 विंथ्यो कीज विआण ॥ १ ॥ दीठो तिमहीज दक्ष्यी, कहे अहो कीध
 अकळ; मूर्ता विहुं जण पामीआं, सुर करतो वली सज्ज ॥ २ ॥ ल
 घुना पाम्यां लाजथी, मरवानें उजमाल; देखी निवारे देवता, श्ये करो
 मरण संजाल ॥ ३ ॥ ते कहे जाणो सवि तुमें, अमशुं पूढो आम;
 सुर कहे मरणथकी सखुं, करो तस उपदेश काम ॥ ४ ॥ उपदेश
 योग्य अमें नही, ते कहे गया ते मित्त; सुर कहे योग्य अठो सखर,
 पश्चात्ताप पवित्त ॥ ५ ॥ पाप करे पण पापीआ, पश्चात्ताप न प्राय;
 क्लिष्टकर्मो तेहज कक्षा, शास्त्रें सहु समजाय ॥ ६ ॥ जिनधर्म गया
 न जाणजो, तेहज हुं तुम पात; परिणति कर्मनी पामीनें, वरते मोह
 विजाल ॥ ७ ॥ धर्म शरण करो धसमसी, जिम नवि होये जंजाल;
 ते कहे करशुं तोहि पण. करशुं काल अकाल ॥ ८ ॥ आजथी तुम
 वचनें अमें. जाणुं अकारय जाम; किम जीवन धरीयें कहो, निर्जर
 जहि परिणाम ॥ ९ ॥ जिनवरें नांख्यो जेणि परें, दीथो तिम उपदेश;

सर्वविरति करी सामटी, अणसण कीध अज्ञेय ॥ १० ॥ नवस्वरूप
तिहां नावतां, संवेगें करी शुद्ध ॥ दुःकृत निंदा दाखतां, अतिशय ते
अवबुद्ध ॥ ११ ॥ अमर इहांथी उतपल्यो, कस्युं जे धाखुं काज ॥ सां
नली लह्यो संवेगनें, रूढी परें महाराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ जेठ सेनापति वार्द्धिको, पुरोहितनें परधान वे ॥

॥ केड न मूके कामिनी, सहस्र वत्रीश राजान वे ॥ ए देशी ॥

॥ राय कहे वत्स साचलूं, नवचेष्टा असराल वे ॥ जलकल्लोल परें
देखियें, साची ए इंदुजाल वे ॥ १ ॥ कुंअर संवेगें पूरीयो, पूरीउ वे
दुःख चूरीयो वे ॥ कुं० ॥ ए आंकणी ॥ कल्याण मित्र ते दोहिजा,
एहवानें पण कीध वे ॥ एहवा गुणनी योग्यता, शिवसुख कर
तल दीध वे ॥ २ ॥ कुं० ॥ सद्गुरु कहे सत्य कस्युं तुमें, सद्गुरे
लह्यो वैराग वे ॥ नृप कहे उपजगे किहां, कहो कुंअर वड नाग वे ॥
॥ ३ ॥ कुं० ॥ सौधमें सुरवर अज्ञे, नृप कहे अणाचार वे ॥
कुमर कहे तो गुं अयुं, पश्चात्ताप अपार वे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ विरति परि
णाम एहना थया, तिणें दुर्गति नवि जाय वे ॥ जो अप्रमादशी आ
चरे, तो गुन परंपरा आय वे ॥ ५ ॥ कुं० ॥ राय कहे एहवा नणी,
किम ए होये जोग वे ॥ कुमर कहे विचित्रता, कर्मपरिणाम आ
नोग वे ॥ ६ ॥ कुं० ॥ एहनी प्रवृत्ति अकुशल तणी, नहिं अति संक्लेश
सार वे ॥ एक प्रवृत्तिमात्रज हतां, अनुबंध रहित विचार वे ॥ ७ ॥ कुं० ॥
आगमरीतें चालीआ, लागो नहीं अतिचार वे ॥ नृप कहे साचुं ते
विना, किम नवभेदन सार वे ॥ ८ ॥ कुं० ॥ कुमर कहे धाखुं खरुं,
विनति करुं वली एक वे ॥ ए संसार अनर्थमां, आपद ठे अतिरेक वे
॥ ९ ॥ कुं० ॥ मन न रुचे इहां माहळूं, हरखें आपो आण वे ॥
गुरु आणायें प्रवृत्ततां, काम चढे परमाण वे ॥ १० ॥ कुं० ॥ तिणें
आणा मुज आपीयें, एम कही पडीउ पाय वे ॥ राय कहे वत्स सांन
जो, आ सधलो समुदाय वे ॥ ११ ॥ कुं० ॥ सद्गुरु एह परिणाम ठे,
तिणें अमें दीधी आण वे ॥ अथवा अम गुरु ठो तुमें, अदभुत निरम

ल नाण वे ॥ १२ ॥ कुं० ॥ काम न पूठणतुं रहुं, अह्म तुम कीजें उ
 चित वे ॥ कीथ प्रसाद ते तातजी, कुमर कहे सुविदित वे ॥ १३ ॥
 ॥ कुं० ॥ तुमें पण जुगतुं आदखुं, एम कहेतां अयो जोर वे ॥ वाज्यां
 तूर प्रजातनां, बंदीजन करे सोर वे ॥ १४ ॥ कुं० ॥ तम गथुं ने रवि उ
 गीत, वाया प्रजातना वाय वे ॥ विरह टव्यो चक्रवाकनो, मलीया अ
 मात्य समवाय वे ॥ १५ ॥ कुं० ॥ कुमरचरित्र संजलावीयुं, नृपें कह्यो
 निज अतिप्राय वे ॥ ते पण हरख्या सांजली, घटतुं कीधुं राय वे ॥
 ॥ १६ ॥ कुं० ॥ कुमर चिंतामणि सारिखा, नूप कहे ए एम वे ॥ वि
 लंब न कीजें एहमां, उचित करो धरी प्रेम वे ॥ १७ ॥ कुं० ॥ आण
 प्रमाण करी तिणें, वरवरीया घोषाय वे ॥ सहु देहरे पूजा रची,
 दान मद्दा देवाय वे ॥ १८ ॥ कुं० ॥ पुरजननें सनमानीत, बंदीवान
 मूढाय वे ॥ राज्य ठवे जाणेजनें, मुनिचंद नाम सुहाय वे ॥ १९ ॥
 ॥ कुं० ॥ गुरुजननी पूजा करी, शुनदिन करण सुहुत्त वे ॥ राय राणी
 मित्रवृंदणुं, नारी विदु संजुत्त वे ॥ २० ॥ कुं० ॥ नट पुरंदरणुं वली, पु
 रिजननें परधान वे ॥ वेठां शिविकायें सहु, वली सामंत राजान वे
 ॥ २१ ॥ कुं० ॥ मंगज तूर वजावते, नाचंते वर पात्र वे ॥ बंदि विरुद
 बोली जते, लोकनें हर्ष अमात्र वे ॥ २२ ॥ कुं० ॥ अर्ध्यवसाय व
 धते अके, विस्मय पामे लोक वे ॥ पापराशिनें खपावतो, जोवे जन
 थोकें थोक वे ॥ २३ ॥ कुं० ॥ बहु आमंवरें नीकव्यो, नयरी बाहिर
 कुमार वे ॥ पुष्पकरंम उद्यानमां, आवे बहु परिवार वे ॥ २४ ॥ कुं० ॥
 नाम प्रजास सूरि तदा, पाउ धाव्या तिणें वार वे ॥ चौनाणी चारित्री
 या, वंदे तिहां अणगार वे ॥ २५ ॥ कुं० ॥ सुरवर तस पूजा करे,
 विधिपूर्वक तस पास वे ॥ दीक्षा जिननी आदरे, पामी गुरुनो वास
 वे ॥ २६ ॥ कुं० ॥ इंइं तिहां पूजा करी, तिम मुनिचंद राजान वे ॥
 पुनमां सहु देहरे करे, अछाई महोत्सव तान वे ॥ २७ ॥ कुं० ॥ प
 टह अमारि वजावीया, हरख्या पुरिजन साथ वे ॥ समरादित्य प्रमु
 न सहु, आण पाले जगनाथ वे ॥ २८ ॥ कुं० ॥ नवमे खंमे तेरमी,

ढाल अधिक उल्लास वे ॥ नांखी पद्मविजयें इत्ती, समरादित्यनें
रास वे ॥ १९ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक प्रशंसा लख करे, सांनजी ते गिरिसेण ; कलुपित चित्त क्रोधें
थयो, जाणो इणि परें जेण ॥ १ ॥ मूढजोक मातुं करे, मूरखनुं बहु
मान ; डुराचार ए देखीनें, अधिकुं हाय अनिमान ॥ २ ॥ मारुं एह
नें मूजयी, तो सुख शाता थाय ; हाथें माहरे ए दवे, निश्चय आवशे
न्याय ॥ ३ ॥ ठानां खोले ठिड्नें, गिरिसेन तेह गमार ; सुनिवर संज
म मालता, गुरु चरणें गुण धार ॥ ४ ॥ पूर्वान्यास पणो करी, अल्प
कालें अदभूत ; जणिआ दादशांगी जला, पूरव चौद प्रभूत ॥ ५ ॥
क्रियाकलाप सहु कल्या, वाचक पद ठावंत ; विहार करंता सुनिवरु,
ग्रामानुग्राम गमंत ॥ ६ ॥ साधुना समुदायथी, करता जवि उपगार ;
अयोध्या पुरी आवीआ, आवक साथें सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥ टेक रहीरे शहेर जहचके मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ सुनिवर आया रे, नयरी अयोध्या मेदान ॥ संघ सहु जाया रे, नमवा
चैत्य निदान ॥ ए आंकणी ॥ जकावतार चैत्य मनोहार, रुपन देव
प्रतिमा अवधार, दीतुं ते उद्यान मजार, नयरी शोहे रे. इण देहरें
निरधार ॥ उज्ज्वल दीपे रे, शंख कुंद अनुहार ॥ गगनें अडीआ रे, ध्वज
पट अतिहि विस्तार ॥ १ ॥ सुनि० ॥ दीसे मानुं देव विमान, तोर
ए मणिमय थंन सुवान, शालिचंजिका करती तान, रयण समूहें रे.
वांध्युं कोटिम तास ॥ शोहे गंनारो रे, रयणना दीव प्रकाश ॥ सुरतरु
फूलें रे, पूज्या जिनवर खास ॥ २ ॥ सुनि० ॥ सेवा करवा सुरवर
आय, तिम चारण जाणो रुपिराय, नारी मधुर स्वरें गीत गाय,
कृष्णागरुना रे, धूप अतिशय आय ॥ दश दिश व्यापे रे, सुनि करे स्त
वना जिनराय ॥ सिद्धजन सुणतां रे, परमारथ निरमाय ॥ ३ ॥ सुनि० ॥
देखी मणिमय तिहां सोपान, चढिने वंदे जिन जगवान, लोकालोक
जाणो जेह ज्ञान, वंदि बेठा रे, समरादित्य एक देश ॥ चारण सुनि रे,

विद्याधर सुविशेष ॥ आवी नमीया रे, मुनिवर चरण अशेष ॥ ४ ॥
 मुनि० ॥ इण अवसरें परसन्न चंदराय, स्वामी अयोध्यानो ते आय,
 समरादित्य आव्या मुनिराय, जाणी राजा रे, लेई निजपरिवार ॥ वंद
 वा आवे रे, हैयडे हरख अपार ॥ प्रभुजी पूजी रे, आच्यो जिहां अण
 गार ॥ ५ ॥ मुनि० ॥ प्रणमी वेतो मुनिवर पास, पूठे प्रश्न धरी उ
 लास. नाजीनंदन इहां सुणीयें वास, धर्मना चक्री रे, प्रथम कहा
 ग्रंथें तेह ॥ तोशुं पहेजां रे, धर्महतो नहीं एह ॥ जो हतो पहेजां रे,
 तो केम प्रथम कहेह ॥ ६ ॥ मुनि० ॥ मुनि कहे नरत क्षेत्रमां
 जांय, इण अवसर्पिणी पहेजां होय, पण धर्म न होतो मत जहो
 कोय. ठे अनादि रे, तीर्थकर जगवंत ॥ तेहनो जांख्यो रे, धर्म अना
 दि वहत ॥ नूपती जांखे रे, जांखो करुणा रे वंत ॥ ७ ॥ मुनि० ॥ सद्गु
 खेत्रें अवसर्पिणी एम, मुनि कहे एहवुं कहियें केम, नरत ऐरवतें
 पंचे नेम, महा विदेहें रे, ठे अवस्थित काल ॥ जिनपति नित्यें रे, षट
 जीवना प्रतिपाल ॥ अंतर नाहीं रे, चक्री वासुबल जालि ॥ ८ ॥ मुनि० ॥
 नरत ऐरवतें अनियत काल, वार आरे कालचक्र विशाल, चढतो
 पडतो होय नरपाल. सागर वीश रे, होये तास प्रमाण ॥ अवसर्पिणी
 रे, ठे आरे करी जाण ॥ उत्सर्पिणी रे, तेहज रीति वखाण ॥ ९ ॥
 मुनि० ॥ अवसर्पिणीमां पहेलो जेह, चार कोडाकोडि सागर तेह,
 सुसम सुसमा नामें एह, सुसम बीजो रे, त्रण कोडाकोडी मान ॥
 सुसम सुसमा रे, वे कोडाकोडी मान ॥ त्रीजा आरा रे, केरूं ए अनिधा
 न ॥ १० ॥ मुनि० ॥ ऊणा वेंतालीश हजार, वरस सागर कोडाको
 डी धार, सुसम सुसमा इण परकार, पांचमो आरो रे, वरस सहस
 एकवीश ॥ सुखमा नामें रे, ठे पण ए वरीश ॥ सुखम सुखमा रे, महा
 सुखवंत मनीश ॥ ११ ॥ मुनि० ॥ पहेले आरे त्रण पत्य आय, त्रण
 गाठ उंची तम काय, कल्पवृक्ष मनवंठित दाय, दश ठे जाति रे, पही
 जा मत्तंग तह ॥ मदिरा सवली रे, तिणहीज ठामें पसह ॥ जंगमां
 दिस रे, नाजननी विधि जह ॥ १२ ॥ मुनि० ॥ त्रुटितांगें वाजित्र अने

क, दीप शिखानामें वली एक, दीपपरें दीपे सुविवेक, जोईस नामें
रे. करता तेह उद्योत ॥ चित्रांग वृद्धें रे, फूलमाल सवि होत ॥ चित्र
रसैं जाणो रे. नोजनविधि सुख सोत ॥ १३ ॥ मुनि० ॥ मणिअंगमां
होये अलंकार, नवन रुखमां गेह प्रकार ॥ अनिगणमां सहु वस्त्र वि
चार, संज्ञा नाहीं रे, धर्माधर्म विगोष ॥ आरानी आदि रे, जाणो एह
अगोष ॥ घटतुं जाये रे, तिहांथी सहु लवलेष ॥ १४ ॥ मुनि० ॥ बीजे
आरे दोय पव्य आय, दोय गाउनुं शरीर ते आय, लक्षणवंतानें
निरमाय, घटतां आयु रे. वली प्रमाण शरीर ॥ त्रीजानी आदें रे, सांनज
तुं नरवीर ॥ एक पव्य आयु रे, एक गाउ तनु धीर ॥ १५ ॥ मुनि० ॥
तेहनें अंतें पहेलो राय, जगत तणी स्थिति सहु वतलाय, सुर अ
सुरा सहु पूजनिक आय, धर्मेना चक्री रे, पहेला अरिहा जिणंद ॥
चिहुं विधें धर्म रे, उपदेशे सुखकंद ॥ अनुक्रमें पामे रे, शिवसुख परम
आणंद ॥ १६ ॥ मुनि० ॥ नवमे खंमें चौदमी ढाल, नांखे उत्तमवि
जयनो बाल, समरादित्यनो रास रसाल, सुणतां होवे रे, घर घर मंग
लमाल ॥ सांनलो आगें रे, नविका अइ उजमाल ॥ जिम तुमें पामो
रे, लीला लखी विशाल ॥ १७ ॥ मुनि० ॥ सर्व गाथा ॥ ४९९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आरो चोथो आदि ते, पंचगें धनुष प्रमाण; काया आयु पूरव
कसुं, चुलसी लख पहिचाण ॥ १ ॥ वावरता अन्न वारिनें, धर्मा
धर्म ते धार; तीर्थकर चक्री तथा, बज वासुदेव तिवार ॥ २ ॥ पंचम
आरो पामतां, आयु वरस शत एक; सातज हाथ शरीर ठे, वारू
धर्मविवेक ॥ ३ ॥ तीरथ अंतिम जिन तणुं, चाले रूढी चाल; ठे
आरे ठटकीयुं, शरीर आयु संजाल ॥ ४ ॥ वरष शोल आयु वहुं,
ऊंचुं कर तनु एक; मांसाहारी अतिमलिन, बलि नही धर्मविवेक ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ सरवर शूकां बे लाल, हंसा दुःख धरे ॥

सरोवर उरें बे लाल, जाई चित्त धरे ॥ ए देशी ॥

॥ उलटि जाणो बे लाल, उत्सर्पिणी वली ॥ कालचक्र जाणो बे लाल,

इणिपरें दोय मली ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ दोय मली धारो मत विचारो,
 धर्म न हतो पूरवें ॥ मोह टाळ्यो कखो अनुग्रह, नूप इंणी परें वीनवे
 ॥ २ ॥ इण समे आयो वे लाल, माहण एक नलो ॥ इंडशर्मा नामें
 वे लाल. मद्यव गुणनिलो ॥ ३ ॥ त्रुण ॥ गुणनीलो गरढो बुद्धिवंतो,
 वंदि पूठे इंणी परें ॥ जगवान तुमचा शास्त्रमाहिं, कर्म जांख्यां
 जिनवरें ॥ ४ ॥ ते कर्म वे लाल, बांधे किम कहो ॥ गुरु कहे सुणजो
 वे लाल, सुणीनें सरदहो ॥ ५ ॥ त्रुण ॥ सरदहो नाणनी प्रत्यनी
 कता, उलंवे करे अंतराय ए ॥ आशातना करे ज्ञानी उपरें, वेष कर
 तो धाय ए ॥ ६ ॥ जांखे अवलुं वे लाल, ज्ञानावरणनें ॥ बांधे कर्म
 वे लाल, नवि लहे करणनें ॥ ७ ॥ त्रुण ॥ दरसन तणी प्रत्यनीकता
 एम, जाव अवलुं जांखतो ॥ दर्शनावरणी कर्म बांधे, चित्त थिर नवि
 राखतो ॥ ८ ॥ करे अनुकंपा वे लाल, दुःख नवि आपतो ॥ शोक संता
 प वे लाल, परनां कापतो ॥ ९ ॥ त्रुण ॥ कापतो परनी वली पीडा, बांधे
 जाता सुख जणी ॥ विपरीतथी अशात बांधे, वात सांजलो मोहणी
 ॥ १० ॥ क्रोधनें मान वे लाल, माया जोहनें ॥ मिथ्याचरण वे लाल, तीव्र
 करे मोहनें ॥ ११ ॥ त्रुण ॥ बांधे मोहनी कर्म इंणी परें, हवे पंचिंदि वध
 करे ॥ आरंज परिग्रह महा सेलें, मांस वली जे वावरे ॥ १२ ॥ नार
 क आयु वे लाल. बांधे ते नरा ॥ माया अलिक बे लाल, वंचवा त
 तपरा ॥ १३ ॥ त्रुण ॥ तत्परा कूडां मान करवा, कूडां तोल करे घणां ॥ आयु
 निरयंच केरुं बांधे, दुःख तणी जिहां नहीं मणां ॥ १४ ॥ प्रकृति वि
 नीत वे लाल, पश्चात्तापीड ॥ महर न करे वे लाल, मनुजायु था
 पीड ॥ १५ ॥ त्रुण ॥ बाल तप अकाम निर्झर, सराग संजम जाणि
 यें ॥ देशविरतीयकी बांधे, देव आयु ठाणियें ॥ १६ ॥ कायनें जाव
 वे लाल, रुजुता जेहनें ॥ अविस्वादन वे लाल, योग होये तेहनें
 ॥ १७ ॥ त्रुण ॥ तेहनें बंध गुननाम केरो, अगुन विपरीत एहथी ॥
 आठ जातिना मदें जे नीचज, गोत्र बांधे तेहथी ॥ १८ ॥ जाति कु
 लनें वे लाल, रूपनें तप तणी ॥ श्रुत बल जान वे लाल, ऐश्वर्य मद

घणो ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ मद एहनो जो करे नाहीं, उंचगोत्र बांधे सही
 ॥ दानादिक अंतराय करतो, अंतराय बांधे वही ॥ २० ॥ एणिपरें
 बांधे वे लाज, जीव विशेषथी ॥ आठ प्रकारें वे लाज, कर्म अशेष
 थी ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ एम सुणी कहे इंडशर्मा, स्वामीजी साचुं कहुं ॥ हवे
 मोक्षनुं बीज नांखो, तेह किम जाये लखुं ॥ २२ ॥ पाठक बोले वे
 लाज, बीज कहीजीयें ॥ सुरमणि सरिखुं वे लाज, सम्यक्त्व लही
 जीयें ॥ २३ ॥ त्रु० ॥ लिंग तेहनुं सम संवेगा, दिक ते टाळे कर्मनें
 ॥ हवे लहीयें तेह सुणजो, सांजले जिनधर्मेनें ॥ २४ ॥ गुणिनी सं
 गति वे लाज, गुणपक्षपातीउ ॥ तथा ज्योता वे लाज, जोगें अघा
 तीउ ॥ २५ ॥ त्रु० ॥ अनुकंपादिक जावना करे, कर्मद्वय उपशमें
 लहे ॥ इंडशर्मा कहे साचुं, जेह पाठकजी कहे ॥ २६ ॥ पण प्रभु
 नांखो वे लाज, मोक्षमां सुख घणुं ॥ संजम दुःखथी वे लाज, किम
 लहे ते पणुं ॥ २७ ॥ त्रु० ॥ किम लहे तव गुरु कहे सांजल, जिम औ
 पथथी नीरोगता ॥ अथवा परमार्थें संजम, दुःखनी नहिं जोगता ॥
 ॥ २८ ॥ शुन परिणाम वे लाज, शुन लेख्या वजी ॥ शास्त्रें नांखे वे
 लाज, संजम सुख केवजी ॥ २९ ॥ त्रु० ॥ केवली नांखे वार मासह,
 चरण दूउ जेहनुं ॥ अनुत्तर विमान सुरजे, सुख उजंवे तेहनुं ॥ ३० ॥
 यतः ॥ “जे इमे अथताए समणे निग्गंथे, एएणं कस्स तेउलेसं ॥
 विश्वयंति, मास परियाए समणे निग्गंथे ॥ वाणमंतराणं देवाणं, ते
 उलेसं विश्वयंति, एवं दुमास परिआए समणे निग्गंथे ॥ असुरिंद व
 क्खिआणं चवणवासीणं देवाणं तेउलेसं विश्वयंति, तिमास परिआए,
 समणे निग्गंथे ॥ असुर कुमाराणं देवाणं, तेउलेसं विश्वयंति ॥ चउ
 मास परिआए, समणे निग्गंथे ॥ गहगण नरकत्त तारारूवाणं,
 जोईसीयाणं ॥ तेउलेसं विश्वयंति, पंचमास परिआए समणे निग्गंथे ॥
 चंडिम सूरियाणं, जोईसिंदाणं जोईसरायाणं ॥ तेउलेसं विश्वयंति,
 ठमास परीयाए समणे निग्गंथे ॥ सोहम्मीसाणदेवाणं तेउलेसं वि
 वयंति ॥ सत्तमास परिआए समणे निग्गंथे, सणकुमार माहिंदिंदाणं

देवाणं तेजसेसं विश्वयंति ॥ अठमास परियाए, समणे निग्गंथे ॥ वंज
लोग लंतगाणं, देवाणं तेजसेसं विश्वयंति ॥ नवमास परियाए समणे
निग्गंथे, महा सुक्कसहस्साराणं देवाणं तेजसेसं विश्वयंति, दस मास
परियाए, समणे निग्गंथे आरणञ्जुआणं देवाणं तेजसेसं विश्वयंति,
इकारसमास परीआए समणे निग्गंथे, गेविआणं देवाणं तेजसेसं वि-
वयंति, वारमास परीआए समणे निग्गंथे, अणुत्तरोववाइणं ॥ देवाणं
तेजसेसं विश्वयंति, तेण परं सुक्के सुक्कानिजाई नवित्ता, सिधई बुद्धई सु-
च्चई सबडुक्काणमंतं करेई, इति जगवतीसूत्रे” तेह उपरें वे जाल, शु-
क्कमुख नांखियुं ॥ गुक्कानिजात्य वे जाल, सुख एम दाखियुं ॥ ३१ ॥
त्रुण ॥ दाखीउं तिणें सुनिराज सुखिया, परमार्ये एम धारजे ॥ कहे
इंइशर्मा तहति स्वामी, कीधो अम उपगार जे ॥ ३२ ॥ इण अव-
सर वे जाल, पूर्वे आवीउं ॥ नाम चित्रांगद वे जाल, प्रणमे नावीउं
॥ ३३ ॥ त्रुण ॥ नावीउं कहे एम खंम नवमे, ठाल पन्नरमी नजी ॥
पद्म कहे ए सांजलीनें, बुद्धि कीजें निरमजी ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुण प्राणी यिति केटली, बांधे कतिविध बंध; पूढे प्रस एणी परें,
सयज कहो संबंध ॥ १ ॥ समरादित्य कहे सुणो, आयु विना अव-
धारि; सात करम बांधे सदा, आठ बांधे जळ आय ॥ २ ॥ बांधे मोह
आयु विना, सूक्ष्म जे संपराय; बंध ठनो बाकी रह्यो, एक बंध हवे
आय ॥ ३ ॥ ज्ञाताबंध उपशांतनें, सुनिवर जे क्षीणमोह; संयोगी
पण शांतनें, बांधे एम पडिवोह ॥ ४ ॥ दाखी समय यिति जेहनी,
नहिं कयाय जस नाम; शैलेशीगत साधुजी, अबंधी अनिराम ॥ ५ ॥
इत्यादिक बहु दाखीउं, कर्मपयडी अधिकार; जाणो सूत्रथकी जिके,
वयतो आये विस्तार ॥ ६ ॥ चित्रांगद लही चित्रनें, मोह टढ्यो म-
दाग्न; अमनें प्रभु अनुग्रह कखो, शिक्षा धरुं शिर ठाय ॥ ७ ॥
कालवेला यई अनुक्रमें, प्रणमी गुरुना पाय; राय प्रमुख बहु रीज
थी, ठाया पोहोता ठाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ जात्रा नवाणुं करियें ॥ विमल गिरि ॥ जात्रा० ॥ ए देशी ॥
 ॥ जिनशासनगति न्यारी ॥ नविक जन ॥ जिन० ॥ समरादित्य सुनिराज
 उचित निज, क्रिया करे अतिसारी ॥ नवि० ॥ तेहज चैत्यमां बीजे
 दिवसें, वेठा आसन धारी ॥ १ ॥ नवि० ॥ अग्निनूति ब्राह्मण तिहां
 आयो, विधिगुं वंदनकारी ॥ नवि० ॥ चैत्य वांदि पाठकजी प्रणम्या,
 वेठो निज दुःख वारी ॥ २ ॥ नवि० ॥ विनय विज्ञेयथी कहे सुज
 नांखो, देवविज्ञेय निरधारी ॥ नवि० ॥ वली तेहनी सेवा विधि दाखो,
 तस फल कहां सुखकारी ॥ ३ ॥ नवि० ॥ गुरु कहे देव सुणो तुमें
 पहेलां, सर्वज्ञ परमोपगारी ॥ नवि० ॥ रागेंदुष वर्जित सुरपूजित,
 कृतकृत्य अनियत चारी ॥ ४ ॥ नवि० ॥ जन्म जरा नहीं महिमा
 अचिंतित, देशना घन अनुकारी ॥ नवि० ॥ जस वयणें नवसायर उ
 तरे, अक्षावंत नर नारी ॥ ५ ॥ नवि० ॥ तेहनी सेवानो विधि सुण
 जो, अथ्यवसाय गुन धरियें ॥ नविकजन. जिनसेवा एम करियें ॥ ए
 आंकणी ॥ यथाशक्ति निस्पृहता चित्तें. जिम आणागुं मरीयें ॥ ६ ॥
 ॥ नवि० ॥ तप करियें वली नावियें नावन, निरतिचार व्रत चरि
 यें ॥ नवि० ॥ आणाखंमन कवहुं न कीजें, तस फलकर्म विखरी
 यें ॥ ७ ॥ नवि० ॥ देवमहर्षिक महा विमानें, अप्सरागुं परवरीयें
 ॥ नवि० ॥ दिव्यजोग जोगवी उत्तम कुल, आवीनें अवतरीयें ॥ ८ ॥
 नवि० ॥ रूप सुंदर विशिष्ट जोग वली, अनुक्रमें धर्म आदरीयें ॥ नवि० ॥
 केवलज्ञान लही हवे करमें, शैलेशीयें चरीयें ॥ ९ ॥ नवि० ॥ पण
 लघु अक्षर उच्चारण कालें, शिवसुंदरी वर वरीयें ॥ नवि० ॥ सांजलि
 पाठकजीनां वयणां, हर्षें अग्निनूति नरीयें ॥ १० ॥ नवि० ॥ वलि
 पूठे ते मथ्यस्थ होवे, जेह यथा वीतराग ॥ नविकजन, सांजलो
 तुमें महानाग ॥ ए आंकणी ॥ ते उपगार करे नहीं कोयनें, केम
 सवि जीवहित लाग ॥ ११ ॥ नवि० ॥ गुरु कहे सुणो प्रभुदेशना
 देवे, तेहथी होये मोहत्याग ॥ नवि० ॥ एहथी उपकार कोई न मो

होटो, कोई जीवनो नहीं जाग ॥ १२ ॥ नवि० ॥ अग्निनूति कहे किम
 उपगारह, उपदेशनी एक वाग ॥ नवि० ॥ गुरु कहे जो उपदेश करे
 तो, फल लहे ते बडजाग ॥ १३ ॥ नवि० ॥ चिंतामणि मंत्रनें बली
 अग्नि, सेवन जो करे राग ॥ नवि० ॥ जतनायें सेवे फले तेहनें, पण
 नवि दीये ते सराग ॥ १४ ॥ नवि० ॥ पण न दीधुं एम नवि कहे
 वाये, एम सुणी लह्यो वैराग ॥ नवि० ॥ कहे स्वामी मुज मोह गयो
 हवे, वाध्यो अधिक सोजाग ॥ १५ ॥ नवि० ॥ इण अवसर एक अ
 जिनव श्रावक, साथें सखर परिवार ॥ नविक जन, जिनशासन शोह
 कार ॥ ए आंकणी ॥ धनरुद्धि नाम करे प्रभुपूजा, डौपदी परें निर
 धार ॥ १६ ॥ नवि० ॥ वेठो वाचकजीनें प्रणमी, पूठे प्रश्न उदार
 ॥ नवि० ॥ मुनि त्रिविध त्रिविधें व्रत पञ्चरुके, अनुमति पण परिहार
 ॥ १७ ॥ नवि० ॥ जव श्रावकनें करावे शूलथी, अणुव्रतनो उच्चार
 ॥ नवि० ॥ तव मुनिनें अनुमति किम नावे, जांखे तव अणगार
 ॥ १८ ॥ नवि० ॥ विधि देतां अनुमति नवि आवे, अविधि अनर्थ
 नंदार ॥ नवि० ॥ शेठ कहे विधि कहो गुरु मुजने, जिम होय मुज
 उपगार ॥ १९ ॥ नवि० ॥ गुरु कहे सुणि संवेग सार तुं, स्वरूप कहे
 संसार ॥ नवि० ॥ दुःखपरंपर कारण नव ठे, ते दुःख टालणहार
 ॥ २० ॥ नवि० ॥ अहेपें शिवसुख बली लहीयें, संजम एह प्रमा
 ण ॥ नविक जन, जिनशासन मंमाण ॥ ए आंकणी ॥ प्रथमथी शुन
 जावनथी करीयें, इण परें चरण वखाण ॥ २१ ॥ नवि० ॥ असमर
 थ जो कदि तेहनो होये, कर्म उदय परिमाण ॥ नवि० ॥ अणुव्रत उ
 चरवा उजमालह, जाणी अवसर जाण ॥ २२ ॥ नवि० ॥ उच्चरावे
 अणुव्रत ते जननें, जोई प्रशस्त क्षेत्र ठाण ॥ नवि० ॥ आगारादिक
 शुद्ध थरावे, आप मध्यस्थ विनाण ॥ २३ ॥ नवि० ॥ सुणी कहे शेठ
 तोदिं किम नावे, अनुमति कहो महेरवाण ॥ नवि० ॥ तव गाथाप
 ति चोर दृष्टांतें, गुरु करे उत्तरदाण ॥ २४ ॥ नवि० ॥ नवमे खंमें शो
 जमी टालें, नाण उत्तम जिम जाण ॥ नवि० ॥ पद्मविजय कहे सुण

तां होवे. श्रोता घर कल्याण ॥ २५ ॥ नवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

वसंत पुर वारु वसे, जितशत्रु राय सुजाण : धारणी शीलनी धार
णी. मनहरणी महेराण ॥ १ ॥ नाटक कला निरखी नृपें. वर दीधो
सुविशेष ; राणी कहे रुडी परें, लखी आपो वर लेख ॥ २ ॥ करी
एं महोत्सव कौमुदी. अंतैउर इहाय ; आणा दिये अवनपति, अनु
क्रमें सो दिन आय ॥ ३ ॥ ईजापनि उद्योपणा. करे सुणजो सह
कोय ; नर जे रहेजो नयरमां. जम घर जाजो सोय ॥ ४ ॥ दुर्जन
आणा देखीनें. पुरुष वर्ग पुर बाहार ; निर्णय करीनें नीकल्यो, इण
अवसर अवधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ मीठा मीतुं बोलीनें गुं रीऊरो रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो शेरजी वात शोहामणी रे, तेह नयरमां शेर शिरोमणी रे ॥
सु० ॥ पटपुत्र तेहनें लायक घणा रे. व्यवहार करे शोहामणा रे ॥
॥ १ ॥ सु० ॥ नवि नीकलीआ ते व्यग्रता रे, दरवाजा दिये वली शी
घ्रता रे ॥ सु० ॥ नृपनयथी ते ठाना रह्या रे. उठव कखोरवणीयें उ
मह्या रे ॥ २ ॥ सु० ॥ बीजे दिन नृप आणा करे रे. जुठ रह्यो कोइ
ठे ठानो घरे रे ॥ सु० ॥ जोइनें ते पण आवी कहे रे. शेरना पट पुत्र
घरमां रहे रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ नृप कोपें वध आणा दिये रे, नर आवी
एम वदीजियें रे ॥ सु० ॥ वधयानक लेई गया हवे रे, तस तात बीही
नो नृप वीनवे रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ अपराध खमो ए स्वामी तुमें रे, मूको पुत्र
न फरी करीयें अमें रे ॥ सु० ॥ वली दूजो पण करे एणि परें रे,
तेणें नृप नवि मूके करगरे रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ शेर वार वार एम जांख
तां रे, वडो पुत्र मूक्यो बहु आखतां रे ॥ सु० ॥ बहु मान्यो शेरें तेहनें
रे, बीजानें तो नरपति हणे रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ शेरनें तो सुत माखा तणी रे,
अंशें पण अनुमति नवि सुणी रे ॥ सु० ॥ दृष्टांत कह्यो उपनय सुणो रे,
नृपति सम आवकनें सुणो रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ पटपुत्र समा पटकाय ठे
रे, शेर तुल्य सुनिवर आय ठे रे ॥ सु० ॥ नृप विनतिसम सुनिदेश

ना रे, नवि सुनिपणुं जिये जुन वेशना रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ तव आ
 वक व्रत उच्चरावतां रे, नवि असंजम अनुमति जावतां रे ॥ सु० ॥
 कहाँ अवधिदोष एणी परें रे, तिणें ज्ञानपूर्वक किरिया करे रे ॥ ए॥
 ॥ सु० ॥ यतः “पढमं नाणं तउ दया, एवं चिछइ सव संजए ॥ अ
 ज्ञाणी किंकाही, किंवा नाहिठेय पावगं ॥ १ ॥” धणरुद्धि शेर हर
 खीने कहे रे, उपदेश तुम सुणी चित्त गहगहे रे ॥ सु० ॥ एक अ
 शोक चंदनामैं वली रे, पूर्वें आव्यो नमे लली लली रे ॥ १० ॥ सु० ॥
 पूठे प्रश्न थोडे परमादधी रे, दारुण विपाक विपादधी रे ॥ सु० ॥
 स्वामी ते तिम के वली अन्यथा रे, सुणियें ठीयें लोकमांहिं यथा रे
 ॥ ११ ॥ सु० ॥ गुरु कहे जे आगममां कहां रे, ते तेमहिज जाणो
 प्राणी लह्या रे ॥ सु० ॥ जे आगम बाह्य कहे घणा रे, तेतो यादृष्टि
 क प्राणी सुण्या रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ पण जिनवर जूठ बोले नहिं रे,
 कहे अशोक चंद सुणजो अहीं रे ॥ सु० ॥ केई जीव घणी हिंसा
 करे रे, पाप थानक सघलां आदरे रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ तेहनैं धन संप
 दा सुंदरु रे, वली नोग आयु दीरघ धरु रे ॥ सु० ॥ नवि अनुबंध
 जुटे तेहनो रे, सहु वचन ते माने जेहनो रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ अप
 राध अल्प एक प्राणीआ रे, सहु विपरीत वात दुःखखाणीआ रे
 ॥ सु० ॥ गुरु कहे सुणि कर्मविचित्रता रे, जस पापानुबंधी कर्मजुक्त
 ता रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ दुर्गतिगामी कुइ सख ठे रे, संसार मांहिं
 एकत्व ठे रे ॥ सु० ॥ अनरथ जाजन करी पापने रे, पापें नरे पूरण
 आपनैं रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ तिणें इष्टलाज लही जाय ठे रे, दुर्गति
 मां दुःख बहु आय ठे रे ॥ सु० ॥ विपरीतनैं विपरीत जाणीयें रे,
 अशोकचंद भ्रम नाणीयें रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ कहे अशोकचंद स्वामी
 खरुं रे, तुमें जाखुं ते अंगीकरुं रे ॥ सु० ॥ अज्ञान गयुं प्रभु माहरुं
 रे, नहिं अणजाखुं कांइ ताहरुं रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ इणें अवसरें पूर
 यें आविउं रे, त्रीनोचन प्रणमे जाविउं रे ॥ सु० ॥ कर जोडिनैं
 प्रश्न पूठे हवे रे, प्रभु जाखो मुज संशय जवे रे ॥ १९ ॥ सु० ॥ ढाल

सत्तरमी खंम नवमे कही रे. समरादित्य रासमांहे लही रे ॥ सु० ॥ कहे
पद्मविजय सुणजो सवे रे, जे पूठे तस उत्तर हवे रे ॥ सु० ॥ १० ॥ ए० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अजयदान एक आखिउं, उपपंन वली अन्य; एहमां कोण कसुं
अवल. पाठक कहो कयपुण्य ॥ १ ॥ वाचकजी कहे परवडुं, प्रथम अ
जय परधान; चोर दृष्टांत सुणो चतुर. कहियें ते देई कान ॥ २ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥ उधव माधवनें कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ ब्रह्म पुर नयरे नगराय, कुलध्वजनामें विख्याय, कमलुआ पटरा
णी थाय के ॥ १ ॥ नवि तुमें अजयदान देजो, म हणो म हणो
एम कहेजो ॥ नवि० ॥ ए आंकणी ॥ तारावली प्रमुखा राणी,
बीजी पण रुपनी खाणी, कीडे ज्युं इंइ इंझाणी रे ॥ २ ॥ नवि० ॥
सहु राणीजुं एक दिन, बेतो गोखे धरी मन्न, शोगठ पासे रमे धन्न के
॥ ३ ॥ नवि० ॥ चोर लाव्यो तिहां कोटवाल. बांध्यो गाढ बंधन
जाल, कस प्रमुखें अति दुःखाल रे ॥ ४ ॥ नवि० ॥ विनति करे नृ
पनें एम. परधन लीधुं इणें नेम, करीयें स्वामी कहो तेम के ॥ ५ ॥
॥ नवि० ॥ नूपति कहे एहनें मारो, चाव्यो तलार तिणी वारो, तस
कर रोयो दुःख नारो रे ॥ ६ ॥ नवि० ॥ प्रथम चोरी माख्यो जाउं,
मनना मनोरथ नवि पाउं, एमज अधन्य जाये आउ रे ॥ ७ ॥ न
वि० ॥ सुणि कहे राणिउं सुणो राय, चोरना मनोरथ नवि थाय,
पण जो करो तुमें सुपसाय रे ॥ ८ ॥ नवि० ॥ एक राणी कहे मुऊ
आज, आपो जेम पूरुं काज, ततहुण आपे महाराज रे ॥ ९ ॥
नवि० ॥ सहस्र पाकथी मरदाव्यो, सुगंध उल्लजलें न्हवराव्यो, कौ
मजुगल तस पहेराव्यो रे ॥ १० ॥ नवि० ॥ दश सहस्र डव्य एह
नें लागो, एटलोज डव्य माहारे पागो. बीजीयें तेडयो धरी रागो
के ॥ ११ ॥ नवि० ॥ कामित नोजन तेणें दीधुं, आसवपान वली
सीधुं, जह्मकर्म लेपन कीधुं के ॥ १२ ॥ नवि० ॥ आप्यो वली एक
कंदोरो, कीधो वली तेहनें नोहरो, एटलोज डव्य माहारे कोरो के ॥

॥ १३ ॥ नवि० ॥ लेखे वीश सहस गणीउ, वलि बिजीयें पण एम
 नणीउ, आनूपणथी तनु मणीउ के ॥ १४ ॥ नवि० ॥ तंबोल आपे
 वली सारो, लाख डव्य इणें उवाखो, एटलूं मुज ठे अवधारो के ॥
 ॥ १५ ॥ नवि० ॥ पटराणीनं नृप नासे, तुं काई नवि दिये रये आशें,
 सा कहे कांय न मुज पासं के ॥ १६ ॥ नवि० ॥ राय कहे तूं पट
 राणी, जीव अधिक तूं मुज जाणी, ताहारे शो वातनी हाणी के ॥
 ॥ १७ ॥ नवि० ॥ जे मागे ते तुज आपुं, ताहारूं वयण हृदय आपुं,
 कहे तेहनां दुःखडां कापुं के ॥ १८ ॥ नवि० ॥ सा कहे कीधो
 सुपसाय, आपुं एहनें मन नाय, जेम सुख निम करो कहे राय के
 ॥ १९ ॥ नवि० ॥ सा कहे चोरनें सुण जाई, ऊग्यां अकारय फूल
 आई, दीठां कही ए चित्त लाई के ॥ २० ॥ नवि० ॥ पश्चात्तापथी
 कहे चोर, नवि करूं एहवुं कोई ठोर, जिणथी दुःख होय घोर के
 ॥ २१ ॥ नवि० ॥ दीधुं अनय कहे देवी, नृप कहे को न करे एहवी,
 चोर कहे तूं मा जेहवी के ॥ २२ ॥ नवि० ॥ राणी हरखी ततखे
 व. बीजी तो हसती हेव, दान दीधुं बहु करी सेव के ॥ २३ ॥ नवि० ॥
 राणी कहे किम करो हांसी, पूठो चोरनें सुविलासी, कहे चोरने
 कहां बीमासी के ॥ २४ ॥ नवि० ॥ चोर कहे में नवि जाणूं, मरण
 ना नयथी सुख ठाणूं, स्वस्थ थयो हवे परमाणुं के ॥ २५ ॥ नवि० ॥
 सांनजी सहु राणी माने, ए उपनय कह्यो व्याख्यानं, हरख्यो त्रि
 लांचन सुणि कानें के ॥ २६ ॥ नवि० ॥ स्वामी सत्य कह्युं एह,
 एहमां कांय न संदेह, सहुए गया निज निज गेह के ॥ २७ ॥ नवि० ॥
 नयमे खरें ए ढाल, अठारमी कही सुविशाल, उत्तमविजय तणो
 बाल के ॥ २८ ॥ नवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ६१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देश देशें एम देशना, देता तेह दयाल; काल केतो एक अतिक्रम्यो,
 करुणावंन कृपाज ॥ १ ॥ अवंतीदेशें आचिथा, रेफवाह पुरसार; शिष्य
 नयदा सुगुणगुं, उद्यानें अवधार ॥ २ ॥ एकांतें जइ आदखो, अशोक

वने अनिरामः काउस्सगग तिहां जावन करे. एकज आतम राम ॥३॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ टोमरमल्ल जींत्यो जी ॥ ए देशी ॥

॥ एकांतें काउस्सगग रह्या रे. तिहां आव्या चंमाल ॥ मोहराय जींत्यो
जी. जींत्यो जींत्यो वीर्य उल्लास ॥ मोह० ॥ जींत्यो जींत्यो चरण वि
लास ॥ मोह० ॥ जींत्यो जींत्यो नाण प्रकाश ॥ मोह० ॥ ए आंक
णी ॥ गिरिसेन छुट ते चिंतवे रे. कोपें थई विकगल ॥ १ ॥ मो० ॥
मुज बहुदिन रजजावीयो रे. आज दीगो नयणेण ॥ मो० ॥ इहां
मारुं अवसर अत्रे रे. जिम मरे अति दुःखेण ॥ २ ॥ मो० ॥ लाव्यो
जूनां लूगडां रे. विठुं रुपिनुं अंग ॥ मो० ॥ अलसी तेल वली रेडी
युं रे. रौडध्यान एकंग ॥ ३ ॥ मो० ॥ अग्नि प्रजाव्यो तिहां किएं रे.
मुनिवर ध्यानमां लीन ॥ मो० ॥ जाणुं पण नहीं चित्तमां रे. दाह
थयो जव दीन ॥ ४ ॥ मो० ॥ ध्यानतो संक्रम थयो तदा रे. चिंतवे
तव मुनिराय ॥ मो० ॥ अहो ए गुं अनरथ तणो रे. हेतु थयो इण
ठाय ॥ ५ ॥ मो० ॥ दुर्गेति कारण तेहनें रे. अहो दारुण परिणाम
॥ मो० ॥ अथवा ए चिंता किशी रे. समतानुं इहां काम ॥ ६ ॥ मो० ॥
सामायक ठे माहरे रे. वलगा निर्मल ध्यान ॥ मो० ॥ महासामा
यक उपनुं रे. अपूर्व करणें तान ॥ ७ ॥ मो० ॥ कृपकश्रेणी तिहां
उल्लासी रे. वाध्यो वीर्यउल्लास ॥ मो० ॥ हणतो कर्म शत्रु प्रत्ये रे. सं
नारी दुःख तास ॥ ८ ॥ मो० ॥ ध्यान अनलें मोह इंधणा रे. बालि
कीधां राख ॥ मो० ॥ विविध लब्धि तिहां उपनी रे. जोग महिमा ए
दाख ॥ ९ ॥ मो० ॥ निर्मल थयो निज आतमा रे. घाति कर्म खपा
य ॥ मो० ॥ केवल नाण ते पामीआ रे. समरादित्य रुपिराय
॥ १० ॥ मो० ॥ सहु प्रयास सफलो थयो रे. कृतकृत्य थया अण
गार ॥ मो० ॥ उहव रंग वधामणां रे. प्रगट्या निज आगार ॥ ११ ॥
मो० ॥ मुनिवरना महिमायकी रे. तेह क्षेत्र आसन्न ॥ मो० ॥ वेलं
धर कुमारनुं रे. चलियुं तिहां आसन्न ॥ १२ ॥ मो० ॥ अवधीनाण
थी जोईनें रे. लेई कुसुमनी राशि ॥ मो० ॥ देव अनेकशुं परिवस्यो रे.

आवे तिहां उछास ॥ १३ ॥ मो० ॥ प्रणमी कुसुमवृष्टि करे रे, उ
 लव अग्निनें ताम ॥ मो० ॥ काढी नाख्वां चूथरां रे, करतो वली परि
 णाम ॥ १४ ॥ मो० ॥ झोनाणो गिरिसेन तदा रे, ए श्यो वात विचार
 ॥ मो० ॥ वेलंधर कहे पापीआ रे, रे रे डुष्ट आचार ॥ १५ ॥ मो० ॥
 रे पुरुषाधम नीच तूं रे, तूं महाशोचण जोग ॥ मो० ॥ सुख नवि
 जोईये ताहरूं रे, होवे पाप संयोग ॥ १६ ॥ मो० ॥ एह काम तें शूं
 कलुं रे, नहिं आरजतुं काम ॥ मो० ॥ इण अवसर तिहां आविउं रे,
 मुनिचंदराय उदाम ॥ १७ ॥ मो० ॥ नर्मदा प्रमुखा राणियो रे, साथें
 महा सामंत ॥ मो० ॥ नक्ति जाव धरी वंदिया रे, आणंद अंग अनं
 त ॥ १८ ॥ मो० ॥ वेलंधरनें पूठियुं रे, श्यो ए वात बनाव ॥ मो० ॥
 वेलंधर कहे पापीनें रे, निज आतम दुःख दाव ॥ १९ ॥ मो० ॥ अ
 मृतचूत शत्रु नहीं रे, मुनिनें अगनि प्रयोग ॥ मो० ॥ प्राणांत अ
 ध्ववसायथी रे, नहीं एहनें देवलोग ॥ २० ॥ मो० ॥ राय कहे मा
 तुं कलुं रे, कारण कहो इहां कांय ॥ मो० ॥ वात्सल्य सहु जंतुतणा
 रे, मोद हेतु मुनिराय ॥ २१ ॥ मो० ॥ पीडा न करे कोयनें रे, शीत
 लता जिम चंद ॥ मो० ॥ नवि जहीयें कारण कीशुं रे, कहे वेलंधर
 इंद्र ॥ २२ ॥ मो० ॥ नवमे खंमे ए कही रे, उगणीशमी वरढाल ॥ मो० ॥ विघ्न
 थयां सवि वेगलां रे, पद्मनें मंगलमाज ॥ २३ ॥ मो० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणुं अशुन उदय जिके, दुःखहेतु दुःखरूप; नव अनंत करवा
 नणी, कारण दुर्गतिकूप ॥ १ ॥ नृप कहे जूतुं नहिं जरा, पण पूठो
 मुनिपाय; वेलंधर कहे वर कलुं, सुणजो सहु समवाय ॥ २ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ राग रामग्री ॥ चोशठ मणनुं मोति जग मगे रे ॥ ए देशी ॥

॥ मोहम इंद्रो आवे इणि समे रे, ऐरावण हाथी शिर वेठो तेह रे ॥
 केवल दानना मद्रिमा कारणें रे, देवसमूहें परवरीउं वलि जेह रे
 ॥ १ ॥ कृपिजी चरित्रें सहुजन मोहिउं रे ॥ ए आंकणी ॥ कित्तर गा

यनें नाचे अप्सरा रे, हरपें आवि कीधो प्रथवी शोध रे ॥ गंधोदक
 शींची कुसुमें पूजतां रे, कनक कमल ठवे करता विघ्न निरोध रे ॥
 ॥ १ ॥ ॥ रुपि० ॥ देवतानें देवी आणंयां सहू रे, वेठा पदें समरादि
 त्य सुणिंद रे ॥ सोहम इंदो स्तवना एम करे रे, हे स्वामी तुम नागो
 मोह नरिंद रे ॥ २ ॥ ॥ रुपि० ॥ जींत्या कर्मशत्रु क्लेश दूरें गया रे,
 कृतार्थ दुआ तुमो जगवान रे ॥ त्रोंडी नववलि शिवपुर पामीया
 रे, उग्यो रवि जलहलतो केवलज्ञान रे ॥ ४ ॥ ॥ रुपि० ॥ सांजली
 एम स्तवना राय नें देवता रे, तिम सामंत प्रमुख वंदे मुनिना पाय
 रे ॥ अहो अहो मुनिवरनां कारय नीपनां रे, अप्सरा नाचे किन्नर सु
 र गुण गाय रे ॥ ५ ॥ ॥ रुपि० ॥ जनपदनां लोक ते आव्यां सांजली
 रे, हरखित राणा वंदे मुनि महाराज रे ॥ गिरिसेन चिंते महानुजाव
 ना रे, अहो एहनी में कीधुं काम अकाज रे ॥ ६ ॥ ॥ रुपि० ॥ आक्के
 प्युं बीज कुशज पद्धतुं रे, मोहोटानी संगति निष्फल नवि याय रे ॥
 पठर मारंतां आपे फज प्रत्ये रे, अंबादिक जे उत्तम वृद्ध कहाय रे
 ॥ ७ ॥ ॥ रुपि० ॥ चंदन कापतां आपे वासना रे, मुनि अपकारें
 पाम्यो गुणनी राशि रे ॥ गिरिसेन चाव्यो हवे निज घर नणी रे, मुनि
 वरें जाण्यो देशनानो अवकाश रे ॥ ८ ॥ ॥ रुपि० ॥ जीवनें कर्मनो
 जोग अनादि ठे रे, कनकोपल दृष्टांतें तास विकार रे ॥ उपजे बहु
 जोनि पामे कदर्थना रे, वलि संयोग विजोग तणो नहिं पार रे ॥ ९ ॥
 ॥ रुपि० ॥ जरा नें मरणनी मोहोटी आपदा रे, कुपय्य सेवे न लहे
 हित अहित रे ॥ मूढता ठांमो ते कारण नणी रे, तत्व विचारो कीजें
 सहू जन मित्त रे ॥ १० ॥ ॥ रुपि० ॥ पूजो देव गुरुनें दान विधे दिउ रे,
 पालो शील करो तप जप अन्यास रे ॥ जावना जावो ध्याउं शुज ध्या
 ननें रे, ठांमो कदाग्रह कर्ममेज करो नाश रे ॥ ११ ॥ ॥ रुपि० ॥ कर्म
 अनावें निर्मल आतमा रे, तेहथी कांई नवि पामे विकार रे ॥ पामे
 अव्याबाध सुख निज क्षेत्रमां रे, तेणें उद्यम कीजें निजतत्व विचार
 रे ॥ १२ ॥ ॥ रुपि० ॥ देशना सुणिनें गुण पाम्या घणा रे, वंदि पोहो

ता इइ ते निज आवास रे ॥ मुनिचंद राजा गुरुने वीनवे रे, तुम उ
 पसर्ग कखो कहो संबंध तास रे ॥ १३ ॥ रुपि० ॥ हेतु तो दीसे स्वा
 मी को नहिं रे, मुनि घोव्या मोहोटी अकुशल अनुबंध रे ॥ गुणसेन
 अग्निशर्मा नवयकी रे, मांझीनें कीधो सघलो संबंध रे ॥ १४ ॥
 रुपि० ॥ सांजलिनें राजा सामंत देवीउ रे, तिम वेलंधर लह्या संवेग
 रसाल रे ॥ चिंते सहु अहो अहो दोष अन्नाणनो रे, अज्ञानें दारुण
 दुःख लहे विशाल रे ॥ १५ ॥ रुपि० ॥ वेलंधर पूढे आगल एहनें
 रे, श्यो निपजशे स्वामीजी परिणाम रे ॥ केवली नासे जाशे नरगमां
 रे, तीव्र वेदना नोगवशे ते ठाम रे ॥ १६ ॥ रुपि० ॥ तिहांथी अनं
 तो संसार एहनें रे, नरमदा राणी नांखे कहो प्रभु तेह रे ॥ नरक
 ते केहवां केहवी वेदना रे, मुनि कहे सांजल मांहि गोल ते एह रे
 ॥ १७ ॥ रुपि० ॥ बाहिर चउरंसा घोर अंधारहुं रे, हेतल खुरप्प
 आकारें माहाडुर्गंध रे ॥ मेद वसानें कर्म रुधीरनो रे, अशुचि ने कर्क
 श फरस संबंध रे ॥ १८ ॥ रुपि० ॥ वर्णव इत्यादिक बहु ठे शास्त्रमां
 रे, तेतो कहेतां थाये अति विस्तार रे ॥ नारकी दुःखीआ वेदना
 अति सहे रे, आंख उघाडे नहिं सुख तेती वार रे ॥ १९ ॥ रुपि० ॥
 निरंतर विहिता रोग घणां तनु रे, ताता तरुआनुं वली करावे पान रे ॥
 जोहनी पंचाली उल्ल बाथें दिये रे, केतां कीजें दुःखनां इहां व्याख्यान
 रे ॥ २० ॥ रुपि० ॥ बीजे रे अंगें नांखी ठे घणी रे, सांजली सघलूं धूजे
 आपणुं अंग रे ॥ तिहांथी जाणजो सांजली वोलती रे, सुलसमंजरी
 राणी धरी मनरंग रे ॥ २१ ॥ रुपि० ॥ कहेवां विमान देवनां देवता रे,
 केहवा होय ते नांखो परम दयाल रे ॥ केवली नांखे पद्मविजयें कही रे,
 नवमे खंम एह वीशमी ढाल रे ॥ २२ ॥ रुपि० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि कहे सांजल धमिणी, विचित्र संताण विमान; रत्नमयी अ
 तिनिर्मलां, अमररक्षित असमान ॥ १ ॥ चंद्रमहाया चरचिआ, तो
 राण वारें तउ; चंदनघट थाप्या चतुर, ज्वले धूपघटि जल ॥ २ ॥

फूल बिठायां फूटरां, माव्य बहु महकाय; अदनुत दीसे अप्सरा,
शब्द त्रुटित सुख दाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वीरमाता प्रीति कारणी ॥ ए देशी ॥

॥ देवता अनुपम सुखधरा, विचित्र चिन्ह धरनारा ॥ रूपवंतानें मह
र्दिका, मनें काम करनारा ॥ १ ॥ दे० ॥ महाबली महाप्रजावी
कह्या, गले पहेरीआ हार ॥ बांहे बाजुबंध बहेरखा, कटक जडित
मनोहार ॥ २ ॥ दे० ॥ कुंमल मुगट शिर शोहता, मुझानें वलि
माला ॥ दिव्य वर वस्त्र पहेखां जिएं, घणुं हृदय विशाला ॥ ३ ॥
॥ दे० ॥ मज्जन लेपन दिव्य ते, तनुजष्टि अति दीपे ॥ वरण गंध फरस
संघयण ते, सहु तेजनें जीपे ॥ ४ ॥ दे० ॥ दिव्यसंस्थान दिश दिश
प्रत्यें, निजकांतें अछुआले ॥ आंख मिंचे नहिं ते कदा, पूरवनो नव
संजाले ॥ ५ ॥ दे० ॥ गीत वाजित्र नित्य नित्य होये, दिव्यजोग जोग
वता ॥ रंगमां काल काढे सदा, अप्सराशुं जोगवतां ॥ ६ ॥ दे० ॥
धरणीथी च्यार अंगुल सदा, अधर ते इहां चाले ॥ कुसुममाला कर
माये नहीं, तूठा वांठित आले ॥ ७ ॥ दे० ॥ आहार नहिं कवलनो
तस कदा, नही हाडनें चाम ॥ ग्रंथमां वरणव बहु कखो, जोजो तुमें
तेह ठाम ॥ ८ ॥ दे० ॥ राणी सुलोचना तव कहे, प्रभु सुर सुख
एह ॥ सिद्धनें सिद्ध सुख एहथी, किम ठे अति रेह ॥ ९ ॥ दे० ॥
गुरु कहे धर्मशीला सूर्यो, एह अंतरुं मोटूं ॥ देव तो कांई सुखीआ
नथी, सुख ते पण खोटूं ॥ १० ॥ दे० ॥ जेहनें अंतें मरवुं पडे, सुख
ते केम कहियें ॥ बहु कषायी परवशपणुं, आर्तध्यान नित्य लहियें
॥ ११ ॥ दे० ॥ विषय तृष्णा अति आकरी, महामोह अज्ञान ॥ गर्दजी
कूतरी प्रमुखना, आवें गर्जनें ठान ॥ १२ ॥ दे० ॥ आये एकेंडी बली
पाधरो, ईर्ष्या घणी तास ॥ एम दुःख जेहथी पामीयें, तेहनें सुख
किम वास ॥ १३ ॥ दे० ॥ यतः “कहं तं नस्मृि सुखं, सुचिरेणवि जस्स
दुक्कमल ॥ अईजं च मरणावसाणे, नव संसाराणुबंधं च ॥ १ ॥”
एहनुं जे सुख दाखीउं, गांधर्वादिक गान ॥ तेह परमार्थथी दुःख ल

हो, जे अधिरता मान ॥ १४ ॥ दे० ॥ यतः ॥ “सर्वं विलवियं गीयं,
सर्वं नष्टं विडंबियं ॥ सर्वे आनरणा जारा, सर्वे कामा दुहावहा ॥ १ ॥”
खंम नवमे एकवीशमी, एह वरणवी ढाल ॥ श्री समरादित्यरासमां,
कहे पद्म रसाल ॥ १५ ॥ दे० ॥ सर्वगाथा ॥ ६ए० ॥

॥ दोहा ॥

॥ परमारथथी पेखियें, सुंदर जाणो सिद्ध; सुख पण तेहनुं सहज
नुं, रति जस आतम रुद्धि ॥ १ ॥ ते सुख थाये तपथकी, जीरण म
लक्ष्य जाय; तपियें तप ते कारणें, आतम शुद्ध उपाय ॥ २ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ तीरथपति अरिहा नमुं ॥ ए देशी ॥

॥ तप पद सेवीयें नविजना, द्वादश जेद सुचंगा जी ॥ अणसणनें
ऊणोदरी, वृत्ति संक्षेप मनरंगो जी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ मनरंगथी रस
त्याग करीयें, कायकिलेप संजीनता ॥ पट्जेद तपना बाह्य जाणो,
कीजियें विष्णु दीनता ॥ २ ॥ अशननो त्याग अणसण कह्युं, तेहना
दोय प्रकारो जी ॥ अल्प कालिकनें यावत्कथा, हवे ऊणोदरी धार
जी ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ धारीयें त्रण जेद तेहना, पहेली उपगरणां तणी
॥ बीजी अशननी इव्यथी ए, जावें क्रोधादिक जणी ॥ ४ ॥ इव्य
क्षेत्र कालनावथी, वृत्ति संक्षेप चउ जेय जी ॥ जेद अनेक रस त्याग
ना, विगय प्रमुख जे अमेय जी ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ अनेक वीरासनादि
कथी, लोचादिक कायक्लेश ए ॥ संजीनता चउ जेद समजो, सुणो तेह
विशेष ए ॥ ६ ॥ इंडियनी संजीनता, तिम वलि योगनी जाणो जी ॥
एकांत आनक सेवतुं, कषाय लीनता वखाणो जी ॥ ७ ॥ त्रु० ॥
हवे कह्युं अन्यंतर जेद पटतप, प्रायश्चित्त दश जाति ए ॥ बीजो विनय
प्रकार जांख्यो, जेद तेहना सात ए ॥ ८ ॥ ध्यान ते दोयनें वंरज
वां, आरत रोदरनामैं जी ॥ धर्म शुक्ल दोय आदरो, वेयावच्च दश ठामैं
जी ॥ ९ ॥ त्रु० ॥ सजाय तेम पांचे प्रकारें, काउस्सग हवे जांखि
यें ॥ इव्यनाव जेद इव्यथी, चार जेदें आखियें ॥ १० ॥ तनुउपधी
गण आहारनो, काउस्सग इव्यथी जाणो जी ॥ कर्म कषाय संसारथी,

त्रिविध जाव मन आणो जी ॥ ११ ॥ त्रुण ॥ आणो द्वादश जेद
तप ए, कर्म तपावे ते तप कह्यो ॥ कर्मद्वय कारणें करीयें, एह पर
मारथ लह्यो ॥ १२ ॥ इह नव पण एह तपथकी, विघन ते नाठां
जाय जी ॥ लक्ष्मी थिर थईने रहे, कीर्ति दश दिश आय जी ॥ १३ ॥
॥ त्रुण ॥ आय कीर्ति सहज गुण ए, पण न तस थरथें करे ॥ चउ
नाण संजुत तीर्थपति पण, कर्म खपवा आदरे ॥ १४ ॥ कर्म नि
काचित नवि होये, तस उपक्रम कह्यो ग्रंथें जी ॥ जाय निकाचित
पण जिके, साधंतां शिवपंथें जी ॥ १५ ॥ त्रुण ॥ शिवपंथ साधे तेह
जाणे, मुक्त अणहारी धर्म ए ॥ आहार कलंक अनादि नवनुं, जेह
थी बहु कर्म ए ॥ १६ ॥ दृढप्रहारी नें नीमजी, श्रीमानदेव सूरीसो
जी ॥ श्रीजगच्चंड सूरि वली, गज सुकमाल मुनीशो जी ॥ १७ ॥ त्रुण ॥
ढंढणामुनि तेम धना रुपिजी, कुरगडू तिम जाणीएं ॥ केई बाह्य
अंतर दोय करतां, केई अन्यंतर ठाण ए ॥ १८ ॥ केवल बाह्य न
फल कह्युं, फल ते शमता सारो जी ॥ निर्वीठकतायें जे करे, ते पामे
नवपारो जी ॥ १९ ॥ त्रुण ॥ बहु लब्धि पामे अनुक्रमें एम, रूप
कश्रेणामां चढे ॥ बहु वीर्यउद्भासैं करीनैं, कर्मरिपु साथें वढे ॥ २० ॥
घाती चारनो द्वय करी, पामे केवल ज्ञानो जी ॥ विहरीने महीमंढ
लें, करे उपगार जिम जानो जी ॥ २१ ॥ त्रुण ॥ जानु परें उपगार
करीने, आयु अंत आवे जदा ॥ योग रूंधी ध्यान तेहज, शैलेशी आवे
तदा ॥ २२ ॥ पांच लघु अक्षर समो, काल रही कर्म चार जी ॥ वेदनी
आयु नाम गोत्र जे, अंतसमय द्वयकार जी ॥ २३ ॥ त्रुण ॥ द्वय करी
सिद्धि वखा समयें, नवमे खंमें ढाल ए ॥ बावीशमी ए पद्मविजयें,
सुणतां मंगलमाल ए ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्धसरूप बहु शास्त्रमां, वचन अगोचर वात; तेहनो लव नाखुं
तथा, जेहनुं सुख निजजात ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रैवीशमी ॥ चांदलितनें उग्यो रे, हरिणी आशमी रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ नवि तुमें वंदो रे सिद्धस्वामी नणी रे, गुण प्रगट्या एकत्रीश ॥
 ज्ञानावरणह्यें पण गुण थया रे, ज्ञान अनंत जगीश ॥ १ ॥
 नवि० ॥ दर्शनावरण ह्यें गुण नव थया रे, वेदनी नाशथी दोय ॥
 ह्यायक दर्शन चारित्र गुण तथा रे, मोहह्यें दोय होय ॥ २ ॥
 ॥ नवि० ॥ आयु अनावें चउ गुण नीपना रे, नामनें गोत्रनो नाश ॥
 दो दो गुण पण अंतराय ह्य करी रे, एम एकत्रीश गुणराशि ॥ ३ ॥
 ॥ नवि० ॥ वरण गंध रस फरस अनावथी रे, गुण पण दोय पण
 आठ ॥ पांच संताण गयाथी पण वली रे, ए पण आवश्यकें पाठ
 ॥ ४ ॥ नवि० ॥ वेद गयाथी त्रण गुण पामीआ रे, वलि अशरीर अ
 संग ॥ अरुह थया एम एकत्रीश जाणीयें रे, ध्यान करो रक्त रंग
 ॥ ५ ॥ नवि० ॥ अथवा सामान्यें गुण आठ ठे रे, केवल ज्ञान अ
 नंत ॥ केवल दर्शन अव्याबाधनें रे, ह्यायिक समकितवंत ॥ ६ ॥
 ॥ नवि० ॥ अह्य स्थितिनें अरूपी जे थया रे, अगुरुजघु अवगाह
 ॥ वीर्य अनंतूं विघ्न विनाशथी रे, कीजें एहज नाह ॥ ७ ॥ नवि० ॥
 त्रण काल सुरसुख जेलुं करी रे, ठवियें नजपरदेश ॥ एम सहु न
 नदेशें ठवी तेहनो रे, कीजें वर्ग विशेष ॥ ८ ॥ नवि० ॥ इणपरें
 वर्ग अनंत वेला करो रे, करीयें सहु समुदाय ॥ पण अव्याबाध सुख
 अंजें नहीं रे, जेह विजाति कहाय ॥ ९ ॥ नवि० ॥ जिहां एक सिद्ध
 तणी अवगाहना रे, तिहां रहे सिद्ध अनंत ॥ फरसित वली निज
 देश प्रदेशनें रे, असंख गुणा जगवंत ॥ १० ॥ नवि० ॥ पण नवि
 चीड होये ने पीडा नहीं रे, एह अरूप स्वभाव ॥ अविनाशी शाश्वत
 सुखनो धणी रे, न रमे जे परभाव ॥ ११ ॥ नवि० ॥ अजर अमर
 अकलंकी जे थया रे, सवि गुण आवीरभाव ॥ नवि निज आत्मदेशें प
 रमाणुठ रे, रमता जेह स्वभाव ॥ १२ ॥ नवि० ॥ अचल अखंड
 अलेशी अरुज वली रे, जेह अजोगी अणाहार ॥ साथ्य रूप सवि
 नविजन वृंदनें रे, नवसायर लह्या पार ॥ १३ ॥ नवि० ॥ शोग वि

योग संयोग ते वेगला रे, अनंत चतुष्टयी धार ॥ आत्म गुणनी पूर
 एता लह्या रे, प्रणमो तुमें वारं वार ॥ १४ ॥ नवि० ॥ थिरता पण
 निजगुणमांहे अई रे, तिणें चारित्र स्थिर रूप ॥ अफूसमाण गति
 लोकाग्रें गया रे, सादि अनंत सरूप ॥ १५ ॥ नवि० ॥ वाच्य नहीं
 संताण तिणें करी रें, कह्युं अनिष्ठ संताण ॥ सिद्ध अनंतर प्रथम स
 मय कह्या रे, परंपर पठें वखाण ॥ १६ ॥ नवि० ॥ चरम नवें जे
 निज अवगाहना रे, तेहमां सुखिर पूराय ॥ त्रीजो जाग घटाडी घन
 कखो रे, प्रणमो तेहना पाय ॥ १७ ॥ नवि० ॥ बंधन ठेदादिक
 कारणथकी रे, जावुं समयें सात राज ॥ ज्योतिमां ज्योति मली जस
 निर्मली रे, पास्या निजगुणराज ॥ १८ ॥ नवि० ॥ व्यवहारें लोकाग्र पदें
 रह्या रे, निश्चयें आत्म खेत ॥ सूक्ष्म बादर त्रस थावर नहीं रे, कर्म
 तणा ए संकेत ॥ १९ ॥ नवि० ॥ सिद्धशिलाथी जोजन ठेहडे रे, जाजी
 त्रणशें तेत्रीश ॥ उत्कृष्टी जघन्य अवगाहना रे, अंगुल जास बत्रीश
 ॥ २० ॥ नवि० ॥ गुण अनंत अनंत ठे जेहना रे, किम कही शकीयें रे तेह ॥
 जाणे केवली पण न कही शके रे, नवमां नव्यपुर जेह ॥ २१ ॥ नवि० ॥
 नवमे खं.में त्रेवीशमी ढालमां रे, समरादित्यनें रास ॥ समरादित्य स्वरूप
 कहे सिद्धतुं रे, पद्य कहे सुविजास ॥ २२ ॥ नवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ७३ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ सबर दृष्टांत इहां सुणो, शुद्ध करी शरधान; नहिं उपम त्रण लु
 वनमां, परगट को परधान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ दिल लगा रे वादल वरणी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें ध्याउ रे साहिब ध्यानमां ॥ ए आंकणी ॥ जेहना गुण न शके
 कही वयणें, ज्ञानी देखे पण ज्ञानमां ॥ १ ॥ तुमें० ॥ क्लृतिप्रतिष्ठ
 पुर जितशत्रु राजा, जयसिरि राणी प्रधानमां ॥ तुमें० ॥ एक दिन आ
 हेडें नृप चाव्यो, अश्व हरी गयो रानमां ॥ २ ॥ तुमें० ॥ तुरग खला
 यो विषम प्रदेशें, एक सबर तिण ठाणमां ॥ तुमें० ॥ एम चिंते कोई
 मोहोटी नर ए, दुःखमां पडियो अचानमां ॥ ३ ॥ तुमें० ॥ उचित

कहं उपचार हुं कांयक, चोकहुं ग्रहे तव पाणमां ॥ तुमैं० ॥ जल उ
 पकंठें अश्वनें लाव्यो, नृप उतखो तव शानमां ॥ ४ ॥ तुमैं० ॥ नृप न्हायो
 अश्वनें न्हवराव्यो, कदली जंबिर दिये खानमां ॥ तुमैं० ॥ पाय प्रण
 मीनें आहार कराव्यो, नृप चिंते निज मानमां ॥ ५ ॥ तुमैं० ॥ नक्ति
 वंतोने सज्जन सुपुरिस, वश कखो सुऊ बहु मानमां ॥ तुमैं० ॥ सांऊ
 समे कखो कुसुम साथरो, सूतो नृप ते टाणमां ॥ ६ ॥ तुमैं० ॥ ध
 नुप तीर लेई ययो अंगरक्क, तुरंगें चढयो सवारमां ॥ तुमैं० ॥ खो
 लतां सेना आवी मली तव, राय चाव्यो असवारमां ॥ ७ ॥ तुमैं० ॥
 साथें सबर लेई पुर आयो, आदर मान अपारमां ॥ तुमैं० ॥ न्हावुं
 पहेरवुं उढवुं नोजन, निजगुं सबर श्रीकारमां ॥ ८ ॥ तुमैं० ॥ सा
 मंतादिक पूठे कुण ए, नृप कहे शिर उपकारमां ॥ तुमैं० ॥ सहु प्रशं
 स्यो नृपें तस दीधी, राणीउ सेवाकारमां ॥ ९ ॥ तुमैं० ॥ धूप घटिनें
 मणिनी दीवीउ, शय्या उलीसां सारमां ॥ तुमैं० ॥ झाडादिक आसव
 बहु पाया, नाटक विविध प्रकारमां ॥ १० ॥ तुमैं० ॥ पंच विषय सु
 ख नोगवे एम नित्य, एक दिन चिंती विचारमां ॥ तुमैं० ॥ रायनें
 कहे जागुं निज थानक, नृप कहे सहु परिवारमां ॥ ११ ॥ तुमैं० ॥
 लाउ बहु असवार पहाँचावो, सुखथी एहनी पालिमां ॥ तुमैं० ॥
 दीधुं बहु इव्यनें बहु मूजां, वस्तरथरमाशालिमां ॥ १२ ॥ तुमैं० ॥
 पहोतो अनुक्रमें निज पालें, मलियो बालगोपालमां ॥ तुमैं० ॥ सबर
 सहु मली पूठे तेहनं, किहां गयाता आजकालमां ॥ १३ ॥ तुमैं० ॥
 केम रह्या गुं खाधुं गुं पाम्या, कहुं सधजुं सुरसालमां ॥ तुमैं० ॥ त
 व पूठे ते नयर केहवुं, राय केहवो नृपालमां ॥ १४ ॥ तुमैं० ॥ उप
 मा विण न शके कही रणमां, तो पण कहे निज चालमां ॥ तुमैं० ॥
 दरिसम गेह नोजन वन फल सम, जिलडी जुवती बालमां ॥ १५ ॥
 ॥ तुमैं० ॥ गुंजाहार आजरण देखाडे, गेरुलेपन कणथर मालमां ॥
 ॥ तुमैं० ॥ न कही शके पण जाणो मनमां, पुर गुण अति अविशा
 लमां ॥ १६ ॥ तुमैं० ॥ ते सुख नर सुरमांहिं न क्यांहिं, जे सुख स

हजाणंदनां ॥ तुमैं ॥ नृषि वेंजंथर नहीं तिऊ, डीरय, हूख वुन नहिं
 वंदनां ॥ १७ ॥ तुमैं ॥ ज्यंत चोगंत परिमंमज नाहिं, नहिं कलादि
 वणें वंदनां ॥ तुमैं ॥ छुरनि छुरनि न तिलादिक रत्न, फरन न वेद
 ना वंदनां ॥ १८ ॥ तुमैं ॥ संज्ञा उपमा नहीं जेह प्रहृती, किम करी
 कहियें वाणनां ॥ तुमैं ॥ दाज बांवीशमी नवम खंडें, केवजी कहें
 जही नाणनां ॥ १९ ॥ तुमैं ॥ सर्व गाथा ॥ ३५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नहीं रूपी अरूपी नहीं, गंध अगंध न गायः नहीं रत्न अरत्न
 कदा नहीं, नहीं फरतेतर न्याय ॥ १ ॥ आचार सूत्रें आखिउं, अप
 यनैं पय नहिं; तयज प्रपंच रहित सदा, अनंत ज्योति तन अहि
 ॥ २ ॥ पान्या परमाणंदन, सांजजी तेह सनाथ; नामंत राखी प्रसुख
 सब, जजो सुनिचंद चुनाथ ॥ ३ ॥ करकज जोडीति कहें, अमन कहां
 उपगार; देई धर्मनी इशना, स्वामीजी श्रीकार ॥ ४ ॥ चरित्र तुमारें
 चित थरी, उपनां अम अनिजाय; चारित्ररत्न अमें चाखियें, जनि
 बांजे एम जाय ॥ ५ ॥

॥ दाज पञ्चीशमी ॥ ते तरीआ रे जाई ते तरीआ ॥ ए देखी ॥
 ॥ तुमैं तरीआ रे जाई तुमैं तरीआ, एम समरादित्य उचरीआ रे ॥ ना
 बयली तुमैं चरण ते वरिआ, जव अठवी उतरीआ रे ॥ १ ॥ तुमैं ॥
 जे करहुं ते तयजुं करीया, ह्वे ड्ययी करो किरिया रे ॥ ते कहें प्र
 हृ अमनैं उपगरीया, आण अमें शिर थरीआ रे ॥ २ ॥ तुमैं ॥ वेंजंथर
 एन चित अनुत्तरीआ, अहां धन्य एहना परिआ रे ॥ उचिन उरसव
 बहु हरखें जरीया, वेंजंथर ठाकरीआ रे ॥ ३ ॥ तुमैं ॥ समरादित्य
 शिष्य ज्ञानता दरीया, दीजदेव जे तरीआ रे ॥ तेहना शिष्यपण आ
 दरीआ, संग तयज परिहरीआ रे ॥ ४ ॥ तुमैं ॥ कौतुकनैं अनुकंपायें
 पूजें, वेंजंथर सुरवरीआ रे ॥ ते अधम्म निज उपजवकारी, गिरिसेन
 नी कहां चरिआ रे ॥ ५ ॥ तुमैं ॥ जय तथा अजय अमें ए, बीज
 जहूं के नाहिं रे ॥ जेहेजे के नहीं ते पण जाखो, केवजी कहें सु

णो आहिं रे ॥ ६ ॥ तुमें ० ॥ नव्य अठे पण बीज न पाम्यो, पण
 जेहेरो ते सुणजो रे ॥ असंख पुज्ज परावर्त्त अतितें, शार्दूलसेन
 नृप सुणजो रे ॥ ७ ॥ तुमें ० ॥ तेहनो अश्व प्रधान ए आशे, तिहां
 समकित ए लाशे रे ॥ कूय उपशम मिथ्यात्व जेहेरो, पातक दूर प
 लाशे रे ॥ ८ ॥ तुमें ० ॥ चिंतवीयुं मुज्ज उपरें एणें, अहो महानुभाव
 एह रे ॥ गुणपद्धपात परंपरा बीजक, समकित जहो एह रे ॥ ९ ॥
 ॥ तुमें ० ॥ ते अश्व समकित पामी अनुक्रमें, नव असंख्याता नमशे
 रे ॥ शंख नामें ब्राह्मण नव जेहेरो, तिहां चारित्र परिणमशे रे ॥ १०
 ॥ तुमें ० ॥ कूपकश्रेणीमां केवल जहीनें, निज आतम रुद्धि वरशे रे
 ॥ निजगुण शक्ति अनंती परगट, नावें एहज करशे रे ॥ ११ ॥ तुमें ० ॥
 एम सांजली वेलंधर हरख्या, प्रणमी मुनिवर पाया रे ॥ निज स्थान
 क पोहोतो हवे केवली, विचरे जे निरमाया रे ॥ १२ ॥ तुमें ० ॥ हवे
 एक दिन गिरिसेन पकडाणो, चोरीमां तव माख्यो रे ॥ कुंजीपाकें करी
 कमें पचाख्यो, मुनिवरदेष जे धाख्यो रे ॥ १३ ॥ तुमें ० ॥ सातमी न
 रगें तेह दोषथी, उपनो दुःख अपारो रे ॥ विचरंता श्रीसमरादित्य
 जी. पहोता सिद्ध गिरिगारो रे ॥ १४ ॥ तुमें ० ॥ कर्मविषम स्थिति
 जाणी कीथो, केवलीनो समुद्धात रे ॥ शैलेशी पडिवजीया मुनिवर,
 जेह अयोगी विख्यात रे ॥ १५ ॥ तुमें ० ॥ नवोपग्राहि तिहां कर्म
 खपावे, वेदनी आयु गोत्र नाम रे ॥ देहपंजर ठांदि हवे मूलथी, अफू
 समाण गतिनाम रे ॥ १६ ॥ तुमें ० ॥ समय एकें लोकाग्रें पहोता,
 परम ब्रह्माजय जेह रे ॥ जन्म जरा मरणें करी विरहित, अचल अरुज
 यया तेह रे ॥ १७ ॥ तुमें ० ॥ सुरवर महोत्सव करे शिवपदनो, पूजे
 तेह शरीर रे ॥ अंग प्रधान अहे ते तनुनां, पामवा नवजल तीर रे
 ॥ १८ ॥ तुमें ० ॥ देवलोकमां जई सुरनें, संजलावे अवदात रे ॥
 ने पण नक्तें करी प्रणम्या, पूजा हर्ष नरात रे ॥ १९ ॥ तुमें ० ॥
 निज आतमहेतें नित्य पूजे, सुरवर समकितवंता रे ॥ समरादित्य गि
 रितेन बलाण्या, चमत्कार चित्त देता रे ॥ २० ॥ तुमें ० ॥ समरादित्य

गया शिवपुरमां, बीजानें संसार रे ॥ तिणें गुणिजन उपरें नवि मत्सर,
कीजें सुणि अधिकार रे ॥ ११ ॥ तुमें ॥ एक परेकें वयरें दुःख
पाम्यो, बिहुं परकनीशी वात रे ॥ वलि अज्ञान कष्ट दुःख पामे, ए दृष्टां
त पण ख्यात रे ॥ १२ ॥ तुमें ॥ नवमे खं.में पञ्चवीशमी ए, पद्म
विजय कहि ढाल रे ॥ श्रीसमरादित्य केवलीरासें, सुणतां मंगलमाल
रे ॥ १३ ॥ तुमें ॥ सर्व गाथा ॥ ७७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संक्षेपें ए सवि कहाँ, समरादित्यनो रास; श्रवणें पण होय सांन
दयां, आणंद अंग उल्लास ॥ १ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥ गीरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ समरादित्य मुनि गाईआ, आणी हर्ष अपारो रे ॥ मुजयी मंदबुद्धि
तणो, कांय धारी चित्त उपगारो रे ॥ १ ॥ सम ॥ शक्ति नहीं मुज
एहवी, पण श्रीहरिचन्द्रसूरि वयरें रे ॥ चाले यष्टि अवलंबनं, जिम
शक्ति रहित जुवे नयणें रे ॥ २ ॥ सम ॥ हरप हतो बहु दिन तणो,
ते आज चढ्यो सुप्रमाणो रे ॥ उल्लव रंग वधामणां, कांय घर घर को
डि कल्याणो रे ॥ ३ ॥ सम ॥ पंढितजन किरपा करी, मुज उपरें
शुद्ध करेजो रे ॥ अल्पबुद्धि मुज जाणीनं, मत चित्तमां रीश धरेजो रे
॥ ४ ॥ सम ॥ शक्ति रहित पण मुज नणी, मुनिगुणें बोलाव्यो प्राणो
रे ॥ अंबजंजरी शक्तें लवे, कांय मधुर कोकिल मधुटाणो रे ॥ ५ ॥
॥ सम ॥ नीतें खल जननं नमुं, जे अठतां दूषण काढे रे ॥ प्रीतें
सज्जननं नमुं, जे मेरु शिखर पर चाढे रे ॥ ६ ॥ सम ॥ अल्प
बुद्धि अणाजोगथी, कांय बोळूं वचन विरुद्ध रे ॥ मिह्माडुक्कड मुज
हजो, जिणयी हुं थाउं शुद्ध रे ॥ ७ ॥ सम ॥ सुरनव सहित
नवे नवें, मुनि नव नव समता चढती रे ॥ नवमे नव पूरण
थई, कांय समता जेहनी वढती रे ॥ ८ ॥ सम ॥ पहेले खं.में
पन्नर कही, बीजे वर त्रैवीश ढाल रे ॥ त्रीजे चौद चोथे कही, ढाल अ
छावीश विशाल रे ॥ ९ ॥ सम ॥ ढाल पांचमे ठेठे कही, नली चो

वीशनें चोवीश रे ॥ सातमे त्रेवीश आठमे, खंमें नांखी बावीश रे
 ॥ १० ॥ सम० ॥ नवमे खंमें ए कही, ठवीशमी ठाल रसाल रे ॥ ए
 सर्व मलीनें एकशो, कही नवाणुं वर ठाल रे ॥ ११ ॥ सम० ॥ अठा
 र उंगण च्यालीशमां, कांय मांमयो रास ए वरषे रे ॥ लिंबडी चोमा
 खूं रही, कांय दिन दिन चढते हरषे रे ॥ १२ ॥ सम० ॥ वोहोरा कशला
 आदि दे, निजोटा सहसमल्ल नामें रे ॥ तस आग्रहें प्रारंजीउ, वलि निज
 आतम हितकामें रे ॥ १३ ॥ सम० ॥ तेणें वरसें तिहां संघमां, तप
 कीधां घर घर वार रे ॥ पंचोत्तर मासखमण ते, अया जिनबिंब मांन
 नहार रे ॥ १४ ॥ सम० ॥ लुंपक घरे पण कीधजो, पण ते अज्ञानमां पेसे
 रे ॥ अग्निशर्मांनी पेरें, आणाविणुं तप कोण कहेसो रे ॥ १५ ॥ सम० ॥
 श्रीगुरु उत्तमविजयनी, किरपायें कीधो रास रे ॥ पद्मविजय कहे होय
 जो, कांय घर घर जीजविलास रे ॥ १६ ॥ सम० ॥ सर्व गाथा ॥ ८०४ ॥

॥ कलश ॥

॥ तपगढ नंदन सुरतरु प्रगट्या ॥ ए देशी ॥

॥ शासननायक शिववधू लायक, वर्द्धमान जिनचंदा जी ॥ पंचम ग
 एधर सोहम पटधर, जंबु तास सुणिंदा जी ॥ १ ॥ प्रनवा पटधर पूरव
 धारी, सज्जनव सूरिंदा जी ॥ मनक पिता जे पुत्रनें अरथें, दश वै
 कानिक करंदा जी ॥ २ ॥ जशोनड सूरि तस पटधर, पूरव चौद नणिं
 दा जी ॥ संनूतिविजय नें नडबाहु गुरु, एकज पाट गणिंदा जी ॥
 ॥ ३ ॥ थूजिनड जे सातमा पटधर, पूरव चौद धरिंदा जी ॥ ब्रह्म
 चारी शिरशेहर नणीयें, कोशा प्रतिबोधंदा जी ॥ ४ ॥ आर्य महागि
 रि आर्य सुहस्ती, दश पूरवधर इंदा जी ॥ अवंती सुकमाल बूजव्यो,
 तेम तंप्रति नरींदा जी ॥ ५ ॥ आठ पाट जगें इणि परें पहेजुं, निर्ग्रे
 थ नाम कहंदा जी ॥ सुस्थित सुप्रतिवद्ध एह बिहुं, पटधर एक सु
 खकंदा जी ॥ ६ ॥ कोडि वार सुरिमंत्र जप्यो तिणें, कोटिक गण
 थावंदा जी ॥ श्रीइंद्रिन्न सूरि तस पटधर, श्रीदिन्नसूरि हवंदा
 जी ॥ ७ ॥ सिंदगिरि सूरि तस पटधर, वाशमे गुणवंदा जी ॥ जेहना

शिष्य विनीत शिरोमणि, सधला जे गतदंदा जी ॥ ८ ॥ तस पट्टे
 श्रीवयर सूरिसर, जिनशासन शोहंदा जी ॥ चौदमे पाट वज्रसेन
 सूरि, निस्संग ज्युं अरविंदा जी ॥ ९ ॥ पन्नरमे पट श्रीचंद्रसूरि,
 चंद्रगह्वा यथा नाम जी ॥ त्रीजुं ए परसिद्धुं जगमां, सामंतनड तस
 ठाम जी ॥ १० ॥ वनवासी चोशुं ययुं अनिधा, तस पट्ट गुणमणि
 धाम जी ॥ श्रीवृद्धदेव सूरि परसिद्धा, पटधर तस अनिराम जी
 ॥ ११ ॥ श्रीप्रद्योतन सूरि विराजे, मानदेव सूरि ठाजे जी ॥ तस पट्ट मा
 नतुंग आचारय, उद्योतक अति च्राजे जी ॥ १२ ॥ वीरसूरि एकवी
 शमे पट्टे, जयदेव सूरि बावीश जी ॥ देवाणंद वली विक्रमसूरि, श्री
 नरसिंह सूरिश जी ॥ १३ ॥ पट्ट ठवीशमे समुद्रसूरिवर, मानदेव
 सूरि तास जी ॥ विबुधप्रन सूरि तस पाटें, श्री जयानंद सुवास जी
 ॥ १४ ॥ त्रीशमे पाटें रविप्रन सूरि, श्रीजशोदेव सूरि जास जी ॥ प्रद्यु
 म्न सूरि बत्रीशमे पाटें, मानदेव तस खास जी ॥ १५ ॥ विमलचंद्र
 ने उद्योतन सूरि, तेह पांत्रीशमे ठाणो जी ॥ वड तलें आठ सूरिपद
 दीधां, तिहांथी वडगह्वा जाणो जी ॥ १६ ॥ पांचमुं नाम ए पाट ठत्री
 शमे, सर्वदेव सूरिसो जी ॥ साडत्रीशमे पाटें देवसूरि, सर्वदेव अडत्री
 श जी ॥ १७ ॥ बिहुं गुरु जाई हवे एक पाटें, जशोनड श्रीनेमिचंद
 जी ॥ तेहुने पाटें मुनि चंद्रसूरि, निरमल कीरतिचंद्र जी ॥ १८ ॥ अ
 तदेव सूरि तस पटधारी, विजयसिंह सूरि नमीयें जी ॥ सोमप्रन
 सूरि मणिरत्न सूरि, नमतां पाप निगमीयें जी ॥ १९ ॥ ए दोय पाटें
 चौआलीशमे, श्रीजगच्चंद्र सूरि दीवो जी ॥ करी किरिया उद्धार दीपा
 व्यो, मारग ते चिरंजीवो जी ॥ २० ॥ आघाटपुरें जिणें दिगपट जींत्या,
 राणा सना हजूर जी ॥ हिरला नाम दीधुं तिहां राणे, तप कीधुं जिणें
 पूर जी ॥ २१ ॥ जावजीव आंबिल तप कीधुं, बिरुद तपा तिहां पायुं
 जी ॥ तपगह्वा नाम ठहुं एह गुणथी, नाहिं कदाग्रहें आयुं जी ॥ २२ ॥
 देवेंद्र सूरि पटोधर तेहना, प्रकरण जिणें बहु कीधां जी ॥ धर्मघोष
 सूरिसर तेहना, विद्यामंत्र प्रसिद्धा जी ॥ २३ ॥ सोमप्रन सूरि सडताली

शमे, पाटें अतिवैरागी जी ॥ सोमतिलक सूरि देवसुंदर सूरि, जस पंच
 शिष्य सोनागी जी ॥ १४ ॥ सोमसुंदर सूरि तेहना पटोधर, सुनि
 सुंदर तस पाटें जी ॥ एक शो आठ हाथनो कागल, लखी मोकल्यो
 गुरुमाटें जी ॥ १५ ॥ काली सरस्वती जे कहेवाता, संतिकरं जिणें
 कीधुं जी ॥ पाटवी तेहना रत्नशेखर सूरि, बावनमे परसिद्धुं जी ॥ १६ ॥
 लक्ष्मीसागर सूरि सुमति साधु सूरि, हेमविमल पणपन्न जी ॥
 आणंद विमल सूरि ठण्णनमे, पाटें तेह निष्पन्न जी ॥ १७ ॥ बहु मारग
 लोपाणो जाणी, क्रियाशिथिल थया प्राणी जी ॥ संवत् पन्नर व्याशीयें
 कीधो, क्रियाउद्धार मन आणी जी ॥ १८ ॥ बहु श्रेष्ठोत्तुतशत जिणें
 दिख्या, इयां इयां कीजें वखाण जी ॥ तस पटें विजयदान सूरियें, करी
 प्रतिष्ठा बहुगण जी ॥ १९ ॥ एम सत्तावन पाट वखाण्या, शेष पाट हवे
 कहीयें जी ॥ पद्मविजय कहे पूरवसूरिना, गुण गातां सुख लहीयें
 जी ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ८३४ ॥

॥ हमचडिनी देशी ॥

अठावनमे पाटें दुआ, विजयहीर सूरि राया ॥ मेघजी आचारय प्रति
 बोधी, लूंपक मत ठोढाया रे ॥ १ ॥ हमचडी ॥ अठावीश संयतशुं
 दीक्षा, लीधि जे गुरु पासें ॥ पातसाह अकबर प्रतिबोध्यो, जीव अ
 मारि प्रकासे रे ॥ २ ॥ हम० ॥ सीरोही नहुलाई पाटण, राजनग
 खंजात ॥ जिणें बहुबिंब प्रतिष्ठा कीधी, ठाम ठाम विख्यात रे ॥ ३ ॥
 हम० ॥ विजयसेन सूरि तस पाटें, पातसाहनें आगें ॥ पट दरिसण
 मां जयसिरि जेहनें, वरी स्वयंवरा रागें रे ॥ ४ ॥ हम० ॥ सवाई
 ऋ विरुद लह्या तव, गीतारथ गुणरागी ॥ तस पाटें विजयदेव सूरि
 र, कीरति चिहुं दिश जागी रे ॥ ५ ॥ हम० ॥ विजयप्रन्न सूरि तस प
 न्नोनागी शिरदार ॥ विजयरत्न सूरि पाटें तेहनें, विजयखिमा सूरि
 न ॥ ६ ॥ हम० ॥ चोशठमे पाटें वली हूआ, विजयदया सूरि
 रि ॥ विजयधर्म सूरि जस राज्यें, प्रारंभ रासनो थाय रे ॥ ७ ॥
 हम० ॥ पटार एकताजें कार्तिक, वदिमां, स्वर्ग तेह सिधाया ॥ तस पटें

